I AM MUSLIM

الحمد لله

SUNNI ✗ BARELVI

SHIA ✗ WAHABI

SUFI ✗ DEWBANDI

SALAFI ✗ AHLEHADiS

MUSLIM ✓ MOHAMMADI

PROUD TO BE A MUSLIM

तर्तीब

हाफिज मुहम्मद यूसुफ

बयानात

हजरत मौलाना मुहम्मद यूसुफ कांधल्वी रह0

दावत की मेहनत
ईमान सीखने की मेहनत है

बयानात

हजरत मौलाना मुहम्मद यूसुफ कांधल्वी रह0

दावत की मेहनत
ईमान सीखने की मेहनत है

तर्तीब
हाफिज मुहम्मद यूसुफ

किताब का नाम : दावत की मेहनत ईमान सीखने की मेहनत है

तर्तीब : : हाफिज मुहम्मद यूसुफ

जेरे निगरानी : शकील अहमद

तादाद : 2000

कीमत : रू0

इशाअत : 2017

अपनी बात

بِسْمِاللهِالرَّحْمٰنِالرَّحِيمِ

मोहतरम दोस्तों और बुजुर्गो ! ये किताब “दावत की मेहनत ईमान सीखने की मेहनत है” इस किताब मे हजरत मौलाना मुहम्मद यूसुफ रह0 के चन्द वो बयानात दर्ज किये गये हैं जिन बयानात को आज तक किसी किताब मे जगह नही मिली है और ना ही इन बयानात को कोई मुकर्रिर अपने मुजाकरो मे लाता है, ऐसा नही है कि ये बयानात लोगो के पास न हों क्यों कि जिस बयाज मे ये बयानात दर्ज हैं उसी बयाज मे दर्ज दूसरे सारे बयानात किताबों मे हर्फ ब हर्फ शाया हो चुके हैं फिर आखिर इन बयानात को लोगों से क्यों छिपाया गया ? इस सिलसिले मे मैं चन्द बातें यहॉ पर लिखकर फिर हजरत रह0 के बयानात आपके सामने पेश करता हूँ। बात की शुरूआत करता हूँ 2 अप्रेल सन 1965 से जिस दिन हजरत मौलाना यूसुफ साहब रह0 का इन्तिकाल हुआ कि इन्तिकाल के फौरन बाद से ही दावत का रूख बदलना शुरू हो गया, रूख बदलने की वजह ये बनी कि बयान करने वालों ने हजरत की बातों और हजरत की मंशा से अपनी ऑखों को बन्द करके, खुद अपनी इस्लाह और अपनी तर्बीयत से गाफिल होकर सिर्फ उम्मत को इस काम मे लगान की गर्ज और नियत करके अपने-अपने इल्म के एतबार से बयानात कर-करके नबूवत की इस आली मेहनत को माल वालों और ओहदें वालों के हवाले कर दिया, जब कि हजरत मौलाना इलयास साहब रह0 ने बयान करने वालों को ये हिदायत दी थी कि

“ तब्लीग के उसूलों मे से एक उसूल ये भी है कि उमूमी बयानात मे पूरी सख्ती हो (खुलेआम अल्लाह के गैर की धज्जियॉ उधेड़ी जाये) बल्कि जहॉ तक हो सके खास लोगों की इस्लाह के लिये भी उमूमी बयान ही किया जाये”(मलफूजात हजरत मौलाना इलयास साहब रह0) ईमान का सीखना जो इस काम का मौजू था असबाब परस्तों ने इस मौजू को बदलकर दावत को मौजू बना कर नबूवत की इस मेहनत को इस्लाहुल मुस्लिमीन की एक तंजीम बना डाला। मेरे इन अल्फाजों का इस्तेमाल शायद आपको पसन्द न आ रहा हो पर खुदा की कसम जो लिख रहा हूँ वो सच्चाई है, हजरत रह0 के बयानात मे आपको और भी कड़वे सच का सामना करना पड़ेगा इसलिये कि अम्बिया अलै0 की पहली बात لَا إِلَٰهَ إِلَّا ٱللَّٰهُ ही बहुत कड़वी होती है पर इसके बाद हकीकत खुल जाती है। हजरत मौलाना युसूफ साहब रह0 ने बंगले वाली मस्जिद में फज्र के बाद बयान फरमाया ! कि काम करने वालों के तीन तबके है दो तबके अक्सरियत में है और एक तबका बहुत मुख्तसर लोगों का है। ये अक्सरियत वाले दोनो तबके सारी जिन्दगी इस मेहनत को कर पर खुदा इन्हें ईमान की हकीकत से नही नवाजेगें और वो तबका जो मुख्तसर लोगों का हैं, उनकी मेहनत पर खुदा उन्हे ईमान की हकीकत से मालामाल कर देगा। एक साहब बयान के बाद हजरत से मिले और कहा कि हजरत आपने काम करने वालों क जो तीन तबके बतलायें हैं उनका खुलासा कर दीजिये।

हजरत ने फरमाया ! एक तबका वो है जो इस काम को फुर्सत की वजह से कर रहा है (कि आज कल धंधा मन्दा है, कारोबार कुछ ठीला है, बारिश का मौसम है, खेती में कोई काम नही है, सीजन नही है वगैरह-वगैरह) और एक तबका इस काम को गर्ज की वजह से कर रहा है (कि डाक्टरों से परेशान हो चुके हैं किसी दवा से कोई फायदा नही इस काम के करने से शायद शिफा मिल जाये, या आमदनी से घर का खर्च पूरा नही पड़ रहा हैं इस काम के करने से शायद आमदनी में बरकत हो जाये या लड़की लड़कों की शादी के कोई रिश्ते नही आ

रहे है इस काम को करने से शायद कोई रिश्ता मिल जाये या कर्जो का इतना बोझ है कि जिसकी वजह से हर वक्त उलझन और परेशानी रहती है, चलो इस काम को करते हैं कि शायद कोई रास्ता खुल जाये वगैरह-वगैरह) ये दोनो तबके जो अक्सरियत में हैं ये सारी जिन्दगी इस काम को करें खुदा इन्हे ईमान की हकीकत से नही नवाजेगें। हजरत मौलाना इलयास साहब रह0 ने फरमाया था कि ''यही काम खैरों को लाने वाला है और यही काम फित्नों को भी लाने वाला है, इस काम के करने वाले जो दोजखी लोग होगें वो भी काम करने वाले ही होगें इसलिये ये काम अपनी इस्लाह और अपनी तर्बियत के लिये है।'' हां काम करने वालों का एक तबका बहुत कम लोगों का है और ये वो लोग हैं जो अल्लाह से अपना रिश्ता सही करना चाहते हैं, उसकी मंशा और मर्जी पर अपने आपकों चलाना चाहते है, इस काम से वो अपनी इस्लाह अपनी तरबियत चाहते है और अल्लाह के करीब पहुंचना चाहते हैं, यही वो लोग हैं जिन्हें अल्लाह जल्लाशानुहु ईमान की हकीकत से नवाजने वाले है।

क्या मतलब है अपनी इस्लाह का ?

क्या मतलब है अपनी तरबियत का ?

क्या मतलब है अल्लाह के कुर्ब का ?

अपनी इस्लाह का मतलब हर बनी हुई चीज से अपने आपको मायूस और नाउम्मीद करना।

अपनी तरबियत का मतलब अपनी हर हाजत और जरूरत को हुजूर सल्ल0 वाले अमलों के रास्ते से पूरा करना।

हर मुसलमान को इन्ही दो मेहनतों पर उभारना यानो अल्लाह के बन्दों को अल्लाह जेसे है अपनी जात व सिफात मे वैसे ही बतलाना कि वो अपनी जात और सिफात में जिस तरह अकेले हैं वैसे ही उन्हें बोलना और समझाना, उनके करने के जाब्ते असबाब नही हैं हुजूर सल्ल0 वाले अमल है, असबाब ता इम्तिहान के लिये हैं वो देखना ये चाहते है कि मेरा कौन बन्दा असबाब के रास्ते से हमसे ले रहा है और कौन बन्दा असबाब में मेरी इतआत के रास्ते से ले रहा है, इन दोनो मेहनतों पर मुसलमानों को लगाने वाला ही अल्लाह के करीब पहुंचेगा।

हजरत मौलाना युसूफ साहब रह0 की मंशा थी कि मुसलमान अल्लाह के गैर से नाउम्मीद होकर रसूलुल्लाह सल्ल0 वाले आमाल को अपना सबब बना ले पर बयान करने वालों ने इस दावत वाले काम को ऐसा बयान किया कि लोग इस काम को अब असबाब मे बरकत होने के लिये करने लगे जब कि इस काम का पहला मुकाबला ही असबाब से है कि सबाब से नही होता अमल से होता है इस बात को आसानी से समझा भी जा सकता है जैसे कि एक आदमी ने अपनी परवरिश के लिये दुकान को सबब बनाया हुआ है कि दुकान से पैसा मिलेगा, पैसे से चीजें मिलेंगीं और चीजों से परवरिश होगी पर ये आदमी

अपने पैरो के अमल से दुकान जायेगा

फिर हाथ के अमल से दुकान खोलेगा,

ऑख के अमल से दुकान के अन्दर देखेगा,

ग्राहक आ गया तो कान के अमल से उसकी बात सुनेगा,

जुबान के अमल से सौदा तय करेगा,

सौदा तय हो जाने के बाद हाथ के अमल से सौदा देकर पैसे लेगा,

अब हम सब खुद फैसला करें कि पैसा सबब से मिला या अमल से मिला?

इसी तरह चीजे भी पैसे से नही मिलती अमल से मिलती हैं जैसे कोई आदमी किसी दुकान पर साबुन खरीदने के लिये 100 रूपये का नोट हाथों मे लेकर जाये पर ऑख, जुबान और हाथ से अमल ना करे यानी जुबान से कुछ न बोले, ऑख और हाथ से इशारा न करे तो 100 रूपये क्या 2000 रूपये का नोट हाथ मे हाने के बावजूद इसे साबुन क्या नमक भी नही मिलेगा, इस मिसाल को सामने रखकर अब हम सब खुद फैसला करें कि रूपये से साबुन या नमक मिलता है या अमल से मिलता है ? इसी तरह चीजों से परवरिश नही होती अल्लाह परवरिश करते हैं। मेरे दोस्तों ! मक्का वालो का हुजूर सल्ल0 से झगड़ा इस बात पर नही था कि अल्लाह से होता है या अल्लाह के गैर से होता है, वहॉ तो झगड़ा इस बात पर था कि आप कह रहे हो अमल से होता है और हम कह रहे है सबब से होता है अगर सबब से नही होता तो फिर अल्लाह ने ये सबब क्यों बनायें ? हॉ, वहॉ मुश्रिकीने मक्का से हुजूर सल्ल0 का झगड़ा अमल और सबब को लेकर था। कुरआन बतला रहा है कि नमरूद, फ़िऔन, कारून, हामान और शददाद वगैरह सबब वाले थे पर उन सबके अमल खराब थे तो अल्लाह ने उन सबको नाकाम कर दिया और इनके मुकाबले पर जो सबब से खाली हाथ थे लेकिन अमल वाले थे उनको कामयाब कर दिया। मेरे दोस्तों ! हर सबब अल्लाह के तआरूफ के लिए है और सबब का इन्कार करने वाला ही अल्लाह तक पहुंचेगा, जो इसका इन्कार नही करेगा वो अल्लाह तक नही पहुंचेगा। इब्राहीम अलै0 के जरिये से अल्लाह ने अपने बन्दों को तौजी का तरीका बतलाया है कि हर सबब का इन्कार इस तरह करो कि हर सबब से मायूसी जाहिर हो कि हम इस सबब से मायूस हैं, इस तरह सबब का इन्कार करो। इसलिए कि जितना भी निजामें कायनात है, इस सबका इन्कार करना अल्लाह पर ईमान लाने के लिए शर्त है। अल्लाह पर ईमान लाने के लिए शर्त है ये कि हर सबब का कुदरत के मुकाबले में इन्कार करो अगर हर सबब का कुदरत के मुकाबले में इन्कार नही करोगें
तो सबब हमारे और अल्लाह के दर्मियान हायल होगा।

इसलिये नबूवत की ये मेहनत बयान करने की नही बल्कि मुजाकरों की मेहनत है, बयान कहते है पढ़ी और सुनी हुई बात को बतलाना और मुजाकरा कहते है पढ़ी और सुनी हुई बात को समझ कर, कुरआन और सुन्नत मे देखकर उसे ईमान की रोशनी मे समझाना। अब यहॉ पर सवाल ये है कि क्या समझाना ? ईमान समझाना। कोन सा ईमान समझाना ? इसलिये कि एक ईमान मुश्रिकों वाला है, एक ईमान मुर्तिदो वाला है और एक ईमान सबब परस्तों वाला है लिहाजा इस काम मे तुम्हे उस ईमान को समझाना है जिस ईमान को हर नबी ने अपनी अपनी कौम को समझाने की कोशिश की पर कौम ने नबी को पागल कहा, उसी ईमान के समझाने मे इस दौर मे हजरत मौलाना युसूफ साहब रह0 ने भी अम्बिया अलै0 वाला रास्ता अख्तियार किया था। हजरत रह0 के इन्तिकाल के बाद से उम्मत को ईमान समझाने वाला नही मिला जो उम्मत को ईमान समझाता बस यहीं से इस काम मे बिगाड़ आना शुरू हो गया कि आपस का इख्तेलाफ सारी दुनियॉ के सामने खुल कर आ गया।

इसलिये बयान और तकरीर हमारे काम का मौजू नही है कि ये काम बयान और तकरीर का है ही नही बल्कि अमली तौर पर इस काम से ईमान को सीखना है यानी सबब से परवरिश न लेकर हमे अमल से परवरिश लेना आ जाये और ये बात इन्शाअल्लाह किताब मे दर्ज हजरत रह0 के बयानात से वाजेह हो जायेगी कि किस तरह अमल से परवरिश लेना है। यहॉ पर ये बात फिर याद दिला दी जाये कि लगभग 1250 सालो से मुंसलमानो के अन्दर से इज्तेमाई तौर पर ईमान को सीखने का जो रिवाज खत्म हो चुका है, ईमान को ना सीखने की वजह से जो बात हुजूर सल्ल0 ने अपने सहाबा किराम से कही थी वो बात हम मुसलमानों ने अपने अमल मे ले ली मिसाल के तौर पर हिन्दुस्तान के वजीरे आजम ने पार्लियामेन्ट मे मेम्बर आफ पार्लियामेन्ट से (जो कड़ी मेहनत

और मशक्कत के बाद चुनाव जीत कर मेम्बर आफ पार्लियामेन्ट) मुखातिब होकर कहा कि मैने मुल्क के सारे बैंको को कहला दिया है कि आप लोगों को फौरी खर्च के लिये 5-5 लाख रूपये दे दें लिहाजा,
यू0पी0 वाले स्टेट बैंक आफ इंडिया से,
एम0पी0 वाले यूनियन बैंक से,
पंजाब वाले पंजाब बैंक से,

बिहार वाले सिंडिकट बैंक से और दीगर सूबे वाले फलाँ फॅला बैंक से 5-5 लाख रूपये ले लें। इस खबर को टी0वी0 चैनल और अखबार नवीसों ने सारे मुल्क मे पहुँचा दिया पर चूक ये हो गयी कि ये बात वजीरे आजम ने किसको मुखातिब करके कही थी ये बात नही बतलायी तो हर सूबे की आवाम बैंको मे लाईन लगाकर खड़ी हो गयी, बैंको से इन्हे पैसे तो नही मिले पुलिस की लाठियॉ जरूर खानी पड़ी।

मेरे दोस्तों ! सहाबा किराम वो लोग थे जिन्होने कड़ी मेहनत और मशक्कत करके पहले ईमान को सीखा था जिस पर उनके साथ अल्लाह ने अमल पर जो वादे किये थे वो वादे पूरे होते थे, हम ईमान को सीखे बगैर अमल से फायदा उठाना चाह रहे हैं जो खुदा की कसम ना मुम्किन है। इस मेहनत से यही बात चाही जा रही है कि हर मुसलमान ईमान को सीखने पर आ जाये इसीलिये हजरत मौलाना इलयास साहब रह0 ने ये बात साफ तौर से कह दी थी कि

“ मैंने इस काम का कोई नाम नही रखा है अगर इस काम का कोई नाम रखता तो तहरीक ए ईमान रखता”

ये कह कर हजरत मौलाना इलयास साहब रह0 ने इस काम को तमाम फित्नो से महफूज रखने की पेशबन्दी की आज इस बात से निगाह हटते ही फित्ने सामने आने लगे हालॉकि हजरत मौलाना इलयास साहब रह0 ने फरमाया था कि

“मुसलमानों ने गलतफहमी से समझ लिया है कि ईमान तो हमारे अन्दर मौजूद ही है इसलिये ईमान के बाद जिन चीजों का दर्जा है मुसलमान उनमे मशगूल हो गये (नमाज, रोजा, तस्बीह, तिलावात, हज और जकात वगैरह मे) हालॉकि ये मेहनत सिरे से ही ईमान पैदा करने के लिये है।” (दीनी दावत)

एक मौके पर फरमाया ! हमारी ये तहरीक हकीकत मे ईमान की तहरीक है, आज कल आम तौर से जो इज्तेमाई काम होते हैं उनके करने वाले ईमान को सरसरी तौर पर फर्ज बतला कर उम्मत की ऊपरी सतह की (नमाज, रोजा, तस्बीह, तिलावात, हज और जकात वगैरह) तामीर करते हैं और ऊपर के दर्ज की जरूरियात की फिक्र करते हैं, हमारे नजदीक उम्मत की पहली जरूरत यही है कि मुसलमानों के दिलों मे पहले सही ईमान की रोशनी पहुँच जाये। (मलफूजात हजरत मौलाना इलयास साहब रह0)

एक मौके पर मौलाना जहीरूल हसन साहब से फरमाया ! जहीरूल हसन मेरी मंशा कोई समझ नही पा रहा है, लोग समझते है कि ये काम तहरीक ए सलात का है, मैं कसम से कहता हूँ कि ये काम हर्गिज तहरीक ए सलात नही है, मियॉ जहीरूल हसन इस काम से हमे एक नई कौम पैदा करनी है। (दीनी दावत)

अब रही बात की ईमान आखिर है क्या ? तो ईमान यानी لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّه के मफहूम को हजरत मौलाना यूसुफ साहब रह0 ने बहुत आसान जुबान मे समझा दिया है कि दुनियॉ में इन्सानियत की तीन

किस्में हैं जो अल्लाह तआला को अपना रब मानती हैं पर ये तीनों किस्म के लोग अल्लाह तआला की जात से दुनियॉ व आखिरत मे कभी फायदा नही उठा सकते।

पहली किस्म म वो लोग हैं जो कहते और मानते हैं कि परवरिश करने वाली (यानी हर मख्लूक की हर जरूरत को पूरा करने वाली जात) जात सिर्फ अल्लाह ही की है पर अल्लाह तआला की जात बुतों के रास्ते से अपनी मख्लूकात की जरूरतों को पूरा करता है, ऐसा कहने वाले मुश्रिकीन-ए-मक्का के लोग थे और आज भी जो लोग इस अकीदे को मानते हों ये लोग भी इसी किस्म में दाखिल है।

दूसरी किस्म म वो लोग हैं जो कहते और मानते हैं कि परवरिश करने वाली (यानी हर मख्लूक की हर जरूरत को पूरा करने वाली जात) जात सिर्फ अल्लाह की है पर अल्लाह तआला की जात अपनी मख्लूकात की जरूरतों को वलियों के रास्ते से यानी अल्लाह वालों के रास्ते से पूरा करता है, ये लोग मुर्तीदीन है।

तीसरी किस्म मे वो लोग हैं जो कहते और मानते हैं कि परवरिश करने वाली (यानी हर मख्लूक की हर जरूरत को पूरा करने वाली जात) जात सिर्फ अल्लाह ही की है पर अल्लाह तआला की जात अपनी मख्लूकात की हर जरूरत को कायनात के रास्ते से यानी दुनियावी असबाब के रास्ते से पूरा करता है, ये वो लोग हैं जिन्होने अपना किब्ला और अपना माबूद इस कायनात को बना रखा है।

इस काम से चौथी किस्म के लोग तैयार करना है, जो लोग ये कहें और माने कि परवरिश करने वाली (यानी हर मख्लूक की हर जरूरत को पूरा करने वाली जात) जात सिर्फ अल्लाह ही की है पर अल्लाह तआला की जात अपनी मख्लूकात की हर जरूरत को अपनी कुदरत से पूरा करती हैं और उसकी कुदरत को अपने साथ करने का रास्ता उसकी इतआत है यानी हुजूर सल्ल0 वाले अमल के रास्ते से उसकी कुदरत को अपने साथ करना है, ये वो लोग हैं जिन्होने अपना किब्ला और अपना माबूद अल्लाह को बना लिया है, यही लोग मुसलमान हैं।

मेरे दोस्तों ! हजरत मौलाना युसूफ साहब रह0 को ये डर सताया करता था कि मेरे मरते ही अल्लाह मुझसे ये न कहे कि ऐ यूसुफ ! तू नबूवत वाली मेहनत को तक्कारों के हवाले करके आया है यानी बयान और तकरीर करने वालों के हवाले करके आया है। हजरत मौलाना युसूफ साहब रह0 इस बात पर बहुत जोर दिया करते थे कि काम को गरीबों मे उठाया जाये और चुन चुन कर गरीबों की बस्तियों मे जाया जाये इसलिये कि हर नबी की सीरत से ये बात साबित है कि नबूवत की दावत को गरीबों ने ही सीने से लगाया है, गरीबों की दावत और उनकी इस्तेकामत पर ही माल वाले और ओहदें वाले इस दावत पर बाद मे आये हैं। तायफ से वापसी पर अगूँरों के बाग मे उत्बा के गुलाम अददास को हुजूर अकरम सल्ल0 ईमान समझा रहे हैं पर उत्बा जो वहीं खड़ा हुआ ये सब देख और सुन रहा था हुजूर अकरम सल्ल0 ने उससे कोई बात नही की।

नबियों की दावत को गरीब ही नकल करता है कि असबाब से नही होता अमल से होता है, माल और ओहदें वाले तो बहस करते हैं कि अगर सबब से नही होता तो अल्लाह ने फिर

दुकानें क्यों बनायी?

दवाऐं क्यों बनायी?

खेत क्यों बनाया?

चीजें क्यों बनायी ?

हॉ, ये तो बहस करेगें और वो हदीस यहॉ नकल करेंगें जिसका मफहूम ये है कि हुजूर सल्ल0 ने हजरत अबुजर गिफारी रजि0 से फरमाया कि ऐ अबुजर हुस्ने तदबीर से अच्छी कोई अक्लमन्दी नही चूँकि ईमान को सीखा नही

इसलिये इस हदीस को असबाब से जोड़ देते है हालॉकि आप सल्ल0 अमल अख्तियार करने के लिये कह रहे है कि मुसलमान पर जब अल्लाह को तरफ से कोई हालात, कोई हाजत या कोई मसला पेश आये तो इसे फौरन अमल की तरफ रूजू होना चाहिये न कि सबब की तरफ यानी मेरा अल्लाह इस वक्त मुझसे क्या चाहता है फिर उस वक्त का जो भी अमल हो उसे अल्लाह के ध्यान के साथ पूरा कर देना ये है हुस्ने तदबीर और यही अक्लमन्दी की बात हैं पर ये लोग इस बात को नही मानेंगें कि अल्लाह ने ये सब कुछ गैरों के लिये बनाया है इसकी एक मिसाल भी ले लो,

एक युनिवर्सिटी से फन की डिग्री हासिल करने वाले एक फनकार अक्सर बंगले वाली मस्जिद मे बयान किया करते हैं कि अल्लाह का जिक्र गफलत के साथ करना भी नफे से खाली नही है, जब कि हजरत मौलाना इलयास साहब रह0 का मलफूज है कि अल्लाह का जिक्र गफलत के साथ करना बाज उलेमा के नजदीक बिदअत है और बाज उलेमा के नजदीक अल्लाह का जिक्र गफलत के साथ करना हराम है तो ये लोग हजरत मौलाना युसूफ साहब रह0 की इस बात को इतनी आसानी से कैसे मान लेगें कि असबाब पर निगाह करके अल्लाह से उम्मीद करना कुफ्र का रास्ता है लेकिन ये लोग नही मानते हैं कि अल्लाह ने ये असबाब गैरों के लिये बनाये है। क्यों कि इन लोगों का अकीदा ये है कि अल्लाह ने असबाब मे बरकत के लिये अमल बतलायें हैं दलील मे ये कुरआन-ए-करीम की आयतों को ही पेश करते हैं हालॉकि कुरआन-ए-करीम की आयतों का मतलब खुदा की कसम ईमान को सीखे बगैर कोई समझ ही नही सकता हॉ, तर्जुमा जान सकता है लेकिन उसका मफहूम ईमान को सीखे बगैर कोई नही समझ सकता।

एक साहब ने बयान किया कि "असबाब को तर्क करना जिहालत है" और

"जो साथी असबाब अख्तियार न करे वो हमारे काम का नही है"

तो मैने अपनी इस्लाह के लिये उनके पास बंगले वाली मस्जिद खत लिखकर ये जानना चाहा कि आपने ये बात सीरत की किस किताब से नकल की है जब कि अबुदर्दा रजि0 कह रहे हैं कि मै तो ये भी न चाहूं कि मस्जिद के दरवाजे पर मेरी दुकान हो जहां तकबीरे ऊला के साथ मै नमाजों का एहतमाम करूं और 300 दिरहम मै रोज नफा कमाऊं और सब अल्लाह के रास्ते में खर्च कर दूं, तो अगर असबाब को तर्क करना जिहालत होता तो अबुदर्दा रजि0 इसका इन्कार क्यों करते ? फिर मैने हजरत रह0 के 1 अप्रेल 1965 के आखिरी बयान का हवाला दिया कि हजरत मौलाना यूसुफ साहब रह0 ने लाहौर मे फरमाया था ! नुबूवत मिलने के बाद हुजूर सल्ल0 ने इंसानों से लेने का कोई रास्ता अख्तियार नही फरमाया, आपने तायफ, तबूक, यमन हजरमौत और नज्द वालों को नमाज बताई जो कलिमा पढ़े नमाज बनाने की मेहनत करे जब यकीन बने कि अल्लाह रब है ओर रास्ता नमाज है, यह दुनिया में चले तो दुनिया की तर्तीब बदलेगी नमाज को अन्दर से बनाओ मसले का अन्दर से ताल्लुक है। जब यह बना लो तो नमाज की बुनियाद पर तीन लाइन ठीक करो घर, कारोबार और मुआशरत।

हुजूरे अक्दस सल्ल0 के वे तरीका ए अमल लाओ जो अल्लाह की जात से पलने के लिए है, आप सल्ल के रास्ते में भी कमाई और घर है और इंसानों के रास्ते में भी कमाई और घर के नक्शे है। रब की बुनियाद पर नमाज और नमाज की बुनियाद पर कमाई यानि जब कमाई से परवरिश नही बल्कि अल्लाह से परवरिश है तो अल्लाह का हुक्म मान कर लेगें। जब यह बात है तो फिर क्यों कमा रहा है ? कि पहले नमाज से परवरिश ली लेकिन नमाज के बाद दो रास्ते हैं कमाना और न कमाना अगर न कमाया और सिर्फ नमाज पढ़कर अल्लाह से ले तो ठीक है। इसमें सिर्फ यह शर्त है कि अगर न कमाओ तो किसी मख्लूक का माल न दबाना और हाल का

इज्हार न करना, सवाल न करना, इसराफ न करना, तकलीफ पहुंचे तो जजा फजा न करना, अल्लाह से राजी रहना अगर इतनी बात आ जाए तो कमाई की जरूरत नही। इसकी मिसाल के लिए चारों सिलसिले के औलिया अल्लाह हैं और हुजूर सल्ल0 हैं, हजरत ईसा अलै0 है, और अस्हाबे सुफफा हैं और लाखों मिसालें हैं कि सिर्फ नमाज से काम चलाया।

अगर कमाना है तो उस पर भी पाबन्दी है अगर कमाते हो तो कमाने की बुनियाद यह है कि कमाई से न मिलेगा अल्लाह से नमाज पर मिलेगा और आपके तरीके से कमाई पर मिलेगा, फिर खुदा देगा। मै पैसे के लिए नहीं कमाऊंगा, बल्कि आपके तरीके कमाई में चलाने हैं, कमाना हुक्म को पूरा करने के वास्ते है, हम यकीन करते हों कि सिर्फ अल्लाह पालेगा। ये हवाला देकर फिर इसी किताब मे दर्ज एक बयान का हवाला दिया कि हजरत मौलाना यूसुफ साहब रह0 ने फरमाया ! कामयाबियॉ लेने के लिये आला किस्म की मेहनत ये है कि इन्सान नक्शों को बिल्कुल लात मार कर अपने अन्दर उन अमलों को चुन-चुन कर पैदा करे जो इसे कामयाबी तक पहुॅचा दें तो फिर इसकी बगैर नक्शा-ए-परवरिश के परवरिश होगी और बगैर नक्शा-ए-हिफाजत के हिफाजत होगी। नक्शों पर लात मार कर अल्लाह से कामयाबी लेने के लिये हम अपनी जात पर दिन-रात मेहनत करने वाले बन जायें तो ये मेहनत की आला किस्म होगी (जिस बयाज मे ये बयानात लिखे हुए हैं वो उन्होने पढ़ी है) कि"जो साथी असबाब अख्तियार न करे वो हमारे काम का नही है" इस बात पर मैने ये जानना चाहा कि क्या हजरत अबुदर्दा रजि0, हजरत अबुहुरैरा रजि0, हजरत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि0, हजरत उबई बिन कआब रजि0 और हजरत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रजि0 वगैराह जिनकी लगभग 700 की तादाद थी ये हजरात हुजूर सल्ल0 के काम के नही थे ? मेरे दोस्तों ! उम्मत को ईमान सीखने के लिये उभारना ही हमारा काम है ताकि ये उम्मत कायनात से नाउम्मीद होकर ईमान को सीखते हुए अमलों के रास्ते से अल्लाह से लेने वाली बने। आज सारी इन्सानियत जिल्लत, तकलीफ, परेशानियों, बीमारियों, कर्जो मे, आमदनियों से खर्च पूरा न होने में, गम और उलझनों मे मुब्तिला है और इन्ही हालात से निकलने के लिये सारी सलाहियत सबब पर लगा रही हैं पर नतीजा कुछ नही।

मेरे भाईयों ! इन तमाम हालात से निकलने का ईमान के सीखने के सिवा खुदा की कसम ! कोई रास्ता नही कि जब मुसलमान ईमान को सीखने पर आयेगा तब इसे खुद पता चल जायेगा कि असबाब से नही होता अमल से होता है अगर असबाब से होता तो असबाब वाले खुदकशी न कर रहे होते कि सबब सारे मौजूद पर काम नही बन रह हैं और खुदकशी कर रहे। अब भी अगर ये बात किसी की समझ मे नही आ रही है कि असबाब से नही होता अमल से होता है तो ये उसके रोने की बात है, अल्लाह से मॉगनें की बात है कि ऐ अल्लाह मुझे ये बात समझा दे और मुझे ईमान को सीखने की तौफीक दे दे। देखो ! हजरत मूसा अलै0 के सामने खिज्र अलै0 ने कश्ती मे सुराख कर दिया, एक लड़के को कत्ल कर दिया और टेड़ी दीवार को सीधा कर दिया। मूसा अलै0 ये सब देखकर नाराज हो रहे हैं इनकी समझ मे नही आ रहा है कि खिज्र अलै0 ने ऐसा क्यों कर रहे हैं हालॉ कि फिर खिज्र अलै0 ने इन सब की वजह भी बतायी कि हमने ये सब क्यों किया हैं, ये बातें अगर मूसा अलै0 की समझ मे नही आ रही थी तो इसमे खिज्र अलै0 की क्या गलती, बात मूसा अलै0 की समझ मे नही आ रही थी तो ये मूसा अलै0 के लिये रोने की बात थी। इसलिये अल्लाह से फायदा उठाने का जाब्ता ईमान व अमल है और अमल की तरफ बतौर यकीन के दावत दी जाये क्योकि अल्लाह की जात से फायदा उठाने का रास्ता आमाल हैं असबाब नही है, खुद हर अमल को वादों के यकीन पर लाओ, अल्लाह तआला को सबब न

पेश करो अमल पेश करो। आज मेहनत है असबाब पर और उम्मीद है अल्लाह से, ये बात जरा समझनी चाहिए कि मेहनत है असबाब पर और उम्मीद है अल्लाह से और लोग समझते हैं कि हम ठीक कर रहे हैं, ये बात मै आपको कैसे समझाऊँ क्यों कि बयान करने वाले अपने बयानात मे ये कहते हुए मिलेगें कि देखो! जाहिरी कोशिश तो हमारे जिम्मे है और करने वाली जात अल्लाह की है। जी हां! आप जरा इस बात की तरफ पूरी तवज्जोह दना कि साथियों से ये कहते हैं कोशिश तो हम असबाब मे करेगें फिर करने वाली जात अल्लाह की है और लोग बेचारे इस बात को सच और हक समझते है।

ताजिर कहता है कि कोशिश तो मै करूंगा तिजारत में लेकिन नफा नुकसान अल्लाह के हाथ में है।

काश्तकार कहता है कि जमीदारा तो हम करेगें लेकिन गल्ला अल्लाह देगें।

हाकिम कहता है कि हुकूमत तो मैं करूंगा इज्जत और गल्बा देना अल्लाह के हाथ में है।

बीमार कहता है कि दवा तो मै खाऊँगा लेकिन शिफा अल्लाह के हाथ में है।

ये सबके सब ये समझे है कि यही सही रास्ता है और तब्लीग और दावत देते-देते हमें खुद यहाँ पहुंचना है और दूसरों को यहां पहुंचाना है जब कि खुदा की कसम ! ये वहां पहुंचे है जहां मुश्रिकीने मक्का पहले से पहुंचे हुए थे। मै आपसे सच्ची बात कह रहा हूं, इन सबका कहना ये है कि यहां पहुंचना है कि

जराअत पर

तिजारत पर

इलाज पर

औलाद के पैदा करने पर मेहनत हम करेगें और कामयाब अल्लाह करेगें हांलांकि मै आपसे बताना चाहता हूं कि जहां हम अपने आपको पहुंचा हुआ समझ रहे हैं, यहां मुश्रिकीने मक्का पहले ही पहुंचे हुए थे। मेरी बात बहुत तवज्जोह से सुननी पड़ेगी, अभी तक हम तब्लीग करते-करते यहां पहुंचे है कि भई मखलूक से नही होता खाालिक से होता है, अभी हम यहां पहुंचे है और समझ रहे है कि ये तब्लीग की आखिरी सतह है और यहीं सबको पहुंचाना है जब कि मुश्रिकीने मक्का यहां पहले से पहुंचे हुए थे। लड़ाई वहां इस पर नही थी कि अल्लाह से होता है या अल्लाह के गैर से होता है, लड़ाई सारी इस पर थी कि जो तरीके आप लेकर आये हैं उन तरीकों से नही होता बल्कि जो शक्लें बनी हुई है इन शक्लों के जरिये अल्लाह से होता है, लड़ाई सारी इस पर थी कि आप कहते हैं अमल से होता है हम कहते हैं सबब से होता है लड़ाई इस पर थी। ये बात याद रखना ताकि अगली बात से आप किसी नतीजे पर पहुंचे कि हम दावत देते-देते यहां पहुंचे है कि कोशिश हमारे जिम्मे है और कामयाबी अल्लाह के हाथ में है, जिस बात पर मुश्रिकीने मक्का पहले से पहुंचे हुए थे। इस किस्से से इस बात को समझो कि एक सहाबी है जिमाद रजि0, ये मक्का मुकर्रमा आये जहाँ एक हल्के में मुश्रिकीने मक्का बैठे हुए थे। उबई बिन खल्फ, अबु जहल, उतबा, शैबा वगैरह सब बैठे हुए थे, ये आपस में बाते कर रहे थे कि ये जो है मुहम्मद सल्ल0 हैं ये हमारे बुतों का इन्कार करते हैं और हमारे पुर्खो के बारे में बुरा भला कहते हैं, उन्हे बेवकूफ कहते है और हमारे दीन में ऐब लगाते हैं। जिमाद कहते हैं कि मेरे दिल में ये बात बैठ गयी कि नाऊजुबिल्लाह यकीकन ये आदमी पागल है या इस पर कोई ओपरा असर है, तभी ऐसी बातें करते हैं। जिमाद कहते हैं कि मैने तय कर लिया कि इस आदमी को ठीक करना है। अब सुनो! जिमाद कहते है कि फिर मै आपके पास गया आपसे मुलाकात की और मैने आपसे कहा कि मैने आपके बारे मे ये बातें सुनी है, मैं समझ गया हूं कि आप पर या तो कोई ओपरा असर है, मै आपका इलाज करूंगा लेकिन शिफा अल्लाह के

हाथ में है। मैने औरों के भी इलाज किये हैं उनको भी अल्लाह ही ने शिफा दी है, मै तो सिर्फ जाहिरी कोशिश करूंगा अल्लाह ने चाहा तो आप भी ठीक हो जायेगें।

मेरे बुजुर्गो-दोस्तो-अजीजों ! ये रास्ता नही है कि शक्लों पर हम मेहनत करेगें और कामयाबी अल्लाह के हाथ में है। खुदा की कसम जितनी पक्की और यकीनी बात ये है कि لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللّٰهُ इतनी ही पक्की बात مُحَمَّدًا رَسُولُ اللّٰهِ भी है कि खुदा के करने के जाब्ते कायनात नही बल्कि मुहम्मद सल्ल0 के आमाल है। सवाल इसका नही है कि आपने असबाब बना लिये अब अल्लाह करने वाले हैं, सवाल इसका है कि आपने अल्लाह से फायदा उठान के लिये अल्लाह को क्या पेश किया ? आज हमने कुरआन सीख लिया, हदीस सीख ली, अमल सीख लिया पर सहाबा रजि0 के तर्ज पर अपनी पूरी जिन्दगी मे ईमान कितने घन्टे सीखा ये हर एक के लिय अपना मुहासबा करने की बात है।

हजरत इब्ने उमर रजि0 ने ये बात ऐसे ही नही फरमायी थो कि हमने अपनी जिन्दगी का बड़ा हिस्सा इस तरह से गुजारा है कि हममे से हर एक ने सबसे पहले ईमान सीखा फिर कुर्आन सीखा और जो भी सूरः हुजूर सल्ल0 पर उतरती थी, हम लोग उसके हराम और हलाल को ऐसे सीखते थे जैसे तुम लोग कुर्आन सीखते हो, अब मै लोगों का देख रहा हूँ कि तुम लोग ईमान से पहले कुर्आन सीख रहे हो और सूरः फातिहा शुरू से आखिर तक सारी पढ़ जाते हो पर तुम्हे पता भी नही की सूरः फातिहा किन कामो के करने का हुक्म दे रही है और किन कामों से रोक रही है और इस सूरः में कौन सी आयात ऐसी है, जहाँ जाकर रूक जाना चाहिए। बस तुम लोग सूरः फातिहा को रद्दी खजूर की तरह बिखेर देते हो यानी जल्दी जल्दी पढ़ लेते हो। (हैसमी 1-165)

हजरत इब्ने मसऊद रजि0 फरमाते हैं कि (ईमान को सीखते हुए) हम नबी करीम सल्ल0 से कुर्आन की दस आयतों को सीखते तो बाद वाली आयते तब सीखते जब पहली आयतों का इल्म, उनका हराम-हलाल और उन पर अमल शुरू कर देते।

(कंज जिल्द-1-232)

हम सब लोग यहॉ पर इस बात को याद रखे कि अल्लाह रब्बुल इज्जत ने हर इन्सान के अन्दर पैदाईशी तौर पर ईमान की इस्तेदाद रखी है इसीलिये अगर कोई बच्चा बालिग होने से पहले मर जाता है तो इसी ईमान की वजह से वो जन्नती होता है। हिन्दु, सिख, ईसाई, यहूदी किसी का भी बच्चा हो ये जन्नती है। हॉ, इन्सान के अन्दर अमल की इस्तेदाद धीरे धीरे पैदा होती है। इसीलिये हर नबी ने अपनी कौम को और रसलुल्लाह सल्ल0 ने सहाबा को सबसे पहले ईमान समझाया है, ईमान जिनकी समझ मे सीख कर आ जाता है फिर उन्ही लोगों पर अहकामात का सिलसिला कायम किया जाता है। इसलिये हम मज्मे को देख कर या लोगों की इस्तेदाद सामने रख कर बात न करें बल्कि जो ईमान उनके अन्दर पैदाईशी तौर पर मौजूद है हम उसकी बात करें अगर लोगों से ये कहते हो कि ये नबियों वाला काम है तो फिर नबियों वाले ईमान की बात करो, बनियों, ताजिरों, काश्तकारों, डाक्टरों, दुकानदारों या मजदूरों वाले ईमान की बात न करो बल्कि नबियों वाले ईमान की बात करो। नबियों वाले ईमान की बात करने मे हजरत रह0 के ये बयानात इन्शाअल्लाह हमारी रहबरी करेंगें।

अब एक बहुत अहम बात को यहॉ पर समझने की कोशिश करो, देखो ! एक है कारे-ए-नबूवत कि जहॉ से जो कुछ होता हुआ नजर आ रहा है ये वहॉ से नही हो रहा है बल्कि अल्लाह के करने से हो रहा है और अल्लाह के खजानों से फायदा उठाने का रास्ता चीजे नही हैं हुजूर सल्ल0 वाले अमल हैं, इसे समझाना ही कारे-ए-नबूवत कहलाता है। अब इस समझाने वाले काम को किस तरह करना है इसे मिजाज-ए-नबूवत कहते है

कि कारे-ए-नबूवत यानी क्या करना है और मिजाज-ए-नबूवत यानी किस तरह करना है, इसे समझाने मे तुम ये न समझो कि आवाम मे ईमान की इस्तेदाद नही है, आवाम मे ईमान की इस्तेदाद है, तुम वो करो जो कहने और करने के लिये कहा जा रहा है पर हम कारे-ए-नबूवत से बेपरवाह होकर मिजाज-ए-नबूवत यानी काम को किस तरह करना है इस पर जान दे रहे हैं और इसी पर झगड़ रहे हैं मौजूदा इख्तेलाफ भी इसी पर है। इसलिये अल्लाह के वास्ते कारे-ए-नबूवत पर आओ कि खुद ईमान को सीखते हुए पूरी उम्मत को ईमान सिखलाओ, ये नबियों का काम है रही अमल की बात तो जितनी जिसके अन्दर अमल की इस्तेदाद होगी उतना वो अमल पर आयेगा।

एक साहब से मैने कुछ वक्त मॉगा कि आपसे कुछ बात करनी है, वो साहब कहने लगे कि आप जो चाहे मुझसे बात करें पर ये बात मैं आपको पहले ही बतला दूॅं कि मैं अहले हदीस हूॅं। मैंने कहा कि मुझे इस बात से कोई लेना देना नही हैं कि आप अहले हदीस हैं, आप मुसलमान हैं यही बात मेरे लिये काफी है कि आप चाहे अहले हदीस हों, देवबन्दी हों, बरेलवी हों या वहाबी हो, ये सारे के सारे पहले मुसलमान हैं बाद मे कुछ भी हों और ईमान का सीखना हर मुसलमान पर सबसे पहला फर्ज है इसलिये आप ईमान को सीखने के लिये रोजाना कुछ वक्त निकालो तो वो कहने लगे कि हॉ, आपकी बात सही है कि ईमान को सीखा जाये लेकिन आज तक हमसे किसी ने ईमान को सीखने की कोई बात ही नही की, अब इन्शा अल्लाह ईमान को सीखने के लिये रोजाना कुछ वक्त जरूर निकालूॅंगा। इसलिये हर मुसलमान को ईमान के सीखने पर लाओ, ये चाहे जिस फिर्के का हो तुम उम्मती बनकर काम करो तो हर एक ईमान के सीखने पर आ जायेगा और अगर तुम किसी फिर्के के बनकर काम करोगे तो इससे फिर्के बनेगें उम्मत न बनेगीं। ईमान का सीखना ही एक ऐसा अमल है जिस पर पूरी उम्मत जमा हो जायेगी, सहाबा किराम रजि0 की जिन्दगी इसका नमूना है, सहाबा किराम रजि0 आलम मे उम्मती बनकर फिरे है किसी फिर्के के बनकर नही फिरे।

आखिर मे अर्ज ये है कि इस किताब (दावत की मेहनत ईमान सीखने की मेहनत है) मे दर्ज तकरीरों को तहरीरी शक्ल देने के लिये बयानात का आम फहम जुबान मे तर्जुमा किया गया है। इन बयानात की बयाज बगंले वाली मस्जिद मे मौजूद है, इस बयाज मे 15 सितम्बर सन 1960 मे लाहौर का बयान और आखिर के बयानात दर्ज नही है, इसी के साथ मौलाना सुहैल कासमी दाम0 की कलम से हजरत रह0 के बयानात के खुलासे की तहरीर भी है। जो बात इस किताब मे हजरत मौलाना यूसुफ साहब रह0 के बयानात मे कही गई है, इसे अपनी दावत मे लाना ही कारे-ए-नबूवत कहलाता है और मिजाज-ए-नबूवत यानी किस तरीके पर करना है इसके लिये हुजूर सल्ल0 और सहाबा किराम रजि0 की सीरत है जिसे अल्लाह ने अपने फजल से हयातुस्सहाबा की तीन जिल्दो मे कलमबन्द करा दी है।

अभी 26 दिसम्बर सन 2016 मे संम्भल मुरादाबाद उ0प्र0 मे हुए इज्तेमा से सारे आलम के काम करने वाले साथियों को ये हिदायत दी गयी है कि इस काम के लिये जिस साथी की बात तय हो उसे बात करने से पहले हजरत मौलाना यूसुफ साहब रह0 के बयानात का मुताला करके कि हजरत की मंशा क्या थी और हजरत मुसलमानों से क्या चाहते थे बात करने वाले को वही बात करनी है वरना हजरत मौलाना यूसुफ साहब रह0 के बयानात का मुताला किये बगैर दावत के मिम्बर से बात करन की किसी को गुंजाईश नही है बल्कि ऐसा करना इस काम के साथ और मज्मे के साथ खयानत है। जब बयानात का मुताला करेगें तब हमे पता चलेगा कि हजरत मौलाना यूसुफ साहब रह0 किस बुनियाद पर उम्मत को उठाना चाह रहे थ अगर बयानात का मुताला नही करेगें तो किसी बड़े खतरे का शिकार हो जायेगें, हम समझेगें कि हम तब्लीग का काम कर रहे हैं और

अन्दर शिर्क का माददा पैदा हो रहा होगा। हजरत अली रजि0 ने मुसलमानों को खतरे से बचाने के लिये ही (कि जिसकी जो समझ मे आये वो मस्जिद के मेंम्बर से बयान कर दे और लोग बयान सुनकर खतरे का शिकार हो जाये) बसरा की सारी मस्जिदों के मिम्बरों को तुड़वा दिया था कि कोई बयान करने वाला कहीं कोई बयान नही करेगा सिर्फ हसन बसरी रह0 को बयान करने की इजाजत दी थी। हजरत मौलाना यूसुफ साहब रह0 के बयानात पर आज तक दुनियॉं मे किसी ने उगंली नही उठाई, इस सदी के सबसे बड़े अहल ए इल्म हजरत मौलाना सैययद अबुल हसन नदवी रह0 (अली मिंयॉ) और हजरत मौलाना मंजूर नोमानी रह0 जैसी हस्तियॉं भी हजरत रह0 के बयानात की कायल थी इसलिये कि हजरत रह0 ने ईमान के साथ अमल को समझाया है पर आज हमारे बयान करने वालों पर उगंलियॉ उठने के साथ फत्वे भी जारी होने लगे आखिर इसकी वजह क्या है ? इसकी वजह ये है कि बयान करने वाले मुसलमानों को खुद उनकी जरूरत ना समझा कर उम्मत की जिम्मेदारी समझा रहे है हालॉकि हर एक शख्स की सबसे पहली जरूरत ईमान है। हजरत रह0 ने हमेशा अपने बयान का मौजू ईमान को बनाकर ही ईमान के साथ अमल को समझाया है, हजरत ने कुरआन पाक की जिन आयतों पर कभी बयान नही किया आज उन्ही आयतों से बात शुरू होती है फिर उन्ही आयतों पर बात खत्म करके अल्लाह के रास्ते में निकलने की तश्कीलें की जा रही है अगर ईमान के मौजू से गाफिल होकर अमल को समझाया जायेगा ता ये बात याद रखने की है कि अमल के साथ मसाएल और फत्वे हैं और इन्ही दो चीजों पर मुसलमानों के अलग अलग मसलक बने हैं पर ईमान के साथ ऐसा नही है क्यों कि ईमान का तआल्लुक तक्वे से है। अल्लाह पाक हम सबको हजरत मौलाना इलयास साहब रह0 और हजरत मौलाना यूसुफ साहब रह0 की बातों को ही सामने रखकर नबूवत की इस आली मेहनत को करने की तौफीक अता फरमाये।

शकील अहमद

<u>इस बयान की असल किताब बंगले वाली मस्जिद मे मौजूद है</u>

हजरत मौलाना यूसुफ साहब रह0

बाद नमाज फज्र बंगले वाली मस्जिद

28 सितम्बर सन 1964

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

मेरे भाइयों-दोस्तों और बुजुर्गो ! मेहनत करने के लिये दुनियॉ मे दो रास्ते हैं और दोनों रास्ते एक दूसरे के मुकाबले पर हैं, इन दोनो मे से एक रास्ते पर आज मेहनत हो रही है पर दूसरे रास्ते की मुसलमानों को खबर नहो है। जिस रास्ते की खबर नही है वो अंबिया अलै0, सहाबा किराम और औलिया की मेहनत वाला रास्ता है, मुसलमानों ने अंबिया अलै0, सहाबा किराम और औलिया वाली मेहनत से हटकर उनके मुकाबले वाली मेहनत को आज अपना मैदान बनाया हुआ है अगर मुसलमान अंबिया अलै0, सहाबा किराम और औलिया वाले रास्ते पर चलने वाले बने तो हमेशा के लिये दुनियॉ व आखिरत मे नेमतों के दरवाजे खुल जायें लेकिन इस रास्ते पर मेहनत करने के लिये हमे उस रास्ते से मुकाबला करना होगा जिस मेहनत से आज हमे जिन्दगी बनती नजर आ रही है, जब हम इस चालू मेहनत से मुकाबला करेगें तब दूसरे लोग भी इस चालू रास्ते से अपने हाथ खीचेंगें ऐसा होने पर ही हुजूर सल्ल0 वाली मेहनत का रास्ता चालू होगा। इसलिये उन आदमियों को जो हुजूर सल्ल0 के लाये हुए रास्ते की मेहनत करें उनमे से हर एक आदमी को पचास सहाबा रजि0 के बराबर सवाब मिलेगा और दुनियॉ मे पचास सहाबा रजि0 के साथ जितनी मदद आती थी, हर एक आदमी की उतनी मदद होगी।

मेहनत की ये दो लाईने है एक लाईन मे अंबिया अलै0, सहाबा किराम और औलिया ये तीनो एक लाईन के है, उनके अलावा सब एक लाईन के है। मुसलमान नबियों वाली लाईन का इन्सान है पर मुसलमान अपने को इस लाईन का समझ नही रहा है, इसी वजह से ये गलत लाईन की मेहनत को अख्तियार किये हुए है। इसी गलती के नतीजे मे मुसलमान आज मुसीबतें भुगत रहा हैं, आज हम अपने रास्ते को पहचान नही रहे हैं, मेहनत करना ये बहुत बड़ी बात है पर हमारे सामने हमारी मेहनत का बरास्ता ही नही है। मुसलमान होते हुए हम उस लाईन पर मेहनत कर रहे है जिस लाईन को गर्क कराने, जिस लाईन को नेस्तो नाबूद कराने और जिस रास्ते पर चलने वालो की शक्ले बदल वाने अंम्बिया अलै0 आते थे कि इन्सान सुअर और बन्दर बन जायें। अंम्बिया अलै0 जिस लाईन को नेस्तो नाबूद कराने आये थे, हम उसी लाईन की मेहनत पर चल रहे है। आज जिस लाईन पर चलकर हम अपनी जिन्दगी बनाना चाह रहे है ये नाकामी वाला रास्ता है लिहाजा इस लाईन से अब अपने आपको मोड़ना और अम्बिया अलै0 वाली लाईन पर डालना ये है कामयाबी का रास्ता। जो रास्ता आज चालू है वह हम सबके सामने है वो मुल्क व माल का रास्ता है, मुल्क व माल वाले रास्ते मे सबसे पहले माल कमाना फिर माल से चीजें लाना ओर चीजों से अपनी जिन्दगी बनाना, ये नबियों वाला रास्ता नही है फिर नबियों वाला रास्ता क्या है ?

नबियों वाले रास्ते मे सबसे पहले अल्लाह की बड़ाई को दिल मे बिठाया जाता है, अल्लाह की बड़ाई को दिल मे बिठाने के लिये जमीन व आसमान मे जो कुछ है उसकी बड़ाई को दिल से निकाला जाता है। इसलिये मेहनत बाद मे करना पहले सातो जमीन व आसमान की हैसियत पहचान लो फिर अल्लाह का पहचानो कि अल्लाह कैसे है ? इसके लिये सबसे पहले जमीन व आसमान मे जितने नक्शे फैले हुए है उनको पहचानो। अल्लाह को पहचानने वाला रास्ता अंम्बिया अलै0 वाला रास्ता है, अंम्बिया अलै0 जो रास्ता लाये हैं उसमे अल्लाह ने सबसे

पहले जमीन व आसमान और उसके अन्दर की चीजों को बतलाया है, ये इस रास्ते का पहला कदम है पर जिसको पहला कदम उठाना नही आया उसके आखिर तक के सारे कदम खराब हो जायेगें, अब पहला कदम क्या है ? कि पहला कदम لَاإِلَٰهَإِلَّااللَّهُ है और यही अंम्बिया अलै0 का बिल तफरीक कलिमा-ए-मेहनत है सिवाय इसके अंम्बिया अल0 की मेहनत का कोई और उन्वान नही था।

अब لَاإِلَٰهَإِلَّااللَّهُयह क्या है ? कि सातों जमीन व आसमान और इसके दर्मियान मे जो कुछ है उससे कुछ नही होता अल्लाह के करने से होता है। जो दिख रहा है उससे नही होता, इनसे ना होने की वजह ये है कि ये सब बना हुआ है और ये आम फहम बात है कि बने हुए से नही होता बनाने वाले से होता है। अब रही बात कि इनको किस ने बनाया है ? इन सबको अल्लाह ने अपनी कुदरत से बनाया है और जब तक चाहेगें इन्हे बाकी रखेगें फिर जब चाहेगें इनको खत्म कर देगें। अल्लाह ने गल्ले से गल्ला, बीज स दरख्त और इन्सान से इन्सान नही बनाये बल्कि जो कुछ बनता है अल्लाह उसे अपनी कुदरत से बनाते है। हम क्या सोचते हैं कि हमारे पास जो कुछ है उसे हमने अपनी मेहनत से बनाया है, जिस तरह अल्लाह जानवरों से जानवर और

औरत से बच्चा बनाते है इसी तरह हमारे पास जो कुछ है इसे हमने अपनी मेहनत से बनाया है।

इसका क्या मतलब है कि अल्लाह जानवरों से जानवर और औरत से बच्चा बनाते है कि अल्लाह बच्चा बनाने मे जानवर और औरत के मोहताज हो गये, अरे अहमक ! अल्लाह तो पाक है वो आजिज और मोहताज नही है, जब जमीन व आसमान नही थे तो कसे बनाये ? कि अल्लाह ने अपनी कुदरत से बनाये, हर जिन्स के पहले को अल्लाह ने अपनी कुदरत से बनाया है और कुदरत खुदा की सिफत है, जिस तरह पैदा करना खुदा की सिफत है उसी तरह कुदरत भी उसकी सिफत है और ये कुदरत उसकी जात मे मौजूद है। अल्लाह जब पैदा करना चाहेगें या पैदा किये हुए को खत्म करना चाहेगें वो अपनी कुदरत से कर देगें, अल्लाह जलील करना, नफरत देना या पालना चाहेगें अपनी कुदरत से कर देगें, बच्चा मॉ के पेट और मनी के कतरे से नही बन रहा है बल्कि अल्लाह की कुदरत से बन रहा है। जब कुदरत से है तो कुदरत हर जगह चलेगो, चाहने से जो चाहे बना दें या चाहने से जो चाहे न बनाये। आगे चलकर इस दुनियॉ मे जो कुछ होगा वह अल्लाह की कुदरत से होगा, अंम्बिया अलै0 जो ये कलिमा لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللَّهُ लाये हैं कि अल्लाह की जात के अलावा से कहीं कुछ नही होता। उन्ही की कुदरत से किसी को नक्शा मिलता और छिनता है, माल के नक्शों मे परवरिश होती है और परवरिश बिगड़ती है।

ला इलाहा इल्लल्लाहु वहदहु ला शरीका लहू

कि कोई शरीक नही है, अल्लाह जो चाहते हैं इन सबके बगैर करते हैं अगर तुम आग मे गिर पड़ो, मछली के पेट मे चले जाओ, तुम पर हजारों तलवारें पड़े पर अल्लाह मारना न चाहे तो तुम्हारा एक बाल भी न टूटेगा। अल्लाह अपनी कुदरत मे आजाद है वो चाहे अपनी कुदरत से उनमे करके दिखायें या चाह अपनी कुदरत से कहीं और करके दिखायें लिहाजा अब तुम बताओ कि कामयाबी का क्या रास्ता है ?

जिससे होता नही उस पर मेहनत करना या जिससे होता है उस पर मेहनत करना ?

जिससे होता नही उस पर मेहनत करना कि मरी भैंस से दूध निकालने की मेहनत करना, इस पर तो हर एक कहगा कि भई ! मरी भैंस से दूध नही निकलेगा। ऐसे ही जितनी भी मेहनतें आज की जायें वह सब बेकार है, जब मुल्क व माल से नही होता तो हम जो भी मेहनत कर रहे है यह बेकार जायगी इसलिये जिन्होने ऐसे पर मेहनत की जिससे कुछ नही होता, कल को ऐसे आदमियों को खून के ऑसू रोना पड़ेगा ये मेहनत करने वाला

चाहे वजीर हो, सदर हो, गरीब हो, अमीर हो ख्वाह कोई हो इसको दुनियॉ मे मुसीबतें और बलाऐं घेरे रहेगीं और आखिरत मे कभी खत्म न होने वाला अजाब मिलेगा। ये गलत मेहनत का नतीजा है कि वहॉ पर मेहनत करना जहॉ से होता नही है और वहॉ मेहनत न करना जहॉ से होता है, ये खून के ऑसू रूलाने वाला रास्ता है।

मुल्क व माल के जितने दीवाने है हिन्दुस्तान की बदहाली का हाल इनके सामने है इनसे कहो कि अगर मुल्क या माल से होता है तो इस वक्त अल्लाह इस मुल्क मे बदहाली ला रहा है अगर तुझसे होता है या मुल्क व माल से होता है तो हिन्दुस्तान मे खुशहाली लाकर दिखा दें। आज हम पर अल्लाह की कुदरत से बदहाली के ये जूते पड़ रहे हैं और उस वक्त तक पड़ते रहेगें जब तक आदमी खुद खत्म न हो जाये या इसकी ऑखे न खुल जाये, इसलिये जो इस रास्ते पर मेहनत करेगें जहॉ से होता नही है तो ये सारे लोग मुसीबतों का शिकार होगें। नबियों वाला रास्ता ये है कि अल्लाह के अलावा कहीं से नही होता, मियॉ कहीं से भी नही होता बस अल्लाह की कुदरत और उसके चाह लेने से होता है। सोना, चॉदी, रेशम और राकेट से नही होता, यहॉ एक आदमी की मौत या हयात का, इज्जत व जिल्लत का सवाल नही है बल्कि जमीन व आसमान के दरम्यान के सारे मसअले अल्लाह की कुदरत से हो रहे हैं और करने के एतबार से कोई उनका शरीक नही है। अल्लाह बगैर शिरकत के सिर्फ अपने फैसले से करते है बस हुक्म दे देते हैं वह होता चला जाता है, जो वह हुक्म देगें वही सब जगह होगा, जिस पर हुक्म आ रहा है उनसे कुछ न होगा।

अंम्बिया अलै0 वाले रास्ते का ये पहला कदम है कि सारी बातों मे अल्लाह की तारीफ करनी पड़गी कि सब कुछ अल्लाह ने किया है, वही मौत और जिन्दगी का इन्तेजाम दूसरों पर चलाता है,

वो खुद नही सोता दूसरों को सुलाता है,
वो खुद नही खाता दूसरों को खिलाता है,
वो खुद नही पीता दूसरों को पिलाता है,
वो खुद नही पहनता दूसरों को पहनाता है,

अल्लाह की जात सारी हाजतों से पाक है लिहाजा उसमे कभी तगययुर नही होता। सारी खबरें उसके हाथ मे हैं वो हर चीज पर कुदरत रखने वाला है, सारा का सारा निजाम अल्लाह की कुदरत से चल रहा है और जब चाहेगें उसको बदलेगें कोई और ताकत उसको बदल नही सकती और ना ही कोई ताकत उसको रोक सकती है। सारे वजूद के सिलसिले अकेले उसी से चल रहे है, इसलिये कामयाबी और नाकामी को खूब अच्छी तरह समझ लो कि जिनसे होता नही नाकामी वहॉ पर मेहनत करने से आती है और कामयाबी आयेगी वहॉ मेहनत करने से जिससे होता है। जो यहॉ से कामयाब होने की मेहनत करेगें तो चाहे हजार क्यों न हो सब कामयाब हो जायेगें और जो वहॉ से कामयाब होने की मेहनत करेगें जहॉ से कामयाबी नही मिलती तो चाहे सारा मुल्क क्यों न भरा हो ऐसी मेहनत करने वाले लोगो से, ये सब नाकाम होगें। सिर्फ वो कामयाब होगें जो वहॉ से कामयाबी लेने की मेहनत करे जहॉ कामयाबी है। इस रास्ते से कामयाबी लेने वाले लोग न किसी से लड़ेगें, न झगड़ेगें बस एक दूसरे को फायदा पहुँचाना ही इनका मकसद होगा कि ये है अम्बिया अलै0 वाला रास्ता।

नूह अलै0 ने इस पर मेहनत की तो खुदा ने अस्सी आदमियों को छोडकर् सारी दुनियॉ को पानी से भर दिया लिहाजा जब वो कश्ती दुनियॉ मे आयी तो सारी दुनियॉ उन अस्सी आदमियों को मिली जिन्होने असल कामयाबी पर मेहनत की थी। आज हुकूमत कह रही है कि मच्छर मारो तो पूरा महकमा मच्छर मारने वालों का बन गया इनका काम दवाईयों को खरीदना और उसको छिड़कना ताकि मच्छर मरे इसलिये कि इन मच्छरों से

निजाम-ए-सेहत खराब हो रहा है बिल्कुल इसी तरह खुदा की कसम! ऐसे इन्सानो से जिनसे इन्सानी जिन्दिगियों को नुकसान पहुॅच रहा और निजाम-ए-अमल खराब हो रहा है अल्लाह उनको भी इसी तरह हलाक करते हैं जिस तरह मच्छरों को हलाक किया जाता है कि अल्लाह उन इन्सानो को खत्म करते है जो वहॉ मेहनत कर रहे हैं जहॉ कामयाबियां नही हैं और वहॉ मेहनत नही करते जहॉ से कामयाबी आती है।

यह है لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ जो इससे खाली है अल्लाह के यहॉ उसकी हैसियत मच्छर के बराबर भी नही है। जिस तरह हमारे यहॉ मच्छरों के निजाम की कोई हैसियत नही इसी तरह उन इन्सानों के निजाम की खुदा के यहॉ कोई हैसियत नही लिहाजा अब तुम्हारा काम यह है कि लोहे, पीतल, दवाओं और जमीन व आसमान मे जो कुछ है उसका इन्कार और उसकी तरदीद करो कि भई ! दुकान से नही होता अल्लाह से होता है और अल्लाह का फैसला चीजों पर नही होता अमल पर होता है।

आप क्या काम करते हैं ?

मैं दुकान करता हूॅ।

आओ फलॉ इलाके मे कलिमा फैलाऐ,

साहब दुकान बन्द करूॅ तो खाऊॅगा कहॉ से ?

पहले तो तू दुकान का इन्कार कर क्यों कि तूने दुकान बन्द करूॅ तो खाऊॅगा कहॉ से कह कर لَاإِلَهَ إِلَّا اللهُका इन्कार कर दिया। आज हमारे ऊपर सारी आफतें इन्ही बोलों की वजह से आ रही है इसलिये ये न कहा करो कि दुकान बन्द करूॅ तो खाऊॅगा कहॉ से, तुम जहाजों को देखकर, सोना या चॉदी देखकर यही कलिमा बोलो कि इनसे नही होता अल्लाह करता है। अपनी भी तरदीद हो कि मैं नही करता अल्लाह करता है, बीबी कह रही है कि आज दुकान नही जाओगे तो शाम के खाने का क्या होगा? तो कहो कि मैं नही खिलाता अल्लाह खिलाता है सब कुछ अल्लाह करता है अल्लाह मेरे रहते भी तुझे खिलाएगा और मेरे मरने के बाद भी तुझे खिलाएगा। हर जगह ये बोला जा रहा हों कि इससे नही होता अल्लाह करता है।

यह कलिमा لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ सीखना ज्यादा लम्बा-चौड़ा काम नही है, कामयाबी के लिये लोहे, पीतल, दवाओं, फौजों, मेम्बरों, वजारतों की जरूरत नही है बल्कि इनकी तरदीद और इन्कार की जरूरत है। ये कलिमा नबियो वाला कलिमा है पर आज जमींदारों, दुकानदारों ने इस कलिमे को अपने नक्शो मे ढाल लिया कि मेरी मुलाजिमत, मेरी जमीन, मेरी दुकान से नही होता अल्लाह करता है लेकिन अल्लाह बगैर मुलाजिमत, बगैर जमीन और बगैर दुकान के कैसे करेगे ?

भई अपनी कुदरत से करेगें,

जब पैसे ही नही होगें तो फिर कैसे करेगें ?

भई ये तो गैर मुसलमानो वाला खुदा है जो पैसो के बगैर नही करता, हमारा खुदा किसी का मोहताज नही है वो तो बेनियाज है एक हुक्म देगा बस हो जायेगा, यह है لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُबस इसे सीखना पड़ेगा। हॉ, इतनी बात याद रखना कि जुबान से बोलने को सीखना नही कहते, जुबान कहे कि जहर से नही होता और दिल कहे कि खालूगॉ तो मर जाऊॅगा तो इसने

لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُनही सीखा। जुबान बोले या न बोले जैसे ही कोई शक्ल तुम्हे सामने दिखे तो दिल फौरन ये कहे कि इससे नही होता ये है لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ अब अगर गर्वनर साहब, वजीर साहब, सदर साहब जो भी कामयाब बनना चाहे उसको कामयाब बनने के लिये यह कलिमा चाहिये कि जितनी शक्लें जमीन व आसमान के

दरम्यान फली हुई है उनसे कुछ नही होता। आज खुदा का फेल गैर पर मौकूफ करते हुए मुसलमानों को शर्म नही आती कि अल्लाह बगैर मुलाजिमत, बगैर जमीन और बगैर दुकान के कैसे करेगे ?

अरे ! खुदा जो कुछ करेगें अपनी कुदरत से करेगें कि साहब जमीन व आसमान नही होगा तो कैस पैदा करेगें ?

इस सवाल से ये मालूम होता है कि अल्लाह जमीन व आसमान के बगैर पैदा नही कर सकते हैं अगर ये बात है तो हमारे दिल मे जमीन व आसमान की अहमियत है खुदा की नही है।

अम्बिया अलै0 कलिमा لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللّٰهُ लाये और कहा इस कलिमे को लेकर फिरो और आवाज लगाओ और इतनी आवाज लगाओ कि दिल मे शक्ल से न होने की तरदीद बैठ जाये कि शक्ल से न होगा जो शक्ल से पाक है उससे होगा। जब तुम्हारी जुबान कहे कि खेती से, सोने से और दुकान से नही होता और दिल भी यही कहे तो समझो तुमने कलिमा لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللّٰهُ सीख लिया और ये कलिमा सातों जमीन व आसमान की कुंजी है इसके बोलने पर तुम्हे जमीन से भी फायदा पहुँचेगा और आसमान से भी फायदा पहुँचेगा इसलिये इसको खूब बोलते रहो कि

माल से या मालदार से,
जमीन से या जमीनदार से,
दुकान से या दुकानदार से,
ओहदों से या ओहदेदारों से नही होता, अल्लाह से होता है। जो अल्लाह को करना है सारी दुनियॉ उसे रोक नही सकती और जो उसे नही करना सारी दुनियॉ उसे कर नही सकती यह है कलिमा

لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللّٰهُ

एक दफा तो यूँ कहा कि अल्लाह करते हैं और सौ मर्तबा यूँ कहें कि मियॉ दुकान नही होगी तो कैसे होगा, खेती नही होगी तो कैसे होगा, इस तरह तो सौ बरस भी कलिमा لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللّٰهُ नही आयेगा। इसलिये जब तुम दूसरो की दुकान की तरदीद और इन्कार करो तो अपनी दुकान भी उसमे शामिल करो, यह नही कि चिल्ला खत्म होगा तो अपनी दुकान की खबर लूँगा वरना दुकानदारी खराब हो जायेगी, नही ! जिस तरह दूसरों की जमीन से, दुकान से नही होता अल्लाह करता है उसी तरह हमारी भी जमीन से और दुकान से नही होता बल्कि खुद हमसे भी नही होता है सब कुछ अल्लाह करता है अब रही बात कि अल्लाह कैसे करता है ? तो अल्लाह अपनी कुदरत से करता है, जमीन व आसमान तो बना हुआ है पर यहॉ ये बात समझ लेना कि बना हुआ और है, कुदरत और है। अल्लाह बने हुए को तोड़ेगा पर उसकी कुदरत आजाद है, कुदरत किसी मेहनत और शक्ल की पाबंद नही है कि आप चाहे अपनी मेहनत से मुल्क व पैसा हासिल कर ले, नही ! आपके चाहने से ये नही होगा बल्कि अल्लाह को अगर मुल्क व पैसा देना होगा तो देगें वरना नही देगें और मुल्क व पैसा देकर चाहे जिन्दगी बिगाड़ दें या बना दें।

इसलिये सबसे पहले कलिमा لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللّٰهُ की आवाज लगानी पड़ेगी और इसी के साथ-साथ हमे इस बात की कोशिश भी करनी हैं कि जो आवाज हम लगा रहे है लोग भी इस आवाज को लगाने के लिये तैयार हो जायें, ये एक जबर्दस्त मेहनत है। अब इसको करते फिरो और मेहनत करते-करते कम अज कम तुम तो बदल जाओ, ये नही कि जब सबका यकीन बदल जाये तब ही कुछ होगा, नही ! अगर तेरा यकीन ठीक हो गया तो तू बदलेगा और तेरे बदलने पर खुदा दूसरों को बदलेगा। ये कलिमा **لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللّٰهُ** मेहनत करने के लिये है जैसे कलिमा

दुकान मेहनत करने के लिये ह, मेहनत करने को ये कलिमा لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللَّهُ है और इसके लिये एक काम दिया गया है जब तक कलिमा لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللَّهُ की हकीकत न आये उस वक्त तक तुम ये न समझो कि तुम्हे दुकानें और खेतियॉ करनी हैं, नही ! बल्कि जब तक कलिमा لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللَّهُ न आ जाये उस वक्त तक तुम्हे दुकानें और खेतियॉ नही करनी हैं।

अब यहॉ पर सवाल ये पैदा होता है कि मोलवी साहब इन्सान शक्ल के खौफ से ही मायल हुआ करता है इसलिये अल्लाह से लेने के लिय कोई शक्ल भी तो होनी चाहिये ? अच्छा जी, शक्ल भी ले लो तो वो शक्ल है नमाज की कि नमाज कायम कर और अल्लाह से मॉग, कलिमा لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللَّهُ वाला यकीन दिल मे हो और मुहम्मद सल्ल0 के तरीके के मुताबिक तेरे हर-हर अजु का इस्तेमाल हो कि जाहिर मे हुजूर वाली शक्ल हो और बातिन मे हुजूर वाली कैफियत हो (खुजुऊ और ख़शुऊ हो) बस अब तेरी नमाज सारे मसअलों के वास्ते हो गयी। अब रोटी, कपड़ा, सवारी, जो चाहिये नमाज पढ़कर अल्लाह से मॉग, अब वकील के पास न जा नमाज पढ़कर अल्लाह से मॉग। यही शक्ल नूह अलै0 ने अख्तियार की थी कि जब कलिमे की मेहनत और कलिमे का यकीन दिल मे आया तो अब दुआ मॉगी कि ऐ अल्लाह इन्होने बहुत सताया अब तू इन्हे खत्म करके हमको बाकी रख फिर अल्लाह ने आसमान को भी ऐसा कर दिया कि पानी इस तरह निकल रहा था जैसे परनालों से निकलता है और जमीन से भी पानी इस तरह निकल रहा है जैसे समन्दर से निकलता है। यह था कलिमा-नमाज का कमाल, जिस कलिमा-नमाज की आज सारे अहमक तौहीन कर रहे है कि जहॉ जाओ वहॉ इसी का तज्किरा है कि मोलवी साहब सिर्फ कलिमा-नमाज की बात कर रहे है, अरे ! कुछ और भी तो होना वाहिये ? इस अहमक और अहमक नशीन को क्या मालूम, इसने कभी सज्दा तो किया नही, इसने तो बस सर जमीन पर रख देने को सज्दा समझा हुआ है।

अरे ! इस सवाल का जवाब तो खुद उसके जिम्मे है, उसके ही नही बल्कि हर उस शख्स के जिम्मे इस सवाल का जवाब देना है जो अल्लाह और अल्लाह के रसूल का कायल है। उसके जिम्मे है कि इस बात का जवाब वो खुद दे कि ए दुनियॉ वालो मैं तुम्हे कलिमा-नमाज से करके दिखाता हूँ, पर तुम्हे तो दुकानों और खेतों से ही फुर्सत नही है और यहॉ हजरत मुहम्मद सल्ल0 को और अंबिया अलै0 को बेवकूफ बताया जा रहा है, जिन्होने सारे मसअले कलिमा-नमाज से हल कराये। इसीलिये कुरआन एक-एक नबी का वकिया खोल-खोल कर बतला रहा है और तुम कह रहे हो कि कलिमा-नमाज से क्या होगा? तुम्हे बताऊॅ आज कलिमा-नमाज की किस तरह तौहीन हो रही है तो सुनो, यहॉ उर्स हुआ, उर्स मे वजीर को बुलाया, जब वजीर आ गया तो सारे खुश हो रहे हैं कि साहब आपके आने से हमारी मज्लिस मे जीनत हो गयी।

मेरे अजीजों ! जरा बताओ ? किसी मज्लिस मे गधे के आने से रौनक घटती है या बढ़ती है? जिस इन्सान के दिल मे कलिमा न हो वो अल्लाह के यहॉ पाखाने से भी ज्यादा पुलीद है और यहॉ इस पंडित वजीर के आने से बुजुर्ग की मज्लिस की जीनत बढ़ गयी। अरे ! ये तो औलिया किराम की तौहीन है कि कलिमा-नमाज वालें औलिया किराम के दर पे एक पंडित वजीर के आने से मज्लिस की जीनत बढ़ गयी, जीनत नही बढ़ गयी बल्कि वजीर को बुलाने वालों ने कलिमा-नमाज की तौहीन की।

सुनो ! अबु बक्र को कलिमा-नमाज ने ही अबु बक्र से हजरत अबु बक्र सिददीक रजि0 बनाया है, मुईनुददीन चिश्ती को कलिमा-नमाज ने ही ख्वाजा मुईनुददीन चिश्ती रह0 बनाया है वरना ये तो मनी के कतरे थे, हम तो तब जानते जब ख्वाजा मुईनुददीन चिश्ती रह0 कलिमा-नमाज न सीखते और फिर वली बनकर दिखाते ? क्या

ख्वाजा मुइनुददीन चिश्ती रह0 ने मुसलमानो से ये कहा था कि तुम लोग वली न बनो शैतान बनो ? वलायत का दरवाजा कयामत तक खुला हुआ है और हजरत मुहम्मद सल्ल0 की जिन्दगी हर एक को वली बनाने वाली है। हजरत मुहम्मद सल्ल0 की जिन्दगी को अपनाना ही वलायत है इसलिये सारी शक्लों को लात मारो और لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ की शक्लों से लेना तैय करो, अब अल्लाह से कहो कि ऐ अल्लाह हमे भी वही नमाज सिखा जो तूने अबु बक्र रजि0 और औलिया किराम को सिखायी थी। जब कलिमा-नमाज न होगा तो डूबने से कैसे बचेगा? अगर आज मुल्क मे जंग छिड़ जाये और बम गिरने लगें तो बता खाली मुल्क व माल से कैसे बचेगा? ये अमरीका और रूस जो आज खुदा बने बैठे हैं जब वो खुद आग की लपटो से नही बच सकते तो उस आग से उनके परस्तार और उनके पूजने वाले, वो इस मुल्क व माल से कैसे बचेगें? अगर तू ये नही जानता कि कलिमा-नमाज से सब कुछ हो जायेगा तो तू जाहिल है तू कुछ नही जानता।

मेरे भाईयों ! कलिमा-नमाज के बगैर कुछ नही होता लेकिन मुल्क व माल के बगैर सब कुछ होता है। ये बता कि अगर तू इसी जिहालत के साथ मर गया कि खाली कलिमा-नमाज से कुछ नही होता तो मुल्क व माल से तेरे साथ कब्र मे क्या होगा ?

कलिमा-नमाज से तू कब्र के अजाब से बच जायेगा या नही?

जहन्नम से बच जायेगा या नही?

अगर तूने ये कह दिया कि कलिमा-नमाज से क्या होगा? तो अल्लाह तुझसे कहीं कयामत मे ये न कह दें कि तू ही कहा करता था कलिमा-नमाज से क्या होगा तो जा दोजख मे जा कि तेरे कलिमा-नमाज से वाकई कुछ नही होता। इसलिये पहले कलिमा-नमाज सीख लो, कलिमा ये है कि जितनी शक्लें ऑखों से दिख रही हैं उनकी तरदीद दिल मे बैठ जाये कि इनसे नही होता। अब कायनात और कायनात के अन्दर की शक्लों की तरदीद हमारे दिल मे कैसे बैठे? इसके लिये हमे क्या करना पड़ेगा ? इसके लिये हमे कलिमा-नमाज को लेकर फिरना पड़ेगा लेकिन फिरने के वक्त अपनी जुबान से होशियार रहना क्यों कि जुबान निफाक की जगह है अगर जुबान बोलती है लेकिन दिल तस्दीक नही करता तो ये निफाक है जैसे जुबान कहे कि जहर से नही होता और दिल कहे कि खालूगॉ तो मर जाऊॅगा तो ये निफाक है इसलिये इससे होशियार रहना, हॉ अगर जुबान नही बोलती सिर्फ दिल बोलता है तो ये ईमान है, जुबान भी बोलती है और जुबान के साथ दिल भी बोलता है तो भी ईमान है। जुबान बोलती है कि मेरी मेहनत से माल नही आता तो कलिमा आता है। इसलिये इन्कार करो कि किसी से नही होगा अल्लाह करेगें, वो चाहेगें पैसे से करेगें और चाहेगें तो बगैर पैसे के करेगें, उनका फेल किसी चीज पर मौकूफ नही है, कितने ही वजीर हमारी ऑखें के सामने अस्पतालों मे सड़-सड कर मर रहे हैं सारा मुल्क उन्हे मरने से नही रोक पा रहा है।

आज लोग कहते हैं कि मियॉ कारखाना बना लो तो कामयाब होगे, तुम कहो कि कारखाने से क्या होगा? यकीन ठीक करो कि अल्लाह करता है और अमल पर करता है अगर अमल ठीक होगें तो अल्लाह कर देगें, ये नही कि अब तुम भी इन्ही की तरह बोलने लगो कि हॉ भाई ! कामयाब होने के लिये कारखाना भी होना चाहिये, परवरिश के लिये जमीनदारा भी चाहिये, शिफा के लिये दवा भी चाहिये, ये तो वही बात हुई कि मंदिर मे पहुॅचे तो मंदिर वाली बात और गिरजा मे पहुॅचे तो गिरजा वाली बात कह दी, इस तरह बोलने से कलिमा नही आयेगा बल्कि हर जगह ये बात कहो कि इससे नही होता अल्लाह करते हैं और ये बात हमेशा अपने सामने रखो कि ये नबियों वाला रास्ता है और नबी मुल्क व माल मे नही धुसते थे बल्कि उन्होने तो माल वालों से यूॅ कहा कि ऐ माल वालों माल को इस-इस तरह खर्च करो वरना बर्बाद हो जाओगे, यूसुफ अलै0 ने यूॅ नही कहा था कि

तुम्हारे मुल्क से हो जायेगा बल्कि उन्होने यूँ कहा था कि अगर तुम अपने मुल्क की फलाह चाहते हो तो मैं अल्लाह की मंशा को सामने रखकर उसके मुताबिक मुल्क को चलाऊँगा तब ही तुम कहत से बच पाओगे।

قَالَ اجْعَلْنِي عَلَىٰ خَزَائِنِ الْأَرْضِ إِنِّي حَفِيظٌ عَلِيمٌ

(सूर यूसुफ-55)

अरे ! हजरत मुहम्मद सल्ल0 तो बड़ी चीज हैं हजरत अबु बक्र और हजरत उमर रजि0 ने भी मुल्क व माल नही चाहा, उन्होने तो मुल्क को खतरे से निकालने के लिये कहा था कि मुल्क को मेरे हाथ मे दे दो फिर मैं सही तरीके पर इसे चलाऊँगा जिसकी वजह से तुम खतरे से बच जाओगे। आज बच्चों का नाम यूसुफ रखते हैं कि वो भी तो वजीर और बादशाह बने थे, ये बोलकर तुमने यूसुफ अलै0 के कलिमे का मजाक और कलिमे की कुदरत वाले का मजाक उड़ाया है। जो वजारत और बादशाहत पर बैठकर उनके कलिमे का मजाक उड़ाये या बैठकर उसका मजाक सुने उनके लिये ये बड़े खतरे की बात है, अरे ! इस वजारत का उस वजारत से क्या तआल्लुक।

हमे तुम्हे तो ये जज्बा बनाना चाहिये कि हमे मुल्क व माल नही चाहिये हम तो कलिमा चाहते है, ये मुल्क व माल रह या न रहे बस कलिमा-नमाज हमारे दिल मे आकर सारी दुनियॉ मे फेल जाये मगर ये याद रखना कि नमाज तो खुद दूसरे अमलों पर मौकूफ है अगर दूसरे अमलों को किये बगैर नमाज पढ़ी जायेगी तो नमाज का तसव्वुर कायम होगा हकीकत न आयेगी अगर आप सारी तारीख से आंख बन्द करके यूं कहे कि खाली नमाज से क्या होता है? तो मै भी यही कहता हूं कि बगैर ईमान सीखे खाली नमाज से क्या होगा। मुहम्मद सल्ल0 ने नमाज से पहले जो अमल बतलाये हैं पहले वो अमल कर, आज तो अच्छे-अच्छे नमाजी ये कहते हैं काम कराने के लिये वजीर का भी ताअल्लुक चाहिए, अरे नमाज का और वजीर के ताल्लुक का क्या जोड़ है कि जब पाखाने मे फूल को मिला दिया तो फूल की हैसियत खत्म हो गयी, इसी तरह जहां नमाज का वजीर से जोड़ा बिठाया बस नमाज की जान निकल गयी। जहॉ नमाज को पैसे से मिला दिया बस नमाज की जान निकल गयी, नमाज की हकीकत पाने के लिये नमाज से पहले तीन मेहनतें हैं और हकीकत को बाकी रखने के लिये तीन मेहनतें नमाज के बाद में हैं, पहली तीन मेहनतें,

1-यकीन बदलने की

2-इल्म की

3-ध्यान की

यकीन बदलने की मेहनत

अब सबसे पहले यकीन को बदलने की मेहनत करो इसलिये कि एक यकीन देखकर पैदा होता है और एक यकीन सुनकर पैदा होता है। देखकर क्या यकीन बनता है कि हुकूमत से यह होगा, चीजों से यह होगा, माल से यह होगा और एक यकीन अम्बिया के वाकियात को सुनकर, वादे और वईद सुनकर, जन्नत दोजख को सुनकर, फरिश्तों के निजाम को सुनकर बनता है, तुम मस्जिद में बैठकर इन्हे इतना सुनो कि जब कोई चीज देखो तो सुनने वाला यकीन सामने आ जाये। तुमने बाजार मे वजीर को आते देखा, इधर मस्जिद मे तुमने सुन रखा था कि हुकुमत से कुछ नही होता अल्लाह से होता है अब उस सुने हुए का यकीन गालिब आ जाये कि इस वजीर से कुछ नही होता। अब सुनना और बढ़ाओ, खूब गौर से सुनो अल्लाह के सामने पेशी और जहन्नम के अजाब को सुनो, फिरऔनी हुकूमत की डूबने की नियत करके सुनो, जब गौर से सुनोगे तो तुम्हारे अन्दर का यकीन बाहर के यकीन को फेंक कर मारेगा।

सहाबा इकराम ने मक्का के अन्दर जो सबसे पहले मेहनत की है वो यकीन की मेहनत है। मुशाहदे के मुकाबले में यकीन की मेहनत करनी पड़ती है, अबुजहल कह रहा है कि ऐ मुहम्मद तुम कहते हो लात और उज्जा कुछ नही करते पर हम लात-उज्जा के मानने वाले हैं, वो सब कुछ कर देगें। मुश्रिक सहाबा को मार रहे हैं, पीट रहे हैं पर सहाबा कह रहे है अल्लाह हमारी पिटाई करा कर हमारा इम्तिहान ले रहे है। अल्लाह जब हमारे मुवाफिक करने पर आ जायेगे सब कुछ कर देगे, एकदम से पलट देगें और बद्र मे पलट कर दिखला दिया।

इल्म की मेहनत

इसी तरह एक इल्म सुनकर आता है और एक इल्म देखकर आता ह तुम मस्जिद में बैठो, यहाॅ कुरआन हदीस सुनकर जो इल्म आता है वह हासिल करो। देखकर इल्म आता है कि सोने से ये होगा, घी से ये होगा, दूध से ये होगा, दो चीजों को मिला देने से ये होगा, इस चीज से ये बनेगा और इस चीज से ये बिगड़ेगा। तुम मस्जिद में बैठकर यह इल्म हासिल करो कि अमल से क्या क्या होता है कि अमल के फायदे को पता करो और बदअमली पर नुकसान को पता करो। अब दिखने वाले इल्म के मुकाबले में सुनने वाले इल्म की मश्क करो।

ध्यान की मेहनत

इसी तरह एक ध्यान देखकर बनता है और एक ध्यान मश्क से बनता है, दिखने वाला ध्यान ये है कि कोठी देखी थी अब उसका ध्यान आया और एक ध्यान बनता है मश्क से कि इतना अल्लाह का तज्किरा करो और सबसे कटकर तन्हाईयों मे बैठकर इतना अल्लाह का जिक्र करो कि तुम्हारी जुबान के बोल उसके ध्यान से दिल मे इतना भर जाये कि देख रहे हो औरत को पर ध्यान आ रहा है अल्लाह का, देख रहे हो फौज को ध्यान आ रहा अल्लाह का अगर नमाज पढ़ो यह यकीन हो कि हमारी नमाज के रूकू कायदे सज्दे से अल्लाह राजी होगें जो मागूंगा कुदरत से देगें।

ऐसा बनने के लिये जिस्म के एक-एक जुज को इल्म की शक्ल पर ले आओ। जब नमाज मे तम्हे अल्लाह का ध्यान आ जाये तो यही नमाज तुम्हे कामयाबी दिलवायेगी, ईमान की मश्क के साथ नमाज पढ़ेगें तो मेरे अल्लाह मेंरे लिये रिज्क के दरवाजे खोलेगा। इन्ही दो पर सातों जमीन व आसमान का जवाल है, जब कलिमा नही रहेगा सब खत्म हो जायेगा, तुम तो अपनी छोटी-छोटी दुकाने लिये फिर रहे हो कि ये खत्म न हो जाये और मैं कहता हूँ अगर पूरा मुल्क भी खत्म हो जाये तो ये परवाह की बात नही बस हमे कलिमा नमाज आ जाये, इस कलिमा नमाज से सब कुछ होने के यकीन को ही ईमान कहते है। हमारे कान ईमान को इतना सुन रहे हो कि दिल तस्दीक कर दे कि अल्लाह करते हैं, इसके लिये

एक तरफ ईमान की दावत होगी,

एक तरफ इल्म के हल्के होगें,

किस चीज का इल्म ? इसका इल्म कि कलिमे से क्या-क्या हो सकता है ?

अभी तक तो हमने जिहालत को जाना है इल्म तो जाना ही नही है, लम्बा-चौड़ा इल्म नही बस

एक इल्म हमे चाहिये कलिमे और नमाज का,

दूसरा इल्म हमे चाहिये तरदीद का और आमाल का,

फिर जिक्र करो और इतना जिक्र करो कि सबका ध्यान निकल जाये सिर्फ अल्लाह का ध्यान बाकी रह जाये। अभी हमारा हाल क्या है कि सडक पर सफेद चमड़ी की पिस्तान उभरे हुए औरत जाते देखी जिसके बारे मे हमे ये भी पता नही कि इसके पेट मे कितना गू भरा हुआ है, कितना पेशाब भरा हुआ है, कितना जिना भरा हुआ

है, कितने आशिकों के कत्ल भरे हुए है, इसका कुछ पता नही बस सफेद चमड़ी देखी तो अब जहॉ जा रहे हैं उसी का ध्यान है हत्ताकि नमाज मे भी उसी का ध्यान है।

अब बताओ नमाज मे कहॉ है खुदा का ध्यान और कहॉ है ये खुदा की नमाज?

क्यों कि नमाज तो खुदा के ध्यान के लिये ही है तो ये कहॉ है खुदा की नमाज, ये तो गधों की नमाज है। जब गधों का ध्यान है तो गधों की नमाज है, जिस चीज का ध्यान होगा उसी की नमाज है और जिसकी नमाज है उसी से दुनियॉ व आखिरत के मसाएल हल कराओ कि जिसके लिये नमाज थी उसी के पास जाओ। इस वास्ते तुम जिक्र किया करो कि नमाज मे खुदा का ध्यान आ जाये अगर नमाज मे खुदा का ध्यान आ गया फिर हर जगह खुदा का ही ध्यान आयेगा। देखने मे भी खुदा का ध्यान आयेगा, सुनने मे भी खुदा का ध्यान आयेगा फिर जब किसी औरत पर तेरी निगाह पड़ेगी तो तेरे अन्दर ध्यान आयेगा कि ये मनी का कतरा है पता नही कितनी खराबियॉ इसमे भरी होगी अगर बहुत ज्यादा नेक सीरत भी हो तो यूँ सोच ले कि मैं नामहरम को क्यों देखूँ इनका देखना हराम है, मैं तो जन्नत मे इन्हे न देखने के बदले मे हूरें लूँगा।

एक महल के सामने बहुत से लोग वजीर के इस्तगबाल के लिये जमा थे उसी मज्मे मे एक दिल जला भी खड़ा था, उस दिल जले को कलिमा-नमाज आता था, महल मे बादशाह अपनी खूबसूरत औरत के साथ सोहबत करने मे मशगूल था पर खिड़की ढाकना भूल गया था, बादशाह की उस खिड़की से दिल जले पर निगाह पड़ी तो उस दिल जले के चेहरे की हैबत से बादशाह की ऐसी तबीयत खराब हुई कि फिर मरते दम तक उसने कभी सोहबत न की। बादशाह ने उसके पास जाकर कहा कि ऐ मर्दे मोमिन सबने मुझको धोखा दिया पर तुझे देखकर मैं जाना की मै खुद ही धोखे मे हूँ और ये कह कर उसके पैर पकड़ लिया। तो मेरे अजीजो ! अल्लाह के ध्यान पर ये वजीर तुम्हारे पैर पकड़ लेगें लेकिन अभी हमे कलिमा-नमाज आता नही है पर इसका आना बहुत आसान है कि तुम चार, छ, आठ महीने इस तरह लगा दो कि कलिमा-नमाज आ जाये फिर अपनी लाईनो मे जाकर चलो। पहले तो दुकान से नमाज थी और अब नमाज से दुकान है, अब मैं कमाई मे रहते हुए कमाई की तरदीद करता रहूँगा कि दुकान पर खुदा के कलिमे की वजह से बैठा हूँ जब खुदा का दूसरा हूक्म आयेगा उस वक्त उस हुक्म पर चल दूँगा कि अब आ गयी अजान की आवाज तो लो आ गया खुदा का हुक्म अब मै चला।

इसलिये कि दुकान से परवरिश नही होती खुदा परवरिश करते है फिर कुरआन व हदीस से पैसे के अमल लो कि कुरआन व हदीस ने कहॉ पर कितना खर्च करने को बताया है? जितना खुद पर खर्च करने को बताया है उतना पैसा खुद पर खर्च करो, जितना बीबी-बच्चो पर खर्च बताया है उतना उन पर खर्च करो फिर गराबों, मिस्कीनों, मोहताजों, बेवाओं पर जितना पैसा खर्च करने को बताया है उतना पैसा उन पर खर्च करो। पैसा इल्म की सूरत के साथ खर्च करो। अब आगे चलो यहॉ तुम किसी के न बनो अल्लाह के बनो, दुनियॉ मे जो तुम्हारी जिन्दगी गुजरे खुदा के बन्दे होने की हैसियत से गुजरे। याद रखो हम मुसलमानो के तरफदार नही है, किस तरह? जिस तरह आज पार्टीयों की तरफदारी है कि उसमे पार्टी का मुफाद हाता है, सब पार्टीयों ने मुफाद की सोची है और आज हर पार्टी जालिम है। कभी हम मुल्की गैर मुल्की की, कभी हम यहूदी कभी नसारा की तरफदारी करेगें, कभी हम मुस्लिम कभी गैर मुस्लिम की तरफदारी करेगें। हमे किसी एक की तरफदारी नही करनी अगर जालिम मुसलमान है तो गैर मुस्लिम का साथ देना होगा अगर जालिम मुल्की है तो गैर मुल्की का साथ देना होगा। यह देखना पड़ेगा कि इस मसअले मे जालिम कौन है और मज्लूम कौन है?

हमे तो हर हाल मे मज्लूम का साथ देना और जालिम का मुकाबला करना है, जब हम ऐसा करेगें तो दुनियॉ

की तरफ खिचेगी और जो नही खिचेगा वह अपने आप खत्म होता चला जायेगा, बड़ी-बड़ी हुकूमते होंगी उन्हे खुदा मच्छरों की
तरह बर्बाद करेगें अगर बड़े-बड़े मालदार हैं तो उन्हे कारून की तरह जमीन मे धंसा कर दिखायेगें।

इस बयान की असल किताब बंगले वाली मस्जिद मे मौजूद है

बाद नमाज मग्रिब बंगले वाली मस्जिद

01 रबीउल अव्वल 1384 हिजरी

بِسْمِاللّٰهِالرَّحْمٰنِالرَّحِيْمِ

मेरे अजीजो और दोस्तों ! अल्लाह रब्बुल इज्जत ने इन्सानों की दुनियाँ व आखिरत की कामयाबी और नाकामी के लिये कुछ उसूल और शरायत तय कर दिये हैं जो इन्सान उन उसूल और शरायत को पूरा करेगें वो कामयाब होगें और जो इन्सान उन उसूल और शरायत को नजर-अन्दाज करके जिन्दगी गुजारेगें वो नाकाम होगें। अल्लाह के तय किये हुए उन उसूल और शरायत का तआल्लुक इन्सान के जिस्म के आजा से है कि इसकी आँख कान जुबान इन सबका तआल्लुक उसूल और शरायत से है। इन्सान दुनियाँ के चाहे जिस शोबे म जाये ये वजीर-ए-आजम हो या लखपति या करोडपति हो ही क्यों न हो, ये कुत्ते के जिन्स मे दाखिल नही होगा इन्सान ही रहेगा अगर ये चाँद पर जाकर रहने लगे तो भी ये इन्सान ही रहेगा, इसकी कामयाबी और नाकामी का फैसला उन्ही उसूल और शरायत पर होगा जिसे अल्लाह ने इसके के लिये तय कर दिया हैं।

इसकी इज्जत या जिल्लत का फैसला,

इसके नक्शों की कामयाबी या नाकामी का फैसला,

इन सबका तआल्लुक उसूल और शरायत के साथ जिन्दगी गुजारने और न गुजारने पर है अगर इन्सान दुनियाँ के ही नक्शे बनाने मे लगा रहे और जिन्दगी गुजारने के जो उसूल और शरायत हैं उनकी तहकीक किये बगैर उन उसूल और शरायत के खिलाफ जिन्दगी गुजारता रहे है तो ये दुनियाँ के जिस नक्शे मे भी होगा वहाँ नाकाम होगा।

दुनियाँ के तमाम इन्सान अम्बिया, सहाबा, औलिया, मशाएख और मुरीदीन सब इसी जाब्ते मे आते है, हर इन्सान के वजूद मे देखा जायेगा कि उसने कामयाबी के असबाब अख्तियार किये है या नाकामी के अगर ये अपनी जात मे कामयाबी के असबाब लिये फिर रहा है तो गधे पर, ऊँट पर, खच्चर पर भी कामयाब और अगर असबाब नाकामी के लिये फिर रहा है तो राकेट में, जहाज में, मोटर मे भी नाकाम। अल्लाह पाक ने कामयाबी के असबाब सारे इन्सानो को बराबर दिये हैं और जिन नक्शों से कामयाबी-नाकामी का कोई तआल्लुक नही है वो इन्सानो को कम या ज्यादा दिये हैं। आँख, कान, जुबान, हाथ, पैर, रूह और शर्मगाह सबको बराबर दिये हैं ये सारे असबाब-ए- अमल खुदा ने इन्सानो को बराबर तक्सीम किये है। मुल्क के सदर के अन्दर जितना इन्सानी सरमाया है उतना ही सरमाया जेलखाने मे बन्द मुजरिम के अन्दर भी है। हकीकत और वाकियात के एतबार से कामयाबी के असबाब इन्सानो को बराबर दिये हैं, जैसे

दो आँखें फकीर के पास भी हैं और बादशाह के पास भी।

एक जुबान ताजिर के पास भी हैं और काश्तकार के पास भी।

दो कान मजदूर के पास भी हैं और मालदार के पास भी।

अगर इन्सान अपनी जात के सरमायों को जाया करेगा तो वो अगर वजीर-ए-आजम भी होगा उसके सर पर जूते पड़ेगें और उसे आग का भी शिकार होना पड़ेगा। आज इन्सान जिन मुसीबतों और बलाओं का शिकार है वो धोखे की मेहनत मे मुब्तिला होने की वजह से है, इन्सानों ने आज कामयाबी नक्शों मे करार दे रखी है खुद अपनी जात मे नही, बस यही इनकी सबसे बड़ी हिमाकत है।

नाकामी की मेहनत

मेरे अजीजों ! एक मेहनत नाकामी की है और दो मेहनतें कामयाबी की हैं, नाकामी की मेहनत ये है कि इन्सान रात दिन नक्शे बनाने मे लगा रहे कि हिफाजत का नक्शा बन जाये, परवरिश का नक्शा बन जाये, पैदावार का नक्शा बन जाये। न अमल का कोई म्यार कायम रहे न खुदा की जात का यकीन दिल मे बाकी रहे बस नक्शे ही के एतबार से बोले, उसी के एतबार से सोचे और उसी के एतबार से देखे, जिसका सोना-जागना नक्शे ही के एतबार से होगा और जो इस नुक्ते पर मेहनत करेगा वो नाकामियों का शिकार होगा। ये चाहे जम्मूरियत मे रह रहा हो, चाहे डिक्टेटर मे रह रहा हों। मौत से पहले-पहले अगर इनकी ऑख न खुली तो खुदा कब्र मे डालकर आग बिछवायेगें, सांप काटने आयेगें फिर ये चीखे मारेगा। हुजूर सल्ल0 ने फरमाया कि तुम अगर मुर्दे की चीख सुन लो तो तुम्हारी जान निकल जाये फिर इसके बाद जहन्नम मे डाल दिया जायेगा। ये है नक्शां वालों का अन्जाम चाहे माल वाले हों या मुल्क वाले हों, आज हमारे सामने जितने भी ऐश करते फिर रहें वो कल को मुसीबतों का शिकार बनने वाले हैं, आज जितने बाअख्तियार नजर आते हैं कल को बे अख्तियार बनने वाले है, मुल्क व माल के नक्शों पर मेहनत नाकामी की महनत है। दो मेहनते वो हैं जो इन्सान को कामयाबियों तक पहॅुचाती हैं इनमे से एक मेहनत अदना किस्म की है और एक मेहनत आला किस्म की है।

कामयाबियों की मेहनत

अदना किस्म की मेहनत ये है कि इन्सान नक्शों को छोड़कर उनका यकीन दिल से निकाले और फिर नक्शों के खिलाफ यकीन हासिल करके अमल की तरतीब पर आये फिर इन अमलों को इस खास यकीन के साथ अपने नक्शों मे चलाये तो ये अदना किस्म होगी।

आला किस्म की मेहनत ये है कि इन्सान नक्शों को बिल्कुल लात मार कर अपने अन्दर उन अमलों को चुन-चुन कर पैदा करे जो इसे कामयाबी तक पहॅुचा दें तो फिर इसकी बगैर नक्शा-ए-परवरिश के परवरिश होगी और बगैर नक्शा-ए-हिफाजत के हिफाजत होगी। नक्शों पर लात मार कर अल्लाह से कामयाबी लेने के लिये हम अपनी जात पर दिन-रात मेहनत करने वाले बन जायें तो ये आला किस्म होगी।

अब नक्शों को बिल्कुल छोड़ दें या नक्शों की बेड़ियॉ न रहे, इन दोनो किस्मों के लिये हक तआला शानुहू ने दुनियॉ मे मस्जिदें बनवाई हैं जिन मस्जिदो को आज हमने राहत कदे बना दिये है कि इनके अन्दर आमद बहुत सारी बना दी गयी कि ये मस्जिद इतनी मालदार है, ये मस्जिद गरीब है और ये मस्जिद छोटी सी है। जिन मस्जिदों मे आमदनी की शक्लें है उसे कहते हैं कि ये मस्जिद बहुत मालदार है और जो मस्जिद पुराने जमाने की बहुत लम्बी-चौड़ी बनी हुई है इनमे आमदनी की शक्लें नही है उसे कहते हैं कि ये मस्जिद बहुत गरीब है। हजरत मुहम्मद सल्ल0 की मस्जिद नक्शों से पाक थी इसलिये कि वो मस्जिद अमलों से पलने के लिये बनी थी,

जहॉ अन्धे खेती वालों,

अन्धे दुकान वालों,

अन्धे हुकूमत वालों को उस मस्जिद से दिलो की रौशनी मिलती थी, ये दिलों की रोशनी नक्शों का यकीन दिल से निकलने पर हासिल होती थी। नक्शों के यकीन क मुकाबले पर अल्लाह की जात से कामयाबी लेने का यकीन पैदा किया जाता था फिर अल्लाह की जात से कामयाबी लेने के लिये अमल दुरूस्त किये जाते थे लेकिन आज मस्जिदें नक्शों का नक्शा बन गयी हैं। आज मस्जिदों के अन्दर लड़ाईयॉ हो रही है इमामो की और बाहर लड़ाईयॉ हो रही है मालदारों की कि मुतवल्ली कौन बने? आज अगर मस्जिद की दुकाने तोड़ दी जायें और मस्जिद के नाम जो जायजादें हैं उन्हे खत्म कर दिया जाये, बिजली निकाल ली जाये या पंखे निकाल कर इसे हजरत मुहम्मद सल्ल0 के जमाने की मस्जिद बना दी जाये, जिसमे इमाम का काम ये है कि सुबह को ईमान की

मज्लिस कायम करे, ईमान से फायदा हासिल करने के लिये तालीम का हल्का कायम कराये, जिस खुदा से ईमान के रास्ते फायदा हासिल करना है उस खुदा का जिक्र कें जरिये ध्यान पैदा कराये पर ये सारी जिम्मेदारी मुतवल्ली की है कि वो इमाम से हजरत मुहम्मद सल्ल0 को मस्जिद वाले सारे काम कराये। आज अगर मस्जिद को नक्शों से खाली कर दिया जाये और आमदनी की कोई शक्ल न रहे तो कोई इमाम बनने को तैयार न हो, मुतवल्ली बनने और मुअज्जिन बनने को भी तैयार न हो। ये इमाम और मुतवल्ली मस्जिदों मे नमाज पढ़ने के बजाय शायद घर मे ही नमाज पढ़ लें कि मस्जिद मे कहीं कोई झाडू न पकडवा दें। हजरत मुहम्मद सल्ल0 के जमाने मे उनकी मस्जिदों मे वुजू का पानी भी न था लेंकिन उन मस्जिदों मे वो आमाल थे जिन आमाल पर

चूहे दीनार लेकर थे,

आसमान से पके-पकाये खाने उतरते थे,

अन्धेरों मे अगठों से रौशनी निकला करती थी,

पानी की जरूरत पर बादल आकर बरसते थे,

मेरे अजीजों ! आज आमाल की मेहनत मस्जिदों से निकल गयी, तुम्हारा दिल यकीन की, मुहब्बत की और नियत की जगह है, सबसे पहले दिल पर मेहनत करो कि नक्शों का यकीन दिल से निकले फिर आमाल से कामयाबी मिलने का यकीन दिल मे पैदा करो, ये याद रखना कि परेशानियों का खात्मा अमल पर होगा। इन्सानियत के अन्दर खुदा की कुदरत से फायदा हासिल करने के लिये दिल से लेकर आजा-जवारे तक जिस्म के हर अजू पर मेहनत करनी होगी। ये मस्जिदें तुम फकीरो से, भिख मँगगों से भीख मॉगने के लिये नही बनवाई गयी हैं बल्कि ये मस्जिदें तुम फकीरो को खुदा के खजानों से दिलवाने के लिये बनाई गयी है। जिस गनी की तरफ उस घर की निस्बत है, वो वजीरो को भी, सदर को भी, आलिम को भी, मालदारो को भी, बादशाहों को भी फकीर

करार देता है।

وَاللّٰهُ الْغَنِيُّ وَأَنْتُمُ الْفُقَرَاءُ

जरा जवाब दो कि गनी का घर फकीरों से लेने के लिये बनता है या फकीरों को देने के लिये बनाया जाता है ? ये मस्जिदें वजीरों को, फौज को, जमींदारों को, मालदारों को देने के लिये ही बनी हैं कि यहॉ से मिलेगा, ये मस्जिदें माल की तक्सीम और चीजों की तक्सीम के लिये ही बनी हैं।

कहतसाली दूर करने के लिये,

पैदावार को कीड़ों से बचाने के लिये,

सैलाब को रूकवाने के लिये,

जन्नत लेने के और दोजख से बचने के लिये,

दुनियॉ व आखिरत की सारी मुसीबतों से बचने के लिये ये मस्जिदें बनायी गयी हैं, तुम यहॉ से लेने की मेहनत करो, ऑखों के, जुबान के, कानों के अमलों पर मेहनत करो, खड़े होने पर मेहनत करो, झुकने पर मेहनत करो, माथा टेकने पर मेहनत करो कि खुदा को कौन सी नक्ल व हरकत पसन्द है। कामयाबी वाले आमाल जिन्दगी मे पैदा करो और नाकामी वाले आमाल जिन्दगी से निकालो, ये मेहनत करने का एक रास्ता है इस रास्ते पर मेहनत करो।

बाजार और मस्जिदें

आज जमीनों पर, मजदूरियों पर, चीजों पर मेहनत है कि जिस तरह चीजों के नक्शे बना-बनाकर लोग बाजार मे जाकर पेश करते हैं और उसके बदले चन्द कौड़ियॉ और चन्द पत्थर अपने घरों मे खुश होकर ले आते है। नक्शे वालों का मरकज बाजार है कि हमने ये कपडे बनाये है, ये बरतन बनाये है, ये धागा बनाया है, ये सूई बनाई बनायी है फिर इन बनायी हुई चीजों को बाजार मे लाकर पेश किया अब खरीदने वाला इन चीजो को हमसे खरीद कर पैसे दे गया फिर उस पैसे को लेकर उसी बाजार मे हमने किसी चीज का इन्तिखाब करके कि इससे सर्दी मे हिफाजत होगी इसे घर ले चलो फिर उस चीज को हम खरीद कर अपने घर ले आये। एक सिपाही से लेकर मुल्क के वजीर-ए-आजम तक बाजार से चीजें ला-लाकर अपनी जिन्दगी बना रहे है, ये बाजार से बड़े बनकर लेते हैं हम बाजार मे छोटे बनकर उन्हे वो चीजें बेच देते हैं, बाजारी जिन्दगी हकीर है, अल्लाह के यहॉ गधा इतना हकीर नही, रन्डी इतनी हकीर नही जितना हकीर बाजारी आदमी है।

इधर बाजार के मुकाबले पर मस्जिद बनायी गयी है जहॉ अमलों को बनाकर अल्लाह के सामने पेश करो कि ऐ अल्लाह मैंने तेरे वाले अमल बनाये हैं वो तुझे पेश कर रहा हूँ अब तू अपनी कुदरत ये मेरी जिन्दगी बना दे। जो फरिश्ते फज्र की नमाज से लेकर असर की नमाज तक इसके साथ होते हैं, जहॉ-कहीं भी इसने अमल बनाये वो आमाल को लेकर वहॉ जाते हैं जहॉ अल्लाह के सामने इन्सान के अमल पेश होते हैं, इसलिये अल्लाह की मर्जी के मुताबिक अमल पेश करके अल्लाह से इत्मिनान, हिफाजत, सुकून और परवरिश मॉगो, अमल पेश करके अल्लाह से हिदायत मॉगो, यहॉ जमीनदार,काश्तकार को भी अमल पेश करके मॉगना होगा, फकीर और मालदार को भी अमल पेश करके मॉगना होगा।

कान सही सुनेगे या गलत सुनेगे,
बदन सही बैठेगा या गलत बैठेगा,
ऑख सही देखेगी या गलत देखेगी,
जुबान सही बोलेगी या गलत बोलेगी,
दिमाग सही सोचेगा या गलत सोचेगा,

जो यहॉ आया नही उसका पत्ता तो पहले ही कट गया कि जो अदालत के सम्मन पर न आये उसका वारन्ट कट जाता है, जो मस्जिद मे न आया उसके लिये तय हो जाता है कि

इसके ऊपर मुसीबतें डाल दो,
इसके ऊपर बीमारियॉ डाल दो,
इसके नक्शों मे आफते डाल दो,
इसके ऊपर गम और फक्र डाल दो,
इसके ऊपर परेशानियॉ और तंगी डाल दो,

मस्जिद से सम्मन आया था اَللّٰہُ اَکْبَرُ اَللّٰہُ اَکْبَرُ सुनकर भी ये नही पहुँचा तो अब हो सकता है इसके जमींदारा मे कीड़े पड़ जायें या बाजार मे आग लग जाये या दुकान मे नुकसान हो जाये। उसकी जिन्दगी की बरबादी क फैसले के लिये, कारोबार के उजड़ने के लिये, जलील-रूसवा और परेशान हाल होने के लिये इतनी बात काफी है कि

हमने तुमको बुलाया था तुम क्यों नही आये ?

एक ताजिर आदमी اَللّٰہُ اَکْبَرُ اَللّٰہُ اَکْبَرُ सुनकर आ गया तो पेश करो तुमने तिजारत मे कौन से अमल किये ? गैरूल्लाह के एतबार से अमल किये या हमारे एतबार से अमल किये ?

अगर अमल खराब निकले तो मस्जिद मे आकर भी फैसला नाकामी का होगा कि मस्जिद का नमाजी है फिर भी इसकी नाकामी का फैसला किया जा रहा है, आज जेलखाने मे नमाजी जा रहा है क्यों ? इसलिये कि ये नमाजी तो है पर बदअमल इन्सान है, इसके पास नमाज की सूरत तो है नमाज की हकीकत नही है कि शेर तो है पर मुर्दा है। आज मस्जिद मे आने वाले नमाजियॉ का अमल से पलने का जहन नही है बल्कि नक्शों और चीजों से पलने का जहन बना हुआ है। याद रखना कामयाबी की शुरूआत नमाज से होगी, दुनियॉ व आखिरत की सारी फलह व बहबूद और हिफाजत नमाज पर है।

हजरत नूह अलै0 के जमाने मे अक्लियत चमकी और अक्सरियत डूबी सारा किस्सा नमाज का है, नबियों के जमाने मे जो नक्शों की तब्दीली है वो सारी नमाज पर है। जिसके नक्शे बने हुए थे उनके नक्शे बिगड़ और जिनके नक्शे बिगड़े हुए थे उनकी जिन्दगी बनी, ये सारी बुनियाद नमाज पर थी। वो नमाज जिस नमाज से नमाजी खाता है, नमाज से पीता है, नमाज से हिफाजत लेता है,

वो वजीरों के मुकाबले मे बगैर वजारत के कामयाब,

वो कोठी-बंगले वालो के मुकाबले मे बगैर झोपड़ी क कामयाब,

इसकी जरूरत पर आग गुलजार हो जायेगी, पानी मे सड़के उतर आयेगी, दुश्मनों की निगाहें और दिल बिठा दिये जायेगें, ये सब उनके साथ होगा जो नमाजी नमाज से पहले तीन मेहनतें करे और नमाज के बाद भी तीन मेहनतें करे। जो नमाज नही पढ़ रहे हैं उनकी सातों गयीं और जो नमाज पढ़ रहे हैं उनकी छ मेहनतें छूटी पड़ी है।

नमाज की पहली मेहनत

नमाज की सबसे पहली मेहनत नक्शों से होने का यकीन दिलों से निकालो कि पैदा होते ही पहली आवाज जो कान मे डाली गयी اَللّٰهُ اَكۡبَرُ और आज भी रोजाना तुम्हारे कानों मे पॉच मर्तबा यही आवाज पहुॅचायी जा रही है। अल्लाहु अकबर-अल्लाहु अकबर اَللّٰهُ اَكۡبَرُ اَللّٰهُ اَكۡبَرُ कि जहॉ तक तेरी निगाह पहुॅचे उसे देखकर समझो और सीखो कि अल्लाह बड़े हैं। एक आदमी के बाराह बच्चे हैं हर बच्चा अपने बाद वाले से बड़ा है अब अगर सबसे बड़ा वाला अब्बा की बड़ाई मे खुद को बराबर करने लगे कि मै तो ग्यारह से बड़ा हूॅ तो दो-चार दफा तो बाप बर्दाश्त कर लेगा आखिर मे एक दिन कह देगा कि मेरा-तेरा कोई जोड़ नही तू मेरे घर से निकल जा। बाप होना बड़ी जिन्स है बेटा होना छोटी जिन्स है, आज बड़ा-बड़ा कहते-कहते बाप के मुकाबले मे अपनी बड़ाई बैठ गयी, बाप के मुकाबले मे अपनी चलाने लगा तो बाप की जायजादों से महरूम, दुकान से महरूम, दिन-रात जो बड़ाई कानों मे पड़ती है वो एक-दूसरे के मुकाबले मे बड़ाइ है। एक चपरासी से लेकर मुल्क के वजीर-ए-आजम और सदर तक, कुऐं से समन्दर तक की बड़ाई जो कानों मे पहुॅच रही है वो एक-दूसरे के मुकाबले मे बड़ाई है। दुनियॉ के ये सारे बड़े एक फरिश्ते के भी बराबर नही कि जब एक फरिश्ता फूॅक मारेगा तो सातों जमीन व आसमान टूट कर गिर पड़ेगें, एक फरिश्ते का कद सातों जमीन व आसमान से बड़ा है, वो फरिश्ता जो सारे इन्सानों की रूह निकालता है अल्लाह उससे फरमायेगें कि तू मर जा वो भी मर जायेगा कि बड़े की मानकर मर गया अब जो बड़ा है अकेला वो बाकी रहेगा।

اَللّٰهُ اَكۡبَرُ अल्लाह की जात के मासिवा मख्लूक है और मख्लूक छोटी जिन्स है, अल्लाह रब्बुल इज्जत सबके खालिक हैं इनके बनाने वाले हैं, अल्लाह के अलावा सब छोटे। ये सब अल्लाह के मुकाबले मे इससे ज्यादा छोटे हैं जैसे सातों जमीन व आसमान के मुकाबले मे एक जर्रा, ये इतने छोटे हैं कि इनकी छुटाई की हद नही,

अल्लाह इतने बड़े हैं कि इनकी बड़ाई की कोई हद नही है। पहला कुरआन मक्का मे اَللّٰهُ اَكۡبَرُ के मुतआलिक उतरा था मक्का मे नमाज नही थी तो वहॉ नमाज के हिस्से का कुरआन
भी नही आया था,
आज तो बहुत बड़ा मुल्क, बहुत बड़ा सूबा कि बड़ा कहते-कहते हम गलत-फहमी मे मुब्तिला हो गये है इसलिये सबसे पहले इन गलत फहमियों को निकालो कि इनमे से कोई बड़ा है, अरे ! ये सब छोटे हैं अल्लाह ही बड़े है। जमीन और जमीन पर रहने वाले फरिश्तों के मुकाबले मे बहुत छोटे है, ये फरिश्ते जमीन पर रहने वाले कमीनों को, सरमायेदारों को, वजीरों को नही पूछते कि तुम कौन हो और क्या हो ? अब अगर तुम चाहते हो कि ये फरिश्ते तुम्हारे पैरो मे झुकें तो अल्लाह की बड़ाई को दिल मे बिठा लो। पहाड़ों की बड़ाई, हुकूमतों की बड़ाई दिल से निकल जाये और अल्लाह की बड़ाई दिल मे गड़ जाये اَللّٰهُ اَكۡبَرُ ये पहली बात है। दूसरी बात जो तुम्हारे कानों मे डाली गयी और डाली जा रही है ''لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ'' कि मासिवा खुदा सब छोटे हैं, छोटों नही होता अल्लाह से होता है। पैदाईश छोटे से नही होती बड़े से होती है, इज्जत, जिल्लत, खून की हिफाजत छोटे से नही होती बड़े से होती है। इसलिये पहले छोटे होने का यकीन जमाओ और फिर छोटे से न होने का यकीन जमाओ। यहॉ मस्जिद मे आकर अपने आपको बीमार समझ कर बैठो फिर इतना गैब का तज्किरा करो कि गैब मुशाहिद हो जाये, हर वक्त हमारे साथ रहने वाले फरिश्ते मुशाहिद हो जाये। अम्बिया अलै0 के तज्किरे करते-करते सरमायेदारों और वजीरों की हैसियत हमारे दिलों से निकल जाये अगर नबी के मुकाबले मे वजीर हो तो तुम्हे कुत्ता और वजीर मे फर्क नजर न आये अगर फर्क नजर नही आता तो खुदा की कसम ! तुम्हारे ईमान मे फर्क है, अल्लाह की बड़ाई दिलों मे जब बैठेगी जब अल्लाह की जात और उसकी सिफात को सुनोगे और अल्लाह के नबी सल्ल0 की बड़ाई दिलों मे जब बैठेगी जब बाकी सारे नबियों की बड़ाई के बाद नबी सल्ल0 की बड़ाई बयान करोगे। ये रबीउल अव्वल का महीना हुजूर के तज्किरा-ए-हालात का है, नबूवत से पहले आप सल्ल0 जितने बड़े थे नबी बनने के बाद आप सल्ल0 उससे बहुत बड़े हो गये। अब इतने तज्किरे करने हैं जिसे सुनकर नबी सल्ल0 की बड़ाई दिलों मे बैठ जाये, ये नबियों की बड़ाई खुदा की देन थी। नबियों की बड़ाई के तज्किरे इस तरह करो कि फलाने नबी के साथ अल्लाह ने ये किया और फलाने नबी के साथ ये किया, हजरत मुहम्मद सल्ल0 सारे नबियों के सरदार हैं सरदार मातहतों से कमालात मे अफजल हुआ करता है, अल्लाह ने हजरत मुहम्मद सल्ल0 के साथ क्या-क्या कमालात किये इसके तज्किरे करो और नबियों की मेहनत के तज्किरे जिन्दगी के उन आमाल पर खीचने के लिये करो जिन अमलों पर आने से दुनियॉ व आखिरत की फलाह मिल जाये, यहॉ मस्जिद मे आओ जहॉ से,

اَللّٰهُ اَكۡبَرُ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللّٰهِ

दिल मे बैठे, अब अपने अन्दर देखो कि चॉद की, सोने की, महलों की छोटाई दिल मे आ गयी या नही? तुम्हें छोटी-बड़ी सारी शक्लें खुदा के हाथ मे नजर आयें कि हर चीज की इब्तेदा और इन्तेहा पर गौर करो, वजूद मे कहॉ से आया और फिर कहॉ गया? हमारी बीमारी यही है कि हम असल चीज नही देखते। गैरों की बड़ाई दिलों मे उतरने की यही वजह है कि हम असल से नावाफिक हैं, अभी वक्त है कि अपनी बीमारी पहचान जाओ इसलिये खुदा की इतनी बड़ाई सुनो कि उस अकले से मसअलों का हल होना समझ मे आ जाये फिर बाकी सबसे से मायूस हो जाओ कि ये सारी कायनात सर कटे हुए सॉप की तरह है इस सर कटे सॉप से क्या डरना कि इससे कुछ नही होता। तुम्हारी जिन्दगी के अमल खुदा की बड़ाई की अलामत होगें अगर तुम्हारी

जुबान ने एक लफज भी झूठ बोला है तो ये अलामत होगी कि खुदा की बड़ाई तुम्हारे दिल मे नही बैठी। जिन उम्मतों ने नबी की नही मानी वो किस तरह बर्बाद हुई हैं अगर हमने भी नबी की न मानी तो उसी तरह मुसीबतें आ जायेगीं। इसलिये नबी की मान लो लोगों को मस्जिद मे बुलाकर लाओ इस बुलाने के तुम्हे खुदा से इनामात मिलेगें, ईमान की मज्लिस मे बैठ गये तो बैठने के बकद्र ईमान मिलेगा। यहाँ बैठकर ईमान से क्या-क्या हो सकता है इसको तालीम मे बैठकर इतना सुनो-इतना सुनो कि

मुल्क से होने का,
तिजारत से होने का,
वजारत से होने का,
जमीनदारा से होने का,
माल से होने का और

फौज से होने का यकीन हमारे दिलों से निकल कर अमलों से होने का यकीन बैठ जाये। सहाबा किराम के यहाँ मज्लिस-ए-ईमानियाँ का बहुत जोर था, अल्लाह करते है वो ये देखते थे कि हमने अल्लाह की मानी थी अल्लाह ने फरिश्तों को उतारा था, चूहे से अशर्फियों को भेजवाया था, जेलखाने मे बादल भेज कर पानी पहुँचाया था, दरिया -समन्दर को पैरो से पार करया था, यकीन के लिये कुरआन सुनो, मक्का मे आमाल बहुत थोड़े आये सारा का सारा कुरआन ईमानियात वाला आया। कुरआन मे अम्बिया के वाकियात को सहाबा गौर से सुनते थे पर आज यकीन बदलने के लिये कुरआन सुनने का रिवाज नही है, इसी की तफसीर मे हदीस-पाक सुनने का भी रिवाज नही है। बस बे देखे सिर्फ सुनकर यकीन करने का रिवाज है आज राकेट को कितने इन्सानो ने देखा है? अमरीका कितनों ने देखा है? अपने जैसे अन्धे से सुनकर यकीन कर लिया पर खुदा के रसूल की सुनकर यकीन करने की तौफीक नही होती, चलोगे-फिरोगे, नक्शे देखोगे, अखबार मे नक्शों को पढ़ोगे, उनकी ही सुनोगे इसलिये उसी का यकीन सुनने से, पढ़ने से, देखने से आ रहा है, तुम यकीन बदलने के लिये नमाज की ये पहली मेहनत करो।

नमाज की दूसरी मेहनत

नमाज की दूसरी मेहनत मस्जिद मे तालीम है, एक इल्म आता है देखकर और एक इल्म आता है सुनकर जो सुनकर आता है वो अल्लाह की जात व सिफात का इल्म है जिस इल्म को अल्लाह ने जिब्रील को और जिब्रील ने मुहम्मद सल्ल0 को सुनाया आर हजरत मुहम्मद सल्ल0 से हम तक सुनने का सिलसिला चल रहा है अगर तुम्हारी ऑखों के सामने है कि हुकूमत से यूँ होगा तो कुरआन व हदीस मे मिलेगा कि अमलों पर अल्लाह पाक हुकूमत को तुम्हारे पैरों में डालेंगें, अब यकीन ये जमाओ कि अल्लाह वाले इल्म मे जितना लगूँगा उस इल्म पर खुदा परवरिश फरमायेंगें, इस तरह दिखने वाले इल्म पर सुनने वाले इल्म को गालिब करो।

ये साईन्स वाले, ताजिर, दुकानदार, जमीनदार और काश्तकार अल्लाह की बड़ाई देखने के एतबार से अन्धे हैं, इन्हे चन्द कौड़ियाँ नजर आ रही है खुदा के खजाने देखने के एतबार से अन्धे हैं, अन्धे को लेकर चलने के लिये ऑख वाले की जरूरत है 'अश्हदुअन्ना मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह' मुहम्मद सल्ल0 ने खुदा की जात को देखा है इसलिये अपनी ऑख से देखकर फैसला न करो कि माल घर मे आ गया तो कामयाबी मिल जायेगी ये फैसला अन्धेपन का है, हजरत मुहम्मद सल्ल0 ने अमल के असरात देखे हैं कि आप सल्ल0 बैठे हुए हैं बदबू महसूस हुई तो फरमाया ! ये गीबत की बदबू है। आप सल्ल0 ने आमाल पर जो कुछ होता है वो आसमानों पर भी जाकर देखा है और यहाँ भी देखा है, फरमाया ! तूने जो ये बोल बोला है अगर समन्दर मे इसकी जुल्मत को

मिला दिया जाये तो समन्दरो का पानी स्याह हो जाये। आप सल्ल0 ने एक दिन फरमाया ! सारे लोग आज रोजा रखो पर मेरी इजाजत के बगैर कोई रोजा न खोले, दो औरतों की इजाजत के लिये एक आदमी आया, अपने फरमाया ! इनका रोजा ही कहॉ है इन्होने तो गीबत की है फिर प्याले मे कैय कराया तो उसमे ताजा गोश्त व खून के लोथड़े निकले। फरमाया ! अगर मैं ये न निकलवाता तो इसी पर अजाब होता क्यों कि इन दोनो ने अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाया है। इन्साफ मे क्या कामयाबियॉ हैं ये हमे नजर नही आता, जुल्म मे क्या नाकामियॉ है ये भी हमे नजर नही आता।

सारे जमीनदार, काश्तकार, जायजादों वाले अन्धें है खुदा की कसम ! ऐसे अन्धे हैं कि इनको अपने अन्धेपन का एहसास भी नही है। बीना एक नाबीना का हाथ पकड़ कर चल दिया तो जहॉ बीना पहुॅचेगा वहॉ अन्धा भी पहुॅच जायेगा, पहुॅचने के बाद ऑख खुली मुवाफिकत मे तो मजे आ जायेगें और अगर पहुॅचने के बाद ऑख खुली मुखालिफत मे तो मुसीबत आ जायेगी। वजीर की भी खुलेगी और फकीर की भी खुलेगी तुम अन्धे हो तुम्हारी तरफ बीना सल्ल0 को भेजा है वो तुमको आमाल की तरतीब बतायेगें। एक तरतीब हुकूमत, तिजारत, मआशरत, मआमलात और माल पर है और एक तरतीब अमल पर है, माल की तरतीब से हटकर आमाल की तरतीब पर आ जाओ। बाप ने गोद मे लिया बाद मे पहले आवाज लगवाई, उसी दिन से आवाज बराबर कान मे पड़ रही है'अश्हदुअन्ना मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह' धोखे मे न रहो एक दिन धोखा सामने आ जायेगा तब तुम अपनी ऑख से देख लोगे कि कामयाबी माल मे नही कामयाबी आमाल मे है। मुहम्मद सल्ल0 ने मदीना मे वो माहौल बनाया था यहॉ के तज्किरे ही क्या पिछली आसमानी किताबों को भी पढ़ने-सुनने से मना कर दिया था। हजरत उमर रजि0 हुजूर सल्ल0 को कितने प्यारे थे हजरत उमर रजि0 को इल्म का मकाम अता हुआ था, एक बार हजरत दानियाल की किताब मिल गयी उसको नकल करा कर खुशी-खुशी लाये, हुजूर सल्ल0 ने पूछा ! उमर तुम्हारे हाथ मे क्या है?

हजरत उमर रजि0 ने जवाब दिया कि हजरत दानियाल को किताब लाया हूॅ ताकि हमारे इल्म मे इजाफा हो जाये। ये सुनकर हुजूर सल्ल0 का चेहरा सुर्ख हो गया, ये देखकर किसी ने आवाज लगा दी तो अन्सार हथियार लगाकर आ गये कि आज जिसकी गर्दन काटने को आप फरमायेगें काट देगें अन्सार हथियार लगाकर हुजूर सल्ल0 के चारो तरफ खड़े हो गये। हुजूर सल्ल0 ने फरमाया ! मैं जो कुछ तुम्हारे पास लेकर आया हूॅ तुम्हारे लिये चमकता हुआ सीधा रास्ता बस यही है इसके अलावा तुम्हे किसी इल्म की तरफ देखना भी नही है, सुनना भी नही है और बोलना भी नही है अगर मूसा अलै0 भी आ जायें तो वो भी मेरे ही इल्म पर चलेगें, ये हजरत उमर रजि0 पर गुस्सा है। सहाबा को तो सारी दुनियॉ मे फिरना था वैसे तो उन्हे नजूम भी आता था, दरख्तों की बातें भी आती थी पर सब मना, आज तो इल्म ऐसा लफज बन गया है कि हर बात को इल्म समझा जा रहा है जब कि हुजूर सल्ल0 ने इसे सब तरफ से रोक दिया है। अब तो मोलवी साहब मदरसा मे तलबा के हिदायत लिखे और लोगो मे मौलाना कहलाये जाने लगे, हिदायतुल खू, हिदायतुल कुरआन, हिदायतुल आमाल, आठ साल तो मन्तिक, फलसफा, हिदायतुल खू, नहव पढ़कर मोलवी बन गये, जहॉ ईमानियात का तज्किरा और गैब का तज्किरा होना चाहिये था वहॉ आठवॉ साल फसाहत और बलागत की तहकीक मे गुजर गया और दौरे साल के आखिरी वक्त मे ईमानियांत की मुख्तलिफ फर्क की बहसों मे गुजर गया। उस्ताद ने मुताला करने के लिये जो पढ़ाया था ताकि अल्लाह की बड़ाई और अल्लाह ही हैबत दिल मे आये, जन्नत-दोजख की कैफियत दिल मे पैदा हो तो इनके कान मे एक साल ये आवाज पड़ी पर बस लेकिन उन गरीबों के कान मे तो ये आवाज भी नही पड़ी जो मस्जिदों से दूर हैं वो बेचारे दुनियॉ मे पैदा हुए और दुनियॉ कहते-कहते मर गये कि

पूछो तो कहते हैं कि मुझे पता नही कब्र मे क्या होता होगा ? इसलिये अल्लाह वाले इस इल्म को मोहताज बनकर तालीम के हल्कों मे सुनो ये की नमाज की दूसरी मेहनत है।

नमाज की तीसरी मेहनत

नमाज की तीसरी मेहनत ध्यान की है, ध्यान की तब्दीली की एक मेहनत है इसलिये कि एक ध्यान देखकर बनता है और एक ध्यान सुनकर बनता है कि दिल्ली आये चॉदनी चौक में फिर रहे थे कि एक चमकीला धोखा सामने आ गया कि स्विजरलैन्ड की औरत सामने आ गयी अब जब भी बैठे तो उसका ध्यान आ जाये पर अल्लाह का ध्यान मेहनत करने से बनता है, सबसे कटकर तन्हाईयों मे बैठ-बैठकर इतना जिक्र करो कि जब अल्लाह का नाम आये अल्लाह का ध्यान बन जाये। लालकिले का, जामा मस्जिद का या कारखाने का नाम आया तो उसका ध्यान बन्धा जब अल्लाह का नाम लो तो अल्लाह का ध्यान आ जाऐ। ये तीन मेहनतें नमाज से पहले की हैं कि इतना ध्यान बना लो कि अगर तुम्हारे सामने शेर आ जाये तो तुम्हे शेर को बनाने वाले अल्लाह का ध्यान आ जाये, तुमने सहाबा के किस्से सुने हैं कि शेर को थप्पड़ मार दिया, ये जिक्र के किस्से हैं। अब वजीर-ए-आजम आ गया आपके अन्दर घुस गया तो पले हुए कुत्तों की तरह उसके आगे पीछे फिर रहे हैं अगर अल्लाह का ध्यान आ जाये और वो जिक्र तुमको आ जाये जो औलिया ने बताया है तो खुदा की कसम ! फिर कहीं का वजीर आ जाये और उसका ध्यान तुम्हारे अन्दर न आये तो वो तुम्हारे सामने हाथ जोड़े खड़ा होगा।

इस यकीन के साथ जो नमाज पढ़ेगा इस नमाज से उसे रोजी मिलेगी, इस नमाज से हुकूमत की खूँखारियों से महफूज रहेगा। इसलिये ईमान की और जिक्र की मेहनत करो फिर इल्म की मेहनत करो उसके मुताबिक नमाज बनाओ और इसी को दुनियॉ मे फैलाओ, इसी को लोगो को समझाओ तुम्हारी कामयाबी खारिज मे नही है तुम्हारी कामयाबी दाखिल मे है। जब अमलों पर पलना आयेगा तो घरेलू जिन्दगी कैसी मजे की बनेगी, आज तो कमाई छ घन्टे और खर्च चौबीस घन्टे, आज-कल की मआशरत मे सोते-सोते भी खर्चा। आमद थोड़ी सी फिर ये रिश्वत न लेगा, गबन न करेगा तो और क्या करेगा ? अगर चौबीस घन्टे की जिन्दगी हजरत मुहम्मद सल्ल0 क तरीके पर ले आयी जाये तो खाना भी आमद है,पहना भी आमद है। नक्शों से मिलने का जहन तोड़ो अमल से मिलने का जहन बनाओ तो अल्लाह उन अमलो पर अपनी जात से हमारी परवरिश फरमायेगें।

अल्लाह चीजों पर नाराजगी के तौर पर पालता है और अमल पर रजा के तौर पर पालता है। अब इस मशीन से जिससे अमल तैयार कर रहे हो दावत के, तालीम के, जिक्र के अमल तैयार करते हुए नमाज पढ़ो अल्लाह इसी पर तुम्हारी परवरिश करेगें, अब अगर कमाई मे न भी घुसो तो थोड़ी सी मेहनत ये करनी पड़ेगी कि चाहे जितने फाके आ जायें किसी के सामने इज्हार-ए-हाल न करो, ख्यानत न करो, शिकवा-शिकायत न हो कि जिधर मौला उधर शाह दौला अगर कमाई करो तो समझ लो कि कमाई के अन्दर भी ईमान पर मिलेगा, कमाई मे ईमान का लो, कमाई मे इल्म का और जिक्र का लो। कमाई मे इस यकीन से जाओ कि हम कमाने से नही पलते खुदा पालता है, अब इस यकीन को महफूज रखकर दिखलाओ, जिस तरह तुम ये कह रहे हो कि मुझे औरतों से मुहब्बत नही नफरत है तो किसी वक्त अकेले मे औरत लाकर बिठा दी जायेगी कि देखें अब क्या करता है ?

नमाज के बाद की पहली मेहनत

नमाज के बाद की पहली मेहनत ये है अब कमाइ मे ये यकीन भी ले जाओ, जिक्र भी ले जाओ और इल्म की शक्ल पर पैसा कमाओ, इसके लिये मस्जिद मे ईमान सीखो यहॉ कुरआन की वो सूर पढ़ो जिनमे ये कहा गया

है कि कमाने से नही मिलता बल्कि खुदा के फैसले से मिलता है फिर कमाने की हदीस पढ़ो, कमाने का इल्म लो और बाहर जाकर इस इल्म पर अमल करके दिखलाओ। खुदा इस इल्म पर कमाई का मुआवजा देगा, झूठ पर हजार रूपये मिल रहे हैं पर मुझे झूठ नही बोलना सच बोलना है ताकि खुदा से लूँ अब वही मस्जिद की चीजें खींचकर बाजार चली गयीं तो दुकान मस्जिद की शाख बन गयी। जब खुदा तुमको ये दिखलावें कि तुम्हारे मसअले नमाज पर हल होने लगे तो अब तुम्हारे जिम्मे ये लाजिम है कि अपनी कमाई की शक्लें बन्द कर दो, तुमने नमाज पर होना देख लिया तो अब हुज्जत कायम हो गयी। जब वकीलों ने और जजो ने जवाब दे दिया तो तुमने नमाज पढ़कर माँगा खुदा ने तुम्हारा काम कर दिया, अब तुम्हारे जिम्मे हो गया कि कमाई मे तगययुर करो वरना आफत आ जायेगी।

नमाज के बाद की दूसरी मेहनत

नमाज के बाद की दूसरी मेहनत ये है अब घर मे भी यही यकीन ले जा, जिक्र भी ले जा और इल्म की शक्ल पर पैसा खर्च कर कि जितना फकीरो पर, पड़ोसियों पर, खुदा के रास्ते की नक्लो हरकत पर खर्च बतलाया गया है, उतना पैसा वहाँ खर्च करो। इसके लिये कुरआन का इल्म लो मुहम्मद सल्ल0 की जिन्दगी अमली कुरआन है मुहम्मद सल्ल0 की जिन्दगी का इल्म लेकर माल को उस इल्म पर खर्च करो। अपनी शादी मे कितना लगाना है? दूसर नादारों की शादी पर कितना लगाना है? इल्म के मुताबिक माल की तरतीब कायम करो अगर मेरा पैसा हजरत मुहम्मद सल्ल0 की तरतीब पर खर्च हो गया तो खुदा मेरे वास्ते इनामात के दरवाजे खोलेगा। पड़ोसी पर, रिश्तेदारों पर मसलन सौ खुदा के रास्ते की नक्लो हरकत पर बतलाया, ढाई सौ तालीम व तरबियत पर और ढाई सौ मे अब सबको शामिल करो।

नमाज के बाद की तीसरी मेहनत

आखीरी मेहनत अब क्या रह गयी कि मआशरत बनाओ इल्म वाली मआशरत बनाओ, ईमान वाली मआशरत बनाओ और जिक्र वाली मआशरत बनाओ। तुम किसी पार्टी या कौम के बनकर जिन्दगी न गुजारो, इलेक्शन इस्लाम मिटाने के लिये होता है क्यों कि पार्टी का मुफाद ये है कि उसको कैद कराओ, पार्टी का मुफाद ये है कि उसकी पिटाई कर डालो, पार्टी के एतबार से गवाही दो, ये सब पार्टी के एतबार से करते हैं ये यह नही देखते कि जालिम कौन है और मजलूम कौन है। हुकूमत के नुक्ते पर जिन्दगी उठाना, कौम के नुक्ते पर जिन्दगी उठाना ये सब खुदा को पसन्द नही है। तुमने अपनी पार्टी की बुनियाद पर किसी जालिम की हिमायत कर दी तो याद रखना जैसे किसी घर मे बिजली गिरकर आग लग जाये इसी तरह तुम्हारे सारे अमल शुरू से आखिर तक सब जल जायेंगें। जो मजलूम है उनके साथ लगना होगा अगर अपने को बेबस पाते हो तो कम से कम इतना तो करना होगा कि जालिम का साथ न दो।

बाएतबार पार्टी के आज ईसाईयत और हिन्दुईयत फैलाई जा रही है कि अपनी पार्टी वालों की तरक्की हो, तनख्वाह मे इजाफा हो। जब कि इस्लाम इस किस्म का मजहब नही है, इस्लाम ये है कि अपना पैसा सब पर लगाओ, अपना पैसा मआशरत-ए-इस्लामियॉ के ऐतबार से खर्च हो, तुम्हे सोने-चॉदी के मकान मिलने वाले है। अपने पैसे को इस सोने-चॉदी और मकान पर न जाया करो, इन कमबख्तों की नकल मत करो। हर आदमी ये यकीन करे कि मेरा पैसा अल्लाह के हुक्म पर मुहम्मद सल्ल0 के तरीका ए अमल पर खर्च हो गया तो उसका इनाम मिलेगा। ईमान की मज्लिसों की, तालीम के हल्कों की, अल्लाह के जिक्र की पाबन्दी करनी है, अपने घरों को, कमाई को और मआशरत को ईमान-इल्म-जिक्र पर लाना है। इस सबके मुकाबले की सूरत क्या है कि नमाज पढ़कर हाथ फैलाकर माँगं लो, अब तुम हथियारों, ओहदों और माल के चक्कर मे न पड़ो जो इनसे होता

है वो नमाज पढ़कर दुआ मॉगने से होगा, घरों, कमाईयों और मआशरत को इल्म की शक्ल पर लाना है, ईमान की बुनियाद पर लाना है।

ये एख्लाक तिजारत मे, जरआत मे, फकीरी मे और महकूमियत मे भी हैं, हमारे और खुदा के दरम्यान के आमाल ठीक हो जाये तो आखिरत मे तुम अपनी जात मे कमालात लेकर पहॅुचोगे, कब्र मे फरिश्ते की गर्दन झुकती चली जायेगी। यहॉ भी मजे किये वहॉ भी मजे करोगे अब पहली तीन मेहनतो के वास्ते हम तीन चिल्ले मॉग रहे हैं। मस्जिदों मे चहल-पहल हो, ईमान की दावत सीख जाये, इल्म के हल्के लगाना सीख जाये, अल्लाह का जिक्र करना आ जाये तो पहले इन अमलों से पलने का जहन बनाना है इसके बाद बाहर की मआशरत मे तब्दीली आयेगी, इस मेहनत से यकीन की तब्दीली मकसूद है। इसलिये चार-चार और छ-छ महीनों के लिये नक्शों को छोड़कर निकल जाओ और नक्शों के मुकाबले मे यकीन जमाओ फिर अमल की कीमत इतनी बढ़ जायेगी कि सारी दुनियॉ भी अमल के मुकाबले मे पेश की जाये तो उसको अख्तियार न करोगे।

इस बयान की असल किताब बंगले वाली मस्जिद मे मौजूद है

बाद नमाज मगिरब, लाहौर

15 सितम्बर सन 1960

ईमान का सीखना

لَيْسَ الْبِرَّ أَنْ تُوَلُّوا وُجُوهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَلَٰكِنَّ الْبِرَّ مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالْكِتَابِ وَالنَّبِيِّينَ وَآتَى الْمَالَ عَلَىٰ حُبِّهِ ذَوِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسَاكِينَ وَابْنَ السَّبِيلِ وَالسَّائِلِينَ وَفِي الرِّقَابِ وَأَقَامَ الصَّلَاةَ وَآتَى الزَّكَاةَ وَالْمُوفُونَ بِعَهْدِهِمْ إِذَا عَاهَدُوا وَالصَّابِرِينَ فِي الْبَأْسَاءِ وَالضَّرَّاءِ وَحِينَ الْبَأْسِ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ صَدَقُوا وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ

मेरे अजीजों और दोस्तों ! सबसे बड़ा सरमाया, सबसे बड़ी दौलत और सबसे बड़ी माया जिसके हासिल किये बगैर इन्सान की जिन्दगी हर तरह के खतरों मे घिरी हुई है वो सरमाया ईमान है। यहॉ ये बात याद रखना कि ईमान का सरमाया सीखने से हासिल होता है और ईमान को सीखने का मतलब अपने यकीनों को मख्लूक से खालिक की तरफ मोड़ना है कि हर बनी हुई चीज से अपने यकीनों को बनाने वाले की तरफ मोड़ना ही ईमान को सीखना कहलाता है। अव्वल तो ईमान के बगैर अमल कुबूल नही होते दूसरे ईमान के बगैर अमल पर इस्तेकामत हासिल नही होती हॉ, बहुत से बहुत अगर ये अमल पर जमा भी रहा तो अमल का असर जाहिर नही होगा। एक तो अभी बहुत कम लोग ही तब्लीग मे लगे हैं और जो लगे भी है वो जमे कम है फिर जब इन जमने वालो को ईमान सीखने के लिये बुलाया जाता है तो ये घरो मे जाकर बैठ जाते है, इनके घरो मे जाकर बैठ जाने की वजह ये हैं कि इन्होने तब्लीग मे निकल कर यकीन नही सीखा अमल सीख लिया हालॉकि हुजूर सल्ल0 ने सहाबा को सबसे पहले ईमान सिखलाया और ईमान को सिखला कर ही अमल का सिलसिला कायम कराया। सहाबा कहते थे कि

ताल्लमनल इमान सुम्मा ताल्लमनल कुरआन

इब्ने उमर ने कहा कि लोग ईमान को सीखे बगैर कुरआन पढ़ लेते हैं, इसीलिये सारा कुरआन पढ़ गुजरते हैं पर जरा भी असर नही होता। आज अच्छे से अच्छे अमल मुसलमानो मे मौजूद हैं लेकिन ये दुनियॉ भर मे जूते खा रहे है, मुसलमान दुनियॅावी तरक्की मे चाहें जहॉ पहुचॅ जायें पर ये याद रखे कि हुजूर सल्ल0 के जिस्म-ए-अतहर से जाहिर होने वाले अमल दुनियॅा के सारे नक्शों को गिराने की ताकत रखते हैं चूॅकि आज मुसलमानो ने ईमान को न सीखा इसलिये इनके अन्दर न ईमान का दाइया, न ईमान की फिक्र बस अमल और अमल, इसलिये सबसे पहले अपने पॉच तरह के यकीनों को बदलने का मुतालिबा है कि

آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالْكِتَابِ وَالنَّبِيِّينَ

इन पॉच लाईनों के यकीनों को सीखने पर खुद को लगाओ ये मस्जिद मे रोजाना की मश्क है, रोजाना की मेहनत है और रोजाना का काम है इसके लिये खुद भी आओ और दूसरो को भी लाओ।

मस्जिद मे आकर जो सबसे पहला यकीन अपनी जात मे पैदा करना हैं वो ये कि तमाम जमाअत से हमारा यकीन हटकर अल्लाह की जात व सिफात पर आ जाये, آمَنَ بِاللَّهِ इसका क्या मतलब है? इसका मतलब ये है कि हमारा यकीन

माल और माल वालों से हटकर,

जायजाद और जायजाद वालों से हटकर,

हुकूमत और हुकूमत वालों से हटकर,
ओहदा और ओहदें वालों से हटकर,
जमीन व आसमान के दरम्यान की चीजों से हटकर,
चॉद और सूरज से और तमाम इन्सानों से हटकर,
यहॉ तक कि खुद अपनी जात से हटकर,
ये सारे यकीन अल्लाह की जात पर जमा हो जायें, ये सारे यकीन अल्लाह की जात पर जमा होने मे बस एक बात समझने की है और वो ये कि आज किसी मुसलमान से भी ये पूछो कि मसला किससे हल होगा ? तो हर मुसलमान ये कहता हैं कि सब कुछ अल्लाह से होगा। अच्छा ! अगली बात ये कि कैसे हल होगा ? इस सवाल पर मुसलमानों का जवाब ये होता है कि फलॉ काम के लिये ये शक्ल अख्तियार करो और फलॉ मसअले के हल के लिये ये शक्ल अख्तियार करो तो काम हो जायेगा।
अब रही बात कि शक्ल अख्तियार करने का क्या मतलब है ? शक्ल अख्तियार करने के मायने ये हैं कि तुम अभी अल्लाह की जात को नही समझे हो और ना ही उससे होने को समझे हो बस बेसमझे बोल रहे हो कि अल्लाह से होगा अगर तुम अल्लाह को समझे होते और उससे होने को समझे होते तो ये नही कहते कि इस शक्ल के अख्तियार करने से ये होगा और उस शक्ल के अख्तियार करने से ये होगा क्यों कि अल्लाह की जात तो शक्ल से पाक है, वो शक्ल व सूरत मे नही है वो तो शक्ल व सूरत से पाक है। नबियों का नारा और नबियों की दावत यही है कि शक्लों से नही होता है बगैर शक्ल वाले अल्लाह से होता है, इसलिये सबसे पहले अपने दिलों से ये यकीन निकालो कि शक्लों से होता है। कुरआन मे है

إِنَّكَ لَا تَهْدِي مَنْ أَحْبَبْتَ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ

सूर कसस-56

"ऐ नबी तुम चश्मा और समन्दर हो हिदायत के लेकिन हिदायत को तक्सीम करना सिर्फ हमारा काम है" जब अम्बिया और सैयदुल अम्बिया सल्ल0 अपने मौजूअ म खुदा के ताबेए है तो गल्ला खुद कैसे उग सकता है जमीन खुद गल्ला कैसे दे सकती है ? अम्बिया जब अपने मौजूअ को खुद नही कर सकते हैं तो कायनात की मामूली चीजें अपने मौजूअ को कैसे अदा कर सकती है ? अल्लाह ने बगैर वास्ते के इब्राहिम अलै0, मूसा अलै0 और मुहम्मद सल्ल0 को सबसे कीमती दौलत हिदायत की दी, वही एक जात ऐसी है जो बगैर किसी के सब कुछ कर सकती है, इसलिये ये सबसे पहली बुनियाद है कि शक्लों से नही होगा जो शक्ल से पाक है उससे होगा, कुरआन का पहला मुतालिबा इस यकीन को तैयार करने का है।
कुरआन मे दूसरा यकीन बदलने का मुतालिबा ये है कि हमारे अन्दर से आज के दिन का यकीन निकल जाये और

وَالْيَوْمِ الْآخِرِ आखिरत के दिन का यकीन आ जाये इसका मतलब ये है कि जमाने के ऐतबार से हमारा यकीन बदल जाये कि
पता नही मैं शाम तक जिन्दा रहूॅगा भी या नही,
पता नही कल का दिन आयेगा कि नही,
पता नही ये जरूरत कल पड़गी या नही,
पता नही ये मसअला पेश आयेगा या नही,

जब दिन यकीनी नही तो उसके अन्दर के मसाएल भी यकीनी नही पर कयामत का 50 हजार साल का दिन यकीनी है और उस दिन के मसाएल यकीनी है इसलिये मौजूदा जमाने का यकीन निकल जाये और आखिरत के जमाने का यकीन पैदा हो जाये कि तुम कहते हो कि

आज का जमाना ऐसा है कि कोठी ऐसी बनायी जायेगी,

आज का जमाना ऐसा है कि कपड़े ऐसे बनाये जायेगे,

आज का जमाना ऐसा है कि खाना ऐसा खाया जायेगा,

आज के जमाने वाले आखिरत के जमाने मे खून के ऑसू रोएगें इसलिये आज के जमाने का यकीन निकाल दो और आखिरत के जमाने का यकीन पैदा करो।

फिर तीसरा यकीन وَالْمَلَائِكَةِ फरिश्तों का है कि फरिश्तों के यकीन का मतलब ये है कि जितने भी दुनियॉ मे इन्सान है ये चाहे रूस के हों या अमरीका के, ब्रतानियां के हों या अफ्रोका के,

चाहे हुकूमतों के निजाम हों या फौज और पुलिस के निजाम हों,

चाहे सरमायेदारो के निजाम हों या गरीब और काश्तकारों के निजाम हों,

आपके अपनी जात से लेकर आसमान तक फैले हुए जितने भी निजाम है कि मश्रिक से लेकर मग्रिब तक और शुमाल से लेकर जुनूब तक जितने भी निजाम हैं इन सबकी जात से यकीन को हटाकर खुदा के निजाम पर यकीन आ जाये कि

हमारी हिफाजत हमारे निजाम से नही हो रही है, हमारी हिफाजत खुदा के निजाम से हो रही है,

हमे खाना हमारे निजाम से नही मिल रहा है, हमे खाना खुदा के निजाम से मिल रहा है,

हमे पानी हमारे निजाम से नही मिल रहा है, हमे पानी खुदा के निजाम से मिल रहा है,

पानी के हर कतरे के साथ एक फरिश्ता, हर दाने के साथ एक फरिश्ता, दाने-दाने पर लिखा है कि ये किसके पेट मे जायेगा, जब तक ये दाना उसके पेट मे न चला जाये उस वक्त तक वो फरिश्ते दाने के साथ है। हवा के निजाम पर फरिश्ते मुर्करर है, दो फरिश्ते तो सिर्फ इसकी तरफ आने वाली बलाओं को इससे दूर करते रहते हैं पर बला का वक्त जब मुकददर के ऐतबार से आ जाता है तो वो फरिश्ते अलग हट जाते हैं। इसी तरह हर एक के साथ मे दो फरिश्तें अमल को लिखने के लिये मुर्करर कर दिये गये हैं कि तुम चाहे जितने दरवाजे बन्द करके बैठ जाओ ये दोनो फरिश्ते हर वक्त तुम्हारे साथ मौजूद रहते हैं, ये दोनो साये की तरह तुम्हारे पीछे लगे हुए हैं। बैठे बैठे लिखते रहेंगें, हुक्म पूरा किया तो दाहिने हाथ वाले ने लिख लिया, हुक्म तोड़ दिया तो बायें हाथ वाले ने लिख लिया। ये फरिश्ते कोठियों के पहरों से नही रूकते, चौबीस घन्टे इनका यही काम है कि खुदा के अहकामात कितने तोड़े और कितने पूरे किये सिर्फ इसी को लिखते रहते है फिर दूसरे फरिश्ते आते है जो असर की नमाज से फज्र की नमाज तक फिरते रहते हैं। आदमियों को भी देखते हैं लिखाई भी देखते हैं, सुबह ही सुबह कि अभी सूरज भी नही निकला पर ये आसमान पर तुम्हारा कच्चा चिटठा लेकर पहुॅच जाते हैं। अब फज्र की नमाज से अस्र की नमाज तक साथ लगे हुए हैं ये एक मसले को भी लिखने से नही छोड़ते,अदालतों मे, खेतों मे, जेल खानों मे तुम्हारे साथ पहुॅचते रहते है। अस्र की नमाज मे रात वाले शरीक हो गये, दिन के रात होने से पहले और रात के दिन होने से पहले कि अहकामात का तोड़ना और अहकामात का पूरा होना लेकर आसमान पर पहुॅचे जाते हैं। तश्रीयी अहकाम खुदा ने हम इन्सानो को दिये है और तकवीनी अहकाम खुदा ने फरिश्तो को दिये है इसलिये जो कुछ हमारे और आपके साथ हो रहा है वो खुदा के निजाम के मातहत

हो रहा है, हमारे और आपके निजाम के तहत कुछ न होगा इसलिये निजाम के बारे मे हमारा यकीन बदल जाये।

हजरत अली रजि0 को यह मालूम हो गया था कि मैं आज शहीद किया जाने वाला हूँ आज की रात मेरी जिन्दगी की आखिरी रात है तो कभी उठते हैं और कभी बैठते है, घर वालों को कुछ शुब्हा हो गया कि किसी रात को तो ऐसा करते नही देखा आखिर आज क्या बात है ? घर वालों ने तहकीक किया तो पता चला कि हजरत अली रजि0 को शहीद किये जाने की चालें चली जा रही है तो हजरत हसन और हजरत हुसैन रजि0 तलवारें लेकर हजरत अली रजि0 की हिफाजत के वास्ते आ गये।

हजरत अली रजि0 ने पूछा क्या हुआ ?

अर्ज किया कि आपकी की हिफाजत के वास्ते आये है।

हजरत अली रजि0 ने पूछा ! आसमान वाले से हिफाजत करने आये हो या जमीन वालों से हिफाजत करने आये हो?

अर्ज किया कि आसमान वाले से कौन हिफाजत कर सकता है हम तो जमीन वालों से हिफाजत के वास्ते आये हैं।

हजरत अली रजि0 ने फरमाया ! तलवारे रखकर अपने-अपने बिस्तरों पर जाकर सो जाओ क्यों कि जमीन पर उस वक्त तक कुछ नही होता जब तक आसमान पर उसका फैसला न हो जाये।

तो निजाम-ए-इन्सानी का यकीन टूट जाये और अल्लाह का जो गैबी निजाम है जिसे हुजूर सल्ल0 ने तफसील से बयान फरमाया है उसका यकीन पैदा हो जाये।

चौथा यकीन इल्म के ऐतबार से कि जितना इल्म इन्सानी है इससे हमारा यकीन हट जाये और وَالْكِتَابِ अल्लाह वाले इल्म का यकीन पैदा हो जाये कि जो कुछ कुरआन व हदीस मे बतलाया गया है उसका यकीन पैदा हो जाये, इसी मे ये बात भी आयेगी कि अल्लाह के इल्म मे क्या है ? अल्लाह के इल्म मे आमाल से होना बतलाया गया है,

तक्वे पर होना बतलाया है।

नमाज पर होना बतलाया है।

जिक्र पर होना बतलाया है।

दावत पर होना बतलाया है।

इस इल्म मे इन्सान को होता हुआ कुछ दिखायी नही देता अगर इन्सान के इल्म मे आमाल से होता हुआ दिखायी देता और इन्सान के इल्म मे तक्वे से जिन्दगी बनती दिखायी देती तो कोई इन्सान भी अपने अन्दर तक्वा पैदा किये बगैर चैन से न बैठता। इसलिये आमाल से जिन्दिगियों को बनाने के लिये सबसे पहले अपने यकीन को इल्म-ए-इन्सानी से हटाना है कि आदमी हवाई जहाज से चॉद पर भी जा सकता है और जन्नत या दोजख मे भी जा सकता है, दवा से ये ठीक भी हो सकता है और दवा स इसकी बीमारी और भी बढ़ सकती है। इन्सान को जितना इल्म है वो इल्म शक्लों का है और शक्लों वाले इस इल्म-ए-इन्सानी मे दो रूखी बात है कि

दवा से शिफा भी मिल सकती है और बीमारी बढ़ भी सकती है,

हवाई जहाज से चॉद पर भी जा सकता है और आग भी लग सकती है,

कारखानो से नफा भी हो सकता है और नुकसान भी हो सकता है,

इसलिये इन्सान की जिन्दगी कैसे बनेगी ये तुम नही जानते,
इन्सान की जिन्दगी कैसे बनेगी ये रूस नही जानता,
इन्सान की जिन्दगी कैसे बनेगी ये अमरीका नही जानता,
इन्सान की जिन्दगी कैसे बनेगी ये अफ्रीका नही जानता,
इन्सान की जिन्दगी कैसे बनेगी ये ब्रतानिया नही जानता,
जो ये कहे कि फलॉ चीज से जिन्दगी बनेगी तुम उसे जाहिल समझो इसलिये कि इसे अल्लाह वाले इल्म की खबर नही है, अल्लाह वाला इल्म एक रूख का है और इल्म-ए-इन्सानी दो रूख का है। ये बात कौन जानता है कि जिन्दगी कैसे बनेगां ? इस बात को इन्सान का बनाने वाला खुदा ही जानता है कि जिन्दगी कैसे बनेगीं। अल्लाह वाले इल्म मे सबसे पहले الم कहकर ये बतला दिया गया है कि जब तुम शुरू कुरआन के इन तीन हरफों الم को नही जानते तो आगे भी कुछ नही जानते हो कि किस चीज से कामयाबी मिलेगी और किस चीज से नाकामी, तुम्हारे इस दो रूखी इल्म को जिसे तुम खुद नही जानते, खुदा जानता है।
ذَٰلِكَ الْكِتَابُ لَا رَيْبَ فِيهِ هُدًى لِّلْمُتَّقِينَ ये कुरआन, ये किताब, ये इल्म जो मुहम्मद सल्ल0 के सीने मे डाला गया इसमे जो कुछ बताया गया है उसमे कोई शक व शुब्हा नही है, जितनी दुनियॉ भर की शक्लें हैं उनको तो तुम जानते ही हो पर इन शक्लों को खुदा कब-क्या बना दे ये तुम नही जानते कि खुदा लकड़ी को अजदहा बना दे या अजदहे को लकड़ी ये तुम नही जानते, खुदा इन शक्लों को जब चाहेगा बदल देगा या शक्लों को कायम रखकर सिफात बदल दे कि शक्ल आग की रखे और सिफात बाग की कर दे, तुम अपने यकीनो को इल्म इन्सानी से हटाकर अल्लाह वाले इल्म पर लाओ तो उन चीजो से तुम्हे नुकासान नही पहॅुचेगा जिनसे आज पहॅुच रहा है। चीजों से सिर्फ उसे ही नुकसान पहॅुचता है जो उनसे होने का यकीन करे इसलिये अल्लाह वाले इल्म पर जिन्दगी को उठाओ ये इल्म एक रूख का है।
ईमान पर इज्जत मिलेगी तो لَا رَيْبَ فِيهِ कि इसमे कोई शक व शुब्हा नही है,
ईमान पर बुलन्दी मिलेगी तो لَا رَيْبَ فِيهِ कि इसमे कोई शक व शुब्हा नही है,
तक्वे पर कामयाबी मिलेगी तो لَا رَيْبَ فِيهِ कि इसमे कोई शक व शुब्हा नही है,
जिक्र पर इत्मिनान मिलेगा तो لَا رَيْبَ فِيهِ कि इसमे कोई शक व शुब्हा नही है,
जिसके करने से होगा वो जो खुद जानता है फज्ल फरमाकर उसने अपना जानना तुम्हारे हाथों मे दे दिया कि लो कुरआन और लो हदीस ताकि तुम सही-सही जानकर मेरे खजानों से फायदा उठाओ।
पॉचवा यकीन وَالنَّبِيِّينَ अम्बिया पर यकीन के मायने ये हैं कि अम्बिया कामयाब है इनके मुकाबले वाले नाकाम हैं जलील हैं। आज दुनियॉ मे शख्सियत का यकीन किया जाता है कि फलॉ आदमी था वो चलते-चलते यहॉ तक पहॅुच गया, आजकल अखबारों और इश्तेहार व रिसालों मे शख्सियत के तज्किरे मिलते है कि घोसी था वजीर बन गया, मश्क से पानी भरता था आज सदर हो गया। अम्बिया पर ईमान के मायने ये हैं कि शख्सियत सिर्फ अम्बिया की है अब शख्सियतो के ऐतबार से हमे अपना यकीन बदलना है कि,
इल्म-ए-इन्सानी से शख्सियत नही बनती,
मुल्क व माल से शख्सियत नही बनती,
किसी मुल्क की विजारत से शख्सियत नही बनती,

किसी मुल्क की सदारत से शख्सियत नही बनती,
किसी मुल्क की सरमायेदारी से किसी सरमायेदार की शख्सियत नही बनती,
जमीन व आसमान के दरम्यान जितने भी नक्शे हैं इन नक्शों से कोई शख्सियत वाला नही बनेगा, खुदा के यहॉ शख्सियत और हैसियत अम्बिया अलै0 की है।
अगर तुम गधों पर फिरते हो,
अगर तुम जमानों पर लेटते हो,
अगर तुम झोपड़ों मे रहते हो,
अगर तुम चटनी-रोटी खाते हो,
अगर तुम फटे कपड़ों मे रहते हो,
लेकिन अम्बिया अलै0 वाली जिन्दगी पर चल रहे हो तो खुदा के यहॉ तुम शख्सियत और हैसियत वाले हा इसलिये
माल से शख्सियत बनने का यकीन,
मुल्क से शख्सियत बनने का यकीन,
ओहदों से शख्सियत बनने का यकीन,
सरमायेदारी से शख्सियत बनने का यकीन,
ये सारे यकीन तुम्हारे अन्दर से निकल जाये और आमाल-ए-नबूवत से शख्सियत बनने का यकीन पैदा हो जाये,
हजरत मूसा अलै0 शख्सियत वाले थे मुल्क व माल वाले न थे,
फिरऔन शख्सियत नही था मुल्क व माल वाला था,
हामान शख्सियत नही था वजारत वाला था,
कारून शख्सियत नही था माल वाला था,
शददाद शख्सियत नही था जायजाद वाला था,
कौमे सबा शख्सियत वाली नही थी खेती और बागात वाली थी, मुल्क व माल के नक्शों से कोई शख्सियत वाला नही बनता, किसी मुल्क का सदर या किसी मुल्क का वजीर या किसी मुल्क का कमान्डर या किसी मुल्क का सरमायेदार कोठियों मे रहने से इज्जत वाला नही बनेगा क्यों कि कोठी मे तो चूहा भी रहता है अगर कोठी वाले को तुम कहते हो कि ये काठी की वजह से इज्जत वाला है तो चूहे को भी कहो कि ये चूहा भी इज्जत वाला है क्यों कि ये भी कोठी मे रहता है।
हवाई जहाज मे चलने से कोई इज्जत वाला नही बनेगा इसलिये कि जहाज मे कुत्ते भी चलते है।
शख्सियत, हैसियत, इज्जत, मकाम व मन्सब और बड़ाई मुल्क व माल से कायम नही होती बल्कि आमाल-ए-नबूवत से कायम होती है इसका यकीन हमारे दिल मे बैठ जाये। इसलिये ईमान के सीखने पर आओ नबूवत के 23 साल मे 13 साल मक्के मे सिर्फ ईमान का सीखना-सिखलाना था

शैतान मुसलमानो को अमल से नही रोकता

आज तब्लीग मे दो किस्म के आदमी निकलते हैं एक कमाने वाले जो अपनी कमाईयों को छोड़कर निकलते हैं लेकिन ये सारा वक्त अपनी कमाई के शोबों को सोचने मे और उसके ही ख्याल के इर्द-गिंद चक्कर काटते रहते हैं इसलिये यकीन उन्ही शोबों की शक्ल के साथ जुड़ा हुआ है, उसी यकीन को बाकी रखते हुए ये नमाज पढने को, रोजा रखने को, हज करने को तब्लीग-तालीम-जिक्र करने को तैयार है पर यकीन बदलने के लिये ईमान

सीखने को तैयार नही हालॉकि तब्लीग मे दो वजह से निकाला जाता है पहला ये कि हमारा यकीन कमाई से मिलने का खत्म हो कि कमाई से नही मिलता खुदा के दने से मिलता है और दूसरा आमाल से मिलने का हो कि चीजों के होने या न होने से हम नही पलेगें, आमाल-ए-नबूवत से खुदा हमे पालेगें, इस यकीन के बगैर अमल ऐसा जैसे बगैर करन्ट के बिजली का तार कि ईमान के बगैर अमल की कोई हैसियत नही अमल मुर्दार है और मुर्दा चोज से कोई फायदा नही उठाया जा सकता। आज शैतान मुसलमानो को अमल से नही रोकता वो जानता है कि अगर इसने अमल कर भी लियातोइसके अन्दर खुशफहमी ही पैदा होगी, जिसकी वजह से ये मेरे जैसी नाफरमान किस्म तैयार हो जायेगी। इसी वजह से आज लोग अपने ईमान की तरफ से बेपरवाह है कि शैतान आदमी कोअमल से बिगाड़ने की कोशिश करता है कि आदमी के पास ईमान की कूवत न हो इसका यकीन कमजोर हो तो अमल से बिगाड़ता है कि अमल किया बड़ाई पैदा हो गयी, शोहरत का जज्बा आ गया फिर ऐसे ही अमल इसके मुॅह पर खींच कर मारे जायेंगें।

अव्वल तो जन्नत सिर्फ ईमान पर मिलेगी, ईमान की वजह से ही इसे शिर्क वालों के मुकाबले मे चमकाया जायेगा अमल की वजह से नही। इसलिये असल चीज सीखने की ईमान है और आज मुसलमान ईमान सीखने को तैयार नही हालॉकि ईमान को सीखना ईमान पर मरने के लिये है नमाज,रोजा,हज और जकात आखिर मे हैं कि जो ईमान पर मरेगा वो जन्नत जायेगा।

इस बयान की असल किताब बंगले वाली मस्जिद मे मौजूद है

बाद नमाज फज्र बंगले वाली मस्जिद

04 रबीउल अव्वल 1384 हिजरी

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

जान के इस्तेमाल का नाम इस्लाम है

तेरे भाइयों, बुजुर्गो और दोस्तों ! इस्लाम अल्लाह के खजानों से दुनियॉ व आखिरत मे कामयाबियॉ हासिल करने के तरीकों का नाम है, इन्सान के बदन के हिस्सों के इस्तेमाल का वो तरीका जिससे जब तक ये दुनियॉ मे है यहॉ फायदा हासिल करे और कब्र मे जन्नत मे फायदा हासिल करता रहे है। ये तरीका आसान है, आसान इसलिये है कि इसमे कायनात के किसी सरमाये की जरूरत नही पड़ती, फकीर से फकीर आदमी हर वक्त कामयाब बन सकता है। इस तरीके का तआल्लुक इन्सान की जान से है आर जान लगाने से ही इन्सान के अन्दर इस्लाम आता है, हकीकत मे जान के इस्तेमाल का नाम ही इस्लाम है। मकान, कपड़े, जमीन, आसमान दीन नही बनेगे बल्कि हाथ, पैर, ऑख, कान और जुबान के इस्तेमाल के तरीके दीन बनेगें। चाहे सदर हो, वजीर हो, गोरा हो, काला हो, किसी कौम का हो उन सबके सर से लेकर पैर तक जो आजा हैं उनके इस्तेमाल के एक खास तरीके को इस्लाम कहते हैं अगर उस खास तरीके से अपने हाथ, पैर, ऑख, कान और जुबान का इस्तेमाल करना आ गया तो इन्सान कामयाब हो जायेगा।

चाहे वजीर हो या फकीर हो,
चाहे गोरा हो या काला हो,
चाहे महल मे रहता हो या झोपड़ी मे रहता हो,
चाहे इस जुबान का हो या उस जुबान का हो,
चाहे गार मे जाकर पड़ जाये या जंगल मे जाकर पड़ जाये,
चाहे कोई चीज इसके पास न हो पर इसको इज्जत मिलेगी, गैबी ताकतें इसके सामने पामाल हों जायेगीं और जाहिरी ताकत शिकस्त खा जायेगीं। ये जहॉ जायेगा हाथ, पैर, ऑख, कान और जुबान को लेकर जायेगा और इन चीजों के देने वाले खुदा का गैबी निजाम हर वक्त हर जगह इसके साथ है अगर इन्सान दुनियॉ के चक्कर मे पड़कर वो तरीका न सीखे और वो तरीका इसकी जिन्दगी मे न आये, ये बस बैल, दुकान, जमीन और मकान मे लगा रहे तो ये चीजें आदमी के साथ हर जगह नही जा सकती। अपने गॉव को छोड़कर शहर मे रहने चले जाओ तो जो कुछ तुमने गॉव मे बनाया है वो सब शहर नही ले जा सकते कि कुछ सामान ले आओ पर सब जगह वो भी नही ले जा सकते अगर दूसरे मुल्क मे रहना चाहो तो वहॉ इतना भी सामान नही ले जा सकते और जिस सामान के साथ तुम सारे मुल्कों मे ले जाकर फिर सकते हो उसे कब्र तक लेकर नही जा सकते कि जिन चीजों से तुम्हारी मौत व हयात का,
बीमारी-तन्दुरूस्ती का और
कामयाबी नाकामी का कोई तआल्लक नही, वो कहीं है-कहीं नही है, कहीं ले जा सकते हो-कहीं नही ले जा सकते पर हाथ, पैर, ऑख, कान और जुबान जिसके ठीक होने या बिगड़ने से
तुम्हारी इज्जत होगी या जलील होगे,
कामयाब होगे या नाकाम होगे,
पिटाईयों से बचोगे या पिटाईयॉ होगी।

इनको कही ले जाने से कोई नही रोक सकता कि हवाई जहाज मे, पानी के जहाज मे, खच्चर पर, गधे पर या पैदल हो ये सब तुम्हारे साथ जायेगा। फकीर, सदर, वजीर सबके साथ जायेगा जिससे उसकी राहत व तकलीफ का, मौत व हयात का, सेहत व बीमारी का तआल्लुक है वो हर एक के साथ सारा का सारा उसके साथ जायेगा। हक तआलाशानुहू ने हर आदमी को कामयाबी के असबाब देने मे कोई तफरीक नही की, कामयाबी के असबाब

जहाज और रेलें नही है,

गेहूँ, जौ, ज्वार नही हैं,

कारखाने, कोठी और दुकान नही है,

सोना,चॉदी, हीरे और जवाहरात नही है,

कामयाबी क असबाब आपके सर से लेकर पैर तक के बदन के आजा से निकलने वाले अमल हैं। वही दो कान, दो ऑखें सबकी है, इन ऑखों, कानों से जो अमल निकलेगे उन पर कामयाबी या नाकामी होगी अगर फकीर अन्धा हो सकता है तो वजीर भी अन्धा हो सकता है अगर हमने मेहनत करके, जान लगाकर, जान झोंककर, मेहनत करके अपने बदन के आजा के अमल को दुरूस्त कर लिया तो हम कामयाब होगें और अगर खुदा न ख्वाशता अपने बनने की फिक्र न की तो

ऑख बन गयी ऐसी जिस पर पिटाई हो,

जुबान बन गयी ऐसी जिस पर जलील हों।

कोई झटका आयेगा कि सरमायेदारो का नक्शा टूटेगा,

वजीर की वजारत का खाका बिगड़ेगा, टूटकर गिरेगा,

दुनियॉ मे भी मुसीबतें उठायेगा और आखिरत मे जहन्नम जायेगा। खुदा आदमी को जो कुछ भी देते हैं उसकी मेहनत पर देते हैं, मेहनत की माल पर तो माल मिल जायेगा लेकिन आप भी मोहताज और माल भी मोहताज कि अन्धे को रास्ता दिखलाने के लिये अन्धा साथ मे कर दिया। लगंड़े को लगंड़ा दे दिया, भूखे को भूखा दे दिया, लगंड़े को लगंड़ा देने से लगंड़ापन बढ़ गया या इलाज हो गया? माल मोहताज है कि अगर इस पर कुत्ता पेशाब कर जाये तो ये माल उस कुत्ते की टांग नही पकड़ सकता, इसी माल से मकान बना लिया तो वो मकान भी माल की तरह ही मोहताज है। माल से भैंसें, गाय, बकरी ले आये वो भी मोहताज, एक मोहताज मिला तो हाजतों मे और इजाफा हो गया।

इन्सान की बीमारी ये है कि आदमी अपने जैसे मोहताजों के हाथ मे अपनी हाजतों का इन्तेजाम समझता है। ये खुश है कि तेरे पास इतनी भैंसे हैं, इतना नकदी है, किसी दफा मे पुलिस ने धर लिया तो सारे मोहताज घर पर मौजूद है और ये जेलखाने मे कि सौ हाथ की दूरी पर इसका घर है और ये कब्र मे पड़ा हुआ है जहॉ इसकी पिटाई हो रही है कि वहॉ कोई काम नही आता। आज मेहनत कर रहे हो माल पर कि माल मिल जायेगा तो काम चल जायेगा। अब माल मिल गया तो चीजे लेने पर मेहनत की तो खुदा माल भी दे देगें और चीजें भी दे देगें पर खौफ और हाजत मे इजाफा हो जायेगा, जो आदमी माल और चीजों पर मेहनत करेगा वो आखिर मे भूखा-प्यासा मरेगा, पीप और खून के ऑसू रोएगा। अपने हाथ, पैर, ऑख, कान और जुबान ठीक कर ले, अपने ऊपर मेहनत करके के अपने आजा और जवारे के अमलो को ठीक कर ले तो ये है बडा भारी सरमायेदार, बड़ा भारी हाकिम, बड़ा भारी कामयाबी वाला, चाहे मकान न बना, ओहदा न मिला, जमीन न मिली कि कोई चीज इसके पास नही है पर हाथ, पैर, ऑख, कान और जुबान के सारे अमल सही है, अपनी

इन्सानियत को इस तरीके पर इस्तेमाल करता है जो तरीका मुहम्मद सल्ल0 लाये तो ऐसों के दुश्मन खत्म होगें ओर दोस्त बढ़ेगें, इसको जमीनें-जायजादें मिलेगी क्यों कि कामयाबी जान को जान पर झोकने मे है, जान को ओहदों पर, मकानों पर, दुकानों पर झोकनें मे नाकामी है।

जान को जान पर ही खर्च करो कि मेरा इस्तेमाल ठीक हो जाये, अल्लाह रब्बुल इज्जत को मेरा जो इस्तेमाल पसन्द है वो आ जाये इसी वास्ते अल्लाह रब्बुल इज्जत की तरफ से चौबीस धन्टे मे पॉच मर्तबा आवाज लगती है कि कभी मकान मे हो, कभी जमीन मे हो, कभी दुकान मे हो, कभी बाजार मे हो वहॉ आवाज लगी اَللّٰہُ اَکۡبَرُ اللّٰہُ اَکۡبَرُ कि चींटी बहुत छोटी है चूंटा बड़ा है, सितारे बहुत छोटें है चॉद बड़ा है, सूरज बहुत छोटा है आसमान बड़ा है, आसमान से जिब्राईल बड़ा है आखिर मे जाकर कह दो कि ये सब जर्रे की तरह छोटे हैं अकेला अल्लाह बड़ा है इसलिये कि ये सब मख्लूक हैं और अल्लाह खालिक है अगर ये चीटी छोटी है तो वा चीटी बड़ी कैसे है? कि ये उस चीटी का बच्चा है लेकिन चीटी खुद छोटी जिन्स है। बाप कोई काम नौकर से कहे तो बड़ा बेटा नौकर से यूँ कहे कि तू ये काम न करना, नौकर कहे कि मै तो बड़े की मानूगा, बेटा कहे कि मैं भी तो बड़ा हूँ, ये सुनकर बाप को गुस्सा आ गया तो बेटे ने बाप को धक्का देकर निकाल दिया कि मै चार भाईयों से बड़ा हूँ। किसी के दिल मे अपनी बड़ाई का अगर एक जर्रा भी है तो दोजख मे डाला जायेगा कि तू तो छोटी जिन्स है फिर भी तूने अपनी बड़ाई का ख्याल किया।

اَللّٰہُ اَکۡبَرُआज दुनियॉ मे तआरूफ क तौर पर जो छोटा-बड़ा कहा जा रहा है उससे कहीं धोखा न खा जाना कि ये बहुत बड़े

आदमी हैं, ये गवर्नर साहब है, ये वजीर-ए-आजम है, ये सारे छोटे हैं क्यों कि खुदा ने इनको मनी के कतरे से बनाया और अपने हुक्म से बनाया है।

एक हुक्म दिया जमीन बन गयी,

एक हुक्म दिया सूरज बन गया,

एक हुक्म दिया चॉद बन गया और एक हुक्म से इन सबको तोड़ देगें।

اَللّٰہُ اَکۡبَرُसारी जमीन व आसमान पर निगांह डालो اَللّٰہُ اَکۡبَرُएक आदमी के पास सौ बीघा जमीन, सारे मुल्क की जमीन उससे बहुत बड़ी और सारी दुनियॉ की जमीन उससे भी बड़ी फिर सातों जमीन और भी बड़ी हैं, अब सातों जमीन व आसमान बहुत बड़े, اَللّٰہُ اَکۡبَرُअल्लाह अगर चाहें तो

सारे नबियों को एक हुक्म से दोजख मे डाल दें कोई चूँ करने वाला नही,

सारे फरिश्तों को एक हुक्म से आग मे डाल दें कोई उफ करने वाला नही,

अब अल्लाहु-अकबर कहा तो छोटा-बड़ा चूहा भी कहा जाता है, बड़े के बारे मे ये नही है कि जिसक ऊपर कान मे लफज "बड़ा" पड़ गया उससे तुम्हारे मसअले का कोई तआल्लुंक हो। बहुत बड़ा कारखाना या बहुत बड़ा मुल्क ये सब ऐसे हैं जैसे बहुत बड़ा चूहा, अब एक छोटे से बिल्ली के बच्चे ने कहा म्याऊॅ, ऐसे ही ये जितने बड़े हैं कलेक्टर साहब, वजीर साहब, जमीनदार साहब, खुदा-ए-पाक की कसम ! जो आदमी खुदा के गैर को बड़ा इकरार देते हैं वो ऐसे हैं जैसे चूहे को बड़ा मानने वाला अगर एक फरिश्ता म्याऊॅ कर दे तो वजीर-ए-आजम की हैसियत एक बड़े चूहे से ज्यादा नही हैं। मलकुलमौत से कहा जायेगा कि जा अर्श वाले फरिश्तों की रूह निकाल द, निकाल दी। अब कौन बाकी ? हम चारों बाकी, जाओ उन तीनो की भी रूह निकाल लाओ। अब कौन बाकी? जी आप बाकी और मैं बाकी, तू भी मर जा, वो भी मर गया। ये क्या बड़े

हुए अरे बड़ा वो हुआ जिसके हुक्म से ये सब कुछ हो रहा है। तआरूफ के तौर पर छोटा-बड़ा बोला गया कि कारखाने, ऐटमबम, हवाई जहाज, राकेट छोटे हैं अकेला अल्लाह बड़ा है।

اَللّٰهُ اَكْبَرُ कि फलॉ पुर्जा है तो बहुत छोटा मगर उसकी वजह से ये कारखाना बन्द है अरे तेरी खेती पर, माल पर, फौज पर, सदर पर, वजीर पर, तेरी मेहनत पर, तेरी तदबीर पर कोई मसअला मौकूफ नही पहले दर्जे मे कहा गया है कि ये सब छोटे हैं इनसे कुछ नही होता, इन बागों से, जानवरों से, जमीनों से, इन्सानों से कुछ नही होता ये बहुत छोटे हैं इनके ऐतबार से देखना, खड़ा होना और बैठना फिजूल है।

अश्हदुअन्ना मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह

अगर तुम कामयाब बनना चाहते हो तो उस बड़े ने जिसके करने से सब कुछ हो रहा है उसने मुहम्मद सल्ल0 को अपना कासिद बनाकर तुम्हारे पास वो तरीका देकर भेजा है जिससे सारे इन्सानो को कामयाबी मिलेगी। बुजुर्गो पर भी ये शर्त आयेगी कि अगर वो हुजूर सल्ल0 के अमल के खिलाफ कोई अमल कर रहा है तो वो बुजुर्ग नही हो सकता, अब तो सिर्फ हुजूर सल्ल0 का अमल ही नमूना है। कोई सलातीन वजीर बन जाये, साईन्सदा बन जाये, मशाएख बन जाये हम इनमे से किसी एक के भी कहने पर नही चलेगें सिर्फ हुजूर सल्ल0 के कहने पर चलेगें अगर वजीर या सदर हुजूर सल्ल0 के अमल के खिलाफ बोल रहा है तो वो ऐसा है जैसे गधा बोल रहा है। कुत्ते के भौकने पर अगर कोई अपना रूख मोड़ दे तो वो मंजिल तक नही पहुँच सकता, ये कान गधों की आवाज सुनने के लिये नही हैं तो गधे जैसे आदमियों की बात कैसे सुने, ये कान तो सिर्फ हुजूर सल्ल0 की बात सुनने के लिये हैं। जब ये ऑख गधे-कुत्ते देखने के लिये नही है तो गधे-कुत्ते जैसे इन्सान को कैसे देखे।

हयया लस्सलाह हयया लल्फलाह

नमाज के लिये आ जा, कामयाबी लेने के लिये आ जा, ऑख से-जुबान से कामयाबी मिलेगी तू इन्हे खुदा के लिये इस्तेमाल कर अगर तूने अपने जिस्म के आजा को दस मिनट सही इस्तेमाल किया तो चौबीस धन्टे मे तेरो कामयाबी की मिक्दार दस मिनट। जिस बड़े की बड़ाई से ऑखें मिली इसे उसी खुदा के लिये इस्तेमाल कर, बदन के सारे आजा को उसी के लिये इस्तेमाल कर, जिसकी बड़ाई के सदके मे तुझे ये सब मिला है तो फिर वो तेरे हुस्न व जमाल को और बढ़ायेगा। खुदा के ऐतबार से बोलने वाला बन अगर सारी दुनियॉ तेरे हाथ मे आ जाये तो भी दुनियॉ के ऐतबार से न बोल, तेरी हर चीज बढ़ती चली जायेगी हत्ता कि सातों जमीन और सातों आसमान से ज्यादा बढ़ जायेगी। ये ऑख खुदा ने दी थी अपने हुक्म पर इस्तेमाल करने के लिये अगर इस ऑख से दूसरों को बड़ा समझकर देखा और इस पर खर्च कर दिया तो तेरी कामयाबी की मिक्दार घटती चली जायेगी और घटते-घटते बिल्कुल खत्म हो जायेगी फिर दोजख मे डाल दिया जायेगा।

खेती मे भी सर से लेकर पैर तक,
घर मे भी सर से लेकर पैर तक,
दुकान मे भी सर से लेकर पैर तक,
हुकूमत मे भी सर से लेकर पैर तक,
दोस्तों मे भी सर से लेकर पैर तक,
दुंश्मनों मे भी सर से लेकर पैर तक,
सफर मे भी सर से लेकर पैर तक,
बीबी के साथ भी सर से लेकर पैर तक,

बच्चों के साथ भी सर से लेकर पैर तक,
मॉ-बाप के साथ भी सर से लेकर पर तक,
जिस्म के सारे आजा को मुहम्मद सल्ल0 के तरीके पर इस्तेमाल कर ले तो आज जितने मुल्क व माल के नक्शों से बड़े बन रहे हैं खुदा तेरे सामने इनको जलील करके दिखायेगें, ये सब तेरे सामने हाथ जोड़-जोड़कर अपनी हाजतें कहेगें कि अल्लाह से मेरे लिये दुआ कर दो। तू जिस रास्ते से गुजर जायेगा कारें-मोटरें रूक जायेगीं, पार्लियामेन्ट से गुजर जाये तो गर्दनें झुक जायेगी, इसलिये कहते हैं कि तीन चिल्ले दे दो तो कहते हो कि साहब मैं तो जमीनदार हूँ, क्या मतलब कि मैं जमीनदार हूँ ? कि मेरे पास अभी वक्त नही है किसी और को पकड़ लो, अरे ! कोई और जायेगा तो वो कामयाब होगा लेकिन तू तो मुसीबतों मे मुब्तिला होगा।
सारा मसला आसान है अगर इन नक्शों से अपने आपको निकाल लिया जाये क्यों कि जिन नक्शों मे रहते-रहते अल्लाह की बड़ाई दिल से निकल गयी अब बगैर उन नक्शों को छोड़े अल्लाह की बड़ाई दिल मे कैसे आयेगी ? इसलिये कि हजरत मुहम्मद सल्ल0 को जो सबसे पहला हुक्म मिला है कि ऐ नबी आप उन लोगो को डरायें जिन्होने छोटों को बड़ा समझ रखा है कि अगर ये इन्ही को बड़ा समझकर चलते रहे तो आफतें और मुसीबतें इन्हे घेर लेगीं। सबसे पहली मेहनत और सबसे पहली आवाज ही यही है, सबसे पहले बच्चे के कान मे जो आवाज दी गयी जिस बच्चे ने अभी कुछ नही देखा है कि बेटा ! اللهُ اَكْبَرُबहुत बड़ी कामयाबी का राज इसमे है बस तू खुदा की बड़ाई को पहचान जाये कि वो इतना बड़ा है। हमारी कोई हद नही हम इतने छोटे से छोटे हैं कि उनकी बड़ाई को देख नही सकते। हजरत मुहम्मद सल्ल0 ने अल्लाह को देखा है इसलिये वो बीना हैं ओर हम सब नाबीना है, देखने वाले ने ये बतलाया कि खुदा की बड़ाई के ऐतबार से अपनी चौबीस घन्टे की जिन्दगी के अमल ठीक करो,
जो बोलने को बतलाया वो बोलो,
जो देखने को बतलाया वो देखो,
जो सुनने को बतलाया वो सुनो,
जो करने को बतलाया वो करो,
पहले दिन स जो आवाज कान मे पड़ी है आज तक वो आवाज खुदा कान मे पहुँचा रहे हैं पर तू कहे कि मेरा जमीदारा टूट जायेगा, अच्छा तो आप हो गये जमीदारा चलाने वाले। अरे गधे ! तेरे हाथ मे कुछ नही है, तेरी हैसियत मनी के कतरे की भी नही है, खुदा ने तुझे बनाया है अगर वा तेरी टांग तोड़दे तो क्या करेगा? बाहर तो धोखा है हकीकत कुछ और है, ऑखों से दिखायी कुछ दे रहा है पर कर खुदा रहा है। अब मस्जिद मे आ जाओ ये मस्जिद दूरबीन है, हजरत मुहम्मद सल्ल0 ने इस दूरबीन से सहाबा को अल्लाह से होना दिखलाया, जन्नत दिखायी, दाजख दिखायी, हश्र दिखलाया। आज तो मकानों के देखने के ऐतबार से दूरबीने बनायी गयी हैं पर दूरबीन मे अगर कचरा हो तो दिखायी नही देगा, हजरत मुहम्मद सल्ल0 ने मस्जिद को नक्शों से पाक-साफ रखकर इसमे दावत, तालीम, जिक्र और नमाज को लगा दिया तो मस्जिद दूरबीन बन गयी कि
कोई शेर दिखायी दिया तो अर्श तक का सिलसिला जुड़ जायेगा,
कोई मामला आया तो सातों जमीन व आसमान के ऊपर निगाह चली जायेगी,
कोई बात पेश आयी तो हश्र तक सामने आ जायेगा,
वो दूरबीन जिसने पिछले जमाने के सारे अम्बिया अलै0 की जिन्दगी हमारे सामने कर दी। इसलिये अब हमे ये फैसला करना होगा कि हमे तो खुदा की जात के खजानों से जिन्दिगियॉ बनानी हैं। हम जमीनदारा से नही पलते

हमारी परवरिश का जरिया जमीनदारा, सियासत, साइन्स कुछ नही, हमे जमीन व आसमान से कोई तआल्लुक नही, छोटों को कौन मुँह लगाये, हमारा तआल्लुक जमीन व आसमान पर कब्जा रखने वाले खुदा से है। मुल्क और ओहदें उसी से लेने है जो कुछ भी छिना है सब वापस लेना है, हमारे ऊपर जो आफतें आयी हैं उनका बदला लेना है। आखिरत मे भी लेना है और दुनियॉ मे भी लेना है, छोटों से नही लेना जो बड़ा है उससे लेना है, तौहीद व सुन्नत से लेना होगा, अकेला अल्लाह सब कुछ करता है और हजरत मुहम्मद सल्ल0 के तरीके पर करता है, हजरत मुहम्मद सल्ल0 भी एक और अल्लाह भी एक, वो रब होने मे एक है और उससे लेने का तरीका भी एक है, वो तरीका हजरत मुहम्मद सल्ल0 के अमल हैं जब हम हजरत मुहम्मद सल्ल0 के तरीके पर आयेगें अल्लाह नेअमतों की बारिश करेगें। हम यूँ नही कहते कि तुम बिल्कुल फकीर हो जाओ बस जाहिद बन जाओ, तुम मिम्बरियॉ लेते हो हम तो कहें कि तुम वजारतें लो, सदारतें लो और इससे आगे इनकी अमानतें और सियादतें लो एसे कि तुम्हारा कोई हरीफ न हो। कोई मुल्क लेने से मिलता है और कोई मुल्क अल्लाह के देने से मिलता है, सब कुछ अल्लाह का है किसी का नही है हर मुल्क खुदा का है। अल्लाह की अदालतों का मामला अल्लाह से करो, अल्लाह की जमीन का मामला अल्लाह से करो, बस अल्लाह की बड़ाइ दिल मे पैदा करो, इसके लिये सारी दुनियॉ में उसकी बड़ाई के गीत गाओ।

यही तुम्हारा काम है,
यही तुम्हारी आवाज है,
यही तुम्हारा नारा है,

तस्बीह फैलाना, तक्दीस फैलाना, अल्लाह की जात-ए-आली से फायदे लेने के तरीकों को सारी दुनियॉ मे कायम करना यही तुम्हारा काम है, अपनी जिन्दगी से ये साबित कर दो कि हम ये मानते हैं कि

हमारी जमीनो से नही होता,
हमारे कमाने से नही होता,
हमारे घर वाले हमसे नही पलते खुदा पालता है,

हम खुद जमीन व आसमान के दरम्यान की किसी चीज से नही पलते हमारा खुदा हमे पालता है, जो काम खुदा ने दे दिया है उसे आलम मे करते फिरो। जमीनदारे का वक्त आ गया घर वाले पूछ रहे कि कहॉ जा रहे हो?

अल्लाह के कलिमे को फैलाने।

हम लोगों का क्या होगा?

अरे ! क्या तू गधी है तेरे अकीदे अभी तक ठीक नही हुए, अरे मेरे होने या होने से क्या होगा अगर अल्लाह हम सब पर छत गिरा दे तो मैं क्या कर सकता हूँ ?

अल्लाह की आवाज लो और अल्लाह की बड़ाई की आवाज लो, तौहीद की आवाज लो और कोई जगह ऐसी न छोड़ो कि अपनी बिसात भर मेहनत करके इस आवाज पर लोगो के कदम न उठवा लो। सारी जमीने, सारा मुल्क व माल सब कुछ मेरे पैरो के नीचे होगा अगर इस काम की ताकत तुझे देखनी है तो इस काम को इस तरह करो जिस तरह जाहिल इन्सान सियासत पर, मुल्कगीरी पर, दुकानो और कारखानों पर मेहनत करता है कि बस रात-दिन उसी की धुन, सोते-जागते वही नक्शे अगर तू अपनी बोटी-बोटी कटवा दे या रात-दिन जंगलों मे मारा-मारा फिरे तो क्या तू खुदा की बड़ाई का हक अदा कर सकता है ? तेरे पास क्या है कि उसी की दी हुई एक हकीर सी जान है और उसी के दिये हुए चन्द ठीकरे हैं, जब तू इस जान को और इन ठीकरों को

उसी की बड़ाई बोलने मे लगा दे फिर उसके खजानों मे जो कुछ है वो सब तुझे देने के लिये खजानों के दरवाजों को खोल देगा।

अब तू बाहर निकल कर चौबीस घन्टे अल्लाह के ऐतबार से इस्तेमाल होना सीख ले फिर वापस आकर इसी मेहनत को करने के

लिये मस्जिदो मे ज्यादा वक्त लगा तो

तेरा देखना ठीक होगा,

तेरा बोलना ठीक होगा,

तेरा सुनना ठीक होगा,

तेरा सोचना ठीक होगा,

तेरा चलना ठीक होगा,

हजरत उमर रजि0 ने एक शख्स से पूछा तुम क्या पी रहे हो ?

उसने कोई जवाब न दिया, आपने तीन मर्तबा यही सवाल पूछा कि जुबान का इस्तेमाल खुदा के ऐतबार से नही हो रहा है इसलिये वो शख्स चुप है। चौबीस घन्टे की जिन्दगी जब ही काबू मे आयेगी जब बाहर निकल कर अल्लाह के ऐतबार से इस्तेमाल होना सीख लें। हमे पहुँचते-पहुँचते यहॉ तक पहुँचना है कि हमे जायजादें और मकान बुरे लगने लगे, झोपड़ों मे रहना हमे अच्छा लगने लगे कि हजरत मुहम्मद सल्ल0 की सीधी-सादा जिन्दगी अल्लाह को राजी करने के लिये अच्छी लगने लगे। वो फकीरों की जिन्दगी जो मुहम्मद सल्ल0 के तरीकों पर हो, बादशाहों की जिन्दगी से अच्छी हैं। मुहम्मद सल्ल0 के तरीकों को नापसन्द करने वाले गधों को खुदा वजारत की कुर्सी पर बिठाये तो क्या तुम ये तमन्ना करोगे कि तुम गधे बन जाओ ? मुहम्मद सल्ल0 के तरीका ए अमल से हटकर, अल्लाह के यकीन से हटकर आदमी गधे से ज्यादा हकीर है, कुत्ते और सुअर से ज्यादा हकीर है तो क्यों गधा बनने के पीछे पड़े हुए हो। तुम तो ये तय करो कि चाहे हमारे पास कुछ न रहे हमे तो आदमी बनना है, इसके लिये चार महीने कुछ भी नही अभी तो उम्रों की, सालों की जरूरत पेश आयेगी।

चार महीने तो ऐसे हैं जैसे प्राइमरी कि प्राइमरी वालों को कोई ओहदा नही मिलता है, प्राइमरी वाले इसलिये हैं कि कोई कहे कि हमने इतनो को पढ़ाया तो प्राइमरी वालों को भी गिन लो। चार साल लेकर प्राइमरी वाला बनाये, अहमक बनाये, खून चूसने वाला बनाये सिवाये इसके कि कुछ बदएख्लाकियॉ आ जायें, जहॉ लड़के-लड़कियों का इख्तिलात होता है। अब मर्दुम्शुमारी इस बात की कि कौन हैं जिन्होने नबियों के रास्ते पर मेहनत की थी तो इस मर्दुम्शुमारी मे ये तीन चिल्ले वाले यानी प्राइमरी वाले भी आ जायेगें। ये रास्ता चल जावे कि इस रास्ते वालों को मुल्क व माल के नक्शों पर ठोकर मारना आ जाये तो लोग वजारत और सदारत पर इसको तरजीह देगें, इसलिये पैदल इलाको मे कलिमा का नारा लगाते हुए फिरो कि ये रास्ता चालू हो जाये।

<u>इस बयान की असल किताब बंगले वाली मस्जिद मे मौजूद है</u>

बाद नमाज मग्रिब बंगले वाली मस्जिद

14 रबीउल अव्वल 1384 हिजरी

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

मेरे भाइयों और दोस्तों ! खुदा ने कुरआन-ए-पाक मे सारे मसअलों के लिये दुआऐं बतलायीं है, सारे नबियों कि दुआऐं अलग-अलग है, किसी की दुआ पर खाना उतर रहा है, किसी की दुआ पर पानी का चश्मा निकल कर सेहत मिल रही है। बॉझ औरत से बच्चा पैदा होना और हुकूमत के शर व जालिम के शर से बचने की दुआ, बरकत की दुआ, रोटी मिलने की दुआ अगर दुआ पर मसाएल आ जाये तो ये जो रात व दिन हमकमाई मे लगे हुए है और कमाई के लिये ये जो रात और दिन डन्डे बरस रहे हैं, ये सारे मसअले खत्म कि कोई बात नही दुआ करेगें, बिल्कुल आसान मसअला ये है कि हर आदमी की अपनी दुआ कुबूल हो।
हुजूर सल्ल0 हर आदमी को दुआ वाला बनाकर गये पर हम खुद दुआ वाले न बनकर किसी से दुआ करने को कह रहे है, यह यहूद व नसारा की तक्सीम है कि इन्होने खूब खून पिया, खूब गजब किया, खूब जिना किया बस आठवें दिन गिरजा मे जाकर पादरी से दुआ करा रहे है। हम सौ साल तक ईसाइयों की गुलामी मे रहे और अब पंडितों की गुलामी मे हैं, ये भी इसी किस्म के आदमी हैं ये सब भी अमल से आजाद हैं बस गाय के नाम पर हजारो आदमी मार दिये आठवें दिन मन्दिर मे जाकर हाजिरी लगा दी। हुजूर सल्ल0 सबको को दुआ वाला बनाकर गये थे और इतना ही नही बल्कि हर एक को दुआ वाला बनने का रास्ता भी बतला कर गये थे, बस उस रास्ते को आज चालू करने की बात है। ये भी नही कि बुजुर्गो के होते हुए हम क्यों दुआ मॉगे, सारे सहाबा रजि0 के होते हुए ताबई दुआ मॉगता है और उसकी दुआ पर सवारी जिन्दा होती है। हुजूर सल्ल0 हमे ये रास्ता बताकर नही गये कि बाज लोग दुआ वाले बन जाये और बाकी दुआ कराने वाले। हुजूर सल्ल0 ने,
न आलिमों को आवाम पर छोड़ा,
न आवामं को आलिमा पर छोड़ा,
न हाकिम को महकूम पर छोड़ा,
न महकूम को हाकिम पर छोड़ा,
तुम जरा उस जिन्दगी का तसव्वुर करो कि वहॉ कोई किसी क सामने हाथ नही फैलाता था, किसी की चीज पर निगाह नही रखता था, कोई किसी से लालच नही करता था कि हर एक की जिन्दगी मुस्तकिल बन रही थी, वो चीजों पर मौकूफ नही थे बस चौबीस घन्टे की जिन्दगी को हुजूर सल्ल0 के तरीकों पर गुजार लो मसअला हल। हुजूर सल्ल0 के तरीकों को जिन्दगी मे लाने के लिये पैसा घटे तो घटने दो क्यों कि पैसे के रास्ते से दुआ कुबूल न होगी बल्कि हुजूर सल्ल0 के रास्ते से दुआ कुबूल होगी। अब सबसे पहले अल्लाह ने जो दुआ हमे दी है वह यह कि हम अल्लाह से हिदायत मॉगे। ये पहला दर्जा मोड़ का है कि चोजो के एतबार से हम मुताफर्रिक होकर चल रहे हैं, पहली दुआ ये है कि हमारा सबका अल्लाह की तरफ मोड़ हो जाये। कुरआन मे बहुत सारी दुआऐं है, दुआऐं सारी कुबूल होंगीं लेकिन जब मोड़ हो जाये तब। ये मज्लूमों की आहें, बच्चो का खुन, नाहक बाजारों मे आग लगाना रंग लायेगा जब तुम्हारी दुआऐं कुबूल होने लग जायें। मुल्क या माल के तरीकों पर चलने का नाम दुआ नही है, नबियों के तरीके पर जान व माल के खर्च के तरीके अख्तियार किये जाये तो दुआ कुबूल होंगीं। लेकिन दुआ वाले तरीके मे तरतीब कायम करना फिर उसी तरतीब पर अमल करना,

1-ईमान की दावत

2-तालीम

3-जिक्र

4-नमाजें

5-खिदमत-ए-खल्क, इन सबमे जान लगानी है और खुदा के रास्ते की नक्ल व हरकत मे माल खर्च करना है। तालीम व तरतीब मे, दूसरों की जरूरत पूरी करने मे कितना माल खर्च होगा? इसका इल्म लेना होगा पर सबसे पहले ये दुआ कि

اهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ

ऐ अल्लाह अपने रास्ते की तरफ हम मे मोड़ पैदा कर दे मुल्क व माल के टेड़े रास्तों से हमारा रूख फेर दे, हमे नबियों के,

सिददीकीन के, सालिहीन के ओर शोहदा के रास्तों की हिदायत दे दे।

صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَ

कारून के तराकों से मूसा अलै0 के तरीकों की तरफ मोड़ दे,

कौम-ए-नूह के तरीकों से नूह अलै0 के तरीकों की तरफ मोड़ पैदा कर दे,

हमारा दिल, हमारे जज्बात, हमारा यकीन और हमारा रूख मोड़ दे, सबसे पहली दुआ यही है बाकी सारी दुआऐं रूकी हुई है कितना ही मॉगो कुबूल नही होंगीं और जिसके अन्दर मोड़ पैदा हो गया उसकी दुआऐं कुबूल हो जायेगी और जिसके अन्दर मोड़ पैदा न हो उसकी दुआ मुॅह पर खींचकर मार दी जायेगी।

أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْमे क्या है ? उसकी तफसीर कुरआन मे यूॅ कही गयी है, नबीयीन, सिददीकीन, शोहदा व सालिहीन। मेहनत करने वालो की तीन किस्मे है और एक किस्म है अपनी जात से सही चलने वालों की। तीन किस्मे हैं जिनसे मुल्क व माल के तरीकों से खुदा के तरीके की तरफ इन्सानी जिन्दगी मे मोड़ पैदा होता है। नबी खुदा से वहय लेकर उस पर मेहनत करते हैं फिर सिददीक और शहीद नबी से वहय लेकर उस पर मेहनत करते हैं। इसलिये मोड़ पैदा करो जब मोड़ पैदा हो जायेगा तो लोग सालेह बनने की कोशिश करेंगें और उनके सामने मुल्क व माल के नक्शे नही होंगें बल्कि उनके सामने खुद को सालेह बनाना होगा।

पहली मेहनत होगी इन्सानियत मे खुदा की तरफ मोड़ पैदा होने के लिये इसलिये नबियों वाली मेहनत पर खड़े हो जाओ, अपने आपको सारे चक्करों से निकालो फिर खुदा से मॉगो इन्सानियत के सारे मसअले हल होंगें पर सबसे पहले मेहनत करनी पडगी कि हमारा रूख सबकी तरफ से रब की तरफ मुड़ जाये। इन्सानियत के अन्दर मोड़ पैदा होने के लिये मेहनत करते रहो, इन्सानियत के अन्दर मोड़ पैदा होने के लिये दुआऐ मॉगो, जब मोड़ पैदा हो जायेगा तो लोग कोशिश करेगें कि मैं सालेह बनु। लोग गीबत और बाहतान छोड़ देगें मुहब्बतों पर आ जायेंगें, जो सालेह बनने के लिये मेहनत करेगा खुदा उसे सालेह बनायेगें। हदीसों के अन्दर आया है कि ईमान बगैर तलब के नही मिलता है, खुदा एख्लाक उन्ही को देता है जो खुदा को पसन्द हैं, वजीर के लिये पसन्दीदा होना शर्त नही है अगर इस्लाम वाली जिन्दगी आ जाये जिस जिन्दगी पर दुआ करने से मुर्दा सवारी जिन्दा हो जाये, आसमान से पके-पकाए खाने उतर आये अगर वो जिन्दगी आ जाये तो ये सब तुम्हारी पूजा करते फिरेंगें, वो तो बेचारा माथा टेकने को तैयार है लेकिन तुम्ही नही चाहते कि ये तुम्हारे सामने झुके, इन्होने ख्वाजा मुईनुददीन चिश्ती रह0 के किस्से सुने तो वहॉ जाकर माथा टेक दिया।

ये झुकने वाला आज हमे क्यों मार रहा है ? ये इसलिये मार रहा है कि तुम हमे अपने सामने क्यों नही झुकवाते कि ऐ मुसलमान तू हमे अपने आगे क्यों नही झुकवाता आज हम सापँ, बन्दर, दरिया के आगे झुक रहे हैं अरे ! हम तो तेरे बुजुर्गो के नाम तक पर झुकने को तैयार है तू वलियों की तरह क्यों नही बनता?

तू सूरज की तरह रौशन बन हम उसके आगे नही झुकेगें तेरे आगे झुकेगें।

तू दरिया की तरह सखावत से बहने वाला बन हम दरिया के आगे नही झुकेगें तेरे आगे झुकेगें।

तू सालेह बन, वली बन,

तू दुआ वाला बन, हुजूर सल्ल0 वाली जिन्दगी वली बनाने की मशीन है। कुरआन व हदीस पर अमल कर ले बस तू वली बन जायेगा, हुजूर सल्ल0 वाली जिन्दगी चश्मा हैं सारी विलायतें इसी समन्दर से फूट रही है। कोई ऐसा आदमी नही जो हुजूर सल्ल0 वाली जिन्दगी से कटकर वली बन गया हो, जो वली बना है हुजूर सल्ल0 वाली जिन्दगी से बधंकर वली बना है,

तुम खुशबूदार फूल बनकर,

चमकदार सूरज बनकर,

सखावत के साथ बहने वाला समन्दर बनकर,

उनके सामने आ तो ये हर चीज को छोड़कर तुम्हारी तरफ आ जायेगें। ये तो माने हुए हैं पर जैसा उन्होने तुमको समझा हुआ है तुम उन्हे वैसे नही मिलते, जितने मुसलमान बच्चे हिन्दुस्तान के अन्दर प्राईमरी मे पढ़ रहे है तुम उतनो को शुमार करके 6 माह और 4 माह इस जिन्दगी को सीखने के लिये हमे दे दो फिर देखो क्या होता है ?

इस बयान की असल किताब बंगले वाली मस्जिद मे मौजूद है

बाद नमाज फज्र बंगले वाली मस्जिद

18 रबीउल अव्वल 1384 हिजरी

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

मेरे भाइयों और दोस्तों ! इस जमाने मे हम लोग चीजों से दुनियॉ की जिन्दगी को बनाना समझते हैं और आखिरत की जिन्दगी को अमल से बनाना समझते हैं कि हुजूर सल्ल0 जो अमल लाये हैं वो तो आखिरत मे काम देगें और चीजों से हमारी दुनियॉ की जिन्दगी बनेगी और यकीन ये बना है कि जब माल होगा तब चीजें मिलेगी और माल तब आयेगा जब हम मेहनत करेगें फिर जितनी ज्यादा मेहनत उतना ज्यादा माल और जितना ज्यादा माल उतनी ज्यादा चीजें फिर जितनी ज्यादा चीजें उतनी ज्यादा अच्छी जिन्दगी। इन्सान का मिजाज ये है कि जल्दी वाली चीज से ये मुहब्बत करता है और जो बाद मे हो उसको छोड़ता है,आज इन्सान रात-दिन बाद वाले अमल छोड़ते चले जा रहे हैं,

वहां की करोड़ो बरस की भूख सामने नही और यहां की एक वक्त की भूख सामने है,

वहां की करोड़ो बरस पिटाई सामने नही और यहां पुलिस के चार डंडे सामने है,

जर्र सामने हैं पहाड़ सामने नही,

हमारे मिजाज की वजह से बाद के अमल आज छोड़ने मे आ गये, ये क्यों हुआ ? इसकी वजह यहॉ की चीजें हैं जो हर वक्त हमारे सामने रहती है इसीलिये आज हर आदमी माल और चीजो के पीछे भाग रहा है और इसको पीछे से मुसीबते आकर घेर रही हैं, अमल छोड़ने की वजह से हमारे हाथों से मुल्क निकल गये पर बैठकर ये नही सोचते और गौर करते कि आखिर ये सब चीजे क्यों निकल रही और इसका क्या इलाज है ?

हकीकत ये है कि माल मेहनत-ए-इन्सानी से नही मिलता और चीजे माल से नही मिलती और चीजों से इन्सान की जिन्दगी नही बनती बल्कि खुदा के बनाने से इन्सान की जिन्दगी बनती। रसूलुल्लाह सल्ल0 वाले अमलों से दुनियॉ की भी जिन्दगी बनती है और आखिरत की भी जिन्दगी बनती है। अमल पर आखिरत मे मकानात मिलेगें दुनियॉ मे नही मिलेगे ये ख्याल गलत है, बस इस ख्याल से ही सारी गलती शुरू हुई है। अमल पर तो दुनियॉ व आखिरत दोनो जगह की जिन्दगी बनती है और माल का रास्ता वो है जिसमे दुनियॉ की थोड़ी बनती है पर बाद की सारी बिगड़ जाती है। अमलों पर अल्लाह मुल्क देगें, माल व जायजादे देगें, बागात-इज्जत-गल्बा-इत्मिनान व सुकून देगें और हिफाजत करेगें, दुनियॉ मे दुनियॉ की बिसात के एतबार से देगें और आखिरत मे आखिरत की शान के एतबार से देगें।

इन्सान का अमल उसी वक्त सही हो सकता है जब वो आखिरत को सामने रखकर अमल करे, इन्सान जब दुनियॉ को सामने रखकर चलेगा तो माल का रास्ता अख्तियार करेगा। आखिरत मे माल नही चलना वहॉ फक्त अमल चलेगा। दुनियॉ की जिन्दगी माल से पहले बनेगी बाद मे बिगड़ जायेगी कि जमीनदार ने हल चलाया, बीज डाला, सब्जा उग आया, ये सब देख रहे हैं कि खेती हो रही है, ये माल का रास्ता है। जब खेती मुकम्मल हुई तो खुश हो गया कि इस साल अच्छी कमाई होगी पर रात को जोर की हुई बारिश सुबह खेती डूबी खड़ी है कि मिलना पहले दिखलायी दिया और बिगड़ना दिखा बाद मे या टिडिडयॉ फसल को खा गयीं ये बिगड़ना भी बाद मे दिखा।

बिल्कुल खेती का तरह इन्सान की जिन्दगी है कि माल के रास्ते से पहले बनना दिखायी देगा बाद मे बिगड़ेगी और अमल के रास्ते मे पहले जिन्दगी का बिगड़ना दिखायी देगा, इसलिये जब बिगड़ना दिखायी दे तो उस वक्त तुम अपने अमलो को ठीक करने निकलो। अमलो को ठीक करने पर शैतान दिल मे ख्याल डालेगा कि इस वक्त अगर कमाई मे होते तो हजार रूपया बचता अगर खेत पर हल चला लेता तो सौ मन गल्ला होता। इसलिये अमल के रास्ते मे पहले जिन्दगी का बिगड़ना दिखायी देता है पर अमल सही करते-करते जब बिल्कुल सही हो गये अब अल्लाह ने टिडिडयॉ और सैलाब रोक दिये।

जब से सदका और खैरात करने लगा दस मन की जगह सौ मन गल्ला होने लगा।

जब से अल्लाह के रास्ते मे फिरने वाला बन गया तब से भैसे दो बच्चे देने लगी, बकरी चार बच्चे देने लगी, जब अमल वाला बन जायेगा तो ये दिखायी देगा अगर खुदा पर यकीन करेगा तो अमल का रास्ता अख्तियार करेगा और माल का यकीन करेगा तो अमल बिगाड़ लेगा। किसी ने तय किया कि मैं अमल का रास्ता अख्तियार करूँगा पर माल को देखते ही माल की तरफ झपट पड़ा तो अमल बिगड़ गया। इस वास्ते आखिरत सामने रखो और आखिरत के बारे मे सबका ये जहन बनाओ कि मुझे आखिरत बनानी है, आखिरत मे हमारी सच्चाई, हमारी नमाजें, हमारा एख्लाक, हमारा इत्तेबआ साथ जायेगा, आखिरत मे हमारा मकान, हमारा माल और हमारे कपड़े साथ न जायेगें। पचास बरस बिगड़ कर अगर करोड़ों बरस की जिन्दगी बन जाये तो मुझे आखिरत बनानी है, उसके मुकाबले पर दुनियॉ बिगाड़नी है।

जब आप दोनो को रूला-पिला कर करेगें तो कभी अमल करेगें कभी अमल छोड़ देगें, इस वास्ते आखिरत का अकीदा रख दिया। आखिरत को सामने रख कर चलेगा तो अमल वाला बनेगा, जब अमल वाला बनेगा तो आखिरत भी मिलेगी और दुनियॉ भी मिल जायेगी। इन्सान अमल वाला बनेगा जब जब आखिरत को सामने रखे, सारी जमीन भी निकल जाये तो कोई परवाह न हो इसलिये कि जब मरूँगा तब भी जाती रहेगी। जब सामने आखिरत का बनाना होगा तो झूठ-सूद गीबत-रिश्वत और हसद वगैरह ये सब छोड़ देगा फिर खुदा इसके अमलो पर ही दुनियॉ व आखिरत मे हिफाजत करेगें पर अमल दोनो जहांन को सामने रखकर नही बनेगें सिर्फ आखिरत को सामने रखकर बनेगें। इस तरह चौबीस धन्टे के सारे अमल अच्छे बनाने है कि एक भी अमल खराब न रहे, हम तो एक मिनट के लिये सॉप से कटने को तैयार नही आखिरत मे कितने सौ बरस सांप काटेगें। इसलिये चाहे सारी चीजे चली जायें मैं तो आखिरत के लिये अमल करूँगा और अमल पर ही जमूँगा, कल चीजे जा रही थी इम्तेहान के तौर पर और आज वही चीजें आ रही हैं ईनाम के तौर पर। इम्तेहान मे सौ रूपये गये और ईनाम मे पचास हजार रूपये आ गये, दुनियॉ मे ही आयेगा तुम्हारे पास से जो जा रहा है वही आयेगा।

मुहाजिरीन की मक्के की दुकाने गयी जब आयी तो मुल्को की दुकाने आयीं।

जमीन वो गयी जिससे साल भर मे पचास मन खजूर मिलती थी फिर वो आयीं जिसमे सालों भर चीजे मिलती रहें।

पहले इम्तिहान की घाटी है उसमे अमल बनाने मे चीजे बिगड़ती दिखायी देती है कि माल कम होता दिखायी दे रहा है, सूद छोड़ दिया, धोखा छोड़ दिया और झूठ छोड़ दिया तो फकीर हो जायेगें पर अल्लाह का वादा है कि दुनियॉ मे ये देगें और आखिरत मे ये देगें। इन्सान दुनियॉ के अन्दर भी अमल से बुलन्द होता है, कामयाब जिन्दगी बनती है पर अमल आखिरत को सामने रखकर बनता हैं और हम दुनियॉ को सामने रखकर चल रहे है। जिसकी वजह से रात-दिन हमारी चीजे हमारे पास से जा रही है कि किसी ने मुकददमा डाल दिया, किसी

की भैंस खो गयी, किसी की जमीन जाती रहो, किसी की दुकान मे आग लग गयी, किसी के मकान मे चोरी हो गयी, किसी के बेटे का एक्सिडेन्ट हो गया। यकीन नही सीखा इसलिये कह रहे हैं कि हमारी जमीन हिन्दु ने कब्जाकर ली, यकीन की कमजोरी की वजह से दिलों मे शिर्क है अगर ईमान होता तो क्या कहता ? तब ये कहता कि अमल की खराबी की वजह से खुदा ने हमसे जमीन वापस ले ली। दिलों मे शिर्क होने की वजह से ये पुलिस वालों से कह रहा है कि साहब ! मेरा तो कोई कुसूर नही मै बेकुसूर हूँ, ये जमीन वाकई मे मेरी है कुसूरवार तो वो है जिसने मेरी जमीन पर कब्जा किया है हालाँकि वो तो खुदा ही के हुक्म से दबा रहा है, खुदा एक की दूसरे से छिनवा कर हमे दिखा रहा है ताकि पता चल जाये कि हमारी जिन्दगी गलत है।

सहाबा किराम की जमीने दस साल पहले छूटी थी दस साल बाद वापस मिल गयीं, हमे 18 साल हो गये हिन्दुस्तान-पाकिस्तान की तक्सीम को पर मुसलमानो के हाथ से रोजाना जा ही रहा है मिल नही रहा। पहले रिश्वत नही देते थे अब वो भी देने लगे तो और चीजें हाथ से निकल रही हैं। उस वक्त झूठा बयान दिया था तो पहले का अब भुगत रहे हैं अब का आगे भुगतायेगें, यहाँ तक होते-होते एक दिन फकीर बनकर खड़े हो जायेगें। आज कहा जा रहा है कि अमल की मेहनत कर लो तो कहते हो कि तब आऊँगा जब चीजों से फुर्सत मिलेगी। आज जिससे भी कहो कि भाई चार महीने दे दो तो कहता हैं कि जी ! आपकी बात तो मेरी समझ मे आ गयी लेकिन मुझे इस वक्त फुर्सत नही है। हालाँकि ये खुद खुदा से कह रहा है कि ऐ अल्लाह اهْدِنَاالصِّرَاطَالْمُسْتَقِيمَ! मुझे नबियों वाले रास्ते चलाईयो और الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَ कारून, फिरऔन, शददाद व हामान के रास्ते पर न चलने दीजियो, ये दूआ माँगे फर्जो मे और तहज्जुद मे भी पर बाहर जाकर ये मेहनत वही करे जो कारून व शददाद ने की। ऐ अल्लाह ! मुझे धोखा-झूठ-सूद और जुल्म के रास्ते पर न चला लेकिन मेम्बरी व वजारत या जायजाद मे लगा हुआ है अब या तो अल्लाह इसकी दुआ को इसीके मुँह पर फेककर मारे तो कारोबार चले और अगर अल्लाह इसकी दुआ कुबूल करलें तो इसकी जमीन छिने या दुकान मे आग लगे या ये जेलखाने मे जाये, अल्लाह दुआ कुबूल करें तो हमे ऐश मे से निकाले, हमारा माल खत्म करे कि हम दुआ तो करे जिन्दगी के नक्शों को बिगाड़ने की

غَيْرِ الْمَغْضُوبِعَلَيْهِمْوَلَاالضَّالِّينَ

और मेहनत करे नक्शो के बनाने की, हम तो दुआ ही से मर रहे है कि बन्दूक का रूख बेटे की तरफ और घोड़ा दबा दिया तो

बेटा मर गया, अरे दूसरी तरफ फेरकर चलाता तो हिरन मरता फिर हिरन खाता। आज तो हम खुद अपनी दुआओं से मर रहे है, सूद पर माल लेकर दुकान चलाई दुआ माँगी اهْدِنَاالصِّرَاطَالْمُسْتَقِيمَ तो दुकान टूट गयी अब जो तरकीब करें वो फेल हो जाये। तरकीब न फेल होती अगर दुआ और मेहनत का जोड़ बिठा लेता अरे तूने अमल बनाने की मेहनत ही नही की। नबियो के रास्ते पर अगर तू न चला तो नमाज ही कुबूल न होगी अगर दुआ मुँह पर मारी गयी तो आखिरत बिगड़ेगी। नबियों के रास्ते ने बनी इस्राईल को मुल्क व माल दिलवाया, आसमान से खाने उतर वाये, अरब के बददुओं को कैसर व किसरा के नक्शे दिलवाये कि हमे कारून, फिरऔन,शददाद व हामान के रास्ते पर मत चला।

غَيْرِ الْمَغْضُوبِعَلَيْهِمْوَلَاالضَّالِّينَ

हुकूमत-ओहदें और मुल्क से जिन्दगी बना रहे है और दुआ ये मॉग रहे हैं कि ऐ अल्लाह मेरी जिन्दगी मे मोड़ पैदा कर दे, मुझे नबियों के रास्ते चला अगर वजारत चाहते हो तो भी ठीक है पर नमूना के लिये युसूफ अलै0 हो कि ऐ अल्लाह वजारत चाहता हूँ लेकिन इस तरह चाहता हूँ जिस तरह युसूफ अलै0 को आपने दी थी।

मैं आपसे रोटी और कपड़ा चाहता हूँ जिस तरह सुलेमान अलै0 को आपने दिया था। फिरऔन की तरह नही चाहता कि पहले तो मिल गया फिर दोजख मे डाल दिया। जो तुम चाहते हा उसी को हम तब्लीग मे यूँ कहते हैं कि तुम्हे जो लेना हो लो पर नबियों के रास्ते से लो ताजिरो के रास्ते पर न मरो इसमे नुकसान है, यही तुम्हारी दुआ है कि कौमे-ए-शुऐब से शुऐब अलै0 की तरफ जिन्दगी मुड़ जाये, कौमे-ए-सबा से इब्राहिम अलै0 की तरफ जिन्दगी मुड़ जाये, जैसे उन्होने रेत मे जिन्दगी बनवा कर दिखलायी। तुम मकासिद न तोड़ो बस रास्ता बदल दो, अमल करके अल्लाह से मॉगना ये नबियों वाला रास्ता है, चीजों पर मेहनत करके अल्लाह से मॉगना ये मुश्रिको वाला रास्ता है।

हमारी जिन्दिगियों मे मोड़ पैदा हो जाये, हम अमलों पर मेहनत करने वाले बन जायें और माल को कुरबान करने वाले बन जाये। जिन्दगी की कामयाबी का यकीन माल के रास्ते से निकल जाये और अमल के रास्ते से पैदा हो जाये इस रूख को बदलने के लिये पहले थोड़े से अमल दे दिये कि रूख मुड़े वरना अमली रास्ता तो बहुत लम्बा-चोड़ा है कि

तिजारत या खेती करो तो ये अमल करो।

रात को सो और सुबह उठो तो ये अमल करो।

सेहत व बीमारी मे ये अमल करो।

अमल तो आदमी की चौबीस धन्टे की जिन्दगी मे फैले हुए है, एक जगह भी ऐसी नही जहॉ अमल न चल रहे हों।

मुकददमा आ गया तो झूठा बयान न दीजियो,

झूठे गवाह न लाईयो और रिश्वत न दीजियो,

जलिम की खुशामद न कीजियो, ये दुआ पढ़ लीजियो फिर देखियो फैसला क्या होता है ? जब सारे अमल बनाता लाये फिर दुआ का अमल दिया बगैर झूठे गवाह के, बगैर वकील के, बगैर झूठे बयान के और बगैर खुशामद के तेर हक मे फैसला होगा अगर जुल्म कर गये तो कल को आखिर मे आकर पैर पकड़ेगें कि जब से जुल्म करके जमीन दबायी थी उस दिन से हमारी जिन्दगी मुसीबतों मे घिर गयी है। सारे अमल तो किये माल वाले अब एक अमल हुजूर सल्ल0 वाला कि नमाज पढ़कर बैठे दुआ कर रहे हैं कि कयाम-रूक्-सज्दा-वुजू सब छोड़ा अब दुआ मॉग कर दुआ का मजाक उड़वा रहे हैं।

शादी मे अमल सारे खराब किये,अमल की खराबी परकल को उन्होने लडकी दबा ली अब दुआ पूछने आ रहे हैं.।

जमीन खरीदने मे सारे अमल खराब किये, अब आ गयी आफत तो वजीफा पूछने आ रहे हैं.।

दुकानदार ने दुकान मे सारे अमल खराब किये, जब आ गयी मुसीबत तो जिक्र पूछने आ रहे हैं.।

अरे ! बच्चा तेरा बीमार है उसकी सेहत की फिक्र तुझे होगी दूसरे को क्यो होगी इसलिये तू खुद दुआ कर पर चले जा रहे हैं दूसरो से दुआ करने कि अगर आपने दुआ न की तो जेल हो जायेगा। वही पीर, वही मोलवी कि जब इनका खुद का कोई मसअला आता है तो किताबें तलाश करता है और तुम्हारे लिये कह देगा कि अल्लाह फजल करे। यहॉ जब 1947 मे फौज तलाशी के लिये दाखिल हुई तो हजरत शेख दुआ मे लग गये और हमने

नमाज पढ़नी शुरू कर दी, फौज के अफसर ने कहा ! अपनी औरतों को उस कमरे मे कर दो हम ये कमरा देख ले जब ये देख लेगें तो अपनी औरतों को इस कमरे मे बुला लेना जब कि इसी बस्ती मे औरतों को नंगा करके शर्मगाहो को टटोला है, ये इसी बस्ती का किस्सा है हमारे साथ ऐसा क्यों न हुआ ? हमारे साथ ऐसा न होने की वजह ये है कि हमने और हजरत शेख ने ये दुआ पढ़ी अम्मई युजीबुल अलीम अम्मई युजीबुल फातिर हम तुझे दुआ बताये तो तू ये कहे कि मुझे तो ये दुआ आती नही है आप ही मेरे लिये पढ़ दे।

आज इतना तो जहन मे बिठा लो कि तुम्हारा कोई अमल ऐसा न हो कि दुआ पर जिद पड़ जाये इसलिये कि दुआ नबियों का सरमाया है और नबियों के रास्ते मे अमल की मेहनत करके दुआ है। जब अमलों का जहन ही नही तो किस वक्त का कौन सा अमल है इसे क्या खबर, अमल का जहन नही इस वास्ते सूद भी ले रहा है, धोखा भी दे रहा है, भाई की जमीन भी दबा ली, गीबत भी की, जेलों मे, दुकानों में, घरों में उसके अमल खराब है और ये जाहिल खड़ा होकर ये कह रहा है कि मेरे तो कोई अमल खराब नही। जब नबी सल्ल0 के तरीके पर पेशाब- पाखाना नही किया तो वहॉ के अमल खराब कर दिये, नमाज मे जोर लगाया कि ऐ अल्लाह ! नबियों के रास्ते पर चलाईयो यानी अमल वाले रास्ते पर चलाईयो और लड़के के साथ बदफेली कर रहा है तो उस पर मकान की छत गिरा दी, कौम-ए-लूत के साथ यही तो हुआ था।

इसलिये माल का यकीन निकाल दो और अमल की लाईन का यकीन ले आओ। इसके लिये सबसे पहले अदालती, तिजारती, सरमायेदारी, हुकूमती, पुलिस, फौज, वजारती नक्शों से यकीन हटाना पड़ेगा। जो अक्सरियत चाहेगी वो न होगा जो खुदा चाहेगा वो होगा अगर मेरे अमल अच्छे हुए तो मेरी मुवाफिकत चाहेगा अगर मेरे अमल खराब हुए तो मेरी मुखालिफत चाहेगा।

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّه

जमीन-आसमान के नक्शों से नही होता खुदा करता है और खुदा मुहम्मद सल्ल0 वाले अमलों पर करता है अगर मुहम्मद सल्ल0 वाली अमली जिन्दगी हमारी है तो चाहे एक कौढ़ी हमारे पास न हो, चाहे दुश्मन हमारे सीने पर तलवार रख दे, चाहे मेरा पैर समन्दर मे फिसल जाये तो भी अल्लाह मेरे मुवाफिक करेगें इसके लिये हमे,

एक तो यकीन चाहिये,

एक इल्म चाहिये,

एक अल्लाह का जिक्र चाहिये,

मुहम्मद सल्ल0 ने हर शोबे वालों को उन शोबों मे किस तरह रहना है ये सारी बातें आ हमे जायें,

ताजिर को तिजारत वाली सारी बातें आ जायें।

काश्तकार को काश्तकारी वाली सारी बातें आ जायें।

हाकिम को हुकूमत वाली सारी बातें आ जायें।

वजीर को वजारत वाली सारी बातें आ जायें।

एक अल्लाह का जिक्र चाहिये कि जब खुदा का ध्यान होगा तब ही तो पैसे के एतबार से इस्तेमाल नही होगा।

मदरसे मे झूठ बोला करता था बुजुर्गो के पास जाकर सच बोलने लगा।

कुरआन नही पढ़ता था वहॉ जाकर पढ़ने लगा।

नमाज नही पढ़ता था वहॉ जाकर पढ़ने लगा।

अमल नही था अमल होने लगा, जिक्र की मेहनत से नमाज पढ़ रहे हैं, घंटा देख रहे हैं इसलिये कि इल्म मे ह कि ऑख सज्दा मे कहॉ देखे। एक तरफ यकीन सीखें कि दुनियॉ के नक्शों से कुछ नही होता अब इसी यकीन को लेकर नमाज मे जायें कि नमाज पढ़कर अल्लाह से मॉगने से होगा, जब मैं हजरत मुहम्मद सल्ल0 का तरीका अख्तियार करूँगा तो अल्लाह देगें। यह यकीन कर कि जब नमाज पढ़कर मॉगूगा अल्लाह तब देगा, नमाज मे ऑख हजरत मुहम्मद सल्ल0 के तरीके पर इस्तेमाल हो-ध्यान हजरत मुहम्मद सल्ल0 के तरीके पर इस्तेमाल हो। अब जब नमाज हजरत मुहम्मद सल्ल0 के तरीके पर पढ़कर दुआ मॉगूगा तो मैं बगैर वकील के मुक्ददमे से निकल जाऊँगा। जब यकीन बदलेगें, इल्म पर नमाज को लायेगें, नमाज मे जिक्र और एख्लास आयेगें तो अल्लाह उसी पर वो सब कुछ दे देगें जो कमाने से भी नही मिलेगा।

ईमान और ईमान की दावत, ईमान के हल्के और इसी को सारे आलाम मे फैलाने के लिये नक्ल व हरकत,

इल्म सीखना, इल्म सिखाना फिर उसे याद करके दुनियॉ मे फैलाना,

जिक्र सीखना, जिक्र करना, दूसरों को इस पर आमादा करना,

पार्टी बन्दी खत्म हो, पिटने वाले का साथ दो, पीटने वाले का साथ न दो, तुम्हारा जाब्ता ये है कि तुम्हारी पार्टी ने किसी दूसरे गॉव की औरत दबा ली, अब क्या करें? कि गॉव का मामला है। नही ये नही बल्कि तुम्हारे गॉव की औरत अगर किसी ने दबा ली तो अब गॉव का साथ दो इसलिये नही कि ये गॉव वाले हैं बल्कि इसलिये कि मजलूम है। जब तुम्हे उनकी औरत दबाना बुरा लग रहा है तो अल्लाह को भी बुरा लग रहा है कि उसकी बन्दी को दबाया, अब अल्लाह तुम्हारे साथ है अगर तुमने भी दबा ली तो अल्लाह तुम्हारा साथ छोड़ देगें। मुसलमान ने हिन्दू की औरत दबा ली तो हिन्दू का साथ दो। भूखे को रोटी खिलानी है अगर हिन्दू भूखा हुआ तो उसको भी खिलाने से अल्लाह खुश होगें। जो बड़ा हो उसका इक्राम करो ये एख्लाकी जिन्दगी कहलाती है और इसी को नबी लाये हैं, आज जिन्दगी के झगड़ों से वही निकलेगा जो नबियों के तरीके पर चलेगा, दुनियॉ मे खुदा के बन्दे बनकर चलो।

ये सारे बहुत बड़े-बड़े अमल है ये सारे अमल तालीम से चलेगें तो तालीम सबसे बड़ा अमल हुआ। सारे अमल जिक्र से चलगें तो जिक्र भी बड़ा अमल हुआ पर ईमान तो सारे अमलो की जड़ और बुनियाद है जिससे सारी जिन्दगी चलेगी, नमाज बड़ी है जिससे सारी जिन्दगी चलेगी, एख्लाक की बुनियाद बड़ी है उसी से सारी जिन्दगी बनेगीं।

चीजों से, माल से, गल्ले से, खेती से, दुकान से हर तरफ से अपने यकीन को खुदा की तरफ मोड़ना है, इन सबके इस्तेमाल मे अपने को खुदा की तरफ मोड़ना है। अब जब तू इन सबसे अपना इस्तेमाल मोड़ना चाहता है तो तू इनको छोड़कर निकल जा, दुआ भी तो अमल है लेकिन इस अमल से पहले कुछ और अमल आयें है। जहॉ जाऊँगा वहॉ के बड़ा का इक्राम करूँगा, जहॉ नंगा दिखायी दे अगर खुदा ने तुम्हे वुस्अत दी है तो उसे कपड़ा पहना दे अगर गाड़ी मुड़ गयी मुल्क व माल से ईमान व अमल की तरफ तो हम सारे अमलों पर खड़े हो जायेगें। गाड़ी मुल्क व माल से मोड़ने के लिये चार महीने लगा दे। गाड़ी मुड़कर चलेगी कैसे ? गश्त, तालीम, तस्बीह और इक्राम-ए-मुस्लिम अपने घर पर आकर छोड़ दिया। तब्लीग मे तो मोड़ी थी इधर को फिर गॉव मे जाकर उधर को मोड़ दी। अरे क्यों मोड़ दी, अब मुसीबत आयी तो गॉव मे जाकर यहॉ खत लिख रहे है। उसी तरफ तो मोड़ी थी कि ईमान हासिल करेगें तो अल्लाह पालेगें अब दुआ कराते फिर रहा है कि मैं तब्लीग वाला हूँ। अरे तब्लीग वाला होता तो मुसीबत क्यों आती।

गॉव मे जाकर लोग बदल जाते है इसलिये गॉव वापस जाकर रोज तालीम करनी है, रोज ईमान की मज्लिस कायम करनी है, तस्बीह पढ़नी है, जब गाव वाले आपस मे लड़े तो उनसे कह दो कि साहब मै तो अलग हूँ और जब तब्लीग वाले ज्यादा हो जायें तो कह दो कि हम हक का साथ देगें फिर हम भी देखे कि तब्लीग वालों पर क्या मुसीबत आती है, आयेगी तो दुआ बता देगें फिर देखेगें कि अदालत कैसे खिलाफ फैसला करती है। गॉव मे जाकर देखा झगड़ा चल रहा है तो किसी तरफ नही पड़ेगा, झट से दो-चार दिन के लिये निकल जा। अपने अन्दर ये बात तय कर कि हम तो इन्शाअल्लाह कभी सियासत मे नही खड़े होगें और कभी हुकूमत के मुकाबले की बात नही करेगें, हम तो लोगों को नबियों के रास्ते की बात बतायेगें, इस तरह से करोगे तो हुकूमत तुम्हारे पॉव चूमेगी। हम कोई सियासी पार्टी नही बना रहे है, हम तो अमली मेहनत कर रहे है।

पहला मस्अला तो यह है कि चार महीने का इरादा कर लो क्यों कि गॉव मे जाकरतो निकलना होता नही इसलिये अभीचार महीने दे दो अगर इसकी हिम्मत न हो तो चिल्ला अभी दे दो ये चिल्ला चार महीने की फिक्र पैदा करने के लिये है। तीन चिल्ले लगाने के बाद गॉव मे जाकर इन कामो को करो, जब तालीम मे कमी आने लगे, गश्त छुटने लगे या तस्बीह मे कमो आने लगे तो समझो जड़ सूखने लगी है अब फिर 10-15 दिन के लिये अल्लाह के रास्ते मे निकल जाओ। यकीन जानो चिल्ले मे समझ ही नही आयेगी, मोड़ नही पैदा होगा, मोड़ पैदा होने के लिये तीन चिल्ले ही है। मोड़ पैदा होने के लिये तीन चिल्ले देकर साल का चिल्ला देते रहो, यह गाड़ी का चलना है, महीने मे तीन दिन देते रहो यह गाड़ी का चलना है जब फर्क आने लगे तो यहॉ आ जाओ जैसे मोटर गाड़ी के चलने मे फर्क आ जाये तो कारखाने मे भेज दो।

<u>इस बयान की असल किताब बंगले वाली मस्जिद मे मौजूद है</u>

बाद नमाज फज्र बंगले वाली मस्जिद

19 रबीउल अव्वल 1384 हिजरी

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

मेरे भाइयों और दोस्तों ! अल्लाह तआला ने इन्सानों को शक्लों के एतबार से तो मुखतलिफ बनाया है लेकिन अन्दर के एतबार से जो रूह डाली है वो सारे इन्सानों मे एक ही किस्म की डाली है कि जिस्मानी शक्लें तो मुखतलिफ है लेकिन रूह बिल्कुल एक किस्म की है। जिस तरह शक्ल-ए-कायनाती मुखतलिफ है कि किसी के पास कार की शक्ल है और किसी के पास गधे की शक्ल है, कोई लगंड़ा है तो किसी की कमर झुकी हुई है, कोई हसीन है तो कोई बदसूरत। दुनियॉ भर मे शक्लों और सूरतों को अल्लाह तआला ने मुखतलिफ बनाया है कि सारे इन्सान एक जैसे मकानों मे नही रहते लिहाजा अल्लाह तआला ने इन्सानों की जो मुखतलिफ शक्लें है इन शक्लों को कामयाबी और नाकामी की बुनियाद करार नही दिया है, रूह जो सबमे मुश्तरिक है उसको कामयाबी और नाकामी करार दिया है।

सबकी रूह मे नूर था, खुशबू थी, इसके अन्दर वो सारे कमालात थे जो खुदा वन्दकुददूस के अपने अन्दर कमालात हैं। उन्ही कमालात मे ये रूह डुबो कर भेजी गयी थी, उसमे नूर-इल्म-कूवत सब ही थे इसलिये अपनी रूह पर मेहनत करो। हर लाईन मे तरक्की के लिये बड़े लम्बे-चौड़े मैदान है ये रूह अपने साथ थोड़ी सी कूवत लायी है बहुत कूवत लेने का लम्बा-चौड़ा मैदान है अब आगे तलब पर खुदा देगें अगर तुम ये चाहते हो कि सारे आलिम तुम्हारे सामने झुक जायें तो अपनी रूह को सामने रखकर मेहनत करो। जो अपनी रूह के बनाने पर मेहनत करेगा वह कामयाब हो जायेगा और जो अपनी रूह पर मेहनत नही करेगा वो नाकाम हो जायेगा। जो रूह पर मेहनत नही कर रहा है वो सोने की तश्तरी मे पाखाना कर रहा है और जो अपनी रूह पर मेहनत कर रहा है वो गुदड़ियों मे लाल बन रहा है। इन्सान की जिस माया के लुटने पर बलायें आती हैं उन बलाओं को कोइ ताकत रोक नही सकती। अल्लाह जल्लाशानुहू अगर रूह बनाने पर करम फरमा दे और रूह बन जाये तो चाहे झोपड़ियों मे रहते हो तो इन्तेहाई खुश व खुर्रम होगे।

दो जिन्सो के मज्मुए का नाम इन्सान है, एक जिन्स इसके अन्दर है रूह की और एक जिन्स है जिस्म। ये जिस्म शक्लों के रास्ते बड़े लम्बे-चौड़े निजाम के साथ दुनियॉ मे लाया गया है पर ये छोटा सा जिस्म मॉ के पेट मे तैयार पड़ा है लेकिन रूह के बगैर इसकी गाड़ी रूकी हुई है कि रूह आ जाये तो गाड़ी आगे बढ़े, अल्लाह के हुक्म पर ही इस जिस्म मे रूह डाली जायेगी वरना ये जिस्म इस्कात हो जायेगा। इस रूह को भेजने वाले अल्लाह, लाने वाला फरिश्ता और आने वाली रूह, जिस्म अलग जिन्स है और रूह अलग जिन्स है, इन्सानों पर जो भी हाल अल्लाह की तरफ से आयेगा वो इसकी रूह पर आयेगा पर जाहिर इसके जिस्म पर होगा। जिस्म के अपने तकाजो का नाम नफस है, हालात के आन पर रूह कुदरत की तरफ मुतवज्जाह करेगी क्यों कि ये कुदरत के रास्ते से आयी है और जिस्म शक्लों की तरफ मुतवज्जाह करेगा, नफस ये चाहेगा कि इन्सान शक्लों की तरफ मायल हो क्यों कि ये जिस्म खुद शक्लों से निकल कर आया है। जमीन और आसमान के दरम्यान फैली हुई शक्लों की तरफ ये माददा जिस्म को इस तरह खीचता है जिस तरह मकनातीस (magnet-चुम्बक) लोहे को अपनी तरफ खींचता है। जिस्म बेचारा कोई चीज ही नही अगर रूह न हो तो ये जिस्म न खाने-पीने का, न उठने-बैठने का, बस अल्लाह के गैर की तरफ मुतवज्जा करना ही इस जिस्म का काम है कि आपको माल की

तरफ, चीजों की तरफ, सोने-चॉदी की तरफ, सवारी और महलों की तरफ मायल करे। इसी माददे पर कदम बढ़ाने से रूह बिगड़ती है, जितना ये नफस के खीचने पर शक्लों से उम्मीद करेगा उतना ही इसकी रूह बिगड़ती चली जायेगी।

नफस तो ह ही वह माददा जिसे अल्लाह ने गैर स गैर की तरफ कहने-सुनने के लिये ही उभारा है और इसी मे इन्सान का इम्तेहान हे कि यह कभी अल्लाह की तरफ नही खीचेगा। फरिश्तों मे ये माददा नही है तो फरिश्तों के लिये जन्नत नही है, नफस को दबा और ये तहकीक कर कि खुदा का इस वक्त क्या हुक्म है ? नफस तो वो माददा है जिस पर इन्सान अगर पड़ जाये तो उसकी रूह इतनी खराब हो जाये जिसका इन्सान तसव्वुर भी नही कर सकते अगर रूह की बदबू को जाहिर कर दिया जाये तो दिमाग फट कर सब मर जायें या अगर रूह की स्याही जाहिर कर दी जाये तो सूरज भी स्याह पड़ जाये। अब फरिश्ता आकर जिस्म मे रूह डाल गया, ये रूह इसका सर और गला काटने से न निकलेगी बल्कि अल्लाह जब रूह निकालने के लिये फरिश्ते को भेजेगें तब ही रूह निकलेगी। आपको आग या बारूद मे दबा दिया जाये तो वो फरिश्ता नही आयेगा रूह नही निकलेगी, एक महकमे से फरिश्ता रूह को जिस्म मे डाल कर जाता है दूसरे महकमे का फरिश्ता वक्त पूरा होने पर उसको जिस्म से निकाल ले जाता है। जितनी तरतीब जिस्मानी है इस सारी तरतीब को खुदा ने बदलनी है ये इस्तकरारी नही है।

कयामत के दिन ये कद, ये शक्ल, ये हुस्न नही होगा बल्कि या तो ये कद आदम अलै0 वाला, शक्ल ईसा अलै0 वाली और हुस्न यूसुफ अलै0 वाला होगा या ऐसी बदनुमा बदहैबत सूरत, खौफनाक खतरनाक सूरत की जायेगी कि मॉ को दिखाया जाये तो बेटा कहेगा इसे जहन्नम मे डाल दो। रूह बन गयी तो बेहतर तरतीब मे पहुॅचा दिया जायेगा जिसका नाम जन्नत है और अगर रूह बिगड़ गयी तो बद तरतीब मे पहुॅचा दिया जायेगा उसका नाम जहन्नम है। जो बा एतबार रूह के बन गये खुदा ने यह तैय कर लिया है कि उनके आगे ऐसे को झुकायेगें जो बा एतबार रूह के बिगड़ गये। खुदा तरतीब-ए-आलम को भी बदलतें रहते हैं कि हिन्दुस्तान, यूरोप, एशिया की भी तरतीब बदलती रहती है।

चाहे जिस्मानी तरतीब दफतर की हो,
चाहे जिस्मानी तरतीब सियासत की हो,
चाहे जिस्मानी तरतीब जरआत की हो,

तरतीब-ए-जिस्मानी को बदलना है, अब तो ये समझना बहुत आसान है कि तरतीब-ए-जिस्मानी की तब्दीली शुरू हो गयी है। आज दुनियॉ मे कोई निजाम ऐसा नही है जिसको आप यूॅ कहें कि यूॅ ही चलता रहेगा कि कभी हुकूमत बदली, कभी रेलों का वक्त बदला, हक तआला शानुहू तरतीब-ए-जिस्मानी को बदलेगें ये अल्लाह ने तय कर लिया है कि जो इन्सान इस रूह के बनाने को जरूरी करार दे कि चाहे हमे जमीन पर लेट कर जिन्दगी गुजारनी पड़े पर हम अपनी रूह को ऐसा पाकोजा बना लेगें जैसी पाकीजा बनाने पर खुदा की तरफ स वादे हैं कि तरतीब बदलेगें। यकीन की खराबी और अमल की खराबी ये दो चीजें हैं जो रूह को स्याह और बदबूदार करती है। यकीन और अमल की दुरूस्तगी रूह को खुशबूदार और नूरानी करती है। तुम्हारे यकीन का और अमल का रूह के बनने वाली शक्ल पर आना बस इस पर खुदा पहले इस दुनियॉ मे तरतीब बदलेगें ताकि लोग खुदा को मान जाये। जिस्म वह जिन्स है जो किसी तरह भी रूह मे नही घुस सकता जैसे तार मे करंट घुसता है करंट के अन्दर तार नही घुस सकता इसी तरह रूह मे कोई चीज या कोई शक्ल नही घुस सकती। दवाऐ रूह मे नही घुसेगीं जिस्म मे फैल जायेगीं, जो रूह से चलता है वो रूह पर असर डालता है, तुम्हारा चलना रूह से

चला है और जिस्म से जाहिर हुआ है। अमल की तहरीक रूह से चलती है और अमल जिस्म से जाहिर होता है अगर हमारे अमल रूह की लाश के है तो रूह बिगड़ जायेगी। पैसे तो तकिया मे और बुख्ल बाहर बस रूह मे स्याही पहुँच गयी अगर कुरआन को सामने रखकर तक्सीम कर दिया तो रूह मे नूर आ गया। इस रूह के बनने-बिगड़ने के लिये अल्लाह ने क्या रखा है ?

रूह के बनने-बिगड़ने का तआल्लुक कुरआन से है, कुरआन पाक रूह की लाइन है। तरदीद करने के वास्ते कुरआन पाक मे अमल बतलाये है,

कारून ने माल को सामने रखकर अपने को इस्तेमाल किया तो किस तरह जमीन मे धंस गया, कुरआन के अन्दर उनकी खबर जो लोग जिस्म की तरतीब पर अमलों को करते है ऐसो की तख्रीब दिखायी जा रही है और कुरआन के अन्दर उनकी खबर जो लोग रूह की तरतीब पर अमलों को करते है ऐसो की तामीर दिखायी जा रही है। रूह की तरतीब कुरआन ने पेश की है, तिजारत का, जरआत का वो तरीका जिससे रूह बने उसमे जिस्म को सामने नही रखा गया है। रूह इन्सानी का खुशबूदार बनना बा एतबार आमद अव्वल के अगर ये उगंली के बराबर कमालात लाया हे तो मरने के वक्त अर्श-ए-इलाही तक कमालात पहुँच रहे हो। जिस्म के बनने-बिगड़ने के वास्ते इन्सान अमल खुद देखता है कि

ये अमल करूँगा तो खेती हो जायेगी,

ये अमल करूँगा तो तिजारत हो जायेगी,

ये अमल करूँगा तो हुकूमत हो जायेगी,

ये अमल करूँगा तो वजारत हो जायेगी,

जिस्म के एतबार से चीजे दिखाने के लिये अल्लाह ने सूरज की रौशनी रखी है, जहॉ-जहॉ तक ये रौशनी चलती रहेगी जिस्म

नजर आयेगें। एक है अमल दिखाने के वास्ते रौशनी पर इस रौशनी मे हमे रूह दिखायी नही देती, यूरोप-अमरीका और एशिया के सूरमा इससे आजिज हैं कि रूह को देख लें। जहॉ सारी इन्सानियत आजिज है नबी का पहला इन्केशाफ वहॉ से शुरू होता है। हजरत मुहम्मद सल्ल0 को नबूवत बाद मे मिली पहले जिब्राईल ने अपने आपको सामने करके दिखाया कि मैं खुदा का फरिश्ता, अब रूह गायब ओर रूह की लाईन के फरिश्ते गायब। अरे गधों ! आज अहमको-झूठों-बदमाशो और जालिमों के कहने पर हम सब तस्लीम कर रहे हैं कि अमरीका और रूस है हालॉकि मैं वहॉ गया नही हूँ तो मैं हजरत मुहम्मद सल्ल0 की खबरों को क्यों न मॉनू कि जो मुहम्मद सल्ल0 बतला रहे है वो ऐसा ही है।

कितने जुल्म किये होगें, खून चूसे होगें, जिना किये होगें, अस्मते लूटी होगी, जब ऐसे लोगो के कहने के बावजूद अमरीका और रूस को मांना जा सकता है तो हजरत मुहम्मद सल्ल0 की खबरको क्यों नही माना जा सकता है कि ये कायनाती निजाम फरिश्तों के गैबी निजाम से खुदा चला रहें, गल्ले के हर दाने के साथ एक फरिश्ता लगा हुआ है, पानी के हर कतरे के साथ एक फरिश्ता लगा हुआ है। जिस किसी चीज के बारे मे इन्सान को न मालूम हो तो वो बताने वाले की बात को या तो मान लेता है या इंकार कर देता है। जिस तरह चीजें सूरज की रौशनी मे नजर आती है उसी तरह अमलो से रूह का बनना-बिगड़ना ये अल्लाह के नूर से नजर आयेगा। जिस तरह कलाम पाक मख्लूक नही है इस कलाम मे निकलने वाला नूर मख्लूक नही है। जब-जब सूरज निकलेगा गधे से लेकर बादशाह तक दिखायी देगें इसी तरह जब अल्लाह का नूर दिल मे आता है तो अमलों से होता हुआ दिखायी देता है। तुम जितनी लाईनों मे हो उन लाईनों से हम तुम्हे नही हटाते कि तुम फकीर बनो,

हम तो बस यूँ कहते हैं कि तुम चाहे जिस लाईन पर चलो बस हर लाईन के एतबार से कुरआन से अमल ले लो। कुरआन ने हर लाईन के अमल दे दिये, हर लाईन मे बा एतबार रूह के भी अमल हैं और हर लाईन मे बा एतबार जिस्म के भी अमल हैं।

आप रूह के एतबार से अमल करने वाले बने इसके लिये सबसे पहले अल्लाह का नूर अपने दिल मे लेना पड़ेगा इसी नूर से इन्सान अमलों मे कामयाबी देखेगा। चॉद-सूरज की रौशनी मे तुम्हे अमल से कामयाबी नही दिखायी देगी, अल्लाह के नूर से अमल मे कामयाबी दिखायी देगी, तेरे दिल के अन्दर वो रौशनी आयेगी जो जन्नत मे हमेशा बाकी रहेगी और या तेरे दिल मे वो अन्धेरा आयेगा जो हमेशा तेरे दिल मे बाकी रहेगा। यह नूर बढ़ते-बढ़ते ऑखों तक जाता है फिर इस नूर से नजर आयेगा कि मैं नमाज पढ़कर खुदा से मॉगूगा तो खुदा मेरा कर्ज उतारेगा, मुझे इस परेशानी से निकालेगा। जब दिल मे नूर आ जायेगा तो खुदा की कसम फ़िऔनी हुकूमत का जवाल नमाज मे नजर आयेगा, सारे नबियों के किस्से नमाज के है, बॉझ औरत से बच्चे का पैदा होना नमाज मे नजर आयेगा, जब तक हमारे दिल मे ये है कि खाली नमाज से क्या होगा माल भी तो चाहिये समझ लो दिल मे नूर नही है।

हजरत मुहम्मद सल्ल0 ने इन्फेरादी-इज्तिमाई सबके लिये नमाज को हल बताया, सूरज मे रौशनी न हो तो नमाज पढ़कर मॉग लो रौशनी आ जायेगी। मैने गरीब का खून न चूसा तो खुदा कामयाब करेगा, आप जिस्म के एतबार से अमल छोड़कर जब रूह के एतबार से अमल की तरफ चलेगें तो जरआत-तिजारत रूह के नूर को बढ़ायेगी। सारे नबियों ने सबसे पहला काम यही किया, जिसके जितने नक्शे कायम है उनसे कामयाबी-नाकामी नही बल्कि खुदा की तरफ से कामयाबी-नाकामी है, मैं खुदा की तरफ लोगों को बुलाऊँगा अल्लाह मेरा इन्तेजाम करेगा, यकीन व एख्लास के साथ खुदा के जिक्र की तरफ बुलाना, खुदा के इल्म की तरफ बुलाना, इससे अन्दर मे नूर पैदा होगा फिर इस नूर से दिखायी देगा अमल मे कामयाबी है।

इस बयान की असल किताब बंगले वाली मस्जिद मे मौजूद है

हजरत मौलाना यूसुफ साहब रह0

हरम मदीना मुनव्वरह 4 मुहर्रम 1384 हिजरी

بِسْمِاللّٰہِالرَّحْمٰنِالرَّحِیْمِ

मेरे दोस्तों-अजीजो ! मेहनत करने के दो रास्ते है एक दुनियॉ से फायदा हासिल करने की मेहनत और दूसरी दुनियॉ के बनाने वाले से फायदा हासिल करने की मेहनत, दुनियॉ से लेने वालों को भी दुनियॉ बनाने वाले ही से मिलता है लकिन दुनियॉ के ऐतबार से मिलता है और दुनियॉ के बनाने वाले से लेने मे दुनियॉ का बनाने वाला अपने ऐतबार से देता है। दोनो रास्तो मे शख्सी, मुल्की और आलमी ऐतबार से मेहनत होती है, इन्सान जिस रूख पर मेहनत करेगा उसे उसी रूख से दुनियॉ से या दुनियॉ बनाने वाले से फायदा मिलेगा, मेहनत की तीन शक्लें है 1 शख्सी 2 मुल्की और 3 आलमी। शख्सी मेहनत सालिहीन की, मुल्की मेहनत अम्बिया की और आलमी मेहनत सैययदुल अम्बिया सल्ल0 वाली, मेहनत एक ही है लेकिन शक्लें और मैदान तीन हैं। एक जात मैदान हो तो सालिहीन वाली मेहनत या एक इलाका ही मैदान हो तो अम्बिया वाली मेहनत और सारे आलम को मैदान बनाओ तो सैययदुल अम्बिया सल्ल0 वाली मेहनत है। इन्सान पर मेहनत से मुजाहिदा मुन्कश्फ होता है, हमने देखा कि जमीन पर सोना-चॉदी-खेत और बाग हैं पर मजीद मेहनत से पता चला कि इसमे पेटरोल और फलॉ-फलॉ गैसें भी हैं, मुशाहदा बढ़ता रहा, मुशाहदा ही इन्सान को मेहनत करने के लिये तैयार करता है।

सियासी, मुल्की, तिजारती, जराअअती, साइन्सी, मेहनत का इफतेताह मुशाहदा से होगा, जितनी मेहनत बढ़ेगी उसका मुशाहदा बढ़ेगा और बकद्र मुशाहदा इस चीज म जज्ब होगा। दूसरी मेहनत मे बगैर मुशाहदे के सिर्फ गैब के यकीन की मेहनत होगी, मेहनत करेगें तो रूख कायम होगा फिर महसूस होगा और आखिर मे जाकर सब कुछ दिखाया जायेगा। हमारा मुशाहदा नाकिस भी है और जितना मुशाहदा है वो भी गलत है। न खुदा का, न जन्नत का, न दोजख का, न फरिश्तों का, न असरात आमाल का मुशाहदा है। सिर्फ अदविया(दवाओं का),अगजिया(गिजाओं का), असलहों और सामान का मुशाहदा है, करने वाले का मुशाहदा नही है अलबत्ता इस्तेमाल होने वाली चीजों का मुशाहदा है, इसी वजह से ये मेहनत करनी पड़ेगी ताकि यकीन बदलें और चीजों मे लगने के बजाये हम आमाल मे लगें, आमाल बिगड़े तो चीजों मे नाकामी होगी और अमल दुरूस्त हुए तो बगैर चीजों के कामयाबी होगी।

لَاإِلٰهَإِلَّااللّٰهُمُحَمَّدًارَسُولُاللّٰه अल्लाह की जात के सिवा की हर शक्ल से नही होता हत्ता कि अम्बिया की शक्ल से भी नही होता। खुदा जब चाहे सूरज मे अन्धेरा ले आवे सूरज अपनी रौशनी मे मुख्तार नही है। हजरत मुहम्मद सल्ल0 अपनी हिदायत मे मुख्तार नही है आप चाहे पर खुदा न चाहे तो अबु तालिब को हिदायत नही है, आप न चाहे पर खुदा चाहे तो वहशी को हिदायत मिली ऐसे ही उस्मान को भी हिदायत मिल गयी।

ये उस्मान मज्लिम मे बैठे थे आप सल्ल0 का दिल चाह रहा था कि कोई उन्हे कत्ल कर दे, जब किसी ने कुछ न किया तो हुजूर सल्ल0 ने इन्हे कलिमा पढ़ाकर इस्लाम मे दाखिल कर लिया अब उस्मान सहाबी बन गये। उनके जाने के बाद हुजूर सल्ल0 ने सहाबा से फरमाया ! कि क्या तुममे से कोई रजुल रशीद न था जो उन्हे कत्ल कर देता? सहाबा ने अर्ज किया कि या रसूलुल्लाह आप इशारा कर देते तो हम कत्ल कर देते। हुजूर सल्ल0 ने फरमाया ! नबी के लिये इशारा करना मुनासिब नही है कि वो तो मुतमइन हो रहा है और मैं इशारा

करके उसके खिलाफ करूँ। लेकिन अबु तालिब को हिदायत न मिली जिनके लिये हुजूर सल्ल0 बेकरार हुए तो अल्लाह कहला दिया,

إِنَّكَ لَا تَهْدِي مَنْ أَحْبَبْتَ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ

(सूर कसस - 56)

जिब्रील, मीकाईल और चीटी व मच्छर सब पर खुदा का कब्जा है जिससे जो चाहेंगें उससे वही होगा। फ्रिऔन ने चाहा मूसा कत्ल हो और खुदा ने चाहा कि मूसा फ्रिऔन की गोद में पले, जो मूसा न थे वो तो फिऔनियों ने हजारों मार डाले इधर जो मूसा हैं उसे खुदा फ्रिऔन की गोद मे पलवा रहे हैं। मुवाहिद-ए-आजम जिब्रील के हाथों सामरी मुश्रिक को पलवा लिया इधर काफिर-ए-आजम फ्रिऔन के हाथों स मूसा नबी को पलवा लिया। नसारा को यह गलतफहमी हुई कि अहयाउलमोता (मुर्दों को जिन्दा करना) नुजूल-ए-मायदा (आसमान से खाना उतरना) ईसा अलै0 ने किया हालॉकि ये सब कुछ तो अल्लाह ने किया था। नबी सल्ल0 के फेल के साथ अल्लाह की चाह लग गयी इस वजह से वो काम हो गया। अल्लाह ने जिस शक्ल को जिस काम के लिये बनाया है वो इरादा-ए-खुदा के बगैर न होगा लेकिन अल्लाह जो चाहे किसी के बगैर कर दें। नबी के बगैर हिदायत दे दें कि इब्राहिम अलै0, हुजूर सल्ल0 और मूसा अलै0 को बराह-ए-रास्त अपने इरादे से हिदायत दे दी। न किसी हुकूमत से हो, न किसी फर्द से, न किसी चीज से होता अल्लाह करने वाले हैं सिर्फ अल्लाह से होता है।

इब्राहिम अलै0 ने नमरूद से कहा

لَمْ تَرَ إِلَى الَّذِي حَاجَّ إِبْرَاهِيمَ فِي رَبِّهِ أَنْ آتَاهُ اللَّهُ الْمُلْكَ إِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّيَ الَّذِي يُحْيِي وَيُمِيتُ قَالَ أَنَا أُحْيِي وَأُمِيتُ

(सूर बकरा-258)

तो नमरूद ने उस शख्स को हलाक कर दिया जिसकी रिहाई का हुक्म अदालत न सालों की रगड़ाई के बाद दिया था और जिसके कत्ल का हुक्म मिला था उसे रिहा कर दिया गोया मुर्दे को जिन्दा कर दिया। हुकूमत वालों की अक्ल खुदा मश्ख कर देते है, अबु बक्र रजि0 ने कहा था कि बादशाहत मे कुछ नही है, सबने तआज्जुब से उनकी तरफ देखा तो फरमाया ! बादशाह होते ही उम्र आधी हो जाती है लेकिन मेरे ख्याल मे आजकल तो अक्ल भी जाती है। एक बादशाह ने अपने वजीर से पूछा, इस हौज मे कितना पानी है?

वजीर ने कहा, हमे खबर नही कि कितना पानी है।

बादशाह ने कहा कि किसी तालिब-ए-इल्म से पूछो, सिपाही गये और सबक मे दर को जाने वाले एक तालिब ए इल्म को जबर्दस्ती पकड़ लाये।

बादशाह ने तालिब-ए-इल्म से पूछा, इस हौज मे कितना पानी है?

उसने कहा, ये तो बहुत मामूली बात है अगर ये हौज एक प्याले के बकद्र है तो एक प्याला पानी है और दो प्याले के बकद्र है तो इसमे दो प्याला पानी है।

अब इब्राहिम अलै0 ने नमरूद से ऐसा सवाल किया कि जिसका वो जवाब न दे सका,

قَالَ إِبْرَاهِيمُ فَإِنَّ اللَّهَ يَأْتِي بِالشَّمْسِ مِنَ الْمَشْرِقِ فَأْتِ بِهَا مِنَ الْمَغْرِبِ فَبُهِتَ الَّذِي كَفَرَ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ

(सूर बकरा-258)

जमीन व आसमान की हर दिखने और न दिखने वाली शक्ल से न होगा अगर मेहनत करके यहॉ तक पहुँच गये जहॉ धोखा खुलता है, हकायक खुलता है, मक्के मे मुशाहदा न हुआ बल्कि यहॉ बद्र मे जाहिर हुआ कि करने वाले अल्लाह है जब उकाशा बिन मिहसन रजि0 की लकड़ी की टहनी को तलवार में बदल दिया जिसका लोहा बड़ा साफ व मजबूत था। इसलिये शक्ल से जो पाक है उससे होने का यकीन बने कि बगैर शक्ल के होता है, अल्लाह जो चाह लेते हैं वह हो जाता है अगर खुदा तुम्हे तौफीक दे कि शक्ल से जहन हटकर अमल का जहन बन जाये और अपने अमलों को पाकीजा बनाने मे लग जाओ तो अगर तुम्हारे पास कोई भी नक्शा न होगा तो खुदा तुम्हे कामयाब करके दिखायेगें। इन्सानो का माल से अमल की तरफ रूख मोड़ने के लिये नबियों ने एक मेहनत की और एक मेहनत करायी, तुम दुनियॉ मे खुदा वाले अमलों पर मेहनत करो ये यकीन जमाओ कि हम उन अमलों से पलेगें। मजदूरी से लेकर मुल्क की सदारत तक जो नक्शे फैले हुए है कुछ अमल दे दिये गये ये थोड़े से अमल है, इसमे सबसे बड़ा अमल अल्लाह की तरफ बुलाना है, इस कलिमे को लेकर फिरो एक-एक आदमी के पास जाओ और उससे कहो कि ये जो नक्शा तू लिये बैठा है उससे कामयाबी नही मिलती कामयाब अल्लाह करते हैं। खुदा को जात का यकीन अपने अन्दर पैदा करने के लिये और खुदा की जात से फायदा हासिल करने के लिये, ये नारा लेकर दुनियॉ मे फिरो, ये अल्लाह की तरफ बुलाना सबसे बड़ा अमल है।

बुलाने वाले के पलने का क्या इन्तेजाम होता है?

अगर कोई किसी की तरफ बुलाये तो जिसकी तरफ ये लोगों को बुला रहा है वो इसके खर्चे का जिम्मेदार होता है। इलेक्शन मे तुमने देखा होगा कि पार्टी एक आदमी को नामजद करती है अब ये जो मेम्बरी के वास्ते नामजद किया गया है उसकी तरफ वोट दिलवाने के लिये वर्कर होते है, वो वर्कर ही पब्लिक मे जाते है। जिस जमाने मे य वर्कर पब्लिक को उस नामजद आदमी की तरफ बुलाते हैं तो दिन भर मोटरों मे फिरते रहते है, होटलो पर नाश्ता और खाना खा रहे है उनसे कहो कि अरे वर्करो तुम्हारे घरों मे तो चूहे कूद रहे हैं तुम कहॉ से मजे कर रहे हो? तो जवाब ये मिलेगा कि तुम्हे पता नही है कि हम काग्रेंस की तरफ बुला रहे हैं। काग्रेंस की तरफ बुलाने पर पलने का यकीन है पर अल्लाह की तरफ बुलाने पर पलने का यकीन नही है। दुनियॉ वाले तो अपनी तरफ बुलाने पर काम चलाने भर का खर्च देते हैं, वो भी जब तक वोट न पड़े, खुदा करीमों के करीम हैं नस्लों तक रफाकत रखेगें कि इसके बाप-दादा ने लोगों को मेरी तरफ बुलाया था। जब हम लोगों को अल्लाह की तरफ बुलायेगें तो आज जो हमे हुकूमत से और पब्लिक से परेशानियॉ पहुँच रही है उन सारी परेशानियों को खुदा खत्म कर देगें। गलत यकीन को अपने अन्दर से निकालो और अमलों का यकीन बनाओ कि मैं जितना खुदा की तरफ बुलाने मे फिरूँगा, कलिमा सीखूँगा, लोगो को सिखाऊँगा ओर इसको फैलाऊँगा अल्लाह मुझे पालेगा।

दूसरा अमल दिया तालीम का, स्कूलों मे इन्सानो ने जो तालीम तज्वीज की है वो दी जा रही है। किसी स्कूल के मास्टर से पूछो तुम क्या करते हो?

तो जवाब देगा कि मैं तालीम देता हूँ।

तालीम देने से तो रोटी नही मिलती,

अरे अहमक हुकूमत की तरफ से तय की हुई किताब की तालीम देता हूँ जिस पर हुकूमत मुझे तनख्वाह देती है। तालीम भी ऐसी कि प्राइमरी मे जो कुछ तुम देखकर जान जाओगे वो उसे पढ़ाकर बतलायेगें कि ये भैंस है, ये बिल्ली है, ये कुत्ता है इसे पढ़कर बतला रहा है। इस पढ़ाने वाले का तीस साल तक का खर्चा किसने उठाया? जिस हुकूमत ने उसको तालीम करार दिया उसने पढ़ाने का खर्चा उठाया। स्कूल के मास्टरों को तनख्वाह इस बात की मिल रही ह कि ये गधे को गधा बतला रहे है, ये कुत्ते को कुत्ता बतला रहे है कागज पर बतला

रहे हैं आखिर तक बेतूकी तालीम है। अल्लाह से होता है ये मख्लूक को बता रहे हैं, अल्लाह के रसूल सल्ल0 बड़े हैं और ये दूसरों को बड़ा बतला रहे हैं। ये है कुरआन, ये है हदीस, ये है मसअले-मसाएल मै तुम्हारा खर्चा उठाऊँगा, हम लोगों को कुरआन सिखायेगें अल्लाह तआला मकान देगें, जमीन देगें, हमारा खर्चा उठायेगें। आज अल्लाह वाले इल्म को पढने़-पढ़ाने वाले इस यकीन से नही पढते-पढ़ाते कि इस इल्म की मश्गूली पर अल्लाह हमारा सारा खर्चा उठायेगें। पहले भी इसी तालीम पर हुकूमतों को झुकाकर दिखलाया था अगर इस यकीन के साथ हम पढ़ने-पढ़ाने पर आ जाये तो आज भी हुकूमतों को झुकाकर दिखलायेगें।

तीसरी चीज अल्लाह का जिक्र है कि बड़े की बड़ाई के तज्किरे से आदमी पलता है। इस जमाने मे जनता की हुकूमत है, जिस जमाने मे वाकई बादशाह और वजीर हुआ करते थे जरा सी तारीफ कर दो तो हजारों लेकर चले आओ। अब अगर जरा तारीफ करो तो एक प्याली चाय और चार पकौड़ी खाकर आ जाते हैं। वजीर भी अपनी शान दिखलाने को दो-एक बन्दूक वालो को साथ मे लेकर खड़े हो गये तो शान बन गयी। एक गनअम खान थे ये वजीर या अमीर थे ये इस वक्त सही याद नही है इन्होने जंगल मे जाकर डेरा डाल दिया वहॉ नाश्ते हो रहे है, जानवर कट रहे है, एक आदमी आया उसने उनकी शान मे शेर पढ़ा कि ये नेअमतों वाले हैं जंगल मे भी जाकर बैठ जायें तो शहर बन जाये। ये सुनकर गनअम खान ने कहा, मॉग कि मॉगे। उसने कहा एक लाख दे दो तो दे दिया, तीन दफा तीन मंजिलों पर ऐसा हुआ पर चौथी दफा मे वो न आया तो गनअम कहने लगा कि बड़ा कमजर्फ था मैने तो सोचा था कि 17 लाख तक दूगॉ पर तीन लाख ही लेकर रह गया। अब भी देहाती कौमों मे रिवाज है कि बड़ों की तारीफ करने पर मिला करता है। अल्लाह तो अल्लाह है कि मेरे कमालात का, मेरी बड़ाई का तज्किरा करो मै तुमको पालूॅगा। अल्लाह का जिक्र करो इज्जत मिलेगी, हिफाजत होगी, राहत, सकून, इत्मिनान मिलेगा।

दूसरा ये कि अल्लाह से फायदा हासिल करने के लिये कायनात (दुनियॉ और दुनियॉ का सामान) रास्ता नही है बल्कि आमाल-ए-मुहम्मद सल्ल0 ही रास्ता है अगर अन्दर-बाहर मुहम्मद सल्ल0 वाले आमाल होगें तो खुदा कामयाब कर देगें वरना नही। जैसी जिन्दगी उन्होने गुजारी है उस जिन्दगी मे खुदा से इस्तेफादा है, सारे अम्बिया के रास्ते खत्म हो चुके है अब तो सिर्फ मुहम्मद सल्ल0 वाले रास्ते से ही खुदा से फायदा मिलेगा। अब मेहनत होगी शक्लों के गलत यकीन से खुदा के करने की तरफ और आमाल-ए-मुहम्मद सल्ल0 से हो जाने की तरफ। खुदा ने कलिमा और नमाज दिया, कलिमे वाले यकीन को दिल मे गाड़ने के लिये नमाज पर मेहनत करो। जैसे सियासत, जरआत ,तिजारत, डाक्टरी, डराईवरी, पहलवानी, तैरना इन्सान के इस्तेमाल की मुख्तलिफ शक्लें हैं, ऐसे ही नमाज भी इन्सान की एक खास शक्ल है जिसमे इन्सान खुदा के एतबार से इस्तेमाल होता है।

सियासत मे मुल्क का काबिज बनकर या काबिज बनने के लिये मेहनत है, उसमे इन्सान का इस्तेमाल मुल्क के एतबार से है।

आलात-ए-तिब के एतबार से इस्तेमाल डाक्टरी है।

लोहे के एतबार से इस्तेमाल लोहारपन है।

खुदा से लेने के एतबार से इस्तेमाल का नाम नमाज है।

इसी इस्तेमाल से फौजों, हथियारों, राकेटों के मुकाबले मे खुदा की कुदरत के दरवाजे खुलेगें, जिस दिन चाहेगें साइन्सियात को

मिटटी कर देगें और हमारे आमाल की ताकत को जाहिर कर देगें जैसे सॉप को जब चाहा लाठी बना दिया या लाठी को सॉप बना दिया। बड़े दरख्त से छोटा सा दाना निकाला छोटे से दाने से कितना बड़ा दरख्त निकाल

दिया, कायनात का यकीन निकालना इस्तेफादा-ए-कुदरत के लिये शर्त है। नया नबी उस वक्त आता था जब उम्मत गुजिश्ता नबी को ही खुदा मानने लगती थी, अगला नबी आकर कहता कि वो तो बन्दा था। ईसा को हमने नबी मान लिया, खुदा ने कहा कि अगर ईसा और उसकी मॉं क्या सारे लोगो को खुदा मार दे तो कौन बचायेगा? अम्बिया के बारे मे खुदा ने दो रूख रखे हैं, एक रूख मे नबी बेकरार नजर आ रहा है उसके कत्ल के मश्विरे हो रहे हैं उसकी पिटाई हो रही है वो खुदा से मदद मॉंग रहे हैं ताकि जाहिर हो जाये कि नबी करने वाले नही है।

यूसुफ अलै0 ने जेलखाने से निकलने की तदबीर अख्तियार की कि रिहा होने वाले से कह दिया कि बादशाह से किसी वक्त मेरी रिहाई की बात करना। खुदा ने उसको सब कुछ भुला दिया, यूसुफ अलै0 नाउम्मीद हो गये फिर खुदा ने गैब से ख्वाब मे रिहा करवा दिया।

अल्लाह से बरायेरास्त फायदा बराये कायनात न होगा बल्कि बरायेरास्त मुहम्मद सल्ल0 फायदा होता है, जिस नबी के रास्ते ने तमाम अम्बिया के रास्तों को रोक दिया है वो कैसे रूस व अमरीका को जूतियॉं न बना देगा। जरा अक्ल-समझ का इस्तेमाल करो, सारे निजामों मे फरिश्ते फैले हुए है, सूरज, पहाड़ या दरिया, बारिश, खेती, हिफाजत-ए-इन्सानी और तक्सीम-ए-रिज्क वगैरह कि इब्राहिम अलै0 के पास पहाड़ों का फरिश्ता और हवा का फरिश्ता दोनो आ गये मगर इब्राहिम अलै0 ने इन दोनो से मदद लेने को इंकार कर दिया कि मैं तो सिर्फ अकेले खुदा की तरफ रूजु करने वाला हूँ किसी बने हुए की तरफ नही कि मेरे मसअले को मेरा बनाने वाला ही हल करेगा आखिर खुदा ने अपनी जात से हुक्म देकर आग को बुझा दिया। पहाड़ और दरिया ये सब मुशाहिद शक्लें हैं उन पर मुसल्लत फरिश्ते गैर मुशाहिद शक्लें हैं, इब्राहिम अलै0 दोनो किस्म की शक्लों से यक्सूई कर ली तो खुदा ने आग को आग रखते हुए उसमे बाग की सिफत पैदा कर दी थी।

لَاإِلَٰهَإِلَّااللّٰهُ مُحَمَّدًارَسُولُاللّٰه इन दोनो का यकीन हो,

1-कायनात से नही होता अल्लाह से होता है।

2-अल्लाह से बराये कायनात लेना कामयाबी का धोखा है, अल्लाह से बराये मुहम्मद सल्ल0 लेना असल कामयाबी है।

उसमे सबसे पहली शर्त ये है कि नमाज को हुजूर सल्ल0 के तरीके पर लाओ और इसके लिये पॉंच चीजें शर्त हैं, इसमे पहली चीज यकीन है कि अमरीका, रूस ही क्या सारी दुनियॉं मे जो कुछ फैला हुआ है उससे कुछ होने वाला नही है, होगा वही जो हम खुदा से मुहम्मद सल्ल0 वाली नमाज के बाद मॉंग लेगें।

दूसरी शर्त ये है कि अमरीका, रूस, इन्डिया या यूरोप जो चाहेगें वो न होगा बस इसके लिये हमारी नियत खास हो बावजूद यह कि जो हम कहेगें वही होगा लेकिन उसके होने के लिये नमाज नही है बल्कि सिर्फ अल्लाह को राजी करने के लिये नमाज हो कि जिसका मैं हूँ मैं उसी को राजी करूँगा, ये गुलामपना है। लेने के वास्ते करना तो गुलामपना नही बल्कि चापलूसी और लालच है अगर किसी अमीर की खिदमत अमीर को राजी करने के लिये की तो अमीर उस फकीर को दोस्त बना लेगा, उसकी खूब इज्जत करेगा, उसको अपने साथ मे बिठायेगा और खिलायेगा और अगर अमीर की खिदमत अमीर से कुछ लेने के वास्ते की तो फिर न इज्जत होगी, न कुछ इक्राम मिलेगा।

لَاإِلَٰهَإِلَّااللّٰهُ से सारी नियतों की भी नफी है।

तीसरी शर्त ये है कि किसी और का ध्यान न हो सिर्फ अल्लाह का ध्यान हो, पूरी नमाज मे शुरू से आखिर तक अल्लाह ही का ध्यान आये और का न आये। अल्लाह का ध्यान या खुदा ने जिसके ध्यान लाने का हुक्म दिया

हो जैसे दोजख-जन्नत का ध्यान या कब्र-हश्र का ध्यान, उनका ध्यान खुदा के ध्यान के मनाफी नही है। अल्लाह से होगा मेरी तरकीब व तरतीब से न होगा बल्कि मेरी नमाज और दुआ पर खुदा करेगें।

चौथी शर्त ये है कि नमाज इल्म पर पूरी उतरे, यहॉ बातिनी इल्म चाहिये खारजी इल्म नही। खारजी इल्म किताब के अन्दर का है और बातिनी इल्म सीने के अन्दर का है जैसे तवाफ करते हुए किताब मे से पढ़ते हुए जा रहे हैं ये खारजी इल्म है। एक इबादत वह है जिसमे गैर को बातिनन छोड़ना शर्त है खारिजन नही और एक इबादत वह है जिसमे गैर को बातिनन-खारिजन छोड़ना पड़ता है। इल्म पहले हुजूर सल्ल0 के अन्दर आया फिर अन्दर से बाहर आया, इसी वजह से जिब्राईल ने आकर आपको तीन बार खूब जोर से भीचा, इससे बराय-ए-रास्त कुरआन को अन्दर उतारा गया, किताब मे लिखकर कुरआन न दिया अगर इक्रा के मायने ये हों कि किताब मे से देखकर पढ़ो ता हुजूर सल्ल0 ने इस लिहाज से पढ़ा नही है। इक्रा का सबसे पहले हुक्म है, इस हुक्म को 13 साल मक्का मे पूरा किया फिर सुलह-हुदैबिया तक के छ साल मदीना मुनव्वरा के मजीद गुजरे, 19 साल तक इस इक्रा को पूरा करते रहे लेकिन सुलह मे हुजूर सल्ल0 लफज अल्लाह तक पढ़ना न जानते थे। कयामत मे आवाज ही ये लगेगी कि नबी-ए-उम्मी इस मकाम-ए-महमूद पर आ जावें, पूछा जायेगा उम्मी नबी तो बहुत से नबी हैं, कौन से उम्मी नबी ? फिर पुकार होगी नबी-ए-उम्मी हाशमी बतही, इस पर हुजूर सल्ल0 आवेगें।

जिब्राईल के दबाने से सारा कुरआन हुजूर सल्ल0 के अन्दर आ गया अब जो भी लफज आपकी जुबान से निकलते थे वो अन्दर की माया से निकलते थे। हजरत आयशा रजि0 से यजीद बिन बानबूस ने पूछा कि हुजूर सल्ल0 के एख्लाक कैसे थे ?

हजरत आयशा रजि0 ने फरमाया ! तूने कुरआन नही पढ़ा ? कुरआन ही हुजूर सल्ल0 के एख्लाक हैं।

कुरआन और खुद को हुजूर सल्ल0 ने बराबर कर लिया था, अरे ! तमाम इबादतों को हम किताबे देखते हुए कर सकते हैं लेकिन नमाज मे किसी किताब को नही पढ़ा सकते वरना नमाज अहनाफ के यहॉ टूट जायेगी और दूसरों के यहॉ गैर कुरआन पढ़ाने से भी टूट जायेगी। अब इल्म मसाएल व फजायल का लो, इन पॉच चीजों पर नमाज लाने की मेहनत की तो उस नमाज से ही दुआ कुबूल होने लगेगी, पहली दुआ हो,

اهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ

ऐ खुदा मुझे नमाज के रास्ते से ही कामयाब कर दे, अम्बिया की तरह मेरे मसाएल नमाज से हल कर दे। इहदिना के मायने है बिल्लगना कि हमे पहुॅचा दिया चूॅकि अब नमाज से मसाएल के हल का रिवाज नही रहा इस वजह से लोग कह देते हैं कि खाली नमाज से क्या होता है। गज्वा-ए-खन्दक मे हजरत हुजैफा रजि0 ने हुजूर सल्ल0 के हुक्म की वजह से तीर निकाल कर फिर वापस रख लिया और दुश्मन को कत्ल न किया तो वापसी मे रास्ते मे बीस घुड़सवार फरिश्ते मिले वापस आकर देखा तो हुजूर सल्ल0 नमाज मे थे, बद्र मे भी नमाज यहॉ भी नमाज, बद्र मे कत्ल है यहॉ कत्ल नही तो नमाज हर जगह होगी, आगे क्या सूरत अख्तियार करें उसे खुदा ही मुन्कश्फ करेगें बस नमाज की पॉच शर्ते पूरा करने से दुआ कुबूल होती है।

अब सबसे पहले खुदा से खुदा का नूर मॉगो,

أَوَ مَن كَانَ مَيْتاً فَأَحْيَيْنَاهُ وَجَعَلْنَا لَهُ نُوراً يَمْشِي بِهِ فِي النَّاسِ كَمَن مَّثَلُهُ
فِي الظُّلُمَاتِ لَيْسَ بِخَارِجٍ مِّنْهَا كَذَلِكَ زُيِّنَ لِلْكَافِرِينَ مَا كَانُواْ يَعْمَلُونَ

(सूरः अनआम-123)

इसी नूर से दुनियॉ मे हर मुसीबत, हर हाजत मे आमाल की तरफ रूजु रहो, मोमिन इसी नूर की रोशनी मे कयामत के दिन चलेगा जैसे कायनात की चीजें देखने के लिये सूरज की रोशनी है ऐसे ही अब्दी आमाल को देखने के लिये खुदा ने कल्ब-ए-मुस्लिम को अब्दी रोशनी दी है। आरजी कायनात के लिये खुदा ने आरजी रोशनी मुफत मे दे दी जैसे गली मे पानी के लिये नल हुकूमत ने मुफत मे लगा दिया लेकिन अपने घर मे नल लगवाना चाहते हो तो उसके लिये कुछ देना होगा, ऐसे ही बाहर का नूर मुफत लेकिन अन्दर का नूर मेहनत से मिलेगा। जब नूर मिल जायेगा तो किसी गर्वनर या सुलतान-ए-जमाना की वजह से नमाज या किसी अमल मे ताखीर न करेगा कि जल्दी शादी खत्म करो तो मैं तालीम के हल्के मे जाऊॅ, इस मेहनत से आमाल के रास्ते पर पड़ेगें। फिर हम अपनी मख्सूस लाईन हुकूमत, तिजारत, मजदूरी, डाक्टरी के आमाल को हासिल कर सकेगें, सबसे बड़ी इबादत नमाज है क्यों कि इसमे खल्क से बिल्कुल्लिया निकलना है, हज व रोजे की जान नमाज ही है।

नमाज हिदायत का नूर लेने के लिये है, नूर लेकर नमाज पढ़ो, नमाज पढ़कर मॉगो जो मॉगोगे वही मिलेगा, रोटी, कपड़ा, मकान, हिफाजत और इत्मिनान जो मॉगोगे मिलेगा, जो मेरे बन्दे हैं उनके साथ अच्छा सुलूक करके दिखाओ मैं पालूॅगा, इल्म वालो का एहतराम करो और जाहिलों को समझाओ उन पर शफक्त करो तो मैं पालूॅगा। जब तेरा यकीन जमीन से लेकर आसमान तक जितने छोटे बड़े नक्शे फैले हुए है उन पर से हट जाये तो झोपड़ों मे किले वालों को झुकाकर दिखाऊॅगा। माल का रास्ता अख्तियार करोगे जब भी अल्लाह पालेगें और अमल के रास्ते पर मेहनत करोगें जब भी अल्लाह ही पालेगें, माल के रास्ते पर मेहनत करोगें नाराज होकर थोड़ा सा थोड़ी देर के लिये देगें और अमल पर मेहनत करोगें तो रजा के तौर पर हमेशा के लिये देगें। सबसे पहले यकीन हटाने के लिये मेहनत करो कि हम नमाज पर और कलिमे पर मेहनत करेगें हमारा अल्लाह राजी होकर हमे पालेगा, फौज, पुलिस, दुकान, खेती, किले, महलात पर से यकीन हटाना है, अब हम नमाज पर मेहनत करेगें अल्लाह हमारी कामयाबी का गैब से दरवाजा खालेंगें। यकीन के साथ कलिमे की तरफ बुलाना सीख जाओ, अभी तक जो तब्लीग हो रही है कि बीस-बीस साल हो गये तब्लीग मे फिरते हुए पर यकीन नही बदले इसलिये कि अभी हमने यकीन बदलने का इरादा ही नही किया है। दुकानदार ने यकीन नही मोड़ा अगर यकीन आ जाये तो फिर मस्अला यह होगा कि अगर इस हुकूमत ने हमारी बात मान ली तो फूले-फलेगी और अगर न मानी तो जाकर डूबेगी।

अल्लाह से लेकर लाखों की जिन्दगी बनाओ, तुम्हारी जिन्दगी तो आखिरत मे जन्नत मे बनेगीं यहॉ की इज्जत जिल्लत मे है, यहॉ की बड़ाई और बुलन्दी तो पस्ती और तवाजोअ मे है अगर ऐसे हम बन जावें तो अमरीका,रूस और हिन्द के यहूद, नसारा और मुश्रिकीन पर अजीज हो जायेगें अगर मुसलमान एक-दूसरे पर बड़ा बनने लग जायेगें तो तफरका हो जायेगा जिससे उम्मत अजाब मे आ जायेगी। तेज गाड़ी का मसअला उसके हैंण्डल पर होता है इधर मुड़ा तो ठीक उधर मुड़ा तो हलाकत। ऐसे ही इक्राम-एख्लास का मसअला है कि खूब अच्छे से अच्छा अमल करके खुद को जलील समझो कि ऐ नफस तेरी नियत ही खराब है तो अमल कहॉ कुबूल होगा। अमल करके हम उसकी खराबी निकाल लेगें तो खुदा माफ कर देगें। यही हाल इस उम्मत का है कि कयामत को सारी उम्मते कहेंगीं मेरे पास कोई नबी नही आया,

खुदा कहेगें ऐ रसूलों बताओ,

तो वो कहेगें कि कि हम तो गये थे, आपकी बातें पहुँचा दी थी।

अल्लाह कहेगें कि गवाह कौन है?

रसूल कहेगें कि उम्मत-ए-मुहम्मदी हमारी गवाह है।
अल्लाह कहेगें कि उम्मत-ए-मुहम्मदी तुम बोलो ?
उम्मत-ए-मुहम्मदी कहेगी कि यह रसूल सच्चे है।
अल्लाह कहेगें कि क्या सुबूत है तुम्हारे पास?
उम्मत-ए-मुहम्मदी कहेगी कि हमारे पास कुरआन है जिसकी हर बात सच्ची है।

अगर हम अपनी खराबी खुद न निकालेगें तो खुदा गुयूब निकालने पर आ जायेगें फिर हलाकत है। जन्नत मिलती है फज्ल से और फज्ले खुदा अमल से मिलेगा, इन्सान तो गन्दा है बन्दगी की हुदूद से गन्दगी के फहम से आगे न निकलो, जो खुद को कलिमा-नमाज पर डाले तो साथ-साथ सबके लिये खुद को जलील करे, इससे तरक्की मिलेगी। दूसरों की खराबियों की तावील कर ले, हजरत उमर रजि0 ने कहा कि इसे मार दो कि इसने मुसलमान को मारा है।

हजरत अबुबक्र रजि0 ने कहा कि नही इसने उसे मुसलमान समझकर नही मारा है बल्कि मालिक को काफिर समझकर मारा है, अलबत्ता उसे काफिर समझने मे गलती की है, ऐसे ही उसकी बीबी को उसने मुसलमान समझकर उससे इददत मे शादो न की बल्कि गैर मुस्लिम समझा और उसे माले गनीमत की बान्दी शुमार करके उससे इददत मे सोहबत कर ली, लिहाजा रहम न होगा। दूसरों की गलती की तावील किये बगैर इज्तेमा-ए-मुस्लिम नही हो सकता है और इज्तेमा बगैर आजा पर गलबा नही मिल सकता है। नफस दूसरों से इज्जत लेना चाहती है दूसरों की इज्जत करना नही चाहता, इस वजह से अगर किसी की गीबत या तौहीन की थी तो उसकी नमाज उसके पास चली गयी, उसे पता न चला कि कितनी नमाजें मिली हैं वरना इन नमाजों से आखिरत के साथ दुनियॉ मे भी फायदा उठायेगा। तजल्लुल व इक्राम की मश्क करनी होगी।

नमाज की मेहनत के साथ शक्लों से निकल कर इन आमाल मे खुद लगें तो ये सालिहीन वाली मेहनत है और अगर एक मख्सूस इलाका या कौम मे मेहनत है तो ये अम्बिया वाली मेहनत है और अगर सारे आलम मे मेहनत है तो ये सैययदुल अम्बिया मुहम्मद सल्ल0 वाली मेहनत है। मूसा व हारून अलै0 ने मेहनत की तो हर बनी इसराईल कर लेगा अगर कोई मुतवज्जाह करने वाला न रहेगा तो मेहनत से फिसल जावेगें जैसे मूसा अलै0 गये तो ये बछड़े मे उलझ गये। किसी शहर मे लोग सालिहीन उस वक्त बनेगें जब कि वहॉ नबियों वाली मेहनत चले, उसके लिये नबी खुद फाके कर लेग दूसरों को खिला देगें, नबी अपना सोने का वक्त बदल लेगें, नबियों वाली मेहनत को हुजूर सल्ल0 वाली मेहनत जिन्दा करेगी। इसलिये मेहनत हर कौम और हर जुबान मे मेहनत करने वाले लोग तैयार किये जाये। अपनी जात पर मेहनत तो हर जगह है नबियों के यहॉ सिर्फ मख्सूस इलाके मे इस मेहनत को चलाना है, हुजूर सल्ल0 वाली मेहनत मे उन पहली दोनो मेहनतों के अलावा यह मजीद भी है। आम फिजा बने कि अल्लाह से लेकर अल्लाह के बन्दों को देना है, किसी की दावत कुबूल करें तो उसका दिल खुश करने के लिये कुबूल करें अगर उसका दिल न खाने से खुश हो तो उसका खाना न खाओ। तुम जहॉ थे वहॉ मुक्तदियों के रंग मे थे अब जहॉ जा रहे हो वहॉ इमामों की दौड़धूप है, तुम सारे काम अच्छे तौर से कर लो और लोग तुम्हे न जाने तो सलामती मे रहोगे अगर तुमने लोगों से अपने को तआर्रूफ करा दिया ता उसमे तुम्हारी हलाकत का खतरा ज्यादा है।

अमीर की मानते रहो पर हराम मे उसकी नही माननी है, अपनी राय के खिलाफ अमीर की मानो। अमीर राय मॉगे तो दे दो, अमीर के खिलाफ अमीर से बात कहनी है तो सबसे छिपकर कहो। सबके सामने कहोगे तो उसका और तुम्हारा नफस उभारगा जिससे इज्तेमाअ खत्म हो जायेगा। इज्तेमाअ के साथ अदना सा अमल आला

से अच्छा है जो इफतेराक के साथ हो, जहॉ इफतेराक होगा वहॉ ही गीबत चलेगी और गीबत सारी नेकियॉ खा जायेगी। दूसरों की मान लो, अपनी राय के पीछे न पड़ो। ये चन्द चीजें हैं उनको जिन्दा करने के लिये फिरना है अगर हमने अपने फिरने को सही कर लिया तो नमाज हर लिहाज से बन जायेगी कि एख्लास-ए-नियत, ध्यान और यकीन के साथ मेहनत मे लगे रहो किसी की मालदारी और फकीरी का फैसला न कर रहे हो उस वक्त तुम्हारा जाना हरमैन के हिसाब मे है अगर तुम नफस के पीछे न चले, माल और ओहदे के इमामो को गधे-कुत्ते की तरह खाली महसूस किया खुद को आमाल-ए-मुहम्मद सल्ल0 की वजह से मालदार जानों फिर तुम्हारी दुआऐं रंग लायेगीं। मदीना के चप्पे-चप्पे पर खुदा की कुदरत जाहिर हुई है। अब माना यह है कि यहॉ से चल रहे है तो सारे सफर मे यहॉ की निस्बत का लिहाज करने की तौफीक मिलें

इस शहर के रहने वाले कौमियत, वतनियत और लिसानियत से निकल गये थे, सआद बिन मआज रजि0 को खन्दक मे तीर लगा जिससे जान लेने वाला जख्मी हुआ, दुआ मॉगी ऐ अल्लाह कुरैश से लड़ाई बाकी है तू मुझे उसके लिये जिन्दा रख और अगर उससे लड़ाई बाकी नही है तो बनु कुरैंजा के आखिरी फैसले तक जिन्दा रख दुआ मॉगते ही खून एकदम रूक गया, हुजूर सल्ल0 ने मस्जिद-ए-नबवी के सहन मे खेमा लगवा दिया। बनु कुरैंजा ने कहा हमे सआद बिन मआज रजि0 जो फैसला करे मंजूर है। सआद बिन मआज रजि0 की कौम के बनु कुरैंजा से बहुत अच्छे तआल्लुकात जब ये लोग फैसलागाह की तरफ चलने लगे तो सारी कौम वालों ने आकर सआद बिन मआज रजि0 को नर्मी की तरगीब देने लगे कि अपने ही है। सारे यार-दोस्त बनु कुरैंजा वाले एक तरफ दूसरी तरफ हुजूर सल्ल0 और सहाबा किराम। सआद बिन मआज रजि0 ने बनु कुरैंजा की तरफ हाथ करके कहा कि जो मैं कहूगा वो तुम लोगो को मंजूर है?

बनु कुरैंजा ने कहा हॉ, हमे मंजूर है।

सआद बिन मआज रजि0 ने कहा कि मेरा फैसला है कि उनका हर बालिग मर्द कत्ल हो और उनका हर बच्चा व औरत सहाबा किराम मे तक्सीम करके इस कौम को ही खत्म कर दिया जाये। अपनी कौम के खिलाफ ही फैसला कर दिया। हुजूर सल्ल0 ने फरमाया ! यही फैसला खुदा ने किया था। सआद बिन मआज रजि0 के रात को फिर खून जारी हो गया तो हुजूर सल्ल0 को इसकी इत्तेला दी गयी आपने आकर सीने से लगा लिया तो आप पर भी खून गिरने लगा और आपके सीने पर ही इन्तेकाल हुआ जिस पर अबुबक्र और उमर रजि0 दोनो आवाज से रोए। हजरत आयशा रजि0 ने दोनो की आवाज सुनी अलबत्ता हुजूर सल्ल0 ने दाढ़ी पकड़कर गहरे गम का इज्हार किया, सुबह को हुजूर सल्ल0 ने खुद जाकर कब्र खुदवाई तो हर फावड़े की हर चोट पर कब्र से खुशबू उठती, फरमाते कि मर्दे मोमिन की कब्र की खुशबू कितनी अच्छी है। आप जल्दी भी कर रहे थे कि कहीं फरिश्ते उन्हे हन्जला रजि0 की तरह नहलाकर नहलाने के अज्र से महरूम न कर दें, ये एजाज मिला सआद बिन मआज रजि0 को। इसी तरह से आपस मे मुहब्बत आवेगी, जो अपनो के खिलाफ कदम उठायेगा वही एजाज पायेगा।

असल मुहब्बत अल्लाह और उसके रसूल से हो, उनसे जिसका तआल्लुक हो उनसे भी मुहब्बत करो, अहले बैत, सहाबा और

उम्मत। खुद को नाकाबिले इक्राम सिर्फ खादिम समझो। ऐसे मे तुमने इस फकीर-ए-मुहम्मदी को याद रखा और सही मेहनत की

तो हो सकता है कि यहॉ से फ्रांस व इन्गलिस्तान जाना वहॉ को ही बदल दे।

<u>इस बयान की असल किताब बंगले वाली मस्जिद मे मौजूद है</u>

बाद नमाज फज्र बंगले वाली मस्जिद

20 सफर 1384 हिजरी

माल का रास्ता और आमाल का रास्ता

بِسْمِاللٰهِالرَّحْمٰنِالرَّحِيمِ

मेरे भाईयों और दोस्तों ! इब्तिदा ए इन्सानियत से आज तक और आज से लेकर कयामत तक दुनियॉ मे मेहनत के दो रास्ते चलते रहेंगें, एक माल का रास्ता और एक अमल का रास्ता, इन दोनो रास्तों का आपस मे बराबर का मुकाबला है।

माल का रास्ता - इस रास्ते मे मेहनत करके माल हासिल करना फिर माल से चीजों को लाना और चीजों से जिन्दगियों का बनाना।

अमल का रास्ता - इस रास्ते मे मेहनत करके ईमान हासिल करना फिर ईमान के रास्ते से अमल को ठीक करना और अमल के रास्ते से जिन्दगियॉ बनाना।

किसी जमाने मे अमल के रास्ते से कामयाबी लेने वाले अफराद रह गये और जिस जमाने मे मेहनत की गयी तो लाखों बन गये पर ये रास्ता हमेशा चलता रहा लेकिन मेहनत व अदम मेहनत की वजह से कम व बेश होता रहा पर ये रास्ता हमेशा चलता रहा। देखने मे तो माल का रास्ता आसान दिखायी देता है क्यों कि इस रास्त मे कामयाबियॉ नजर आती है और इसके ठीक मुकाबले पर जो अमल का रास्ता है इस अमल के रास्ते मे मुश्किलें नजर आती है और इस रास्ते मे दिखायी भी कुछ नही देता। माल के रास्ते मे खर्च बहुत है और आमद बहुत कम है पर अमल के रास्ते मे खर्च कुछ नही बस आमद ही आमद ह, इस वास्ते अमल का रास्ता बहुत आसान है और कामयाब कराने वाला है।

आमदनी कम और खर्च ज्यादा

माल के रास्ते मे जिसका नाम तुमने कमाई रखा है वो तो आमद हुई, कि पानी लगा रहा है, हल चला रहा है,बीज डाल रहा है, कटाई कर रहा है इस पर तो हुई आमद, अब जानवर खरीदे, मकान बनाया, कपड़े लाया, शादी की, खाया-पिया, ये सब है खर्च। खेती करना जिसका नाम है वो तो है आमद और बाकी सारा है खर्च।

हल कितना चलाया,

कटाई कितनी देर की,

पानी कितनी देर लगाया उसे देखो, बाकी फुरसत का वक्त कितना है उसका कुछ नही मिला।

धूप मे आया उसका कुछ नही मिला,

पानी मे भीगता हुआ आया उसका कुछ नही मिला,

सर्दी मे ठिठुरता हुआ आया उसका कुछ नही मिला,

इसी तरह मुलाजिम, मुलाजिमत करने का नाम है, उस मुलाजिमत पर जो पैसा आया वो तो है आमद बाकी चौबीस धंटे सारा खर्चा।

दुकान पर बैठा, जिस बोल पर मामला बन गया उस पर तो मिलेगा पैसा बाकी चौबीस धंटे सारा खर्चा।

खर्च हुकूमत भी वसूल कर रही है, पब्लिक भी वसूल कर रही है और घर वाले भी वसूल कर रहे है। इस वास्ते माल के रास्ते से जो मुहब्बत करे वो हमेशा परेशान रहेगा।

लाख वालों पर लाख के एतबार से खच पडे,

हजार वालों पर हजार के एतबार से खर्च पडे,
सौ वालों पर सौ के एतबार से खर्च पडे, ये सब इस खर्च से परेशान है।
हर आदमी इसमे फकीरों की तरह हाथ फैलाये रहेगा कि आमद थोड़ी सी और खर्च चौबीस धंटे। जब लोग माल के रास्ते मे पड़ जाते हैं तो फिर इक्तिसादियात की तंगी मे मुब्तिला हो जाते है कि झूठा मुकददमा, जुल्म, सित्म ये सारी चीजे जाहिर होती है तो हक तआला शानुहू उन पर गजब का हाल डालते हैं। ऐसे लोग सिवाये जानवरों की तरह खाने, दुकान जाने, बीबी बच्चों के साथ मश्गूल होने के इनके पास कोई और काम नही रहता। मुर्गों मे, कुत्तों मे, बकरियों मे कोई जाब्ता नही है, जब लोग जानवरों की तरह औरतों, खानों,और मकान के पीछे फिरते हैं तो खुदा उन पर हाल डालते है। हक तआला शानुहू ने इन्सान को इसलिये नही बनाया कि वो औरतों, खानों, माल और मकान के पीछे फिरते रहे जो लोग औरतों, खानों, माल और मकान के पीछे फिरते है
उन पर अल्लाह का गजब आता है कि उन लोगों की जिन्दगी को हक तआला शानुहू मलियामेट कर देते है।
ऐसी हुकूमतों को तोड़ेगें,
ऐसे मालदारों को हलाक करेगें,
ऐसे जमींदारों को ड़बोयेगें,
ऐसे मुलाजिमो को आफत मे मुब्तिला करेगें और जब आखिरत मे जायेंगें तो दोजख मे डाल दिये जायेंगें।
आखिरत मे माल कहेगा कि मै तेरा वो माल हूँ जिसमे तूने अल्लाह का हुक्म तोड़ा था, पीछे से कोई धक्का दे रहा है और कह रहा है मैं तेरा अमल हू। दुनियॉ मे भी कुछ ज्यादा न मिला और आखिरत मे हमेशा का अजाब, ये रास्ता आसान है क्यों कि इसमे नफस मौजूद है।
एक मजदूर बनती हुई कोठी को देख रहा है और पत्थर तोड़ते हुए ये सोचता जा रहा है अगर मेरे पास पैसा आया तो मैं भी ऐसी ही कोठी बनाऊँगा अगर इस मजदूर को ये मालूम होता कि ये कोठी वाला अपनी कोठी मे रात को किस तरह रोता है तो कभी कोठी बनाने की तमन्ना न करता कि कोठी वाले की औरत दूसरे से मिलती है, इसी मुल्क मे ये सब हो रहा है। एक साहब अपनी बीबी के पास उसके दोस्त की मौजूदगी मे चले गये तो उसने दावा कर दिया, ये अदालत मे जज के सामने पेश हुआ पर जज उसकी नवैयत समझ न सका तो उसके हक मे फैसला कर दिया, ये घर आकर मुर्दा होकर लेट गया।
बेटी ने पूछा क्या बात है ?
उसने गुस्से मे कहा तेरी मॉ कुत्ते से सोहबत कराती है।
बेटी बोली, अब्बा जी ! बनिस्बत इन्सानों की सोहबत के ज्यादातर लड़कियॉ कुत्ते से सोहबत पसन्द करती है।
ये है मुल्क के इमामो की जिन्दगी, ये भी यही सोच रहा है कि मै भी इसी तरह कमाऊँगा तो मै भी ऐसी ही कार लूँगा पर इसे ये नही मालूम कि इस कार वाले के घर मे जो बच्चे खेल रहे है ये न जाने किन किन शैतानों के है। इन कारों मे, कोठियों मे जो जिन्दगी गुजारी जा रही है वो ये है, जब ये जिन्दगी हो तो जो मुसीबतें आवें वो कम है कि जलजले, सैलाब, ये सब कम है, इस नक्शे पर तो अल्लाह तआला जमीन व आसमान को तोड़कर फेंक दे।
जिस तरह लोग आज माल के रास्ते पर चल रहे है, इसी तरह जब तुम अमल के रास्ते पर चलोगे तो अल्लाह तआला शानुहू कामयाबियॉ देगें, कुछ अरसे बाद देखोगे कि माल के रास्ते वाले तो हो गये खत्म, कुछ डूब गये, कुछ जल गये, कुछ धंस गये और अमल वाले एकदम चमक गये लेकिन इस रास्ते पर चलन से पहले, आने वाली जिन्दगी की तहकीक करनी होगी। मौजूदा नक्शे वालो की नाकामी आपको तब नजर आयेगी जब आपके

सामने कारून, फिरऔन और शददाद की जिन्दगी का नक्शा होगा। ये अगला पिछला दौर जब सामने रखकर चलोगे तो अमल वाले रास्ते पर चलना आसान होगा। मौजूदा को नजर अंदाज करना, मौजूदा को देखकर न चलना कुरआन पाक मे इसी वास्ते अगला भी बहुत कुछ बतलाया और पिछला भी बहुत कुछ बतलाया।

अमल के रास्ते से जिस दिन तुम्हारी जिन्दगी बनेगी तुम्हे उस दिन तक पता नही होगा कि आज तुम्हारी जिन्दगी बननी है, तुम यूँ समझ रहे होगे कि बस जी आज तो जिन्दगी खत्म हो रही है, अब तक की जिन्दगी का बनना नही दिखायी दे रहा अचानक समन्दर मे बारह सड़के बनती है, बनी इसराईल पार होते है और फ्रिऔन डूब जाता है, अब दुनियॉ को उनकी कामयाबी और नाकामी दिखायी दी।

माल के रास्ते की नाकामी जब दिखायी देती है जब वो आ जाये और अमल के रास्ते की कामयाबी जब दिखायी देती है जब वो मिल जाये। जब कारखाने मे आग लग जायेगी जब दिखायी देगा कि मैं नाकाम हो गया। ये दो रास्ते है, इन दोनो के हो जाने के बाद इनका पसमंजर दिखायी देता है। अमल के रास्ते के अन्दर पाचॅ मिनट पहले भी पता न चलेगा कि मैं कामयाब होने वाला हूँ और माल के रास्ते के अन्दर पाचॅ मिनट पहले भी पता न चलेगा कि जिन्दगी नाकाम होने वाली है। आम तौर से अन्धे किस्म के इन्सान इस जिन्दगी पर चलते है जिन पर अचानक हादसे आते है जैसे,

हवाई जहाज हवा मे ही आग के हवाले हो गया, या

मोटर कार का एक्सीडेन्ट हो गया, या

कश्ती पानी मे डूब गयी तो कुछ पता ही नही चलता।

इस वास्ते खर्च कम और आमदनी ज्यादा वाले रास्ते को अख्तियार करो।

खर्च कम और आमदनी ज्यादा

मेरे अजीजो ! आसान रास्ता अमल का ही है, आदमी अमल तो चौबीस घन्टे करता है बस अमल पर मेहनत करके अमल को ठीक कर ले कि

चलने का,

बैठने का,

खड़े होने का,

माथा टेकने का,

गर्मी सर्दी मे चलकर आने का भी मिलेगा, तालीम, तस्बीह, नमाज पर,और कमाई मे अच्छे अमलो पर मिलेगा। पेशाब, पाखाना, सोहबत करना अच्छा बन गया तो उसका भी मिलेगा, अब अगर तुमने इन अमलो को अमल सालिहा बना लिया तो चौबीस धन्टे की तुम्हारी जिन्दगी आमद बन गयी पर अमल अच्छा बनता है,

ईमान,

इल्म, और

एख्लास,

की वजह से अब अगर तुमने अमल को अच्छा बना लिया तो पेशाब करने पर भी मिलेगा। चौबीस धन्टे की तुम्हारी जिन्दगी अमल पर गुजर रही है बस इसे अच्छे अमल बना लो कि अपने अमल को ऐसा बनाओ जैसे अमल खुदा को पसन्द हैं। चीजों से निगाह हटा लो दुकान चाहे जैसी हो, माल वाला रास्ता चमकीला रास्ता है जो शराब की तरह धोखे का रास्ता है, हमे माल वाले रास्ते मे नही फंसना, हमे तो अमल वाले रास्ते पर चलना है। हमे इज्जत, कूवत, गल्बा, रोटी, कपड़ा, हिफाजत और ऐश वगैरह अमल वाले रास्ते से लेना है। अब अपने

अपने अमल बनाने की कोशिश करो कि हमारे अमल ऐसे बन जायें, जैसे अमलों पर खुदा पालता है। जब तक आपका अमल ऐसा न बने तब तक परेशानी दूर नही होगी, पैसा हाथ मे आने से भी फौरन कामयाबी नही मिलतीं पैसे से भूख और प्यास दूर नही होती, पैसे से मकान बन जायेगा, रोटी तो मिल जायेगी पर रास्ते मे अगर किसी ने पैसा छीन लिया और मारपीट कर अस्पताल मे डाल दिया तो न मकान बन पाया और न रोटी मिली। यहाँ मेहनत करनी पड़ेगी हिदायत लेने के लिये।

एक तरफ मेहनत के बाद माल और

एक तरफ मेहनत के बाद हिदायत,

हिदायत क्या है ?

माल भी खुदा देता है, चीजें भी खुदा ही देता है, मेरे अमल अच्छे होंगें तो माल भी खुदा ही देगा और चीजें भी खुदा ही देगा। जिस तरह माल वालों को ये सब कुछ माल से मिलता दिखायी दे रहा है, आपको ये सब कुछ अमल से मिलता दिखायी देने लगे, इसे हिदायत कहते हैं अगर आपको चीजें माल मे मिलती दिखायी दे तो ये जलालत है, अमल जलालत के साथ होगा तो इस पर खुदा के यहाँ से मिलने का दरवाजा नही खुलेगा। सारा सिलसिला जो माल मे दिखायी दे रहा है वो अमल से दिखायी देने लगे तो ये हिदायत है कि मैं अमल ठीक करूँगा सब मेरे आगे झुक जायेंगें, जैसे मालदार माल पर शेखी बघारता है कि वो किसी मसले को नही सोचता, कत्ल तक के मुकददमो तक पर मुतमईन रहते है कि सौ मसले माल से हल हो जायेंगें, उसी तरह से ये सारे मसले हमे अमल से हल होते दिखायी देने लगें तो ये हिदायत है।

दो मेहनतें है

एक मेहनत पर हिदायत मिलेगी और एक मेहनत पर माल मिलेगा। हिदायत मिलने के बाद अमल के नक्शे बनेगें कि इबादत, मआशरत, कमाई के अमल यूँ ठीक कर लो क्यों कि इबादत, मआशरत, कमाई के अमलों मे ही कामयाबियाँ होंगीं। आपके सामने ये हो कि ये जो हुकूमत परेशान हो रही है, इसकी परेशानी की वजह ये है कि इसके अमल खराब हैं। अपनी सारी कामयाबियाँ अमलों के ठीक करने मे दिखलायी दे रही हा, मुकाबला आखिर तक है। जैसे दो लाईने एक साथ चलती हैं पर कभी दोनो लाईने आपस मे नही मिलती अगर कहीं ले जाकर माल की लाईन से अमल की लाईन को जोड़ दिया तो अमल की लाईन रूक जायेगी और गाड़ी गिर जायेगी। अमल से दरवाजा जब खुलेगा जब माल की लाईन के मुकाबले मे अमल की लाईन चल जाये, जब अमल की लाईन चल जायेगी तो दूसरी लाईन वालों को चिड़ायेगी, वो हाथ दिखायेंगें कि ये जा रहे है।

इस तरह मेरे अजीजों! शादी हो तो माल वाले रास्ते से न हो, अमल वाले रास्ते से हो, आपस मे मेल मुलाकात हो तो माल वालों

के तरीकों पर न हो बल्कि अमल वालों के तरीके पर हो। माल वाले पाखाना बनायेंगें खूब चौड़ा कमरे जैसा, जहाँ नीचे से भी हवा आये और ऊपर से भी हवा आये, हवा के लिये पाखाने मे पंखे भी लगा दिये। मुल्ला जीवन रह0 आलमगीर के उस्ताद थे बादशाह के पास गये, इस्तेन्जा आया तो बादशाह ने फौरन पाखाना भेज दिया, वहां पाखाने मे पाखानापने की कोई बात ही नजर न आयी, न ढेले दिखायी दिये, न पानी, न पाखाना, वहाँ तो इत्र की खुश्बू आ रही थी। तो वहीं खड़े होकर नमाज की नियत बांध ली़, नमाज से फारिग होकर आकर बैठ गये। दूसरी बार फिर ऐसा ही हुआ तो ये खुद से कहने लगे कि मैं इससे इस्तिन्जे को कहता हूँ और ये मुझे खिलवत मे पहुँचा देता है। ये यहूद व नसारा, मुश्रिकीन, माल वाले, माल परश्त, सब नक्शे परश्त इन्सान है, इन सबसे जिन्दगी को मोडकर अपनी जिन्दगी को अमल वाली जिन्दगी पर लाया जाये। जब अमल

वाली जिन्दगी बनाओगे तो हिदायत मिल जायेगी, जब हिदायत मिल जायेगी तो पक्के मकान को पसन्द नही करोगे बल्कि कच्चे मकान को पसन्द करोगे कि कच्चे पर एक हजार लगाकर चार हजार ईमान व अमल की मेहनत को जिन्दा करने पर लगाऊँगा।

माल और अमल मे मुकाबला

माल और अमल ये चौबीस घन्टे की जिन्दगी का मुकाबला है, पचास पचास हजार का मकान बना रहा है और इसके शहर के अन्दर बेवाऐं बैठी हुई है, लड़कियॉं जिना का शिकार हो रही हैं। शरीफ औरतें रंडियॉं बन रही हैं, साहब जादे पचास हजार की जमीन खरीद रहे हैं, य माल का रास्ता है अमल का रास्ता नही है।
एक बेचारा कह रहा था कि मेरे पास इतना भी नही है कि मैं आने वालों को एक वक्त की रोटी दे दूं, माल न होने की वजह से ही बेटियों की शादी नही कर पा रहा हूँ तो आप अमल कब करेंगें जब आपको माल का सरमाया मिल जायेगा ? अरे अमल का सरमाया माल नही है, अमल का सरमाया हिदायत है और हिदायत ये है कि जो कुछ आपको माल मे दिखायी दे रहा है वो आपको अमल मे दिखायी दे। जब हिदायात मिलेगी तो जैसे माल आता है फिर माल चीजों को लाता है जिनसे जिन्दगी बनती हुई दिखायी देती है, उसी तरह जब हिदायत आयेगी तो बैठेगा नही बल्कि अब वो अमल करेगा जिनसे जिन्दगी बनेगीं पिछले अपने सारे अमलों पर निगाह डालेगा कि मआशरत मे और कमाई मे क्या क्या बदअमलियॉं हुई हैं फिर इन बदअमलियॉं को दूर करेगा, जिससे जिन्दगी बनेगीं।

हिदायत के बाद छुटटी नही

ये बात भी नही कि एक दफा हिदायत मिल गयी तो बस छुटटी मिल गयी, नही बल्कि एक तरफ वो मेहनत भी करेगा जिस पर हिदायत मिलती रहे और एक तरफ अमल बनाता रहेगा, जब इस रूख पर पड़ जायेगा कि मुझे चौबीस धन्टे के अमल बनाने है तो अब खुदा इसको देना शुरू करेगा। आखिरत मे भी मिलेगा और दुनियॉं मे भी मिलेगा कि कमाई मे गया तो लोगों से वहॉं कह रहा है कि देखो जी कमाने से नही मिलता अल्लाह के देने से मिलता है, अब कमाने मे अमल बनाये फिर वहॉं से पैसा लेकर घर गया, घर पर ऐसा खाना पकायेगें जिसमे थोडा पैसा खर्च हो और लो ये पॉंच रूपये वहॉं भेज दो क्यों कि उनके घर मे कुछ खाने को नही है। अब इसको अपने खर्च का भी मिलेगा और दूसरों के खर्च का भी मिलेगा और कमाने का भी मिलेगा।
वैसे अमल कब बनेगे जिन अमलो पर कामयाबी मिले ? अमलो पर कामयाबी तब मिलेगी जब सारे अमल ईमान के साथ इल्म की शक्लों और अल्लाह के ध्यान व एख्लास पर आ जायें अगर हमारी शादी ईमान, इल्म, एख्लास और अल्लाह के ध्यान पर आ गयी तो शादी अमल ए सालेह बन जायेगी। शादी का क्या यकीन हो ? कि लोग शादी से खुश हो जायें, नही बल्कि जब मैं शादी को हजरत मुहम्मद सल्ल0 वाला अमल बनाऊँगा तो अल्लाह खुश हो जायेंगें। इसलिये हुजूर सल्ल0 का तरीका सीख लो, अल्लाह का ध्यान सीख लो, अल्लाह की रजा का जज्बा सीख लो, रात को औरत के पास जाना है तो अब हजरत मुहम्मद सल्ल0 वाला इल्म सीखो और हर अमल को ईमान के साथ, एख्लास के साथ और अल्लाह के ध्यान के साथ करो तो इन शादी वाले अमलों पर इनामात मिलेंगें।
अब कमाई को भी इन चार पर लाओ कि ईमान, इल्म, एख्लास और अल्लाह के ध्यान पर कमाई को लाओ, इसी तरह मर्दो
औरतों के साथ की जिन्दगी को भी इन चारों पर लाओ, गीबत से, हसद से, बुहतान से बचे और दूसरो के हमदर्द बनकर

जिन्दगी गुजारे तो ये चौबीस घन्टे की जिन्दगी अल्लाह से
माल दिलवायेगी,
चीजें दिलवायेगी,
हिफाजत करायेगी,
अल्लाह की रहमतें दुनियॉ मे बारिश की तरह बरसेगीं,
कब्र मे मजे करोगे,
हश्र मे सुरखुरू होगे,
पुलसिरात पर बिजली की तरह से गुजर जाओगे।
हिदायत कैसे मिलेगी?

हिदायत पैसा देने से, जमीन देने से या खाली फिरने से नही मिलेगी बल्कि नफस पर मुजाहिदा करने से हिदायत मिलेगी।

नफस पर मुजाहिद किस को कहते है? इन्सान की ख्वाहिशात जिसमे माल, सवारी, कपड़े, सोना-चादीं और औरतों की चाहत, इन सबके हासिल करने के लिये मेहनत करने को मुजाहिदा नही कहते कि औरत को हासिल करने के लिये एक टांग पर खड़े होकर चार घन्टे वजीफा पढ़ो, ये मुजाहिदा नही है बल्कि आप बिल्कुल मुत्तकी बनने की नियत से चारपायी पर तकिया लगाकर राहत के साथ बैठकर एक तस्बीह पढ लीजिये तो ये मुजाहिदा है। नफस ये नही चाहता कि तू मुत्तकी बने इसलिये नफस के खिलाफ अल्लाह वाले अमल को करना ये मुजाहिदा है। तुम अपने नफस को औरतों में, जायजादों में, मकानात में लगाओ इससे बेहतर ये है कि तुम मुत्तकी बन जाओ पर

मुत्तकी कैसे बनोगे ?

मुत्तकी बनने के लिये जितने नफस के या माल कमाने के तकाजे हैं उन सब को पीछे करके ईमान को सीखते हुए और हर हाल मे सब्र करते हुए अल्लाह के हुक्मों पर पूरा पूरा चलने वाले बन जाओ। जिस वक्त तुम्हारे कान मे कोई बात अल्लाह की पड़ जाये उस वक्त न बच्चा देखा न बीबी कि ये है आमन्ना असलमना मे पूरे उतरने वाले, जान व माल को अल्लाह की इतआत पर सही खर्च करके दिखाने वाले और रातों मे उठ उठ कर रोने वाले अगर तुम ऐसे बन गये तो अब हक सुब्हानुहू तआला जमीन से पैसा निकाल कर दिखायेगें। अमल से जो पैसा आता है वो शक्लों की पाबन्दी से नही आता है, जब इस कमजोर और जईफ इन्सान को ये कह दिया कि शक्लों की पाबन्दी न करो तो ये हुक्म देने वाला कादिरे मुतलक देने मे क्यों शक्लों की पाबन्दी करें।

सबसे बड़ा सबब ईमान की दावत का अमल

अगर तूने शक्लों से मुतआस्सिर होकर तक्वा तोड़ दिया तो अब तुझे वो कादिरे मुतलक शक्लों पर ही देगा। इसलिये हिदायत की मेहनत हिदायत लेने के लिये की जाती है, हिदायत मिलने के बाद चीजें लेने के लिये सबसे बड़ा सबब ईमान की दावत का अमल दिया है। अब गैब की बातों पर जमा हो जाओ कि देखकर जो यकीन तुम्हारा बन रहा है उसके मुकाबले सुनने से यकीन हासिल करो कि माल से और कायनात की किसी शक्ल से कुछ नही होता इसके मुकाबले मे एक अमल है ईमान की मजलिस का जिसमे अल्लाह की कुदरत के तज्किरे, उसके रब होने के तज्किरे, उसके करने के जाब्ते, अम्बिया की मददों के वाकिआत कि अमल की बुनियाद पर उनका कामयाब होना, अमल की बुनियादे है अगला पिछला यकीन और माल की बुनियाद हैं मौजूदा नक्शे।

अमल के रास्ते मे मुहम्मद सल्ल0 को देखा जायेगा पर माल के रास्ते मे न आगा देखा जायेगा और न पीछा देखा जायेगा बस आखौं देखे पर जानवरों की तरह दौड़ो पर जब मसायब की गोलियॉ लगेंगी तो तुम अपने बाजारों मे खड़े होकर अपनी दुकानों को आखौं से जलता हुआ देखना। खुदा करे कि वो दिन आ जाये जब अमल पर अल्लाह दुनियॉ मे इन्किलाब पैदा करें। इसलिये रोजाना अल्लाह की कुदरत के तज्किरे,
उसके रब होने के तज्किरे,
सबब के मुकाबले अमल से होने की बात,
अम्बिया की मददों के वाकिआत
कि अमल की बुनियाद पर उनका कामयाब होना, इसकी दावत का मस्जिदों मे माहौल बनाओ। माल और नक्शों से अपने यकीनों
को मोड़ने के लिये दिखने वाले यकीन पर सुनने वाले यकीन को हावी करो कि सुनने वाला यकीन दिखने वाले यकीन पर गालिब
हो जाये कि सूद लूगॉ तो खुदा से लड़ाई पड़ जायेगी फिर वो हमारी जिन्दगी बिगाड़ देगें, इन बातों का इतना सुनना फर्ज है कि इतना यकीन आ जाये कि हराम से बच जाये। बिरादरी ने कह दिया कि अगर नॉच गाना न हुआ तो हम तुम्हारे यहॉ शादी मे नही आयेगें, अब इतना तवक्कुल तो फर्ज होगा कि आदमी इस हराम से बच जाये। बेगम साहिबा रोने बैठ गयी कि रन्डियॉ नाच रही हैं मैं इनको देखने जाऊॅगी, इतना सब्र तो फर्ज है कि इस पर सब्र कर ले और बीबी को दो थप्पड मार कर बन्द कर दे।
इसलिये जहॉ ईमान की बातें होती हों वहॉ पहुॅच कर, उन्हे सीखकर फिर अपनी मस्जिद मे रोजाना ईमान की बातें करो कि दिखने
वाले यकीन पर सुनने वाले यकीन को गालिब करो, नफस नही मानता तो इसके गले पर छूरी फेर दो और छोडकर निकल जाओ। रोजाना ईमान के अमल की कसरत करो और इस वास्ते करो कि अल्लाह राजी हो जाये। तालीम मे बैठने से अल्लाह पालेगा अपने आपको समझाओ कि मस्जिद के बाहर का जितना नक्शा है उससे कुछ नही होता, अमलों की ताकत से कौमे नूह का खात्मा हुआ था। यही अमल हैं यकीन के बदलने के लिये कि कुरआन मे ईमान की दावत के किस्से हैं, जब कुरआन वाला इल्म आयेगा तो इल्म का मेयार कायम होगा, अल्लाह के तज्किरे करेगें तो अल्लाह का ध्यान कायम होगा, इतना अल्लाह के तज्किरे कर कि
चींटी और जहाज बराबर हो जायें,
तेरी निगाह मे गवर्नर और चमार बराबर हो जायें,
कि जैसे तू चमार के जाने पर ध्यान नही करता वैसे ही गवर्नर के जाने पर ध्यान न कर। कुत्ते के आने पर गधे के रेकनें पर कोई तवज्जोह नही देता, जब अल्लाह का हर वक्त ध्यान होगा तभी तो अमल का मेयार कायम होगा। नबियों ने इन्ही अमलों पर सारी मुसीबतों का खात्मा बताया है अगर आज ये अमल किये जायेगें तो वो सारी करामतें जिन्दा होंगी जो किताबों मे लिखी हुई हैं। इन अमलों को रोजाना इतना करो कि ईमान के हल्कों मे बैठते बैठते तुम्हारा यकीन बदल जाये।
अब अल्लाह के ध्यान वाली नमाजें पढ़ो तो इन नमाजों के साथ खुदा तुम्हारे लिये देने के दरवाजे खोलेगा। हिदायत मिल जाये इसके लिये इन अमलों को जिन्दा करते हुए इलाकों मे फिरो, इन अमलो को असल समझ लो। जितना हमारे फिरने से ये अमल जिन्दा होगें उतनी हमारी कमाई होगी। मेहनत करते हुए अल्लाह से मांगो कि ऐ अल्लाह तूने इन अमलों से कामयाब होने की हिदायत नबियों, सिददीकीन, शोहदा और सालिहीन को दी

है हमे भी हिदायत दे दे। अब अल्लाह तुम्हारे दिल के अन्दर वो रोशनी उतारेगा जो अमल से कामयाबी दिलायेगी। ये अमल हमेशा करने के लिये है इनको करते रहो तो फिर अमल का दरवाजा खुलेगा और अमलो से कामयाब होने की हिदायत तुम्हे मिल जायेगी।

ईमान - इल्म - एख्लास और अल्लाह का ध्यान

अल्लाह तआला अमलों पर वजीरों को तुम्हारे सामने झुकायेगें तुम्हे वजीरो के सामने झुकना न पड़ेगा, मालदारो, हाकिमों, वजीरों को अगर कामयाब बनना है तो वो तुमसे आकर ईमान व अमल को सीखेगें तब वो भी कामयाब होगें वरना किसी वक्त भी उनका बेड़ा गर्क होकर डूब जायेगा। अब अगर यूँ समझो कि
इन अमलों से क्या होगा ? अना इन्दा जन्ना अब्दी बी,

तुम्हारे पास हुकूमतो से ज्यादा आमदनी होगी

अब कमाई के नक्शे मे चलना हो तो चलो या कोई नक्शा न हो तो भी चलो। नक्शे के बगैर चलना चाहो तो तकलीफों मे लज्जत महसूस होगी बस बन्दगी को पहचान ले, किसी के सामने अपनी हाजत न रखें, अपना हाल न खोलें, अल्लाह से माँगता रहे और चलता रहे, अल्लाह पर पूरा एतमाद और भरोसा रखे। जितना इन अमलों पर बढ़ते चले जाओगे तुम्हारे पास हुकूमतो से ज्यादा आमदनी होगी। खुदा उनके लिये तो दरवाजे बन्द कर देगें और वो सोचेगें कि तुम्हारे पास कहाँ से आता है? अरे गधे ! तू बता तुझे कौन देता था कि तुझे भी अल्लाह देता था मुझे भी अल्लाह दे रहा है फिर उन सबको खुदा तुम्हारे सामने झुका देगें। जो आता रहे उसे इल्म की शक्लों पर लगाते रहो, दावत, तालीम, जिक्र और नमाज तुम्हारी कमाई है। खुदा के बन्दों पर लगाना, नंगो को पहनाना तुम्हारी कमाई है। अब अगर तुम कमाने के रास्ते चलो तो ये समझ लो कि कमाई मे
इल्म का मिलेगा,
अल्लाह के जिक्र का मिलेगा,
हराम-हलाल का पाबन्द बनकर चलने पर मिलेगा,
कमाने मे गुरबा परवरी पर मिलेगा,
अगर तूने खेती मे, दुकान मे इल्म के यकीन पर कमाई का मिलना यकीन किया तो इस इल्म वाले यकीन का मुआवजा बहुत ज्यादा मिलेगा। इल्म और अमल कर सारी हिदायत मुहम्मद सल्ल0 वाली इन्ही चार पर मिलेगी कि ईमान, इल्म, एख्लास और अल्लाह के ध्यान पर कमाई को लाओ, इन चारों को खींचकर कमाने की जगह पर ले गये तो मिला। इन चारों को घर पर ले गये तो वहाँ भी अमल गया, मिलने की चीजें यही है, अब इल्म के मुताबिक खर्च किया तो इस इल्म का मिलेगा। अमल मे एख्लास दाखिल कर लिया तो एख्लास का मिलेगा, अब एख्लास भी सब जगह जावे। जब माल सिर्फ इन अमलों पर कमाकर
आया है तो खर्च को भी इल्म पर लाना होगा।
हजरत मुहम्मद सल्ल0 अमल वालों के इमाम हैं जो आसमानों पर तशरीफ ले गये है, अल्लाह तक को देखा है, नबियों को देख आये, अमल देख आये, वो हमारे नुमाइन्दे हजरत मुहम्मद सल्ल0 हैं अगर तुम माल वालों को देखकर चलोगे और उन्हे अपना इमाम बनाओगे
तो माल वाले हुकूमत वालों को देखकर चलेंगें,
हुकूमत वाले रूस और अमरीका को देखकर चलेंगें,
रूस और अमरीका साइन्स वालों को देखकर चलेंगें और
साइन्स वाले कुत्ते को देखकर चलेंगें,

क्यों कि साइन्स वालों ने कुत्ते को आगे भेजा है, सारे मुल्कों का जो सबसे ऊपर का प्लेट फार्म है वहॉं कुत्ते की बातें हो रही हैं। तुम अमल के इमाम हजरत मुहम्मद सल्ल0 को देखकर चलो, अमल वाले रास्ते पर मेहनत करो पर आज तुम्हारी सोच अमल वाले रास्ते की जाती रही है, तुम्हारी दुआ का चॉंद-सूरज पर असर पड़ेगा इसलिये कि तुम अफजल हो अगर तुम रोकर गिड़गिड़ा कर दुआ मॉंग लो तो अर्श हिल जायेगा।

इस बयान की असल किताब बंगले वाली मस्जिद मे मौजूद है

बाद नमाज फज्र बंगले वाली मस्जिद

21 सफर 1384 हिजरी

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह करते हैं

मेरे भाईयों और दोस्तों ! अल्लाह रब्बुल इज्जत ही ने सारे जहांन को बनाया है सबकी परवरिश वही करत हैं। चीजें भी वही बनाते हैं आर पालते भी वही हैं।

भूखा भी वही करते हैं और पेट भी वही भरते है।

खौफजदा भी वही करते हैं और अमन भी वही देते है।

जितने जानदार है चाहे इन्सान हो या गैर इन्सान, मुस्लिम हो चाहे गैर मुस्लिम, सबके साथ जो हालात पेश आ रहे हैं, वो हालात अल्लाह रब्बुल इज्जत की तरफ से पेश आते हैं, हकीकत मे लाने ले जाने वाले अल्लाह है। जानवर इसलिये बनाये कि वो जो चाहे करें, उनके लिये कोई कायदा कानून नही है अल्लाह ने उनका पलना तय कर दिया तो उन्हे पाल रहे हैं पर जानवरों को हमेशा के लिये नही बनाया, वो अपना वक्त पूरा करके मर जायेंगें फिर कयामत मे थोड़ी देर के लिये जिन्दा किये जायेगें एक दूसरे का बदला लिया जायेगा फिर सबको मिटटी कर देंगें। जानवर तो वो किस्म है जो वक्ती तौर पर पलने के लिये पैदा किये गये हैं कि कुछ दिन के लिये अपनी मादा से सोहबत कर ले, खा लें, पी लें, फिर लें, कोई एहकामात नही, कोई पाबन्दी नही, इनकी भूख-प्यास और खौफ ये सारे हालात वक्ती हैं, इनको हमेशा के लिये नही बनाया गया है।

कानून व कायदा इन्सानो के लिये

दूसरी किस्म जिसे खुदा ने बनाया है वो इन्सान है, इन्सान को खुदा ने हमेशा के लिये बनाया है इसे हमेशा के लिये कामयाबी मिलेगी या हमेशा के लिये नाकामी मिलेगी, कामयाबी और नाकामी के लिये कानून व कायदा सिर्फ इन्सानो के लिये ही बनाया गया है, अब अगर इन्सान जानवरों की तरह जिन्दगी गुजारे कि

जो देखा उसे कर लिया,

जहॉ खाना-पीना देखा उधर चल दिये,

जानवर उड़ता है ये उडने लगे,

जानवर तैरता है ये तैरने लगे,

जानवर कमाता है ये कमाने लगे,

जानवर औरतों बच्चों मे मश्गूल है ये भी उसी मे मश्गूल है, तो इन्सान होने की वजह से अल्लाह रब्बुल इज्जत इसे वक्ती तौर पर दुनियॉ मे तो पालेगें पर इसकी इस जिन्दगी से नाराज हो कर हमेशा के लिये दोजख मे डाल देगें। जानवरो को तो मिटटी बनाकर खत्म कर देगें पर इन्सानो को सख्त अजाब मे डालेगें, जहॉ हर वक्त खून के आसूँ रोना, लहू पीप खाना, अगर चे करोड़ो बरस प्यासे रहें, सख्त से सख्त मुसीबतें मौत वहॉ है ही नही, ये इसलिये कि इन्सान ने अपनी इन्सानियत खत्म करके जानवरों वाली जिन्दगी गुजारी। जानवर पलने के बावजूद हैसियत वाला नही अगर चे उसे एक लाख रूपये का जेवर पहना दो तो गधा-गधा ही रहेगा, हक तआला शानुहू का जानवर के साथ मामला इन्सानों वाला नही है। जो इन्सान जानवर पने वालो जिन्दगी गुजारेगा हक तआला शानुह उस इन्सान से नाराज होगें फिर इसको जिस तरह कुत्ते, सुअर, बिल्ली को खाने को देते हैं उसी तरह इसे भी पालेगें।

ऐसे इन्सान की हक तआला शानुह के यहॉ कोई हैसियत नही, जैसे जानवर पलते है वैसे ही इन्हे पालेगें। एक सैलाब आ गया तो सब डूबकर मरते भी है,आधीं आयी हजारों गिर कर मर गये, जलजलें लाकर ऐसे इन्सानों को मारकर दिखायेगें। जानवरों के दस-बाराह काम हैं खाना, बच्चो को खिलाना, बीबी को खिलाना, बीबी से सोहबत करना, मकान बनाना, बालाखाने-तहखाने बनाना, कपड़ों की सफाइ, एक दूसरे पर गलबा पाने की कोशिश करना अगर आदमी की जिन्दगी इतनी है तो खुदा पाक की कसम ! खुदा के यहॉ इनका शुमार जानवरों मे होगा, चाहे ये वजीर हो या सदर, सौ कारखाने वाला हो या सोने की कोठियों वाला।

अगर जहाजों मे उड़े तो कौऐ की तरह बेहैसियत,
अगर मोटरों मे दौड़े तो कुत्ते की तरह बेहैसियत,
अगर समन्दर मे तैरे तो समुन्दरी सापों की तरह बेहैसियत

अगर आदमी की दायरा ए जिन्दगी सिर्फ इतनी है जितनी जानवरों की है तो फिर ऐसे आदमियों पर अल्लाह पाक की तरफ से कहर व गजब आता है, सब तरफ से आफतों क बाजार गर्म कर दिये जाते हैं, जलजले भी आते है। जब देखो हंसी-मजाक, जब देखो एक दूसरे से बड़ा बनने की कोशिश करना, ऐसे इन्सानो पर जो मुसीबतें भी आवें वो कम है। इन पर दुनियॉ के अन्दर हजार आफते आयेंगीं, खून बहाया जायेगा अगर सख्त किस्म का जानवरपना था तो कब्र मे हजार आफते आयेंगीं। अगर इन्सान

खुदा की खिलाफत पर,
नबियों की नियाबत पर,
फरिश्तों की खिलाफत पर कदम उठाये कि
खिलाने-पिलाने वाला गुरबा परवर,
यतीमों-बेवाओं की मदद करने वाला,
अपनी जान-माल से दूसरों की जिन्दगी बनाने वाला,
उसके हाथों बेमकान वालों को मकान मिल रहे हो,
यतीमों-बेवाओं को मदद मिल रही हो तो ये जिन्दगी अल्लाह के नमूने की जिन्दगी है।
जानवर खाता है खिलाता नही है पर अल्लाह खिलाते हैं खाते नही है।
जानवर मकान बनाता है उसमे रहता है पर अल्लाह मकान बनाते हैं रहते नही दूसरो को रखते है।
जानवर जो कुछ करेगा अपने लिये करेगा पर अल्लाह जो कुछ करेगें दूसरो के लिये करेगें।

अल्लाह ने इस जिन्दगी के लिये इन्सान को बनाया है अगर इसका माल दूसरो की जिन्दगी बनाने पर लगेगा तो ये खुदा की खिलाफत है, माल को अपनी जिन्दगी बनाने पर लगाना ये जानवर पना है। जानवर बनने के लिये कोई मेहनत नही करनी पड़ती बस उसको उसके हाल पर छोड़ दो जानवर बन जायेगा। सुअर, भेड़िया, कुत्ता कि मार-धाड़ करने वाला बनने के लिये कुछ नही करना पड़ता है। बच्चे को जिसका सर फोड़े फोड़ने दो, जो चीज तोड़े तोड़ने दो, बच्चे को अगर उसके हाल पर छोड़ दोगे तो बच्चा बदतरीन हो जायेगा, जानवर बन जायेगा।

अल्लाह के रंग मे रंगने के लिये मुजाहिदे करने पड़ते है, बात-बात के खिलाफ मश्क करनी पड़ेगी। जितना खाने-कमाने का जज्बा है, बीबी-बच्चों के मकान की बढ़ाई के गालिब आने का जज्बा है उन्हे तोड़ना पडेगा।

खिदमत का जज्बा,
खिलाने का जज्बा,

दूसरों का मकान बनाने का जज्बा,

ये सारे जज्बे अपने अन्दर पैदा करना पडेगा, ये है वो असल काम जिसके लिये खुदा ने इन्सान को बनाया है। खुदा ने इन्सान के अन्दर खिलाफत के जौहर रखे है अगर रियाजद और मुजाहिदे कर लेगा तो जानवर पने से निकल कर खुदा की खिलाफत की जिन्दगी पर आ जायेगा अगर जानवर पने की जिन्दगी से न निकला तो मुसीबतों मे आ जायेगा फिर जैसे कुत्ते, भेड़िये की आवाज पर कोई तवज्जोह नही दी जाती है उसी तरह जानवर पने की जिन्दगी गुजारने वाले इन्सानो की दुआओं पर खुदा के यहॉ कोई तवज्जोह नही दी जाती है। जो इन्सान जानवर पने की जिन्दगी से निकल कर खुदा की खिलाफत पर आये उसके लिये वो खुदा से जो मॉगे उसे मिलता है पर जिन्दगी को मोड़ने का फैसला करके उसके लिये मेहनत करनी पड़ती है।

चार अमल फरिश्तों वाले

अल्लाह वाले अमलों की मेहनत के लिये जानवरों वाले काम छोड़ दो, इन्सान अल्लाह वाले अमलों पर तब पड़ता है जब उसका यकीन बदलता है इसलिये कि अमल की बुनियाद यकीन है, जब यकीन चीजों से अमल की तरफ मुड़ेगा तो खिलाफत वाली जिन्दगी बनेगीं। ईमान की दावत देते हुए चार अमल हैं जिनको ज्यादा करने से इन्सान जानवर पने से निकल कर खुदा की खिलाफत वाली जिन्दगी मे आता है।

1-ईमान के हल्के,

2-तालीम के हल्के,

3-अल्लाह का जिक्र,

4-नमाज का एहतमाम,

ये चार अमल फरिश्तों मे है, उनके यहॉ न मुल्क, न माल, न औरतें न बच्चे उनका एक-दूसरे से इन चीजों का कोई तज्किरा नही बस अल्लाह की बड़ाई करना, इल्म की मज्लिसों मे शरीक होना, नमाजों मे शरीक होना और खिदमत गुजारी करना, ये चार काम है जिनके करने से इतआत का माददा पैदा होता है, जो फरिश्तों की सिफत है, जानवरों वाले काम से निकल कर ये चार काम ज्यादा करने हैं। इन कामो को करते हुए अमलों से पलने पर मेहनत करनी है कि

मेहनत से माल नही,

माल से चीजें नही,

चीजों से परवरिश नही बल्कि खुदा अमलों से पालेंगें।

माल से अमल नही बल्कि अमल से माल है,

माल से चीजें नही बल्कि अमल से चीजें है,

चीजों से पलना नही बल्कि अमल से पलना है,

जिनको चीजों से पालता है उन्हे थोड़े दिन पालता है फिर ज्यादा दिन परेशान करता है और जिन्हे अमलों से पालता है उन्हे थोड़े दिन परेशान करता है फिर हमेशा पालता है। इसलिये यकीन बदल लो कि

मैं ईमान की दावत दूॅगा, मेरा खुदा मुझे पालेगा।

मैं अल्लाह का जिक्र करूॅगा, मेरा खुदा मुझे पालेगा।

मैं इल्म हासिल करूॅगा, मेरा खुदा मुझे पालेगा।

मैं बन्दा-गाने खुदा की खिदमत करूॅगा, मेरा खुदा मुझे पालेगा।

पर खिलाफत वाली जिन्दगी तब ही बनेगी जब चीजों से पलने का जहन खत्म हो, एक जगह देखा कि एक आदमी होटल वाले से कह रहा है कि तुम चाहे दो सौ रूपये ले लो पर एक रोटी दे दो लेकिन होटल वाला कह रहा है कि ये रोटी आर्डर की हैं मैं तुम्हें इसमे से एक भी रोटी नही दे सकता, ये मंजर मैंने इन ऑखो से देखा है। तो

माल से चीजें नही,
माल से हिफाजत नही,
माल से इत्मिनान नही,
माल से इज्जत नही,
माल से सुकून नही,
ये सारी चीजें खुदा अमल पर देगें इसकी मेहनत किया करो।

अम्बिया अलैहिमुस्सलाम का काम

ईमान के हल्के और तालीम के हल्के से फारिग होकर इन अमलों से पलने के लिये मेहनत करो, ये अम्बिया अलैहिमुस्सलाम का काम है। इन जानवरपने की जिन्दगी गुजारने वालों को समझाना कि तू जानवरपने से निकल और खुदा की खिलाफत वाली जिन्दगी की तरफ आ तो खुदा कामयाब कर देगा, ये समझाना अम्बिया अलैहिमुस्सलाम का काम है, ये बात समझाने खुदा फरिश्तों को नही भेजता बल्कि फरिश्तों को तो इन जानवरों के घरो मे आग लगाने भेजता कि इनके मकानो में आग लगा आओ, सैलाब से इनकी बस्तियॉ डुबो दो। फरिश्ते तो ईमान की मज्लिस मे, इल्म की मज्लिस मे, जिक्र की मज्लिस मे और नमाजों मे आकर खुद शामिल हो जाते हैं। इसलिये इन जानवरों को समझा कर अल्लाह की तरफ मोड़ने की मेहनत करो, ये अम्बिया अलैहिमुस्सलाम का काम है।

एक जुबान या एक इलाके मे मेहनत करना ये मुहम्मद सल्ल0 का काम नही है बल्कि सारी जुबानो और सारे इलाको मे मेहनत करना, ये नबियों के सरदार मुहम्मद सल्ल0 वाला काम है, अल्लाह वाला काम है।

इनको खिलाना-पिलाना,
इनको कपड़े बनाकर देना,
इनको मकान देना,

जितना इस किस्म के लोग दुनियॉ मे तैयार होगें उतना अल्लाह पाक दुनियॉ वालों को ज्यादा देगें। फरिश्तों का काम ईमान की मज्लिस मे, इल्म की मज्लिस मे, जिक्र की मज्लिस मे आकर बैठना, नमाज पढ़ना अब अगर खुदा की खिलाफत को पहचाना चाहो तो फरिश्तों की नमाज का लिहाज रखो, तुम भी तो कुछ लम्बी-लम्बी नमाज पढ़ो, कुछ तो संभल-संभल कर ठहर-ठहर कर पढ़ो। जब वो अल्लाह के जिक्र मे आयें तो वो हजार बरस गुजार दे, तुम भी तो अल्लाह के जिक्र का कुछ मेयार कायम करो। ईमान की मज्लिस के अन्दर बैठने की कसरत से इन्सानी जवाहरात खुलेंगें फिर ये खुदा की नियाबत की जिन्दगी की तरफ पलटा खायेगा और इन्सानी जिन्दगी बनाने पर आ जायेगा। सबकी जिन्दगी बनाना चाहेगा तो सब उससे मुहब्बत करेंगें, सब चाहेगें की ये हमारी रोटी खा ले, हमारे बैल ले ले। आज मागते हो तो दूसरे लोग इंकार करते है पर कल तुम इंकार करोगे कि जी हमे जरूरत नही है।

अगर थोड़े से झोपड़े पर कनआत कर ली,
थोड़े से कपड़े पर कनआत कर ली,

थोड़े से साज-सामान पर कनआत कर ली,
तो कल को खुदा दिलों को तुम्हारी तरफ पलटेगें, दुनियाँ इस रास्ते पर चलने वालों के सामने गर्दन झुकाने पर मजबूर होगी।

ईमान की मज्लिसो में, जिक्र मे और तालीम मे लगाना

सबसे पहले हुजूर सल्ल0 का नूर बनाया गया फिर नबियों का वजूद तय किया गया फिर बकिया सबकी तरतीब चली, हुजूर सल्ल0 वाले अमलों से इन्सान जानवर वाली जिन्दगी से निकल कर नबियों वाली जिन्दगी पर आये और नबियों की जिन्दगी है अपने-अपने इलाको के इन्सानो पर मेहनत करना कि उन्हे जानवरो वाली मेहनत से निकाल कर ईमान की मज्लिसो में, जिक्र मे और तालीम मे लगाना।
नैनवा मे यूनुस अलै0 ने मेहनत की,
मदयन मे शुऐब अलै0 ने मेहनत की,
मिस्र मे मूसा अलै0 ने मेहनत की,
और लोगों को इन अमलो पर डाला जिन अमलों मे फरिश्ते लगे हुए है कि इन्ही अमलो से इन्सान के अन्दर खुदा की इतआत का माददा पैदा होगा। इसके लिये मेहनत करनी पड़ती है कि माल से जिन्दगी नही बनती, अमल से जिन्दगी बनती है अगर ये माड़ पैदा हो गया तो सारा काम आसान है।

अमल से पैसा मिलता

आज उमूमी जहन ये है कि पैसे पहले बाद मे अमल हालाँकि पहले अमल है फिर पैसा है। आप दुकान बनाकर पहले अमल करेंगें फिर पैसा मिलेगा कि आप दुकान के लिये अपने हाथ-पैर-जुबान-कान-आखँ-दिमाग को पहले इस्तमाल मे लाते हैं फिर पैसे मिलते है। ये बदन के आजा का इस्तेमाल ही तो अमल है पर लोग इसको अमल नही समझते, इनके इस्तेमाल के बाद ही तो पैसे मिलते है अगर ये अमल ठीक न किया तो खुदा आखिर तक सब बिगाड़ कर फेक देगें अगर तुमने किसी के चार पैसे दबा लिये दो पैसे पर साढ़े सात सौ नमाजे चली गयी अगर हासिल करने के अमल खराब हों तो तुम्हारा हज, तुम्हारे रोजे, तुम्हारी नमाजे, तुम्हारे सदका-खैरात मुहँ पर फेककर मारे जायेंगें। तुम कह रहे हो कि बाल-बच्चों को पालना दीन है तो क्या
सुअर खिलाकर बच्चों को पालना दीन है ?
कत्ता खिलाकर बच्चों को पालना दीन है ?
चोरी का माल खिलाकर बच्चों को पालना दीन है ?
झूठ से कमाया हुआ माल खिलाकर बच्चों को पालना दीन है ?
सूदी कारोबार का माल खिलाकर बच्चों को पालना दीन है ?
कम तौल कर, मिलावट करके, धोखा देकर मिलने वाले माल को खिलाकर बच्चों को पालना दीन है ?
इस तरह बाल-बच्चों के पालने को दीन नही कहते बल्कि तुम तो इन्हे दोजख का ईधन बना रहे हो। वकील अपने मुवक्किल को ऐसा झूठ सिखाता है कि हकीकत भी शर्मा जाये, अब इसने झूठा बयान दिलवाया पिछले अमल की खराबी पर पहले मुसीबत आयी थी अब अमल और खराब हो गये तो अब अल्लाह की उससे बड़ी पकड़ आयेगी।

इसलिये अमल का मसला पहले है रोटी और पैसा बाद मे इस्तेमाल होगा, पहले तुम्हारे बदन के आजा इस्तेमाल होगें। ये जहन बनाओ कि माल से जिन्दगी नही बनेगी अमल से जिन्दगी बनेगी, ये जहन बनाने के लिये ईमान की दावत, ईमान का सीखना, इल्म हासिल करना, मसले सीखना, नमाजें पढ़ना ये बड़े-बड़े अमल हैं और ये

इतने बड़े अमल हैं कि इन अमलों पर फ़िऔन की हुकूमत डूबी है, मायदा आसमान से उतरा है, सूरज वापस आया है तो इनसे बड़े कोई अमल नही हैं।

वजारत,

सदारात,

तिजारत,

ये सारे अमल बहुत छोटे हैं, अमल वो बड़े हैं जिन अमलों को अल्लाह ने करने का हुक्म दिया है, अल्लाह पहले खुद दावत दे रहे है इसलिये दावत नमाज से बड़ा अमल है। अल्लाह ने नमाज न पढ़ी, हज न किया पर अल्लाह ने इनकी दावत दी है इसलिये सबसे बड़ा अमल दावत ह। अल्लाह दावत देने पर सबसे ज्यादा पालते हैं अगर यकीन के साथ ये उस अमल को करेगा जिस अमल को करने का अल्लाह ने हुक्म दिया है तो इस अमल पर बहुत कुछ मिलेगा। अब मेहनत करके इस बात का खूब जहन बनाओ कि

हम जितना ईमान की मज्लिसों मे बैठेगें उतना अल्लाह पालेगें,

हम जितना इल्म की मज्लिसों मे बैठेगें उतना अल्लाह पालेगें,

हम जितना जिक्र की मज्लिसों मे बैठेगें उतना अल्लाह पालेगें,

नमाज ही असल है और इसी असल का अमल है

मकान-जायजाद के मसले और बीबी-बच्चों को छोड़कर आओ और इसकी मेहनत करो, सबसे पहली मेहनत नमाज की है, यकीन को नमाज पर ले जाओ कि नमाज पढ कर अल्लाह से मैं जो मागूँगा मेरे अल्लाह वो देगें। मुल्क के, माल के, कमाई के नक्शों से यकीन हटाओ। सुलेमान अलै0 ने अल्लाह से बादशाहत इसी रास्ते से ली है, मैं भी नमाज पढ कर अल्लाह से जो मागूँगा मेरे अल्लाह वो देगें अगर मैंने दुआ मॉग ली कि वजीरे-आजम को मार दे तो वो आज ही मरेगा। इज्तिमाई-इन्फिरादी, खिलवत-जिलवत के सारे मसलों का यकीन नमाज पर लाओ, नमाज ही असल है और इसी असल का अमल है। इसको असल बनाओ, नमाज को असल बनाने के लिये सबसे पहले यकीन बदलो, इल्म हासिल करो और खुदा का ध्यान पैदा करो।

नमाज से परवरिश का जहन नही है

वो नमाज कौन सी है जिस नमाज के अमल मे लाने से तुम्हारे मॉगने पर तुम्हे रोटी मिलेगी ? वो हुजूर सल्ल0 वाली नमाज है कि नमाज के अमल को अन्दर-बाहर से हुजूर सल्ल0 वाला बनाओ, बाहर से हुजूर सल्ल0 वाली शक्ल और अन्दर हुजूर सल्ल0 वाली कैफियत। तेरा नमाज से परवरिश का जहन नही है इसलिये तेरे आजा बिगड़े हुए है, इन्सान नमाज बनाने की उस दिन मेहनत करेगा जिस दिन इसे मालूम हो जायेगा कि नमाज से परवरिश होगी। ऐलान हो रहा है कि सफ मे बिछी हुई दरी नापाक है इस पर नमाज नही होगी पर ये उसी पर नमाज पढ़ रहे हैं, इन सबके जहन मे ये है कि

परवरिश तो जमींदारा से होगी,

परवरिश तो तिजारत से होगी,

परवरिश तो वजारत से होगी,

परवरिश तो सदारत से होगी,

फौजो के हाथों मे जो जंगी नक्शा है उससे कामयाबी होगी, अरे कामयाबी उस जंगी नक्शे से नही होगी बल्कि कामयाबी नमाज से होगी। ये यकीन का मोड़ है, यकीन बनाओ कि मैं नमाज पढ़ कर खुदा से जो मॉगूगा खुदा हमे वो देगें।

ईमान की बात सुनकर ईमान की दावत दूँगा,
इल्म के हल्के मे बैठूँगा,
खुदा का जिक्र करूँगा,
तो मेरी नमाज खुदा से लेने वाली नमाज बनेगीं, माल से पलने का यकीन निकाल दो और ये जहन बना लो कि मेरे सारे काम जब ही होगें जब मेरी नमाज अच्छी होगी। जहन ये बनाओ कि कमाईयों को, घरेलु नक्शों को छोड़कर मैं जितना ईमान की मज्लिसों मे बैठूँगा, जो कुछ बताया ह मिलने को वो किस तरह मिलेगा और इसलिये मिलेगा, इस तरह की तहकीकात मसाएल हैं और जो कुछ मिलेगा वो फजायल है।

खुदा का ध्यान मुल्को के नक्शों को बदलवा देगा

बिन देखे अल्लाह का ध्यान जमाना कि अदालत वाले अल्लाह के हाथ मे हैं, ये खुद नही लिखते अल्लाह जो चाहेंगें वही उनके कलम से लिखा जायेगा। उनका ध्यान देखकर भी न आये और खुदा का ध्यान बिन देखे आ जाये, ये ध्यान इतनी बड़ी कमाई है कि जो तमाम मुल्को के नक्शों को बदलवा देगी। भूख-प्यास या घर का कोई मसला या अगर तू नही कमाता है तो तय कर कि अपने हालात किसी को नही बताना है, बीज डालकर आये हो तो क्या उसी रोज खेती हो जायेगी? अरे होते-होते होगी। फाके से और घर की तकलीफों से मुहब्बत कर लो अगर किसी के सामने हाथ न फैलायेगा, इसी पर अड़ा रहेगा, राजी ब रजा रहेगा, भूख से और तकलीफों से दिल लगायेगा, नबी को फाके मे झॉक, जब झॉकेगा तो आयशा और हफसा नजर आयेगीं। तूने फाके मे अबु बक्र रजि0-उमर रजि0-अली रजि0 को झॉका, हसन-हुसैन को झॉका, जो महबूब से मिलाये वो महबूब हुआ करता है। मुहम्मद सल्ल0 से जो चीज मिलवायेगी वो महबूब है मबगूज नही है, मेरे नबी मुहम्मद सल्ल0 पर भी तो तकलीफें आयीं थी, ये तकलीफें नबियों की झलकियॉ है। अब जब तकलीफें आयीं तो एकदम खुश हो गया, बाग-बाग हो गया अगर तूने लोगों से हाल जाहिर किया तो चार कौड़ियॉ मिलेगी पर खुदा के खजानों के दरवाजे बन्द हो जायेगें अगर हाल को किसी से न बताया तो अल्लाह की तरफ से अब माल आना शुरू होगा तो जैसी जिन्दगी थी अगर अब भी वही रखी कि फाकों से मुहब्बत रखता है, माल को खुदा की बताई हुई जगह पर खर्च करता है तो खुदा के खजाने तेरे होगें, जो हाथ उठाकर मॉगेगा मिल जायेगा।
बस य बात याद रखना कि हक और नाहक की तहकीक किये बगैर अगर तूने नाहक का साथ दिया तो तुम्हारा ये अल्लाह से मिला हुआ ईमान सलब कर लिया जायेगा, नमाजों की जान निकाल ली जायेगी खुदा की कसम तुम्हारा नूर सलब कर लिया जायेगा।

इस बयान की असल किताब बंगले वाली मस्जिद मे मौजूद है

किताब बाद नमाज इशा

21 सफर 1384 हिजरी

माल का रदद करना

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

मेरे भाईयों और दोस्तों ! हमारी इस वक्त की जिन्दगी का खुलासा है माल कमाना और कमाने से जो माल मिले उसे अपना समझना फिर उस हाथ आये हुए माल को फरीजा समझ कर अपने ऊपर और अपने बीबी-बच्चों पर खर्च करना और इसे ही हम असल काम समझ रहे हैं फिर बचे-कुचे पैसे से सदकात, खैरात या और दीनी कामों मे खर्च करने को बाद का काम समझते हैं कि ये बचे-कुचे पैसे से खर्च करने के काम है। हक तआला शानुहू ने मुसलमानों पर से इसी वास्ते आज अपना हाथ खीच लिया है। इसलिये कि आज हम जिस रास्ते पर चल रहे हैं यह रास्ता यहूद-नसारा-मुश्रिकीन व बुतपरस्तों का रास्ता है, हुजूर सल्ल0 ने हमे वो रास्ता सिखलाया था जिस पर खुदा के खजाने हमारे लिये खुल गये थे और मुल्क दर मुल्क हमारे पैरो मे लाकर डाल दिये गये थे।

आज हमारी मेहनतों के रास्ते हुजूर सल्ल0 के बतलाये हुए रास्ते से हट गये हैं, हमने यहूद-नसारा-मुश्रिकीन व बुतपरस्तों का रास्ता अख्तियार कर लिया है कि बस जान लगाकर माल कमाना है और कमाने से जो माल मिले उसे अपना समझना फिर उस माल को अपना समझ कर अपने ऊपर और अपने बीबी-बच्चों पर खर्च करना। हुजूर सल्ल0 ने ख़दा के खजानों से बराये-रास्त लेने के लिये हमे ईमान व अमल पर मेहनत करने का रास्ता बतलाया और सिखलाया था जिसे हमने छोड़ कर खुद अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मार ली है। हुजूर सल्ल0 ने ईमान को सीखने मे सबसे ज्यादा जान का लगाना सिखलाया था कि अल्लाह की बड़ाई को, उसकी कुदरत को, उसके रब होने को, जन्नत, दोजख, हश्र और बरजख के तज्किरों को बोलने और सुनने मे सबसे ज्यादा जान लगाओ, ये सबसे ज्यादा जान लगाने का काम है फिर

अमलों का इल्म हासिल करना जान लगाने का काम है।

खुदा का जिक्र करना जान लगाने का काम है।

खुदा की इबादत करना जान लगाने का काम है।

खिदमते खल्क, अदल, नादार बेवा व मिस्कीन की मदद करना, ये सब जान लगाने के काम है फिर इन सब चीजो को दुनियॉ मे फैलाने मे जान लगाना। इससे वक्त बचे तो घर के कामों मे और माल कमाने मे जान लगाओ, जब जान लगाने की बड़ी चीजे छूट जायें तो छोटी चीजे गलत हो जायेंगीं।

ईमान पर जान नही लगायेगा तो यकीन खराब हो जायेगा,

इल्म पर जान नही लगायेगा तो अमलों के तरीके खराब रहेगें,

जिक्र पर जान नही लगायेगा तो खुदा के सामने पेशी का ध्यान खत्म हो जायेगा,

खुदा ने जहॉ-जहॉ जान लगाने को बताया था जब वहॉ जान न लगायी गयी तो हक तआला शानुहू ने मुसीबतों मे डाल दिया। माल तुम्हारा नही है बल्कि हर दाना, हर पैसा, हर कपड़ा, हर जमीन खुदा की है। इनमे से कोई भी चीज न तुम्हारी है न तुम्हारे बाप की है न तुम्हारे दादा की है और न तुम्हारी हुकूमत की है, से सारा का सारा खुदा का है।

ईमान व अमल की मेहनत को जिन्दा करने मे कितना पैसा लगाना है?

तालीम व तरबियत मे कितना पैसा लगाना है?
मोहताजों-बेबसों मे कितना पैसा लगाना है?
बेवाओ-यतीमों और मिस्कीनो पर कितना पैसा लगाना है?
जो इन पर पैसा न लगा कर अपने ऊपर-अपने बीबी-बच्चों पर और अपनी ख्वाहिशों पर खर्च करेगा तो खुदा-ए-पाक की कसम ! उसका मकान टूटेगा, उसके बीबी-बच्चे तरसेंगें, दुनियॉ मे भी मुसीबतों के पहाड़ टूटेगें और आखिरत मे भी मुसीबतों के पहाड़ टूटेगें। असल मे इस्लाम नाम है जान-माल की तरतीब कायम करने का कि जो तरतीब मुहम्मद सल्ल0 बतला कर गये है उस तरह जान व माल की तरतीब कायम करने को इस्लाम कहते है। कोई शख्य उस वक्त तक दीनदार न कहलायेगा जब तक उसकी जान व माल की तरतीब कायम न हो।
जब जान व माल की तरतीब ईमान और यकीन के साथ, अल्लाह को राजी करने के जज्बे के साथ कायम होगी तो खुदा साइंस और एटम के मुकाबले मे और दुनियॉ के सारे नक्शों के मुकाबले मे तुम्हे कामयाब करके दिखलायेगें। करामात अल्लाह की तरफ से आती है जिन लोगो ने रिवाजी तरीको को कुरबान किया है और अल्लाह और अल्लाह के रसूल के तरीको को जान व माल मे अख्तियार करके अपना दिल बना लिया है उन पर करामतें जाहिर हुई है। हुजूर सल्ल0 ने ईमान सिखलाया, कनआत सिखलायी कि अपना जान व माल दूसरों पर लगाओ अगर दूसरे दे तो उन्हे वापस कर दो। अब मांगने वाले बहुत हो गये, रदद करना तो अब जानते ही नही, ये सहाबा किराम के वो किस्से चल रहे है जिसमे उन्होने माल को रदद किया है।

इस बयान की असल किताब बंगले वाली मस्जिद मे मौजूद है

बाद नमाज फज्र बंगले वाली मस्जिद

22 सफर 1384 हिजरी

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

मेरे भाइयों और दोस्तों ! इन्सान को दुनियॉ मे कोई चीज पूरी नजर नही आती, इसको इतना नजर आता है जितने से इसके मसाएल का तआल्लुक है कि जमीन, आसमान और दुनियॉ मे फैला हुआ सामान और किस्म-किस्म की सूरते ही इसको नजर आती हैं और जिन मसाएल से इसका तआल्लुक नही है वो इसको नजर नही आती जैसे अल्लाह, फरिश्तें, बरजख, जन्नत, दोजख, या खुशी और गम के असरात वगैरह असल मसाएल इसको नजर नही आते। नजर आने वाली चीजों से पचास-पचास बरस इन्तेहाई मुहब्बत करने के बावजूद ये इन्ही के बोच मे नाकामियों और परेशानियों का शिकार होते हुए आखिरत मे पहुँच जाता है। ये इन्सान जब नजर आने वाली चीजों पर मेहनत करता है तो मुसीबतों का शिकार होता है, इसलिये की कि इसने अपनी मेहनत का मैदान गलत रास्ते पर कायम किया है।

इल्म और जहल

अल्लाह तआला ने इन्सानो के दरमियान नबियों को भेजा नबियों ने आकर इन्सानों के जितने मसाएल गायब थे उन्हे बतलाया, इस दुनियॉ का हकीकी निजाम बतलाया, खुदा की जात और उसकी सिफात को बतलाया, खुदा की मशीयत को बतलाया, अमलों मे कामयाबी-नाकामी बतलायी गोया जो कुछ उनमे नुकसान था नबियों के जरिये उनका इन्किशाफ फरमाया। इन्सान इस दुनियॉ को बएतबार इन्सान होने के जो कुछ जाने उसका नाम जिहालत है, पहाड़, बर्फ, भांप या सोने-चॉदी को देखकर जो कुछ जानेगा उसका नाम जिहालत है, अपने मसाएल को जानेगा उसका नाम जिहालत है, इसलिये कि उसकी अपनी निस्बत जिहालत है।

ताजिर जो जानता है बएतबार ताजिर होने के वो जिहालत है,

जमीनदार जो जानता है बएतबार जमीनदार होने के वो जिहालत है,

साइंसदा जो जानता है बएतबार साइंसदा होने के वो जिहालत है,

सियासतदां जो जानता है बएतबार सियासतदां होने क वो जिहालत है और कुरआन पाक मे जो उनके मुकाबले मे बयान किया गया है वो इल्म है, जो रसूलुल्लाह सल्ल0 ने बतलाया है उसका नाम इल्म है अगर इन्सान अपने नुकसान और अपनी जिहालत पर मेहनत करेगें तो ये मेहनत उनको खून के ऑसू रूलायेगी और जो मेहनत इल्म पर होगी उस मेहनत पर दुनियॉ मे भी फले-फूलेगें और आखिरत मे भी जबरदस्त कामयाबी मिलेगी। इसलिये इन्सान खुद जो जानता है उसका नाम जिहालत है और उसी जिहालत पर आज मेहनत हो रही है, दुनियॉ आज इसी वजह से मुसीबतों का शिकार है।

ताजिर कामयाब होना चाहता है तो उसको भी इल्म पर मेहनत की जरूरत है।

साइंस वाला कामयाब होना चाहता है तो उसको भी इल्म पर मेहनत की जरूरत है।

जमीनदार कामयाब होना चाहता है तो उसको भी इल्म पर मेहनत की जरूरत है।

सियासत वाला कामयाब होना चाहता है तो उसको भी इल्म पर मेहनत की जरूरत है।

इल्म हासिल कर लेने का नाम इल्म है, इल्म हासिल कर लेने का नाम मेहनत नही है बल्कि जितने अज्जा से इल्म पर मेहनत है उन सब अज्जा से मेहनत की जायेगी तो उसका नाम इल्म पर मेहनत है। अपनी सेहत-अपने मसाएल के लिये, अपनी कूवत-अपने गलबे के लिये अगर इल्म वालो ने मेहनत न की बल्कि जहल

पर मेहनत की तो उनके मसाएल भी खराब हो जायेगें। अपनी मेहनत से चीजो का मिलना और चीजों से परवरिश का होना, ये जहल वाली लाईन है। हमको जो इल्म दिया गया है वो ये है कि खुदा के देने से चीजे मिलती है, खुदा के बनाने से चीजे बनती है, खुदा के पालने से सब पलते हैं, बनाना भी खुदा की निस्बत है, तक्सीम भी खुदा की निस्बत है।

बीमार को तन्दुरूस्त और तन्दुरूस्त को बीमार करना,
फकीर को गनी और गनी को फकीर करना,
जलील को इज्जत और इज्जत वाले को जलील करना,
जब हम इस बुनियाद को तस्लीम कर ले और इसी बुनियाद को तस्लीम कराया गया है कि यह

لَاإِلٰهَإِلَّااللّٰهُمُحَمَّدًارَسُولُاللّٰه

का यकीन सीखना है कि इस जमीन और आसमान मे जो कुछ होता नजर आ रहा है उसका तआल्लुक वहॉ से नही है जहॉ से तुम्हे दिखायी देता है, जो कुछ तुम्हारे सामने नक्शे फैले हुए है उन नक्शो से बरायेरास्त कुछ नही होता है बल्कि इन नक्शों मे खुदा के फैसले काम कर रहे है। आज जिस चीज से इज्जत मिलती दिख रही है कल को उसी से जिल्लत आते देखोगे, खुदा को जो कुछ करना है उसमे उन्हे अपने गैर की जरूरत नही है, खुदा अपने गैर के बगैर सब कुछ करते है। तुम जो कुछ जमीन से होता हुआ देख रहे हो खुदा अव्वल मे जमीन के बगैर वो सब कुछ करके दिखला चुके है और तुम जो कुछ आसमान से होता हुआ देख रहे हो खुदा अव्वल मे आसमान के बगैर सब कुछ करके दिखला चुके है, इस बुनियाद पर हमे मेहनत दी गयी है। इस मेहनत के लिये अल्लाह का इल्म है।

हमे दुनियॉ के अन्दर की राहत और आराम, बुलन्दी और सुकून इल्म पर मेहनत करने से मिलेगी। तुम जहॉ-जहॉ जो कुछ होता हुआ देख रहे हो वो सब अल्लाह से हो रहा है अल्लाह के अलावा से नही हो रहा है, अल्लाह से मॉगने और लेने के लिये मुहम्मद सल्ल0 तरीके लाये है अगर तम्हारे अमल मुहम्मद सल्ल0 के तरीको पर होगें तो अल्लाह तुमको कामयाब करके दिखलायेगें और अगर तुम्हारे अमल मुहम्मद सल्ल0 के तरीको पर न होगें तो अल्लाह तुमको तिजारत मे, जराआत मे, हुकूमत मे, वजारत मे कि तुम दुनियॉ के जिस शोबे मे होगे उस शोबे मे अल्लाह तुम्हे नाकाम करके दिखलायेगें। तिजारत मे, जराआत मे, हुकूमत मे, वजारत मे, मआशरत मे मामलात मे, घरेलू जिन्दगी मे, हर वक्त तुम्हारे बदन से कामयाबी और नाकामी के अमल सादिर हो रहे है अगर इन अमलों को मेहनत करके मुहम्मद सल्ल0 के तरीके पर बना लिया तो खुदा बन्द कुद्दूस तुमको कामयाब करके दिखायेगें, यहॉ भी इनामात देगें और आखिरत मे जन्नत देगें।

इल्म का रास्ता अमल के जरिये कामयाबी लेने का है,
जिहालत का रास्ता माल के जरिये कामयाबी लेने का है,
इल्म के रास्ते मे सबसे पहले हिदायत के हासिल करने की मेहनत की जाती है इसलिये कि हिदायत के बाद ही अमल ठीक होते हैं फिर उसके बाद कामयाबियॉ मिलती हैं। हिदायत दिल के अन्दर की वो रोशनी है जिस रोशनी मे इन्सानों को चीजों के अन्दर कुछ न दिखायी दे और अमलों से होता दिखायी दे। दोनो रास्तों का मुकाबला है, पहले मेहनत करेगा की हिदायत मिले फिर अमल ठीक करके सेहत लेगा, बागात लेगा, हुकूमतें और मकानात लेगा अगर ये दोनो रास्ते चल रहे हो कि एक तरफ जमीनदार, ताजिर, सिशसतदां माल के रास्ते पर चल रहे हो और दूसरी तरफ मुटठी भर जमआत हिदायत के लिये मेहनत कर रही हो और हिदायत लेकर अगर य अमल ठीक करके दिखाये तो खुदा सारी दुनियॉ के इन्सानो को उनके मुकाबले मे ख्वाह रूस और

अमरीका भी आ जायें उनको झुकाकर दिखायेगें। अमलो के जरिये कामयाबी लेने के लिये सबसे पहले अमल से कामयाबी मिलने का जहन बनाने की जरूरत पड़ती है और जहन बनाने के लिये मेहनत करनी पड़ती है। नमाज चार रकआतों का नाम नही है, ये चार रकआते नमाज का अमल हैं ये अमल मेहनत नही है, नमाज की मेहनत अमल से अलग है जो मेहनत नमाज से पहले हैं वो तीन हैं,

नमाज से पहले की तीन मेहनतें

1- यकीन बनाने की मेहनत, जो यकीन देखकर बनता है उसका नाम शिर्क है, बाग से, जमीन से, हथियार से, दवा से, हुकूमत से ये होगा, इनसे होने का जो यकीन बनेगा उसका नाम शिर्क है,

कुरआन-हदीस सुनकर अल्लाह की जात व सिफात को सुनकर,

फरिश्तो को सुनकर,

जन्नत-दोजख को सुनकर,

अम्बिया-रसूल के वाकियात सुनकर,

नबी करीम सल्ल0 और सहाबा के तज्किरे सुनकर, जो यकीन बनता है इसका नाम ईमान है। इसके लिये सबसे पहली मेहनत ये है कि देखने की मिक्दार को कम किया जाये और सुनने की मिक्दार को ज्यादा किया जाये। मस्जिदो मे बैठकर अल्लाह से होने की बातों को सुने, दुकानों सें उठ-उठकर आकर सुने, ये यकीन बदलने की सबसे पहली मेहनत है। ईमान की बातें करो-ईमान की बातें सुनो, अल्लाहु-अकबर अल्लाह बहुत बड़े है, ये जमीन व आसमान अल्लाह की जात के मुकाबले मे मच्छर के पर के बराबर भी नही हैं। अर्श-फर्श-कुर्सी-सब एक हुक्म से टूटकर गिर जायेगें और एक हुक्म से उस सबसे ज्यादा बनाकर दिखला देंगें। उनका मासिवा उनके मुकाबले मे एक जर्रे की हैसियत नही रखता।

अल्लाह से होने की बातों को सुनने से मुल्क, माल, इमारत, जायजादो से, बागात से, सोने-चॉदी से इन्सान का यकीन हटेगा और अल्लाह की जात का यकीन आयेगा, आज यकीन नही सीखा अमल सीख लिया हालॉकि हुजूर सल्ल0 ने सबसे पहले सहाबा को ईमान सिखलाया, ईमान को सिखला कर अमल का सिलसिला कायम किया। हमने ईमान को न सीखा इसलिये हमे ईमान की फिक्र नही है बस अमल और अमल। अमलो से होने को सुनने से ही अल्लाह की जात से फायदा लेने के लिये मुहम्मद सल्ल0 के अमलों मे यकीन आयेगा। जिस तरह इन्सान के हाथों से बनी हुई शक्लों से कुछ नही होता उसी तरह अल्लाह ने भी जमीन और आसमान मे जो कुछ अपनी पहचान के लिये बनाया हुआ है उससे भी कुछ नही होता, सबसे पहले अम्बिया अलै0 ने मख्लूक का छोटा हाना और अल्लाह की बड़ाई को बयान किया है। अल्लाह इतने बड़े है कि जन्नत मे एक-एक आदमी के लिये इस जमानों-आसमानों से बड़े-बड़े नक्शे बना रखे है, आज हमने इन बातों को सुनना और बोलना छोड़ दिया है और जिन बातों के सुनने और बोलने से हमारा यकीन बिगड रहा है आज उन्ही बातों को सुने और बोलने रिवाज है। अब इसको छोड़ कर अल्लाह से होने की बातों को, अल्लाह की बड़ाई को, अमलो से होने को सुनने का जहन बनाओ, ये यकीन के सही होने की पहली मेहनत है।

नमाज की दूसरी मेहनत

2- नमाज की दूसरी मेहनत है इल्म पर, कुरआन-हदीस सुनकर अमल का इल्म आयेगा, मस्जिद मे बैठकर इसे इतना सुनो कि चीजों के मुकाबले मे अमलों को जान जाओ कि किस अमल पर अल्लाह क्या करते हैं फिर अपनी जिन्दगी कामयाब बनाने के लिये अमलो के तरीके जानो अब अमलों पर मेहनत शुरू करो कि जुबान के वो अमल कौन से है जिन अमलों पर कामयाबी मिलेगी ?

ऑख के वो अमल कौन से है जिन अमलों पर कामयाबी मिलेगी ?
कान के वो अमल कौन से है जिन अमलों पर कामयाबी मिलेगी ?
हाथ के वो अमल कौन से है जिन अमलों पर कामयाबी मिलेगी ?
पैरों के वो अमल कौन से है जिन अमलो पर कामयाबी मिलेगी ?
अब इस इल्म का इतना मुजाकिरा करो कि तुम्हारे दिल व दिमाग पर अमलो का इल्म छा जाये।
वो यह कहते हैं कि फलां चीज से हिफाजत होगी और तुम ये कहो कि फलॉ दुआ से हिफाजत होगी।
वो यह कहें कि कोठी से ये होगा और तुम ये कहो कि सदका आर खैरात से ये होगा।
अब तुम्हारे बोलों का मुकाबला होगा, तकरीरों, जलसों का मुकाबला होगा, दुनियॉ के जाहिल इन्सान चीजों से होना बतायेगें, तुम अमलो से होने को बताओ।

नमाज की तीसरी मेहनत

3-इसी तरह अब नमाज की तीसरी मेहनत है ध्यान पर, एक ध्यान देखकर बनता है और एक ध्यान सुनकर बनता है, तुम्हे देखने के मुकाबले मे सुने हुए का ध्यान तैयार करना पड़ेगा, यहॉ भी सुने हुए और देखे हुए का मुकाबला है। चॉद को देखो तो चॉद का ध्यान न आये बल्कि जिसने चॉद बनाया और जिसके कब्जे मे चॉद है उसका ध्यान आये, किला देखो तो किले का ध्यान न आये बल्कि अल्लाह का ध्यान आये, जुबान से बोलो किला तो ध्यान मे हो अल्लाह। अब नमाज पर यकीन जमाओ कि नमाज के अज्जा पर जो कुछ हजरत मुहम्मद सल्ल0 ने बतलाया है उसका यकीन लाओ। एक सज्दा, एक आयत जमीन व आसमान से ज्यादा कीमती है, नमाज का अमल करके अल्लाह से मांगने पर हर हाजत पूरी होगी। कारोबार का और दुनियॉ के हर नक्शे का यकीन निकालो कि मकानो से हिफाजत नही होती बल्कि नमाज पढ़कर खुदा से मांगने पर हिफाजत होती है, तुम्हारा यकीन अदालतों और दोस्तों पर न हो, यकीन ये बनाओ कि अल्लाह ने हजरत मुहम्मद सल्ल0 के हाथों हमे नमाज दी है तख्ते-सुलेमानी नमाज पर मिला था, हजरत अययूब अलै0 की जिन्दगी बिगड़ने के बाद जो बनी थी वो नमाज पर बनी थी।

अमलो पर मिलने का दरवाजा खुलेंगा

मजदूर की मजदूरी से लेकर वजीरे-आजम के नौकरो तक जितने नक्शें हैं उनसे यकीन हट जाये और ये यकीन लाओ कि हम इल्म हासिल करेगें, हम अल्लाह पर ध्यान जमाकर नमाज पढ़ेगें तो अल्लाह हमारे कर्ज को अदा करायेगें। यकीन को, इल्म को और जिक्र को जब नमाज मे दाखिल करोगे तो अल्लाह अमलो पर देने का दरवाजा खोलेंगें। अल्लाह की बड़ाई के यकीन की और अल्लाह से होने-गैरूल्लाह से न होने के यकीन की मेहनत करते हुए नमाज पढ़ो, अब अगर अमलो से कामयाबी हासिल होने के लिये यकीन की मेहनत की है तो रूकुउ-सज्दा- कायदा-तस्बीह-तिलावत के इन अमलों पर कामयाबी मिलेगी। अल्लाह रब्बुल इज्जत ऐसी यकीन वाली नमाज पढ़कर मांगने से पैसे देकर दिखायेगें, जिक्र के हल्के से मुसीबतें दूर करेगें, कामयाबी का सिलसिला कयामत तक रहेगा, इस मेहनत को अब बाहर ले जाओ।

नमाज के बाद की पहली मेहनत

अब अगर सोचो कि इन अमलों पर अल्लाह पालते हैं तो हम इन अमलो को लेकर हर तरफ फिरेगें बस अपनो हाजत को किसी के सामने जाहिर मत करो तकलीफों से जी लगाओ। रजा व कजा तकलीफें उठाने वालों के सरदार हजरत मुहम्मद सल्ल0 की तकलीफों को याद करो फिर जब तुम्हारे पास पैसा आये तो हजरत मुहम्मद सल्ल0 जैसे पैसे की तकसीम बतलायी है वैसे ही खर्च करो तो अल्लाह रब्बुल इज्जत इन्ही अमलो पर तुम्हे देते

चले जायेगें। कनआत के साथ दुनियॉ की जिन्दगी गुजारो, दूसरे जरूरत मन्द इन्सानो की जरूरतों के पूरा करने मे पैसे खर्च करो। मआशरत मे यकीन आया, इल्म आया, खुदा का ध्यान आया, अब इन्ही तीनों चीजों को कमाई मे जाओ।

नमाज के बाद की दूसरी मेहनत

अब अगर खुदा हिम्मत न दे कि तुम इन अमलों पर ही कनआत करो तो अब कमाई की मेहनत करो। कमाई की मेहनत का मतलब ये है कि यकीन को खीच कर कमाई मे ले जाओ कि मुझे कमाई से नही मिलता है खुदा के देने से मिलता है और हम कमाई मे खुदा के हुक्मों को मान कर खुदा से लेगें नमाज पढ़ेगें तो नमाज के इल्म और नमाज के जिक्र पर खुदा देगें, चाहे हुकूमत करो, चाहे तिजारत करो ये यकीन सीखते हुए जाओ कि दुनियॉ के नक्शों से नही होगा अल्लाह के करने से होगा और अल्लाह से कुछ भी कराने व मॉगने के लिये हमे मुहम्मद सल्ल0 वाले अमलों को अख्तियार करना होगा, खुदा अमलों पर करते हैं नक्शों पर नही करते अगर कमाई के अन्दर इल्म आया तो इस इल्म पर खुदा देगें, इल्म पर कमाई के अमल कर रहे है तो कमाई मे सूद से, धोखे से, झूठ से, मिलावट से बचने पर खुदा देगा। गरीबों को चूसने से खुदा छीनेगा और गरीबों पर लगाने से खुदा देगा। कमाई मे चीजें बढ़ाने का जज्बा न हो बल्कि कमाई वाले इल्म पर अमल हो, जिस तरह मस्जिद मे नमाज के इल्म पर अमल किया उसी तरह कमाई मे कमाई के इल्म पर अमल करो, जिस तरह नमाज मे मुहम्मद सल्ल0 वाले अमलों पर मिलता है उसी तरह कमाई मे मुहम्मद सल्ल0 वाले अमलों पर मिलेगा अगर तुम्हारा यकीन कमाई मे अमलों का न रहा और कमाई के अमल न रहे तो तुम्हारी नमाज और तुम्हारी तब्लीग तुम्हारे मुॅह पर फेककर मार दी जायेगी। सूद, धोखा, झूठ, मिलावट वाली कमाई गलत चलती रही नमाज और तब्लीग भी चलती रही तो तुम्हारी नमाज ही तुम्हे बददुआ देगी।

नमाज के बाद की तीसरी मेहनत

ईमान की दावत पर, ईमान की मज्लिस पर, इल्म के हल्कों के अमलो पर भी मिलता हैं, ये सबसे बड़े नबी हजरत मुहम्मद सल्ल0 वाले खास अमल है, ये सारे अमल खुदा से मिलने के जराय है। इसलिये कमाई मे मुहम्मद सल्ल0 वाले अमलों पर कमाओ, कमाई वाले इल्म पर अमल हो, इस तरह कमाई का जब पाक पैसा तुम्हारे पास आये तो अब घर की मेहनत शुरू होगी कि यकीन को, इल्म को मस्जिद से घर के अन्दर ले जाओ। दुनियॉ मे जैसे मकान बन रहे है ऐसे मकान मे कामयाबी नही, हजरत मुहम्मद सल्ल0 ने जितना गरीबों मे खर्च करने को बतलाया है उतना गरीबों मे खर्च करो, खुदा के रास्ते की नक्लो-हरकत पर खर्च करो अगर कमाई के अमल और खर्च के अमल ठीक हो गये तो खुदा अगर सैलाब लायेगें तो तुम्हारे कारोबार की हिफाजत करेगें, आग लगेगी तो तुम्हारी कमाई की हिफाजत होगी, कमाई के अमल और खर्च के अमल ठीक करने पर पैसे भी बहुत मिलेगें और चीजें भी बहुत मिलेगी।, मकानात भी बहुत मिलेगें, तुमसे लोग मुहब्बत करेगें, तुम्हारी बात मानेगें। जो तुम्हारी बात न मानेगा उन पर अल्लाह का गजब आ जायेगा। मुहम्मद सल्ल0 वाली मआशरत तैयार करो कि न हम बेटे के हैं, न मॉ के है, हम तो अल्लाह के है। अल्लाह की जितनी मख्लूक है सब पर शफकत करो, अपने रिश्तेदारों के अन्दर कोई मुसीबत जदा दिखा तो घबरा गये और अगर दूसरों को मुसीबत जदा देखा तो न घबराये, ऐसा न करो, तुम सिर्फ खानदान के और रिश्तेदारो के साथी नही हो बल्कि तुम ऑख खोलकर देखो जो खुदा के है तुम उनके साथ हो जाओ, तुम जालिम के साथी न बनो। आज मआशरत टूटी हुई है,

मद्रासी-मद्रासी का साथ देता है,

बंगाली-बंगाली का साथ देता है,
काश्मीरी-काश्मीरी का साथ देता है,
मराठी-मराठी का साथ देता है,
यह जिन्दगी कुफ्र और शिर्क की है, जो जुल्म करे, जो नाहक किसी को दबाये तुम उसका साथ न दो ऐसा करने वाला चाहे मुस्लिम हो या गैर मुस्लिम, तुम्हारे घर का हो या बाहर का उसका साथ न दो। जहा मुसलमान हक के ऊपर अमल करेगा उसकी मदद की जायेगी अगर तहज्जुद गुजार मुसलमान नमाजी ने किसी की जमीन दबाई है तो जो मजलूम हो तुम उसकी तरफदारी करो। जालिम व मजलूम देखो जो मजलूम हो तुम उसका साथ दो। इलाकाइयत-कौमियत-वतनियत पर जिन्दगी मत चलाओ, हुक्म के मुताबिक अपने यकीन को मआशरत मे ले जाओ, जब हुक्मों वाली मआशरत होगी तो खुदा कामयाब करेगें।

यकीन, इल्म, ध्यान और एख्लास

ईमान के साथ अमल करने से कमाई मे मिलेगा,
ईमान के साथ इल्म पर अमल करने से घर के खर्च मे मिलेगा,
ईमान के साथ इल्म पर अमल करने से मआशरत मे मिलेगा,
हमने सूद छोड़ दिया लाखों का मामला छोड़ दिया, मस्जिद मे आकर नमाज पढ़कर अल्लाह से कहा कि ऐ अल्लाह मै डेढ़ लाख रूपये तेरे इल्म पर छोड़कर आया हूँ अब तू इससे बहुत ज्यादा अता फरमा।
बदर से पहले तक यकीन, इल्म, ध्यान व एख्लास पर मेहनत है, नमाज पढ़ रहे हैं और रात को रो-रोकर मॉग रहे है, पहले अमल पर दिखलायेगें कि अमल पर क्या-क्या होता है। नमाज पर ही बनी इस्राईल को दरिया से पार करके और फ्रिऔन को डुबोकर दिखलाया है फिर तफसीली एहकामात के लिये तौरेत उतार दी कि चीजो से परवरिश नही हुई खुदा से मॉगने से परवरिश हुई।
आज ईमान के हल्के, इल्म के हल्के और जिक्र पर मेहनत खत्म हो गयी तो नमाज से पलने का यकीन नही रहा। जब अमलों के जरिये कामयाबी का दरवाजा खुलेगा तो जो आज चॉद पर जा रहे हैं वो तुम्हारी जूतियों को चॉद समझकर आयेगें और जो नही आयेगें खुदा उन लोगों को तुम्हारे कदमों मे लाकर डाल देगें। इसलिये कह रहे हैं कि हमारी जितनी मेहनतें आज हो रही है वो नाकामी वाली है। अल्लाह के लिये और अपनी कामयाबी के लिये अपनी मेहनतों के रूख को बदलो, अल्लाह के रास्ते मे निकल-निकल कर अपने यकोन और अमल को सही करो कि
मैं ईमान की दावत दूँगा और दिलवाऊॅगा,
मैं तालीम करूँगा और तालीम मे लोगों को लाऊॅगा,
मैं जिक्र करूँगा और लोगों को जिक्र पर लाऊॅगा,
मैं एख्लाक सीखूँगा और लोगों को एख्लाक्र पर लाऊॅगा तो मेरे अल्लाह मुझे पालेंगें, मेरी मदद फरमॉयेगें। अल्लाह के वास्ते अमीर की मानना, अल्लाह के वास्ते साथियों की झेलना इस पर वजारत और बादशाहत से ज्यादा पलना दिखलायेंगें, मरने के बाद के इनामात तो बहुत ज्यादा।
शैतान आयेगा तब्लीग का काम तो बहुत ऊॅचा और अच्छा है पैसे होते तो खूब करते। बस सारा दूध नापाक हो गया कि अमल को तो तुमसे पसन्द करा दिया और यकीन अमलों से पलने पर जमने न दिया। ये मर्दूद यकीन से रोकेगा कि पैसा होता तो तब्लीग का खूब काम करते हॉलाकि यकीन बदलने के वास्ते ही ये अमल दिये गये हैं। बहुत सी हदीसों मे है कि ईमान और अमल की मेहनत करोगें तो अल्लाह तुम्हे गनी कर देगें और

तन्दुरूस्ती देंगें। पहले यकीन बदलने का काम है, जब यकीन बदल जायेगा तो जमीदारों के अमल भी बदल जायेंगें।

हजरत मुहम्मद सल्ल0 अल्लाह के पास से अमल लेकर आये हैं, नूह अलै0, ईसा अलै0, मूसा अलै0, इब्राहिम अलै0 सब अल्लाह की तरफ बुलाने वाले हैं। अल्लाह ने सबसे पहले नबियों को दावत पर डाला है।

मनी के गन्दे कतरे से बने हुए इन्सानो को, बन्दर और सुअर की तरह नापाक इन्सानों की तरफ बुलाने वालों का खर्च कौन उठाता है ? कि जिसकी तरफ बुला रहा है वो खर्च उठाता है देख लो इलेक्शन मे और तुम लोगो को अल्लाह की तरफ तब

बुलाओगे जब पैसे हों ? कि पैसे हों तभी दावत का काम होगा ? नही,

हम लोगो को अल्लाह की तरफ बुलाते फिरेगें तो अल्लाह हमारा खर्च उठायेगा,

हम अल्लाह वाला इल्म फैलायेगें तो अल्लाह हमारा खर्च उठायेगा,

आज हमने यकीन नही सीखा है इसलिये अल्लाह हमारा खर्च नही उठाते अगर यकीन हो जाये तो अल्लाह हमारा खर्च उठा कर

दिखा दें। खाली गश्त करना और दावत देना मकसद नही है बल्कि अल्लाह की तरफ बुलाना, तालीम करना, अल्लाह के रास्ते मे जाना, इन सबका मकसद गैर का यकीन तोड़ना है कि गैर का यकीन टूटे और गैर से नाउम्मीद होकर अल्लाह से यकीन का जोड़ना है। असल मसला यकीन का है कि सबसे ज्यादा यकीन बिगड़ा पड़ा है।

जब तुम दावत दो, गश्त करो, तालीम करो तो ये यकीन पैदा करने की कोशिश करते रहा करो कि मैं अल्लाह की तरफ लोगों को बुलाऊॅगा तो इस बुलाने पर अल्लाह मुझे पालेंगें। चॉदनी चौक मे दुकानों के नौकर लोगो को बुला-बुलाकर दुकानों मे ले जाते हैं इस बुलाने पर ही बुलाने वालो का खर्च दुकानदार उठाते हैं, हम लोगो को बुला-बुलाकर अल्लाह के घर मे लायेगें तो अल्लाह हमारा खर्च उठायेग ? वो गनी हम फकीरों का खर्च उठायेगा इसलिये कि उसने खुद हमे फकीर करार दिया।

وَاللّٰهُ الْغَنِيُّ وَأَنْتُمُ الْفُقَرَاءُ

इस बयान की असल किताब बंगले वाली मस्जिद मे मौजूद है

बाद नमाज फज्र बंगले वाली मस्जिद

23 सफर 1384 हिजरी

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

ख्वाहिशात का टूटना कामयाबी है

मेरे भाइयों और दोस्तों ! बजाहिर तौर पर नजर आता है कि खुदा ने हमारे अन्दर जो ख्वाहिशात रखी है इन ख्वाहिशात का पूरा होना कामयाबी है लेकिन हकीकत मे इन ख्वाहिशात का टूटना कामयाबी है। एक आदमी भूखा है उसके पास एक बोरी गेहूॅं की है अगर खाने मे लग जायेगा तो बोरी खत्म हो जायेगी और बोरी खत्म हो जाने के बाद फिर उसे भूखा रहना पड़ेगा और अगर उस गेहूॅं को खेती मे डाल दे तो 6 महीने तकलीफ बर्दाशत करेगा ख्वाहिशात कुरबान होगीं लेकिन वक्त मुकर्ररा के बाद उसको ख्वाहिश के पूरा होने का सिलसिला कायम हो जायेगा। इसी तरह एक आदमी के पास हजार रूपये हैं और घरेलू जिन्दगी की मुताअलुका ख्वाहिशात हैं अब अगर वो हजार रूपये ख्वाहिशात मे लगाये तो हजार रूपये खत्म होने के बाद वो भूखा और परेशाान होगा लेकिन हजार रूपये की वो कुरबानी देकर उन रूपये को तिजारत मे लगा दे तो जब तक दुनियॉ मे रहे उसकी ख्वाहिशात उस हजार से ही पूरी होती रहे। उसकी ख्वाहिशात लाखों की सतह तक की पूरी होती रहेगी जब तक उस रूपये से वो मकान न खरीदे, इस हजार रूपये से पचास साल की जिन्दगी बन जायगी।
ख्वाहिश के पूरा होने से ही ख्वाहिशात टूटती हैं और ख्वाहिशात के कुरबान करने से ख्वाहिशात पूरी होती हैं। जिसकी पहले वाली ख्वाहिशात कुरबान होगीं अख्तियारी तौर पर और थोड़ी कुरबान होगी बेअख्तियारी तौर कि इस बुनियाद पर दुकान नही बेचता कि अगर दुकान बेचकर खा लिया तो और भूखा रहना पड़ेगा लोग भी कहेगें कि दुकानदार दिवालिया हो गया। दुनियॉ के तमाम शोबे इसी बुनियाद पर चल रहे हैं, दीन भी इसी बुनियाद पर दिया गया है कि जो इन्सान अपनी ख्वाहिशात के पूरा करने मे जान व माल से लग जायेगा उसकी पहली ख्वाहिशात पूरी होगी, कौन सी पूरी होगी कि डेग भर कर पुलाव पकाया फिर उसको खाया और थोड़ी देर बाद पेट पकड़ कर बैठ जाये, औरत से ख्वाहिश पूरी की तो जो बात पहली रात थी वो दूसरी रात मे नही-जो बात पहले साल थी वो बात दूसरे साल मे नही। अब ख्वाहिश कुरबान कौन सी होगी कि हजारहा बरस खाने का सरमाया मौजूद था पर इसने सेर भर रोटी की लालच मे हजारहा बरस खाने का सरमाया कुरबान कर दिया अगर खेती कर लेता तो ये दिन न देखते।

रब कौन है

इसलिये दुनियॉ मे पहली वाली दिलचस्पी कुर्बान करो तो तुम्हारी बाद वाली बन जायेगी, नबी भी कुरबान करते है थोड़े से वक्त की कुरबानी पर ला महदूद कामयाबी का दरवाजा खुलता है। इब्राहिम अलै0 का किस्सा लो कि जो भी नबी आये खुदा ने उनसे कहा कि ऐ नबी ! इब्राहिम अलै0 का इत्तिबा करो, हजरत मुहम्मद सल्ल0 को भी फरमाया! कि इब्राहिम अलै0 का इत्तिबा करो, हमसे तुमसे भी फरमाते हैं कि हजरत इब्राहिम अलै0 का इत्तिबा करो। ख्वाहिशात की कुरबानी के हजरत इब्राहिम अलै0 के दो तरीके है एक बड़ा-एक छोटा कि ख्वाहिशात के कुरबान करने का एक आला रूख है और एक अदना रूख है। हजरत इब्राहिम अलै0 की एक कुरबानी वो है जो हजरत इस्हाक और हजरत सारा के रास्ते से दी, जिस रास्ते से छोटे अम्बिया और छोटी उम्मते आयीं।

हजरत इब्राहिम अलै0 का बाप वजीर था, जिससे मुल्क को फायदा पहुॅच रहा था, इज्जत, जायजादे, नौकर-चाकर, कूवत और गलबा हासिल था हुकूमत मे उनकी बहुत चलती थी, बाप मरता तो क्या पता इब्राहिम अलै0 वजीर बनते। जागीरदारी के तौर पर बादशाहत और विजारत चलती थी पर अल्लाह जल्ला शानुहू ने इब्राहिम अलै0 को अपनी मारिफत नसीब फरमायी उनको बतलाया पालने वाला कौन है ? और पलने का ये सिलसिला कहॉ से है ?

अम्मा से पूछ रहे हैं कि अम्मा जी हमारा पालने वाला कौन है?

अम्मा ने जवाब दिया ! मैं तेरी रब हूॅ। नहलाना, धुलाना, कपड़े पहनाना कि सब काम तो उमूर का लिहाज करते हुए अम्मी जान

ही करती थी जो कुछ उसके नफे और परवरिश के एतबार से, उसको रब जाने है।

अब इब्राहिम अलै0 ने अम्मा से दूसरा सवाल पूछा कि अम्मा फिर तुम्हारा रब कौन है ?

अम्मा ने जवाब दिया ! तेरा बाप।

इब्राहिम अलै0 ने अम्मा से फिर पूछा कि अम्मी जी अब्बा जी का रब कौन है?

अम्मा ने जवाब दिया ! नमरूद, इसलिये कि नमरूद से पैसे मिलते थे, नमरूद तो एक नाम है जैसे कमाई एक नाम है।

नमरूद का रब कौन ह कि वो तो रब्बुल अरबाब है।

बच्चे को इन जवाबात से तसल्ली न हुई, सोचते रहे-सोचते रहे आसमान के तारे पर निगाह पड़ी तो सोचा शायद ये मेरा रब हो क्यों कि ये ऊॅचाई और बुलन्दी पर है पर कुछ देर बाद तारा हो गया गायब तो कहा कि हम गायब होने वालों से मुहब्बत नही करते। फिर चॉद निकला चॉद को देखकर ये सोचा कि ये तो उससे भी बड़ा है ये होगा मेरा रब, अब सूरज निकल आया तो चॉद गायब तो सूरज के बारे मे ये फैसला किया कि हो न हो यही है मेरा रब कि जो अपने अख्तियार मे हो और मुस्तकिल हुआ करे वो रब है लकिन सूरज भी गायब हो गया तो कहा कि ये तो सारे बेअख्तियार है वो रब हो ही नही सकता जो आये और जाये,

لَمَّا رَأَى الْقَمَرَ بَازِغاً قَالَ هَـذَا رَبِّي فَلَمَّا أَفَلَ قَالَ لَئِن لَّمْ يَهْدِنِي رَبِّي لأكُونَنَّ مِنَ الْقَوْمِ الضَّالِّين

فَلَمَّا رَأَى الشَّمْسَ بَازِغَةً قَالَ هَـذَا رَبِّي هَـذَا أَكْبَرُ فَلَمَّا أَفَلَتْ قَالَ يَا قَوْمِ إِنِّي بَرِيءٌ مِّمَّا تُشْرِكُونَ

إِنِّي وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِي فَطَرَ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضَ حَنِيفاً وَمَا أَنَاْ مِنَ الْمُشْرِكِينَ

(सूर अन्आम- 78)

रब वो है जो इनको सबको ला रहा और ले जा रहा है।

الَّذِينَ يَذْكُرُونَ اللَّهَ قِيَامًا وَقُعُودًا وَعَلَىٰ جُنُوبِهِمْ وَيَتَفَكَّرُونَ فِي خَلْقِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هَٰذَا بَاطِلًا سُبْحَانَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ

(सूर आले इमरान- 191)

इस जमीन और आसमान के नक्शे मे रात-दिन इख्तिलाफ आते है कि

कभी चॉदनी-कभी अंधेरा,

कभी खौफ-कभी अमन,

कभी मौत की हालत-कभी हयात की हालत

छोटे-बड़े नक्शों मे हालात बदलते रहते है, जमीन से लेकर आसमान तक फैले हुए इन नक्शों मे मुख्तलिफ हालात निकलते नजर आते है। रेलें कभी पहुंचती हैं और कभी उसमे से लाशें निकलती है, एक ही नक्शे स कभी खुशी के हालात निकलते है और कभी रोने के हालात आते है। जो इन नक्शो को देखेगा उसको अल्लाह की रूबूबियत की निशानियां नजर आयेगीं, उन लोगो को जो खड़े-बैठे और लेटे भी खुदा का जिक्र करे। खुदा की रूबूबियत और खुदा की कादरियत का मुनसरिफ होने का ध्यान करे तो उन लोगो को जमीन और आसमान से निशानियां मिलेगी। कि बेशक आपने ये सब बेकार पैदा नही किया है बल्कि उसके पीछे आपको बहुत कुछ करना है। जैसे आज छोटे नक्शे टूटते है ऐसे ही एक रोज बड़ा नक्शा भी टूटेगा, उसके बाद अपनी कुदरत से बड़ा नक्शा बनाकर सामने लायेगा।

इब्राहिम अलै0 कह रहे है कि इस आलम के नक्शे के मुकाबले पर हम आप पर ईमान ले आये, निजाम के मुकाबले पर हमने अपना यकीन मोड़ लिया कि आसमान और जमीन के ये छोटे-बड़े नक्शे मे कोई हमारा रब नही है बल्कि रब तो कोई और है ऐ हमारे पालने वाले, हमारे मसअलो का इन्तिजाम करने वाले, हमारे गुनाहों को बख्श दे, हम नेकबख्तों के साथ-अच्छों के साथ वफात दे। हमने तमाम बने हुए से अपना रूख सब कुछ बनाने वाले के तरफ फेर लिया है हमे आखिरत के दिन रूसवा न कीजियेगा,

अमल की दो किस्मे

1.एक पैसे की तरफ मुॅह करके अमल करना,

2.एक खुदा से कामयाबी लेने के लिये सिलसिला-ए-अमल कायम करना।

ये दुनियॉ का माल व सामान महज धोखा है, मरने के बाद जो जन्नत मे पहुॅच गया वो कामयाब हो गया और जो जहन्नम मे पहुॅचा वो नाकाम। इस दुनियॉवी तरतीब के एतबार से हजरत इब्राहिम अलै0 जबरदस्त आदमी थे, खुदा ने उनकी रहबरी फरमायी, एकदम कह उठे कि मैंने अपने मुॅह को बने हुओं से बनाने वाले की तरफ मोड़ लिया। मुॅह मोड़ने के मायने यह है कि हाथ-पैर-जुबान-ऑख-कान और दिल को इसके बनाने वाले की इतआत की तरफ मोड़ लिया,मैं मुश्रिक नही हूॅ कि मैं अपना पलना और हिफाजत-कामयाबी या इज्जत, बने हुओं मे समझॅू नही कि मैं इन सबका मिलना बने हुओं से नही समझता। जब कहा मुॅह मोड़ लिया वहॉ से तो आया असलम यानी गर्दन झुका दी

إِنِّيوَجَّهْتُوَجْهِيَلِلَّذِيفَطَرَالسَّمَاوَاتِوَالْأَرْضَحَنِيفًاوَمَاأَنَامِنَالْمُشْرِكِين

(सूर अन्आम- 79)

मैने पालने वाले के लिये जो सारे जहॉनो का पालने वाला है उसके सामने गर्दन झुका ली तो आया कि अब खड़े हो जाओ और उन सबके यकीन की धज्जिया बिखेरो, हथौड़े मारो जो फौज से और हुकूमत से होने की बात करे। जब तुम रिवाज के खिलाफ बोलोगे तो रिवाज मुकाबले मे आयेगा,

وَاذْكُرْفِيالْكِتَابِإِبْرَاهِيمَإِنَّهُكَانَصِدِّيقًانَبِيًّا

(सूर मरियम- 41)

बाप से पूरी बात कर रहे है कि बाप को खुद दावत दे रहे हैं कि देखो अब्बा तुम्हारे पास इल्म नही है इल्म मेरे पास है, तुम कामयाबी को नही जानते-मसाएल का हल नही जानते, तुम अहमक और तुम्हारा यकीन गलत है। तुम नही जानते कि अमन कैसे कायम होता है, खून की हिफाजत कैसे होती है तो बाप ने कहा! ऐ इब्राहिम चला जा वरना पत्थर मार कर हलाक कर देगें। इब्राहिम अलै0 ने कहा सलाम अलैका मै छोड़कर चला जाऊॅगा

फिर मजा आयेगा इसलिये कि तुम्हारे पास कुछ नही है। कुफ्र वालों से बिगड़ गये घर का मजा गया, अब बादशाह के पास पहुॅच कर उससे कहा कि तेरा यकीन खराब है,

لَمْتَرَ إِلَىالَّذِيحَاجَّإِبْرَاهِيمَفِيرَبِّهِأَنْآتَاهُاللَّهُالْمُلْكَإِذْقَالَإِبْرَاهِيمُرَبِّيَالَّذِييُحْيِيوَيُمِيتُقَالَأَنَاأُحْيِيوَأُمِيتُقَالَإِبْرَاهِيمُفَإِنَّاللَّهَيَأْتِيبِالشَّمْسِمِنَالْمَشْرِقِفَأْتِبِهَامِنَالْمَغْرِبِفَبُهِتَالَّذِيكَفَرَوَاللَّهُلَايَهْدِيالْقَوْمَالظَّالِمِين

(सूर बकरा- 258)

इब्राहिम अलै0 ने कहा! मेरा रब जिन्दा करता है और मौत देता है।

नमरूद ने कहा! ये तो मै भी कर लेता हूँ। फिर उसने अहमक पना किया कि उसने एक फॉसी की सजा पाये हुए कैदी को बुलाया और एक रिहाई पा चुके कैदी को बुलाया फिर रिहाई पा चुके कैदी को कत्ल कर दिया और फॉसी की सजा पाये हुए कैदी को रिहा कर दिया कि देखो मैने कर दिया।

इब्राहिम अलै0 ने कहा! मेरा रब सूरज को पूरब से निकालता है और पश्चिम मे डुबो देता है अगर तुम रब हो तो सूरज को पश्चिम से निकाल कर पूरब मे डुबो दो। खिसयानी बिल्ली खम्भा नोचे पूरे पार्लियामेन्ट मे नमरूद को बेवकूफ साबित करके आ गये। अब कौम से कह रहे कि तुम लोग बेवकूफ हो तुम लोगों की अक्लों को क्या हो गया है कि खुद अपने हाथ से इन शक्लों को बनाते हो फिर कहते हो कि इनसे होगा। अब क्या था कि इस दावत पर सारा मुल्क हजरत इब्राहिम अलै0 के लिये आग बन गया, जिस आग मे आपको फेका गया वो आग तो इस आग का नतीजा है। जब हजरत इब्राहिम अलै0 को आग मे फेका गया तो आपने किसी से न कहा कि मुझे बचाओ बल्कि पहाड़ों का फश्रिता मदद को आया तो उसको भी वापस कर दिया फिर पानी का फरिश्ता आया उसको भी वापस कर दिया कि मैंने तो बस एक ही तरफ मुॅह मोड़ लिया है। खुदा ने भी उनके लिये अपनी कुदरत इस्तेमाल की कि ऐ आग तू इब्राहिम के लिये सलामती वाली बन जा।

हजरत सारा वहॉ गयीं तो देखा कि हजरत इब्राहिम उस आग मे खा रहे हैं-पी रहे हैं और उसी मे टहल रहे हैं तो हजरत इब्राहिम अलै0 से कहा कि मैं भी तुम्हारे पास आ जाऊॅ ?

हजरत इब्राहिम अलै0 ने हजरत सारा से कहा जो मैंने कहा है वही कह कर तुम भी आ जाओ, لَاإِلَـهَإِلَّااللهُ का यही खुलासा ह कि औरों की उम्मीद दिल से निकल जाये।

إِنِّيوَجَّهْتُوَجْهِيَلِلَّذِيفَطَرَالسَّمَاوَاتِوَالْأَرْضَحَنِيفًاوَمَاأَنَامِنَالْمُشْرِكِين

(सूर अन्आम- 79)

अब नमरूद को पता चला तो सोचा कि मामला हाथ से निकले इससे पहले ही हजरत इब्राहिम अलै0 से मुल्क छोड़ने को कह

दिया कि हमारे मुल्क से निकल जाओ। हजरत इब्राहिम अलै0 ने कहा कि बहुत अच्छा वैसे भी तुम्हारे मुल्क मे कुछ नही रखा, हम जहॉ जायेगें अल्लाह हमारी जिन्दगी बनायेगा, जिन्दगी का बनना तुम्हारी हुकूमत पर और बागात पर मौकूफ नही फिर हजरत इब्राहिम अलै0 ने अपनी सारी ख्वाहिशात कुरबान कर दी, बिरादरी का, कौम का व खानदान का मसला कुरबान किया, बीबी को ले जाकर करयतुल खलील मे ठहरे, वहीं अल्लाह ने हजरत हाजरा दे दी।

हजरत इब्राहिम अलै0 को अल्लाह ने हजरत हाजरा से बड़ा होनहार और काबिल बच्चा हजरत इस्माईल अता फरमाया ताकि दोनो आपस मे बच्चे के जरिये दिलचस्पियॉ पूरी करे, अब आया कुरबानी का वक्त कि
ऐ इब्राहिम मक्का की पहाड़ियों के बीच मे बीबी और बच्चे को छोड़कर आओ, जहॉ न खाने को न पीने को।

हजरत इब्राहिम अलै0 बीबी और बच्चे को छोड़कर चले आये।

एक इन्सान के बच्चे के पैदा होने से लेकर उसकी शादी तक, उसकी मॉ के मरने तक हजरत इब्राहिम अलै0 ने सौ फीसद कुरबानी दी। तालीम व तरबियत, बच्चे को प्यार करना, बीबी से सोहबत करना, मकान का, लिबास का, शादी का मसअला सब कुरबान। बीबी की तामीरदारी और उनके जनाजे मे शिरकत का मसअला कुरबान कर दिया, अल्लाह ने उन्हे किसी मसअले के अन्दर हाथ न लगाने दिया। हजरत इब्राहिम अलै0 ने बड़ी खुशी के साथ सब कुरबान कर दिया।

ऐ इब्राहिम तेरी कुरबानी मुकम्मल हुई अब दुनियॉ मे आवाज लगा दे कि जिसको अल्लाह से लेना है वो हजरत इब्राहिम की तरह कुरबानी का मैदान कायम करे अगर अल्लाह पैसे दे तो बैतुल्लाह मे जाकर जो चाहे मॉगो और अगर वहॉ जाने के पैसे न हों तो अपने यहॉ मस्जिद बनाओ और हजरत इब्राहिम अलै0 की तरह दुनियॉ से मुँह मोड़कर अल्लाह से जो चाहे मॉगो।

हमारे नबी हजरत मुहम्मद सल्ल0 का और आपकी उम्मत का वजूद हजरत इब्राहिम अलै0 की इसी कुरबानी पर हुआ।

दूसरी तरफ छोटी कुरबानी कि हजरत सारा और हजरत इस्माईल अलै0 के सारे मसअलों को कुरबान नही किया बल्कि कभी बीबी के साथ रहना और कभी बीबी को छोड़ना, कभी बच्चे को प्यार करना, कभी छोड़ना, दोनो चीजें चल रही हैं। कभी घर का भी इन्तेजाम करते थे कभी बाहर का करते थे, बड़ी कुरबानी कि हजरत हाजरा बहुत बार बीमार हुई पर कभी वहॉ जाकर तसल्ली न दी, वहॉ इस्माईल को हजरत हाजरा के अलावा कोई प्यार करने वाला नही, यहॉ हजरत सारा को तो तसल्ली देने वाले हैं पर हजरत हाजरा के पास कोई नही तो इस बड़ी कुरबानी पर बड़े नबी हजरत मुहम्मद सल्ल0 और इस बड़ी उम्मत का वजूद हुआ है और उस छोटी कुरबानी पर छोटे नबी और छोटी उम्मतें वजूद मे आयीं।

नबियों की दो किस्मे और कुरबानी की भी दे किस्मे

आला कुरबानी-आला उम्मत

अदना कुरबानी-अदना उम्मत

हजरत मुहम्मद सल्ल0 ने बड़ी कुरबानी भी उठाई और छोटी कुरबानी भी उठाई, हजरत इब्राहिम अलै0 ने एक बच्चे पर छुरी चलाई तो इधर अपनी जातों पर छुरी चलाई, बच्चों पर, वतन पर छुरी चलाई, कौम-बिरादरी और बीबीयॉ छुड़वाई, दूसरा तबका वो जिनस चीजें न छुड़वाई बल्कि चीजों मे रह कर कुरबानी दिलवाई, अगर दोनों जहॉ मे कामयाबी चाहते हो तो हजरत मुहम्मद सल्ल0 की दोनो कुरबानियों सामने हैं तय तुम्हे करना है कि तुम किस कुरबानी पर चलते हो हजरत मुहम्मद सल्ल0 ने दोनो कुरबानियों को उठाया, सहाबा ने भी सारे मसअले कुरबान कर दिये तो जो अरसे से दिल मे बैठा था वो निकल गया फिर रोम और फारस वालों के दिलों मे इनका खौफ बैठ गया।

बाप हो या मॉ हो, बहन हो या भाई हो, मक्का वालों से सब कुछ छुड़वाया, दोस्त, बिरादरी, कुन्बा, वतन सब कुछ कुरबान कर दिया। न परवरिश मकसूद है न मकान व कमाई मकसूद है कि हम इन नक्शों से बिल्कुल नही पलते अल्लाह पालते है

لَاإِلٰهَ إِلَّااللّٰهُ सहाबा ने इसके लिये कुरबानी दी। आज तो ये है कि हम चले जाये तो दुकान और बीबी-बच्चों का क्या होगा अगर इस वक्त तुम्हारी इज्जत, तुम्हारो दुकान, तुम्हारा पेट तकाजा करता है तो

उसको दबाओ, उसको तोड़ो और जो कुछ खुदा का हुक्म हो उस पर कदम उठा लो, दोजख के अजाब से इसी से बचोगे और जन्नत की नेअमतें इसी पर मिलेगी, यही है सारे नबियों की जिन्दगी।

एक दफा अन्सार की पंचायत हुई कि अल्लाह का शुक्र है इस्लाम फैल गया है अगर कुछ वक्त हमे मिलता तो जो जमीनें हमारी बंजर हो गयी हैं उन्हे कुछ वक्त मदीने मे रहकर ठीक कर लेते ये अन्सार को ख्याल आया लेकिन घर पर रहते हुए पूरे मसअले कुरबान नही होते। हम आज जल्दबाजी मे यूँ कह दें कि घर पर रहकर हम काम करेगें, सहाबा किराम दस साल तक मुकामी काम के साथ मुसलसल कुरबानी देते रहे, पूरे सफर बगैर खाने के किये, पत्ते खाकर सफर किये, एक-एक खजूर पर सारा-सारा दिन गुजार देते। एक दफा रात को जमाअत रवाना हो रही थी बाज आये और कहने लगे कि या रसूलुल्लाह अभी जावें या सुबह जावें ? रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फरमाया! तुम यह नही चाहते कि रात जन्नत के बागों मे गुजारो। यूँ नकद निकलने की आदत डाली थी। 6 महीने मुकामी काम के साथ मेहनत करने वाले वो अन्सार कुछ वक्त अपने बागों और बंजर जमीनो को ठीक कर लेने की सोचकर आप के पास आये तो

وَأَنْفِقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا تُلْقُوا بِأَيْدِيكُمْ إِلَى التَّهْلُكَةِ وَأَحْسِنُوا إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّالْمُحْسِنِينَ

(सूर बकरा- 195)

अगर 6 महीने के ऐतबार से भी फैसला कर लिया तो तुम हलाक हो जाओगे। कुरबानी देते-देते वहाँ पहुँच जाय कि दुनियाँ की चाहत निकल कर सिर्फ आखिरत ही चाहें तो इसी पर अल्लाह तआला कैसर व किसरा को तुम्हारे कदमों मे लाकर डाल देगें।

हर जमाने का कारून अलग होता है,

हर जमाने का कैसर व किसरा अलग होता है,

इस जमाने का कैसर व किसरा रूस व अमरीका है। आज जब कुरबानी की बात आती है तो यूँ कहते हैं कि जरा इन्तेजाम कर आऊँ यानी ये कि कुरबानी न हो।

मेरी तरफ से आवाज उठेगी ईमान व अमल पर मेहनत करने की,

तेरी दुकान की तरफ से आवाज उठेगी खैर-खबर लेने की,

मेरी तरफ से आवाज उठेगी तकाजे पूरा करने की,

तेरी बीबी-बच्चों की तरफ स आवाज उठेगी खैर-खबर लेने की,

अब मकान, बीबी-बच्चे को छोड़कर हर आवाज पर लब्बैक कहकर कुरबानी की शक्ल बना अगर ये जिन्दगी न बनाई तो जो है वो भी खत्म हो जायेगी और फिर मुसीबतों के पहाड़ टूटेगें। हुजूर सल्ल0 ने फरमाया ! जब मेराज पर गये तो इब्राहिम अलै0 को देखा कि बहुत से बच्चों के बीच मे मौजूद हैं कि एक बच्चे इस्माईल को कुरबान किया था तो अल्लाह तआला को ये अदा इतनी पसंद आयी कि दुनियाँ के सारे बच्चों को उनकी गोद मे डाल दिया। जो कुरबानी नही देते वो तो औलाद के लिये रो रहे है और जिसने एक आलाद कुरबान किया उसे चार हजार बरस से सारे बच्चे मिल रहे है। जो अपने मसअलों को कुरबान करने वाले बन जायें, उन्ही को दुनियाँ मिलती है, इज्जते और राहते मिलती हैं, जन्नत मिलती है और अल्लाह मिलते है और जो मौके पर कुरबानी न दे उनसे जन्नत छिनती है, अल्लाह छिनते हैं, उनके पास सिर्फ अपनी कमाई का ढेर रह जाता है जिसमे कीड़े पड़ते है और फिर मरते फिरते है।

अब जो भाई चाहे कि इब्राहिम अलै0 की, इस्माईल अलै0 की, हाजरा की, मुहम्मद सल्ल0 की, मुहाजिरीन की, अंसार की कुरबानियाँ जिन्दा हों तो खुद को कुरबानियों पर लाओ, अल्लाह पालने वाले हैं। हजरत हाजरा और

हजरत इस्माईल की जिन्दगी पर जरा गौर करो कैसी शानदार परवरिश की है। इसलिये कुरबानियों के साथ ईमान के लिये फिरो, आज इर्तेदाद फैल रहा है बैठना कहॉ से निकाल सकते हो, अबु बक्र रजि0 के जमाने की तरह आज का जमाना है, आज मुसलमानो मे जबरदस्त इर्तेदाद है।

एक इर्तेदाद अमली है कि लोग हुजूर सल्ल0 के अमल को छोडना शुरू करते है।

दूसरा इर्तेदाद एतकादी है कि जिस अमल के बारे मे जो बतलाया था उसका यकीन निकलना शुरू होता है, जहॉ अमल छूटता है उसके हिस्से का यकीन भी छूटता है। चलते-चलते सारे अमल और सारा यकीन निकल जाता है तो जुबान से कहता है कि मैं इलाह हूँ। ये इर्तेदाद एतकादी इर्तेदाद अमली का नतीजा है। आज इन्सानो की जिन्दगी मे इर्तेदादे इन्सानी चल रहा है, चाहे कोई इसकी कोशिश करे या ना करे, इर्तेदाद खुद चल रहा है।

<u>किताब का नाम - बयानात हजरत मौलाना यूसुफ साहब रह0</u>

हजरत मौलाना यूसुफ साहब रह0

तारीख- 27 जनवरी 1962

मखलूक से पलने का अकीदा गैरों का है

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

मोहतरम बुजुर्गों और दोस्तों ! हक जल्ले शनुहु ने आसमान, जमीन, दरियाओं और फिजाओं की जितनी मख्लूकात बनाई हैं उनकी तख्लीक अपने लफज ''कुन'' से करी है किसी मख्लूकात का वजूद अपना जाती नही हे बल्कि उनका वजूद हक तआला का अता किया हुआ है और इतने अर्सा के बाद भी उनकी सिफात उसके कब्जे में हैं चाहे तो आग से ठंडक दे और चाहे तो बिगाड़ दे, आज मोमिन का ये अकीदह है कि मै उन मखलुकात से पलूंगा जो अल्लाह ने पैदा फरमायी हैं तो ये अकीदह गैरों का है हमारा नही, हम ऐसे रब के बंदे नही जो हमारी मेहनत का अज्र देने में किसी का मोहताज हो, हमारा रब कय्यूम और कादिर है।

भाई! ये उम्मत इस लिए भेजी गयी थी कि उन तमाम इंसानों के उस बावले पन और पागलपन को दूर करे, जो इस मिटटी के खिलौनो से अपने कामो का बनना बिगड़ना समझ रहे हैं। भाई! हमने सवारी के और आवाज पहुंचाने के जो जराये बनाये हैं खुदा उनके मोहताज नही हैं बगैर उन आलात के भी अपनी कुदरत से कर सकते हैं बल्कि करते हैं जैसे हजरत उमर रजि0 की आवाज हजरत सारिया रजि0 को पहुंचाई, इसी तरह हजरत इब्राहीम अलै0 की आवाज खुदा ने आलमे अरवाह तक पहुंचाई। जब हजरत इबराहीम अलै0 ने हर किस्म की कुरबानी देकर अपने रब को खुश किया तो खुदा ने कहा जो चाहो मांगो, हजरत इब्राहीम अलै0 जन्नत मांग सकते थे या हजरत सुलेमान अलै0 जैसी हुकूमत भी मांग सकते थे और अल्लाह तआला उससे भी बड़ी दे सकत थे मगर हजरत इब्राहीम अलै0 ने मांगा तो अपनी शाने नुबूवत के मुनासिब मांगा, हजरत इब्राहीम अलै0 ने मांगा तो ये मांगा कि ऐ! अल्लाह! जिस कुरबानी से आप राजी हुए ऐसी कुरबानी देने वाली उम्मत मांगता हूं।

सुबहानअल्लाह कहने पर क्या मिलता है

अल्लाह तआला ने अपनी जात से लेने के तरीके बतलाये हैं जेसे किसान जमीन से, ताजिर दुकान से लेना जानता है, खुदा ने अपनी जात से लेने का तरीका बतलाया है मगर हमारी आंखे उससे अंधी हो गयी। खुदा तआला की कसम! इंसान एक सलतनत से इतना नही ले सकता जितना एक मर्तबा सुबहानल्लाह कहने पर ले सकता है, बशर्ते कि उसकी हकीकत जानता हो और एख्लास से कहता हो। हजरत निजामुददीन अवलिया रह0 का मुकाबला बादशाहों से हुआ मगर लोग उन बादशाहों को तो भूल गये पर हजरत रह0 को आज भी सब जानते हैं, वह आखिरत में तो खुदा तआला से सब कुछ ले लेगें मगर उन्होन दुनिया में भी खुदा तआला से ऐसा लिया कि जिस जगह पर बैठ कर इन्होने लिया था आज उनके नाम पर लोग उस जगह बैठकर खा रहे हैं और बंगले वाली मस्जिद वाले भी अल्लाह से वही कुछ ले रहे हैं। एक देखने वाले ने ख्वाब देखा कि हजरत निजामुददीन रह0 एक शख्स की तरफ बहुत मुतवज्जह हैं तो उस शख्स ने बगैर किसी के बतलाये मौलाना इलियास रह0 को पहचान लिया और उसने हजरत से पूछा कि आप ऐसा कौन सा काम करते हैं कि हजरत

निजामुददीन रह0 आपकी तरफ हमातन मुतवजा हैं? तो फरमाया कि भाई यही कलिमे वाली मेहनत करता हूं। ये सुबहानल्लाह आखिरी जमाने में इस दुनियॉ में अहले ईमान की खुराक होगी जिसके कहने से उनका पेट भरेगा।

इतना तवक्कुल और तकवा जरूरी है जिससे हराम से बच सके

मेरे बुजुर्गों और दोस्तों ! इतना तवक्कुल और तक्वा जरूरी और फर्ज है जिससे हराम से बच सके, इतना तक्वा सीखना जरूरी हे जिसमें आंख कान जबान हराम से बच सके। आज तो हमारी अमली कोताही की वजह से लोग आमाले कुरआन पर मजाक करने लगे हैं क्योकि हम कोताही की वजह से ये साबित न कर सके कि तक्वा और तवक्कुल की भी कोई हकीकत हे ओर उससे भी काम बनते हैं। तिजारत और नौकरी से तो लोग कामों का बनना बताते है मगर आज हमारी बे अमली की वजह से कुरआनी आमाल से कुछ होता हुआ हम नही बता सकते जबकि हमारे मुकाबले में हराम कमाइयों वाले अपनी तिजारत से होना बता सकते है। आज हमारे पास नमाज, रोजा, हज, और तहज्जुद सब कुछ है मगर उनकी हकीकत हमारे पास नही। भाई आज तेरे पास बिल्डिंग न हो दुनिया के नक्शे न हों उस का रोना नही है, लेकिन रोना इस बात का है कि तूने आमाल पर मेहनत करके अपने आपको ऐसा क्यों नही बनाया कि दुनिया वाले तेरे तक्वा और तालीम की वजह से तेरी झोपड़ी में आकर तेरे पैर पकड़ें, भाई!

लोग बावले नही है मगर तेरी कोताह नजरी की वजह से आज ये सब कुछ हो रहा हे।

हम एक बहुत बड़े आलिम और बुजुर्ग की खिदमत में गये तो उन्होने जाते ही कह दिया कि ये तब्लीग का काम तो बहुत पहले हो चुका ओर बहुत से लोगों तक बात कब से पहुंच चुकी है, मै जवाब तो क्या देता अदब की वजह से खामोश रहा मगर उन्होने कह दिया कि लोगों तक ईमान आमाल की बात पहुंची है मगर हिकारत के साथ इस लिए लोग उससे मुतास्सिर नही हुए तो मैने अर्ज कर दिया, हजरत हां अब ईमान आमाल की बात इस तरीके पहुंचाना जरूरी है कि ईमान और आमाल बहुत अजीमुश्शान चीज है तो कहा हां इस एतबार से ही पहुंचाना है बस इस तरीके से बात कुछ बनेगी और बात में जान पड़ेगी, हर तबके के मुसलमानो में ईमान और आमाल की पुख्तगी हो और उसकी वजह से कुछ इस्लामी चीजें जहूर में आयें, मसलन लाखों के फायद से मुसलमान ताजिर ये कह कर हाथ उठा ले कि भाई! हम ये तिजारत नही करेगें क्योकि ये हराम है, खुदा तो गलत काम करने वाले को भी देते हैं चाहे लूट कर पैसे बनाये, चाहे सूद ले, चाहे कुमारबाजी करे, हर एक को खुदा देगा फिर आखिरत में पकड़ेगा मगर ये लेना हकीकत में खुदा से लेना नही हे। एक कौम हम मुसलमानो की हे जिनके हाथ मे तकदीर का कलम दिया कि अपनी बुलन्दी ओर इज्जत लिख, कब्र हश्र ओर जन्नत की नेमतें लिख मगर अब आसमान, जमीन, चांद, तारे ओर ये काबा ऐसे लोगों को तरसते हैं। आज तो हम ''बदनाम कसदगाने नेकोनाम चन्द'' बन गये है आज तो हम घबराते हैं, अब हमसे बरकतों का जहूर कहां? आज कल जब गैर मुमलिक में जमाअतें जाती हैं और तालीम और नमाज के हल्के होते हैं तो उस वक्त बाज तो ये सवाल कर देते हैं कि क्या इस जमाने में भी इस्लाम की बात चल जायेगी? और इस तरीके से चुटकी लेकर मजीद पूछते हैं क्या इस जमाने में भी नुसरतें उतर सकती हैं? ओर बद्र की तरह फरिश्ते उतर सकते हैं? तो उस पर ये ढीला हो जाता है। फिर वह पूछते है क्या अब भी तिजारत और मआमलात में कहीं इस्लाम जारी होता है? अगर कह दो कि हां तो वह कहता हे कि अगर ऐसा कोई माहौल हो तो बतलाओ, हमारी पूरी कौम मुसलमान हो जायेगी मगर भाई हमारे पास कोई हकीकी जवाब नही क्योकि ये सब इस्लाम किताबों में है बेअमली और बदअमली का कलंक हममें से हर एक के दामन और पेशानी पर लगा हुआ है।

हमारे एख्लाक और मुआमलात कैसे हों?

मेरे बुजुर्गों और दोस्तो ! ये रात की नमाज यानी तहज्जुद ये तो हमारी वर्जिश है तुम बहादुर सही, पहलवान सही, मगर मैदान में पिट गये। न गाड़ी की सीट पर हुकूक तलफी से बचते हो बल्कि तुम भी दूसरों की तरह शानदार बिछौना और कपड़ा बिछा कर रोब डाल कर कितनों के हुकूक पामाल करते हो अगर तुम अपने एख्लाक से इस्लाम के एख्लाक जाहिर करते तब तो दूसरों की तवज्जो तुम्हारी तरफ होती मगर आज तो जेसे दूसरे वैसे तुम, फिर तुम्हारी तरफ लोगों की तवज्जो कैसे हो? एक गरीब शख्स पहले दिन बहुत सी बकरियों का दूध पी गया और दूसरे दिन जब इस्लाम लाया तो एक बकरी का दूध भी न पी सका। एक इस्लाम वह था मगर आज इस मुसलमान को किसी होटल में ले जाओ, इन्शाअल्लाह उसका बिल सबसे ज्यादा बनेगा। बादल को हुक्म हो रहा है कि फलां शख्स के बाग को पानी पहुंचाओ वाकिआ मशहूर है, उसको चालीसवां हिस्सा देने की और जकात के मसले देखने की जरूरत नही थी क्योंकि वह अपनी पैदावार का तीसरा हिस्सा लगाता था आज तो चालीसवां हिस्सा भी निकलना दुश्वार है और उससे भी खुद नफे हासिल करने पर नजर रहती है।
आज नेकी करो और भूल जा पर अमल कहां है ? वो तो इमाम जैनुलबदीन रह0 थे कि न लेने वाले को खुद पहुंचा देते, न गुलाम साथ ले जाते कि कोई उस राज से वाकिफ हो, जब उनका इन्तिकाल हुआ तो अस्सी घरों में फाका हुआ, उस वक्त इस्लाम जिन्दा था और जकात की हकीकत जिन्दा थी तो देने वाला खुद देने के लिए जाता था, जिस तरीके से नमाजी नमाज के लिये मस्जिद में जाता है इस तरीके से जकात देने वाला महले जकात में जाता था और एहतराम से देता था, क्योंकि अदाएगी फर्ज का एहसास था। जिस तरीके से मस्जिद का एहतराम था क्योकि वह महले नमाज और महले अदाएगी फराइज है इसी तरह फकीर का भी एहतराम था कि वह महले जकात हे। आज तो जकात अदा करके हुकूकुल्लाह अदा करते हैं मगर तहकीरे मुस्लिम के साथ जकात दी जाती है तो न पड़ोसी की हालत का ख्याल हे और न ''ला यसअलून्नास अलहाफा'' की तलाश है। हमारे एख्लाक तो वह थे कि हमारा गुलाम ऊंट पर सवार हे और आका एहतराम से गुलाम के ऊंट की नकेल पकड़े हुए है। आज तो हमारे एख्लाक बहुत पस्त हो गये इसलिए हम अल्लाह तआला की नुसरतें नही बता सकते, लेकिन जब वह इस्लामी एख्लाक और ताल्लुक वालिदैन था तो उस वक्त मुसलमानों को खबर भी नही होती थी और अल्लाह तआला की गैबी फौज आकर काम तमाम कर देती थी।

अल्लाह तआला के रास्ते में निकलने का बदला

जमीन खुदा तआला से पेट्रोल लेती है सोना लेती है अनाज लेती है मगर जब इंसान मेहनत करके अपने खुदा तआला से लेने
वाला बनता है तो खुदा तआला से इतना लेता है कि कोई मख्लूक भी इतना नही ल सकती। कभी जमीन से तुमने पक्के खाने निकलते नही देखा होगा मगर इंसानों ने पक्के पकाये ओर बेहतरीन खाने अल्लाह तआला से लिए हैं। इंसान खुदा तआला से जमीनो और आसमानों से चौड़ी सोने चोदी से बनी जन्नत ले सकता है जो मोमिन अल्लाह तआला के रास्ते में होता है खुदा तआला उसको मोती का महल अता फरमायेगें जो इतना लम्बा होगा जितनी मुसाफत उसने अल्लाह के रास्ते मे तै की होगी अगर पानी की गहराई दरिया में देखो तो दो मील तीन मील और बड़े-बड़े दरियाओं में छः मील मगर खुदा तआला के जिस बन्दे ने अपने आपको हजारों मील दूर अल्लाह तआला की राह में खपा दिया हक तआला उसको हजारों मील लम्बा मोती का महल अता फरमायेगें। ख्याल करें वह कितना बड़ा होगा अगर उसको दरिया में रख दे तो पहाड़ बन जाये जबकि दरिया अण्डे जेसे मोती तैयार करता हे।

दुनिया में सूरज सबसे ज्यादा रोशन है मगर उसकी रोशनी भी एक दिन खत्म हो जायेगी ओर इस वक्त भी बहुत से जगह सूरज से रोशन नही हैं जबकि जन्नत में जो नूर मुसलमान को मिलेगा वह उससे बहुत ज्यादा होगा और न खत्म होने वाला होगा। एक मर्तबा वफात के बाद हजरत उमर रजि0 का अंगूठा खुल गया ता सारा मदीना रोशन हो गया, लोग घबरा गये कि शायद हुजूर सल्ल0 का अंगूठा हो तो जानने वाले लोगों ने कहा नही, ये हजरत उमर रजि0 का अंगूठा हे हम उस को पहचानते हैं।

भाई ! अगर सही इस्लाम पर अमल हो जाये तो हर मख्लूक की रूहानियत तुम्हारी रूहानियत से शरमा जाये, हजरत अली रजि0 के लिए ये सूरज क्यों न रूके जबकि उन्होने अपना ईमान ऐसा बनाया था ये नूर तो तिजारत जराअत और नौकरी में भी मिल सकता हे लेने वाला चाहिए। आसमान के फरिश्तो को ओर जिन्नात को जो कुछ मिला है वह सब हेच है बशर्ते कि इंसान अपने अन्दर हकीकते ईमान पेदा करने की और गेर का यकीन खत्म करने की मेहनत करे और इंसान जिस मख्लूक के तास्सुर को अपने दिल से निकाल दे तो उसका असर उस पर न होगा।

समन्दर का तास्सुर निकाल देगा तो समन्दर मार न सकेगा,
जहर का तास्सुर निकाल दे तो वह मार न सकेगा,
शेर का तास्सुर निकाल दे तो वह मार न सकेगा,

आज हमारे पास ईमान तो है कि उसकी बरकत से हम मुसलमान है काफिर नहीं मगर वह ईमान जिस पर नुसरतें आये, वह हममें नही है अगर बन्दा हक तआला के सिवा किसी से न डरे तो दुनिया की कोई चीज उस पर असर अन्दाज न होगी। आज उम्मत रोजाना गिर रही है मगर इस मेहनत को जिन्दा करने के लिए तैयार नही है, जब उम्मत इस मेहनत पर उठ खड़ी होगी तो नमाजों में जान पड़ जायेगी। गैरों का तसव्वुर क्यों आयेगा? एक सहाबी रजि0 रात को घर आये औरत बन संवर कर बैठी है मगर वह सहाबी दो रकअत शुरू करते हैं और सुबह की नमाज के वक्त सलाम फेरते हैं उस पर औरत अपना हक सहाबी रजि0 को याद दिलाती है तो वह कहते हैं माफ करना याद ही न रहा। तो खुदा तआला से लेने के लिए नमाज का बनाना जरूरी है और उसके लिए ध्यान और जिक्र जरूरी है उसको हासिल करने के लिए जहां मिलता हो वहां जाओ और ये बहुत जरूरी हे, इसके लिए ऐसे माहौल में जाये जहां से ये हासिल हो। भाई इंसान जिस काम को करना चाहता है उसके लिए मेहनत करता है और जिस काम को टालना चाहता उसके लिए दुआ करने को कहता है अगर तुझको हमारी दुआ पर यकीन है तो अल्लाह के रास्ते में निकल जा हम दुआ करेगें तो बुजुर्गों को भी धोका देता है अगर मेहनत करे तो ये इन्सान फरिश्तों से भी ज्यादा लेने वाला बन सकता है क्योंकि फरिश्ते तो तेरी बिला वजह खिदमत करते हैं उनको उस पर जन्नत नही मिलेगी। आज का माहौल या तो किताबें पढ़ लो, किताबें लिख डालो, मुनाजरह करके मैदान मार लो पर याद रखो अगर हममें तरीकाए मुहम्मदी सल्ल0 न आया तो ये इल्म नबवी सल्ल0 नही है, नमाज भी अगर तरीकाए नबवी सल्ल0 पर न हो तो वह भी अजाब में मुब्तला करेगी।

इल्म इलाही क्या है? आमाल के फजाइल को दिल में लेना और हर हालत और हर मौके पर हालात से बेपरवाह हो कर अम्रे इलाही का इत्तिबा करना और उसके लिए जान ओर माल खपा देना। हजरत अबु खुशैमा का वाकिया मशहूर है आज हम कितने आमाल करते हैं मगर उनके फजाइल हमें मुस्तहजर नही इसलिए मुदाफात के वक्त जज्बात नही उभरते अगर तू ईमान आमाल की मेहनत करेगा तो फरिश्ते और जिन्नात भी सर उठा कर तेरे दरजात को देखेगें और सारी मख्लूक तुझसे मोहब्बत करने लगेगी। तेरी मेहनत के चर्चे जमीन

व आसमान में होगें और फिर कुबूलियत दुनिया में रख दी जायेगी और जिसने सवारी ओर रोटी वगैरह पर मेहनत की उसकी चीजें बहुत महदूद हैं मगर जिसने अवामिर पर मेहनत की उसके लिए हर जगह मकानात सवारियां और खाने हैं। यहां भी, कब्र में भी, हश्र में भी और जन्नत में तो हैं ही। भाई! अपनी जिन्दगी अमल वाली बनाओ

और दूसरों की जिन्दगी भी बनाओ हत्ता कि गैरों की भी जिन्दगो बनाने की मेहनत करो,

लंका की तरफ जजीरे है जिनमें गैर मुस्लिम को जानते ही नहीं, वह अपने मरीज का इलाज दरिया के किनारे ले जाकर पानी डाल कर करते हैं और कहते हैं ''अल्लाहुम्मा शफि मरीजका वसद्दिक़ रसूलका'' तुम जिस कौम पर मेहनत करोगे खुदा तआला उनके बारे म तुम्हारी दुआ कुबूल करेंगें और जिनके हक में तुम दुआ करोगे उनको हिदायत मिल जायेगी। मगर भाई! जिन पर तुम मेहनत करो उनसे कुछ लेने की तवक्के न रखो न खाने की, न पीने की, और तुम जिन पर मेहनत करो उनसे मुतास्सिर न हो तो खुदा तआला औरों को जगायेगे और ऊपर के तबके छकते चले जायेगें। तो भाई! ये कुफ्र का सैलाब और तूफान है थोड़ा-थोड़ा वक्त देने से इस तूफान का रूख न बदलेगा इसके लिए तो जिन्दगी लगाने की जरूरत है अगर पैसे न हों तो कुछ बेच कर करो, कर्ज तो तुम्हारे नबी सल्ल0 ने भी लिया है। इसके लिय नियते करो और इरादे करो। अल्लाह तआला अमल की तौफीक दे ।

<u>किताब का नाम - बयानात हजरत मौलाना यूसुफ साहब रह0</u>

हजरत मोहम्मद यूसुफ साहब रह0

मस्जिदे नबवी

जमातों की रवानगी

तारीख 16 मई 1964 ई0

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

मेरे बुजुर्गों और दोस्तों ! इन्सान के लिए मेहनत करने के मुख्तलिफ रास्ते है, जराअत, हुकूमत, मुलाजमत और तिजारत ये कई रास्ते हैं चीजों के एतबार से इसी तरह आमाल के एतबारं से भी मेहनत करने के कई रास्ते है। आज दुनियॉ मे हर फन सीखा जाता है, दुनियॉ में जो लोग अपना फन सिखाते है वह फन के साथ अपना तरीका भी सिखाते हैं ताकि फन सीखने के बाद उनके तरीके के मुवाफिक रहे मुखालिफ न हो जाये।

पर हम मुसलमान हैं

एक तरफ मेहनत ये हो रही है कि लोग अपने अपने दिमाग के एतबार से चीजों को देखें ओर उन पर मेहनत करें, इस वक्त मुसलमान फुनून के इमाम नही बल्कि दूसरों के मुक्तदी हैं। दूसरों से फुनून सीखना मना नही है मगर मुसलमान उसको समझे और ये ख्याल रखे कि हम मुसलमान हैं, हमारी चौबीस घंटे की जिंदगी तो हजरत मुहम्मद सल्ल0 वाली होनी चाहिए, वह लोग हमारे इमाम नही हैं और उनके तरीके पर हम अपनी जिंदगी नही डालेंगे। आज तो आम हालत ये है कि आदमी जिस से फन सीखता है उसको गोया अपना नबी और अपना इमाम बना लेता है और सर से लेकर पैर तक अपनी जिन्दगी उसके तर्ज पर डाल देता है।

हजरत अबुबक्र रजि0, व उमर रजि0 ने अपने-अपने दौरे खिलाफत में भी अपने तरीक.ए.जिंदगी को नबी वाला बनाया, इसी तरह हजरत अली रजि0 कूफा में सालहा साल रहे जहॉ अमवाल और असबाब बकसरत आये लेकिन हजरत अली रजि0 ने अपना तर्ज.ए.जिंदगी नही बदला। एक गवर्नर को फरमाया! मुझसे मिलकर जाना, जब वो मिलने के लिए आया तो हजरत अली रजि0 ने एक सामान निकला उसको खोल कर उसमें से एक दूसरी चीज निकाली, उसमें से तीसरी चीज निकाली, गर्वनर समझा कि उसमें जवाहरात होगे मगर जब उसको खोला तो उस मे से सत्तू निकला और फरमाया ! मै ये सत्तू मदीना से लाया हूं और इसको इस कदर बांध कर इस वजह से रखता हूं ताकि इसमें कूफा की मिटटी तक न जाये। मै हुकूमत में रह कर भी हुजूर सल्ल0 को जिंदगी पर बाकी रहना चाहता हूं, इसी तरह आपके सामने फालूदह पेश किया गया तो आपने फरमाया तू भी मजेदार, तेरा रंग भी अच्छा, तेरी सूरत भी अच्छी मगर हूजूर सल्ल0 ने तुझको नही खाया इसलिए मै भी तुझको नही खाऊंगा।

तो जिस तरीके से सहाबा किराम रजि0 ने जिंदगी भर आप सल्ल0 के नक्शे कदम को नजरों के सामने रखा, आज हमने ये तरीका उन लोगों के साथ अख्तियार कर रखा है जिनसे सिफली (दुन्यावी) उलूम मिलते हैं, याद रखो उनसे उन उलूम के सीखने में मुजाइका नही मगर आप अपना तर्ज जिंदगी क्यों बदलते हो? हालांकि ये लोग इस्लाह में और जराइम के रोकने में नाकाम हैं। शराब रोकने की किस कदर कोशिश की मगर नाकाम हो गये, ये लोग हैवानियत शैतानियत और बदमाशी फैलानी में माहिर हैं मगर जराइम रोकने में ये नाकाम हैं और आप सल्ल0 हैवानियत व दरिन्दगी वाले जराइम वाले और शराब वाले इलाके और मुआशिरह में तशरीफ लाये ओर आप सल्ल0 की बरकत से तमाम जराइम बन्द हो गये और अगर किसी से चोरी हो गयी या जिना हो

गया तो खूद इकरार करके उसने उसकी सजा भुगती और अगर उस जानी पर किसी ने कोई सख्त लफज कहा तो आप सल्ल0 ने फरमाया कि उसने ऐसो तौबा की है कि अगर तमाम मदीना वालों पर तकसीम की जाये तो तमाम को काफी हो जाये। जब शराब का हुक्म आया तो जिस तरह दरिया बहता है ऐसे सड़कों पर शराब बहने लगी, परदे का हुक्म आया तो सुबह की नमाज में बगैर पर्दे के कोई औरत न आई।

इंसान की कामयाबी का मेयार

इंसान की कामयाबी का मेयार चीजे नही है, आज लोग,

وَيَأْكُلُونَ كَمَا تَأْكُلُ الْأَنْعَامُ وَالنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ

की सी जिंदगी गुजारते हैं लेकिन सुनो! अगर चीजों को मेयार बना कर जिंदगी गुजार दी तो आखिरत में छटटी का दूध याद आ

जायेगा और इस दुनियॉ में भी आखिकार परेशान होगे ये मजमून पूरे कुरआन में फैला हुआ है कि जब बद आमालियां अपनी इन्तिहा को पहुंचेगी तो ये तमाम नक्शे इंसान पर तबाही लायेगें और आदमी उस वक्त समझेगा और यकीन करेगा जब उसके सामने ये तबाही आकर खड़ी होगी।

दूसरा तरीका अम्बिया अलै0 का तरीका है और वह आमाल वाला तरीका है। आमाल वाला तरीका अख्तियार करो खुदा तुम्हें कामयाबी अता फरमायेंगें, अम्बिया अलै0 तो कामयाबी के धोके से निकाल कर हकीकी कामयाबी दिलाने के लिए आये हैं। हकीकी कामयाबी अलग शै है और कामयाबी का धोका अलग चीज है, इसी वास्ते इस दुनिया को दारूल गुरूर फरमाया हजरत मुहम्मद सल्ल0 कामयाबी वाला रास्ता लेकर आये हैं। आज अगर तुम बड़ी-बड़ी हुकूमतों और नक्शों वालों को तन्हाई मे ले जाकर पूछो तो मालूम होगा कि सब परेशान हैं और हजरत मुहम्मद सल्ल0 के जमाने में हर एक ईमान वाला अपनी अपनी जगह मुतमईन था। खुदा चीजों की ज्यादती और कमी पर इज्जत नही देते, खुदा के यहां हवाई जहाज और गधा दोनो बराबर हैं, बस जो जिस हाल में हो अपने आपको आमाले मुहम्मदी सल्ल0 पर ले आये, इसी मे कामयाबी है। देखिये हजरत ईसा अलै0 गधे पर होते हुए महबूबे खुदा है और बहुत से हवाई जहाज पर उड़ने वाले खुदा के नजदीक मबगूस हैं। जो किसी वक्त गधों पर बैठते थे आज इस हालत में हैं कि अपने मुताल्लिक एक लफज बर्दाश्त नही कर सकते इसलिए कि आज वह लाखो करोड़ो की मालियत के मालिक है। खुदा ने जैसे हर इंसान को मनी के कतरे से बनाया, एक शरमगाह से दूसरी शरमागह में पहुंचाया और एक ही तरीके से मॉ के पेट में हर एक की परवरिश की, कुछ दिन मां के रहम मे रहकर हर एक निकला और निकलने के बाद हर एक को उस हाल पर छोड़ दिया है ताकि देखें कि कौन इताअत करता है और कौन नाफरमानी करता है फिर एक मुददत के बाद कब में पहुँचा देगें, फिर अल्लाह तआला दोबारा जिन्दा फरमायेगें और उसका हिसाब किताब लेगें। देखेंगे कि उसमें ईमान है या शिर्क और उसमें एखलाक हैं या बद एखलाकियां, उसके आमाल देखे जायेंगें बस उन चीजों को देखने के बाद कामयाबी और नाकामी का फैसला होगा

दुनियॉ की रोशनी भी वक्ती और चीजें भी वक्ती

इस वक्त वक्ती चीजों के लिए खुदा ने वक्ती रोशनी दी कि इससे तुम नफे हासिल करो और अगर रोशनी न हो तो नफे नही हासिल कर सकते जैसे औरत ने कहा था कि मै कोफता पकाकर ला रही हूँ, वह घर मे गई कोफते पकाये और कहीं रख दिये, घर में कोफते रखे हुए है मगर अन्धेरे में मिल नही रहे हैं। दोनो भूखे करवटें बदलते रहे बहरहाल रोशनी जरूरी है मगर ये चीजें इंसान की असल माया नही है, इंसान की असल

माया ईमान और नेक आमाल हैं। ये तमाम चीजें कायनात की मशीन से आई हैं ओर इंसान की मशीन से आमाल आयेगें और असल इंसान की मशीन है, ये कायनात की मशीन तो इंसान के ताबे है। अम्बिया किराम अलै0 ने बतलाया कि तुम्हारे आमाल का असर कायनात पर होगा अगर तुममे जिना आम हुआ तो खून खराबा होगा और अगर जकात बन्द हुई तो बारिश रूकेगी बहरहाल कायनात की मशीन से चीजें आयेगी और इंसान की मशीन से आमाल आयेगे, इस कायनात की चीजें भी वक्ती ओर उनसे जो सुकून ओर ऐश हासिल होता है वह सूकून और ऐश भी वक्ती, इस कायनात की रोशनी भी वक्ती है और अल्लाह ने उस वक्ती रोशनी पर हमसे मेहनत नही कराई बगैर कुछ मेहनत के चीजें दिखाने के लिए सूरज की रोशनी देदी। चीजों से हासिल होने वाली कामयाबी का वक्त महदूद हे और मौत से ये कामयाबी खत्म हो जायेगी, एक वक्त वह आयेगा कि ये सारा वक्ती निजाम खत्म कर दिया जायेगा।

إِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ

وَإِذَا النُّجُومُ انكَدَرَتْ

وَإِذَا الْجِبَالُ سُيِّرَتْ

सूरज, सितारे,पहाड़, जमीन,आसमान का निजाम दिरहम बरहम कर दिया जायेगा, उसके बाद हिसाब किताब होगा कुफफार मुशरिकीन सारी दुनिया के खजाने देकर अजाब से छुटकारा चाहेंगे लेकिन छुटकारा नही मिलेगा। दुनियाँ में इंसान जो कुछ चीजों से लेता है वह आमाल से से भी लिया जा सकता है। जैसे सुलेमान अलै0 ने नमाज के छूट जाने पर रो रो कर सल्तनत ली और बद्र मे लकड़ियों से तलवार का काम लिया गया, ये तमाम सिर्फ किस्से माजिया नही हैं। बहरहाल रास्ते दो हुए एक चीजों वाला दूसरा आमाल वाला। अब चीजों वाले चीजों के रास्ते से कितनी ही तरक्की कर लें लेकिन अगर आमाल वाले आमाल पर मेहनत करके खुदा को अपने साथ कर लें तो ये आमाल वाला रास्ता यहां भी कामयाबी दिलायेगा ओर आखिरत में भी हमेशा-हमेशा की जिन्दगी में नेमते दिलायेगा। इन चीजों वालों की तरक्की अगर इतनी हो जाये कि सूरज और चांद उनके हाथ में आ जाये तब भी अल्लाह तआला चीजों वालों को आमाल वालों के कदमों में डाल देगें। दुनिया और दुनिया की तमाम चीजें खुदा के मुकाबले में ऐसी भी नही जैसे एक ईंट आसमान व जमीन के मुकाबले में।

भाईयों आमाल अंदर से आयेगें और आमाल का अच्छा होना उस वक्त मालूम होगा जबकि हमारे दिलों में रोशनी पैदा हो जायेगी फिर ये अन्दर की रोशनी बतलायेगी कि औरत को न देखो वर्ना खुदा नाराज होगे, रिश्वत न दो वर्ना खदा नाराज होगा, दौरे अमल में यानी दुनियॉ में ये रोशनी रहेगी मगर जब दौरे अमल खत्म होगा तो ये रोशनी इंसान से बाहर आयेगी ओर कियामत में उस रोशनी की रोशनी में इंसान चलेगा। जितना हम हलाल अख्तियार करेगें और हराम को छोड़ेगें, इसी तरह जितनी नमाज पढ़ेगें उतनी रोशनी बढ़ जायेगी ये रोशनी आहिस्ता-आहिस्ता इतनी बढ़ेगी कि फिर मकरूहात से भी बचेगा और मुस्तहबात पर अमल करेगा।

एक सहाबी का इसराफ से बचने का वाकिया

एक सहाबी की खस्ता हालत देख कर हुजूर सल्ल0 ने एक सहाबी का नाम लिया कि उनसे जाकर कहना वह तुम्हारी मदद करेगें, ये साहब जो उनके घर पर पहूंचे तो देखा कि अपनी औरत को डांट रहे हैं और इतनी बात पर कि चिराग में बत्ती मोटी डाल दी थी। ये वहीं से वापिस चले आये और अपने आने की खबर तक न की और जाकर हुजूर सल्ल0 से भी कुछ न कहा, फिर एक दो रोज में हुजूर सल्ल0 ने खुद पूछ लिया तो

इन्होने पूरा वाकिया बयान किया कि हुजूर सल्ल0 वहां तो ये हालत थी मै किस तरह उनसे अपना हाल कहूं? आप सल्ल0 ने फरमाया! कि तुम जाकर कहो, जब ये गये तो वह साहब बहुत खुश हुए और जो कुछ नकदी वगैरह थी लाकर हाजिर कर दी और फरमाया कि हमारा जो कुछ है वह अल्लाह और रसूल सल्ल0 पर कुरबान होने के लिए है। फिर उन्होने पहली मर्तबा आने का वाकिया बयान किया तो वह साहब कहने लगे कि इसराफ खुदा को नापसंद है इस वजह से मै नाराज हो रहा था। ये है इसराफ से बचना और खुदा के लिए सर्फ करना। ये तकश्शुफ नही तकश्शुफ होता तो गवर्नर कैसे बने मगर गवर्नरी में भी ऐसे आमाल किये कि बड़े से बड़े बज़ुर्ग भी वह आमाल नही कर सकते।

अपना माल अपने ऊपर लगाकर ताईश की जिन्दगी मत गुजारो

हजरत सलमान रजि गवर्नर बनके तशरीफ ले जा रहे हैं रास्ते में हजरत उमर रजि0 छुप गये कि देखें कहीं हुकूमत आने के बाद उनकी जिन्दगी बदल तो नही गयी, हजरत मुहम्मद सल्ल0 वाले तरीके को छोड़ कर दुश्मनों के तरीके को तो नही अपनाया? चुनांचे देखा तो हजरत सलमान रजि0 सबके चले जाने के बाद गधे पर इस तरह बैठे कि दोनो पांव एक तरफ निकाले हुए ह और गोश्त की हडडी निकाल कर खा रहें हैं। हजरत उमर रजि0 की ये कोशिश थी कि मेरे गवर्नर अपना माल अपने ऊपर लगाकर ताईश की जिन्दगी न गुजारें बल्कि कुरआन करीम में जो उसके मवाजे हैं उनमें माल सर्फ करें। जब सलमान रजि0 वापस आये तो फिर उमर रजि0 रास्ते मे देखने के लिए छुप गये तो देखा कि उस जगह उसी हालत में हडडी निकाल कर चूस रहे हैं तो हजरत उमर रजि0 निकल कर हजरत सलमान रजि0 के चिमट गये और कहा ये मेरे भाई है और बहुत खुश हुए।

हजरत उमर रजि0 पहली मर्तबा में मदीना में पक्का मकान देखा तो मस्जिद में टहलते हुए फरमाया कि इस उम्मत में भी फिरऔन पैदा हुए हैं, क्यो कि फिरऔन ने कहा था,

وَقَالَ فِرْعَوْنُ يَا هَامَانُ ابْنِ لِي صَرْحاً لَّعَلِّي أَبْلُغُ الْأَسْبَابَ

हुजूर सल्ल0 के जमाने में एक साहब ने पक्का मकान बनाया था वह साहब जब मजलिस में आये तो आप सल्ल0 ने मुंह फेर लिया, उस पर उन्होने तहकीक की, जब उनको हालत से आगाही हुई तो उस मकान को गिरा दिया मगर आकर हुजूर सल्ल0 को इत्तलाअ नही की, दूसरी मर्तबा आप सल्ल0 जब वहां गये तब मालूम हुआ तो आप सल्ल0 ने ये नही फरमाया कि तुमने इसराफ क्यों किया और न तारीफ की आप सल्ल0 को इस पर नाराजगी थी कि तुम्हारा जौक हमसे क्यों बदल गया। आप सल्ल0 का इरशाद है कि हर बनाओ वबाल है मगर जिससे चारह न हो। बहरहाल चीजें खत्म हो जायेगी लेकिन आमाल वाला नूर खत्म नही होगा बल्कि उसकी रोशनी में इंसान जन्नत तक पहुंचेगा। जब इंसान आमाल में बढ़ता है तो खुदा उससे मोहब्बत करते हैं और जितना ये आमाल में बढ़ता है उस की महबूबियत बढ़ती है फिर जमीन वाले उस से मोहब्बत करते हैं। आज इस आमाल वाली रोशनी को हासिल करने के लिए मेहनत कम हो गयी है और इस्लामी जिन्दगी को मकश्शुफ कहते हैं और उसके उसूल बदलने की फिक्र में पड़े हैं और उसमें बढ़ चढ़कर हिस्सा लेते हैं। खुदा आर खुदा के रसूल सल्ल0 ने इस रोशनी को हासिल करने के लिए मस्जिद वाले आमाल दिये, हमें दुनिया में आमाल में कमी बेशी का अख्तियार नही, उसमें हमे दीनी रोशनी वाले आमाल ही
अख्तियार करने पड़गें।

इंसान में एक तो इंसान की रूह है और एक रूह का बर्तन यानी जिस्म है अगर रूह निकल जाये तो इंसान सड़ने लगे लगता है, अंधा बहरह बन जाता है वगैरह वगैरह, उस तरीके से इंसान की जिंदगी गुजारने के लिए जो असबाब हैं वह तो बर्तन और जिस्म हैं और आमाल उसकी रूह हैं अगर हमारे नक्शें आमाल की रूह से खाली होंगें तो उन असबाब से परेशानियां आयेंगी अगर दुकान में आमाले मुहम्मदी सल्ल0 की रूह न हुई तो ये परेशानी लायेगी, आप सल्ल0 की बताई हुई चौबीस घंटे की जिन्दगी पर आ जाओ और पूरी-पूरी कामयाबी हासिल कर लो और उस अन्दर की रोशनी और नूर को हासिल करने के लिए सब मिलकर कोशिश करो।

اللّٰهُ نُورُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ

वाला नूर हासिल करो उस नूर को हासिल करने के लिए मस्जिद वाले आमाल अख्तियार करें और उन पर खुदा ने जो कुछ देने का वायदह फरमाया है उसके मिलने का यकीन हो कि खुदा हमें इन आमाल ही पर कामयाबी देगें न कि चीजों पर। बहरहाल हम कामयाबी हासिल करने के लिए आमाल पर मेहनत करें और इसमे बुनियादी आमाल मस्जिद वाले आमाल हैं, और इन आमाल में रूह खुदा के ध्यान से आयेगी, ये ध्यान रहेगा कि इस औरत को देखोगे तो खुदा नाराज होंगे और अगर ये ध्यान न रहा तो देखते-देखते छूने में, फिर जिना मे मुबतला हो जायेगा और हराम गिजा को देख कर ये ख्याल आ जाये कि मै हराम का लुक्मा खाऊंगा तो खुदा चालीस दिन की नमाज कुबूल न करेंगे।

खुदा से होने का यकीन

दुनियॉ में हर जगह चीजों और आमाल का मुकाबला होगा अगर झूट बोलूंगा तो पांच हजार मिलेगा और अगर सच बोलूंगा तो खुदा मिलेगा अगर मै ऐसा मकान बना लूं जैसा ये है तो खुदा नाराज होगा और अगर जरूरत भर का बनाकर बाकी पैसा गुर्बा पर लगाऊॅ तो खुदा खुश होगा। मेरे भाईयों ! चीजों का यकीन उनके देखने से आयेगा और उस दिखने से अन्दर के यकीन में खराबी पैदा होगी मसलन दवा ली और उससे शिफा हुई तो दवा से शिफा का यकीन आया अब जो देखा उसको बोला तो उससे यकीन बढ़ा जब दूसरा बोला तो उसको सुना उससे यकीन आया मसलन किसी ने कहा कि अमरीका ने एक मशीन बनाई है जिससे इंसान बनते हैं आपने उस का यकीन किया और उसको बतलाया और उसको बार-बार सोचा तो खुदा की खाल्कियत का यकीन कहां रहा ? तो ये जुबान का बोलना, कान का सुनना, आंख से देखना और अक्ल से सोचना उससे दिल का यकीन खराब हो गया, इस तरह दिलो का यकीन खत्म होता है और आदमी किसी दिन इरतिदाद तक पहुंच जाता है। ''ला इलाहा'' से गैर की तरदीद होती है और इल्लल्लाह से खुदा से होने का इसबात होता है। खुदा बचाने पर आये तो मछली के पेट में हिफजात करे और चाहे तो अनार के दाने से मार दे, अमल से कामों का बनना खुदा ईमान बनने के बाद बतलाते हैं पहले नही बतलाते। ईमान मोतबर होने के लिए गैब पर ईमान जरूरी है मुशाहिदह हो जाये तो अब ईमान कुबूल नही जैसे सूरज मग्रिब से निकल जाये तो उस पर ईमान लाना गैर मुफीद होगा मौत के फरिश्ते देखने से पहले फरिश्तों पर ईमान लाना कुबूल और देखने के बाद ईमान गैर मकबूल होगा। खुदा तआला ने सहाबा किराम रजि0 को पानी पर चलाया मगर ईमान बनने के बाद चलाया उससे पहले नही चलाया, पहले खुदा के गैर से होने की तरदीद ओर खुदा से होने का इसबात कराया। बहरहाल कामयाबी हजरत मुहम्मद सल्ल0 वाले तरीके में है चाहे चीजें न हों और चीजें आमाले मुहम्मदी के बगैर कामयाबी नही दिला सकती।

आंख को सही देखना सिखाओ

अगर इंसान की ऑख गलत देखती है तो उससे जो यकीन आयेगा वह भी गलत होगा इसलिये कि इंसान न इब्तिदा को देखता है न इन्तिहा को, बस बीच को देखता है इसलिए आंख को सही देखना सिखाओ कि पहले ये शक्ल क्या थी ओर आखिर में क्या होगी? मसलन सोचो वजीर पहले क्या था और आखिर में क्या होगा? जब वह अव्वल व आखिर में कुछ नही कर सकता था तो वह दरम्यानी शक्ल में भी कुछ नही कर सकेगा ओर उन तमाम शक्लों से यकीन हटाने के लिए सबसे पहले आपनी जात का यकीन निकालना होगा। आंख के सही देखने की तरबियत नमाज में हो रही है पहले सिज्दह में ये बताया कि वह मिटटी से बना है ओर दूसरे सिज्दह में उसका मिटटी बनना बताया अब इंसान सोचे कि मै पहले मिटटी था और हर वक्त मिटटी बनने का खतरह है अब मुझसे क्या हो सकता है? हर एक का यकीन है कि मिटटी से कुछ नही होता उससे न सर्दी जायेगी न गर्मी दूर होगी मगर मिटटी से कपड़ा बन जाये तो उससे सर्दी गर्मी दूर होगी यानी शक्ल बनने पर उससे नफा ओर नुकसान जाहिर होगा जैसे बुत परस्त पत्थर से होने को नही कहते मगर शक्ल बनने पर उससे होने को कहते हैं, बहरहाल अपनी जिन्दगी बनाओ ओर दूसरों को बताओ कि उन शक्लों से कुछ नही होता। खुदा से होने का यकीन जुबान, कान और आंख के रास्ते से दिल में उतारो और सोते वक्त उसका दिल में तसव्वुर करके उतारो।

मुटठी भर आदमी सहाबा किराम जैसे बन जायें

हजरत मुहम्मद सल्ल0 के साथियों की जिन्दगी बोरियों और गधों पर ऐसी बनी कि कैसर और किसरा के तख्त उनके कदमों में गिरे और आज तुम्हारी ये हालत है कि तुम्हारे पास लाखों बल्कि करोड़ों के मकानात हैं मगर तुम ऐसे हो गये कि रूस ओर अमरीका के खिलाफ दूर से भी कुछ नही बोल सकते, मोअज्जिन अजान की आवाज लगा कर सबका छोटा होना और खुदा का बड़ा होना और खुदा से होना बताता है और मुहम्मद सल्ल0 वाले आमाल से जिन्दगी का बनना और बिगड़ना बताता है और मस्जिद में आकर उसकी मेहनत करने को कहता है, जब मस्जिद में ये यकीन बन जाये तो अब दुकान पर जाकर उसकी तरदीद करो कि दुकान से नही होता खुदा से होता है और खुदा के करने का जाब्ता दुकान नही अमल हैं।

डाक्टर के पास जाकर बतलाओ कि डाक्टर साहब ये तमाम उलूम, इंसानी उलूम हैं और एक इल्म हजरत मुहम्मद सल्ल0 लेकर आयें हैं वह इल्म ही कामयाबी देने वाला है। जब ऐसे यकीन वाला एक तबका पेदा हो जायेगा तो फिर दूसरे उलूम वालों को खुदा उनके सामने झुका देगा और अगर वह नही झुकेंगे तो अल्लाह तआला उनको हलाक करेगें मगर हमारा ये यकीन मस्जिद में भो हो और बाहर भी यही यकीन हो, अब हालात कैसे भी आयें हम इस्तकामत के साथ रहें, यहूद व नसारा गैरों से और चीजों से होने को बतायेगें मगर तुम बतलाओ कि गैरों से और चीजों से नही होता बल्कि खुदा से होता है अगर तुमने भी गैरों और चीजों से से होना बतलाया तो तुम ''तुम'' न रहोगे, ये तुम्हारी मुहम्मदी माहियत नही है बल्कि यहूद व नसारा वाली माहियत है। सहाबा ने ताईश को ताईश से और शिर्क को शिर्क से नही बदला बल्कि,

जुलमत को नूर से,

कालीनों को बोरियों से,

जुल्म को अदल से बदला।

मुटठी भर आदमी सहाबा किराम रजि0 जैसे यकीन वाले बन जायें ओर आमाल से जिन्दगी बनने के यकीन वाले पैदा हो जायें और आप सल्ल0 के तरीके को पसंद करने वाले बन जायें तो चार पैसे की जूती पहनना अच्छा मालूम होगा और उससे तबियत बदलेगी। असल में तुम्हारा बनना असल है अगर तुम उस पर आ गये ओर

तुम ऐसे बन गये तो खुदा तुम्हारी दुआ कुबूल करेगें जैसे अम्बिया अलै0 की दुआ कुबूल की और फिर जाहिर के खिलाफ खुदा तुम्हारी नुसरत करेगें।

शरायत का पाया जाना जरूरी है

अगर हमारे अन्दर नुसरते इलाही के शरायत पैदा हो जायें तो चाहे नक्शे कितने ही खिलाफ हों खुदा जिन्दगी बना देगें और अगर हमारे अन्दर शरायत न हुई तो जाहिर का हमारे मुवाफिक होना भी फायदा नही देगा। जब मुसैलमा कज्जाब ने नुबुवत का दावा किया और बाज कबाईल में इरतिदाद फैला तो उस वक्त भी सहाबा किराम रजि0 नही घबराये और उन्होन शरायत पूरी कर दी तो खुदा ने तमाम जाहिरी नक्शों को बदल दिया और हालात सुधर गये। मेरे भाइयों ! इसके लिए सारे जहां के मुसलमानों का इस में लगना शर्त नही है मगर जो लगे है वह शरायत पूरे करें, अल्लाह जाहिर के खिलाफ दुआओं से काम बनाते हैं, हम मस्जिद में दुआ करते हैं और अपनी जगह हमारा काम बनता है घर में बच्चा अच्छा हो रहा है।

इसलिये निकलने के बाद चार चीजों में ही हमारा वक्त लगे, सबसे ज्यादा दावत में वक्त लगे और उसमें ये बात बोलनी होगी कि खुदा से होता है गैर से नही होता मसलन दुकानदार से बात हा रही है तो उस वक्त हमारा यकीन ये हो कि उसकी दुकान से जिन्दगी नही बनेगी, इस तरीके से उसकी दुकान की तरदीद करते हुए अपनी दुकान की तरदीद मुराद हो कि मेरी जिन्दगी मेरी दुकान से नही बनेगी। जब तुम इस काम से दुनिया की तरतीब बदलने का यकीन पैदा करना चाहते हो तो इतना यकीन तो हो कि मेरी दुकान से कुछ नही होता। इसलिये हमारे सामने हमारे यकीन बदलने का मसला सबसे पहले होना चाहिए, बहरहाल अपना यकीन बदलना असल चीज है। खुसूसी गश्त में आंख की हिफाजत असल है अगर इस पर काबू आ गया तो तमाम चीजों पर काबू आयेगा अगर चीजों को न देखा तो अब न उनकी बात होगी न उनका सुनना होगा।

दुनियॉं के बादशाहों से मरगूब न हो

जब सहाबा किराम रजि0 ईरान पहुंचे तो रूस्तम ने अपने लोगों से मश्विरह किया कि मै उनसे फौजी हालत में मुलाकात करूं या शहाना हालत में मुलाकात करूं? लोगों ने कहा शहाना हालत में मुलाकात करो। उसने हर जगह कालीन बिझवाई और सोने चांदी से दरबान को मुजययन किया, इधर मुसलमानों की तरफ से हजरत रबीअ रजि0 इस हालत में गये कि तेल से सनी हुई मामूली पटटी सर पर बांधी, मामूली सी सवारी ली और चले, इन्होने मरऊब करने के लिए सामान बनाये थे मगर रोब पड़ गया सहाबी रजि0 का। दूसरे दिन हजरत मुगीरह रजि0 गये वह भी इसी शान से गये और उसके पास जाकर बैठ गये, लोगों ने शोर किया तो उस जगह से हट कर नीचे बैठ गये और कहा कि तुम्हारी कालीन से ये जमीन अच्छी। हम तो ये समझते थे कि तुम सब भाइ-भाई होगे और जिस तरीके से हम सब मसावी है वैसे ही तुम होगे।

कैसे-कैसे मजालिम के बाद नक्शे बने होगें

गैर मुमालिक में आंखों पर बहुत काबू रखो अगर आंखों से गलती हो गयी तो जुबान को रोको और अगर कोई भाई बुरा भला कह दे तो तुम सुन लो जवाब मत दो बल्कि कहो भाई हम तो कलिमा सीखने आये हैं हम लड़ना सीखने नही आये है। इसमे बहुत एहतियात करनी चाहिए और जब उन नक्शों पर नजर पड़ जाये तो बाद मे तसव्वुर कर ले कि न मालूम कैसे-कैसे मजालिम के बाद और यतीमों और बेवाओं के हुकूक पर हाथ डाल कर ये नक्शे कायम हुए होगें। तुम्हारा यकीन उस वक्त बनेगा जब दूसरों से बात करो तो अपना यकीन बनाने की नियत से करो अगर यकीन सिर्फ जुबान पर होगा तो चन्द झटकों में खत्म हो जायेगा और अगर यकीन कल्ब में रासिख हो गया तो फिर जहां भी घूमोगे तुम्हारे यकीन मे कुछ फर्क न पड़ेगा अगर सही मायने

में एक कलिमा वाला आदमी पेदा हो जावे तो उससे हजारो ओर लाखो का यकीन बनेगा अगर दूसरों के पास मादियात हैं तो हमारे पास अम्बिया वाली आवाज है जिसके सामने खुदा ने तमाम आवाज को पस्त कर दिया जबकि ये आवाज एख्लास के साथ खुदा को राजी करने के लिए और उसके ध्यान के साथ हो।

दावत के बाद हमारा वक्त तालीम में लगेगा, सुबह में भी तालीम हो और शाम को भी तालीम हो, जब खूब फजायले सुने जायेगें तो उससे इल्म आयेगा। अब ये इल्म या तो नूर के साथ आयेगा या बिला नूर आयेगा और न्र् वाला इल्म उस वक्त मिलेगा जबकि हम ये इल्म इस तरह लें जैसे हुजूर सल्ल0 ने जिब्रील अलै0 से लिया और सहाबा किराम रजि0 ने आप सल्ल0 से लिया यानी पूरे अदब के साथ सुने, वुजु करके सुने, गरदन झुका कर अजमत के साथ सुने, वर्ना भाई बगैर नूर के इल्म हासिल करने से खुद झकोगे और दूसरों को भी झकाओगे जैसे यहूद व नसारा भी उस इल्म को हासिल करते हैं मगर वह दूसरों को गुमराह करते हैं। एक मोहदिदस हदीस बयान कर रहे थे दो आदमी किसी बात पर हंस पड़े तो उन्होने उसी वक्त हदीस पढ़ना बन्द कर दिया और कहा उससे बेहतर ये है कि मैं जिहाद में चला जाऊं, लोगों ने कहा इस उमर में क्या करेगें ? कहा ! अगर कुछ न होगा तो मर तो जाऊंगा।

भाई ! जिस तरीके से अपने महबूब का खत आता है और उसको शौक के साथ सुनते है, इसी तरह शौक के साथ तालीम सुने और पूरी अजमत के साथ सुने जैसे हुज्र सल्ल0 खुद तशरीफ फरमा हों, अल्लाह की बात करते हुए किसी का तास्सुर दिल में न हो वर्ना फिर एक बदमाश और फासिक की बात तुम्हारे दिल में उतर जायेगी।

फिरन वालों में आपस में जोड़ हो

और पूरे ध्यान के साथ जिक्र करें, ये नही कि फकत जिक्र के अल्फाज जुबान पर हा और ध्यान चीजों में हो और इसकी मश्क यहीं से करें और अगर उसकी मश्क करोगे तो यहां भी तुम्हारी बात का असर होगा और कुफ्फार भी उससे मुतास्सिर होंगे, ये तमाम तो जिक्र की सूरते हैं वर्ना असली चीज तो खुदा का ध्यान है, बकिया वक्त नमाज में लगे इस यकीन के साथ कि खुदा से होता है, कामयाबी हजरत मुहम्मद सल्ल0 वाले आमाल से होती है और उन आमाल में से नमाज है और नमाज के तमाम फजायल का इस्तहजार करो और मेहनत के बाद सबकी हिदायत की दुआ करो और दुआ करो कि खुदा हमारे अन्दर की आंख खोल दे, अल्लाह की राह म फिरने वालों में आपस में जोड़ हो अगर जोड़ न होगा तो शख्सी फवाइद तो मिल जायेगें मगर इज्तिमाई फवाइद नही मिलेगें।

निकलने के जमाने में बाहम मश्विरह करके जो तै हो वही करो

हजरत उस्मान रजि0 के जमाने मे हजरत उस्मान रजि0 नही बदले मगर अवाम बदली कि अमीर और बड़ो पर एतराज करना शुरू कर दिया। हजरत उमर रजि0 के जमाने में ये बात न थी, हजरत उमर रजि0 के जमाने में हजरात खालिद रजि0 बरतरफ हो गये, रात की तारीकी में हजरत उमर रजि0 जा रहे थे हजरत अल्कमा रजि0 ये समझे कि खालिद जा रहे तो अल्कमा रजि0 ने कहा कि खालिद ! इन्होने भी आवाज बदल कर खालिद की तरह आवाज निकाली। इन्होने कहा देखो उमर रजि0 ने तुम को माजूल कर दिया तो हजरत उमर रजि0 ने खालिद की आवाज में कहा कि भाई हां मगर अब क्या करें? तो अल्कमा रजि0 ने कहा भाई ! जब हमने खलीफा मान लिया तो अब उनकी इताअत ही करनी चाहिए। इसी वजह से खुदा की नुसरतें उनके साथ थी, इसलिए निकलने के जमाने में बाहम मश्विरह करके जो तै हो वही करो और एहतिमाम से मश्विरह करना

अमीर की जिम्मेदारी होगी और अमीर की इताअत बाकी लोगों की जिम्मेदारी होगी जब तक मासियत का हुक्म न हो।

हजरत खालिद रजि0 के माजूल करने की वजह में एक बात ये भी थी कि हजरत खालिद रजि0 रूकना जानते ही न थे और साथियों के आराम वगैरह का ख्याल कम रखते थे बल्कि हर वक्त काम की तरफ पूरी तवज्जो रहती थी जबकि हजरत अबु उबैदह रजि0 माशाअल्लाह साथियों का ख्याल रखते हुए काम का हुक्म देते मगर साथियों की इतनी रियायत भी न हो कि फिर उठने का नाम ही न लें, मै तो ये समझता हूं कि हजरत खालिद रजि0 का जमाना ही दौड़ भाग का जमाना था उस वक्त उसी की जरूरत थी जब हजरत अबुउबैदह रजि0 की जरूरत थी तो खुदा ने उनको काम में लगाने की सूरत पैदा कर दी,

मुस्तहबात और जोहद की बात ठूंसने से नही आती, तरगीब से आती है

बाज कहते हैं कि अमीर साहब मेरी बात नही मानते उससे तो मालूम हुआ कि आप अमीर को अमीर ही नही मानते। भाई मुसतहबात और मन्दोबात और जोहद की बातें ठूंसने से नही आती बल्कि उनकी तरगीब देते रहो जो भी उस पर जितना अमल करले गनीमत समझो। भाई! इसके लिए तो माहौल और दुआ की जरूरत है जब जज्बा और शौक पैदा हो जायेगा, वह खुद उस पर अमल कर लेगा। तुमने हजरत उमर रजि0 का वाकिया सुना होगा कि एक मर्तबा आपने छुरी मंगवाई और कुर्ता चाकू से कटवाया कि हर तरफ एक जेसा नही ओर फिर उसको पटवाया भी नही हर तरफ धागे निकले हुए थे कभी सर में कभी दाढ़ी में धागे अटक रहे हैं लोग सीने के लिए मांगते तो फरमाते कि मैने हुजूर सल्ल0 को एक मर्तबा इसी तरह पहने हुए देखा इसलिए मै भी वैसे ही पहनूंगा। ,

<u>किताब का नाम - बयानात हजरत मौलाना यूसुफ साहब रह0</u>

हजरत मौलाना यूसुफ साहब रह0

मदीना मुनव्वरह 1964 ई0

आज मुसलमान बदलना नही चाहता

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह जल्ले जलालहु व अम्मा नवालुहु व तआला ने अपने ला महदूद खजाने से इस्तिफादह के लिए अहकामात दिये हैं और वह इन्सान की चौबीस घंटे की जिन्दगी में फैले हुए हैं। उसकी जात के एतबार से, शादी, गर्मी के एतबार से हर वक्त के एतबार से अहकाम दिये हैं और खुदा ने बराहे रास्त अहकाम कुरआन मजीद में दिये, उनका उसवह ओर नमूना मुहम्मद सल्ल0 की जात को बनाया कि उस हुक्म को उन्होने जिस तरह अदा किया उस तरह अदा करो, अगर इन्सान अल्लाह के हुक्म को अपने तरीके से अदा करेगा तो वह मोतबर नही होगा आर अगर हुजूर सल्ल0 के तरीके पर अदा करेगा तो वह मकबूल होगा, अगरचे उसके लिए थोड़ी मेहनत करनी पड़ेगी और अगर अल्लाह तआला का एक हुक्म भी उसकी सही नवईयत पर मरने तक करना आ गया तो इन्सान कामयाब है।

कुरआन करीम में अहकाम दिये गये मगर हर हुक्म की मुकम्मल तरतीब कुरआन मजीद में नही बताई गयी कि वजू में आजा को कहां तक धोया जाये? अल्लाह ने हुक्म दिया कि जिक्र करो या सिजदह करो या रूको करो पर उसकी तरतीब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने बताई कि पहले खड़े रहो फिर ये पढ़ो फिर रूकू इस तरह करो, इसमें ये पढ़ो वगैरह। अल्लाह वाला हुक्म पूरा हो ही नही सकता जब तक कि रसूलुल्लाह सल्ल0 का तरीका न अपनाया जाये और हमारा दुनिया में इसके अलावा कोई काम नही है न बच्चे पालना, न दुकान करना बल्कि हमारा काम सिर्फ अल्लाह के हुक्मों को पूरा करना है। जो अहकाम को मकसद बनायेगा वह तो अहकाम को पूरा करेगा और जो इन्सान अपनी ख्वाहिशात को मकसद बनायेगा वह अहकाम को पूरा नही कर सकता। ये काम आदमी उस वक्त कर सकता है जब अहकाम को पूरा करना ही मकसदे जिन्दगी बनाले। हमें तो हर रोज नमाज पढ़ कर उसको हुजूर सल्ल0 के तरीके से मिलाना है ओर उसमें जो कमी हो उसको दूर करके उसमें तरक्की करना हैं अगर हम पूरी जिन्दगी खाते रहें तो ये खाना इबादत नही होगा जब तक कि हुजूर सल्ल0 के तरीके पर न खायें, इसी तरह से कमाई, निकाह जब तक हुजूर सल्ल0 के तरीके पर न आ जाये वह अल्लाह का चाहा हुआ निकाह और कमाई न होगा। अहकाम के पूरा करते वक्त शैतान हर हुक्म पर डरायेगा,

الشَّيْطَانُ يَعِدُكُمُ الْفَقْرَ

शैतान तुम्हे जकात देते वक्त फक्र से डरायेगा, जिस नमाज में खुशु व खुजू न हो, गिरया व जारी न हो और सही नियत न हो तो शैतान ऐसी नमाज से नही रोकता और उसको उसकी फिक्र है क्योंकि वह जानता है कि वह नमाज जिसमें ये बातें न हों खुदा उसको खुद रद कर देगा, मुझे मेहनत की क्या जरूरत है और जिस जकात में एख्लास और हलाल कमाई नही उससे मै क्यों रोकूं, खुद अल्लाह तआला उसे ररद कर देगा और

الَّذِينَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ يُحْسِنُونَ صُنْعاً

सूर कहफ 104

वाला मामला होगा यानी वह लोग जिनकी कोशिश दुनियाँ की जिन्दगी में अकरत गई और वह समझते रहे कि वह खूब काम कर रहें हैं।शैतान तो उस नमाज के पीछे पड़ेगा जिसमें हुजूर सल्ल0 का तरीका अमल में लाया जावे और शैतान आयेगा जैसे आदम अलै0 के पास आया था वह डरायेगा कि अगर तुमने अल्लाह का हुक्म पूरा किया तो तुम्हारा ऐश खत्म होगा तुम्हारे हाथ से जन्नत जाती रहेगी वगैरह, तो उसका तोड़ ये है कि इन्सान अल्लाह तआला के हुक्म पूरा करने को अपना मौजू बनाले जैसे इब्तिदाये इस्लाम में कोई इस्लाम लाता था तो कहता था

''या रसूलुल्लाह इन्नी उबियुका अल्लइस्लाम''

मै इस्लाम पर आपसे बैयत करता हूं यानी मै इस्लाम के हुक्मो पर बिक गया, अब न जान मेरी और न माल मेरा, खुदा और रसूल जैसा चाहेंगें ये दोनो इस्तेमाल होंगे और ये इरादा कर लेना है कि हम अल्लाह तआला के हुक्म की तामील में किसी चीज की परवाह नही करेंगें। तकालीफ और मसाईब मांगने का तो हुक्म नही मगर आ जाये तो आदमी बरदाश्त कर ले।

आखिरत में इन्सान उसके साथ होगा जिसके साथ मोहब्बत करता है

एक सहाबी हुजूर सल्ल0 की खिदमत में आये और अर्ज किया या रसुलुल्लाह जब मै रात को घर पर सोता हूं और आंख खुल जाती है तो जब तक आप सल्ल0 को न देख लूं या तहज्जुद में आप सल्ल0 की किरात की आवाज को न सुन लूं तब तक चैन नही आता और दूसरी मर्तबा आंख नही लगती। इसी तरह जब आपका ख्याल आ जाता है तो जब तक दुकान छोड़कर आप सल्ल0 को देख न लूं तब तक तौल नही सकता, यहां तो मै इस तरीके से अपनी तसल्ली कर लेता हूं मगर आखिरत में जब आप सल्ल0 जन्नत के ऊपर के दर्जे में होंगें तो वहां मुझ पर क्या गुजरेगी ? तो आप सल्ल0 ने फरमाया ! आदमी उस शख्स के साथ होगा जिससे उसे मोहब्बत होगी, सहाबा किराम रजि0 को इस हदीस से ऐसी ही खुशी हुई थी जैसी खुशी उनको इस्लाम लाने से हुई थी। क्योंकि सहाबा किराम को जन्नत व दोजख मुस्तहजर थी वह समझते थे कि इस्लाम की दौलत न मिलती तो हम जहन्नम के कैसे अजाब में होते। इसी तरह उन्हें इस हदीस से खुशी हुई, क्योंकि उनमें से हर एक को आप सल्ल0 से इन्तिहाई मोहब्बत थी ओर जब आदमी किसी से मोहब्बत करता है तो उस के बगैर चैन नही आता अगरचे मोहब्बत की राह में मशक्कते बरदाश्त करना पड़े।

एक मौके पर हुजूर सल्ल0 तीन चार रोज से फाके से थे एक सहाबी ने ताड़ लिया, उनके पास भी कुछ न था इसलिए मेहनत करके कुछ खजूरें लाये और आप सल्ल0 की खिदमत में उनको पेश किया, आप सल्ल0 ने पूछा कहां से लाये? तो उन्होने सारा वाकिया अर्ज किया तो आप सल्ल0 ने फरमाया! तुम मुझसे मोहब्बत करते हो? उन्होने कहा हां। फरमाया अगर तुम्हें मुझसे मोहब्बत है तो तुम मसाइब के लिए तेयार हो जाओ, भाई बात ये है कि आदमी को जिससे मोहब्बत होती है तो उस महबूब के असरात उसमें भी आ जाते हैं हत्ताकि बाज वक्त मोहब्बत का रंग भी बदल जाता है। देखिये हुजूर सल्ल0 दायमुल एहजान थे तो जो आप सल्ल0 से मोहब्बत करेगा तो उसमें भी ये चीजें आयेगी, आप सल्ल0 ने कभी अपनी ख्वाहिश पूरी नही की और दुनियवी लज्जत को हासिल नही किया ये दूसरी बात है कि आप सल्ल0 को पूरी रात तहज्जुद पढ़ने में मजा आता था, चुनांचे बाज वक्त आप सल्ल0 के कदमें मुबारक पर इतना वरम आया कि रान तक सूज गई।

इब्तिदाये इस्लाम में तकलीफ की खूब मश्क कराई

हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजि0 ने उम्मे सल्मा रजि0 अन्हा से अर्ज किया कि आपने हुजूर सल्ल0 के साथ जो सब से बेहतर खाना खाया हो वह मुझे खिलाओ तो कहा ठहरो! फिर उम्मे सल्मा रजि0 अन्हा ने जौ लेकर

पीसे और फूंक मारकर कुछ उड़ा दिया ओर उस पर जैतून का तेल डाल दिया और फिर फरमाया ये है हुजूर सल्ल0 का बेहतरीन खाना। एक मर्तबा कहीं से रान आई तो उसको या तो हजरत आयशा रजि0 ने और आप सल्ल0 ने काटा या उससे उल्टा हुआ यानी आप सल्ल0 ने पकड़ा और हजरत आयशा रजि0 ने काटा, किसी ने कहा ये चिराग के उजाले में हो ? कहा अगर इतना तेल होता तो फाका क्यों करते इसी को पी लेते। इब्तिदाये इस्लाम में उन तकालीफ की खूब मश्क कराई ताकि शैतान का हथियार उन पर न चले, यहां तक कि सहाबा किराम रजि0 अहकाम पर पड़ गये और ऐसे पड़े कि हुक्म में थोड़ी सी कमी भी बरदाश्त न कर सकते थे जैसे हजरत अबू तलहा रजि0 और दूसरे सहाबी की नमाज का वाकिया हे कि बाग में नमाज पढ़ रहे हैं बाग के ध्यान से नमाज का खुशुअ व खुजुअ जाता रहा तो कहा कि उस बाग से मेरे खुशुअ मे खलल पड़ गया इसलिए मै इसको रख नही सकता और उसको सदका कर दिया ये इसलिए हुआ कि इन्होने हुक्मों की तामील को मौजू बनाया था।

जैसा हुक्म वैसा आदाब

हुक्म जितना बड़ा होगा उतने ही उसके आदाब होगें और उस पर वैस ही अहवाल भी मुरत्तब होंगे, मसलन कुरआन करीम की तिलावत के आदाब हैं, इस्तगफार के आदाब हैं, रूकू और सिजदह के आदाब हैं, इसी तरह नमाज के उसूल और आदाब हैं, घर में रहन सहन और सफर के आदाब है, मसलन घर में एक अमीर होगा चन्द घराने हों तो उनमें एक अमीर होना चाहिए, सफर में भी एक अमीर बनाओ, इसी तरीके से हुजूर सल्ल0 ने फरमाया ''इन्ना लकुम किलाब'' मै तुम्हारे लिए बाप की तरह हूं। अब हम नबी वाले उलूम जिससे लेंगें उसको भी बाप की निगाह से देखेगें और बाप के आदाब भूलने के लिए नही हैं उसकी तरफ घूर कर न दखो, अगर तुम्हारी रकाबी में हडडी और गोश्त है तो तुम गोश्त मत खाओ शायद बाप के दिल में खाने का ख्याल हो, सोने के आदाब हैं मसलन बगैर दीवार वाली छत पर न सो, इसी तरह तालीम व ताअल्लुम के भी बहुत से आदाब हैं कि अदब से बैठना, पांव न फैलाओ, ध्यान से सुनना वगैरह बहरहाल हर चीज के आदाब हैं तमाम आदाब का मजमुआ दीन कहलाता है। मस्जिद इस वजह से मोहतरम है कि वह सिजदह की जगह है वहां अल्लाह तआला का एक अजीमुश्शान हुक्म नमाज पूरा होता है तो जिस मुसलमान से बहुत से अहकाम इलाहिया पूरे होते हों वह क्यों काबिले एहतराम नही होगा? हजरत उमर रजि0 ने काबा की तरफ इशारा करते हुए कहा कि तू मोहतरम है मगर मुसलमान तुझ से भी ज्यादा मोहतरम है, उसकी जान भी मोहतरम और का माल भी मोहतरम।

पहले मोहब्बत का बीज बोया गया

जब आदमी घर से निकलना चाहे तो घर से चार रकअत पढ़ कर निकले, ये नमाज उसकी खलीफा होगी उसके घर पर रहने से जो काम बनते थे वह उसके बाद भी चार रकअत से बनेगें। सफर मे साथियों के साथ साथ रहे, साथ सोये, मुतफर्रिक न हो। ये तफर्रूक शैतान की तरफ से है पहले तो हुजूर सल्ल0 की मोहब्बत का बीज बोया गया फरमाया!

''लायुमिन अहादुकुम हत्ता अकूना अहब्बा इलैहि मिन वलादिहि ववालिदिहि वन्नासि अजमाईन''

फिर अबुबक्र रजि0 व उमर रजि0 व उसमान रजि0 व अली रजि0 की मोहब्बत पैदा की गई और उनके जरिये ये मोहब्बत फैलाई गयी, यहां तक कि कहा कि हर मुसलमान से मोहब्बत करे क्योकि वह हुजूर सल्ल0 का उम्मती है। एक औरत का जनाजा जा रहा था लोगों ने कहा उसका जनाजा एहतराम से ले जाओ ये मस्जिद के पत्थर ढोने में हमारे साथ थी। देखो जब ये कालीन मस्जिद में आ गया तो अब ये भी काबिले एहतराम हो गया

अगर तुमने अपने दिल में यहां की रोशनी और कालीन का नफरत से देखा तो तुम मोहब्बत के बाब में गिर गये और अगर इन नक्शो का ध्यान घर को लेकर गये जो नक्शे यहां मौजूद हैं और सोचा कि हम भी ऐसे नक्शे घर मे कायम करेगें तो तुम इताअत के बारे में ठोकर खा गये, इसलिये कि यहॉं एतदाल की जरूरत है। मजनूं दीनदार आदमी था हजरत इमाम हसन ने कहा तू कैसा मुसलमान है ? मजंनू ने कहा हजरत मोहब्बत तो मेरे कब्जे में नही है और शरियत के खिलाफ मैने कुछ किया नहीं। मजनुं एक कुत्ते से मोहब्बत करने लगा लोगों ने पूछा तो उसने कहा उसकी आंख में लैला की आंख की कुछ मुशाबहत है। जब गैर जिन्स में महबूब की मुशाबहत पाई जाने से मोहब्बत की जा सकती है तो ये मुसलमान तो हुजूर सल्ल0 जैसा सिजदह करता है तो क्या ये काबिले मोहब्बत नही? हुजूर सल्ल0 ने जो नक्शे कायम किये थे उनमें सबसे पहले मुसलमान का मुसलमान के साथ का ताल्लुक है और य ताल्लुक और इत्तिहाद उस वक्त कायम होगा जबकि मुसलमान के मुसलमान के साथ रहने को जो तरीका बतलाया गया है उस पर अमल होगा। ये माल से कायम न होगा अगर हमने नमाज पढ़ी मगर गीबत करली तो तमाम कमाया हुआ चला गया इस तरह इत्तिहाद पैदा न होगा। इस्लामी उसूल से आपस म जोड़ पैदा होगा।

आपस के इज्तिमा की जरूरत

आज हुकूमतों के सफरा एक दूसरे से मिलते हैं और वफूद का तबादला होता है और उस पर लाखों का खर्च हो रहा है मगर दिल नही जुड़ते

وَأَلَّفَ بَيْنَ قُلُوبِهِمْ لَوْ أَنفَقْتَ مَا فِي الأَرْضِ جَمِيعاً مَّا أَلَّفَتْ بَيْنَ قُلُوبِهِمْ وَلَكِنَّ اللّهَ أَلَّفَ بَيْنَهُمْ إِنَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ

सूर अन्फाल 63

जब तुम अल्लाह तआला के बतलाये हुए उसूल को बरतोगे तो खुदा तआला तुम्हारे दरमियान इत्तिहाद पैदा कर देगा

وَاعْتَصِمُواْ بِحَبْلِ اللّهِ جَمِيعاً

सूर इमरान 103

तुम सब अल्लाह तआला की रस्सी को थाम लो, जब इस पर अमल होगा तो उससे तुम्हे बहुत बड़ी ताकत मिलेगी अगर हम मुआशिरत के उसूल तोड़ेगें तो उसका नुकसान हमें भुगतना पड़ेगा अगरचे हममें हुजूर सल्ल0 वाली नमाज हो और अगरचे आखिरत में नमाज पर दरजात मिले और अगरचे हम मुसतजाबुद्दावात हों, हजरत सआद रजि0 बड़े मुस्तजाबुद्दुआ थे एक आदमी ने कहा! ये सआद माल की तकसीम सही नही करते और नमाज ठीक से नही पढ़ते, उनको गुस्सा आ गया और बददुआ कर दी कि ऐ अल्लाह तू इसकी उमर लम्बी कर दे और उस को कसरत से औलाद दे और माल न दे और उसको फित्ने में मुबतला कर दे। उससे उसकी ये हालत हुई कि रास्ते चलतें औरतों को छेड़ा करता और जब लोग डांटते तो कहता कि मै ऐसा नही हूं मगर सआद की बददुआ से ये सब हो रहा है। मगर ऐसे बुजुर्गों के बावजूद उनके जमाने में लाखो का खून खराबा हुआ क्योंकि मुसलमान का जोड़ खत्म हो चुका था। हजरत तलहा, हजरत जुबैर, हजरत अली रजि0 को कोई भला बुरा कह रहा था हजरत सआद ने कहा चुप हा जाओ वो लोग तो ऐसे ऐसे नेक थे अगर तुम चुप न हुए तो मै बददुआ करूंगा। उसने कहा तुम ऐसे धमकी दे रहे हो जैसे कोई नबी धमकी दे रहा हो। आपने नमाज

पढ़ कर बददुआ की कि या अल्लाह अगर उन हजरात का तेरे यहां कोई मकाम हो तो तू इसको तबाह कर चुनांचे उसके बाद एक ऊंट आया और उसने उसकी गरदन तोड़ दी। आज मुसलमान हर चीज को अपना मौजू बनाता है नमाज सीखता है कुरआन सीखता है, हज सीखता है मगर वह खुद को बदलना नही चाहता, अपनी इस्लाह नही चाहता, झुकना नही चाहता, हजरत उस्मान से, हजरत अली, हजरत अबुहुरैरह और हजरत हसन रजि0 में से हर एक बागियों से मुकाबला की इजाजत चाहता था मगर हजरत उस्मान रजि0 फरमाते मै अपनी मोहब्बत और कराबत का वास्ता देकर कहता हू कि अपने घरों में बैठ जाओ।

आपस में इख्तिलाफ के बावजूद सहाबा किराम के अन्दर जोड़

हजरत उस्मान रजि0 की शहादत के बाद हजरत इमाम हसन रजि0 ने ख्वाब में देखा कि हुजूर सल्ल0 अर्श का पाया थामें खड़े हैं और हजरात शेखैन यानी हजरत अबुबक्र व उमर रजि0 आप के शानों पर हाथ रखे खड़े है। आप सल्ल0 के दस्ते मुबारक में हजरत उस्मान रजि0 का सरे मुबारक है और शिकायत कर रहें है या अल्लाह मेरी उम्मत से पूछ कि इन्होने मेरे उस्मान को क्यों कत्ल कर दिया? फिर देखा कि अर्श के दोनो तरफ से दो परनाले गिर रहे हैं, तो उसकी ताबीर जन्गे जमल और जन्गे सिफफीन थीं, हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रजि0 कहते हैं कि ये हजरत उस्मान रजि0 के खून के बदले मे थी कि ये सूरत न होती तो ये उम्मत पहली सदी में ही पत्थरों की बारिश से हलाक हो जाती मगर मुसलमानों के इस कदर इख्तिलाफ के बावजूद वह एक दूसरे की सराहतन तारीफ करते। उस जमाने में निरी सियासत न थी अब तो हमारा बोल सरासर सियासत है और निजामे जिन्दगी ऐसा है कि उससे जोड़ खत्म हो। भाई हजरत अली रजि0 के लश्कर में सब ही चीजें थी नमाज भी थी ओर ऐसी नमाज कि नमाज के वक्त हजरत अली रजि0 के पीछे नमाज पढ़ने हजरत मुवाविया रजि0 के लश्कर से लोग आते और कहते नमाज तो हजरत अली रजि0 की अच्छी है और उनके लश्कर में खाने जाते क्योकि मुवाविया रजि0 के यहां खाना अच्छा बनता था लेकिन उस जमाने में इस कदर आपस के इख्तिलाफ के बावजूद मुसलमान दूसरों के मुकाबले में एक थे मगर आज तो ये हालत है कि दूसरों से जोड़ हो सकता है मगर अपनों से जोड़ नही हो सकता, जोड़ के लिए जरूरी है कि आदमी तवाजो अख्तियार करे, अपने आपको कुछ न समझे इस लिए सूफिया किराम की पूरी कोशिश ये होती है कि आदमी अपने आपको और अपने काम को कुछ न समझे, तब ही आदमी अल्लाह का और लोगों का प्यारा बनता है। आदमी नमाज पढ़े फिर इस्तिगफार करे कि मै गुनाहगार और नापाक हूं मेरी नमाज हक तआला के शयाने शान नही।

एक बादशाह ने उलमा व सूफिया के बारे में मालूम करना चाहा कि उनमें कौन अफजल है तो उसको वजीर ने ये तरकीब बताई कि उनको आगे पीछे बुलाओ और कहो कि जो तुममे अफजल हो वह मुझसे पहले मिले। पहले उलेमा की जमाअत आई, अब दरवाजे पर ये झगड़ा है कि मै पहले दाखिल हूं क्योंकि मै अफजल हूं, मुझमें ये खूबी है। हर एक अपनी अपनी खूबियां बयान कर रहा था। उसके बाद सूफिया की जमात आई, उनको कहा गया कि तुममें से जो अफजल हो वह पहले दाखिल हो तो वह आपस में एक दूसरे को बढा रहे थे और कह रहे है कि हजरत आप बढ़े आपमें ये खूबी है। आज हमारी सबसे बड़ी बीमारी यही किब्र है कि

لَا يُرِيدُونَ عُلُوّاً فِي الْأَرْضِ وَلَا فَسَاداً

पर अमल करना नही आता

أَذِلَّةٍ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ

को पढ़ तो लिया मगर उस पर अमल करना नही आता। जब तक अपने को बेमुकाम समझोगे जोड़ कायम रहेगा और अगर जुबान से तो कह रहे हो कि मै कुछ नही मगर दिल में दूसरी बात है तो ये निफाक है और निफाक के साथ इत्तेफाक भी पैदा नही हो सकता। अगर जुबान और दिल दोनो से अपने आपको हेच समझा तो ये ईमान है, इस सूरत में इत्तेहाद पैदा हो सकता है और अगर तुमसे ये बीमारी न निकली तो फिर तुम्हारे निकलने से लोगों में जो तफरूक्क है उस का इलाज कैसे होगा ? जब मुसलमान से जोड़ के उसूल टूट जाते हैं तो हजरत साद और हजरत सईद की दुआ भी उनको नही जोड़ सकते और खून को बहने से नही रोक सकते और ऐसे लोगों का खून हुआ कि जिन पर अशरह मुबर्श्रह अश-अश किया करते थे। अमीर उस वक्त सही अमीर बनेगा जब कि अमीर ये समझे कि मुझसे कुछ नही होता उन मामूर की वजह से काम चलता है।

अमीर वह बेहतर होगा जो भूख प्यास का तहम्मुल कर सके

हुजूर सल्ल0 ने एक जमाअत भेजी उसमें किसी को अमीर नही बनाया बल्कि वैसे ही जमाअत भेज दी तो उनमें इख्तिलाफ पेदा हुआ और उनमें तीन जमाअतें बन गईं और उन्होने अपने अपने तर्ज पर काम किया। जब आप सल्ल0 की खिदमत में पहुंचे तो आप सल्ल0 को नापसन्द आया कि मैने मज़तमा भेजा था और तुम मुतफर्रिक हो कर आये हो, तुम से पहले उम्मते इसीलिए हलाक हुई कि उन्होने आपस में तफर्रूक किया। अबसे जो जमाअत भेजी जायेगी उसमें एक अमीर होगा और अमीर वह बेहतर होगा जो भूक प्यास का तहम्मुल कर सके, अमीर के साथ एक पुराना भी होता कि अमीर की इस्लाह होती रहे और वह बिगड़ने न पाये। अमीर को चाहिए कि रिश्तेदारी और ताल्लुक की वजह से राये कुबूल न करे अगर रिश्तेदार की राये सही हो तो ऐसी तरकीब अख्तियार करे जिससे मालूम हो जाये कि सिर्फ रिश्तेदारी और ताल्लुक की वजह से राय कुबूल नही की है बल्कि उसमे ये बात मसलहत और हिक्मत है और हर पुराना मुस्तकिल कोई काम लेकर न बैठे बल्कि पुराने आपस में मिल कर काम करते रहे। अमीर तो मश्विरह करके राय मालूम करेगा फिर जो फैसला वह करेगा उस पर अमल करना होगा अलबत्ता हराम में अमीर की इताअत न करो मसलन सफीर साहब ने जमाअत की दावत की और उसमें शराब कबाब भी है तो तुम उसमें शरीक न हो चाहे अमीर कहे कि सफीर की दावत कुबूल न करोगे तो वारन्ट निकलेगा और जमाअत को रवाना कर देगें, तब भी शरीक न हो अगर अमीर शरीक होगा तो ये काम उसने बुरा किया मगर उसके बाद जब अमीर तालीम वगैरह करे तब उसमें शरीक हो जाओ। जब तक तुम्हारा ये अमीर हक में हो उसकी इताअत करो, सहाबा किराम रजि0 का अमल देखो वह बुजुर्ग सहाबी जो हुजूर सल्ल0 सिद्दीक अकबर और फारूके आजम रजि0 की इमारत में चले थे वह यजीद की इमारत में भी चले, हजरत अबु अयूब रजि0 एक मर्तबा शरीक न हुए तो उस पर सारी उमर अफसोस करते रहे, बहरहाल इज्तिमा को कायम रखने के लिए जब तक हमे सबको जोड़ना न आये तब तक हमें ये समझना चाहिए कि हमें काम करना नही आया

सब कुछ खुदा के चाहने से होता है

''ला इलाहा'' में कायनात से यकीन का टूटना है और ''इल्लल्लाह''में अल्लाह तआला से यकीन को जोड़ना है अब कायनात में जमीन-आसमान-फरिश्ते और अम्बिया किराम अलै0 सब आ गये यानि वही होगा जो खुदा चाहेगा मखलूक का चाहा हुआ हरगिज नही होगा। सूरज रोशनी का मरकज हे मगर खुदा के चाहने से रोशनी आती है खुदा तआला न चाहे तो रोशनी न आये। उसी तरीके से अम्बिया किराम अलै0 हिदायत के मराकिज हैं मगर खुदा के चाहे बगैर हिदायत नही मिल सकती और खुदा का हिदायत देना तो नबी के न चाहने के बावजूद

देते हैं और अबुतालिब के लिए आप सल्ल0 ने बहुत हिदायत मांगी और उसके लिए बहुत कोशिश की और हुजूर सल्ल0 मगमूम भी हुए, इस पर हक़ तआला ने इरशाद फरमाया! إِنَّكَ لَا تَهْدِي مَنْ أَحْبَبْتَ

इसी तरीके से फिरऔन ने मूसा अलै0 के कत्ल के लिए बहुत हरबे आजमाये मगर खुदा तआला ने उसके कन्धो पर चढ़वाकर हजरत मूसा अलै0 को पाल कर बतलाया हालॉकि वह बार बार कह रहा था कि मुझे तो ये वही गुलाम मालूम होता है जिसके हाथ पर मेरी हलाकत है।

इसी तरीके से हजरत ईसा अलै0 कुछ न कर सकते थे। तो हिदायत-जलालत-जिन्दगी-मौत और उलूम वगैरह सारी चीजें अल्लाह तआला ही के हाथ में हैं, वह जिसे चाहे इल्म देदें और जिसे चाहे जाहिल रखें ।

अल्लाह के इल्म में लगने वाले बड़े अजीम होते हैं, एक मर्तबा एक बादशाह ने अपने वजीरों से पूछा! उस हौज में कितना पानी होगा? तो सब हैरान रह गये, एक तालिबे इल्म जो अपने सबक में मशगूल था उसको पकड़ कर ले गये। बादशाह ने उससे पूछा ! इस हौज में कितना पानी होगा? तो उसने कहा ला हौला वला कूवत इल्ला बिल्लाह ये तो बहुत मोटी बात है ये जवाब तो प्याले पर मौकूफ है अगर प्याला इस हौज के बराबर हो तो इस हौज में एक प्याला पानी होगा ओर अगर प्याला इस हौज से आधा हो तो दो प्याले पानी होगा आब इसी पर कयास कर लो।

तमाम अम्बिया वाले रास्ते बन्द हो गये सिवाये आप सल्ल0 के रास्ते के

कलिमे की मेहनत के लिए मुशहिदात और शक्लों से यकीन हटाना होगा कि इन शक्लों से कुछ नही होता बल्कि सब कुछ खुदा से होता है। इसी तरह दूसरा यकीन ये बिठाना होगा कि खुदा से इस्तिफादह के लिए चीजों वाला रास्ता नही बल्कि मोहम्मद सल्ल0 के आमाल वाला रास्ता अख्तियार करना होगा कि सर से लेकर पैर तक तमाम आजा से वह काम किये जावें जो मोहम्मद सल्ल0 वाले हैं। अब तमाम अम्बिया वाले रास्ते बन्द हो गये सिवाये मुहम्मद सल्ल0 वाले रास्ते के। यकीन के लिए कलिमें वाली नमाज सीखो, नमाज हमारे सारे आजा के अल्लाह तआला के लिए इस्तेमाल होने की एक शक्ल है जैसे तिजारत, सियासत, पहलवानी, जराअत वगैरह इन्सान के आजा के गैरो के लिए इस्तेमाल होने की शक्लें हैं, हमारी जात का इस्तेमाल सर से लेकर पैर तक खुदा के अहकाम के ऐतबार से हो ये नमाज है।

नमाज तमाम शक्लों के मुकाबले में खुदा से इस्तेफादह की शक्ल है कि खुदा चाहेंगें तो बड़ी से बड़ी शक्ल को अपनी कुदरत से कमजोर कर देगें, खुदा से इस्तेफादह के लिए शक्लों से निकलना जरूरी है हत्ता कि अम्बिया किराम अलै0 के बारे में जब मखलूक को गलत यकीन आ गया तो खुदा तआला ने दूसरे नबी को भेजा यानि जब नबियों पर लोगों का यकीन नुबूवत से हट कर अलवीयत पर आ गया तो खुदा तआला ने पहले नबी को उठा कर दूसरे नबी को भेजा। अम्बिया किराम अलै0 की मदद करने वाले भी अल्लाह तआला ही हैं और उनके ताअबईन की मदद करने वाले भी अल्लाह तआला ही हैं।

मुकाबला दो चीजों से हैं

देखिये हजरत यूसुफ अलै0 जेल से अपनी तरकीब से न निकल सके, उन्होने खुद जो तरकीब की थी उसमें वह नाकाम हुए। खुदा ने उस छूटने वाले को ही यूसुफ अलै0 का जिक्र करना भुला दिया और जब खुदा तआला ने निकालना चाहा तो ख्वाब के जरिये निकलवाया तो मुकाबला दो चीजों से है, कायनात से नही होता सिर्फ खुदा से होता है ओर दूसरा मुकाबला रास्ते का होगा कि किसी शक्ल से कामयाबी हासिल नही होगी कामयाबी सिर्फ हजरत मुहम्मद सल्ल0 के आमाल वाले रास्ते से हासिल होगी। जब दीगर अम्बिया किराम अलै0 के रास्ते आप

सल्ल0 के जरिये मसदूद हो गये तो अब ये रूस और अमरीका के रास्ते कैसे खुले रह सकते हैं, ये सब रास्ते तो आप सल्ल0 के कदमों के नीचे हैं। काश ये बात तुम्हारी समझ में आजावे कि इस कायनात का सारा निजाम सिर्फ हक तआला के कब्जें में है और हर निजाम पर फरिश्ते कायम हैं। जब हजरत इब्राहीम अलै0 को आग में डाला गया तो आपके पास पहाड़ों के फरिश्ते आये कि आप कहें तो उनको पहाड़ो के दरमियान कुचल दें, हवा के फरिश्ते आये कि आप कहें तो पानी बरसा कर हम आग को बुझा दें तो हजरत इब्राहीम अलै0 ने फरमाया मुझे उसकी जरूरत नही, मेरा रब मुझे काफी है उसका नतीजा ये हुआ कि अल्लाह तआला ने आग को आग रखते हुए उसको गुलजार बना दिया और बतलाया कि हम चाहें तो चीजों की शक्लों को बाकी रखते हुए उनकी सिफात को बदल दें।

नमाज पर कामयाबी हासिल करने के लिए पांच चीजें जरूरी हैं

तो भाई नमाज पर मेहनत करके अपने आपको मुहम्मद सल्ल0 के अमल वाले तरीके पर ले आवें और उस नमाज को ठीक करने के लिये पांच यकीन ठीक करने हैं।

1-ला इलाहा इल्लल्लाह का यकीन कि रूस ओर अमरीका हिन्दुस्तान और तमाम हुकूमतें जो चाहें वह हरगिज न होगा बल्कि हजरत मुहम्मद सल्ल0 वाली नमाज पढ़ कर हम खुदा से जो मांगेगे वह होगा।

2- हम मसले के हल के लिए नमाज न पढ़े बल्कि नमाज इसलिए पढ़ें कि खुदा इस वक्त हमारी जात का इस्तेमाल इस तरीके से चाहता है और नमाज इसलिए पढ़े कि इसमें खुदा तआला की रजामंदी है, हजरत मुहम्मद सल्ल0 ने जो कुछ किया खुदा से लेने के लिए नही बल्कि खुदा को राजी करने के लिए किया जैसे सहाबा किराम रजि0 ने पूछा आप बख्शे बख्शाये हैं फिर आप इतनी मशक्कत क्यो उठाते हैं? तो आप सल्ल0 ने फरमाया ''अफला अकूना अबदन शकूरा'' क्या मै अल्लाह तआला का शुक्रगुजार बन्दा न बनूं

3- तीसरी चीज पूरी नमाज में अल्लाह ही का ध्यान रहे और अगर उसमें वह ध्यान आ जाये जो खुदा तआला ने दिलाया है जेसे जन्नत का ध्यान, दोजख का ध्यान वगैरह तो ये उसके मुखालिफ नही तो तीन चीजें पैदा हो जायें (1) कलिमे वाला यकीन (2) मकसद रिजाए इलाही (3) खुदा का ध्यान

4- चौथी चीज इस नमाज के लिए दाखिली इल्म हासिल किया जावे, नमाज में खारजी इल्म नही चलेगा, मताफ में दुवायें पढ़ने के लिए किताब चल सकती है लेकिन नमाज जाहिर और बातिन दोनो एतबार से मखलक् से अलग होकर और हट कर पढ़ना हे, इसमें अन्दर वाला इल्म चाहिए ''इकरा बिस्मि रब्बिका'' हुजूर सल्ल0 को अन्दर देखकर नही पढ़वाया जा रहा है बल्कि पहले कुरआन आपके अन्दर उतारा जा रहा है तकवा-तवक्कुल-यकीन तमाम सिफात आपके अन्दर आईं, अब आप जो कुछ बोलते हैं वह अन्दर की माया और अन्दर के नूर से बोलते हैं, हजरत मुम्हमद सल्ल0 की जिन्दगी कुरआन है और कुरआन हजरत मुहम्मद सल्ल0 की जिन्दगी है। तेरह साल तो आप सल्ल0 ने इस इकरा पर मक्का में मेहनत की और छः साल मदीना मुनव्वरह में मेहनत की यानि इस कुरआन को अपने सहाबा किराम के अन्दर उतारने की मेहनत की, यहां जाहिरी किरात मुराद नही है देखिये सुलह हुदैबिया में मुहम्मद रसूलुल्लाह कहां लिखा है? वह आपको सहाबा से पूछना पड़ा।

5- पांचवी चीज अपने अन्दर नमाज के फजायल का इल्म लो जब उन पांच चीजों पर नमाज आ जायेगी तो इस पर कामयाबी हासिल होगी। हक तआला हमें और पूरी उम्मत को तौफीक अता फरमाये!

किताब का नाम - बयानात हजरत मौलाना यूसुफ साहब रह0

हजरत मौलाना यूसुफ साहब रह0

मक्का मुकर्रमा 1964 ई0

दावत की मेंहनत नबियों वाले तरीके पर हो

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

मेरे भाइयों और दोस्तों! आज सारे इन्सानों के हालात खराब हैं और हालात खराब होने की वजह ये है कि इन्सानों ने अपनी मेहनतों का रूख बदल लिया है अम्बिया किराम अलै0 वाली मेहनत ईमान और अमल से हटकर, मुल्क व माल वाली मेहनत पर आ गये हैं और आप जानते हैं कि मुल्क व माल वालों के तरीके आपस में मुख्तलिफ हैं, वह एक दूसरे के तरीके को काटते रहतें हैं और जिन्होने अम्बिया किराम अलै0 के तरीके को अख्तियार किया, उनके हालात बने और जिन्होने उनके तरीको को छोड़ा, उनके हालात खराब हुए। जब दावत की मेहनत नबियो वाले तरीके पर होगी तो हालात बनेगें और जब मुल्क व माल के नक्शों पर मेहनत होगी तो हालात खराब होगें ओर अगर दावत की मेहनत भी दुनिया के नक्शों पर होगी तो उससे भी हालात न बनेंगें तो मैं ये अर्ज कर रहा हूं कि दुनिया में जितनी किस्म के इन्सान हैं चाहे हूकूमत वाले हों, चाहे महकूम हों या उलमा व मशाएख हों, किसी के हालात हुकूमत और माल व दौलत से नही बनेगें ये सब धोका है बल्कि उनके आजा से निकलने वाले आमाल जब कुरआन व हदीस के मुताबिक होंगें तो उससे हालात बनेगें।

सब कुछ खुदा से होता है

अल्लाह तआला ने हालात को अमवाल से नही जोड़ा बल्कि आमाल से जोड़ा है और आमाल को दिल से जोड़ा है, जब दिल का यकीन खुदा और रसूल वाला होगा तो आमाल भी कुरआन व हदीस वाले होंगें और उससे आमाल दुरूस्त हो जायेंगे फिर उन अमलों से हालात बनेगें अगर हमने यकीन बनाने के लिए मेहनत की तो खुदा तआला हमारा यकीन बनायेगें मगर इन्सानों को सही यकीन बनाने के लिए मेहनत करके खुदा से मांगना होगा कि ऐ खुदा ! अगर तू हमारे यकीन को न बदलेगा और हमारे दिल के रूख को न बदलेगा तो हमसे न बनेगा, इसलिये पहले यकीन बदलने की मेहनत करे उसके बाद दुआ करे।

हजरत मूसा अलै0 ने कितने साल बनी इसाराईल के यकीन को बदलने के लिए मेहनत की, उसके बाद दुआ की और सही यकीन ये है कि जमीन आसमान से कुछ नही होता सब कुछ खुदा से होता है और खुदा से फायदा हासिल करन के लिए चीजों के यकीन को निकाल कर आमाल पर आ जावे और ये यकीन रखे कि जितनी चीजों मश्रिक से मगिरब और शुमाल से जनूब तक फैली हैं उनसे कुछ नही होता, सब कुछ खुदा ही से होता है, चाहे हालात नफे के हों या नुकसान के हों या इज्जत व जिल्लत के, उनसे कुछ नहो होता सब कुछ अल्लाह ही से होता है और अल्लाह तआला अमवाल की वजह से नही करते बल्कि आमाल की वजह से करते है अगर नक्शों का यकीन निकल कर खुदा का यकीन आ जाये और खुदा से मुताल्लिक जैसा यकीन उसकी जात के मुनासिब है पैदा हो जाये तो सारे मसले हल हो जायें। खुदा जमीन व आसमान की तमाम चीजों को बगैर चीजों के पैदा कर सकता है। उसने बगैर गाय के गाय बनाई, बगैर अण्डे के मुर्गी बनाई, अगर वह चाहे तो एक लम्हे में सारे राकेट उसके हुक्म से मिटटी बन जावें और उसके हुक्म से नेस्त व नाबूद हो जावें। उसको किसी और चीज की जरूरत नही सिर्फ चाहने की देर है,

हजरत इबराहीम अलै0 ने जब्ले अबु कबीस पर खड़े होकर आवाज लगाई तो वह आवाज आलिमें अरवाह में सबको पहुंच गई। हूकूमते हज पर पाबन्दी लगा रही हैं मगर उसके बावजूद हाजियों की तायदाद बड़ रही है। हमारी हुकूमत ने हज पर पाबन्दी लगाने के लिए उस बात को जरूरी करार दिया कि पूरा किराया दरख्वास्त के साथ आ जाये, पहले हुजाज की तायदाद पन्द्रह हजार थी मगर पहले ही दिन छब्बीस हजार दरख्वास्तें पूरी रकम के साथ आ गई। वह समझते थे कि बहुत कम हाजी दरख्वास्त देगें मगर ये स्कीम फेल हो गई।

गैरूल्लाह से खुदा के बगैर कुछ नही होता

दूसरा यकीन ये आ जाये कि गैरूल्लाह से खुदा के बगैर कुछ नही हो सकता और जुबान से जो कुछ कहा जाये दिल में भी उसका यकीन हो। जुबान दिलों के खिलाफ न बोले मसलन कोई बे मौंके खाने के वक्त आ गया तो जुबान से तो उस की आवभगत की जाती है और दिल अन्दर से कुढ़ता है, ये सही नही है। इसलिए अम्बिया किराम अलै0 ने कलिमा वाले यकीन को पैदा करने की सबसे से ज्यादा मेहनत की, जब ये यकीन आ जाता है तो उसके बाद जिस्म से आमाल सही निकलते हैं जैसे बारिश के बाद सब्जह निकलना शुरू हो जाता है अगर अल्लाह को जात वाला यकीन दिल मे आ जाये तो ईमानियात के दूसरे शोबे भी खुद ब खुद आ जायेंगें। आज ये मक्का सारी दुनिया के ऐश का मजहर है और उसका जाहिरी नक्शा वह है जो हमारे यहां है, लेकिन अगर कोई नबियों की दूरबीन लगा कर देखे तो उसको नजर आयेगा कि खुदा ही ये सब बनाने वाले है, खुदा ही ने काबातुल्लाह की जगह पानी से बुलबुला उठाया और उससे बड़ी जमीन पैदा कर दी और उसमें बहुत सारी बरकते रखी तो मश्रिक और मगिरब में जो कुछ फैला है खुदा तआला ने अपनी कुदरत से बनाया है और जब चाहेंगें अपनी कुदरत से तोड देगें।

एक बात तो काबा से ये बताई कि सब खुदा की कुदरत से बनता है और अपनी कुदरत से तोड़ता है जैसे आटा अपने आप नही पिसता और

पिसने के बाद खुद नही गुंधता और

गूंधने के बाद खुद पेड़ा नही बनता और

रोटी बनने के बाद अपनी कुदरत से तवे पर नही पड़ती बल्कि

जिसने उसको बनाया वही सब शक्लों में उसको मुन्तकिल करता है मगर फर्क ये है कि इन्सान के मिस्ल मौजूद हैं इसलिए इसके काम में दूसरा शरीक नही। जिस खुदा ने इन्सान को नुत्फे की शक्ल में पैदा किया, वही गोश्त का लोथड़ा और पूरा इन्सान बनाता है फिर उससे पहले मक्के में जहां न साया था न दरख्त न सरसब्जी थी न खुशहाली, वहां खुदा ने अपनी कुदरत से बगैर शक्लों के अम्बिया किराम की परवरिश करके बताई और जिसको चाहा चीजों और नक्शों में बर्बाद कर दिया। आप यहां बैठ कर पहले के हालात को सोचें उसका मुराकबा करें तो उससे ये यकीन पैदा होगा कि हालात का बनना बिगड़ना खुदा के हाथ में है। यहां बैठ कर कौमे शुऐब को सोचो कि वह तिजारत मे उजड़े आर इस्माईल बगैर तिजारत के पले।

कौमे सबा को सोचो कि जो खेतियों और बागों में तबाह हुए और इस्माईल वादी गैरजी जरह में पले,

फिर अबरहा के वाकिये को सोचो कि उस जमाने में हाथियों का लश्कर ऐसा था जैसा इस जमाने मे अमरीका और रूस के राकेट हैं, मक्का वाले हिम्मत हार कर पहाड़ों में चले गये, जाहिरी शक्ल बैतुल्लाह को बचाने वाली नही थी। एक आदमी ने हाथियों के सरदार महमूद हाथी के कान में आवाज लगाई कि महमूद ! ये अल्लाह का घर है तू वापिस चला जा, बस इतना कहना कि महमूद बैठ गया, हर तरफ चलता है मगर बैतुल्लाह की तरफ नही चलता। ये एक तम्बिया थी अबरहा के लिए अगर जरा बिनाई है तो वापिस चला जा।

ये वाकिया अल्लाह तआला की कुदरत का मजहर है जव न समझा तो अल्लाह ने

أَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِأَصْحَابِ الْفِيلِ

वाला मामला किया और रहती दुनियॉ को बतलाया कि हम बड़ी से बड़ी ताकत को छोटी सी मखलूक से मिनटो में खत्म कर सकते हैं।

हजरत इब्राहीम ने खुदा से अर्ज किया कि खुदा दुनिया में हुकूमत, दौलत और जमीना के नक्शे बहुत हैं मगर मै अपने बच्चों को उनमें लगाना नही चाहता बल्कि उनके लिए हकीकते नमाज चाहता हूं, और ऐ अल्लाह ! जो मेरे नक्शे कदम पर चले उनसे सबको मोहब्बत हो जावे, आसमान और जमीन मे भी उनसे मोहब्बत करने लगे चुनांचे उस दुआ के असरात आप आज भी देख सकते हैं और उस नमाज पर मेहनत करने वालों को खुदा बगैर मेहनत के वह चीजें देता है जो दूसरों को मेहनत पर देता है बशर्ते कि वह खुदा के लिए मेहनत करें खुदा सब कुछ दे देगा। अम्बिया किराम ने उन नक्शों पर मेहनत नही की बल्कि नक्शे कायम करने वाले खुदा से कह दिया।

यतीम पैदा हुए मगर इब्राहीम की दुआ साथ थी

अल्लाह तआला ने काबा को तौहीद के लिए कायम किया था मगर उसमे दूसरे नक्शे कायम हो गये और शिर्क आ गया इब्राहीमी तौहीद मगलूब थी उसको अपने वक्त पर फिर गालिब होना था इसलिए अल्लाह तआला ने मुहम्मद सल्ल0 को मबऊस किया मगर हालत ये है कि आप सल्ल0 को यतीम पैदा किया और आप जानते हैं कि यतीम की कोई स्कीम नही चलती और पैसे के ऐतबार से आप सल्ल0 को खाली हाथ मबऊस किया, बजाहिर यतीम और फकीरी की सूरत थी बाहर कुछ न था मगर अन्दर इब्राहीम अलै0 की दुआ थी

لَقَدْ مَنَّ اللّهُ عَلَى الْمُؤمِنِينَ إِذْ بَعَثَ فِيهِمْ رَسُولاً مِّنْ أَنفُسِهِمْ يَتْلُو عَلَيْهِمْ آيَاتِهِ وَيُزَكِّيهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَإِن كَانُواْ مِن قَبْلُ لَفِي ضَلالٍ مُّبِينٍ

आले इम्रान.164 आयत

आप सल्ल0 की हालत ये कि बाप मौजूद नही और दादा ऐसे कि जिनके ग्यारह बच्चे फिर उस यतीम को लेने वाला कोई नही मगर झक मारकर ले गये और जब ले गये तो बरकात का जहूर हुआ। नबियों वाली बात जाहिरी सूरतों से नही चलती बल्कि अन्दर की माया से चलती है और खुदा ने यहां से बगैर मुल्क व माल के नमाज वाली बात चलाई, आपके साथ जो सहाबी थे उनके पास सर्दी के जमाने मे भी नाफ से घुटने तक कपड़े के अलावा दूसरा कपड़ा नही था। ये घर खुदा की जात से उसकी शान के मुताबिक लेने की जगह है मगर खुदा ने उस मेहनत को मक्का से नही चलाया मदीना से चलाया ताकि कोई ये न कहे कि हमारे यहां तो खुदा का घर नही है बल्कि बताया कि तुम जहां भी हो कुदरत के नक्शे पर चलो और उन मस्जिदों का रूख उस बैतुल्लाह की तरफ करो। तुम अपने शहरों मे अपनी मस्जिदों मे ये महनत कायम करो खुदा अपनी कुदरत का मुजाहिरह वहां भी करेगें। हर जमाने वालों के लिए इस जमाने के नक्शे उसवाह नही हैं बल्कि उसवाह और नमूना हजरत इब्राहीम अलै0 हैं, हमारे नबी सल्ल0 को भी अल्लाह जल्ले शानुहु ने हुक्म दिया

''वत्तबिय मिल्लता इबराहीमा हनीफा''

दुनियां मे जितनी भी ताकतें है उन तमाम के मुकाबले का मजहर बैतुल्लाह है, खुदा ने जिस तरीके से मिस्र और शाम में औलाद ए इब्राहीम का यकीन बनाया, ऐसा उनका भी बना सकते थे मगर नही खुदा तआला ने

बैतुल्लाह को बगैर नक्शों के अपनी कुदरत का मजहर बनाया, इन्सान तरक्की करके दज्जाल बन जायेगा और ऐटम बम से बढ़ जायेगा और मदीना मुनव्वरह मे तीन छटके आयेंगे गलत यकीन वाले मदीना से निकल कर उसके पीछे हो जायेंगे और सही यकीन वाले यहां जमे रहेंगें मगर वह मदीना मे दाखिल न हो सकेगा तो ये ऐटम वाले यहां क्या दाखिल हो सकते है।

उनकी मेहनतों और कुरबानियों के आइने में अपनी मेहनतों को देखो

अगर भाई मक्का आकर हमारा यकीन मस्ख हो जाये तो मग्रिब से मश्रिक तक हमारा यकीन मस्ख ही रहेगा, भाई! हालात दूसरों की वजह से खराब नही हुए बल्कि हमने खुद खराब कर लिए हैं। यहां आकर हजरत इब्राहीम अलै0 और हजरत मुहम्मद सल्ल0 की मेहनत का अपनी मेहनत से तवाजन करो और उनकी मेहनत और कुरबानी के आइने में अपनी मेहनतों और कुरबानियों को देखो, हजरत इब्राहीम अलै0 ने अपना घर कुरबान किया तो खलीलुल्लाह बने और हजरत मुहम्मद सल्ल0 ने अपनी अजवाज मुतहरात के घर, हजरत बीबी फातिमा रजि0 का घर और हजारों सहाबा के घर कुरबान किये तो अल्लाह के हबीब बने, अगर आज भी हमारे फैसले सही हो जाये तो दुनिया के फैसले आज बदल सकते है। मगर हमारा फैसला अटल होना चाहिए कि जमीन आसमान बदल जावे मगर हमारा फैसला न बदलेगा।

मर जायेंगे मगर हुजूर वाली बात पर अमल करेंगें

सुलह हुदैबिया मे बजाहिर दब रहे थे मगर सहाबा किराम रजि0 ने फैसला कर लिया कि जो कुछ हो मुहम्मद सल्ल0 के फैसले पर चलेंगें, अगरचे तबियतों पर बोझ पड़ रहा था और उस फैसले को कुबूल करना मौत मालूम हो रहा था और आप कोई वक्त ऐसा नही बता सकते कि आप सल्ल0 ने कहा हो और सहाबा किराम ने तामील न की हो मगर उस मौके पर सहाबा किराम को होश नही था, आप सल्ल0 इन्नालिल्लाह पढ़ रहे हैं कि आज मेरे साथी मेरी बात नही मान रहे हैं। हजरत उम्मे सलमा रजि0 ने कहा आप सर मुंडवा लें ये हो नही सकता कि आप अमल करें और सहाबा उस पर अमल न करे, जब आप सल्ल0 ने उस पर अमल किया तो फौरन सहाबा किराम हलक कराने बैठ गये किसी को होश नही था, हलक हो रहा है खाल छिल रही है और खून से कपड़े खराब हो रहें हैं मगर जब सहाबा ने आप सल्ल0 के हुक्मों पर जिन्दगी गुजारना तै कर लिया तो सूरह फतह नाजिल हुई।

गजवह खन्दक मे सहाबा ने तीन-तीन दिन फाकों पर सब्र किया और फैसला कर लिया कि मर जायेंगें मगर हुजूर सल्ल0 वाली बात पर अमल करेगें, तो हुजूर सल्ल0 ने कैसर व किसरा की हुकूमतों को कदमों में बताया, नबी करीम सल्ल0 ने ये तरतीब कायम की कि सहाबा किराम साल में चार-चार महीने उस कलिमें, नमाज को ले लेकर दुनियॉ में घूमें और बकिया आठ महीनों में आधा कमाने में लगायें और आधा वक्त मस्जिद मे कि ईमान मे, तालीम में और नमाज के बनाने में लगायें, मस्जिदों को आबाद करने का मौजू अल्लाह की नेमतों और रहमतों को खींचने वाला है। जब कोई मुसीबत आ जाये तो मस्जिद में जाकर अल्लाह तआला से मांगना चाहिए, इसलिए कि मस्जिद मरकज है जैसे दुनियॉ वालों ने अपनी हाजतों के पूरा करने के लिए मराकिज बनाये, शकर के लिए शकर के कारखाने बनाये और कपड़ों के लिए मिलें बनाई हैं, इसी तरह ये मस्जिदें ईमान व अमल की जरूरतें पूरी करने के मराकिज हैं हक तआला हमें यकीन नसीब फरमायें।

इस बयान की असल किताब बंगले वाली मस्जिद मे मौजूद है

बंगले वाली मस्जिद

जमातों को रूखसत करते वक्त फरमाया

13 सफर 1382 हिजरी

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

अम्बिया अलै0 के जरिये दुनियॉ मे दुआ वाला रास्ता चलाया गया जो खुदा को पसंद है, खुदा ने इस रास्ते पर चलने वालों की जिंदगी को बनाने और कामयाब करने का फैसला कर रखा है और एक रास्ता माल वाला है इस रास्ते पर चलने वालों की खुदा ने जिंदगी को बिगाड़ने और नाकाम करने का फैसला कर रखा है। इस तरह ये दो रास्ते हुए एक माल का रास्ता और एक दुआ का रास्ता और दोनो रास्ते एक दूसरे के मुकाबले पर हैं।

माल का रास्ता

महनत करके माल हासिल करे,
माल से अपने घर में सामान भरे,
और सामान से जिंदगी बनने का यकीन करे,
हालॉकि खुदा के यहॉ सातों जमीन व आसमान और इनके दरम्यान के सामान की कोई कीमत नही तो लाल किला और सफदरजंग की क्या कीमत है ? जिस तरह हम ये कहते हैं कि झोपड़े की कीमत नही ऐसे ही पार्लियामेंट की भी कोई कीमत नही। अल्लाह ने जिसको बेकीमत कहा है उसका बेकीमत होना तुम्हारे दिल में बैठ जाये।

दुआ का रास्ता

कीमती क्या है ? कि अल्लाह ने मुहम्मद सल्ल0 के आमाल को कीमती बतलाया हैं उनमें से एक-एक अमल पर इस सारी दुनिया से ज्यादा इनामात मिलेगें इसलिये यह यकीन सीखो कि यह अमल कीमती हैं। यकीन सीखने के लिये तुम दुआ के रास्ते पर मेहनत करो, दुआ के रास्ते की मेहनत ये है कि तुम चीजों व माल को अमल पर कुर्बान करते हुए इन अमलों को खुदा के सामने पेश करके दुआ करो।

आज एक बोरी गेहूँ कुरबान करके मिटटी में मिलाते हो तो एक बोरी की सैकड़ो बोरियां बन जाती है यह नमूना है अगर तुम चीजों को अमलों पर कुरबान करने वाले बन गये तो दुआ से काम बनाने वाले हो जाओगें मगर तुमने अमलों को चीजों पर कुरबान किया है कि यह खेती भी बेकीमती है यह गेहूं भी बेकीमती है, बेकीमत को बेकीमत के लिये कुर्बान किया इसलिए खुदा ने तुमको बेकीमत कर दिया। कल को घर में आग लग गयी, खून के मुकदमा में नाम आ गया तो अब दुआ मांगोगे पर तुम ने चीजों पर अमलों को कुरबान किया है, दुआ के लिये तुमने क्या किया है ? हॉ अगर तुम चीजों को अमल के लिये कुरबान करते तो दुआ कुबूल होती। मुहम्मद सल्ल0 के अमल हासिल करने के लिये पैसे को सच्चाई पर, अमानत पर, इन्साफ पर, दयानत पर कुरबान करो, ये है चीजों का अमल पर कुरबान करना। जब तुम्हारी निंगाह में पाखाने की कीमत नही है तो पाखाने को बदन पर मलने वाला कैसे कीमती हो जायेगा, जिसने दुनिया समेटी वह तो खुद ब खुद बेकीमत बन जायेगा।

सारे नबियों ने अपने-अपने जमाने में अपनी-अपनी उम्मत से कहा कि इस दुनिया की कीमत एक मच्छर के पर के बराबर नही अगर खुदा के यहॉ दुनिया की कीमत एक मच्छर के पर के बराबर भी होती तो काफिर को एक घूट पानी न मिलता। आज हमने कीमती चीज को निसार करके बेकीमत को अपने चारों तरफ लपेट लिया तो

हमारी हैसियत गिर गयी। अल्लाह कहते है कि मुझे रब मानकर मेरी इबादत करो तो चीजों को अमल पर कुर्बान करना सीखो, चीजें चीजें बनाने के लिये नही मिली हैं बल्कि चीजें अमल बनाने के लिये मिली हैं। यह चीजे जिनको तुम जानते हो आज हमारे अन्दर उसकी वकाअत बैठ गयी है, आज दुनिया पर मेहनत करते-करते उसकी वकाअत, उसकी हैसियत दिल में बैठ गयी है, इसकी वकाअत हमारे दिल से निकल कर मुहम्मद सल्ल0 वाले अमलों की हैसियत दिल में आ जाये। आज हमारी कश्ती भंवर में फंसी है अगर अल्लाह थोड़ा सा नाराजगी का इजहार कर दे तो सारी दुनिया हलाक हो जाये क्यों कि दुनियॉ मे तखरीब का माददा और तखरीब के हालात बहुत तैयार हो गये हैं, अब मसला लोह पीतल और सोने से आगे निकल गया है।

मेरे भाईयों ! तुम दावत के जरिये ईमान को सीखने की मेहनत करो, बैठकर सोचने के जरिये ईमान की मेहनत करो, तालीम और

अल्लाह के जिक्र में रहो, कुरआन की तिलावतों में हदीस मे आये हुए अजकार में रहो, तवाजो की मश्क करो, ये करने के काम

है। दुनिया समेट कर कोई बड़ा नही बनता इससे जो बड़ा बनने की कोशिश करता अल्लाह उसे छोटा बनाते है और जो छोटा बनने की कोशिश करता है अल्लाह उसे बड़ा बनाते है ये अल्लाह का जाब्ता है पर हम उल्टी ही चाल चलते हैं। जो खादिम बनता है अल्लाह उसे मखदमू बनाते है जो मखदूम बनना चाहता है अल्लाह उसे खादिम बनाते हैं, एक मकान पर जान लगायी थी उसकी वुकअत है दिल में, एक बकरी पर जान लगायी उसकी वुकअत है दिल मे, ईमान के लिये जान नही लगायी तो उसकी वुकअत नही है। जब कोई मुसीबतों का रोना रोया करे तो कह दिया करो कि जिस चीज को करने के लिये दुनियॉ मे भेजा गया था वो नही कर रहे इसी वजह से मुसीबतें आ रही है। जिंदगियों के बदलने का जब तक रूख नही पड़ेगा उस वक्त तक मसाइल नही बदलेगें, इसलिये अपनी जिंदगी को मोड़ो और दूसरों की जिंदगी को मोड़ने की कोशिश करो।

इस बयान की असल किताब बंगले वाली मस्जिद मे मौजूद है

हयातुस्सहाबा बाद नमाज इशा बंगले वाली मस्जिद

मेहनत के दो रास्ते

12 सफर 1382 हिजरी

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

मेरे भाईयों और दोस्तों ! मेहनत के दो रास्ते है, एक रास्ते मे दिखाई बहुत कुछ देता है लेकिन इन्सान नाकामियों का शिकार होता है और एक रास्ते मे दिखाई कुछ नही देता पर इन्सान कामयांबियों को पहुँचता है। दिखने वाले रास्ते मे मेहनत करके माल हासिल करना, माल से चीजें और चीजों से अपनी जिन्दगी के मसअलों को बनाना, ये रास्ता कदम-कदम पर दिखलायी देता है कि पैसा बढता है तो घर मे दिखलायी देता है, मकान और सामान, कपडे और चीजें सब दिखायी देंगी और उन्ही से परवरिश दिखायी देती रहेगी पर इस रास्ते की मुसीबतें छुपी रहेंगी, हॉ राहतें दिखायी देती रहेगी पर जिस दिन खुदा का अजाब मुतवज्जह होगा तो बीबी-बच्चों के दिल फाड दिये जायेगें या आग लग कर घर-दुकान का नक्शा ही खत्म हो जायेगा।

ये रास्ता बहुत घटिया है ये रास्ता खुदा को पसंद नही है कि चीजें ही दिल मे हों, चीजें ही ऑखों के सामने हों, इसी पर यकीन, इसी की मुहब्बत, उसूलन ये रास्ता अल्लाह ने अपने ना मानने वालों को दिया है। इस रास्ते मे अव्वल बनाते है और आखिर मे बिगाड़ते हैं, आखिरत ला महदूद है और दुनियॉ बहुत थोड़ी हैं।

दूसरा रास्ता इसके बिल्कुल मुकाबिल है और वो यह कि मेहनत करके हिदायत हासिल की जाये फिर हिदायत हासिल करके कामयाबी ली जाये लेकिन कदम-कदम पर इस रास्ते मे नाकामियॉ दिखायी देगीं, चीजो और माल की कमी दिखायी देगी। इस रास्ते के अन्दर आमाल कायम किये जायेगें, इस रास्ते मे कामयाबियॉ, राहत, इज्जत, हिफाजत छुपी हुई होंगी और नाकामियॉ खुली हुई होगी, लोग ताने देगें कि यही है अल्लाह वाले फिर इनके लिये किसी दिन अल्लाह तआला एकदम दरवाजा खोल देगें और बिगड़ी हुई जिन्दगी बना देगें।

माल का रास्ता और आमाल का रास्ता

माल का रास्ता और आमाल का रास्ता ये दो रास्ते मुकाबले के हैं। हॉ इस जमाने मे अब लोगों ने एक तीसरा रास्ता बना लिया है और वो ये कि मेहनत माल पर और इकरार आमाल पर, इस जमाने के मुसलमानो ने ये रास्ता बना लिया है कि तज्किरे अमल के करे, इकरार अमल का करे और जिन्दगी माल से बनाने की मेहनत करें। अल्लाह रब्बुल इज्जत ने भी तीसरे रास्ते वालो के वास्ते तीसरी किस्म रखी है, एक निरी आमाल वालीऔर एक निरी माल वालीऔर एक खल्त-मल्त जिन्दगी कि सारी मेहनत माल पर और थोड़ा सा वक्त आमाल पर। रिवाज के या कहने-सुनने या देखने के एतबार से कुछ अमल कर लिये, तीनों के साथ खुदा का मामला जुदागाना है,

जिनका नजरिया ये है कि मेहनत से माल, माल से चीजें और चीजों से जिन्दगी, उनकी पहली बनायेगें और बाद की बिगाडेगें।

जिनका नजरिया ये है कि मेहनत करके हिदायत, हिदायत से अमल और अमल से कामयाबी, इनकी पहली भी बनायेगें और बाद की भी बनायेगें। जब इनके अमल की मेहनत मुकम्मल हो जायेगी तो गैब से ऐसी सूरते जाहिर फरमायेगें कि माल वाले इनके पैरों मे पड जायेगें। मुल्क के जराअती, कारोबारी निजाम भी मुंतकिल कर देगे लेकिन ये तब होगा जब अमल वाले अमल के रास्ते से लेने पर आ जायें पर इस वक्त माल का रास्ता

चालू है और अमल के रास्ते से लेने का रास्ता खत्म हो गया है। इसलिये माल का रास्ता और अमल का रास्ता ये बिल्कुल मुकाबले मे है।

<u>इस बयान की असल किताब बंगले वाली मस्जिद मे मौजूद है</u>

बाद नमाज फज्र बंगले वाली मस्जिद

12 सफर 1382 हिजरी

माल पर मेहनत या हिदायत पर मेहनत

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

मेरे भाईयों-दोस्तों ! मेहनत की दो किस्मे हैं और हर किस्म मे मेहनत के दो दर्जे है, हर किस्म के साथ हक तआला शानुहु के मामलात जुदागाना है। एक किस्म तो वो है जो दुनियॉ मे रायज है कि पहले दर्जे मे मेहनत करके माल तक पहुंचना है,
माल पर यकीन करना,
माल से चीजें हासिल करना,
फिर चीजों को तर्तीब देकर, चीजों के नक्शों से पलना।

इसमे इन्सान का यकीन भी माल ही का है, तर्तीब इस्तेमाल भी माल ही के एतबार से है, अमल का मेयार भी माल ही के एतबार से हैं।

ये रास्ता इन्तेहाई रजील, इन्तेहाई घटिया और अल्लाह के यहां इन्तेहाई मबगूज है। इस रास्ते मे इन्सान को धोखा ये लगता है कि हम कामयाब बन रहे हैं और ये इसी से खुश होकर बस रात-दिन इसी की तर्तीब पर चलता रहता है कि जान लगा कर माल बढ़ाना और माल बढ़ा कर नक्शे बनाना, जब इन्सान गुलु के दर्जे मे पहॅुचता है तो तमाम अमाल का मेयार गलत हो जाता है और यकीन की तमाम हुदूद बिगड जाती है। अब इस इन्सान पर हक तआला शानुहु अजाब मुसल्लत करते ह कि सबसे पहले कामयाबी के हकायक से इसे महरूम कर देते है। इज्जत की शक्लों मे इसे अटका कर, जिल्लत मे मुब्तला कर दिया जाता है अगर इन हालात के बिगड़ने से इसकी ऑख नही खुलती तो अल्लाह जल्ला शानुहू उसकी चीजों को बिगाड़ते है।

अल्लाह-अल्लाह के रसूल और सारे दाना इन्सान इसे पहले दर्जे की नाकामी कहते है लेकिन ये इन्सान जब शक्लों की वजह से इसको नही समझता तो अल्लाह जल्लाशानुहू इस पर अब दूसरा रूख लाते हैं कि जमीन डूब गयी, बच्चे मरने लगे अगर अब भी इसकी समझ मे न आया तो फिर नाकामी वाली मौत आ जाती है और कब्र मे चीख मारता है जिसको मश्रिक से मग्रिब तक के सब जानवर सुनते है, हश्र का तो और भी सख्त मन्जर है।

हम सहारनपुर से मोटरकार मे बैठे आ रहे थे कि बहुत जोर की बारिश होने लगी डराइवर ने गाडी तेज कर दी। कार के सामने भैंस आ गयी, ब्रेक लगाते ही गाडी सडक से फिसल कर नीच गडडे मे गिर कर पेड़ से लटक गयी। डराईवर कोशिश करने लगा कि गाडी निकल जाये, जब की गाडी निकालने मे खतरा था पर वो कोशिश करता रहा हालॉकि नीचे बहुत गहरा गडडा था, जरा सा चूके कि मौत। यही हाल इन्सान का है कि अल्लाह की तरफ से हालात के झटके पर झटके पर य उसी मे कोशिश करता रहता है।

मेरे भाईयों ! मुसलमान एक तरफ तो इन सारी बातों का कायल है पर चल इसी रास्ते पर रहा है हालॉकि ये रास्ता गैर मुस्लिमों का है। दूसरा रास्ता जो इसके मुकाबले का है वो इससे बिल्कुल अलग है, इस रास्ते से उसका कहीं जोड़ नही है इस रास्ते मे मेहनत करके पहले हिदायत हासिल की जाती है। हिदायत के लिये इतनी मेहनत की जाये कि हिदायत मिल जाये, ये हिदायत माल के मुंकाबले मे एक माया है, इस माया को लेने के

लिये, माल की मेहनत के मुंकाबले मे हिदायत की मेहनत है। अब हिदायत के मिल जाने के बाद फिर एक मेहनत अमल पर की जायेगी जैसे माल के मिल जाने के बाद मेहनत की जाती है चीजों पर कि बाहर से चीजें ला-ला कर घर मे डालते हैं तो घर वाले भी मेहनत मे लग जाते है कि

कपडे सिल रहे हैं।

बिस्तर बन रहे है।

गोस्त भुन रहा है।

इसी तरह हिदायत मिलने के बाद आमाल पर मेहनत की जाती है कि 24 धन्टे के अपने अमल ठीक किये जाते है। इसमे मस्जिदों के, कमाई के, अदालती, मआशरती, खिलवत और जलवत के अमल ठीक करने पडते हैं, जब ये अमली मेहनत पूरी हो जाती है और इन्सान सर से लेकर पैर तक अमल का मेयार कायम कर लेता है तो अल्लाह जल्लाशानुहू इसे कामयाब करके दिखाते है फिर इसे ओहदे और माल भी देते है पर पहला मुकाबला यही है कि माल की मेहनत से अपने आपको निकाल कर हिदायत के लेने के

लिये मेहनत की जाये।

हिदायत किसका नाम है ?

जो चीजे माल से मिलती दिखायी देती है, वो सारी की सारी चीजे आमाल से मिलती दिखलायी देने लगें इसका नाम हिदायत है। मेहनत का मैदान अभी हमने माल को बना रखा है हिदायत को नही, हिदायत को तो हमने चिड़िया का बच्चा समझ रखा है। जब हम हिदायत वाली मेहनत करेगें तब हिदायत मिलेगी, हिदायत के मिलने पर अल्लाह जल्लाशानुहू हमे माल देगें, अल्लाह जल्लाशानुहू हमे चीजें देगें और इसी मेहनत पर कामयाबी देगें। इसलिये वो अमल जो हिदायत वाले अमल है जब हम उन अमलों पर मेहनत करेगें तब अल्लाह जल्लाशानुहू हमे हिदायत देगें। कुरआन पढो कुरआन हिदायत है, यह हिदायत की किताब है इसके अन्दर जो बतलाया गया है अगर वो तुम्हारे दिल मे आ गया तो समझो हिदायत मिल गयी और अगर नही आया तो नही मिली। कुरआन मे अव्वल तो अकवाल के जरिये सब कुछ आमाल से मिलना बतलाया है, अकवाल के जरिये ये बतलाया कि

माल से चीजें नही मिलती

चीजों से हिफाजत नही होती

चीजों से इज्जत नही मिलती

अल्लाह जल्लाशानुहू ही जिन्दगी बनाते है और वही बिगड़ते हैं, हिफाजत वही करते है और वही मुतमइन करते हैं। अल्लाह जल्लाशानुहू ने अपने अकवाल के अन्दर पूरी की पूरी कामयाबियॉ जो चीजों मे नजर आतीं है वो अमल मे बतला रखी है। पूरे कुरआन के अन्दर अव्वल से आखिर तक जिन्दगियों का बनाना और जिन्दगियों का बिगाड़ना, खुशखबरियॉ और धमकियॉ हैं। अक्सरियत थी पर अमल खराब थे तो जिन्दगी बिगाड़ दी, सनअत वाले थे पर अमल खराब थे तो सनअत वालो को खत्म कर दिया। इब्राहीम अलै0 और उनके साथियों के अमल अच्छे थे तो उनको कामयाब कर दिया

नमरूद की हुकुमत की जिन्दगी को क्यों बिगाड़ा ? इसलिये बिगाड़ा कि उनके अमल खराब थे, अल्लाह तआला ने हुजूर की तशरीफ आवरी तक सारी तारीख कुरआन मे बयान की है कि चीजों से कामयाबी नही होगी अमल से कामयाबी होगी, इसलिये हिदायत को हासिल करने के लिये मेहनत करनी पडेगी। एक मेहनत माल की है और एक मेहनत हिदायत की है, जहॉ दो का मुकाबला पड जाये वहां हिदायत वाली मेहनत कर ले, माल वाली

मेहनत छोड़ दे। जो बात कुरआन मे है वो बात हमारे दिल मे आये जैसे, ताकत इन्जेकशन मे है तो अब इन्सान ताकतवर कैसे होगा ? कि इन्सान ताकतवर तब होगा जब इन्जेकशन की तकलीफ उठा कर इन्जेकशन की दवा अपने अन्दर ले ले, अब अगर ये चारपाई पर पडा-पडा कहता रहे कि हमारे पास 1 हजार इन्जेकशन है तो इतना कहने से इसके अन्दर ताकत नही आयेगी। कुरआन मे हिदायत है तो हमारी जिन्दगी कैसे बन जाये ? हमारी जिन्दगी जब बनेगी जब हिदायत हमारे अन्दर आ जाये। इन्जेकशन लगने की तकलीफ से हम अलग हट जाये तो दवाई अन्दर न जायेगी, इसी तरह हिदायत की मेहनत से तकलीफ हो और हम भाग जाये तो हिदायत न मिलेगी। हिदायत रोशनी है, रोशनी मे हर चीज साफ-साफ दिखायी देती कि नमाज से, सच से, जिक्र से यूँ कामयाबी मिल जायेगी, इन्साफ से, दुआ मॉगने से यूँ हो जायेगा, ये सब कुछ हिदायत की रोशनी से दिखायी देगा। तवक्कुल पर-तक्वा पर-हक पर-हक की हिमायत करने पर ये होगा, पैसे से कुछ नही होता, वजारत से कुछ नही होगा।

वो दिखायी दे जो कुरआन दिखा रहा है इसके लिये कुरआन की रोशनी आपके दिल मे हो, आपको साफ- साफ दिखायी देता हो कि चीजों से कुछ नही होता अगर ये बात आ गयी तो समझो दिल मे हिदायत की रोशनी आ गयी। अब ये सारे बुरे आमाल छोड़ कर अच्छे अमल करेगा कि अमली मेहनत जल्दी-जल्दी होती है जैसे 100 रूपये हासिल करने मे बहुत देर लगती है पर सामान जल्दी-जल्दी लाकर डाल दिया जाता है। बेगम साहिबा ने कहा ! बाजार से सौदा ला दो तो ये मेहनत आधा-आधा घन्टा, पन्दरह-पन्दरह मिनट मे होती है, इसी तरह हिदायत मिलने के बाद जो मेहनते हैं वो आसान है। हिदायत मिलने के बाद मआशरती मेहनत मे बहुत जल्दी तब्दीली पैदा हो जायेगी, ये हैं हिदायत पाने वाले। जो इतनी मेहनत कर जाये कि आजमाईशों मे से निकल जाये इस सिफत के साथ कि जब माल की मेहनत और हिदायत की मेहनत का मुकाबला पडे तो माल की मेहनत छोड़ दे। माल की मेहनत का मुकाबला खत्म हो जाये तो माल की मेहनत करे।

माल की हैसियत क्या है ? इसका दर्जा यही है कि हिदायत की मेहनत न हो रही हो तो माल की मेहनत करोगे। हिदायत की मेहनत क्या है ? हिदायत की मेहनत के लिये मस्जिदे बनवाई और अम्बिया वाली सारी बरकात, अनवारात, और मददे उन अमलों पर है जो हिदायत के लिये दिये गये हैं। हमारे जितने तबकात है, मजदूरी, मुलाजमत, हुकूमत के इन सबके लिये पहली मेहनत यही है और ये सारी लाइनों में चलने की घुटटी है अगर यह घुटटी नही पी तो माल वाली मेहनत को मुकददम कर देगा और हिदायत वाली मेहनत को मुअख्खर कर देगा, वह अमल जिनकी मेहनत करने से अल्लाह पाक आंखों की रोशनी अता फरमायेगें और आंख जो चीजें मे देखती हैं अब इसे वो अमलों में दिखलायी देगा।

सारे नबियों की मेहनत का नूर दावत है यह सारे नबियों की मुस्तरका मेहनत है सबसे पहले अल्लाह ने दावत दी

إِنَّنِي أَنَا اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا أَنَا فَاعْبُدْنِي

अल्लाह ने दावत दी मूसा अलै0 को फिर यही दावत मूसा अलै0 ने फिरऔन का जाकर बताया। अल्लाह ने मूसा अलै0 को सबसे पहले लकड़ी से अजदहा और अजदहा से लकड़ी बनाकर दिखा दिया बाद मे उसी लकड़ी से पत्थर से बारह चस्में निकाल दिये और उसी लकड़ी से समन्दर मे 12 रास्ते बना दिये।

<u>इस बयान की असल किताब बंगले वाली मस्जिद मे मौजूद है</u>

बाद नमाज असर बंगले वाली मस्जिद

आजा जवारे के अमल

12 सफर 1382 हिजरो

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

मेरे भाईयों दोस्तों ! इन्सान के पास सबसे ज्यादा सरमाया अमल का है और चौबीस घंटे मे इन्सान की जितनी मिकदार अमल की तैयार होती है उतनी कोई चीज तैयार नही होती, देखने, बोलने, सुनने मे आजा जवारे के अमल, इन्ही सब आमाल के ऐतबार से इन्सान का यकीन भी तैयार होता है। जिन्दिगियों का ताल्लुक हकीकत के एतबार से इन्सान के आमाल से है अगर इन्सान अमल की तरफ इल्तिफात न करे सिर्फ चीजों को सामने रखकर उन्ही के ऐतबार से चलता रहे तो इन्सान के अमल का सरमाया बिगड़ जाता है फिर उसके आमाल की खराबी रंग लाती है कि जिन्दगियों में बिगाड़ पैदा होता है, घर का सरमाया हाथ से जाता रहता है जैसे डाका पड़ जाये या फाका आ जाये तो कभी यह शक्ल होती है और कभी यह शक्ल होती है कि सबका सब हाथ में है पर न बीवी के साथ मजा आता है न बच्चों के साथ मजा आता है, इन्सान के आमाल के बिगड़ जाने पर ही जिन्दगियों में बिगाड़ आता है अगर अमल की तरफ से बिल्कुल तवज्जों हटा दी जाये तो जिंदगी किसी न किसी वक्त बिगड़ कर रहती है अगर अल्लाह तौफीक दे यह बात समझ में आ जाये और आदमी अपना जहन यह बनाले कि मेरा अमल जो जाती जौहर है हमे उसे बनाना है और जो खारजी नक्से है उनको अमल के सरमाये से हयात देना है, अब इज्जत समझे अमल को, असल करार दे अमल को, क्यों कि अमल इन्सान की जात में असरात डालता है अगर तबियत में ये बात आ रही है तो उसके अन्दरून में खुशबु और नूर पैदा होता है और जब इन्सान का अमल ठीक न हो तो उसके अन्दरून में बदबू पैदा होती है, गफलत पैदा होती है, इन्सान चीजों के बनाने में चाहे जितनी मेहनत करे, उतनी चीजे नही बना सकता जितने अमल बना सकता है अगर अमल बनाने पर आ जाये तो चीज उतनी नही बना सकता। चीजें मुस्तिकल नही होती, अमल मुस्तकिल हो सकता है।

आप अगर किसी दूसरे मुल्क जाओ तो आंख पर कस्टम नही लगता पर चीजों में बहुत सा हिस्सा वो है जो आप दूसरे मुल्क नही ले जा सकते। मकान नही ले जा सकते, कारखाना नही ले जा सकते, बाग नही ले जा सकते कुछ रूपये ले जा सकते है बाकी नहो ले जा सकते। आप अगर अपने अमलों को ले जाना चाहे तो पूरे के पूरे बिला कस्टम हर मुल्क के अन्दर ले जा सकते हैं। इन्सान अमल के जरिये कामयाब बनना सीख जाये तो जहां जाये मजे की जिंदगी गुजारेगा, शहरों मे होगा, जंगल मे होगा, जहॉ होगा कामयाब होगा, कब्र में, बरजख में, महशर में, कामयाब होगा। जुबान लेकर जा रहा है तो जुबान की गालियां भी और जिक्र भी ले जायेगा, अमल को जितना बना सकता है उतना किसी और चीज को नही बना सकता और अमल को लेकर जितना फिर सकता है उतना किसी और चीज को लेकर नही फिर सकता है।

अंम्बिया की जो लाइन है वह सारी इसी के लिये है कि खुदा जिंदगी को बनाता और बिगाड़ता है पर अमलों पर बनाता और बिगाड़ता है। हजरत नूह के जमाने में अक्सरियत डूब कर खत्म हो गयी कुरआन में क्या सबब बताया कि उनके अमल खराब थे। अकसरियत के पास कश्तियां थी उनके पास सिर्फ एक कश्ती थी, जिन कश्तियों में खराब अमल वाले थे वह डूब गयी। अक्सरियत के पास लाखो बागात थे वह भी डूबो कर खत्म कर

दिये गये, हजरत नूह अलै0 के पास एक छोटी नाव थी जो आज तक चल रही है। हमारे पास कोई जायदाद न रहे नाकामी की दलील नही है अगर जायदाद हाथ में आ जाये तो कामयाबी की दलील नही, अमल खराब होगे नाकाम होगें, अमल सही होगें कामयाबी मिलेगी।

कौमे समूद के अमल खराब थे कौम शनअतकारी में नाकाम हो गयी, सारी तफसील का खुलासा यह है कि चीजें अमल की तकरीब है, कामयाबी या नाकामी की बुनियाद अमल है, अमल होने में चीज का होना न होना बराबर है। हमारे पास अगर रोटी नही है तो सब्र का अमल करेगें अल्लाह इस अमल पर हमे रोटी देगें, रोटी है तो खाकर बाकी रख देगें या तकसीम करेगें। चीजों का होना भी तकरीबे अमल है और चीजों का न होना भी तकरीबे अमल है, अमल बन गया तो कामयाबी मिल जायेगी। कायनात चीजों की मशीन है, इसका मौजू चीजों का बनना है देखने में यह नजर आता है कि छोटी मशीन बड़ी मशीन के ताबे है हकीकत में बड़ी मशीन इस छोटी मशीन के ताबे है अगर छोटी मशीन के अमल बेहतर हो जायेगे तो आलम के अन्दर चोजों का वजूद भी बढ़ेगा, हिफाजत, ताकत, सेहत और तकसीम भी बढ़ जायेगी। जिसको पेट भरने के लिये बनाया है उससें पेट भरना पड़ेगा अगर अमल खराब हो जाये तो चीजे घटनी शुरू हो जायेगी, जलजला आया, सैलाब आया, हिफाजत वाली चीजों में से हिफाजत निकाल ली जाती ह, सेहत वाली चीजों में से सेहत कम कर दी जाती है, अमल बिल्कुल खराब हो जाये तो सेहत की चीजों में से सेहत खत्म कर दी
जाती है।

अम्बिया तशरीफ लाये और पहले बतलाया कि अमल पर यह होता है, अमल की खराबी पर जिंदगी बिगड़ती है और अमल की सेहत पर जिंदगियां बनती है। चीजो की मशीन से जो कुछ बनकर तैयार हुआ वह चीजें हाथ में है और इन्सानी मशीन से जो चीजें तैयार हुई वह खराब तो खुदा अब जिंदगी को बिगाड़ कर दिखलाएगे। एक तरफ काएनाती मशीन के नक्शे हाथ में है और दूसरी तरफ इन्सानी मशीन की चीज अमल तो जिनके अमल अच्छे है उनको कामयाब करके दिखाया और जिनके अमल खराब थे उनकी जिंदगी बिगाड़ा। इसी बुनियाद को सारी दुनिया में चलाने के लिये बएक वक्त मुहम्मद सल्ल0 को तमाम जुबानों, तमाम मुल्कों, तमाम कच्चे और पक्के मकानों, कवी और कमजोर के लिये नबी बनाकर भेज दिया। अब अगर इस दुनिया में कामयाबी, इन्साफ, रहम, अखलाक मुहब्बत की हकीकत, खून की हिफाजत के मुबारक दिन को देखना चाहते हो कि सैलाब न आये, लहलहाते बागात को देखना चाहते हो कि पैदावार हजारों गुनी बढ़ जाये तो अमल पर मेहनत का मैदान कायम करो, अम्बिया ने कभी चीजों पर मेहनत नही की बल्कि अमल पर चीजें दिलवाकर दिखलाई।

हजरत सुलेमान अलै0 ने अमल से मुल्क लेकर दिखलाया छोटी से हुकुमत में लम्बा चौड़ा खर्चा करके अजीब किस्म के घोड़े मंगवाये, उनके देखने में मस्त हुए और नमाज का ख्याल न रहा तो नमाज कजा, हजरत सुलेमान अलै0 खिलवत में जाकर रोये कि अमल मालिक की मंशा के खिलाफ हो गया तो खुदा ने सुलेमान अलै0 का कुसूर माफ कर दिया कि अब मांगों क्या मांगते हो तो कहा !"ऐ खुदा ऐसा मुल्क मांगता हूं जो मुझ से पहले न बाद किसी को मिले"। ऐ मुल्क परस्तों और मुल्क के दीवानों, देख लो अगर अमल करके मुल्क मांगें तो मुल्क यूं मिलता है। हजरत सुलेमान अलै0 का तख्त जा रहा है, परिन्दों ने साया कर रखा है नीचे एक आदमी की जुबान से निकल गया अल्लाहु अकबर कैसा मुल्क दिया है। हवा ने जासूसी की तो कहा ! मेरा तख्त उतारों और उस आदमी को पकड़ लाओं, क्योंजी तुमने हमारे बारे में क्या कहा ! हुजूर मैने तो कुछ न कहा मैने तो सिर्फ यह कहा अल्लाहु अकबर क्या मुल्क है तो फरमाया ! तू इस अल्लाहु अकबर कहने को क्या समझता है,

खुदा पाक की कसम ! एक दफा अल्लाह कहने में जो मजा आता है वह इस सारी दुनिया की हुकूमत में नही है।

हजरत अययूब अलै0 ने अमल पर दिखाया कि घरेलू जिंदगी यूं बनती है, अमल वाला इन्सान जिसने अपने अमल का मेयार इतना कायम कर लिया हो कि हर मशक्कत बर्दाश्त करता हो लेकिन अमल को बिगड़ने नही देता कि बदन से निकले हुए कीड़ों को बदन मे डालते रहते थे कि हमारे खुदा ने भेजा है, एक दिन रोए कि चीजों पर कभी न रोये थे, जान की तकलीफ पर न रोये थे, उस दिन रोये जिस दिन खटका हुआ कि शैतान हमारे यकीन और अमल पर डाका डालने खड़ा हो गया।

एक रिवायत में यह है उनकी बीवी मजदूरी करके लाया करती थी शैतान ने सबके घर में जाकर कह दिया कि बीमारी न फैल जाये तो इन्हे कहीं मजदूरी न मिली। रोटी लाकर खिलाई हजरत अययूब ने दूसरे दिन पूछा ! ऐ बीवी रोटी कहां से लाई थीं ? बीवी रोने लगी अपना रूपटटा हटाया दो हिस्से बाल गायब, हजरत अययूब अलै0 रोने लगे एक रिवायत में यह ह कि शैतान ने पिछला सारा नुकसान दिखलाया कि यह बला इस वजह से आयी कि अययूब ने मुझे न माना, मै यूं न कहूं कि मुझे अल्लाह की तरह माने, मै तो बस यूं कहूं कि थोड़ा सा मुझे भी इस आलम के निजाम में शरीक कर ले, थोड़ा सा अमल मेरे लिये भी कर ले पर अययूब अलै0 ने सारे नक्शो की, चीजों की, जान की, माल की, आल की परवाह नक्शे के मुकाबले में निकाल दी तब अल्लाह ने पहला सारा नक्शा उन्हे वापस कर दिया बाकायदा सोना बरसा, टिडियों की शक्ल में बरसा था, अययूब हिर्स करते थे आप की नेमत की कदर करता हूं। इसलिये बगैर चीजों के अमल पर जिंदगी बनती है और चीजों के अन्दर अमल की खराबी पर जिंदगी बिगड़ती है, कारून को घंसा कर दिखला रहे हैं।

इंसानियात की मेहनतों के रूख को मोड़ने के लिये हूजूर सल्ल0 की दुनिया में तशरीफ आवरी हुई, आप सारी दुनिया के इंसानों को हिदायत के अमल की तरफ मोड़ने के लिये तशरीफ लाये इसी के लिये मस्जिदे बनायी गयी, यह मस्जिदे यकीन बदलने के, इल्म के और खुदा के ध्यान वाली नमाजों के अमल के लिये बनी थी। दुनियॉ में जितने किस्म के आदमी बसते है सबके लिये एक आवाज अल्लाहु अकबर यानी जो कुछ तुम देख रहे हो यह बहुत छोटा है, इससे किसी दरजे में भी कुछ नही होता जो बड़ा है उसे सब कुछ होता ओर वो अपनी जात से करता है। पानी से नही होता बल्कि उस खुदा की कुदरत से होता है जिस खुदा की कुदरत से पानी बना है, जहां तुम देखते हो होना, होना वहां से ताल्लुक नही रखता कुदरत से ताल्लुक रखता है।

सिफात का सिफात से ताल्लुक है, पैदा करना सिफत है, पैदा करने का ताल्लुक अल्लाह की कुदरत से है, पैदा करने की सिफत चीज से नही है, पैदा करने की सिफत कुदरत से है। छोटे से कुछ नही होता बड़ा करता है, वह अपनी कुदरत की सिफत से बीमार करता ह और अपनी कुदरत की सिफत से सेहत देता है। अपनी कुदरत से चाहे आग में जलाये या अपनी कुदरत से चाहे आग को गुलजार बना दे। तिजारते, मिल, वजारते, ऐंटम, राकेट, बहुत छोटे हैं, अल्लाह बहुत बड़े है। जो छोटा है उससे होता ही नही जो बड़ा है उससे होगा ''अल्लाहु अहद'' और तो और सब उसके मोहताज है उसको किसी की जरूरत नही है, अब जो बड़ा है और करता है उसकी तहकीक करो,

खुदा ने अपने जाब्ते बतलाने के लिये हजरत मुहम्मद सल्ल0 को रसूल बनाकर भेजा है कि वजीर के साथ किस अमल पर क्या करेगे, ताजिरों को कौन से अमल पर कामयाब करेगें, कौन से अमल पर नाकाम करेगें इसी को बतलाने के लिये अल्लाह ने मुहम्मद सल्ल0 को भेजा है। मुहम्मद सल्ल0 का मौजू यह नही था कि सोने चॉदी को बतलाये कि नही सोना-चॉदी-हीरे-मोती से कुछ नही होता, तुझे जो इन चीजों मे नजर आ रहा है, यह तेरे

देखने का नुक्स है, इसी नुक्स को दूर करने के लिये मुहम्मद सल्ल0 को भेजा। आज इस जमाने में शोर शराबा ज्यादा हो गया तो अल्लाह ने अमल ठीक करने के लिये लाउडिस्पीकर लगवा दिये, कान में आवाज पहुंचा दी कि नक्शो को छोडकर आ जाये, अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर की आवाज लगवा दी।

अब अमल ठीक कैसे होगें ?

क्यों कि नमाज खुद दूसरे अमलों पर मौकूफ है अगर दूसरे अमलों को किये बगैर नमाज पढ़ी जायेगी तो नमाज का तसव्वुर कायम होगा हकीकत न आयेगी। आप सारी तारीख से आंख बन्द करके यूं कहे कि खाली नमाज से क्या होता है ? तो मै भी यह कहता हूं कि ईमान के सीखे बगैर खाली नमाज से क्या होगा। मुहम्मद सल्ल0 ने नमाज से पहले जो अमल बतलाये हैं वह अमल करो, लोग कहते हैं कि काम कराने के लिये वजीर का ताअल्लुक चाहिए तो वजीर का ताल्लुक और नमाज का क्या जोड़। पाखाना और फूल को मिला दिया फ्ल की हैसियत खत्म हो गयी, जहां वजीर से नमाज का जोड़ा बिठाया बस नमाज की जान निकल गयी, जब पैसा और नमाज मिला दी तो नमाज की जान निकल गयी। नमाज के लिये तीन मेहनते पहले हैं और तीन मेहनते हैं बाद में पहली तीन मेहनते,

1 यकीन बदलने की,

2 इल्म की,

3 ध्यान की,

सबसे पहले यकीन बदलने की मेहनत करो इसलिये कि एक यकीन देखकर पैदा होता है और एक यकीन सुनकर पैदा होता है। देखकर क्या यकीन बनेगा ? कि हुकूमत से यह होगा, चीजों से यह होगा, माल से यह होगा और एक यकीन सुनकर पैदा होता है, क्या सुनकर यकीन बनाना ? कि अम्बिया की गैबी मददों के वाकियात को, सवाब और अजाब, जन्नत और दोजख को, फरिश्तों के गैबी निजाम को सुनकर इनका यकीन बनाना है, इन्हे मस्जिद में बैठकर इतना सुनो कि जब कोई चीज देखो तो सुनने वाला यकीन सामने आ जाये। वजीर जा रहा है तुमने बाजार मे उसे देखा, तुमने सुन रखा था कि हुकुमत से कुछ नही होता अब ऐसा सुनने का यकीन गालिब आ गया कि तुम्हे ये ख्याल आ गया कि इससे कुछ नही होता तो अब अब सुनना और बढ़ाओ, खूब गौर से अल्लाह के सामने पेश होने को और उनके अजाब को, फिरऔनी हुकूमत की डूबने की नियत करक सुनो, गौर से सुनो कि तुम्हारे अन्दर का यकीन बाहर के यकीन को फेंक कर मारे।

मक्का के अन्दर सहाबा इकराम ने जो सबसे पहले मेहनत की है वो यकीन की मेहनत है। मुशाहदे के मुकाबले में यकीन की मेहनत करनी पड़ती है, अबुजहल कह रहा है तुम कहते हो लात और उज्जा कुछ नही करते पर हम लात-उज्जा के मानने वाले हैं, वो सब कुछ कर देगें, मार रहे हैं, पीट रहे हैं पर सहाबा कह रहे है कि अल्लाह हमारा इम्तिहान ले रहे है अल्लाह जब करने पर आ जायेगे सब कुछ कर देगे, एकदम से पलट देगें।

इसी तरह एक इल्म सुनकर आता है और एक इल्म देखकर आता है तुम मस्जिद में बैठो यहॉ कुरआन व हदीस को सुनकर इनका इल्म हासिल करो। देखकर ये इल्म आता है कि सोने से ये होगा, घी से ये होगा, दूध से ये होगा, दो चीजों को मिला देने से ये होगा, इस चीज से ये बनेगा और ये बिगड़ेगा। तुम मस्जिद में बैठकर यह इल्म हासिल करो कि अमल से क्या होता है। यकीन के मुकाबले में यकीन की मेहनत, देखने वाले इल्म के मुकाबले में सुनने वाले इल्म की मेहनत करो।

ऐसे ही एक ध्यान देखकर बनता है और एक ध्यान गौर व फिक्र से बनता है, कोठी देख ली उसका ध्यान आ गया, तुम इतना अल्लाह का तज्किरा करके गौर व फिक्र करो कि तुम्हारी जुबान के बोल उसके ध्यान से दिल मे

भर जाये कि देख रहे हो औरत को पर ध्यान आ रहा है औरत को बनाने वाले अल्लाह का, देख रहे हो चॉद को और ध्यान आ रहा चॉद को बनाने वाले अल्लाह का अगर नमाज पढ़ो यह यकीन हो कि हमारो नमाज के रूकू कायदे सज्दे से अल्लाह राजी होगें जो मागूंगा कुदरत से देगें तो जिस्म के एक-एक जुज को इल्म की शक्ल पर ले आओ। जब अल्लाह का ध्यान आ जाये तो यह नमाज तुम्हे कामयाबी दिलवायेगी, ईमान की मेहनत करेगें तो मेरे अल्लाह मेंरे लिये रिज्क के दरवाजे खोलेगा, इल्म की, ध्यान की मश्क कर रहे हो, आवाज लगी थी नमाज के लिये कि आ जाओ कामयाबी की तरफ अब यह यकीन बना कि कमाई बहुत छोटी है अल्लाह बड़े है तो नमाज से मिलना शुरू हो जायेगा नमाज से लेते रहना और बढ़ते रहना।

इसके बाद भी तीन मेहनते करनी है 1 कमाई के आमाल, 2 घरेलू जिंदगी के अमल और 3 माशरत के अमल ठीक करो, कमाई को ऐसा बनाओ जैसी कि कमाई वाले की नमाज अल्लाह तआला कुबूल करते हैं। अब तीनों चीजों को कमाई के अन्दर ले जाओ कि

1 ईमान के साथ कमांऊंगा तो अल्लाह देगा

2 इल्म का पाबन्द बनकर कमाऊंगा तो अल्लाह देगा

3 ध्यान के साथ कमांऊंगा तो अल्लाह देगा

जब पैसा हाथ में आ जाये तो ईमान को, इल्म को, खुदा के ध्यान को ले आओ,

घर पर खुदा कितना पैसा खुदा खर्च करने को कहते हैं ?

कितना अपने पर खर्च करने को कहते है?

कौमियत से माशरत को हटाओ, पार्टी बन्दी से माअशरत हटाओ, तुम पार्टी के अंधे बनकर साथी न बनो अगर मुसलमान मजलूम है तो साथी मुसलमान के बनो और अगर मुसलमान जालिम है तो साथी गैरमुस्लिम के बनो, जिसके चार थप्पड़ लगे है जुलमन चाहे कम्युन्सिट हो हम तो उसके साथ होगें और मुसलमान के चार थप्पड़ लगवायेगें, पांच नही लगने देगें। हर जुबान-हर कौम-हर मजहब से हमदर्दी रखने वाले बनो फिर इस नमाज पर जो मांगोगे वह मिलेगा। यह न कहो कि खाली नमाज से क्या होगा ? मै यह कहता हूं जैसी खाली नमाज तुम पढ़ते हो उस नमाज से क्या होगा ?

इस बयान की असल किताब बंगले वाली मस्जिद मे मौजूद है

बाद नमाज फज्र बंगले वाली मस्जिद

कामयाबी अल्लाह के हाथों में है

3 मोहर्रम 1382 हिजरी

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

मेरे भाइयों और दोस्तो ! जिस तरह जिस्म के एक-एक हिस्से में रूह शरायत किये हुए है उसो तरह जमीन, आसमान और उसके अन्दर के नक्शों मे अल्लाह की माशियत और उसके इरादे शरायत किये हुए है, जिस तरह इन्सान के जिस्म पर जो कुछ होगा वह रूह के ताअल्लुक से होगा अगर स्याह बाल बन रहा है तो रूह के ताल्लुक से और अगर खाल में कोई बात है तो वह भी रूह के ताल्लुक से और इन्सान का बढ़ना इसका नशो नुमा, जिस तरह रूह से ताल्लुक रखता है इसी तरह सातों आसमान व जमीन में जितने नक्शे है चाहे वह सियासी हो या हुकुमती उनमें अल्लाह की माशियत और इरादे फैले हुए हैं, उनसे वह होगा जो अल्लाह चाहेगें। जिसकी जिंदगी को बनाना चाहेगें बना देगें और जिसको बिगाड़ना चाहेगें बिगाड़ देगें

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

जो वह चाहेगें वह होगा और अगर यह सब न हो तब भी जो अल्लाह चाहेगें वह होगा अगर एक शख्स के पास इज्जत व हिफाजत की कोई शक्ल नही है सिर्फ शक्ल इंसानी है, उस पर भो अल्लाह की माशियत फैली हुयी है, चाहेगें इज्जत देगें, चाहेगें महबूब बना देगें, इस एक शक्ल पर अल्लाह जो चाहेगें वह होगा।

इन्सानों को अपने मसलों के हल का धोका लगता है कि यह मसला हल हो गया कि बीमारी आयी इसने दवा खायी और बीमारी दूर हो गयी, भूख आयो इसने खाना खाया भूख दूर हो गयी, ये मसले का हल नही है इसलिये कि बीमारी फिर आयेगी, भूख फिर आयेगी सारा मुल्क भी हाथ में हो तो भी ये मसाएल के हल का धोखा है कि यह कामयाबी नही नाकामी है। हुकूमत की शक्ले हाथ में नही मगर अल्लाह ने सेहत व आफियत से नवाज दिया तो यूं कहा जायेगा कि यह कामयाब है मगर कामयाबी खाली मुल्क व माल की शक्लें हासिल करने से नही होती और न उनके जाते रहने से बल्कि कामयाबी अल्लाह के हाथों में है यही हक तआला शानुहु ने हमें दिखलाया है।

हजरत आदम अलै0 के पास कोई शक्ल नही खाली अपना वजूद पर अल्लाह ने चाहा तो हजरत हव्वा अलै0 को बना दिया, जन्नत को बना दिया और जब हक तआला शानुहु ने चाहा तो दोनो को बिगाड़ दिया। जब आदमी अपनी अक्ल पर आता है बस वहीं मार खाता है कि दोनो जन्नत मे मजे कर रहे थे, बस एक दरख्त से रोक दिया कि उसे मत खाओ, इधर शैतान मौके की तलाश मे था कि हक तआला ने मुझे तो अपना खलीफा बनाया नही हांलाकि मै इबादत गुजार था अगर हक तआला ने किसी फरिश्ते का सज्दे करने को कहा होता तब पर भी ठीक था मगर यह आदम मिटटी से बने और बगैर इबादत किये हुए, उनको सज्दा ? उसके दिल में हसद की आग लग गयी कि म तो डूबा अब उन्हे भी डूबाउंगा, मौका मिलते ही हव्वा के पास चला गया और कहा अल्लाह ने तुम लोगों को इस दरख्त के खाने से क्यों रोक दिया कि उसे मत खाओ ?

हव्वा ने कहा, मुझे नही पता।

उसने कहा कि मुझे पता है कि क्यों रोक दिया, इसकी वजह यह है कि हक तआला किसी दिन तुम लोगों को जन्नत से निकाल देगें अगर इसे खालोगी तो यहॉ मुस्तकिल रहोगी इतना कहकर शैतान वहॉ से चला गया। इधर

हजरत हव्वा, आदम अलै0 के पीछे पड़ गयी और उनसे कहा अगर इस दरख्त के कुछ दाने खालो तो हम मुस्तकिल जन्नती बन जायेगें, इन्होने कहा हम ऐसा न करेगें ये बहुत गलत बात है कि अल्लाह ने करम किया जन्नत अता फरमाई। ये सुनकर हजरत हव्वा ने औरतों वाले जितने हरबे होते है वह सब इस्तेमाल किये, हजरत आदम ने मनाना चाहा मगर वह न मानी चुनांचे इन्होने चंद दाने खा लिये मगर अल्लाह तआला ने तय कर रखा था जब तक यह हमारा कहना मानेगें यानी इसे न खायेगें तब तक जन्नत में रखेगें वरना निकाल देगें पर शैतान उल्टी ही पढ़ावे इसीलिये अल्लाह तआला ने हजरत आदम अलै0 का बहुत तज्किरा किया है कि हम तो तुम्हारे पालने वाले है मगर यह हमेशा उल्टो पुल्टी पढ़ायेगा इसलिये देख लो तुम्हारे अब्बाजी के साथ ऐसा किया।

जिस तरह हजरत आदम और हव्वा की जिंदगी सिर्फ एक हुक्म के तोड़ने से मुसीबतों मे आयी उसी तरह जब कोई इन्सान अल्लाह तआला का हुक्म तोड़ेगा तो फिर उस पर मुसीबतें आती है जैसे हव्वा और आदम क ऊपर आयी, अब जन्नत के कपड़े उतारकर एक को मश्रिक में नंगा डाला और एक को मगिरब में और कहा कि जाओ जन्नत से महरूम। इस तरह 40 साल दोनो मियां बीवी के अलग अलग गुजरे यानी सालों का चिल्ला एक हुक्म तोड़ने पर, न कपड़ा, न खाना कुछ नही रात भर रोते फिरते कि अल्लाह का हुक्म टूट गया। 40 साल तक हजामत, नाखून और कंघी करने का वक्त न आया, जब 40 साल तक रोते रहे तो अल्लाह को रहम आया और उनका रूख बैतुल्लाह की तरफ कर दिया जहां लोग हज को जाते है। बाल खूब बढ़े हुए हुए थे जिसकी वजह से दोनों ने एक दूसरे को न पहचाना बस दोनो एक दूसरे की हरकत देख रहे थे, यहां तक कि दोनो अरफात के मैदान में दाखिल हो गये। जब करीब हुए तो दोनो ने एक दूसरे को पहचाना लिया फिर दोनो एक दूसरे को लिपट कर रोये दोनो ने हाथ उठाकर अराफात के मैदान मे दुआ की कि ऐ हमारे रब अगर आपने हम लोगों की मग्फिरत न फरमायी और हमसे राजी न हुए तो हम नुकसान उठाने वालों में होगें। अल्लाह ने माफ कर दिया और कहा जाओ मगर अब हमारा हुक्म न तोड़ना चाहे तुम्हारा खाना जाये, जमीन जाये, मगर हुक्म हाथ से न जाये।

सारे इन्सानों के लिये कयामत तक हक तआला का यही इरादा और जाब्ता है, दोनो जहॉ के मजे और कामयाबी पर हुक्म सामने रखकर चलियो, हॉ यह शैतान तुम्हारे पीछे पड़ा रहेगा और कयामत तक यही समझायेगा कि अगर ऐसा करोगे तो यह नक्शा बिगड़ जायेगा। जब इन्सान शक्लों को सामने रखकर चलता है तब हुक्म पूरा नही कर पाता, हिन्दुस्तानियों ने 50 साल आजादी की जददो-जहद की कि खून की हिफाजत हो जायेगी, अमन हो जायेगा, आफियत हो जायेगी, सुख मिल जायेगा, चैन मिल जायेगा, किराये सस्ते हो जायेगें, मोटरे सस्ती हो जायेगीं, कस्टम और टैक्स भी न होगा, ये अग्रेंज इतना टक्स लेते हैं आजादी के बाद ये तुम्हारा ही मुल्क होगा फिर जहां चाहो कूदते फिरोगे पर अल्लाह ने इन्हे यह दिखाला दिया कि शक्लों से नही होता लिहाजा इन्हे हिन्दुस्तान मिल गया उन्हे पाकिस्तान मिल गया।

अब दिखलाओ रेलवे के किराये कितने सस्ते हुए ?

टैक्सों में कितनी कमी आयी ?

अब मामला पहले से भी दस हाथ आगे, आज कहते हैं कि हम तो तुम्हारे भाई है पर पैसा तुम्हारा नही हमारा है, इसे बाहर नही ले जा सकते, अब सेठ साहब 75 रूपये लिये हुए है जैसे 75 करोड़ हो, ये शक्लों में कामयाबियॉ समझते है हालॉकि खुदा शक्ले देकर भी चाहे तो नाकाम कर दे कोठी की, बाग की, शक्ल भी दे दे,

शक्ले न हो तो वह जो चाहे वह हो जायेगा। शक्ले दूसरों के पास हो तो वह जो उसके लिये चाहेगा और जो तुम्हारे लिये चाहेगा हो जायेगा।

शक्लें चाहे हो या न हो, दोस्त के पास हो या दुश्मन के पास हो, इन शक्लों से वह होगा जो अल्लाह की चाह होगी, चाहे पक्के मकान की शक्ल हो जाये, शक्ल से न इज्जत होगी न जिल्लत होगी, अल्लाह के चाहने से हिफाजत होगी, अल्लाह के चाहने से खून बहेगा, शक्लों की अहमियत खत्म हो गयी, अब इस बात पर गौर करना पड़ेगा कि अल्लाह रब्बुल इज्जत क्या चाहते हैं ? तिजारत की शक्ले चाहे औरों के पास चली जाये कोई परवाह नही, जिस तरह पूरे मुल्क ने जो चाहा वह नही हुआ, इसी तरह मुल्क के अन्दर की शक्लों सें जो तुम चाहोगे वह न होगा फिर खून के आंसू रोना पड़ेगा, गर्वनर को अपनी गर्वनरी में, ताजिरों को तिजारत में, जिन लोगों को खुदा ये समझने की तौफीक दे दे कि

अल्लाह के चाहने के जाब्ते क्या हैं ?

खुदा किसी के लिए कब क्या चाहते हैं ?

खुदा इज्जत किसी के लिये कब चाहते हैं ?

चाहे शक्ले जैसी हो शक्लों के अन्दर जिन्दगियों मे जो कामयाबियां नाकामियॉ आयेगी वह अल्लाह की चाह पर आयेगी और अल्लाह की चाह का फैसला उस शक्ल के अन्दर आदमी के अमलों पर होगा।

करोड़ों के मकान के अन्दर रातों को तड़पता रोयेगा और एक आदमी झोपड़े के अन्दर मजे से सोयगा, इसकी बीवी सारी रात जूता लिये खड़ी रहेगी और इसकी बीवी सारी रात बदन को दबाती रही कि बाहर से फैसले लिये जा रहे है और अन्दर से जिंदगी गुजर रही है अगर यह बात होती कि किला वाली शक्ल होगी तो अल्लाह हिफाजत करेगें या दुकान वाली शक्ल होगी तब अल्लाह पालेगें अगर ये बात होती तो चीजों की मेहनत बिल्कुल ठीक होती। अल्लाह की माशियत शक्लों पर नही होती बल्कि शक्लों के अन्दर से निकलने वाले इंसानों के अमलों पर होती है, शक्लों का वजूद अदम बराबर है अब तो यह हो गया कि कौन से अमल पर खुदा कामयाबी और कौन से अमल पर खुदा नाकामी चाहेगे।

नमरूद की पूरी हुकूमत के अन्दर अल्लाह ने जो चाहा वह हुआ, जो यह करना चाह रहा है वह न हुआ, जिसकी कामयाबी चाही वो आग की शक्ल में कामयाब हुआ और जिसकी नाकामी चाही वो हुकूमत की शक्ल में नाकाम हुआ। इंसान के इरादों से शक्लों से हालात नही बनेगें, इंसान की चाह, इंसान का इरादा व तलब वजूद है अल्लाह का, अल्लाह जो शक्लों से चाहेगें वह हो जायेगा।

तुम्हारा अमल सच्चाई का होगा मै तुम्हारी कामयाबी चाहूंगा,

तुम्हारा अमल झूठ होगा मै तुम्हारी नाकामी चाहूंगा,

तुम्हारा अमल इंसाफ का होगा मै तुम्हारी कामयाबी चाहूंगा,

तुम्हारा अमल जुल्म का होगा मै तुम्हारी नाकामी चाहूंगा,

तुम्हारा अमल जिक्र का होगा मै तुम्हारी कामयाबी चाहूंगा,

तुम्हारा अमल गफलत का होगा मै तुम्हारी नाकामी चाहूंगा,

तुम्हारा अमल सखावत का होगा मै तुम्हारी कामयाबी चाहूंगा,

तुम्हारा अमल इसराफ का होगा मै तुम्हारी नाकामी चाहूंगा,

सारे कुरआन पाक में अल्लाह ने अपनी चाह के जाब्ते बताये है वजूद तो वह होगा जो अल्लाह चाहेगें अगर तुम्हारे अन्दर धोखे के अमल आयेगें तो अल्लाह नाकामी चाहेगें अगर अन्दर मुहम्मद सल्ल0 के उसूलों से हटकर अमल आयेगें नाकामी चाहूंगा, खूब तफसील से एक-एक जुज पर बताया गया है।

हाकिम महकूम,

माल वाले गरीब,

बड़े बागों वाले छोटे-छोटे काश्त वाले सारी शक्ले बराबर है। शक्लों में रहने वाले जितने इंसान है ये सारे एक शक्ल के अंदर खड़े हुए है, शक्लों से या उनकी अपनी चाह से कामयाबी नही होगी,

जब जलजला आता है तो हर शक्ल में घुसता ह,

ठंडी हवाएं आती है तो हर शक्ल में घुसती है,

अल्लाह की तरफ से कामयाबियां या नाकामियां आयगीं वह हर शक्ल में घुस जायेगी अगर तिजारत करते हो तो ताजिरों को अल्लाह ने यह अमल दिये हैं अगर इन अमल के पाबंद बनोगे अल्लाह कामयाबी चाहेगें और इनको तोड़ कर चलोगें अल्लाह नाकामी चाहेगें। अल्लाह ने शक्ल मे अमल की पाबंदी लगायी है तुम किसी भी शक्ल की तरफ चलों उस शक्ल में इस बुनियाद पर चलों कि मेरे अमल ऐसे हों कि अल्लाह मेरी मुवाफिकत पर आ जायें।

मस्जिदे अमलों की मेहनत के लिये बनाई गयी है, मस्जिदों में आओ बाहर जो तुम्हे दिखाई दे रहा है वह धोखा है, हकीकत को मालूम करना चाहते हो तो इतमिनान से गैबे खुदा को पहचानो, अमलों को मालूम करो, कुदरत को, माशियत को, खजानों को, कवाएद व जवाबित को पहचानो। अमलो को मालूम करो कि वह अमल कौन से है जिन पर अल्लाह तुम्हारे खून बहने को चाहेगा और वह अमल कौन से है जिन पर तुम्हारे खून की हिफाजत चाहेगें ? इंसान के कानों में आवाजे पहुंचायी गयी कि कामयाबी का ताल्लुक उसके अमल से है, जितनी शक्लों वाले है सबको मस्जिदो में बुलाया अगर लाखों करोड़ों कामयाब बनना चाहते हो तो मस्जिद में आओ, सब बन्दे है बन्दे को हमेशा बन्दगी की लाईन दी जाती है। जो बन्दा है बन्दगी मे जितना बढ़ेगा उसके लिये बंदगी के जवाबित और सख्त होते चले जायेगें, बंदगी के मुकाम में सबसे आगे मुहम्मद सल्ल0 हैं।

आपको हुक्म आया आपने सोचा कि आपके सारे रिश्तेदार सरदार थे, सरदार दबते नही अव्वल तो आयेगे नही और आ गये तो सुनेगें नही, सारे मक्का के बीच उनको जमा करो। अपनो की बात दूसरों के सामने कही जाती है इस नुकते पर आपने इस आयत की तामील की सारे कुरैश को पुकारा या आले काबा कहा, सारा मक्का आ गया चारों तरफ से सब दौड़कर आ गये, तुमने आले काबा को पुकारा था वह आ गये, पोते की औलाद को पुकारा बाकी तीन की औलाद परे रह गयी, एक की औलाद आगे आ गयी फिर उसके बेटे मे से उसकी आल को पुकारा जिस की औलाद में आप थे फिर आपने ऐसा ही किया फिर आले हाशिम को बुलाया वह आये आ गये फिर आपने तौहीद व रिसालत को पेश किया। अबुलहब ने कहा फकत इतनी सी बात पर सारे मक्का को जमा किया ? आपने सोचा था दूसरों की वजह से अपने भी सुनेगें पर रंजीदा वापस आये, मुहम्मद सल्ल0 से अल्लाह ने जो फरमाया आपने बिल्कुल उसी तरह किया कोई रियायत नही की, इसी पर सारे नबियों की सरदारी आपको मिली है।

हुदैबिया के मौके पर तशरीफ ले गये पर मक्का वाले अड़ गये कि उमरा नही करने देगें, सारे सहाबा इस पर कि अल्लाह की मददों के साथ लड़ेगें देखे कौन जीतेगा ? लेकिन अल्लाह ने कहा कि सुलह कर लो वापस चले जाओ, मक्का वालों ने कहा उमरा नही करने देगें इस वक्त वापस चले जाओ ताकि हमारी बात अरब में ऊंची

रहे। आप ने कहा लाओ लिखना शुरू कर दिया कि जो कोई मुसलमान होकर तुम्हारे पास पहुंचे वापस करना पड़ेगा, एक अबुबक्र के अलावा कोई सहाबी न चाहे किसी की समझ में न आयी कि क्यों सुलह कर रहे है ?
क्या आप अल्लाह के रसूल नही?
फिर आप दबकर सुलह क्यों करें?
लेकिन आप सल्ल0 कि मै सियासी नुक्ते पर नही देख रहा हूॅ, मै तो अल्लाह का बंदा और अल्लाह का रसूल हूं जो वह चाहता है मैं वह करूंगा। आप तो कहा करते थे कि मक्का फतह होगा, हां पर यह तो नही कहा था कि इसी साल फतह होगा फिर सहाबा अबुबक्र के पास आये वही सवाल, अबुबक्र बोले अरे तुझे क्या हो गया वह अल्लाह के बंदे अल्लाह के रसूल है। हजरत उमर के अन्दर यह कि यह क्या हो रहा है ? सुलह नामा लिखा गया आपने इमला किया
بِسْمِ اللهِ الرَّحْمنِ الرَّحِيمِ लिखा तो कहा इसे मिटाओ, क्यों कि हमारे बाप-दादा तो बिस्मिक अलैहिम लिखते आये हैं। मुसलमानो ने कहा ये नही होगा तो उन्होने कहा फिर सुलह नही होगी अगर हम उनको रसूल ही मान लें तो झगडा ही क्या है। इस पर आपने खुद इसे मिटाया, इतने मे अबु जिन्दल आ गये चूॅकि बात पहले तय हो चुकी थी पर अभी लिखी नही थी, इसलिये आप ने फरमाया! अभी ये बात लिखी नही गयी है, अबु जिन्दल के बाप ने कहा, तय तो हो चुकी है फिर उन्हे चाटे मारते हुए ले जाने लगे तो अबु जिन्दल मुसलमानो से कहने लगे कि मै तुम लोगों के सामने पिट रहा हूॅ, इतना सुन कर मुसलमानो मे जोश आया लेकिन जोश को दबा लिया, इसका नाम है इस्लाम।
आपकी बन्दगी के कमाल ने इस उम्मत की बका तय कर दी, आखिरत के अन्दर ये पूरी उम्मत जन्नत जायेगी अगर दायरा-ए-इस्लाम मे हो। 120 सफों मे 80 सफें आपकी उम्मत की होंगी इसी लिये रोजाना पॉच मर्तबा इसकी मश्क रखी गयी है कि शक्लों को छोडना और अमलो पर कदम बढाना आ जाये, ये मश्क के लिये है वरना अमल का मेयार तो 24 धन्टे की जिन्दगी मे फैला हुआ है।
अपनी जानों पर तकलीफों के उठाने के अहकामात हमारे जिम्मे हैं।
अदल व इंसाफ के दुनियॉ मे कायम करने के अहकामात हमारे जिम्मे हैं।
हर नगे को कपड़े पहनाने के अहकामात हमारे जिम्मे हैं।
इससे हजार गुना ज्यादा अहकामात हमारे जिम्मे हैं अगर अजान की आवाज आ जाये तो सारी शक्लें जिनमे तुम हो, छोड कर हुक्म पर आ जाओ, जब दावत के अहकामात की आवाज आ जाये तो इसी तरह शक्लें छोड कर चले आओ जिस तरह नमाज के लिये शक्लें छोड कर चले आये थे।
लोग मोहताज है, सैलाब और तूफान से परेशान है, कमाने के अहकामात सबसे छोटे हैं क्यों कि ये अहकामात अफराद से ताल्लुक रखते है पर दावत के, तालीम के, तरबियत के, गुरबा परवरी के, एखलाक के अहकामात मजमुआ से ताल्लुक रखते है, इन अहकामात की तामील होगी तो अल्लाह सबके लिये इज्जत और गिना को चाहेगें और अगर ये हुक्म टूटे तो सबके लिये जिल्लत और फक्र चाहेगें। जब अहकामात बडे हैं ता इन अहकामात के लिये शक्लों को छोड़ो, अल्लाह तुम्हारे लिये कामयाबियॉ चाहेगें। खेती के लिये चाहत की, इज्जत की, खाने-पीने की शक्लों को छोडा तो आज खेती मे सालों-साल दिखायी देते हैं, इसी तरह जब हुक्मों पर जिन्दगी आ जायेगी तो आप शक्लों मे बहुत कम दिखायी दोगे। जब आप अहकामात के ऊंपर आयेगें तो शक्लों मे बहुत कम नजर आयेगें, जब आप जवां-मर्दी का सुबूत देगें कि हम गर्मी-सर्दी से नही घबराते। खेती हो जाये अल्हमदुल्लिाह, खेती ना हो अल्हमदुल्लिाह, जब अन्दर ये बन जाये तो तुम किले के बजाये झोपडे मे आ जाओ,

कारोबार मे छोटे पैमाने पर आ जाओ फिर अल्लाह तुम्हारे लिये कामयाबी चाहेगें और छोटी-छोटी शक्लों मे कामयाब करके दिखायेगें और दूसरों को बडे-बडे राकेटों की, ऐटम की शक्लों मे नाकाम करेगें।

अब चूँकि हम शक्लों से निकलने की मश्क नही करते, अल्लाह के रास्ते मे निकल कर भी पाखाने मे ही 20 मिनट लगा देते है, ये सोच कर जाते है कि इतनी देर मे कौन सी शक्ल बिगड जायेगी, इनके सामने ये है कि इतनी देर मे क्या फर्क पड जायेगा चूँकि शक्लों से जिन्दगी बनने का जहन है इसीलिये ये कहते है कि इतनी देर मे क्या बिगड जायेगा। इसको शक्ल का छोडना नही कहते, ये तो ऐसे हैं जैसे बैठ-बैठ थक गये और थकान उतारने के लिये उठ गये।

पहले शक्लों को छोडना था कि फलॉ नमाज के बाद तालीम, फलॉ नमाज के बाद तस्बीह, फलॉ नमाज के बाद दावत, दावत थी, दावत के लिये मेहनत थी, तालीम के लिये जाना भी पडता था, फलॉ इलाके वालों पर फाका पड रहा है तो ये लो और उनको देकर आओ, जितना हुक्मों को पूरा करने मे तुम शक्लों को छोडोगे उतना अल्लाह तुम्हारी चाह को पूरा करेगें। मदीने के अन्दर मस्जिद मे आने वालों से हर इलाके की बात मालूम कर ली जाती थी, मुहम्मद सल्ल0 तक बात पहुँचा कर फैसले कर लिया करते थे। उनकी शूरा इमाम़ के पास पहली सफ मे हजरत उमर रजि0 के जमाने तक रहे, ये बात एक आदमी ने कही कि मैं नमाज के लिये पहुँचा, वो लोग मश्विरे मे मश्गूल थे, मैं पहेली सफ मे जाकर बैठ गया नमाज खडी हुई तो किसी ने मुझे पकड कर पीछे कर दिया और खुद आगे बढ गये, मुझे बहुत गुस्सा आया, नमाज के बाद वो साहब मेरे पास आये और मुझसे कहा कि मैं उबई बिन काब हूँ हुजूर सल्ल0 का हुक्म है कि समझ-बूझ वाले हमारे करीब रहा करे, जितनी तकलीफें इस जेल मे तुम्हारे ऊंपर गुजरेगीं वह अल्लाह की मशियत को तुम्हारे मुवाफिक करा देगें जो नक्शे बनाने मे अमल तोड़ हैं उन सबके लिये अल्लाह उनके मगलूब होने को चाह लेगें, जब वो चाह लेगें तो तुम झोपडे मे बुलन्द हो जाओगे और जब वो चाह लेगें तो किले मे पस्त हो जाओगे।

मस्जिद का मुकाबला बाजार की शक्लों से है, हर आदमी के घर से और हर आदमी की दुकान से मस्जिद का मुकाबला है़, कभी चार माह और कभी छ माह का मुकाबला है। जो आदमी अपनी मर्जी वाले अमलों को शिकस्त दे देगा, अपनी कमाई की और अपनी घरेलू शक्लों को जो शिकस्त दे देगा, अल्लाह उसकी कामयाबी चाह लेगें और जो बाहर की शक्लों को असल समझेगा अल्लाह उसके खिलाफ चाह लेगें, असल शक्लों का वजूद नही है असल अल्लाह का वजूद है, मेरी बात टूटे तो टूट जाये पर अल्लाह की बात ना टूटे, मेरी ख्वाहिश टूटे तो टूट जाये पर अल्लाह की बात ना टूटे।

जो इस तरह मस्जिद को गल्बा दे दे अल्लाह उसकी मुवाफिकत चाह लेगें अगर कोई आदमी ये चाहे कि दुनियॉ व आखिरत के सारे मसायल मे अल्लाह की मशियत मेरे मुवाफिक हो जाये तो वो अल्लाह के हुक्म पर हर-हर शक्ल को छोड़ कर दिखलाये, अल्लाह की मशियत मुवाफिक हो जायेगी। अल्लाह शक्ल को नीचे लायेगें कि हुक्म पूरा किया तो एक बालिस्त शक्ल नीचे रह गयी, चेहरा देखते रहे नीचे लाते रहे, शक्ल की जड़ तक दिल से निकाल फेको फिर अल्लाह आसमानों तक ऊँचा उठायेगें अगर शक्ल है तो शक्लों मे रह कर अमल बनाओ पर शक्लों के बाहर के हर हुक्म पर शक्लों को छोड़ दो, इस मेहनत से हम ऐसा बनाना चाहते है। जब आदमी ऐसा बन जाये तो अल्लाह अपनी कुदरत जाहिर करते हैं, दुश्मनो को भी बदल देते हैं या उन्हे हलाक करते हैं या हिदायत देते हैं, बड़ी-बड़ी नामुनासिब शक्लों पर अल्लाह कामयाब कर देते हैं, काम का निसाब तो मश्क का है जब मश्क हो जाये तो कोई निसाब नही।

मुतालबा क्या है ? कि जिस वक्त अल्लाह के हुक्म की आवाज कान मे पड जाये, शक्लों को छोड कर हुक्म मे लग जाओ अगर हुक्म 100 शक्लों से तआल्लुक रखता है तो 100 शक्लों को छोड़कर चले जाओ पस रात मे मदीने पर हमले की इत्तिला आ चुकी थी, उसी रात को मदीने से सबको निकाल दिया, कुत्ते और दरिंदे भेड़िये हमारी लाशों को पकड़-पकड़ कर ले जायें, कोई बचाने वाला ना हो फिर भी अल्लाह की राह मे फिरने से बाज ना आयेगें बस अल्लाह ने चाह लिया कि सारे अरब मे उन्ही की चले, ये निकलने वाले आठ-दस हजार से ज्यादा न होगें और दुश्मन पॉच लाख से कम नही। ईमान के लिये फिरो आज इर्तेदाद फैल रहा है बैठना कहॉ से निकाल सकते हो, अबु बक्र रजि0 के जमाने की तरह आज का जमाना है, आज मुसलमानो मे जबरदस्त इर्तेदाद है।

एक इर्तेदाद अमली है कि लोग हुजूर सल्ल0 के अमल को छोडना शुरू करते है।

दूसरा इर्तेदाद एतकादी है कि जिस अमल के बारे मे जो बतलाया था उसका यकीन निकलना शुरू होता है, जहॉ अमल छूटता है उसके हिस्से का यकीन भी छूटता है। चलते-चलते सारे अमल और सारा यकीन निकल जाता है तो जुबान से कहता है कि मैं इलाह हूॅ। ये इर्तेदाद एतकादी, इर्तेदाद अमली का नतीजा है, आज इन्सानो की जिन्दगी मे इर्तेदादे इन्सानी चल रहा है, चाहे कोई इसकी कोशिश करे या ना करे, इर्तेदाद खुद चल रहा है। हजरत अबु बक्र रजि0 के पास हजरत उमर रजि0 आये कि इस वक्त खतरे की हालत है और हर बात मे लड़ाई की धमकी ठीक नही है उस वक्त तीन इर्तेदाद थे,

1-मुसैलमा कज्जाब के मानने वाले बिल्कुल मुर्तीद हो गये।

2-जकात नही देगें।

3-जकात देगें लेकिन मदीना नही भेजेगें।

हजरत अबु बक्र रजि0 ने कहा कि खुदा की कसम ! अगर रस्सी का भो इंकार करोग तो किताल करूॅगा, मुहम्मद सल्ल0 इन्तेंकाल फरमा चुके है, वहिय का आना बन्द हो चुका है, जो आज मिट गयी वो कयामत तक के लिये मिट गयी। मुसलमानों खुदा की कसम ! बिल्कुल अबु बक्र रजि0 के जमाने की तरह आज इर्तेदाद चल रहा है, हममे से कोई इससे खाली नही है।

इस बयान की असल किताब बंगले वाली मस्जिद मे मौजूद है

बाद नमाज असर बंगले वाली मस्जिद

आखौं से बहुत थोड़ा सा दिखायी देता है

15 सफर 1382 हिजरी

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ-

मेरे दोस्तों और भाईयों ! दुनियॉ मे जितने भी इन्सान है चाहे हाकिम हो या महकूम, मालदार हो या गरीब, उलेमा इकराम हो या आवाम, मशाएख हो या मुरीदीन, ये सारे के सार जो कुछ हों पर ये सब इन्सान हैं ये इन्सान होने से नही निकल सकते, ना तो ये फरिश्ते हो सकते हैं और ना शैतान बल्कि रहेगें ये इन्सान। एक इन्सान अगर साइंस मे बहुत ऊँचा मकाम हसिल कर ले तब भी ये इन्सान ही रहेगा। बाएतबार इन्सान होने के इन्सान को उसकी आखौं से इस दुनियॉ मे बहुत थोड़ा सा दिखायी देता ह और जो कुछ इसे दिखायी देता है उसमे से बहुत थोड़ा सा इसकी समझ मे आता है फिर जो इसकी समझ मे आता है उसके एतंबार से ये अमली कदम उठाता है, ये इन्सान की एक छोटी सी हद है। जब ये इन्सान इस छोटी सी हद पर मेहनत के लिये कदम उठाता है तो अल्लाह रब्बुल इज्जत इससे कहते हैं कि तूने सही नही देखा इसलिये तू सही नही समझा अब अगर ये इसी पर कदम उठाये तो फिर अल्लाह रब्बुल इज्जत इसे नाकाम करते हैं, चाहे ये कदम हुकूमत और साइसं वाले उठायें चाहे जरआत और तिजारत वाले उठायें, अल्लाह रब्बुल इज्जत उन्हे भी नाकाम करते हैं।

इन्सान के एतबार से अगर नबी भी भूल जाय तो उन्हे भी गलत दिखायी देगा, हजरत मूसा अलै0 इन्सानो को अल्लाह की किताब तौरेत सिखा रहे थे, एक आदमी ने पूछा कि ऐ मूसा ! इस जमाने मे सबसे बड़ा आलिम कौन है ? हजरत मूसा अलै0 ने कहा कि अल्लाह ने सबसे ज्यादा इल्म मुझे दिया है लेकिन अल्लाह को ये बात पसन्द नही आयी और फरमाया ! ऐ मूसा जहॉ दो समन्दर आपस मे मिलते है वहॉ पर एक आदमी है जो तुमसे ज्यादा आलिम व दाना है।

हम सबसे ज्यादा इल्म वाले मूसा अलै0 इस आदमी की तलाश मे चले, उनको तलाश कर लिया जो खिज्र अलै0 थे, उनसे इल्म सिखलाने के लिये कहा, खिज्र अलै0 पहले तो तैयार न हुए पर मूसा अलै0 के इसरार पर इस शर्त के साथ तैयार हुए कि मेरे साथ रह कर मुझसे कोई सवाल न करना।

मूसा अलै0 इस पर राजी हो गये फिर लम्बा किस्सा कि दोनो नयी कश्ती से दरिया पार कर रहे थे कि खिज्र अलै0 ने कश्ती मे सुराख कर दिया जिस पर मूसा अलै0 ने उनसे पूछा ! आपने उसकी नयी कश्ती मे सुराख क्यों कर दिया ? खिज्र अलै0 ने कहा कि मैने तुमसे पहले ही कह दिया था अगर मेरे साथ रहना है तो मुझसे कोई सवाल न करना, इस पर मूसा अलै0 ने अपनी गलती मान ली। आगे चले तो कुछ लडके खेल रहे थे उनमे से एक लडके को खिज्र अलै0 ने कत्ल कर दिया, इस पर मूसा अलै0 नाराज हो गये और कहा कि इस लडके को तुमने क्यों कत्ल किया ? खिज्र अलै0 न इन्हे फिर अपना वादा याद दिलाया, ये फिर खामोश हो गये। अब ये लोग एक गॉव मे पहुँचे वहॉ वाला ने इनसे कहा कि आप लोग हमारे यहॉ से चले जाओ, जब ये लोग वहॉ से निकलने लगे तो इन्हे वहॉ एक मकान की दीवार टेढी नजर आयी, इन्होने उसे सीधा कर दिया, मूसा अलै0 ने फिर पूछा ! इसे क्यों सीधा किया ? इस पर खिज्र अलै0 ने फरमाया ! मेरा तुम्हारा साथ अब नही हो सकता।

कश्ती मे मैने इसलिये सुराख किया था कि बादशाह ने ये कानून बना रखा है जो कश्ती नयी हो उसे जब्त कर लो, इसलिये मैने इस गरीब आदमी की नयी कश्ती मे सुराख करके उसे जब्त होने से बचा दिया। बच्चे को इसलिये कत्ल किया कि वो बडा होकर काफिर होता और दीवार इसलिये सीधी की कि उस घर मे यतीम बच्चें है उनके बाप सालेह थे उनका माल दीवार के नीचे दबा हुआ है तो अल्लाह ने हमे ये हुक्म दिया कि दीवार सीधी कर दो ताकि ये माल बच्चों ही के काम आये।

मेरे भाईयों और दोस्तों ! इसीलिये अल्लाह ने बार बार कहलाया कि जब जानते नही हो तो बोलते क्यों हो, ऐ मूसा ! जितना भी इन्सानों का इल्म है वो जिस तरह इस चिडिया की चोच के पानी से समन्दर मे कमी नही की इसी तरह हमारे सबके इल्म ने अल्लाह के इल्म मे कोई कमी नही की इसलिये अगर मूसा की बात पसन्द नही आई तो जवाब दे दिया फिर और इन्सानो की हैसियत क्या रही,

न हुकूमत की हैसियत रही,

न मालदारों की हैसियत रही,

न साइंस वालों की हैसियत रही,

न जमीदारों की हैसियत रही,

इल्म अल्लाह का है जिसको चाहे जितना दे दे। मक्का वालो ने सोचा कि हुजूर सल्ल0 को किस तरह लाजवाब किया जाये कि अस्हाबे कहेफ का किस्सा बताओ ?

हुजूर सल्ल0 ने फरमाया ! कल बताऊँगा, दिल मे ये नही था कि मैं खुद बताऊँगा बल्कि ये था कि अल्लाह बता देगें तो मैं उनको बता दूँगा पर इन्शाअल्लाह न कहा, अब वहय न आयी कि नबी भी जब हद इन्सानी के एतबार से बोलेगा तो अल्लाह रब्बुल इज्जत इससे कहते हैं कि तूने सही नही बोला। अल्लाह ने इसी पर सूर कहफ नाजिल की कि आइन्दा यूँ मत कहो कि मैं बता दूँगा बल्कि जब कोई बात कहो तो इन्शाअल्लाह ज़रूर कहा करो, क्यों कि मसला अल्लाह के हाथ मे है।

हद इन्सानी मे कामयाब होने के लिये जो भी कदम उठायेगा अल्लाह की हिकमत का तकाजा ये होगा कि उसको नाकाम करें। जितने अम्बिया अलै0 आये उन्होने हद इन्सानी से आगे बढ कर अल्लाह रब्बुल इज्जत ने जो बतलाया, उसकी बुनियाद पर मेहनत का मैदान कायम किया, अल्लाह रब्बुल इज्जत ने नबियों तक को ये जता दिया कि जो बोल तुम्हारी जुबान से निकल गया ये सही नही है।

इस बयान की असल किताब बंगले वाली मस्जिद मे मौजूद है

हयातुस्सहाबा बाद इशा बंगले वाली मस्जिद

16 सफर 1382 हिजरी

-بِسْمِ اللهِ الرَّحْمنِ الرَّحِيمِ

दुनियॉ मे जितने भी इन्सान है सौ फीसद को अल्लाह ने जान दे रखी है और बहुतों को माल भी दे रखा है पर माल किसी को कम दिया और किसी को ज्यादा दिया। अल्लाह ने इस बात पर मौकूफ कर दिया कि जो इन्सान जान और माल को अल्लाह और अल्लाह के रसूल को बतलायी हुई जगह पर खर्च कर दे अल्लाह लोगों के दिलो मे उनकी मोंहब्बत डाल देंगें। जो इन्सान जान और माल को अल्लाह और अल्लाह के रसूल की बतलायी हुई जगह पर लगायेगा उसकी भी कामयाबी, जिन पर लगाया जायेगा उनकी भी कामयाबी, दुनिया की भी कामयाबी और आखिरत की भी कामयाबी। जान और माल को सही जगह पर खर्च करने के रास्ते से इन्सान बडा बनेगा और लोगों के कुलूब उसकी तरफ खिचेंगें। जो इन्सान जान और माल को वहां खर्च न करे जहां अल्लाह और अल्लाह के रसूल ने बतलाया है तो उनकी जानों मे अदावते आयेंगी, इक्तसादियात की तंगी आ जायेगी और बरकत जाती रहेगी, कभी ऐसा होगा कि

जानवर मर गये,

पडोसी ने दावा कर दिया,

दुकान मे आग लग गयी,

लोग आज बहुत कमाते हैं फिर भी रोते हैं कि हमारे पास कुछ भी नही है कि रूपये मे चौदह आने हुकूमत खींच लेती है, सहाबा किराम ने अपने आपको उस पर डाल दिया जहां अल्लाह और अल्लाह के रसूल ने बतलाया कि जान और माल को यहां खर्च करो। सहाबा किराम ने अपनी ख्वाहिश के खिलाफ जान और माल को वहां खर्च करके दिखलाया जहां अल्लाह और अल्लाह के रसूल ने बतलाया था तो आज तक उनकी मोहब्बतें बाकी हैं, आज भी दुनियॉ का अक्सर हिस्सा उनसे मोंहब्बत करता है। अगरचे यहूद और नसारा की बहुत कोशिश है कि उन पर एतराजात खडे हो जायें पर उनको चौदवीं सदी के आदमी चाह रहे हैं पर हमको हमारे जमाने के आदमी नही चाह रहे हैं, जबकी हमने भी खुदा को माना, नबी को माना और उन्होनें भी माना तो फर्क क्या है ? फर्क ये है कि उन्होनें मानते ही जान और माल के खर्च की तरतीब बदल दी, ख्वाहिशात को कुर्बान कर दिया कि माल घर, कपडे, सवारी, बेगम, बच्चों पर खर्च हो ख्वाहिश का ये एक दायरा है जो बहुत छोटा है कि एक दुकान और एक घर जान और माल के खर्च का एक दायरा ये है।

दूसरा दायरा कुरआन मजीद ने कायम किया है, ये लम्बा चौडा दायरा है कि

ईमानियात को सुनने मे अपनी जान और माल को खर्च करो,

इबादत और खिदमते खल्क मे अपनी जान और माल को खर्च करो,

अपने घर के काम मे अपनी जान और माल को खर्च करो,

अल्लाह के रास्ते की नक्लो हरकत मे अपनी जान और माल को खर्च करो,

अल्लाह के रास्ते मे जहॉ जाओ वहॉ खुद खाओ और जो आयें उनको खिलाओ,

हाजत मन्दों, जरूरत मन्दों, बेवाओं, मिस्कीनों वगैरह को तलाश करके पैसों को उन पर तक्सीम करो। खुद अपने ऊपर 100 रूपये से 25 रूपये पर आ जाओ और आवाम पर सिफर से 25 रूपये पर आ जाओ तो

उनमे हमारी मुहब्बत इस तरह आ जायेगी कि हमको जरा सी चोट लगेगी तो वो फौरन हमारी मदद को दौड़ेंगें। अल्लाह ने तुमको देख लिया कि तुम दूसरों की जिन्दगी बनाने को अपना काम नही समझते तो फिर अल्लाह औरों से लेकर तुम्हे क्यों दे, सहाबा किराम को इसलिये देते थे कि वो दूसरों पर लगाते थे और तुम अपने पर लगाते हों, वहॉ एक एक मौके पर एक एक आदमी ने दस दस हजार आदमियों का खर्च उठाया है। जैसे एक मौके पर हजरत उस्मान रजि0 ने छ सौ टन खजूरें दे दीं, किसी ने पूरा पूरा तो किसी ने आधा आधा माल दे दिया, कोई दिन ऐसा नही था कि मदीना मे सौ पचास आदमी न आते हों, रोजाना साद बिन उबादा रजि0 अस्सी आदमियों को अपनी मेहमानी मे ले जाया करते थे।

दावत मे खर्च,

तालीम मे खर्च,

आने वालों को खिलाना,

जाने वालों को हदिया देना,

किसी से अगर छडी भी ले ली तो आप सल्ल0 ने फरमाया ! तूने दोजख की आग ले ली कि ईमान और अमल के सिखलाने पर पैसा लेना हराम है अगर सहाबा जैसा अमला तैयार हो जाये तो खुदा दुनियॉ का माल समेट कर इनके कदमो मे डाल दें, इसीलिये सहाबा किराम के यहॉ नकदी तक्सीम करने का बहुत रिवाज था, उन्होने ये तय कर लिया था कि

जैसा हुजूर सल्ल0 का मकान है अपना भी वैसा ही रखना है,

जैसा हुजूर सल्ल0 का लिबास है अपना भी वैसा ही रखना है,

जैसा हुजूर सल्ल0 का खाना है वैसा ही खाना खाना है,

अब खर्च कहॉ करें ? ये कुरआन और हदीस से पूछ रहे है तो जहॉ खर्च करने को बताया जा रहा है, वहॉ खर्च कर रहे हैं,

हजरत उमर रजि0 के यहॉ रोजाना बैतुलमाल मे झाडू दे दी जाती थी, गर्वनर भी ऐसे थे और रियाया भी ऐसी थी। ये तो सबको अच्छा लगता है कि हम होते तो हमको भी मिलता, ये नही सोचत कि हमको भी हौसले मिले हैं तो हम भी खर्च करने वाले बने।

इस बयान की असल किताब बंगले वाली मस्जिद मे मौजूद है

बाद नमाज फज्र बंगले वाली मस्जिद

मसाएल का ताल्लुक चीजों से नही है

16 सफर 1382 हिजरी

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

मेरे भाईयों और दोस्तों ! इन्सानों के जितने भी हालात या मसाएल हैं उनका ताल्लुक इस जमीन व आसमान या उनके अन्दर की चीजों से नही है बल्कि हक तआला शानहु के एहकामात से है, हक तआला शानहु ने एक तरफ चीजों के बनाने का सिलसिला कायम फरमाया तो दूसरी तरफ इसान भी उसी निजाम से बन रहा है, जिस तरह चीजो के बनने मे अल्लाह के अलावा किसी की शिरकत नही, न जमीन की शिरकत, न आसमान की शिरकत और ना ही किसी सामान की शिरकत बल्कि जो कुछ भी बन रहा है खुदा की कुदरत से बन रहा है चाहे जमीन मे बनाए या हवाओं मे बनाए। इसी तरह इंसान का जिस्म भी कुदरत से बन रहा है इंसान का जिस्म इंसानो से नही बन रहा है जिस तरह दरख्त कुदरत से बन रहें हैं बींज से नही बन रहे हैं और न उनके बनने मे इन्सानो की कोई शिरकत है, ये नही है कि इन्सान मेहनत करते हैं तो अल्लाह बनाते है बल्कि अल्लाह ही सब कुछ बनाते है।

दूसरा सिलसिला हालात के बनने बिगड़ने का है, कामयाबी व नाकामी, इज्जत व जिल्लत, खौफ व अमन, सेहत व बीमारी, फसाद व राहत के हालात अल्लाह पाक चीजों से नही बनाते, हालात खुदा के हुक्म पर चलने और ना चलने पर आते है। जब हालात हुक्मों से आते हैं तो बगैर चीजों के हमारे लिये कामयाबियों के आ सकते है और चीजो मे नाकामियों के हालात आ सकते हैं। हुकूमत के लिये जिल्लत के हालात अल्लाह के हुक्म से आ सकते है और हुकूमत ही के लिये इज्जत के हालात अल्लाह के हुक्म से आ सकते है। जिस्म मे रूह अल्लाह के हुक्म से दाखिल की जाती है अगर जिस्म से रूह बनती तो जब तक इन्सान का जिस्म बाकी रहता रूह भी बाकी रहती, इन्सान की रूह जिस्म मे उस वक्त तक बाकी रहती है जब तक अल्लाह चाहत हैं वरना फरिश्ते को भेज कर रूह निकला लेते हैं।

मकान, जमीन और हुकूमत के नक्शे ये एक जिस्म है अल्लाह की तरफ से इन जिस्मों मे हालात आते हैं, इन जिस्मो मे कामयाबी के हालात लाने के लिये अल्लाह रब्बुल इज्जत ने हमारे हाथ मे अपने अहकामात दिये हैं।

हजार मन गल्ला हो तो ये हुक्म दे दो,

हजार. रूपये की आमदनी हो तो ये हुक्म दे दो,

हजार इलाकों पर हुकूमत हो तो ये हुक्म दे दो,

चीजों के एतबार से अल्लाह पाक अहकामात नही देते, कुरआन पाक दुनियॉ भर के इन्सानों के हाथ मे देकर अहकामात अता फरमा कर जिन्दगी गुजारने के लिये एक इन्तिजाम किया। अल्लाह का ये बडा जबरदस्त इन्तिजाम है, सुबह से शाम तक इसमे ये देखते रहो कि कौन सा हुक्म पूरा किया और कौन सा हुक्म छोड़ दिया, हर एक के साथ मे दो फरिश्तें मुर्करर कर दिये चाहे जितने दरवाजे बन्द करके बैठ जाओ ये दोनो फरिश्ते हर वक्त तुम्हारे साथ मौजूद हैं साये की तरह पीछे लगे हुए हैं। बैठे बैठे लिखते रहेंगें, हुक्म पूरा किया तो दाहिने हाथ वाले ने लिख लिया, हुक्म तोड़ दिया तो बायें हाथ वाले ने लिख लिया। ये फरिश्ते कोठियों के पहरों से नही रूकते, चौबीस घन्टे इनका यही काम है कि खुदा के अहकामात कितने तोड़े और कितने पूरे किये

और फरिश्ते आते है, असर की नमाज से फज्र की नमाज तक फिरते रहते हैं। आदमियों को भी देखते हैं लिखाई भी देखते हैं, सुबह ही सुबह अभी सूरज भी नही निकला कि आसमान पर कच्चा चिटठा पहुॅच गया। अब फज्र की नमाज से अस्र की नमाज तक साथ लगे हुए हैं। एक मसले को भी नही छोड़ा,

अदालतों मे

खेतों मे

जेल खानों मे पहुॅचे रहे है। अस्र की नमाज मे रात वाले शरीक हो गये, दिन के रात होने से पहले और रात के दिन होने से पहले

अहकामात का तोड़ना और अहकामात का पूरा होना लेकर आसमान पर पहुॅचे जाते हैं।

सूद पर कर्ज लिया

अदालतों मे पटवारियों का रिश्वत दी

फासिक व फाजिर की तारीफें की

ईमान व अमल के सीखने का वक्त कमाई मे लगाया

तो खुदा की तरफ से हुक्म आ गया कि फकीर बन जाऐं, जलील हो जाऐं। सारी रात तड़पा करे और रोया करे कि लाखों की कोठी मे मुसीबतें उठा रहा है, इस नक्शे से हालात नही बनते हालात खुदा की तरफ से आते हैं और हुक्मों पर आते हैं। हफतावार के भी एहकामात आते हैं, यौमया के भी एहकामात आते है, सालाना के भी एहकामात आते हैं, जिस सतह का हुक्म तोड़ा है उसके एतबार से नाकामी के हालात आ गए और जिस सतह का हुक्म पूरा किया है उसके एतबार से कामयाबी के हालात आ गए, चौबीस धण्टे हुक्म सामने रख कर चला, मकान, गिजा, कपडे की शक्ल में कमी आ गई, फाके भी आ गए तो परवाह ना की। बंदा हुक्मों को झोपड़ी में भी तोड़ेगा ये हालात आ जाते हैं।

ये दो रास्ते हैं, एक का पसमंजर कामयाबी है और एक का पसमंजर नाकामी है, चीजों को लेने मे, इस्तेमाल करने मे अल्लाह के हुक्मों को तोड़ेगा तो खुदा के अहकामात खिलाफ आयेगें।

कभी हुक्म आयेगा कि चीजें छिन जाये,

कभी हुक्म आयेगा कि लड़ाईयॉ खड़ी हो जायें,

ऐश का नक्शा अब जेल खाने की तरह बन गया। जब ये हकीकत ए हाल है तो दो रास्ते बनते हैं, एक धोखे मे आये हुए इन्सानो का रास्ता कि वो चीजो के नक्शों की परवाह करते है हुक्मो की परवाह नही करते है।

दूसरा नबियों का रास्ता हुक्म पर खड़ा होना है कि इसकी परवाह नही करना कि हुक्म पूरा किया तो खेती का क्या होगा, मकान का क्या होगा। घर मे फाका है खाने का इन्तिजाम छोड़कर हुक्म पूरा करो, हजरत मुहम्मद सल्ल0 ने चीजो को छुडवा छुडवा कर सहाबा किराम को हुक्मो पर डाला है, जब आप मेराज मे आसमानो पर तशरीफ ले गये थे तो आपने अल्लाह का असल निजाम देखा था, वो जगह देखी थी जहॉ नीचे से अमल इन्सानी पहुॅचता है और ऊपर से अहकामात उतरते है, मैने फरिश्तों के चलने की आवाजें सुनी जहॉ से अहकामात उतर रहे थे। वो इन्सान जिस पर ये हकीकत खुल जाये, वो हुक्मो पर बादशाहत को ठुकरा देगा, जितनी चाहे मेहनते की जायें मुल्क व माल पर नतीजा नाकामी का सामने आयेगा।

हिन्दुस्तान मे सौ साल तक जददो होती रही के आजादी मिल जाये, अमन हो जाये, खून की हिफाजत हो जाये तो उसके लिये गोलिंयॉ खाया है, माल्टा तक गये, अब तो गुलामों का खून है फिर आजादी का खून होगा, अल्लाह ने इसी को तोड कर दिखाया कि सौ साल मे जितना खून नही बहा होगा उतना खून बगैर ल़ड़े चन्द

सालों मे बह गया। हर एक काम लेट हो रहा है, इससे अल्लाह को ये बतलाना है कि जो तुम समझे हो वो गलत है, हर जगह दिखला रहा है पर अन्धो की आखें नही कहल रही, जहॉ देखने से आखें कहलती हैं वहॉ नही देख रहे हैं, अन्धापन नही जाता, जहॉ से दिलों का अन्धेरा दूर हो वहॉ नही देखते, वहॉ देखते हैं जहॉ देखने से दिल का अन्धेरा बढे। रात दिन जितनी मेहनत कर रहे हैं मसले बिगडते जा रहे हैं, एक कौम के हाथ मे हुकूमत हो, सारे ओकाफ पर कब्जा कर ले लेकिन एक तरफ थोडे से आदमी हों और उनकी चौबीस घन्टे की जिन्दगी खुदा के अहकामात पर आ जाये तो खुदा उन थोडो को उन सबके मुकाबले मे कामयाब करके दिखलायेगे।

कामयाबी के अहकामात चीजों के एतबार से नही आते तक्वे के एतबार से आते है, जो लोग माल कमाने मे, खर्च करने मे, खाने मे, ये अहकामात पूरे करते है ऐसी इकलौती जो बाराह हजार की तादाद मे हों जो किसी चीज के बनने बिगडने को सामने ना रखे बल्कि ये सामने रखें कि इस वक्त खुदा का जो हुक्म है वो पूरा हो, चाहे बच्चे रोए या हंसे, चाहे अब्बा जान राजी हों या नाराज हों फिर बाराह हजार को छत्तीस अरब के मुकाबले में खुदा कामयाब करके दिखाएंगे। फैसले जो आएंगे वो एहकामात पर आएंगे अगर पीर एहकामात तोडेंगे तो उनके खिलाफ एहकामात आएंगे अगर मुरीद एहकामात तोडेंगे तो उनके खिलाफ एहकामात आएंगे।

इस रास्ते से चमकना बहुत आसान है, अल्लाह यूं नही कहते कि पहले इतना पैसा लाओ फिर हुक्म देंगे, जकात के हुक्म के वास्ते माल कमाना नही है, माल नही है तो माल के एहकामात तुम्हारे जिम्मे नही है, जिस्म के एहकामात देंगे हाल को बदलने की जरूरत

नही है। हर हाल के अन्दर हुक्म पर आ जाओ, इस्लाम सब रास्तों से ज्यादा आसान है,

फक्र की हालत है हुक्म पूरा करो गिना का हुक्म आ जाएगा,

मातहती की हालत है हुक्म पूरा करो तुम्हारी मातहती बदल कर गलबा का हुक्म आ जाएगा,

अगर खौफे खुदा का हुक्म है तो उसको अमन खुदा का हुक्म बनाएगा,

हुक्म को बदलना हमारे जिम्मे नही है बल्कि हुक्म को हुक्म ही बदलता है। तू चीजों को देखकर चल रहा है, हुक्म को देखकर चल, तेरा हुक्म को देखकर चलना, इससे कौमी अक्तसाद और जम्हूरी हालात बदलेंगे। बस एक काम कर कि चीजों को देख कर इस्तेमाल होना छोड दे, हुक्म सामने रख कर चलना सीख ले। चीजो को सामने रख कर अपने को इस्तेमाल मत कर।

सारी दुनिया के इन्सानो को पॉच मरतबा आवाज लगाई जा रही है कि अल्लाह बहुत बडे हैं इस पर गौर कर लो, जमीन को देख कर गौर करो। आसमान, जमीन और इन्सान, अल्लाह के हुक्म से बने हैं अगर वो एक हुक्म दे दें तो ये सब टूट जायें अल्लाह बहुत बडे हैं। चीटा चीटी से बडा हैं तो इसके ये मायने नही कि चीटा बडा हैं बल्कि इसके ये मायने हैं कि चीटी छोटी है। एक आदमी के बाराह बच्चे पर ये सबसे बडे हैं बहरहाल बेटा है बेटा होने के ये मायने नही है कि ये छोटा है। वो जो इतने इतने ग्यारह है उनके मुकाबले मे बताने के वास्ते ये छोटा बडा हैं, बडा छोटा बनाते जाओ तो कहॉ तक पहचानेगा।

एक फरिश्ता ऐसा जिसका चौदह हजार साल की मसाफत का कद है, इसके एक पंख पर सातों जमीन व आसमान टूट जायें लेकिन जिन्स बहरहाल छोटी है अल्लाह बहुत बडे हैं। जिब्रील उनके सामने ऐसे भी नही जैसे चीटी, ये तो मुकाबलन बडे कहते हैं छोटो के सामने, जमीन का रखान ऐटम बम बहुत छोटा है। तुम्हारे मुशाहदे मे मख्लूकात है मख्लूकात की जिन्स ही छोटी है। दूसरी बात ये है कि जो जिन्स छोटी है इससे होता ही नही

अल्लाह से होता है, छोटाई बडाई के दर्जात अल्लाह की बडाई तस्लीम करने के एतबार से है, नबी के दिल मे यकीन आ गया कि अल्लाह बडे हैं, इसलिये वो बडे बन गये।

मूसा अलै0 ने अल्लाह को बडा पहचान लिया और मासिवा की छोटाई को पहचान लिया तो अल्लाह ने मूसा अलै0 को बडा बना दिया पर फिऔन ने अल्लाह की बडाई को न पहचाना तो अल्लाह ने उसे छोटा बना दिया। जो बडे हैं उनके ही करने से सब कुछ होता है और उनके करने के उसूल बताने के लिये हजरत मुहम्मद सल्ल0 आये है अगर छोटा बडे की बात कह रहा हो तो उसकी मुखालफत करने वाले की पकड़ हो जायेगी कि एक भंगी हुकूमत का ऐलान करता फिर रहा हो और उसे कोई थप्पड़ मार दे तो उसे जेल मे डाल दिया जायेगा। हजरत मुहम्मद सल्ल0 ने अल्लाह की जात से फायदा उठाने के उसूल बतलाये हैं कि

अपने बदन को पाक रख,

सर से लेकर पैर तक इसको ढक,

बदन के हर आजा से हुक्म पूरा कर और कामयाबी ले ले

चौबिस घन्टें सर से लेकर पैर तक हुक्म ही हुक्म पूरे किये तो अहकामात पूरे किये, जो अल्लाह का हुक्म था वही दिखा, जो अल्लाह का हुक्म था उसी के मुताबिक बोला, दोस्तों मे, अजनबियों मे हुक्म पूरा करता है। चौबिस घन्टें के हुक्मों पर आ जायेगा तो वहॉ भी कामयाबी देगें और यहॉ भी हालात बना कर दिखायेगें, मआशरत मे हुक्मों पर आ। तेइस घन्टें तो हुक्म तोड़े तेइस घन्टें की नाकामी और एक घन्टा कामयाबी, एक घन्टें की कामयाबी का क्या होगा? पहले चौबिस घन्टें मुसीबतों मे और एक घन्टे के अहकामात मिल जायेगें अगर चौबिस घन्टें हुक्म पूरा किया तो दूसरे मुल्को मे जाओगे तो वहॉ भी कामयाब करेगें, पानी मे, आग मे कामयाब करेगें।

अल्लाह बहुत बडे हैं अगर मुवाफिकत मे आयेगें तो उनकी बडाई से जिन्दगी बन जायेगी और वो मुकाबिल पर आ गये तो उनकी बडाई से जिन्दगी बिगड़ जायेगी।

अहकामात की किताब दे दी,

मस्जिद से आवाज लगावा दी,

फरिश्ते खड़े कर दिये

कि हुक्म पर आओ और हुक्म से कामयाबी ले लो पर तुम ये कह रहे हो कि हुकूमत यूँ कर रही और यूँ कर रही है जब कि अगर तुम हुक्म पर आ जाओ तो तुम्हारे लिये अल्लाह हाकिमों के दिलों को बदल देगें।

जिन्दगियो के बदलने के लिये नमाज का अमल है, जिस तरह नमाज मे पाबन्द हो कि अगर एक हुक्म भी तोड़ा तो नमाज टूट जायेगी, इसी तरह चौबीस घन्टें की जिन्दगी मे एक हुक्म भी टूटा तो मुसीबतें आ जायेंगी। चौबीस घन्टें को नमाज पर उतार लो अगर यूँ जिन्दगी नमाज पर आ जायेगी कि खडे होने मे, झुकने मे, देखने मे, बोलने मे हुक्म पूरा करो तो खुदा तुम्हारी जरूरत पूरी करेगा। यही चीज मआशरत मे लेकर जाओ, मआशरत के हुक्म पूरा करो तो खुदा तुम्हारी जरूरत को पूरा करते हुए कामयाब करेगा। ये सब मैं अल्लाह को राजी करने के लिये कर रहा हूँ, यही यकीन और यही एख्लास लेकर मआशरत मे जाओ।

पाबन्दियॉ पढ़नी हों तो कुरआन व हदीस पढ़ लो, मोटी मोटी बातें पढ़नी हों तो फिक्ह की किताबें पढ़ लो। हुक्म के पूरा करने पर जो कामयाबियॉ आयेंगी इडियन यूनियन तो क्या रूस और अमरीका भी इस कामयाबी को रोक नही सकते।

अब बताओ ज्यादा मेहनत किसकी हुई ?

हमे माल कमाना और मकान नही बनाना है बल्कि हमारा इस्तेमाल हुक्मों वाला बन जाये चीजों वाला न रहें। इसी वास्ते आवाज लगती है हयया लस्सलाह चीजों को बार बार छुडवाते हैं कि जिन्दगी का बनाना़ खुदा के हाथ मे है, चीजों से जिन्दगी बनने का कोई ताल्लुक नही है। माल को छोड़ कर आ रहे हैं हुक्म पूरा करने के लिये ना कि माल मे बरकत के लिये। नींद आ रही है पर लेटे नही कि हुक्म न टूट जाये, हुक्मों से चौबीस घन्टें की जिन्दगी भरी पड़ी है, उठने बैठने के, चलने बोलने के, देखने सोचने के अहकामात है। कोई आदमी जुल्म का बोल बोल रहा है तो उसकी हिमायत मत करो वहॉ से हट जाओ। दुनियॉ जो चाहे पुकारे तुम ये देखो कि अल्लाह क्या चाह रहे है, तुम वो बोलो जो अल्लाह का हुक्म है। अल्लाह ही की सुनो, अल्लाह ही की बोलो और अल्लाह ही की मानो, जब तुम इस पर आ जाओगे और उसके हुक्मो पर जिन्दगी होगी तो सारी इन्सानियत मिल कर भी तुम्हे बरबाद नही कर सकती।

कमाना सीखने की चीज नही है बल्कि हुक्म पर चलना सीखने की चीज है, मस्जिद मे आओ हुक्म का यकीन सीखो, मस्जिद मे आओ अल्लाह की सिफात का बयान सुनो। अल्लाहु अकबर अल्लाह इतने बड़े हैं वरना ये सुनोगे कि वजीरे आजम इतने बड़े हैं और सदर साहब इतने बड़े हैं।

असल मे ये क्या है?

मनी का कतरा हैं जो फूल कर इतना बड़ा हो गया है।

आर क्या है?

खून, पाखाना, पेशाब और ये सब नापाक।

मस्जिद मे आओ, यहॉ बैठ कर अल्लाह की बड़ाई सुनो तब अल्लाह की बड़ाई दिल मे उतरेगी नही तो बने हुए को बड़ा समझते रहोगे और उनकी कोठी पर जाकर हाथ जोडेगों पर ये धोखा मौत के वक्त खुल जायेगा कि कौन बड़ा है। इसलिये जन्नत, जहन्नम, तकदीर पढ़ लो, दुनियॉ का निजाम पढ़ लो, तब पता चलेगा कि अल्लाह कितने बड़े है। जो लफज अल्लाह ने अपने लिये तज्वीज किया था अल्लाहु अकबर कि अल्लाह ही बड़े है तू इसको पढ़ तो कहता है कि मैं पढ़ा हुआ नही हूॅ, मस्जिद मे आकर अल्लाह ही बड़ाई सुन पर अल्लाह को जानता ही नही है।

जो अल्लाह को जितना जानेगा उतनी उसकी अजीब हालत होगी, हुजूर सल्ल0 ने फरमाया! कि मै और जिब्रील चले, मैने जिब्रील से पूछा पर वो जवाब न दे, उनके ऊपर बहुत बो़झ है, किस बात का कि अल्लाह की बड़ाई का। अल्लाह के बारे मे जब कुरआन व हदीस सुनेगें तो आखॅ मे शोले भरने शुरू होंगे फिर तुम्हे रास्ता दिखायी देगा, पर इस बात का सुनना कौन करता है कि किसी से नही होता अल्लाह से होता है। लेकिन जब तुम्हारी दावत चलेगी, ईमान की बात ईमान की मज्लिस मे चलेगी, इल्म की बात इल्म के हल्के चलेगी, तन्हाईयों मे अल्लाह का जिक्र होगा तो लोग अल्लाह की तरफ मुतवज्जाह होगें, उसके हुक्मों से दिलबस्तगी होगी।

आज तो नमाज ऐसी है जिस तरह बच्चों की मोटर व रेल कि चाबी भर कर चले जब चाबी खत्म तो ये रूकी ख़ड़ी है बिल्कुल ऐसी ही हमारी नमाज कि बचपन से पढ रहे हे़ पर ये सोच समझ कर नही कि दुनियॉ के मसले नमाज से हल होगें। जब आदमी मस्जिद मे आकर अल्लाह की बड़ाई को सुनने वाला, अल्लाह की कुदरत को सुनने वाला बनेगा तब कहीं जाकर इसकी आखॅ खुलेगी। आज

अदालतों की,

कारखानों की

दुकानो की,

जमीदारे की बड़ाइ है और उन्ही को सामने रख कर अमल करते हैं और कहते भी हैं कि खाली नमाज से क्या होगा ? हम भी यही कहते हैं कि खाली नमाज से कुछ नही होगा बल्कि
अल्लाह को जान कर,
यकीन को सीख कर,
नमाज को जान कर,
नमाज को सीख कर,
अल्लाह के ध्यान के साथ पढो फिर देखो नमाज से क्या क्या होगा।

अल्लाह ने नमाज तो बाद मे दी है, अपनी बड़ाई का इल्म पहले दिया है। अल्लाह की कुदरत की तालीम, अल्लाह की सिफात की तालीम, उसके रब होने की तालीम, ये सारी की सारी चीजे नमाज से पहले की है तो जो चीजें नमाज से पहले की है उनको छोड़कर जो नमाज पढे तो यही कहेगा कि नमाज से क्या होगा,

खुदा की अज्मत व जलाल, खुदा के ध्यान से खाली होकर नमाज से क्या होगा?

मुहम्मद सल्ल0 के बतलाये हुए जाहिर व बातिन के उसूलों पर आ जाओ तो अब ये खाली नमाज नही बल्कि ईमान वाली, इल्म वाली और अल्लाह के ध्यान वाली नमाज है। अब कोई कहे कि खाली नमाज से क्या होगा, अब जो इस नमाजी पर हाथ डालेगा वो बर्बाद होगा।

नमाज के लिये तीन चीजें हैं

यकीनो के बदलने के लिये मेहनत करना है, अल्लाह की बड़ाई को जिसे सुन कर समझा था उस बड़ाई का इस्तेहजार करो। सिर्फ बिस्मिल्लाह बहुत बड़ी ताकत है फिर अल्लाहु अकबर कहना इस बात का यकीन करते हुए कि अल्लाह पालता है, मैं नमाज पढ़ कर मॉगूगा अल्लाह देगें। ये रास्ता नबियों के साथ खत्म नही हुआ है कि जो नबियो वाला कामयाबी का रास्ता था, हजरत मुहम्मद सल्ल0 वही रास्ता अपन खादिमों को देकर गये है। नबियो के साथ भी ये न हुआ कि नबूवत मिली इधर नमाज पढ़ी उधर मदद आ गयी, नही बल्कि पहले इस बात पर मेहनत करायी गयी कि अल्लाहु अकबर को समझ कर कहो। अल्लाहु अकबर का क्या मतलब कि सबकी तरफ से रूजुअ खत्म सिर्फ एक की तरफ रूजुअ पैदा करो, इसको पैदा करके अब आगे कदम बढाओ। कमाई मे ईमान को लेकर जाओ कि कमाने से नही मिलता, खुदा के देने से मिलता है, हम खुदा के हुक्म को पूरा करेगें खुदा हमे पैसे देगें।

इल्म के साथ जाओ कि दयानत के साथ, अमानत के साथ, सच्चाई के साथ कमाओ, जिस तरह नमाज आमाल का मज्मुआ है उसी तरह कमाई भी आमाल का मज्मुआ है। अहकामात वाली तालीम और अल्लाह के ध्यान के साथ जाओ, इन सारे अमलों पर आकर ये यकीन करो कि इन अमलो की वजह से अल्लाह अपनी कुदरत से हमे कामयाब करेंगें। अब इस यकीन को घर पर लेकर जाओ, खुदा का कहना मानोगे तो जिन्दगी बड़ी बुलन्द बनेगी, कामयाबियॉ यूँ आयेगीं। हुजूर सल्ल0 की बताई हुई तफसील को सीख कर पैसा लगाओगे बड़ा मजा आयेगा। अब तेरी नमाज घर मे चली गयी, तेरी नमाज कमाई मे चली गयी। जिस तरह खुदा तेरी नमाज से राजी थे, उसी तरह अब तेरी कमाई से और घर से राजी हैं।

आज मआशरत मे किस्में बनी हुई है कि कोई अपने वतन का, कोई अपनी कौम का, कोई अपनी जुबान का पर तुम किसी के नही, तुम सबके हो क्यों कि तुम अल्लाह के हों। जिस कौम का भी भूखा, नंगा हो, जिस मजहब का भी हो, जिस मुल्क का भी हा, उसको खाना खिलाओ, कपड़े पहनाओ। इन्सानी जिन्दगी की जरूरतो को पूरा

करने मे जिसकी जो हाजत हो उसकी जरूरतो और हाजतों को पूरा करो। जो भी आ जाये उसको हाथ से पकड़ कर संभालो। तुम खुदा के बन कर आये हो, तुम खुदा की मख्लूक के नफे के लिये आये हों।

पार्टी बन्दी चल रही है, तुम जालिम के खिलाफ मज्लूम की हिमायत करो, दुश्मन के साथ होकर बेटे के चार थप्पड़ लगाओ, तुम बेटे के नही खुदा के हों। अदालत मे पहुँचोगे कभी हिन्दु की मुवाफिकत मे, कभी सिख की मुवाफिकत मे, ये मश्क है।

मुसलमान को अल्लाह तआला शानुहु ने ये रास्ता दिया है। जितना इस रास्ते पर आओगे अल्लाह से लेने का वजदान पैदा होगा, अहकामात की तालीम का सिलसिला वजूद मे आयेगा। लोग अदालतों मे नही जायेंगें तुम्हारे पास फैसलों के लिये आयेंगें कि ये लोग किसी के हामी नही ये अल्लाह वाले हैं। तुम्हारी मस्जिदों और तुम्हारी दुकानों मे ये फैसलों के लिये आयेगें तो फिर अदालतों मे मक्खियॉ भिनकने लगेंगी। इस मश्क के लिये चार चार महीने मॉगते है कि रंग चढ़ गया तो फिर खुद फिरते फिरोगे और अगर रंग न चढ़ा तो एक ऑच की कसर रह गयी फिर चार महीने के लिये चले जाओ।

ये सारी चीजें यकीन बदलने के वास्ते हैं असल चीज यकीन है, अमल असल नही है। अल्लाहुम.मग्फिर.लि हयियना व मयियतिना, ये दुआ तो मरने वाले के लिये है जो बेचारा मर गया है और जो जिन्दा हैं उनके लिये अल्लाहुम्मा मन अहयैतहु मिन्ना, कि ऐ अल्लाह जिसको हममे से जिन्दा रख इस्लाम पर और जिसको हममे से मौत दे ईमान पर मौत दे। ईमान पर मर गये तो जन्नत का लिबास पहेना दिया जायेगा, अर्श के साये के नीचे पहुँचेंगें। अमल खूब किये लेकिन ईमान पर न मरे, रोजा भी रखा, जहॉ भी गया तब्लीग भी की, शहीद भी हुए पर कब्र मे लेटते ही आग बिछा दी गयी।

अज्दहे मुसल्ल्त करने वाला, पेट भरने वाला, सैराब करने वाला, जिन्दा करने वाला, मारने वाला और तेरे सारे मसलों को बनाने और बिगाडने वाला रब कौन है ? यहॉ वाली बात वहॉ न चलेगी कि

हम जमीदार हैं जिमीदारी करके पलते हैं,

हम दुकानदार है दुकान से जो पैसे मिलते हैं उन पैसों से पलते है,

हम मजदूर है मजदूरी करके पलते हैं।

अलहम्दुल्लिाही रब्बिल आलामीन अगर दिल मे अल्लाह के अलावा किसी और से पलने का तआल्लुक है तो जुबान ये न कहेगी कि अल्लाह पालने वाले हैं। कलेक्टर का, जमीन का, दुकान का यकीन दिल मे भरा हुआ है जो दिल मे है जुबान वही बोलेगी। दिल मे गैरो से पलना, जहन मे गैरों से पलना तो जुबान ये न कह सकेगी कि अल्लाह पालने वाले हैं। हॉ, अगर दिल मे गड गयी कि अल्लाह पालने वाले हैं तो जवाब दे सकोगे कि अल्लाह रब है। अगर दुनियॉ मे अपनी जिन्दगी की कामयाबी के लिये इस्लाम के तरीको के अलावा तरीके इख्तियार करता था कि

मेरा बेटा जवान हो रहा है जैसे फलॉ ने अपने बेटे का ब्याह किया था वैसे ही मैं भी ब्याह करूगॉ,

जैसे फलॉ ने अपनी कोठी बनवायी है वैसे ही मैं भी बनवाऊॅगा,

जैसे फलॉ ने लिबास पहना है वैसे ही लिबास मैं भी बनवाऊॅगा ।

अगर मुहम्मद सल्ल0 के तरीके से हटा है तो कब्र मे ये नही कह सकेगा कि मेरा तरीका इस्लाम है फिर जूते पड़ना शुरू।

इसी तरह सैकडो वजीर, सैकडो मिम्बर, सैकडो इन्जीनियर और सैकडो डाक्टर जुबान पर चढ़े हुए है तो जुबान ये न बोल सकेगी कि ये हमारे नबी सल्ल0 है अगर जवाब सही दिया तो अल्लाह की तरफ से आवाज आयेगी कि इसने सच कहा। ईमान तो अमल की तक्मील के वास्ते है, अमल इसलिये करो कि उनका यकीन आ जाये।
मैं ईमान की दावत दूँगा और दिलवाऊँगा तो मेरे अल्लाह मुझे पालेंगें, मेरी मदद फरमॉयेगें।
मैं तालीम करूँगा और तालीम मे लोगों को लाऊँगा तो मेरे अल्लाह मुझे पालेंगें, मेरी मदद फरमॉयेगें।
मैं जिक्र करूँगा और लोगों को जिक्र पर लाऊँगा तो मेरे अल्लाह मुझे पालेंगें, मेरी मदद फरमॉयेगें।
मैं एख्लाक सीखूँगा और लोगों को एख्लाक़ पर लाऊँगा तो मेरे अल्लाह मुझे पालेंगें, मेरी मदद फरमॉयेगें।
अल्लाह के वास्ते अमीर की मानना, अल्लाह के वास्ते साथियों की झेलना इस पर वजारत और बादशाहत से ज्यादा पलना दिखलायेंगें, मरने के बाद के इनामात तो बहुत ज्यादा।
शैतान आयेगा तब्लीग का काम ता बहुत ऊँचा और अच्छा है पैसे होते तो खूब करते बस सारा दूध नापाक हो गया कि तुमसे अमल को तो पसन्द करा दे और यकीन तुम्हारा जमने न दिया। ये मर्दूद यकीन से रोकेगा कि पैसा होता तो तब्लीग का खूब काम करते हॉलाकि यकीन बदलने के वास्ते ही ये अमल दिये गये हैं। बहुत सी हदीसों मे है कि ईमान और अमल की मेहनत करोगें तो अल्लाह तुम्हे गनी कर देगें और तन्दुरूस्ती देंगें। पहले यकीन बदलने का काम है जब यकीन बदल जायेगा तो जमीदारों के अमल भी बदल जायेंगें।
हजरत मुहम्मद सल्ल0 अल्लाह के पास से अमल के तरीके लेकर आये हैं, नूह अलै0, ईसा अलै0, मूसा अलै0, इब्राहिम अलै0 सब अल्लाह की तरफ बुलाने वाले हैं, अल्लाह ने सबसे पहले नबियों को दावत पर डाला है।
मनी के गन्दे कतरे से बने हुए इन्सानो को, बन्दर और सुअर की तरह नापाक इन्सानों की तरफ बुलाने वालों का खर्च कौन उठाता है ? कि जिसकी तरफ बुला रहा है वो खर्च उठाता है देख लो इलेक्शन मे और तुम लोगो को अल्लाह की तरफ तब बुलाओगे जब पैसे हों कि पैसे हों तभी दावत का काम होगा कि नही,
हम लोगो को अल्लाह की तरफ बुलाते फिरेगें तो अल्लाह हमारा खर्च उठायेगा,
हम अल्लाह वाला इल्म फैलायेगें तो अल्लाह हमारा खर्च उठायेगा,
आज हमने यकीन नही सीखा है इसलिये अल्लाह हमारा खर्च नही उठाते अगर यकीन हो जाये तो अल्लाह हमारा खर्च उठा कर दिखा दें। खाली गश्त करना और दावत देना मकसद नही है बल्कि अल्लाह की तरफ बुलाना, तालीम करना, अल्लाह के रास्ते मे जाना, इन सबका मकसद गैर का यकीन तोड़ना है कि गैर का यकीन टूटे और गैर से नाउम्मीद होकर अल्लाह से यकीन का जोड़ना है। असल मसला यकीन का है कि सबसे ज्यादा यकीन बिगड़ा पड़ा है।
जब तुम दावत दो, गश्त करो, तालीम करो तो ये यकीन पैदा करने की कोशिश करते रहा करो कि मैं अल्लाह की तरफ लोगों को बुलाऊँगा इस बुलाने पर अल्लाह मुझे पालेंगें। चॉदनी चौक मे लोगो को बुला बुला दुकानों मे ले जाते हैं इन बुलाने वालो का खर्च दुकानदार उठाते हैं, हम लोगो को बुला बुला अल्लाह के घर मे लायेगें तो अल्लाह हमारा खर्च उठायेग।

इस बयान की असल किताब बंगले वाली मस्जिद मे मौजूद है

बाद नमाज फज्र बंगले वाली मस्जिद

इन्सान को एक ही मैदान नजर आता है

17 सफर 1382 हिजरी

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

मेरे भाईयों और दोस्तों! इन्सान की कामयाबी और नाकामी का तआल्लुक इन्सान की अपनी मेहनत से है पर मेहनत के मैदान दो हैं। बा हैसियत इन्सान होने के इसे एक ही मैदान नजर आता है और ये उसी मैदान पर अपनी सारी सलाहियत लगा देता है, इस मैदान मे मेहनत करने वाला हमेशा नाकाम रहता है।

दूसरा मेहनत का मैदान इन्सान की समझ मे नही आता, इस मेहनत के मैदान को दुनियाँ का सबसे ज्यादा समझदार इन्सान बतलाता है और वो समझदार इन्सान नबी होता है। एक तरफ नबी की खबर दूसरी तरफ इन्सानों की नजर बस यहीं से नजर का और खबर का टकराओ शुरू होता है। नबी आसमान से आयी हुई खबर पर मेहनत करने को कहता है और इन्सान नजर आ रही चीजो पर मेहनत करता रहता है।

नजर वाले रास्ते मे सबसे पहले मेहनत करके माल हासिल करता है फिर माल से चीजें खरीदता है और चीजों स अपनी जिन्दगी के मसअलों को बनाता है। ये रास्ता इन्सान को कदम-कदम पर कामयाबी दिलाने वाला दिखलायी देता है, जब आगे चल कर पैसा बढता है तो वो पैसा घर मे दिखलायी देता है सामान, कपड़े और चीजों की शक्ल मे। अब इन्ही सबसे परवरिश दिखायी देती रहेगी पर इस रास्ते की मुसीबतें छुपी रहती है, हॉ राहतें दिखायी देती रहेती है पर मुसीबतें छुपी रहती है। जब किसी दिन खुदा का अजाब मुतवज्जह होगा तो बीबी-बच्चों के दिल फाड दिये जायेगें या आग लग कर घर-दुकान का नक्शा ही खत्म या ऐसी लाइलाज बीमारी कि न जिन्दा रहने मे मजा और न ही मरने मे।

ये रास्ता बहुत घटिया है अल्लाह को पसंद नही है कि चीजें ही इन्सान के दिल मे हों, चीजें ही ऑखों के सामने हों, इसी पर यकीन, इसी की मुहब्बत, उसूलन अल्लाह ने ये रास्ता अपने ना मानने वालों को दिया है इसलिये कि वो भी उसी के बन्दे हैं पर इस रास्ते मे अल्लाह पाक शुरू शुरू मे बनाते है और फिर दुनियाँ व आखिरत दोनो को बिगाड़ते हैं। हालॉकि आखिरत ला महदूद है और दुनियाँ बहुत थोड़ी हैं।

दूसरा रास्ता वो है जिसमे कामयाबियाँ बिल्कुल दिखायी नही देतीं हैं, लेकिन इस रास्ते पर इन्सान अगर अपने आपको मेहनत पर डाल दे तो थोडी सी परेशानी के बाद इन्सान कामयाब होता चला जाता है और मरने के बाद जन्नत मे पहुँचा दिया जाता है.।

इन दोनों रास्तों को अल्लाह पाक नमाज की हर रकाअत मे दुआ के तौर पर कहलवाते हैं कि ऐ अल्लाह इनआम के रास्ते की हिदायत नसीब फरमा और उस रास्ते को हमारे दिल मे न डाल जिस रास्ते पर गजब हुआ और लोग भटक गये, जिस रास्ते पर तूने इनआमात दिये हैं उस रास्ते पर हमे डाल दे।

ये एक दुआ है वैसे तो कुरआन व हदीस मे सैकड़ों हजारों दुआ हैं पर तुम्हारे जिम्मे एक भी दुआ मुतअययन तौर पर फर्ज या वाजिब नही है पर ये दुआ अइम्मा सलासा के नजदीक फर्ज और एहनाफ के नजदीक वाजिब है। लेकिन लफजों को पहचानने के वास्ते कुछ नियतों का भी दखल होता है और कुछ मेहनत भी करनी पड़ती है।

हर आदमी रोजाना चालीस पचास दफा नमाज मे ये पढ़ता है पर ये समझने की काशिश नही करता कि हिदायत व जलालत क्या हैं असल मे ये दो कैफियत हैं जो इन्सानो के दिलो में अल्लाह की तरफ से डाली जाती हैं, अन्धेरा या रोशनी, सीढ़ी या कुऑ, फूल या पत्थर, अन्धेरे मे दिखलायी नही देता, जलालत दिल का अन्धेरा है जिसमे आदमी को कुछ दिखायी न दे कि लकडी पर हाथ डाला सॉप पर पड़ा तो उसने काट लिया या दवा की जगह जहर उठा कर खा लिया। जलालत दिलों के अन्धेरे का नाम है, इसमे नफा नुकसान दिखायी नही देता, जो दिखलायी देता है इन्सान उसी की तरफ बढ़ता है, इसलिये अन्धेरे मे ज्यादा मेहनत करनी पड़ती है।

हिदायत या जलालत ये मिन जानिब अल्लाह की तरफ से इन्सानों के दिलों मे डाली जाती हैं, अल्लाह ने इम्तेहान के तौर पर इन्सानों के सामने ये दो मेहनते रखी है,

एक जलालत वाली मेहनत

एक हिदायत वाली मेहनत

इन्सान जलालत वाली मेहनत करेंगें तो अल्लाह उनके दिलों मे अन्धेरा भर देगें और अगर इन्सान हिदायत वाली मेहनत करेंगें तो

अल्लाह उनके दिलों मे रोशनी भर देगें। ये दो मेहनतें है, एक मेहनत अल्लाह ने नबियो के जरिये से बतलायी और दूसरी मेहनत जो इन्सान की नजर ने दिखलायी। अल्लाह ने सबसे पहले इन दोनों रास्तों की हकीकत बयान की फिर बाद मे दुआ मंगवाई,

إِيَّاكَ نَعْبُدُ وإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ

ये तर्तीब अल्लाह ने बयान फरमायी कि पहले मेहनत फिर दुआ।

अन्धेरा क्या है ?जो कुछ तुम्हे जमीदारों, मुल्कों, फौजों, डाक्टरों, फासिकों और कातिलों से, जहॉ कहीं से होता हुआ दिखायी दे रहा है वो सारा सिलसिला अल्लाह से चल रहा है, अल्लाह कर रहे हैं। जलालत आपको ये बातें जो अल्लाह के करने से हो रही हैं, वो वजीर से दिखायेगी कि फौज यूॅ कर देगी, खेती यूॅ कर देगी, डाक्टर यूॅ कर देगें अगर यही नजर आ रहा है, यही समझ मे आ रहा है तो ये गैरूल्लाह का वजदान है यही जलालत ह। जब कि अल्लाह रब्बुल इज्जत ही बीमार करने वाले वही तन्दुरूस्त करने वाले, वही इज्जत देने वाले वही जिल्लत देने वाले, वही मारने वाले वही जिन्दा करने वाले,सब कुछ अल्लाह से होता हुआ दिखायी दे कि अल्लाह कर रहे है तो ये हिदायत है कि मसला अल्लाह से हल होगा अगर दिल का वजदान ये है तो ये दिल का नूर है। गैरूल्लाह का वजदान हुआ तो जलालत है, अल्लाह का वजदान हुआ तो हिदायत है। जो दीनदार समझे जाते हैं आज उन्हे जलालत ये लगी कि हॉ, बिल्कुल सब अल्लाह ही करते हैं पर सबब भी तो हो, कुछ करना भी तो पड़ेगा अगर पैसों पर, ओहदों पर, जमीन व आसमान पर करना दिखायी दे, यही तो जलालत है और यही तो अन्धेरा है और अगर दिल मे ये आये कि हम अल्लाह का कहना मॉनेगें उसी से मागेंगे तो

إِيَّاكَ نَعْبُدُ وإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ

अल्लाह से बुलन्दी, अल्लाह से उरूज, सेहत, इज्जत लेने का तरीका जो तू कहेगा वो हम करेगें फिर जो भी हमारा मसला होगा हम दुआ मे तेरे सामने रखेगें। न ओहदें, न चीजें, न मकान ये अल्लाह से लेने का रास्ता नही है बल्कि हुक्मों पर जिन्दगी डाल दो फिर हाथ फैलाकर उससे मॉग लो कि हम अमल को सही करने की मेहनत मे लग गये अब अल्लाह से मॉगेगें अल्लाह हमें देगें। अल्लाह से मॉगते रहें कि ऐ अल्लाह हम तो

मेहनत मे लग गये तू दिल का नूर दे दे, मेहनत मख्लूक है मख्लूक से वजूद नही होता, हिदायत अल्लाह देंगें तुम दुआ मॉगोगे।

इन्सानी मसले एक इज्तिमाई हैं और एक अन्फिरादी हैं, इसी तरह हिदायत की मेहनत भी एक इज्तिमाई हैं और एक इन्फिरादी हैं अगर हम वो मेहनत करेगें जो एक फरद से तआल्लुक रखती है तो एक को हिदायत मिलेगी और मसले भी इन्फिरादी ही हल होगें अगर हम ये चाहें कि पूरे आलम को हिदायत मिले तो हमे वो मेहनत करनी होगी जिस पर सारी दुनियॉ को हिदायत मिले। हम मेहनत फरद वाली कर रहे हैं और दुआ सारे हिन्दुस्तान के लिये मॉग रहे है।

इन्फिरादी मेहनत का असर क्या होगा ? इन्फिरादी मेहनत पर एक को हिदायत मिल गयी, उसने जिन्दगी के अमल दुरूस्त कर लिये लेकिन बाकी को हिदायत न मिली तो उन पर जो हालात आयेंगें उसका असर फरद पर पड़ेगा जो इसे खुद महसूस होगा। इसलिये आदमी के अपने मसाएल का हल भी य है कि मज्में मे हिदायत आ जाये, न फौज से, न मुल्क से, न हुकूमत से, न पैसे से होगा बल्कि अल्लाह के करने से होगा, अल्लाह मेरे अमल के सही होने पर सब कुछ देगें कि झूठ पर ये होगा और सच पर ये होगा, जितना आपको आज चीजों से दिखायी दे रहा है वो सारा का सारा अमलों पर दिखायी दे कि अम्र बिल मारूफ करने से ये फायदा होगा और नहय अनिल मुन्कर करने से ये फायदा होगा।

जमीन डूब गई इसलिये कि हमारे यहॉ शादियों मे खर्च की ज्यादती हुई।

आफत आयी इसलिये कि जिना हुआ था।

साईन्स की भी तरदीद है, इल्म ए नजूम का भी हिसाब है, यूँ कहते हैं कि मानसून आयेगा बारिश होगी। हॉ, ये हिसाब बैठालते है, हजरत अली रजि0 के पास एक आदमी आया और कहने लगा कि खुदा के वास्ते इस घड़ी मत जाओ, मैने तारों का हिसाब लगाया है कि इस घड़ी जाने से शिकस्त होगी। हजरत अली रजि0 ने फरमाया ! मुझे तेरी बात की मुखालिफत करने का हुक्म है इसलिये कि इल्म ए नजूम से जो खबर दे वो काफिर है और जो उसकी बात माने वो भी काफिर है।

हिदायत किसका नाम है ? दुनियॉ वाले जो कुछ चीजों में देखते हैं वो तुम्हे अमल मे दिखलायी दे कि
मैं फलॉ अमल करूगॉ अल्लाह दुश्मन से हिफाजत करेगें,
मैं फलॉ अमल करूगॉ अल्लाह रिज्क मे उस्अत करेगें,
मैं फलॉ अमल करूगॉ अल्लाह बीमारी दूर करेगें,
पर अमलों से होने का जहन ऐसे ही नही बन जायेगा, पहले मेहनत करो फिर अल्लाह से रो रो कर मॉगो कि ऐ अल्लाह मैंने तो मेहनत कर ली अब तू हिदायत दे दे। पहले चीजों को छुड़वाया फिर वजू करवाया, काबा का तरफ मुँह करवाया, अहकाम मे लगाया और अब दुआ मॉगने को कहा पर इस अमल का यकीन जमाना ये नमाज से होगा,
परेशानियों से बचना,
रोटी कपड़ों का मिलना,
हिफाजत का मिलना,
घरेलू जिन्दगी का बनना,
सैलाब की रोक थाम ये सब नमाज से होगा,
कर्जा नमाज से उतरेगा,

हिफाजत नमाज से होगी,
मुल्क, वजारत व हुकूमत नमाज से मिलेगी,
तमाम मसले नमाज से हल होगें पर ये सब नमाज से तब होगा,
जब तू नमाज से पहले वाली मेहनत करें नमाज से लेने का दरवाजा नमाज से पहले वाली मेहनत करने से खुलेगा, अब अगर नमाज के बाद वाली मेहनत न की तो दरवाजा खुल कर फिर बन्द भी हो जाता है अगर इस मेहनत को अपनी जात से करोगे तो शख्सी हिदायत आयेगी और शख्सी मसाएल हल होगें, इज्तिमाई मेहनत करोगे तो इज्तिमाई हिदायत आयेगी और इज्तिमाई मसाएल हल होगें। मेहनत वही होगी, बस तुम्हे इज्तिमाई नवैइयत के लिये मजम मे घुसकर मेहनत करनी होगी पर उससे पहले यकीन बदलने की मेहनत है। दुनियॉ मे एक यकीन देखकर पैदा होता है कि खेतियॉ, जानवर, सोना, चॉदी, मकानात, पुलिस, फौज, अदालतों, पार्लियामेन्ट, गर्वनर, हाकिम, औरते देखोगे, उस देखने से जो यकीन बनेगा वो यकीन शिर्क है।
चीटी देखी कि इससे कुछ नही होगा पर शेर को देखा तो यकीन ये कि शेर खा जायेगा।
मिटटी देखी कि इससे कुछ नही होगा पर सोना देख कर कहोगे कि इससे सब कुछ हो जायेगा।
इसलिये देखकर जो यकीन बनता है वो हर रोज तेज होता जाता है और सुन कर जो यकीन आता है वो अगर दावत मे न आया तो बहुत जल्द गायब हो जाता है तो एक यकीन सुनने से बनता है इसलिये अल्लाह की जात व सिफात और उसकी बड़ाई को सुनो। अल्लाह बड़े हैं इतने बड़े हैं कि उनकी बड़ाई की कोई हद नही, अल्लाह ने किस तरह इस जमीन व आसमान को बनाया ? इसका कोई इल्म नही, पढ़े लिखो के लिये मदरसों मे भी इसका कोई इन्तेजाम नही, सिर्फ नहव, मन्तिक और फलसफा पढ़ते रहते है। सात साल मदरसे मे पढ़ा पर खुदा की कसम ! एक चीज ऐसी नही जिससे ईमान तैयार हो, आठवें साल मे देखें तो सफाहत व बलागत को तलाश करते रहते है, मिश्कात शरीफ मदरसा मे वापस कर दी और किताबुल ईमान को फिर उठा कर न देखा, नवें साल कुछ ईमान पर मुख्तलिफ फर्क की बहसें देखीं और अब निकल गये सात साल वाली पढ़ाई मे जो पढ़ा था उसे पढ़ाने लग गये।
अब रोटी का कैसे इन्तिजाम हो ? इसके लिये ये पढ़ान वाली शक्ल लेकर बैठ गये। इसलिये अल्लाह से होने को, अमल से होने को, उसकी बड़ाई को, उसकी कुदरत को, उसकी सिफात को इतना सुनो कि सुनते सुनते दिल मे उतर जाये, ये सुनने की मेहनत है अगर हिदायत लेनी है और आमाल से कामयाबी पर पहुॅचना है तो देखने वाले यकीन के मुकाबले मे सुनने वाले यकीन को अपने अन्दर पैदा करो। कितने लोंग हैं जिन्होंने अमरीका को देखा है पर अमरीका का यकीन सुनने से बना है। इसी तरह सारी दुनियॉ का यकीन कि कुछ देखकर बना और बहुत सा सुनकर बना। सुनकर यकीन बहुत बडी मिक्दार मे बनता है, देखन की मिक्दार बहुत छोटी है, देखकर भी वही यकीन बन रहा है जो हम सुन रहे है। इसलिये तुम वो सुनो जो अल्लाह और अल्लाह के रसूल ने बताया है़, इसको इतना सुनो कि सुनते सुनते तुम्हारे दिल का यकीन बदल जाये।
दूसरी मेहनत है कि इल्म हासिल करो, एक इल्म सुनकर मिलता ह और एक इल्म देखकर मिलता है। चीजों को आप देखकर जानेंगें और अमलों को आप सुनकर जानेंगें, चीजों का इल्म देखने से आता है, तुम मस्जिद मे बैठकर देखने वाले इल्म के मुकाबले मे सुनने
वाला इल्म हासिल करो। कि
इन्साफ करने पर क्या कामयाबियॉ मिलेंगी ?
रिश्ते जोड़ने मे क्या इनामात मिलेंगें ?

भूखे को खाना खिलाने पर क्या मिलेगा?
फजाएल की किताबों को बैठकर सुनो साथ ही साथ अमल को बैठकर सीखो कि नमाज से इज्जत व हिफाजत मिलेगी मगर कब कि जब नमाज का अमल इल्म के साथ हों कि
नमाज मे ऑख का अमल ठीक हो,
सज्दे मे पैर सही तरीके पर हो,
कायदा मे यूँ हाथ रखने चाहिये,
इस तरह से जब मेहनत करोगे तो अब इन सब अमलों की अहमियत पैदा हो जायेगी। अब तुम इल्म पर मेहनत कर लो, जो कुछ तुम नादानी व जिहालत से आज चीजों मे जानते हो, वो अब इल्म मे जानने लगो। किताबों मे स सुनते सुनते ये समझ मे आ जाये कि असल अमल नमाज ही है, चाहे कितने ही अमल कर लो सबका बन्धन नमाज ही है। चीजें तरकीबों और तदबीरों से नही मिलती, चीजें अमल से मिलती हैं पर अमल से चीजें उस वक्त मिलती है जब अमल अल्लाह के ध्यान के साथ हो।
अल्लाह का ध्यान बनाना होगा कि एक ध्यान देखने से बनता है कि निजामुददीन गया था तो लाल किला भी देखा अब सारा ध्यान किले की तरफ फिर गर्वनर हाउस देखा तो सबका ध्यान आ गया इसका नाम गफलत है, जो देखकर ध्यान बनता है उसे जब बाद मे सुनो तो फौरन वो चीज सामने आ जाती है और एक ध्यान बनता है मश्क से कि अल्लाह का इतना जिक्र करो कि जब तुम कोई चीज देखो तो तुम्हे अल्लाह का ध्यान आ जाये। अब नमाज पढ़ो इस तरह से कि उसका एक एक जुज सही हो, अल्लाह के ध्यान के साथ ये यकीन हो कि सातों जमीन व आसमान से कुछ नही होता, नमाज पढकर दुआ मॉगने से सब कुछ होता है।
अगर तुम कर्जे की अदायगी मॉगोगे कर्ज अदा होगा।
मुक्ददमे मे कामयाबी मॉगोगे कामयाबी मिलेगी।
खाली नमाज की मश्क से नमाज नही आती बल्कि इन तीन मेहनतों की मश्क उठाओ तो नमाज जानदार बनेगी। मस्जिद मे ईमान की मज्लिस मे बैठकर, इल्म के हल्के मे बैठकर, जिक्र करने वाले बन जाओ। अब पॉच दस मिनट का किस्सा खत्म अब घन्टों की नमाज हो गयी, घर या दुकान से बुलावा आया तो कहला दिया जब मेरी तस्बीह पूरी हो जायेगी तब आऊँगा। आज वाली नमाज न रहेगी जिसमे कुछ दिखायी नही दे रहा है बल्कि अब मश्क होगी खूब ईमान को बातें सुनते हो, खूब तालीम मे बैठते हो, खूब जिक्र करते हो, खूब नमाज पढ़ पढ़ कर अल्लाह से मॉगते हो कि ऐ अल्लाह मुझे हिदायत दे दीजिये। हक तआला शानुहू किसी भी वक्त तुम्हारे दिल मे रौशनी पैदा कर देगें।
जब आदमी ने वजू शुरू कर दिया तो सारा नमाज का हिसाब बन गया, मस्जिद मे नमाज के लिये जाने से नमाज का हिसाब शुरू हो जाता है। अब जब कोई मसला आये तो हुजूर सल्ल0 की तरह मस्जिद मे जाओ, लीडरों के आगे हाथ जोड़ना खत्म, अफसरों की खुशामद करना खत्म, रिश्वतें खिलानी बन्द, बुजुर्गों के पास जाकर उनको खुदा की तरह बनाकर पैर पकड़ना खत्म। अब खुदा ने तुमको विलायत के रास्ते पर डाल दिया है, वो भी इसी रास्ते से बने है, विलायत के रास्ते पर चलते हुए उनका तुम्हारा तआल्लुक समन्दर वाला है।
कमाई को इल्म पर लाओ कमाने से नही मिलता अमल से मिलता है, गल्ला जमीन से नही मिलता अल्लाह देता है जमीन तो पानी पर बिछाई हुई है अगर कमाई को ईमान पर, इल्म पर, ले आये तो अल्लाह हमे कमाई पर भी देगें। अभी मैं कमाई मे कमा नही रहा हूँ, कमाई मे सो रहा हूँ, जब कमाई ईमान पर, इल्म पर और

अल्लाह के ध्यान वाली होगी तो फिर कमाई आफतों से निकालवा देगी। कमाई को मेहनत करके यकीन पर लाओ कि हमारे कमाने से नही मिलता अल्लाह के देने से मिलता है, अब कमाई के अन्दर के अमल ठीक करो। इस तरह कमाई नमाज की शाख बन गयी कि जिस तरह से नमाज पर मिलेगा, कमाई को नमाज की शक्ल पर लाओगे तो कमाई पर भी मिलेगा। अब इन चीजों को घर पर लाओ, पैसे को यकीन पर, इल्म पर, ध्यान पर खर्च करो। जब बीबी बच्चों पर और अपने पर हुक्म के मुताबिक खर्च करोगे तो लाखों मिलेगें। अल्लाह ने, रसूल ने कहॉ कहॉ खर्च करना बतलाया है? भूखों, बेवाओं, मोहताजों पर लगाओ, रिश्तेदारों और पड़ोसियों पर लगाओ अगर पड़ोसियों और रिश्तेदारों के बारे मे अहकामात तोड़े तो अल्लाह उन्हे तुम्हारा दुश्मन बना देगा। अहकामात के तहत तुम उन पर 500 रूपये खर्च कर देते तो पड़ोसी की दुश्मनी की वजह से अदालत मे तुम्हारे 2500 खर्च होने से बच जाते, अहकामात के टूटने पर पैसा भी गया और दुश्मनी भी हुई।

तुम दुनियॉ मे किसी खानदान, कौम और किसी पार्टी के बनकर मत चलो, तुम्हे ईमान पर, खुदा के यकीन पर अपने आपको

इस्तेमाल करना है। देख लो जालिम कौन है और मज्लूम कौन है अगर तेरा गॉव गलती कर रहा है तो तू दूसरे गॉव वालों की मदद कर। मुस्लिम गैर मुस्लिम का मसला है तो भी अन्धे बनकर किसी के साथ नही होना है कि मेरी बेटी है, मेरा बेटा है, ये मेरी मॉ है कोई बात नही, तुम मज्लूम की हिमायत करो अगर यहूदी मज्लूम है तो हम उसका साथ देगें। सारी चीजों को इस तरह चलाओ जिस तरह बताया क्यों कि सारा मसला नमाज के साथ है। इल्म के ऊपर हक व सदकात पर मआशरत को लाओ और इन सारी चीजों को अपने आप पर लाओ।

अब जो तुम पर हाथ डालेगा अल्लाह उसकी जिन्दगी बिगाड़ कर दिखलायेगें अगर ये बात दिल मे बैठ गयी तो ये हिदायत है, नही बैठी तो दिल मे अन्धेरा है। अब इन चीजों को दुनियॉ मे फैलाने के लिये तुम दुनियॉ मे फैल जाओ। कभी इस इलाके मे गये कभी उस इलाके मे गये तो खुदा के यहॉ तुम महबूब करार दिये जाओगे। अब इनकी मश्क के लिये तीन चिल्ले दे दो, दूसरी बार मुल्कों के एतबार से सोचने के लिये तीन चिल्ले दे देना फिर तीसरी बार अरब मुमालिक मे जाने के लिये तीन चिल्ले दे देना चौथी बार यूरोप के मुल्को मे जाओ,

उनकी औरतो पर थूकना,

कारों पर पेशाब करना और

कोठियों पर पाखाना करना आ जाये तो यूरोप तुम्हारे हाथों पलटा खा जाये।

इस बयान की असल किताब बंगले वाली मस्जिद मे मौजूद है

बाद नमाज फज्र बंगले वाली मस्जिद

18 सफर 1382 हिजरी

इन्साफ सीखो

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمنِ الرَّحِيمِ

जितने भी लफज हैं वो जुज व कुल दोनो पर बोले जाते हैं, एक बीघा जमीन को भी जमीन कहते हैं और सारे मुल्क की जमीन को भी जमीन ही कहेगें हत्ताकि सारी दुनियॉ की जमीन को भी जमीन ही कहा जायेगा। एक जर्रा भी सोना है, सोने की एक ईट भी सोना ही कहलायेगी और सारी दुनियॉ मे जितना सोना है वो भी सोना ही कहा जायेगा अगर लफज एक ईट सोने की बोला गया तो नफा भी एक ईट सोने के बराबर होगा और बाएतबार पूरे मुल्क का सोना बोला गया है तो इस एतबार से फायदा होगा। कुरआन व हदीस की लाईन मे ईमान व अमल के बारे मे जो भी अल्फाज हैं वो जुज व कुल दोनो पर बोले जाते हैं। सारे लफजों मे यही बात मिलेगी, जितने भी लफज बोले जाते है वो अपने अन्दर हकीकत रखते है। तक्वा जुज के एतबार से भी बोला जायेगा और कुल के एतबार से भी बोला जायेगा।

अल्लाह रब्बुल इज्जत ने बहुत सारे अहकामात दिये है इन्सान जिस हुक्म को पूरा कर रहा है, उसके एतबार से कामयाबी मिलेगी और जो अहकामात छोड़ेगा उसके एतबार से नाकामी। हुक्म के छोड़ने पर मुसीबतें आयेंगीं, हर हुक्म के दर्जे है जिस दर्जे तामील करेगा उसी दर्जे इनाम मिलेगा। आज दुनियॉ मे ईमान व अमल जो बाकी है वो जुज के तौर पर बाकी है कुल के तौर पर नही है। आज जितने अहकामात जिन्दगी से निकले हुए है उसकी वजह से अल्लाह के यहॉ ये पूरे इस्लाम पर नही है।

अब बजाये जुज के कुल पर कड़ी मेहनत करने वाले बनो, जितने अहकामात हैं और जितने दरजात है उन सब को पूरा करो तो हमारे मसाएल का हल होगा। दुनियॉ मे चैन व इज्जत, सरबुलन्दी और कूवत के लिये कड़ी मेहनत करने वाला बनना पड़ेगा और इसी पर अखिरत मे दरजात मिलेंगें। जो यहॉ चमकेगा वो वहॉ चमकेगा पर ये सब कुछ पूरे इस्लाम पर चलने वालों के लिये है।

बावजूद अमरीका व रूस की इजादात व ऐटमयात के जो पूरे इस्लाम पर आ जायेगा, उसके सामने तो कोई नक्शा ही नही ठहर सकता और जो पूरे इस्लाम पर नही आयेंगें तो जो उनके पास है वो भी न रहेगा, आहिस्ता आहिस्ता सारे मुल्क की जमीने भी हाथ से निकल जायेंगी ये सिर्फ मजदूर होकर रहेगा। आज हमारे पास ईमान व अमल बहुत थोड़ा है, चाहे आलिम के पास हो या चाहे हाजी के पास हो, हर एक के पास ईमान व अमल बहुत थोड़ा है और इसी वजह से हमारी मुसीबतों का खात्मा नही हो रहा है। किसी के पास ईट के बराबर, किसी के पास पत्थर के बराबर, अब तो मेहनत करके पूरे इस्लाम वाले बनो तो दुनियॉ के भी सारे मसले हल होंगें और आखिरत के सारे मसलो का हल होगा।

दुनियॉ की जिन्दगी उन तरीकों पर लायें जो तरीके अल्लाह ने बतलायें है उन्ही तरीको पर रसूलुल्लाह सल्ल0 जिन्दगी गुजार कर दिखला गयें हैं अगर उन तरीको से हट कर हम मसलों को हल करना चाहेंगें तो ईमान व अमल का जो जुज हमारे पास है, वो सौ दिन बाद हमारे पास नही रहेगा और जितना चार सौ दिन बाद है वो हजारों दिन बाद न रहेगा फिर जिस दिन ये मरेगा उस दिन बेईमान और बेअमल होगा। तो जितना उन तरीकों से हटेगा उस पर उतनी ही आफतें आयेंगी।

इसलिये चाहे हमें रोटी व कपड़ा न मिले शरीयत पर चलना आ जाये अगर शरीयत पर चलना आ गया तो खुदा मेरी दुनियॉ भी बनायेंगें और आखिरत भी बनायेंगें। इस दुनियॉ मे जो लोग ईमान व अमल से अपनी जिन्दगी बनायेंगें वो जब मरेंगें तो आखिरत मे पूरे इनामात पायेंगें।

हमे दावत के अहकामात पूरा करना आ जाये,
ईमान व अमल की मेहनत के अहकामात पूरा करना आ जाये,
जिक्र व दुआ के अहकामात पूरा करना आ जाये,
जान के खर्च करने के और माल के खर्च करने के जितने अहकामात है, हर हुक्म आला दर्जे के साथ पूरा करना आ जाये तो हक तआला शानुहू दुनियॉ का निजाम बदलेंगे, जिस निजाम के अन्दर हम परेशान हाल है, हमें इसी निजाम के अन्दर खुशहाल बना देंगें।

ईमान व अमल से पलने का रिवाज नही

इस जमाने के अन्दर ईमान व अमल से पलने का रिवाज नही है, ये बीमारी दीनदारों मे और पढ़े लिखो मे घुसी हुई है आम आदमी तो इससे बहुत दूर है। आम आदमी तो दीनदारोंऔर पढ़े लिखो को देखता है और दीनदार और पढ़े लिखे ये समझते हैं कि

मेहनत से पैसा,
पैसे से चीजें और
चीजों से पलना,

कहते भी हैं कि जिन्दगी तो पैसों से बनेगी और पैसे अपने जरिये से मिलेगें, यहॉ से बात बिगड़ी है, सारी बात का बिगाड़ यहीं से है। परवरिश का होना, चीजों का चीजों से मिलना, पैसों का पैसों से मिलना सबका सब मुतआरफ तरीकों (पहचाने हुए तरीके) से हो रहा है कि

जब तक पैसा न मिलेगा चीजें न मिलेंगीं,
चीजें न मिलेंगीं तो हालात ठीक न होंगें,

इन्हो तख्यीयुलात (ख्यालात) ने हमारे ईमान व अमल को बरबाद किया है, ईमान व अमल तो वो मख्सूस तरीका है जो अल्लाह से फायदा हासिल करने के लिये मिला है। हुकूमत, पैसे, जमीन व आसमान के मुकाबले मे अल्लाह की कुदरत से फायदा लेने के लिये ईमान व अमल हैं। अल्लाह को कुदरत ह बगैर मेहनत के माल दे दें, ईमान व अमल वो सरमाया है जिस पर

मेहनत के बगैर पैसें मिलें,
पैसे के बगैर चीजें दे दें,
खाने के बगैर पेट भर दें,
पानी के बगैर सैराब कर दें,

अल्लाह को इस पर कुदरत है और अल्लाह की कुदरत किसी नक्शे की पाबन्द नही है। अल्लाह की कुदरत आजाद है, नक्शे अल्लाह की कुदरत के पाबन्द है। हक तआला शानुहू दिन रात अपनी कुदरत को दिखला रहे हैं कि बने हुए को तोड़ रहे हैं और बे बने को बना रहे हैं। इन्सान दोनों तरफ देखे, इधर बनना देखे और उधर टूटना देखे। इधर नक्शों के अन्दर बनी हुई जिन्दगी बिगाड़ कर दिखला रहे है, उधर वादी ए गैर जीजरह मे जिन्दगी को बना कर दिखला रहे हैं। आज कोई यूँ कह रहा है कि

बच्चे बहुत हैं खायें कहॉ से ?

कोई यूँ रो रहा है कि बच्चे बहुत हैं चीजें कम हैं,

कोई यूँ कह रहा है कि चीजें बहुत हैं पर कोई औलाद नही है,

ये सब अल्लाह के मुजाहिरे हैं, यहॉ कुदरत दिखायी है तदरीजन (धीरे धीरे) पर कयामत के दिन एक दम अपनी कुदरत दिखायेगें। यहॉ बीस हजार साल मे जितने इन्सान बने हैं उस दिन एक हुक्म से सारे इन्सानों को बना कर खड़ा कर देंगें, एक हुक्म से सारे जानवरों को बना कर खड़ा कर देंगें। ईमान व अमल की बुनियाद कुदरत से इस्तेफादा है, कायनात से इस्तेफादा नही हैं। यकीन करो कि ईमान व अमल अल्लाह की कुदरत से फायदे उठाने का जरिया है, इसी बात से खुश होकर अल्लाह रब्बुल इज्जत अपनी कुदरत से इन्तिहाई खूबी से पालेंगें। पैसा, मकान, मुल्क, सामने न रखो, जो तहतुल कुदरत है जिस खुदा के बनाने से जिन्दगी बनती है उसको सामने रखो, उसी से पलने का यकीन करो।

चीजों के मिलने का, माल के मिलने का, मेहनत के मुतआरफ तरीकों से यकीन न करो, कुदरत से यकीन करो। जब किसी की जड़ न रहे तो दरख्त कहॉ से आये, ईमान व अमल की जो बुनियाद है वो ये है कि खेती से न मिलेगा, अल्लाह की कुदरत से मिलेगा। चीजें होंगीं तो खुदा की कुदरत से पलूँगा और जब चीजें न होंगीं तो भी खुदा की कुदरत से पल जाऊँगा। मेहनत से पैसा मिलेगा, पैसे से चीजें और चीजा से जिन्दगी मिलेगी, तुमने खुदा की कुदरत को मुकययद (कैद) कर दिया तो खुदा की हिकमत का तकाजा है कि तुम्हे दिखलायें की मेरी कुदरत मुकययद (कैद) नही है। जिस पैसे से समझता था कि चीजें मिलेंगी, उस पैसे से दिखायेगें कि चीजें न मिलेंगीं कल जितने पैसे मे चीजे मिलती थी आज उतने पैसे मे चीजें न मिलेंगीं कमाई बिगाड़ देगें या कमाई चलती रहे पर पैसे मे बचत न होगी।

चीजें हैं पर खौफजदा, बीमार, जलील, परेशान हाल, कि अल्लाह रब्बुल इज्जत सारी लाईनों मे जहॉ जहॉ इसने खुदा की कुदरत को मुकययद (कैद) करारा दिया उन्ही चीजों में इसकी परवरिश बिगाड़ कर दिखायेंगें। क्यों कि इसने अल्लाह रब्बुल इज्जत के बारे में वो बोल बोला अल्लाह रब्बुल इज्जत जिससे पाक हैं। अल्लाह रब्बुल इज्जत पाक हैं उससे कि उनका कोई फेल किसी पर मौकूफ हो,

नबी तक पर हिदायत मौकूफ नहीं

हजरत इब्राहिम अलै0 को हिदायत कैसे मिली ? बगैर नबी के वास्ते से।

हजरत मूसा अलै0 को हिदायत कैसे मिली ? बराहेरास्त आवाज लगायी।

अल्लाह का हिदायत देने का फेल जिब्राईल अलै0 पर भी मौकूफ नहीं।

आज जिसे देखो परेशान है कहीं सुकून नसीब नही, खुदा को ये दिखाना है कि मै खुदा हूँ, मै आजाद हूँ, तू ये अच्छी तरह से समझ ले कि ये सब चीजों से नही होता है, मेरी कुदरत से होता है अगर समझ मे आ जाये तो रास्ता मो़ड़ ले फिर मैं तुझे चमका दूँ।

पहली बात समझने की ये है कि अल्लाह ही पालने वाले हैं, हम चीजों से नही पलते, वो अपनी कुदरत से पालते हैं। अल्लाह हफीज है वो लाल किले से हिफाजत नही करते बल्कि अपनी कुदरत से हिफाजत करते हैं। इन्सानों मे इन्सानों को वो अपनी कुदरत से पैदा करते हैं अगर चाहें तो मॉ के पेट और बाप की सोहबत के बगैर पैदा करके दिख दें।

अल्लाह रब्बुल इज्जत की सिफात का सिफात से जोड़ है, खुदा की सिफात खुदा की सिफात पर ही लगेगी मख्लूकात पर नही लगेगी। खुदा हिफाजत करते हैं लाल किले से हिफाजत नही करेंगें, पहले पत्थर था किसी काम का न था पर इसकी एक शक्ल बना कर मन्दिर मे रख दिया, अब ये खुदा हो गया। अब
ये बच्चा भी देता है,
शिफा भी देता है,
कारोबार भी देता है,
माल भी देता है
कि जब शक्ल नही थी पत्थर था तो इससे कुछ नही होता था अब शक्ल है इसलिये सब कुछ कर सकता है। अब तूने माशाअल्लाह ईट की दुकान बनाई, जंगल को खेत बनाया, शक्कर की दवा बनायी अब इनसे सब कुछ होने लगा। घर मे पैसे लेकर आये, चीजें सजा दीं कि अल्लाह अब पालेंगें, नही ! तुझे धोखा लगा है चीजों से पलने का, अल्लाह तआला अपनी मख्लूक को मख्लूक से नही पालते, सारी मख्लूकात अल्लाह की अयाल है, उनका कुन्बा है वो सारी मख्लूकात को अपनी कुदरत से पालते है। इसे यूँ समझ ले कि़ तू जो कदम उठाता है खुदा न उठाये तो उठेगा नही।
एक आदमी जा रहा है,
कहाँ जा रहा है?
कि भैंस लेने जा रहा हूँ।
इन्शाअल्लाह तो कह दे,
इसमे इन्शाअल्लाह की क्या बात है पैसे मेरे पास हैं और भैंस वहाँ है।
जब पैसे रहें जेब मे तो पैसों से होगा, जब पैसे न रहें तब अल्लाह ही से होगा, ये जहनों का बिगाड़ है। इसलिये शक्लें बनाने के चक्कर मे मत रहो अल्लाह से फायदा हासिल करने के लिये हजरत मुहम्मद सल्ल0 के तरीकों पर आमिल बन कर दिखलाओ अगर हजरत मुहम्मद सल्ल0 के अमल तुम्हारे अन्दर जुज्वी हैं तो दुनियाँ मे मुसोबतें, खौफजदा, बीमार, जलील, परेशान हाल होकर जिन्दगी गुजरेगी। इसलिये सबसे पहला काम है ईमान का सीखना, ईमान के सीखने पर आओ कि यकीन बदलने की मेहनत करके यकीन को बदल लो कि खेतों से, दुकानों से, मुलाजिमतों से, मजदूरियों से कुछ नही मिलता, अल्लाह के देने से मिलता है।
ईमान के सही होने की, यकीन के दुरूस्त होने की मेहनत करूँगा, जितना यकीन ठीक होगा उतनी ही बुलन्दी होगी अगर मेरे चौबीस घन्टें के अमल ठीक हो गये तो अल्लाह मेरे लिये गैब के दरवाजे खोलेंगें। जो तक्वे वाला बन जायेगा अल्लाह रब्बुल इज्जत उसकी जरूरतों को ऐसी जगह से पूरा करेंगें जो हमारे गुमान मे न होगा।

दो यकीन बदले जायेंगें,

पहला ये कि अल्लाह के अलावा से कुछ नही होता, हुजूर सल्ल0 ने क्या फरमाया कि देखो जूती का तस्मा भी टूट जाये तो अल्लाह ही से माँगो। इसलिये अल्लाह ही से माँग कर लो, जब अल्लाह देंगें तो अल्लाह वहीं पहुँचा देगें जहाँ तुम होगे। बड़ी बड़ी हुकूमतों से लेकर छोटे छोटे जूती के तस्मों तक सारे मसले अल्लाह से मुतआलिक है। इसलिये सबका यकीन दिल से निकाल दो और अकेले
अल्लाह से होने का यकीन पैदा कर लो। पेट मे लुक्मा अल्लाह के इराद से उतरेगा, अल्लाह ही हंसा देंगें, अल्लाह ही रूला देंगें।

दूसरा ये कि अगर हमने मुहम्मद सल्ल0 वाले अमल किये तो अल्लाह सब कुछ हमारे मुवाफिक कर देंगें और अगर हमने मुहम्मद सल्ल0 वाले अमल से मुँह मोड़ा तो अल्लाह सब कुछ हमारे मुखालिफ कर देंगें।

इस यकीन को पैदा करने के लिये, अल्लाह की बड़ाई को बैठ कर सुनो। जमीदारों ने बीस तीस साल ये सुना है कि खेती से, बैल से, हल से यूँ होता है, खेती से जिन्दगी बनते ऑखों से देखा तो उसकी बड़ाई दिल मे बैठ गयी। खुदा की बड़ाई पढ़ी नही, सुनी नही, समझी नही इसलिये़ दिल उसकी बड़ाई से खाली और दुनियॉ को खूब पढ़ा, खूब सुना, खूब समझा तो फिॅर इसे अपना माबूद बना लिया। ये सारे गैर मिलकर भी अल्लाह की बड़ाई के सामने एक जर्रे की भी हैसियत नही रखते।

बचपन से कान सुन रहे हैं कि ये बहुत बड़े हैं, वो बहुत बड़े हैं, ये सूबे के गर्वनर हैं, डिप्टी साहब, कलेक्टर साहब, थानेदार साहब, ये उनसे बड़े हैं और ये उनसे भी बड़े हैं। बड़ा कहते कहते मालिक भी कह दिया, राजिक भी कह दिया, बचपन से सारी लाईनों मे बड़ाईयॉ सुनते चले आये। जमीन से, गाय से, बैल से, भैंस से सुनना शुरू किया कि मुर्गी बड़ी कीमती है, बैल बड़ा कीमती है, बड़े का लफज ऐसा बोला गया कि अब हर चीज बड़ी बन गयी। बड़ा बड़ा सुनते सुनते जहन मे बैठ गया कि बहुत से बड़े हैं और बड़े के माने ये है कि उससे काम बनेगा। इसलिये तुम अल्लाह की बड़ाई को बैठ कर सुनो, अल्लाह बड़े हैं और वो ऐसे बड़े हैं कि तमाम फरिश्ते, सातो जमीन व आसमान उसकी बड़ाई के मुकाबले मे बहुत छोटे है। सब कुछ वही करता है और कोई कुछ नही करता, वजरा नही करते खुदा करता है, सारी दुनियॉ के वजरा चीटीं की सी हैसियत नही रखते।

सबसे पहले जो मश्क रखी गयी अल्लाहु अकबर की रखी गयी, दूसरी मश्क ला इलाहा इल्लल्लाह की और तीसरी मश्क मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह की। लोंगों को खुदा की बड़ाई का पता नही है अगर पता होता तो खुदा से पलना सीख लेते। सारे नबियों ने सबसे पहले अल्लाह की बड़ाई को पहचाना है कि करने वाले अल्लाह को पहचान कर, अपना न करना पहचान लिया, इस वास्ते खुदा ने उनकी बड़ाई हमारे दिलों मे बैठा दी, अल्लाह सारे कुरआन मे यही बता रहे है। अल्लाह का गैर जिन्स होती है, हकीकत के एतबार से अल्लाह का गैर छोटा है। अपने वजूद और हकीकत के एतबार से अल्लाह बड़े हैं।

ला इलाहा इल्लल्लाह

कि गल्ला मेहनत से नही होता,

माल मेहनत से नही मिलता,

माल से चीजें नही मिलतीं और

चीजों से हम नही पलते,

सब कुछ अल्लाह करते हैं, सबको अल्लाह पालते हैं। जहॉ आदमी को खुद नही दिखायी दिया करता है, वहॉ देखने वाले की माना करता है। हजरत मुहम्मद सल्ल0 ने अल्लाह को देखा है तुम मुहम्मद सल्ल0 की मानो, मुहम्मद सल्ल0 ने अल्लाह से फायदा हासिल करने के जो तरीके हमे बतायें हैं उन तरीको से हमे होता हुआ दिखायी नही देता, अपने से और कायनात से होता हुआ दिखायी देता है। मुहम्मद सल्ल0 ने अल्लाह से होना और सारी मख्लूक का पलना देख कर बताया है तो अल्लाह से फायदा हासिल करने के लिये हमे सर से लेकर पैर तक अपने अमलों पर मेहनत करना बताया कि दिल पर मेहनत करो बाएतबार यकीन के, ध्यान के, एख्लास के, सर से लेकर पैर तक अपने सारे आजा का इस्तेमाल हजरत मुहम्मद सल्ल0 के तरीके पर आ जाये इसम है

तुम्हारी कामयागी। जहॉ तुम्हारा खड़ा होना हो उसको हजरत मुहम्मद सल्ल0 का अमल बनाओ, कमाई मे भी अमल बनाने हैं, घरेलू जिन्दगी मे भी अमल बनाने हैं, अदालतों मे, मुकददमात मे अमल बनाने हैं।

यकीन बनाओ और अमल बनाओ तुम्हारी कामयाबियॉ इसी मे हैं, चाबीस घन्टे की जिन्दगी मे जितने भी अमल हैं, उठने बैठने के, बोलने लेटने के जितने भी अमल है और जो कुछ भी तुम कर रहे हो सबको अमल बनाओ। जिस्म के हर आजा से हजरत मुहम्मद सल्ल0 वाले अमल बनाओ और अल्लाह वाला यकीन बनाओ ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह यही तुम्हारी कामयाबी का जाब्ता है। समन्दरों मे हो तो कामयाब, जहाज टूट जाये तो कामयाब अगर किसी जजीरा मे उतर जाओ तो कामयाब। पैसे के एतबार से तुम्हारा अमल न रहे, किसी और की मोहब्बत से अमल न रहे। पैसों के साथ की मोहब्बत बिगाड़ ला सकती है, इसी के एतबार स तुम्हारी कामयाबी है।

सौ फीसद यकीन बन गया और सौ फीसद अमल आ गये तो दुनियॉ मे भी कामयाब और आखिरत मे भी कामयाब, कामयाब होने के लिये ईमान व अमल हैं। आज पूरी जिन्दगी पैसों पर आ गयी है, पैसा इन्सानी तरकीब व तदबीर पर आ गया, ईमान व अमल भी पैसों पर आ गये। पैसा होगा तो अल्लाह पर यकीन करेगा, ऐसा जबरदस्त बिगाड़ पैदा हो गया कि अब जहॉ से इलाज को सोचो वहीं बिगाड़। इस बिगाड़ का इलाज मस्जिद से होगा कि मस्जिद मे आने वाला हर एक ये तय कर ले मै अपनी जात से,

अल्लाह की बड़ाई बोलूँगा,
अल्लाह की बड़ाई सुनूँगा,
अल्लाह की बड़ाई सोचूँगा,
तौहीद बयान करूँगा,
अल्लाह का इल्म हासिल करूँगा,
दूसरों को इल्म पहुँचाऊँगा,
अल्लाह का जिक्र करूँगा,
नमाज पढूँगा, तो अल्लाह देगें, कमाई से नही मिलता। पहला कदम यही है कि
पैसे से तालीम नही है तालीम से पैसा है,
ईमान से पैसा भी है, ईमान से चीजें भी हैं और ईमान से परवरिश भी हैं,
तालीम से पैसा भी है, तालीम से चीजें भी हैं और तालीम से परवरिश भी हैं,
जिक्र से पैसा भी है, जिक्र से चीजें भी हैं और जिक्र से परवरिश भी हैं,

मैं ईमान की बातें सुनाऊँगा और सुनूगा, इल्म हासिल करूँगा, जिक्र करूँगा, अल्लाह के बन्दो पर मेहनत करूँगा, तो मेरा अल्लाह मुझे पैसे भी देगा। हुजूर सल्ल0 ने जिस तरतीब से बताया यही सब सुनने से अल्लाह की बड़ाई और अल्लाह का ध्यान पैदा होगा। मस्जिद मे अल्लाह से होने और अल्लाह के गैर से न होने के तज्किरे चल रहे हों, अल्लाह की बड़ाई, अल्लाह की रूबूबियत और अल्लाह से होना दिल मे उतरे। जितना अल्लाह वाले यकीन पर अमलों की तालीम होगी उतना हमारा वक्त सही गुजरेगा। अल्लाह के इल्म मे लगेंगें अल्लाह पैसे देगें, दुनियॉ तो सारी छोटी है, दुनियॉ तो सारी फकीर है, कहीं फकीर भी फकीर को दिया करता है पर अल्लाह गनी है।

अमल का इल्म, अल्लाह की पहचान का इल्म, अल्लाह की सिफात का इल्म। तालीम के हल्को मे बैठ कर खूब ध्यान से अमलों को सुनो कि नमाज से क्या क्या होगा, सदका करने से क्या क्या होगा, अम्र बिल मारूफ नहिय

अनिल मुन्कर स क्या क्या होगा कि अब जब हम नमाज मे अल्लाह के ध्यान के साथ इल्म के एतबार से इस्तेमाल होंगें तो ये नमाज कुबूल हो जायेगी, ये नमाज हमारे पलने का जरिया है। नमाज को पलने का जरिया बनाकर मस्जिद वाले इल्म के एतबार से अल्लाह के ध्यान के साथ कमाएगें तो इस कमाने मे इल्म कामिल मिलेगा फिर फासिक व फाजिर की खुशामद छोड़ दी, झूठ और जुल्म छोड़ दिया तो अब

मस्जिद मर्कज होगी ईमान की और कमाई शाख होगी ईमान की,

मस्जिद मर्कज होगी तालीम की और आपकी कमाई शाख होगी तालीम की,

मस्जिद मर्कज होगी जिक्र की और आपकी कमाई शाख होगी जिक्र की।

कमाई पर नही मिलता जिस इल्म पर कमाया है अल्लाह उस इल्म पर देगें और कयामत के दिन अम्बिया, शोहदा, और सिददीकीन के साथ उठाया जायेगा अगर तू ताजिर है। जब तुम कमाईयों की रिआयत न करके अल्लाह के रास्ते मे फिरने वाले बनोगे कि फॅला इलाके वालों की जिन्दगी अगर ईमान के सीखने पर न आयी तो अल्लाह का वबाल आ जायेगा। अब कभी तुम फिर रहे हो तुम्हारे भाई कमाई पर हैं और कभी तुम्हारे भाई फिर रहे हैं तुम कमाई पर हो अगर इस पैसे को अल्लाह के हुक्म के मुताबिक खर्च किया तो अल्लाह की तरफ से दुनियाँ व आखिरत मे इनआमात मिलेंगें।

अब मआशरत को ईमान पर लाओ, इल्म पर और अल्लाह के ध्यान वाली नमाज पर लाओ, तमाम दुनियॉ भर के इन्सानों को गले लगाओ। आमाल के एतबार से दर्जे होंगें, कौमो के एतबार से दर्जे न होंगें, ये जो पैसा है इसको जरूरत के एतबार से खर्च करो। कौम के एतबार से और वतन के एतबार से पैसा न खर्च करो। तुम जो एक दूसरे का साथ दो, एक दूसरे की मदद करो या एक दूसरे की हिमायत और मुखालिफत करो वो इल्म के एतबार से हों जो हक पर हो उसकी हिमायत करो जो हक के खिलाफ हो तुम उसकी मुखालिफत करो। हुक्म तोड़ने वाले के वास्ते इन्साफ का हुक्म है, मुसलमान मज्लूम है उसका साथ दो अगर गैर मुस्लिम मजलूम है तो उसका साथ दो। किसी गैर मुस्लिम की जमीन मुसलमान ने दबा ली है तो उसे समझ़ बुझा करा जमीन वापस करा दो, खुदा जुल्म पर फौरी पकड़ करते हैं।

इन्साफ सीखो कौम के साथ अन्धे बनकर न चलो, ये न कहो कि आपस दारी मे साथ देना ही पड़ता है। कल को खुदा इसको दोजख मे डालेंगें तो तुम को भी साथ मे डालेंगें। ये सारी चीजें ठीक हो जायें तो कहा जायेगा कि ये आदमी दीनदार है। इससे दुनियॉ व आखिरत मे इनआमात के दरवाजे खुलेंगें।

पलने का सबसे बड़ा जरिया खुदा की बड़ाई बयान करना है कि ओ कम्बल को ओढ़ कर लेटने वाले खड़े हो जाइये और अल्लाह की बड़ाई बयान करिये, जितने मोलवी होंगें उनके जहन मे हिदाया की बात तक्बीर इफलाह आ जायेगी। ये दावत वाली बड़ाई है, अब ईमान सीखने का माहौल नही है इसलिये इबादात से परवरिश जहनो मे नही आती। जितना कमाई को बढ़ाओगे उतनी ही ईमान व अमल मे कमजोरी आयेगी, कमजोर ईमान व अमल पर मुसीबतें बढ़ाओगे। ये मस्जिद की चीज है जो मैने बयान की है इस पर खुदा पालेगें। अभी तो इस यकीन के साथ जिन्दगी गुजार रहे हैं कि कमाने से पैसे मिलगें और तब्लीग भी पैसो ही से चलें, नही नही अब तो इस यकीन के बनाने पर आओ कि हम इन कामों को करेंगें तो अल्लाह पालेंगें।

अगर ईमान सीखना है और इन कामों को करके अल्लाह से पलना सीखना है तो बाहर की ऑख बन्द करके अन्दर की ऑख को खोलकर बेधड़क चार माह के लिये निकल जाओ। जो कुछ हो जाये हो जाने दो, कुछ परवाह न करो, तकलीफ उठा लो कि आज तक गलत करता रहा आज सही पर पड़ा हूँ। मुतअययन तौर पर

जमीदारा मे भी तकलीफ उठाते हो, तिजारत मे भी तकलीफ उठाते हो पर न जमींदार पर जमींदारा फर्ज है और न ताजिर पर तिजारत फर्ज है पर

शिर्क से बचना मुतअययन तौर पर फर्ज है,

झूठ से बचना मुतअययन तौर पर फर्ज है,

सूद से बचना मुतअययन तौर पर फर्ज है,

गीबत से बचना मुतअययन तौर पर फर्ज है,

लेकिन इनकी परवाह नही है अब इन्ही अमलों की वजह से हालात आ गये तो मस्जिद मे बैठा रो रहा है पर कमाई हराम, तेरा रोना कुबूल नही, बोल हराम, तेरा रोना कुबूल नही, देखना हराम, तेरा रोना कुबूल नही, सुनना हराम, तेरा रोना कुबूल नही। अब आप लोगें के चार महीने पूरे होने को आ रहे हैं पर ये चार महीने तुमने इस जहन से नही दिये कि इन अमलों से पलेंगें। अब इस जहन के साथ चार माह दो कि अमलो से पलना सीखने जा रहे हैं

इस बयान की असल किताब बंगले वाली मस्जिद मे मौजूद है

हयातुस्सहाबा बाद इश्रा बंगले वाली मस्जिद

18 सफर 1382 हिजरी

माल से एहतियात

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

ये माल फित्ना है ये इन्सान को अल्लाह से दूर करता है, जन्नत से निकलवाता है, फुसलाता है और दोजख की तरफ खीच कर ले जाता है। माल चाहे शख्सी हो या इज्तेमाई, बैतुलमाल का हो या मस्जिद और मदरसे का, जो इन्सान इसको फित्ना समझे वो इसको अल्लाह और रसूल के हुक्म पर खर्चा करेगा। माल चाहे शख्सी हो या इज्तेमाई, सब अल्लाह का है। इस जमाने मे तमाम जिन्दिगियों मे माल के बारे मे बदउन्वानियत चली हुई है, न शख्सी मालों मे एहतियात है और न इज्तेमाई मालों मे एहतियात है। शख्सी माल नफस की ख्वाहिश पर बहुत खर्च हो रहा है, जब कि अल्लाह के रास्ते की नक्लो हरकत पर, तालीम व तरबियत पर, आने वाले मेहमानो पर, मोहताजों व जरूरतमन्दों पर ज्यादा खर्च करने को बतलाया है।

जे माल इज्तेमाई हो या इदारा का हो तो नजाकत हद से ज्यादा बढ जाती है पर लोग इस माल को जाती समझ कर खर्च करते हैं, यही चीज फित्नों के दरवाजों को खोलती है। मस्जिद की चीजें, मदरसो की चीजें, तब्लीग की चीजें, अपने या अपने रिश्तेदारों पर न लगायें। आज जाती खुतूत इदारा के कार्ड पर लिख देते हैं, इज्तेमाई माल से एहतियातें निकल गयी जिसकी वजह से बरकतें खत्म हो गयीं। जब भी हालात का तज्किरा होगा अबु बकर रजि0,उमर रजि0, उसमान रजि0 और अली रजि0 के तज्किरे आयेंगें। इब्ने साद रजि0 की रिवायत मे है कि हजरत उमर रजि0 ने फरमाया! कि मैनें बैतुलमाल के माल को बमन्जिला यतीम के माल के उतार लिया है।

इस बयान की असल किताब बंगले वाली मस्जिद मे मौजूद है

बाद नमाज फज बंगले वाली मस्जिद

19 सफर 1382 हिजरी

इस्लाम ये है

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

मेरे भाईयों और दोस्तों! जो इन्सान अपनी जिन्दगियों को सामने रखकर चलते है वो दूसरों की जिन्दगियों को कुरबान करते हैं और जो दूसरों की जिन्दगियों को सामने रखकर चलते है वो अपने को कुरबान करते हैं। बहरहाल हर वक्त जिन्दगियों की कुरबानी चलती रहती है। गलत तरह की कुरबानी ये है कि इन्सान दूसरों की आजादी कुरबान करके अपनी आजादी हासिल करे, दूसरों के ऐश बिगाड़ कर अपना ऐश हासिल करें

अम्बिया किराम अलै0, सहाबा किराम रजि0 वो महबूब जिस्म हैं जिन्होनें अपने को कुरबान करके दूसरों की जिन्दगी बनायी और मुसलमानों को इस पर उठाया कि जैसा मकान, खाना, कारखाना चाहता है उसको कुरबान करें। ये कुरबानी अदल व इन्साफ, तक्वा व परहेजगारी को लाती है, जब ये अपनी जिन्दगियों को दूसरों पर कुरबान करेगें तो इससे दूसरो की जिन्दगियॉ बनेगीं फिर हक तआला शानुहू उनसे खुश होकर, सबके लिये रहमत के दरवाजे खोल देंगें।

जिन्होनें अपनी जिन्दगी कुरबान करके दूसरा की जिन्दगी बनायी, उनको हजारो बरस तक कामयाब करते हैं। हजरत मूसा अलै0, हजरत इब्राहीम अलै0, हजरत मुहम्मद सल्ल0, हजरत अबु बक्र और हजरत उमर रजि0 के तज्किरे आज तक होते हैं। जो दूसरों की जिन्दगी बनाने के लिये अपनी जिन्दगी कुरबान करते है हक तआला शानुहू इनकी हमेशा तारीफ किया करेंगें और जिन्होनें दूसरों की जिन्दगी कुरबान करके अपनी जिन्दगी को बुलन्द किया, उनके तज्किरे भी कुरआन मे हैं पर बुराई के साथ।

जन्नत मे आठवें दिन अल्लाह के यहॉ दावत होगी, अपनी अपनी जन्नत मे बड़े बड़े मजे। न नमाज, न रोजा, न जिहाद, न तालीम पर वहॉ सारे काम अपने आप अल्लाह की कुदरत से हो रहे हैं। उड़ने वाले घोड़ों पर बैठ बैठ कर एक दूसरे के पास जाते हैं, उन्होने अपने खाने पीने कुरबान किये थे तो हक तआला शानुहू ने इनके लिये खाने पीने के दरवाजे खोल दिये। दूसरों के लिये अपनी इज्जत को कुरबान किया था तो इज्जत के दरवाजे खुल गये।

यहॉ खाने पीने को पीछे करके ईमान व अमल की मेहनत जिन्दा हो इसके लिये कुरबानी पेश करो, खल्क ए खुदा की हाजतें पूरी होने के लिये कुरबानी पेश करो, अपना पेट काट कर दूसरों को खिलाओ वहॉ पेट काटने का मना कर दिया, जहन्नमियों पर जन्नत के खाने हराम हैं। जिन्होने दूसरे इन्सानों की जिन्दगी बनने के लिये अपने मसलों को कुरबान किया, अपनी बड़ाई व अपने अख्तियारात को कुरबान किया तो इनके कुरबान करते ही इनका काम बन गया कि सोहबत करते रहो जन्नत मे यही काम है न नमाज, न रोजा, न जिहाद, न तालीम और यहॉ सोहबत करने की कुल जिन्दगी चालीस साल, इस चालीस साल मे अगर दस बीस दिन मुसलसल सोहबत कर ली तो सेहत खराब। यहॉ बीबी के तकाजे को कुरबान करके अल्लाह के रास्ते मे निकला, उसके बदले मे यूँ मिल गया।

जब जन्नती जन्नत मे दूल्हा बन कर पहुँचेगा तो देखने वाला मंजर होगा, यहॉ दुनियॉ मे ही दूल्हे का बहुत एजाज व इकराम किया जावे कि इसके पैरों के नीचे फर्श बिछायी जावे, खूबसूरत बच्चे नजर आयें तो ये खुश

होता है कि बहुत अच्छी औरत मिलेगी। ससुराल वाले खाते पीते लोग हैं, कारोबार भी अच्छा है, सोच रहा है कि जहेज भी बहुत मिलेगा, बच्चे इससे बोल रहे हैं तो इसकी खुशी बढ़ रही है। वहॉ जन्नत मे एकदम क्या मिल गया कि अस्सी मील तक की सारी चीजें इसे नजर आ रही होगी, देखने के मजे मे ही गर्क हो गया अरे इन्हे इस्तेमाल करके तो देख दूसरो की जिन्दगी बनाने के लिये तूने अपनी सोहबत कुरबान की थी। एक हूर लाकर देगें कि अब जरा हमारी इन हूरों को तो देखो इनमे कैसा मजा है।

एक औरत से चालीस चालीस साल तक सोहबत होगी अगर किसी की सत्तर ही हूरें है तो कितना जमाना हो गया ? और अगर 25 लाख हूरें हैं तो अब छुटटी जो जी चाहे कर, ये नही कि भूख लग रही है तो सोहबत छोड़कर खाना खाओ। खूब सोहबत की, खूब खाना खाया पर पेट मे अभी गुंजाईश है और नेमतें खुली हुई है, पेट जवाब नही देगा, नेमतें खत्म नही होंगीं, जितना चाहे खा और जब तक चाहे खा। फलों की कोई कमी नही है, जानवर उड़ते फिर रहे है जी चाहे तो उनके कबाब बनकर आ जायें।

तू ने अपनी खेतियॉ कुरबान की थी मेरा ये जी चाहे कि यहॉ खेती हो तो फौरन खेती बनी, खुद कटी और सामने आ गयी, सेकेन्ड मे बन रही है और सेकेन्ड मे कट रही है। बाग कुरबान किये थे तो ये बाग हैं, मकान कुरबान किये थे तो सोने चॉदी और खोखले मोतियों के मकान है। जो नक्शा तेरा बनने का जी चाहे उस नक्शे का मकान बन गया। अपनी जेब व जीनत कुरबान की थी कि बाल बिखरे हुए गर्द आलूद अल्लाह के रास्ते मे मारा मारा फिरता था, यहॉ दुनियॉ मे चाहे जितना बनाओ सिंगार कर लो पर सूरत नही बदलती है वैसी ही रहती है पर तूने दूनियॉ मे जेब व जीनत कुरबान किया था इसके बदले मे जन्नत मे हर आठवें दिन बाजार लगेगी, सारे जन्नती आठवें दिन उस बाजार मे जाया करेगें, वहॉ तस्वीरे खरीदी नही जायेंगीं ये ख्याल करेगा कि काश मैं ऐसा होता तो बाजार से वैसा बनकर वापस आ जायेगा।

बेगम साहिबा कह रही हैं कि आज तो तुम बहुत अच्छे लग रहे हो तो ये बेगम साहिबा से जवाब देगा कि तुम भी तो बहुत बढ़िया लग रही हो। अल्लाह ने उनकी जन्नत पर भी नूर व जमाल की बारिश कर दी, वो भी हर आठवें दिन कुआंरी बनकर आयेंगीं, माददा वही रहेगा खाली सूरत बदलती रहेगी। हर आठवें दिन वो ऐसी हो जायेंगीं कि छोड़ने को दिल न करेगा, ये उन इन्सानो के लिये है जो दुनियॉ मे दूसरों की जिन्दगी बनाने के लिये अपनी जिन्दगी के मसलों को कुरबान करें। खिलाना पिलाना, लोगों की खैर व खबर लेना, उनको दावत के रास्ते से ईमान को समझाना इसी पर जन्नत है और इसी मे जन्नत के दर्जे है कि कौन इन्सानी जिन्दगी के बनाने के लिये अपने मसले कुरबान करता है। 25 लाख हूरों वाली जन्नत अम्बिया, शोहदा और सिददीकीन के लिये होगी, हर नबी को, हर सिददीक को, हर शहीद को वो जन्नत मिलेगी। जो 25 लाख हूरों वाली जन्नत है ये तीनों मिलकर वो किस्म बन गयी जो इन्सानी जिन्दगी को सही तरीके पर खीचने के लिये मेहनत करते हैं।

आज इन्सान अपनी जिन्दगी को बनाने के वास्ते दूसरों के मसलों को कुरबान कर रहे है, एक आदमी अपनी जमीदारी को बढ़ने के लिये दूसरों की जमीन दबाता है, उस पर मुक्ददमे चलते हैं। एक आदमी के पास उसका मकान छोटा और बच्चे ज्यादा हैं, दूसरे के पास मकान बहुत बड़ा है पर बच्चे कम हैं। जमीन बढ़ाता चला जा रहा है और मुक्ददमे चल रहे है जिन्दगी तंग है। आदमी अपनी बढ़ाने के लिये दूसरों को गिराता है, जिसकी गिरती है वो लड़ता है, वो अपनी कूवत से काबू पाना चाहता है बस इसी पर लड़ाईयॉ हो रही हैं। हर हाकिम के सामने दूसरों मुल्कों वालो की जिन्दगियॉ हैं वैसी जिन्दगियॉ के लिये टैक्स लगाते है, पहले मोटर कारें हों अब जहाजो की जरूरत पेश आ गयी। अब बढ़िया जहाज चाहिए, एयरकन्डीशन चाहिए पर इन सबके लिये खर्चा

उसके पास नही मौजूदा ऐश के नक्शे उसके सामने है, इसलिये रात दिन टैक्स लगा रहे हैं। दूसरी तरफ पॉटियॉ बन रही है कि ये हाकिम तो किसी तरह जन्नत पहुॅच जाये, इनको हटाओ हमे पहुॅचाओ।

हर नीचे वाले की निगाह ऊपर वाले नक्शे पर पड़ रही है, ऊपर के नक्शे पाने के लिये इसका पैसा काफी नही है इसीलिये ये गरदोपेश पर हाथ डालता है। हाकिम बनने के मायने यही हैं कि वो तुम्हारे काम करने के वास्ते बना है पर जब काम के लिये जाओ तो कहता है कि बताओ कितना दोगे, क्या दिलवाओगे ? इधर से उधर और उधर से इधर बस हुकूक पर हमले हो रहे हैं, मसला कैसे हल होगा ? मसला उनसे हल होगा जो हाकिम और मालदार न बनना चाहेगें, अपनी जिन्दगियों को और नीचे गिरायेगें ऐसे लोगों से मसला हल होगा। जिन्दगी का ये मआशरा नया नही है ये जिन्दगी पुरानी है, इन्सान बतौर इन्सान होने के खुद बगैर रहबरी के इसी नक्शे पर चलता है जो आज चल रहा है। सबसे पहली लड़ाई इन्सान की इसी बात पर हुई है कि हाबील और काबोल का किस्सा एक लड़का और एक लड़की सुबह को पैदा हुआ और एक लड़का और एक लड़की शाम को पैदा हुआ, शादी किस्से हो कि हजरत आदम व हव्वा की ही की औलाद से।

हाबील के साथ जो उसकी बहन पैदा हुई थी वो ज्यादा अच्छी सूरत की न थी और काबील के साथ जो उसकी बहन पैदा हुई थी वो अच्छी सूरत की थी। काबील ने कहा कि मैं अपने साथ पैदा हुई लड़की के साथ शादी करूॅगा तो हजरत आदम अलै0 ने काबील से कहा कि ये गलत है इसकी शादी हाबील से होनी है बस इसी बात पर काबील ने हाबील को कत्ल कर दिया, औरत और माल पर लड़ाई है। अपनी जिन्दगी बनने के लिये दूसरे के मसले को कुरबान करना ये है पसन्द।

जब हर शख्स अपना माल, अपनी राहत, अपनी जमीन, अपने गल्बे, अपनी इज्जत और अपनी बड़ाई की कुरबानी पेश करेगा फिर एतदाल की समझ पैदा होगी। अब लोग समझदारों को लायेंगें पर समझदार कौन होग? कि समझदार वो लोग हैं जो सबसे ज्यादा कुरबानी दे। मुल्क लेने के वास्ते अपना सब कुछ कुरबान कर देना इसका नाम कुरबानी नही है बल्कि इन्सानी जिन्दगी बनने के लिये अपना सब कुछ कुरबान कर देना ये कुरबानी है। आज तो मुल्क लेने के वास्ते कुरबानी दी जा रही है इसलिये मुल्क हाथ मे आते ही ऐश करने बैठ गये।

सहाबा किराम की कुरबानी ये थी कि वो एक तरफ अल्लाह की राह मे नक्लो हरकत मे कुरबानी देते थे और दूसरी तरफ लोगों की जिन्दगी बनाने के लिये कुरबानी कर गये पर लोगों के माल मे से कुछ न लिया। अपनी जिन्दगी के तरीके बदल कर, गरीबों को अपना माल देकर सैकड़ो बरस तक के लिये दुनियॉ मे चमक गये। अगर हम किसी की जमीन का एक टुकड़ा न दबायें, किसी के चार पैसे न दबायें तो ये कौन सी कुरबानी है दूसरों की जिन्दगी तो हमने न बनायी, दूसरों की जिन्दगी बनाने वाला वो है जो

अपनी ब्याह शादी सादा करे,

अपना खाना पीना सादा करे,

दूसरो की जिन्दगी ईमान व अमल की मेहनत पर पड़े इसके लिये उन पर अपनी कमाई कुरबान करे और मारा मारा फिरे, ये किस्म अम्बिया और सिददीकीन की होगी। जैसे कपड़े, मकान और सवारी ये चाहता है वैसा न बनाये, पैसे की बचत करके चारा तरफ से दूसरे इन्सानों की जिन्दगी के बनने के अन्दर अपनी कुरबानी पेश करें। एक आदमी ने अपनी जिन्दगी बनाने के लिये दूसरो की जिन्दगी कुरबान करके कुरबानी का जो गलत रूख कायम कर दिया है, उसको सही करने के लिये दुनियॉ मे मारा मारा फिरना इन्सान की पैदाईश इसी लिये है कि तुम उसकी खिदमत करोगे तो अल्लाह रब्बुल इज्जत तुम्हारे लिये खादिमों का इन्तेजाम करेगें अगर तुमने भूखे को खाना न खिलाया तो अल्लाह रब्बुल इज्जत तुम्हारा खाना बन्द कर देगें। अल्लाह रब्बुल इज्जत की जात से

लेने के एतबार से जिन्दगी अख्तियार की जाये, अल्लाह रब्बुल इज्जत की जात से लेने के लिये नमाज सीखी जाये कि ऐसी किरत कुरआन और ऐसा अल्लाह का ध्यान हो कि इस नमाज पर अल्लाह से जो मॉगा जाये वो मिल जाये पर नमाज पर अल्लाह के यहॉ से लेने का जो दरवाजा खुलेगा वो एख्लाक पर खुलेगा और एख्लाक ये है कि दूसरों की बनाओ।

आज रिवाज ये है कि अपनी बनाने के लिये दूसरों की कुरबान करो कि अब तो बुनियाद ही बदल गयी, बुनियाद सही हो जाये कि इन्सानी जिन्दगी बनानी है तो इस्लाम से बेहतर कोई तरीका न मिलेगा। अब शोर तो इन्सानी मसाएल हल होने का कर रहे हैं और पैसा सारा अपनी जिन्दगी बनाने मे खर्च करें तो वाकई इस्लाम से मुश्किल कोई चीज नही, ये नाकाबिल अमल है और वाकई अगर ये नारे सही हों कि हर आदमी को रोटी मिले, हर आदमी को मकान मिले तो इस्लाम से बेहतर कोई रास्ता नही है। दुनियॉ कह कुछ रही है और कर कुछ रही है। जो हर एक से छीनने पर हो उनसे

हर एक को रोटी नही मिलती,

हर एक को कपड़ा नही मिलता,

हर एक को मकान नही मिलता,

जो हर एक को देने वाला हो हर एक को मिलता है, हुजूर अकरम सल्ल0 ने सहाबा किराम को इसकी मश्क करायी थी, हर एक को देने वाला बनाया था। 23 साल की मश्क के बाद जब दौरे अमरी हाथ आया जिसमे पूरे अरब मे एक बच्चा ऐसा न था जिसको रोटी न मिली हो। हुजूर अकरम सल्ल0 ने हर एक को जमीन पर सोना सिखाया, सूद हराम किया, झूठ और धोखा हराम किया। शख्सी जिन्दगी बनेगी तो पब्लिक की जिन्दगी का नुकसान होगा, जकात फर्ज कर दो, माल का चालिसवॉ हिस्सा दूसरों पर लगाना फर्ज किया जो फुकरा को देने से अदा होगा। मिस्कीन, गरीब, यतीम, बेवा हो यानी पब्लिक की जिन्दगी पर लगाना फर्ज कर दिया और उनसे खीचना हराम कर दिया। ऐसे आदमी तैयार किये जिन मे लोगों की भूख से कुढ़न हो, नंगे को देखें तो ऑख मे आसूँ आ जायें, भूखों को देखकर तिलमिला उठें उनसे सबको रोटी मिली।

आज जो आदमी बनाये जा रहे हैं, वो लेने वाले हैं देने वाले नही हैं। पूरा मआशरा ही गलत है, जब तक मआशरा नही बदलेगा उस वक्त तक आलम के मसले हल न होंगें। जो अपन बीबी बच्चों के मसलों से काट कर दूसरों को देने वाला नही बनता तो जब उसको मिलेगा वो अपना बनायेगा दूसरों को नही देगा। अगर इन्सानी जिन्दगी न बदली तो इन्सानी जिन्दगी दोजख मे जायेगी कि ये ले अपनी जान और ये ले अपना माल।

अल्लाह रब्बुल इज्जत जिन्दगी को बनात हैं पर अमलों पर बनाते हैं। मौजूदा जिन्दगियों के बदलने के लिये जान व माल लगाओ ताकि यकीन व अमल बदलें। दूसरों को यकीन व अमल बदलने पर लगाया, अपनी जान व माल खर्च करके एख्लाकी जिन्दगी बनने के लिये की मेहनत शुरू की, एख्लाक की बुनियाद बन गयी। यहॉ से चला और उसी पर दूसरों को उठाता चला गया, ईमान सीखा और सिखाया। भूखा देखा तो तर्गीब दी और खाना खुद खिला दिया। इन डाकुओं के मुकाबले मे जो अपनी बनाने के लिये दूसरो की बिगाड़ रहे हैं, तुम अपना काट काट कर जब दूसरों पर लगाने वाले बनोगे तभी हक तआला शानुहू तुम्हारे लिये दरवाजे खोलेंगें। पहले तुमको शख्सी तौर पर देगें, कारोबार मे बरकत दे दी, हदिया दिलवा दिया अगर तुम न बहे और तुम्हारे साथी जो तुमने तैयार किये थे वो भी न बहे तो अब मुहब्बत कायम हो जायेगी।

हुकूमत वालों के लिये अब या वो बदलेंगे या हक तआला शानुहू उनको अजाब देकर खत्म कर देगें। ये नबियों वाला रास्ता है, जिसमे अपनी जिन्दगी के मसलों को कुरबान किया तो एक नमूना सामने आया, चलते चलते

अल्लाह ने बातिल वालों को पलट दिया या अजाब भेजकर, या लड़ाकर खत्म कर दिया। जो इन्सान एक घर के बनकर चल रहे है उनसे इन्सानी जिन्दगी के मसाएल बिल्कुल हल न होगें अगर वो वजीर बनकर आ गये तो भी वो अपने घर के आदमी है और अगर एक इन्सान दूसरे इन्सानो की जिन्दगी को सामने रख कर चले पर उसके पास माल नही है तब भी वो इन्सानी जिन्दगी के बनाने की किस्म मे दाखिल है, इसलिये आदमी बनना पड़ेगा।

हजरत उमर रजि0 तशरीफ ले जा रहे हैं रास्तें मे ईंट पर सर रखकर लेट गये, उधर से एक औरत गुजरी जो हजरत उमर को पहचानती न थी इन्हे देहाती जानकर इनसे कहने लगी कि अमीरूल मोमिनीन ने मुहम्मद बिन मुस्लिमा को माल तक्सीम करने के भेजा है वो औरो को देकर चले गये पर मुझे कुछ न दिया. हजरत उमर रजि0 ने गुलाम से कहा! मुहम्मद बिन मुस्लिमा को बुलाकर लाओ। वो औरत कहने लगी कि बड़े आदमी यूँ तुम्हारे बुलाने से थोड़े ही आ जायेंगें, वो अमीरूल मोमिनीन के भेजे हुए आदमी हैं। इतने मे मुहम्मद बिन मुस्लिमा आ गये तो हजरत उमर रजि0 ने उनसे कहा कि ऐ मुहम्मद बिन मुस्लिमा बताओ कल खुदा के यहॉ इस औरत का हक कौन देगा ? मैं तुम पर एतमाद करता हूँ। ये सुनकर मुहम्मद बिन मुस्लिमा के आसूँ टपके उधर हजरत उमर रजि0 ने रोना शुरू किया और फरमाया कि इसके लिये अभी लाओ, तो उसके वास्ते एक ऊँट मंगवाया, उस पर गल्ला लादा, नकदी दी, कपड़ा दिया और उस औरत से बोले कि अभी तो बहन यही है इसे ले जाओ, खैबर मे आना वहॉ भी दूँगा। मैंने मुहम्मद बिन मुस्लिमा को कह दिया है कि वो छठे महीने तुमको इतना दे देंगें कि तुम्हे कोई तकलीफ नही होगी।

जब ऐसे आदमी बनेगें तब लोग परेशानियों से निकलेगें, ये नबियों वाली मेहनत ऐसा बनने के लिये है। हजरत उमर रजि0 अच्छे किस्म के खाने से चिढ़ते थे, एक मर्तबा दस्तरख्वान पर अच्छा खाना आ गया तो छूटते ही फरमाया! हमे ये मिल रहा है तो गरीबों को क्या मिल रहा होगा ? एक साहब की जुबान से निकल गया कि उन्हे जन्नत मिल जायेगी। दुनियॉ मे कुरबानी की मश्क करने से ही नबियों का शार था, हजरत मूसा अलै0 दस साल की कमाई जंगल मे छोड़कर चल दिये। हजरत इब्राहिम अलै0 ने अपने घर के सारे मसलों को क़ुरबान किया तो उम्मते मुस्लिमा की दाग बेल पड़ी, हजरत मुहम्मद सल्ल0 ने इब्राहिम अलै0 के कदम पर कदम उठाया।

इब्राहिम अलै0 ने उम्मत के दुनियॉ मे वजूद मे आने के लिये कुरबानी दी और हजरत मुहम्मद सल्ल0 ने भी कुरबानी दी और महाजिर व अन्सार को भी कुरबानी पर डाला।

मुफत मे तालीम देने वाले हजारों,
मुफत मे नमाज पढाने वाले हजारों,
मुफत मे समझाने वाले हजारों,
मुफत मे मदद करने वाले हजारों,
मुफत मे खाना खिलाने वाले हजारों,

कि सारा काम मुफत मे हो रहा है, दुनियॉ से कुछ नही लिया जा रहा है। अम्बिया, शोहदा और सिददीकीन ने अपने मसले कुरबान करके अल्लाह के बन्दों को अल्लाह की तरफ मोड़ा है। दुनियॉ मे इन्सानों की इन्सानी जिन्दगी बनाने के लिये अल्लाह की तरफ मोड़ना तो इसके लिये एख्लाक सीखना कि लोग अल्लाह के बन्दों को देने पर आ जाये और अल्लाह से लेने पर आ जाये।

बन्दा को देने का नाम एख्लाक है, और

खालिक से लेने का नाम इबादत है।

अदना एख्लाक ये हैं कि अगर कोई कर्जा लेने आया है तो उसे कर्ज दे दो वरना इस्लाम सिखाता है कि इसे कर्ज न देकर इसकी मदद करो। आज दुनियॉ बदतरीन बदएख्लाकी का शिकार हो चुकी है, जिना करने को और खून चूसने को तिजारती तरक्की का नाम दे दिया है। इस जिन्दगी से जो दुनियॉ मे जी जा रही है कि मुसलमान और गैर मुस्लिम दरिंदगी के साथ जिन तरीकों पर चल रहे है इन तरीकों को बदलने के लिये अपनी जान व माल को कुर्बान कर दो। जिस दिन दूसरों की जान व माल लने के बजाय अपनी जिन्दगी कुर्बान करने वाले बन जाओगे, उस दिन बे ताज के बादशाह हो जाओगे।

ये नबियों वाली लाईन है कि नबी ने दूसरों की जिन्दगी को कुर्बान नही किया बल्कि अपनी जिन्दगी को कुर्बान किया है। कुर्बानी की मश्क के वास्ते चार चार महीने दे दो तो फिर तीन किस्मे बनेंगीं, इनमे आला किस्म क्या है कि इसकी आला किस्म ये है कि कुर्बानी को रिवाज देने के लिये दुनियॉ भर मे फिरने को काम बना लो। तीन चिल्ले देकर अभी वापस आये और दस पंद्रह दिन के बाद चिल्ले मे चले गये, ये आला किस्म है।

दूसरी किस्म ये है कि हर साल तीन चिल्ले दे आओ और तीसरी किस्म ये है कि ईमान को सीखने और सिखलाने के लिये हर साल चिल्ला दे दो। जब कुर्बान होना ही है और अल्लाह के रास्ते मे मरना ही है तो मरने वाले को तन्दुरूस्ती की क्या जरूरत और मरने वाले को खाने की क्या जरूरत। अब ये तय कर लो कि हम जिन्दा रहना है या मरना है ?

अपनी जिन्दगी बनानी है या दूसरों की बनाने के लिये अपनी बिगाड़नी है ?

अब अगर बात समझ मे आ गयी है और निकलने के लिये इन्तिजाम करने जा रहे हो तो हकीकत मे तुम्हे बात ही समझ मे नही आयी, अरे इन्तिजाम को पीछे डाल, तकलीफ उठाने के लिये तैयार होकर आगे आ। जब फाके बर्दाश्त करके सही जिन्दगी के आने के लिये मेहनत मे उतरोगे तो एक मिनट के लिये तुम अपनी भूख को किसी को न बताओ तो इस भूख पर दुनियॉ हिला दी जायेगी।

इस बयान की असल किताब बंगले वाली मस्जिद मे मौजूद है

हयातुस्सहाबा बाद इश्रा बंगले वाली मस्जिद

19 सफर 1382 हिजरी

माल को रदद करना

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم

इस वक्त हमारी जिन्दगी मे जान व माल का खर्च बिगड़ गया है।
माल का यकीन,
माल की तलब,
माल की मुहब्बत हमारे दितों मे बैठ गयी है।
जान का मौजू बन गया माल कमाना और माल का मौजू बन गया जान पर लगाना। हुजूर सल्ल0 ने जहॉ जहॉ जान लगाने को बतलाया है, वहॉ पर जान लगाने की तर्तीब बनायी जाये। हुजूर सल्ल0 ने ईमान और अमल के सीखने पर,
तालीम व तरबियत पर,
ईमान और अमल के सीखने की मेहनत को जिन्दा करने की नक्लो हरकत पर और जिक्र व खिदमत पर जान लगाने को बता गये थे फिर बीबी बच्चो मे, घर मे और कारोबार मे जान लगानी है। दूर के इलाकों मे
पैसे पर जनाजे नहलाये जा रहे है,
पैसे पर दफनाये भी जा रहे है,
पैसे पर कब्रें भी खुदवायी जा रही है,
अपने बेटे को दूसरां को दे दिया, पैसे दे दिये कि इसको दबा आओ।
हुजूर सल्ल0 ने यहॉ तक कह दिया था कि दूसरों के घरों के काम किया करो। दिल्ली आये तो शहर वालों से और मुहल्ले वालो से पूॅछ आते कि कुछ सौदा मगॉना हो बता दीजिये वापसी पर लेता आऊॅगा। सहाबा किराम इसको अपनी जान का काम समझते थे। आज हमने घर की खिदमत छोड़ दी, दूसरों की भी खिदमत छोड़ कर नौकर रख लिये है। बाजार जा रहे थे तो बहन को आवाज दे देते कि बहन मैं बाजार जा रहा हूॅ सौदा मगॉना हो तो बता दो, उसने बताया कि कल से फाका है। अब पैस लगाने का मौका मिल गया।
आज हम खुद को सिर्फ अपने घर का जिम्मेदार समझते है, औरों के घर का जिम्मेदार नही समझते क्यों कि माल की मुहब्बत पैदा हो गयी है। हुजूर सल्ल0 मालियात को किस तरह खर्च किया करते थे, ये आज का उन्वान है कि माल को रदद करना यानी हमने लोगों से पैसे न लिये रदद कर दिया कि ईमान व अमल को सीखने के लिये वक्त नही दिया इसलिये मैने पैसे नही लिये तो मेरे ऊपर एतराज किया गया। इसीलिये मैने सहाबा की जिन्दगी का बाब बांधा।
हुजूर सल्ल0 ने पूछा ऐ अबु कता तब तेरा क्या होगा जब तेरी बिनाई जाती रहेगी त् फकीर हो जायेगा तब तू क्या करेगा ? अर्ज किया कि सब्र करूॅगा। फरमाया! हॉ, जब कोई दे तो जरूरत से ज्यादा न लेना फिर वो वक्त आया जब ये नाबीना होकर फकीरी की हालत मे आ गये तो एक सहाबी ने आवाज लगायी कि है कोई जो इस शख्स को सदका करे जिसके बारे मे हुजूर सल्ल0 ने खबर दी थी कि ये फकीर हो जायेगा तो किसी ने दो दिरहम दिये, इन्होने एक दिरहम रख लिया और एक दिरहम वापस कर दिया। लेने की सूरत ये इत्मिनान हो कि

तुम्हारी मआशरत न बिगड़े या लेकर और जरूरज मन्दों पर खर्च कर दोगे तो ले लो अगर हाजत हो तो बकद्र हाजत ले लो, इत्मिनाना न हो या हाजत न हो तो वापस कर दो।

आज का हाल ये है कि अब तो कोई दे कि नोट दिखायी दिए तो कहा हॉ मै भी सोच रहा था कि अल्लाह कही से भेंजें, माल के रदद करने का माददा ही नही रहा इस वास्ते कि सारा यकीन माल पर आ गया, माल को माब्द् जो बना लिया है। हक तआला शनुहू ने अबु बक्र और उमर से बगैर पैसे के खिलाफत चलवाई है और हजरत उस्मान को पैसे देकर खिलाफत चलवाई लेकिन ऊँचाई फकर वाली खिलाफत मे ही है। जो अल्लाह का कुर्ब चाहे कि उसे अल्लाह का कुर्ब मिल जाया तो कुर्ब के आदाब मे से ये है कि उसकी कोई हाजत और जरूरत अल्लाह कि अलावा किसी पर जाहिर न हो।

इस बयान की असल किताब बंगले वाली मस्जिद मे मौजूद है

बाद नमाज फज्र बंगले वाली मस्जिद

अल्लाह की बड़ाई बयान करो

4 मोहर्रम 1382 हिजरी

-بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

मेरे भाइयों दोस्तो बुजुर्गों ! हक तआला शानुहु जब किसी गिरोह, तबका, कौम, मुल्क या अफराद को कामयाबियों से नवाजना चाहते हैं तो उनके लिये अहकामात के सिलसिले कायम फरमाते हैं। इन्सानों की जितनी किस्म की भी कामयाबियां है वह सारी अपने हुक्मों की तामील पर देगें, राहत चैन व सुकून का मामला कि सारे ऐतबार से कामयाबियों का वादा फरमाते हैं पर जब आदमी हुक्मों की तामील पर लग जाये तो कामयाबियां देकर दिखाते हैं इस यकीन के साथ की हर बात इस हुक्म को पूरा करने से होगी। जब एक हुक्म पर अमल करने वाला बने और उस हुक्म पर यकीन ले आये तो अल्लाह दूसरा हुक्म दे देगें फिर तीसरा फिर चौथा हुक्म दे देगें, जितना नवाजना चाहते है, अहकामात को बढ़ाते है और जो-जो हुक्म बढ़ते हैं कामयाबी का मेयार बढ़ता चला जायेगा, हमारे एक-एक अमल को देखेगा फिर अच्छे अमल पर जन्नत देगा बुरे अमल पर दोजख में डालेगा। अगर जुल्म करेगें या किसी का पैसा दबायेगें या बेहयायी करेगें या किसी की जमीन दबाई, किसी का खून चूसा तो मुसीबतें आयेगी, ये जिंदगी के बनने बिगड़ने का सारा मसला हो गया।

अल्लाह तआला ने अपने बन्दों के लिये अहकामात का सिलसिला कायम फरमाया है, हुक्म पर जो इनामात मिलते हैं वह हमेशा के लिये होते हैं, चीज से जो जिंदगी बनती है वह वक्ती होती है। खाना पीना पेट भरने का मसला आधे दिन का हल हुआ, कोठियों और मालियात से जो मसला हल होता है उतनी ही मिकदार के अंदर हल होता है जितना रोटी से पेट भरने का हल होता है, खुदावन्द कुददूस एक दफा हुक्म पर पेट भरे देगें तो फिर कभी भूख नही आयेगी, एक दफा हुक्म पर सेराब कर देगें फिर कभी प्यास नही लगेगी, माल पर जो चीज मिली वो वक्त मुकर्रर के लिये मिली है वक्त मुकर्ररह के बाद कामयाबियां निकल जायेगी अगर हर चीज अपनी तरतीब से ली जाये है तो तरतीब पर जो पहले आता है अगर उसे न करो तो आखिर तक सारी तरतीब बिगड़ जाती है।

तरतीब मे हमारी कामयाबी के लिये जो सबसे पहला हुक्म दिया गया है वो ये कि खुदा की बड़ाई बयान करो और अपने आमाल पाक करो। एक हदीस में है कि आदमी जिस लिबास में मरेगा उस लिबास में उठाया जायेगा, जिस सहाबी ने यह हदीस बयान की उन्होने इंतिकाल के वक्त अच्छे कपड़े मंगाकर पहने, बाकी सब मुहक्ककीन कहते हैं सारे अंम्बिया, शोहदा सिददीकीन नंगे उठाये जायेगें, सबसे पहला जोड़ा हजरत मूसा अलै0 को पहनाया जायेगा कपड़ों से आमाल मुराद हैं।

झूठ पर मरा तो झूठ पर उठाया जायेगा,

सूद पर मरा तो सूद पर उठाया जायेगा,

धोखा पर मरा तो धोखा पर उठाया जायेगा,

हराम करता हुआ मरा तो हराम करता हुआ उठाया जायेगा,

हज करता हुआ मरा तो हज पर उठाया जायेगा,

“वरब्बुका फकब्बिर” यह हुक्म दे दिया कि अल्लाह की बड़ाई बयान करो और अल्लाह से फायदे हासिल करने के लिये अमल को पाकीजा करो। हुजूर सल्ल0 ने इस हुक्म की तामील शुरू कर दी कि अल्लाह की बड़ाई बयान करने के वास्ते दूसरों की छोटाई बयान करनी पड़ेगी, अल्लाह की बड़ाई उस वक्त तक कायम नही होगी जब तक मासिवा की बड़ाई न टूटे कि हुकूमतों की, बागात की, कारखानों की बड़ाई दिल से निकालो। अकेले अल्लाह ही बड़े हैं सारे इंसान मिलकर अल्लाह की जात के मुकाबले में बहुत छोटे हैं, चीटी शेर बहुत छोटे हैं, पत्थर तो हिमालय से बहुत छोटा है।

अगर इसी तरह बड़ाइयां छोटाइयां कायम करो तो यहां पहुंचोगें कि जिबरील का कद बड़ा कि 14 हजार साल मसाफत है, सातों जमीन से लेकर अर्श इलाही तक हर खला की मसाफत पांच सौ बरस है पर अल्लाह के मुकाबले में जिब्रील बहुत छोटे जबकि अल्लाह की अजमत और बड़ाई का जिब्राईल को ख्याल आये तो सिकुड़ते-सिकुड़ते छोटी चिड़िया की तरह रह जाते है। अल्लाह के सामने इतने भी नही, ये तो तुम्हारे समझाने के लिये है कि अल्लाह बहुत बड़े हैं इस्राफील बहुत छोटे हैं, वो मलकुलमौत जो जिब्राईल की भी जान निकालेगा, इस्राफील की भी जान निकालेगा और मीकाईल की भी जान निकालेगा, अब कौन रह गया? तू भी मरजा वह भी मर गये सातों जमीन व आसमान में जो सबसे बड़ी शक्ल बनती है वह इन फरिश्तों की बनती है।

तो मुसलमानों को पहला हुक्म यही दिया गया कि अल्लाह की बड़ाई बयान करो, जितना अल्लाह की बड़ाई बयान करोगें उतना तुमको मकान मिलेगे, दूध शराब की नहरे मिलेगी, खौफ उतना ही दूर होगा जितना तुम्हारा वक्त अल्लाह की बड़ाई करने में लग जायेगा,

रोटी कैसे मिलेगी?

दुश्मन पांव कब चूमेंगे?

जमीन कैसे मिलेगी?

अल्लाह की बड़ाई बयान करो, दुकान बहुत छोटी है मै बहुत छोटा हूं मेरी मेहनत स क्या होगा मै अल्लाह की बड़ाई बयान करूंगा अल्लाह मुझे देगा। ये भीख मांगने वाले आते हैं जहां जाते हैं जब लोग उसको बड़ा कहने पर दे देते हैं तो जो वाकई में बड़ा है उसको जब बड़ा कहा जायेगा तो कितना मिलेगा। जब छोटे को बड़ा कहना इस पर भी मिल जाता ह तो सातों आसमान व सातों जमीन से बड़ी जन्नत मिली जब तूने अल्लाह को बड़ा कहा। सहाबा किराम रजि0 ने मक्का मे खड़े होकर अल्लाह की बड़ाई बयान करना शुरू की, जितना अल्लाह की बड़ाई बयान करोगें उतना अल्लाह के करीब पहुॅचोगे। हजरत अबुबक्र, उसमान, तलहा, अब्दुर्रहमान, सईद बिन जैद रजि0 सब अल्लाह की बड़ाई बयान करने पर लग गये, हजरत उमर रजि0 तो 12वी में आयेगें। अब मक्का के अन्दर सबकी बड़ाई की धज्जियां बिखर रही है, लात, उज्जा बहुत छोटे है जितनी मक्का शहर में बड़ाईयां कायम थी उन सबके मुकाबले में अल्लाह की बड़ाई कायम की जा रही है। अब यकीन बन रहा हैं कि अल्लाह की बड़ाई करने से जिंदगी बनेगी अल्लाहु अकबर जिक्र के तौर पर कहे तो इनामात मिलेगें और दावत के तौर पर कहो तो इनामात मिलेगें, जब अहकामात आने शुरू हुए तो हुक्मों पर मेहनत की इसलिये अल्लाह की बड़ाई के गीत गाओ चप्पा-चप्पा पहुंच कर कहो अल्लाहु अकबर,

चुपके रहो तो जिक्र के तौर पर कहो अल्लाहु अकबर,

पार्लियामेंट मे जाओं वहॉ लोग कहें सियासतदां बहुत बड़े मुल्क बहुत बड़ा, तुम कहो मुल्क बहुत छोटा तुम बहुत छोटे मनी के कतरे से बने हो अल्लाह बहुत बड़े।

अल्लाह कसूर माफ करने में,

कहहार होने में,
जब्बार होने में,
सत्तार होने मे बहुत बड़े। अल्लाह के अलावा हर बात में हर एक बहुत छोटा, एक औरत में रहम है वो अपने बच्चे के बकद्र है पर अल्लाह सब पर रहमान है अल्लाह बहुत बड़े है। रहम में, करम मे, सखावत में, सब जगह अल्लाह की बड़ाई करो, कोई बड़ाई बयान करे जिक्र के तौर पर या दावत के तौर फिर जब अल्लाह की बड़ाई से तुम्हारा दिल भर जाये तो बड़े-बड़े बहादुरों के दिल लरज जायेगें। शेर और अजदहा और हथियारों वाले लरज जायेगें, उसकी बड़ाई के आगे हर एक छोटा नजर आये, सातों आसमान छोटे नजर आये, अम्बिया अलै0 छोटे नजर आयें, ये अम्बिया अलै0 हमारे आगे बड़े हैं पर अल्लाह के आगे बहुत छोटे हैं।

हुजूर सल्ल0 जितनी बातों के ऐंतबार से नबियों में बड़े हैं, अल्लाह जितना हमारे बड़े हैं उतने ही ऐतबार से मुहम्मद सल्ल0 के बड़े है। चीटी, मच्छर, शेर, पहाड़ आसमान एक दूसरे से बड़े छोटे हैं, अम्बिया की बड़ाई कि मखलूकात से बड़े है लेकिन खुदा की जात के ऐतबार से उनकी कोई हैसियत नही। उन्हे मारने की ताकत नही, नबियों की बड़ाई इस तरह की नही कि खुदा की जात में कही आवे जैसे खुदा के मुकाबले में हम छोटे है सारे नबी इसी तरह अल्लाह के मुकाबले में छोटे हैं। बाप किसी बेटे की बात सुनता है बहुत से बच्चे है खुदा के साथ में वैसी छोटाई का ताअल्लुक है ऐसे छोटे हैं कि जो अल्लाह से मांगते है दे देते हैं वह बड़े हैं,

हजरत ईसा अलै0 के बारे में ईसाईयों ने कहा यह इतने बड़े हैं कि खुदा की जिंस से हो गये। नही भाई अल्लाह कादिर हैं, अल्लाह खाालिक है ईसा अलै0 मखलूक है। एक आदमी अपनी लड़की आग में डाल दे तो कहोगे बड़ा जालिम है पर अल्लाह अगर चाहे तो सारे नबियों को आग में डाल दे, यह सब खुदा की मिल्क है। पहली बात जो हमे मिलेगी वह ये कि अपनी परवरिश और हिफाजत के वास्ते अल्लाह की बड़ाई को लेकर दूर-दूर फिरो, सहाबा ने इसी को काम बना लिया।

अल्लाह बहुत बड़े हैं अल्लाह के कहने के मुताबिक चलोगें तो बहुत बड़े मुनाफे से नवाजे जाओगे और अल्लाह का कहना ना माना तो बहुत बड़े नुकसानात भुगतने पड़ेगें। बड़े के कहने के मुताबिक तुम ने अपनी जिंदगी को मोड़ा तो बड़ा तुम को खसारे से बचा लेगा अगर तुमने छोटे को बड़ा माना तो ऐसे-ऐसे अजाब आयेगें की कोई हिसाब नही, ऐसे-ऐसे अहदहे हजारों लिपटे हुए होगें कि जितना बड़ा अजदहा जहर में उतना ही बड़ा। ईरान इराक में कहत पड़ा उन्होने रूस और अमेरिका से मांग लिया कहत तो खत्म हो गया पर दोजख में एक लीक पर कई-कई हजार अजदहे होगें, दोजखियों को गिनो तो सही कि कितने है? हर एक के हजार-हजार अजदहे लगाए, दोजख खुदा का खजाना नही है खजाने की मखलूक है। खुदा के खजाने पर मखलूक का लफ्ज नही आता, दोजख के जहर का इतना बड़ा माददा खजानो के मुकाबले में मच्छर के पर के बराबर नही।

जन्नत की खुशबु का जर्रा डाल दे तो उसकी सिददत से सबकी जान निकल जाये, एक-एक जन्नती को मनो खुशबएं सारे जन्नतियों की खुशबु खुदा के खजानों की खुशबुओं के मुकाबले में जर्रा के बराबर नही। सारी दुनिया के इन्सानों की भूख दोजख के एक फर्द की भूख के मुकाबले में जर्रा के बराबर नही और दोजखियों की मजमुवी भूख अल्लाह के खजानों के मुकाबले में जर्रा बराबर नही। जो कुछ भूख, मुसीबत, जहर अल्लाह के खजाने मे है अल्लाह उन सबसे बचा देगें जब खुदा की बड़ाई बयान करोगे और सारे इनआमात के दरवाजे खुल जावें जब यह अल्लाह की बड़ाई बयान करेगा, फौज-पुलिस-सदारत-वजारत बहुत छोटी।

आज हम आपस का बड़ा छोटा इस तरह समझने लगे कि अल्लाह की बड़ाई पर गर्द पड़ने लगी, मख्लूक में तगययुर व तबददुल आयेगा जब खुदा की बड़ाई बयान करोगे। अकसरियत के साथ अल्लाह जो करेगा वह

होगा, वजीर के साथ अल्लाह जो करेगें वह होगा, इंसान की शक्ल छोटी जिन्स है जो मनी के कतरे से बनी है पर कहा ये जा रहा है कि ये हमारी युनिवर्सिटी के बहुत बड़े आदमी हैं, ये पन्नों के कारखाने के बड़े आदमी है, बड़ा कहते-कहते लाखो करने वाले करार दे दिये गये पर करने वाला इनमें से एक भी नही। इनसे यह हो जायेगा, डिप्टी कमिश्नर साहब यह कर देगें, इनसे होने का जहन क्यों बना ? इनकी बड़ाई का जहन बन गया है छोटा होना मुराद इसके है कि इससे कुछ नही होगा। जब लड़ाई होती है तो क्या कहता कि तू है क्या ? तू छोटा है मै बड़ा हूं। कई बेटे है यह बड़े बेटे हैं, अब बाप से भी कह रहा है कि अब्बा जी मै बड़ा बेटा हूं मैं पूरा कर दूंगा, मै यूं कर दूंगा, अरे तेरी जिन्स ही वह है जो छोटी है, तू बेटा है मै बड़ा हूं तू ज्यादा बड़ा बनता फिरता है निकल जा मेरे घर से, कानूनी तौर पर सब कुछ बाप के नाम है बेटों के नाम कुछ नही है। मख्लूक के अन्दर मुकाबले पर जब बड़ाई आ जाती है कि जो बड़ाई के बोल एक दूसरे के तआरूज पर बोले गये थे कि यह सारी मख्लूक मालिक के सामने छोटी है। अब यूं हो गया कि इनसे हो जावे तो अल्लाह की बड़ाई मुकाबले पर आ गयी, अब खेती वाले को खेती में नीचा रखा है, मुल्क वाले को मुल्क में नीचा रखा है, मै इतना बड़ा हूं कि मै हाथ डाल दूंगा तो वो मर जाएगा अमेरिका कहे मै इतना बड़ा पर अल्लाह ने नीचा रखा है। हजार और करोड़ का फर्क बताने को करोड़ बड़े है पर करोड़ हजार सारे मिलकर जिंस तो छोटी ही है। अमेरिका मखलूक रूस इंडिया मखलूक, यूनियन मख्लूक, पहाड़ मच्छर मखलूक। मखलूक जिन्स ही वह है जो छोटी है जो इसे बहुत बड़ा जानते है उसे तो पागलखाने भेज दो।

अरे ! सारी दुनिया जब लफज मख्लूक ही में है तो इंसान भी मखलूक ही हुआ पर बोला यह जाता है कि ये बहुत बड़ा आदमी है यह मुल्क में यूँ कर देगा, खुदा के यहां मखलूक उस हकीर वजूद का नाम है जिससे कुछ नही होता। इसलिये मखलूक की बड़ाई दिल में से निकालो, मेरी एक बेचारे की क्या बिसात, सारे इन्सान मिलकर बहुत छोटे है अल्लाह बड़े है। तमाम अव्वलीन व आखरीन एक मैदान में जमा हो खुदा का सुनना इतना बड़ा है कि सबकी बराबर एक सा सुन लेगें, खुदावन्द कुददुस से लेने की सूरत यही है कि उसकी बड़ाई के बयान करने वाले बन जाओ यही तुम्हारा काम है। अरे जमीनदार मत बन, मुकब्बिर बन, जमीन छोटी है, इस पर मेहनत करेगा थोड़ा पायेगा अल्लाह बड़े हैं अल्लाह की बड़ाई फैलने पर मेहनत करेगा वो अकेला बड़ा है एक वही सबको इस्तेमाल करता है, उसके खजाने सबसे बड़े हैं।

आज खुदा के हुक्मों को दूसरे के हुक्मों पर तोड़ने लगे, दूसरों के तरीको पर खुदा के हुक्मों को छोड़ने लगे। अब रात दिन बुलावे कि अल्लाह की बड़ाई फैलाने को निकलो तो कहते हैं कि साहब जमीदार बिगड़ जायेगा। ताजिर तिजारत से निकलने को तैयार नही अगर अल्लाह को बड़ा समझते और उनको छोटा समझते होते तो एक आवाज पर छोड़कर चले आते। अल्लाह की बड़ाई आज ऐसी रह गयी है। इसलिये आओ इसी के लिये दुनिया में मेहनत करे कि सब अकेले अल्लाह को बड़ा और सब को छोटा माने। बात तो ठीक है मगर चलूंगा कैसे ? जमीदार चार बिगहा का इतना बड़ा हो गया कि अल्लाह के वास्ते छोड़ने को तैयार नही, पहला जमाना भी एक था कि अल्लाहु अकबर की आवाज से किले की दीवारे गिरी है। अदालत में गये अल्लाहु अकबर कहा यहूद व नसारा के ऊपर ऐखतिलाज की कैफियत आयी अरे जिसकी बड़ाई निकालनी है उसको छोड़, अब तो बड़े की बड़ाई का गीत गाता फिर। बड़ा तो था अकेला पर हमने बना लिये बहुत सारे, आज सारी दुनिया के वजीरों को अगर जमा करो तो एक छोटा सा मुल्क भर जायेगा। अल्लाह की बड़ाई का सिर्फ बोल रह गया कि अल्लाह बहुत बड़े हैं पर

अल्लाह की बड़ाई पर आंसू नही टपकते,

अल्लाह की बड़ाई पर झूठ नही छोड़ा जाता,
अदालतों मे ंजालिमों की खुशआमद चापलूसी नही छोड़ी जाती,
हमारे अल्लाहु अकबर में जान पड़ जाये तो बड़े की बड़ाई साथ हो जाये पर कोई तब्लीग मे निकलने को ये समझा कि अत्ताहियात सीखाने के लिये बुला रहे कि वो हमने चार महीने मे सीख ही लिया, अब कमाने चल दिये। हारून रशीद का एक बेटा था सारे मुल्क अरबिया उसके साथ थे, ईरान सिंध वगैरह उसके हाथ में थे, अफरीका स्पेन, तुर्की का बादशाह है। हारून रशीद जबरदस्त बादशाह था, ऊरूज और दबदबे का विर्द था, अब्बा जान की इस शान शोकत पर साहब जादा बिल्कुल जाहिद हो गया, सीधा साधा मोटा लिबास, टूटे हुए चप्पल, कटी सी टोपी, एक कुर्ता एक पाजामा वह भी मामूली, आखिरत का बादशाह बनने की जबरदस्त तैयारी कर रहा था।
हारून रशीद ने कहा कि तूने मेरी इज्जत को खाक में मिला दिया। बेटा बोला कि अब्बा जान तुमने मेरे ऊपर पटटा लगा दिया, मुझे शर्म आती है जब लोग कहते हैं कि इसका बाप हारून है कि मेरा बाप होकर दुनिया में इतना मुंहमिक। उसने पहचाना था अल्लाहु अकबर को, बाप से कहा ! मै जा रहा हूं अब तुम को मुंह न दिखाउंगा। मुसल्लाह, कुरान, तस्बीह लेकर वहां से निकला, मां ने एक मोती बांध दिया। आज अल्लाह के लिये निकलने को जिल्लत समझते हो, यह मेरी चीजे बेचकर मेरा कफन कर दीजियो। कुछ पता नही हारून रशीद को कि एक बेटा यू लात मार कर चला गया। अल्लाह बड़े है तू कहता है तेरे पर बटटा लगता है, मै कहता हूं मुझे बटटा लगता है कि मेरा बाप यूं दुनियॉ को कुब्बा बनाता फिरे।
एक तरफ इसकी बड़ाई की आवाज लगाई जा रही है, बड़ाई का इल्म हासिल किया जा रहा है, बड़ाई का ध्यान जमाया जा रहा है। अल्लाहु अकबर कहकर उठना अल्लाहु अकबर कहकर बैठना, अल्लाह की बड़ाई दिल में आ जाये, ऐसे बन जाओ कि जब अल्लाह की आवाज लग जाये तो यूं न कहो मेरी बीवी बीमार है मरने को हो रही है। इसलिये जहां जाओ अल्लाह की बड़ाई सामने आये, जब बीमार अपने आपको अस्पताल में दाखिल करे फिर डाक्टर यह कह दे हां अच्छा हो गया तो कल्ब से निकले बस इसी तरह निकल जाओ। जब हम कह दे हां अल्लाह की बड़ाई आ गयी या अल्लाह की बड़ाई दिल में बिठाते-बिठाते मर जाऊं दुनिया देख ले कि हां उनके दिल में अल्लाह की बड़ाई है, अब चाहे महीना भर मे ंऐसे बन जाओ या चार महीने मे पर हम देखेगें, इम्तिहान लेगें, पुलिस वालों में भेजेगें, वजीरों में भेजेगें, फौजों मे भेजेगें।

इस बयान की असल किताब बंगले वाली मस्जिद मे मौजूद है

बाद नमाज फज्र बंगले वाली मस्जिद

4 मोहर्रम 1382 हिजरी

ईमान की निशानी जुबान के बोल नही है

-بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

मेरे अजीजों और दोस्तों ! सबसे बड़ा सरमाया, सबसे बड़ी दौलत और सबसे बड़ी माया जिसके हासिल किये बगैर इन्सान की जिन्दगी हर तरह के खतरात मे घिरी हुई है वो सरमाया ईमान है। यहाँ ये बात याद रखना कि ईमान का सरमाया सीखने से हासिल होता है और ईमान को सीखने का मतलब अपने यकीनों को मख्लूक से खालिक की तरफ मोड़ना है। हुजूर सल्ल0 ने सहाबा को सबसे पहले ईमान सिखलाया और ईमान को सिखला कर ही अमल का सिलसिला कायम कराया, सहाबा कहते थे कि

ताल्लमनल ईमान सुम्मा ताल्लमनल कुरआन

इब्ने उमर ने कहा कि लोग ईमान को सीखे बगैर कुरआन पढ़ लेते हैं, इसीलिये सारा कुरआन पढ़ गुजरते हैं पर जरा भी असर नही होता। आज अच्छे से अच्छे अमल मुसलमानो मे मौजूद हैं लेकिन ये दुनियाँ भर मे जूते खा रहे है, मुसलमान दुनियाँवी तरक्की मे चाह जहाँ पहुचँ जायें पर ये याद रखे कि हुजूर सल्ल0 के जिस्म-ए-अतहर से जाहिर होने वाले अमल दुनियाँ के सारे नक्शों को गिराने की ताकत रखते हैं। अव्वल तो ईमान के बगैर अमल कुबूल नही होते दूसरे ईमान के बगैर अमल पर इस्तेकामत हासिल नही होती हाँ, बहुत से बहत अगर ये अमल पर जमा भी रहा तो अमल का असर जाहिर नही होगा। एक तो अभी बहुत कम लोग ही तब्लीग मे लगे हैं और जो लगे भी है वो जमे कम है फिर जब इन जमने वालो को ईमान सीखने के लिये बुलाया जाता है तो ये घरो मे जाकर बैठ जाते है, इनके घरो मे जाकर बठ जाने की वजह ये हैं कि इन्होने तब्लीग मे निकल कर यकीन नही सीखा अमल सीख लिया चूँकि आज मुसलमानो ने ईमान को न सीखा इसलिये इनके अन्दर न ईमान का दाइया, न ईमान की फिक्र बस अमल और अमल, जब कि हुजूर सल्ल0 का नबूवत के 23 साल मे 13 साल मक्के मे सिर्फ ईमान का सीखना-सिखलाना था।

आज तब्लीग मे दो किस्म के आदमी निकलते हैं एक कमाने वाले जो अपनी कमाईयों को छोड़कर निकलते हैं लेकिन ये सारा वक्त अपनी कमाई के शोबों को सोचने मे और उसके ही ख्याल के इर्द-गिंद चक्कर काटते रहते हैं इसलिये यकीन उन्ही शोबों की शक्ल के साथ जुड़ा हुआ है, उसी यकीन को बाकी रखते हुए ये नमाज पढने को, रोजा रखने को, हज करने को तब्लीग-तालीम-जिक्र करने को तैयार है पर यकीन बदलने के लिये ईमान सीखने को तैयार नही हालाँकि ईमान के बगैर अमल ऐसा जैसे बगैर करन्ट के बिजली का तार कि ईमान के बगैर अमल की कोई हैसियत नही ऐसे अमल मुर्दार हैं और मुर्दा चीज से कोई फायदा नही उठाया जा सकता। तब्लीग मे दो वजह से निकाला जाता है पहला ये कि हमारा यकीन कमाई से मिलने का खत्म हो कि कमाई से नही मिलता खुदा के देने से मिलता है और दूसरा आमाल से मिलने का हो कि चीजों के होने या न होने से हम नही पलेगें, आमाल-ए-नबूवत से खुदा हमे पालेगें, आज शैतान मुसलमानो को अमल से नही रोकता वो जानता है कि अगर इसने अमल कर भी लिया तो इसके अन्दर खुशफहमी ही पैदा होगी, जिसकी वजह से ये मेरे जैसी नाफरमान किस्म तैयार हो जायेगी। इसी वजह से आज लोग अपने ईमान की तरफ से बेपरवाह है कि

शैतान आदमी को अमल से बिगाड़ने की कोशिश करता है कि आदमी के पास ईमान की कूवत न हो इसका यकीन कमजोर हो तो अमल से बिगाड़ता है कि अमल किया बड़ाई पैदा हो गयी, शोहरत का जज्बा आ गया फिर ऐसे ही अमल इसके मुँह पर खींच कर मारे जायेंगें।

अव्वल तो जन्नत सिर्फ ईमान पर मिलेगी, ईमान की वजह से ही इसे शिर्क वालों के मुकाबले मे चमकाया जायेगा अमल की वजह से नही। इसलिये असल चीज सीखने की ईमान है और आज मुसलमान ईमान सीखने को तैयार नही हालॉकि ईमान को सीखना ईमान पर मरने के लिये है नमाज,रोजा,हज और जकात आखिर मे हैं कि जो ईमान पर मरेगा वो जन्नत जायेगा, दुआ भी ये है कि

ऐ अल्लाह जिसे जिन्दा रख अमलों पर जिन्दा रख और ईमान पर मौत दे,

ये दुआ मरने वाले के लिये नही है मागने वाला अपने लिये मॉगता है, मरने वाला तो मर गया, अब मरने वाला ईमान पर मरा या शिर्क पर मरा ? ये तो उसके दुनियॉ से जाते ही सवाल होगा कि तेरा पालने वाला कौन है? आदमी अपने जहन से जिससे पलता है उसकी हर वक्त वो रियायत करता है कि काश्तकार के जहन मे ये बैठा हुआ है कि मै काश्तकारी से पलूँगा बगैर काश्तकारी के कैसे पलूँगा। ऐसे ही मिलता-जुलता हाल दुकान वाले का है कि दुकानदार के जहन मे ये बैठा हुआ है कि मै दुकान से पलूँगा लेकिन मरते ही सबसे पहला सवाल कि तेरा रब कौन तेरा पालने वाला कौन? आज कमाने वाले या न कमाने वाले इन पर जब कोई जरूरत आकर पडती है तो यूँ कहतें हैं कि मीर साहब यूँ कर देगें, मुंशी जी यूँ कर देगें पर मरते ही पूरी जिन्दगी का खुलासा इनसे पूछ लिया जायेगा कि तेरा पालने वाला कौन? अगर ये यकीन लेकर गया कि खुदा पालता है कि न मैं कमाई से पलता हूँ और न किसी शक्ल-सूरत से पलता हूँ मेरा अल्लाह मुझे पालता है। मेरे पलने का दुनियॉ के नक्शें से कोई तआल्लुक नही अगर सारी दुनियॉ मे कुछ न हो तो भी अल्लाह मुझे पालेगें अगर ये यकीन लेकर गया है तो झट से ये कह देगा मेरा पालने वाला अल्लाह है अगर दिल मे नही तो जुबान से कैसे निकलेगा? अगर मेहनत करके दिल मे यह बात लेकर गया कि मैं कहीं से नही पलता,

न दुकान से,

न खेतियों से,

बल्कि इसके लिये खुदा से पलने की तैयारियॉ भी की थी कि कमाई की परवाह न की, आदमियों पर निगाह न डाली, जान पर तकलीफें उठाइ और मेहनत करते-करते रब के हर हुक्म को पूरा के रब से ही परवरिश लिया। कमाया तो झूठ नही बोला,सूद नही दिया, रिस्वतें नही दीं, आबरूरेजी नही की,धोखा नही दिया, मिलावट नही की, कम नही तौला कि अल्लाह का हुक्म पूरा करूँगा अल्लाह पालेगें। बुआई के वक्त आवाज लगा दी तो उसी वक्त दौड़ गया, कोई सूरत नही पलने की, जहॉ गये सब ने झंडी दिखा दी मोलवी ने, पीर ने, मुंशी जी ने झंडी दिखायी। अल्लाह पालने वाले हैं सब कुछ छोड कर चल दिया कि अल्लाह जमीन फाड़ कर दे देगा, जिसका अपने पलने के बारे मे गैरूल्लाह से यकीन टूट जाये ओर खुदा से यकीन जुड जाये तब ये ईमान वाला बनेगा। जब ये तैयारी करके जायेगा तो कह देगा कि अल्लाह ही पालने वाले हैं।

हुजूर सल्ल0 अच्छी तरह बता गये साफ-साफ कि कब्र मे जाते ही इससे पूछा जायेगा कि तेरा रब कौन है? देख ले रटने से जवाब नही दे सकेगा, दिल मे रखने स जवाब दे सकेगा। जब कहा अल्लाह पालने वाले है तो अच्छा ये बतलाओ तुमने अल्लाह से पलने के वास्ते क्या किया, पलने के वास्ते क्या तरीका अख्तियार किया?

बिरादरी वाला पलने का तरीका अख्तियार किया या

इंडियन यूनियन के तरीके पर पला करता था, या

अमरीका ने ये तरीका पलने का बतलाया था या
रूस ने पलने का ये तरीका बतलाया था,
तू ये कह न सकेगा कि हुजूर सल्ल0 वाले अमल के तरीके से पलता था वहाँ सिर्फ हाय-हाय करेगा फिर पूछा जायेगा बताओ ये आदमी कौन है?
पैसे आ गये तो ऐसा खाना खायेगें जैसी फलॉ खा रहे हैं,
पैसे आ गये तो ऐस कपड़े बनायेगें जैसी फलॉ ने बनाये हैं,
पैसे आ गये तो ऐसी शादी करेगें जैसी फलॉ ने की हैं,
पैसे आ गये तो ऐसी कोठी बनायेगें जैसी फलॉ ने बनायी थी, जिनकी जुबान पर जान-माल खर्च करने मे गैर चढे हुए थे वो न बता सकेगा कि ये कौन है। जिसकी जुबान पर हुजूर चढे हुए थे वो कह सकेगा कि ये हमारे नबी सल्ल0 हैं, वहॉ इल्म पर जुबान नही चलेगी, अमल पर बोलेगी। आज
खुशऊ की तकरीर हो रही है पर खुशऊ का पता नही,
खिदमते खल्क की तकरीर हो रही है खिदमते खल्क का पता नही,
बेईमान की ईमान पर तकरीर हो रही है ईमान का पता नही,
यहूदी, मुश्रिक, बुतपरस्त, मुल्हिद, हिन्दुपंडित अल्लाह पर अल्लाह के रसूल पर-इस्लाम पर खूब बोल रहा हो, हुजूर को माने बगैर हुजूर पर तकरीर कर सकता है पर यकीन की अलामत बोलना नही है, आज गैर भी बोल रहे हैं उनका बोलना उनके मुहॅ पर मार दिया जायेगा, एक नेकी तो क्या एक जर्रा नही मिलेगा। जहां मुश्रिकीन-यहूद- नसारा का यकीन है वही हमारा यकीन है कि खेती से काम चलेगा और दुकान से काम चलेगा, फर्क सिर्फ इतना है उन्होने खुदा को न माना हमने खुदा को मान लिया, हमने नमाज पढ़ ली उन्होने नमाज नही पढ़ी पर पलने का यकीन सबका वहीं पर है। आज हममे यह यकीन नही कि हम अल्लाह की बड़ाई को बोलेगें तो अल्लाह पालेगें, ईमान व अमल की मेहनत करेगें तो अल्लाह पालेगें, जिस अक्ल से वह बोल रहे है उसी अक्ल से हम भी बोल रहे है, जिस यकीन से वह बोले उसी यकीन से हम बोले, दोनों मे कोई फर्क नही।
इसलिये अल्लाह के रास्ते मे यकीन बदलने के लिये जब तुमसे कहा जाये निकल जाया करो क्यों कि यह यकीन के मुड़ने की आखिरी जगह है। खेती से, दुकान से, मुलाजमत से पैसे मिल गये, पैसों से चीजें मिल गयी और चीजो से हम पलेगें, यह यकीन अल्लाह के रास्ते मे निकल कर हमे निकालना है। हम चीजों से नही पलते अल्लाह पालते है कि ईमान और अमल के लिये हम फिरेगें तो अल्लाह हमे पालेगें, तालीम करेगें अल्लाह हमे पालेगें, अल्लाह का जिक्र करेगें अल्लाह हमे पालेंगें, अल्लाह से होना बोलेंगें अल्लाह हमे पालेंगें, गश्त करेंगें अल्लाह हमे पालेगें, दूसरों की खिदमत करेंगें अल्लाह हमे पालेगें।
इसलिये सबसे पहली बात ईमान का सीखना है, यकीन मोड़ने मे वह यकीन पैदा करना है जो मुहम्मद सल्ल0 लेकर आये हैं, अपनी मेहनत से यकीन को मोड़ना है, सातों जमीन व आसमानों से यकीन मोड़ना है अल्लाह की बड़ाई दिल में बिठाओ हमे अल्लाहु अक्बर, ला इलाहा इल्लल्लाह, सुब्हानअल्लाह, अल्हमदुलिल्लाह आ जाये बस एक की बड़ाई दिल में बैठ जाये की उसी के करने से सब कुछ हो रहा है, जिब्राईल, इस्राफील, मीकाईल और मलकुलमौत जैसे फरिश्ते भी वही करते हैं जो वो कहता है, मलकुलमौत से सबकी रूह निकलवा लेने के बाद अल्लाह उससे पूछेगा कि अब कौन बचा? मलकुलमौत बतलायेगा कि जिब्राईल, इस्राफील, मीकाईल, हम और आप। उससे कहेगें कि जिब्राईल, इस्राफील, मीकाईल की भी रूह निकाल लो, वो उनकी भी रूह निकाल लेगा फिर पूछेगे कि अब कौन बचा? कहेगा कि मैं और आप। उससे कहेगें कि तू भी मर जा तो वो भी मर जायेगा,

जिसके कहने से सब कुछ हो रहा है सिर्फ वही बड़ा है बाकी सब छोटे, इस यकीन को बनाने के लिये हमे अमल दिये गये हैं कि अल्लाह के अलावा से होता ही नही।

मेरे भाईयों ! कमाना सीखने की चीज नही है बल्कि हुक्म पर चलना सीखने की चीज है, तुम मस्जिद मे आकर हुक्म का यकीन सीखो, मस्जिद मे आकर अल्लाह की सिफात का यकीन सीखो कि अल्लाहु अकबर अल्लाह इतने बड़े हैं अगर मस्जिद मे न आये तो बाहर ये सुनोगे कि वजीरे आजम इतने बड़े हैं और सदर साहब इतने बड़े हैं आर असल मे ये वजीर या सदर क्या है? कि ये मनी के कतरे हैं जिन्हे अल्लाह ने फूलाकर इतना बड़ा कर दिया है और क्या है? कि खून, पाखाना, पेशाब हैं जो सब नापाक हैं। तुम मस्जिद मे आओ यहॉ बैठ कर अल्लाह की बड़ाई सुनो तब अल्लाह की बड़ाई दिल मे उतरेगी नही तो बन हुए को बड़ा समझते रहोगे और उनकी कोठी पर जाकर हाथ जोडेगों पर ये धोखा मौत के वक्त खुल जायेगा कि कौन बड़ा है। जो अल्लाह को जितना जानेगा उसकी उतनी अजीब हालत होगी, हुजूर सल्ल0 ने फरमाया! कि मै और जिब्रील चले, मैने जिब्रील से पूछा पर वो जवाब न द, उनके ऊपर बहुत बोझ है, किस बात का कि अल्लाह की बड़ाई का। अल्लाह के बारे मे जब कुरआन व हदीस सुनेगें तो आखॅ मे शोले भरने शुरू होंगे फिर तुम्हे रास्ता दिखायी देगा पर इस बात का सुनना कौन करता है कि किसी से नही होता अल्लाह से होता है। लेकिन जब तुम्हारी दावत चलेगी, ईमान की बात ईमान की मज्लिस मे चलेगी, इल्म की बात इल्म के हल्के चलेगी, तन्हाईयों मे अल्लाह का जिक्र होगा तो लोग अल्लाह की तरफ मुतवज्जाह होगें, उसके हुक्मों से दिलबस्तगी होगी।

ऐसी ही हमारी नमाज कि बचपन से पढ रहे है पर ये सोच समझ कर नही कि दुनियॉ के मसले नमाज से हल होगें। आज मुसलमान कहता हैं कि खाली नमाज से क्या होगा ? हम भी यही कहते हैं कि खाली नमाज से कुछ नही होगा, बल्कि

अल्लाह को जान कर,

यकीन को सीख कर,

नमाज को जान कर,

नमाज को सीख कर,

अल्लाह के ध्यान के साथ पढो फिर देखो नमाज से क्या-क्या होगा।

नमाज तो अल्लाह ने बाद मे दी है पर अपनी बड़ाई का इल्म पहले दिया है कि अल्लाह की कुदरत की तालीम, अल्लाह की सिफात की तालीम, उसके रब होने की तालीम, ये सारी की सारी चीजे नमाज से पहले की है। अब जो चीजें नमाज से पहले की है अगर उनको छोड़कर जो नमाज पढेगा वो तो यही कहेगा कि नमाज से क्या होगा,

खुदा की अज्मत व जलाल, खुदा के ध्यान से जो नमाज खाली हो उस नमाज से कुछ नही होगा।

तुम मुहम्मद सल्ल0 के बतलाये हुए जाहिर व बातिन के उसूलों पर आ जाओ तो अब ये खाली नमाज नही बल्कि ईमान वाली, इल्म वाली और अल्लाह के ध्यान वाली नमाज है। ऐसी नमाज के लिये अब सबसे पहले ईमान को सीखना है पर ईमान को सीखने के लिये सबसे बड़ा मुकाबला तब्लीग से बनता है कि हज का वक्त तो मुकर्रर है, रमजान का भी वक्त मुकर्रर है, नमाज का वक्त मुकर्रर है इन सबके लिये तो पहले से इंतिजाम करेगा लेकिन तब्लीग के लिये अचानक मुकाबला आकर पड़ेगा, जिसकी पहले से खबर नही वह है तब्लीग वाला मुकाबला। हज के ऐतबार से तरतीब लगा लेगा असल मुकाबला जो आकर पड़ेगा जब इससे कहा जायेगा कि तब्लीग में चल, अब इस पर जिद पड़ेगी कि सारा इंतिजाम इसमे टूटेगा, मुकाबला तो अब होगा।

इसलिये जब अल्लाह की बात कान मे पड़ जाये तो इब्राहिम अलै0 की तरह कोई चीज नही देखनी कि अल्लाह ही करने वाला है मेरी तरकीब व तदबीर से नही होता अल्लाह ही पालने वाले हैं अल्लाह ही से सब कुछ होता है। पर इसके लिये चप्पा-चप्पा पर मुकाबला करना होगा फिर इस मुकाबले से ईमान में भी कमाल आयेगा और आमाल में भी कमाल पैदा होगा जिससे रहती दुनियॉ तक इज्जत कायम रहेगी। जब अल्लाह इज्जत और शोहरत देगें तो अपनी बड़ाई के बकद्र देगें, अल्लाह बहुत बड़े है कि हजरत मुहम्मद सल्ल0 की इज्जत आज तक चल रही है फिर आखिरत में बाकी रहने वाला नक्शाा होगा अगर यह रास्ता सीखना है तो मुकाबले के लिये तैयार हो जाओ। अपनी जिंदगी के अन्दर खुद ईमान को सीखने के लिये अपने-अपने नक्शे से मुकाबले के लिये तैयार हो जाओ।

अब रही बात नमाज की तो जो अमल मुहम्मद सल्ल0 ने नमाज से पहले बतलाये हैं वह अमल कर, लोग कहते हैं काम कराने के लिये वजीर का ताअल्लुक भी चाहिए तो वजीर का ताल्लुक और नमाज का क्या जोड़? जिस तरह पाखाना और फूल को मिला दिया फूल की हैसियत खत्म हो गयी, उसी तरह जहां वजीर से जोड़ा बिठाया नमाज का तो नमाज की जान निकल गयी, जब पैसा और नमाज मिला दिया तो नमाज की जान निकल गयी। नमाज के लिये तीन मेहनतें पहले हैं और तीन मेहनतें बाद में हैं, पहली तीन मेहनतें,

यकीन बदलने की

इल्म की

ध्यान की

सबसे पहले यकीन बदलने की मेहनत करो कि एक यकीन देखकर पैदा होता है और एक यकीन सुनकर पैदा होता है। देखकर क्या यकीन बनेगा कि हुकूमत से यह होगा, चीजों से यह होगा, माल से यह होगा,

एक यकीन अम्बिया के वाकियात को सुनकर, वादे और वईद सुनकर, जन्नत दोजख सुनकर, फरिश्तों को सुनकर बनता है, इन्हे मस्जिद में बैठकर इतना सुनो कि जब कोई चीज दखो तो सुनने वाला यकीन सामने आ जाये। तुमने बाजार मे वजीर को आते देखा, मस्जिद मे तुमने सुन रखा था कि हुकुमत से कुछ नही होता अब ऐसा सुनने का यकीन गालिब आ गया कि इस वजीर से कुछ नही होता। अब सुनना और बढ़ाओ, खूब गौर से सुनो अल्लाह के सामने पेशी और अजाब की, फिरऔनी हुकूमत की डूबने की नियत करके सुनो, जब गौर से सुनोगे तो तुम्हारे अन्दर का यकीन बाहर के यकीन को फेंक कर मारेगा।

मक्का के अन्दर सहाबा इकराम ने सबसे पहले जो मेहनत की है वो यकीन की मेहनत है। मुशाहदे के मुकाबले में यकीन की मेहनत करनी पड़ती है, अबुजहल कह रहा है कि ऐ मुहम्मद तुम कहते हो लात और उज्जा कुछ नही करते पर हम लात-उज्जा के मानने वाले हैं, वो सब कुछ कर देगें। मुश्रिक सहाबा को मार रहे हैं, पीट रहे हैं पर सहाबा कह रहे है अल्लाह हमारी पिटाई करा कर हमारा इम्तिहान ले रहे है। अल्लाह जब हमारे मुवाफिक करने पर आ जायेगे सब कुछ कर देगे, एकदम से पलट देगें। मेरे दोस्तो! जब हम लोगो को अल्लाह की तरफ बुलाते फिरेगें तो अल्लाह हमारा खर्च उठायेगा, हम अल्लाह वाला इल्म फैलायेगें तो अल्लाह हमारा खर्च उठायेगा, आज हमने यकीन नही सीखा है इसलिये अल्लाह हमारा खर्च नही उठाते अगर यकीन हो जाये तो अल्लाह हमारा खर्च उठा कर दिखा दें। खाली गश्त करना और दावत देना मकसद नही है बल्कि अल्लाह की तरफ बुलाना, तालीम करना, अल्लाह के रास्ते मे जाना, इन सबका मकसद गैर का यकीन तोड़ना है कि गैर का यकीन टूटे और गैर से नाउम्मोद होकर अल्लाह से यकीन जुडे असल मसला यकीन का है कि आज सबसे ज्यादा यकीन बिगड़ा पड़ा है।

जब तुम दावत दो, गश्त करो, तालीम करो तो ये यकीन पैदा करने की कोशिश करते रहा करो कि मैं अल्लाह की तरफ लोगों को बुलाऊँगा इस बुलाने पर अल्लाह मुझे पालेंगें। चॉदनी चौक मे दुकानदारों के आदमी राह चलते हुए लोगो को बुला बुलाकर दुकानों मे ले जाते हैं इन बुलाने वालो का खर्च कौन उठाता है ? कि दुकानदार उठाते हैं, इसी तरह जब हम लोगो को बुला बुलाकर अल्लाह के घर मे लायेगें तो अल्लाह हमारा खर्च उठायेगें। ये पहली मेहनत है जो मुशाहदे के मुकाबले में सुनने वाले यकीन पर करनी पड़ेगी।

दूसरी मेहनत इल्म की कि एक इल्म सुनकर आता है और एक इल्म देखकर आता है, सुनने वाले इल्म के लिये मस्जिद में आकर बैठो, यहॉ कुरआन हदीस सुनकर जो इल्म आता है वह हासिल करो। देखकर इल्म आता है कि सोने से ये होगा, घी से ये होगा, दूध से ये होगा, दो चीजों को मिला देने से ये होगा, इस चीज से ये बनेगा और ये बिगड़ेगा, इस चीज से नफा होगा और इससे नुकसान होगा। तुम मस्जिद में बैठकर ये इल्म हासिल करो कि अमल से क्या होता है। यकीन के मुकाबले मे यकीन की मश्क, देखने वाले इल्म के मुकाबले में सुनने वाले इल्म पर मेहनत करो।

इसी तरह तीसरी मेहनत ध्यान के लिये करनी है कि एक ध्यान देखकर बनता है और एक ध्यान मेहनत से बनता है, कोठी देख ली अब इसका ध्यान आया, पुलिस देख ली अब इसका ध्यान आया, औरत देख ली अब इसका ध्यान आया पर एक ध्यान बनता मेहनत से कि इतना अल्लाह का तज्किरा करो कि तुम्हारी जुबान के बोल उसके ध्यान से दिल मे इतना भर जाये कि देख रहे हो औरत को पर ध्यान आ रहा है अल्लाह का, देख रहे हो फौज ध्यान आ रहा अल्लाह का अगर नमाज पढ़ो यह यकीन हो कि हमारी नमाज के रूकू कायदे सज्दे को अल्लाह देख रहे है अच्छी तरह से करूँगा तो वो खुश होगें फिर जो मै अल्लाह से मागूंगा वो अपनी कुदरत से हमे देगें इसके लिये जिस्म के एक-एक जुज को इल्म की शक्ल पर ले आओ। इस तरह जब अल्लाह का ध्यान आ जाये तो यह नमाज तुम्हे कामयाबी दिलवायेगी। हम ईमान को सिखलाने की मेहनत करेगें तो मेरे अल्लाह मेंरे लिये रिज्क के दरवाजे खोलेगा, इल्म की और ध्यान की मेहनत कर रहे हो, आवाज लगी थी नमाज के लिये कि आ जाओ कामयाबी की तरफ अब यह यकीन बना कि कमाई बहुत छोटी है अल्लाह बड़े है। नमाज से मिलना शुरू हो जायेगा नमाज से लेते रहना और आगे बढ़ते रहना।

इस जमाने के अन्दर ईमान व अमल से पलने का रिवाज नही है, आम आदमी तो इससे बहुत दूर है ये बीमारी तो दीनदारों मे और अच्छे-अच्छे पढ़े लिखो मे घुसी हुई है। आम आदमी तो बेंचारा दीनदारों और पढ़े लिखो को देखता है और दीनदार और पढ़े लिखे ये समझते हैं कि

मेहनत से पैसा,

पैसे से चीजें और

चीजों से पलना,

ये कहते भी हैं कि जिन्दगी तो पैसों से बनेगी और पैसे अपने जरिये से मिलेगें, बस यहॉ से बात बिगड़ी है, सारी बात का बिगाड़ यहीं से ह। परवरिश का होना, चीजों का चीजों से मिलना, पैसों का पैसों से मिलना सबका सब मुतआरफ तरीकों ;पहचाने हुए तरीके द्ध से हो रहा है कि

जब तक पैसा न मिलेगा चीजें न मिलेंगीं,

चीजें न मिलेंगीं तो हालात ठीक न होंगें,

इन्ही तख्यीयुलात ;ख्यालातद्ध ने हमारे ईमान व अमल को बरबाद किया है, ईमान व अमल तो वो मख्सूस तरीका है जो अल्लाह से फायदा हासिल करने के लिये मिला है। हुकूमत, पैसे, जमीन व आसमान के मुकाबले मे

अल्लाह की कुदरत से फायदा लेने के लिये ईमान व अमल हैं। अल्लाह को कुदरत है कि बगैर मेहनत के माल दे दें, बगैर महनत के चीजें दे दें और बगैर चीजों के हालात को दूर कर दें। हॉ ! ईमान व अमल वो सरमाया है जिस पर

मेहनत के बगैर पैसें मिलें,

पैसे के बगैर चीजें दे दें,

खाने के बगैर पेट भर दें,

पानी के बगैर सैराब कर दें,

अल्लाह को इस पर कुदरत है और अल्लाह की कुदरत किसी नक्शे की पाबन्द नही है। अल्लाह की कुदरत आजाद है, नक्शे अल्लाह की कुदरत के पाबन्द है। हक तआला शानुहू दिन रात अपनी कुदरत को दिखला रहे हैं कि बने हुए को तोड़ रहे हैं और बे बने को बना रहे हैं। इन्सान दोनों तरफ देखे, इधर बनना देखे और उधर टूटना देखे। इधर नक्शों के अन्दर बनी हुई जिन्दगी बिगाड़ कर दिखला रहे है, उधर वादी ए गैर जीजरह मे जिन्दगी को बना कर दिखला रहे हैं। आज कोई यूँ कह रहा है कि

बच्चे बहुत हैं खायें कहॉ से ?

कोई यूँ रो रहा है कि बच्चे बहुत हैं चीजें कम हैं,

कोई यूँ कह रहा है कि चीजें बहुत हैं पर कोई औलाद नही है,

ये सब अल्लाह के मुजाहिरे हैं, यहॉ कुदरत दिखायी है तदरीजन ;धीरे धीरेद्ध पर कयामत के दिन एक दम अपनी कुदरत दिखायेगें। यहॉ बीस हजार साल मे जितने इन्सान बने हैं उस दिन एक हुक्म से सारे इन्सानों को बना कर खड़ा कर देंगें, एक हुक्म से सारे जानवरों को बना कर खड़ा कर देंगें। ईमान व अमल की बुनियाद कायनात से इस्तेफादा नही बल्कि कुदरत से इस्तेफादा हैं। इसलिये इसका यकीन पैदा करो कि ईमान व अमल अल्लाह की कुदरत से फायदे उठाने का जरिया है फिर इसी बात से खुश होकर अल्लाह रब्बुल इज्जत अपनी कुदरत की इन्तिहाई खूबी से तुम्हे पालेंगें। पैसा, मकान, मुल्क, सामने न रखो, जो तहतुल कुदरत है, जिस खुदा के बनाने से जिन्दगी बनती है उसको सामने रखो, उसी से पलने का यकीन करो।

चीजों के मिलने का, माल के मिलने का, मेहनत के मुतआरफ तरीकों से यकीन न करो, कुदरत से यकीन करो। जब किसी की जड़ और गुठली कायनात मे नही थी तो दरख्त कहॉ से आये ? ईमान व अमल की जो बुनियाद है वो ये है कि खेती से न मिलेगा, अल्लाह की कुदरत से मिलेगा। चीजें होंगीं तो खुदा की कुदरत से पलूँगा और जब चीजे न होंगीं तो भी खुदा की कुदरत से पलऊँगा।

मेहनत से पैसा मिलेगा, पैसे से चीजें और चीजों से जिन्दगी बनेगी, इस यकीन ने आज खुदा की कुदरत को मुकययद (कैद करना) कर दिया है, अब खुदा की हिकमत का तकाजा है कि इन्सानों को दिखलायें की मेरी कुदरत मुकययद (कैद करना) नही है। जिस पैसे से समझता था कि चीजें मिलेंगी, उस पैसे से दिखायेगें कि चीजें न मिलेंगीं, कल जितने पैसे मे चीजें मिलती थी आज उतने पैसे मे चीजें न मिलेंगीं। कमाई बिगाड़ देगें या कमाई चलती रहे पर पैसे मे बचत न होगी। चीजें हैं पर खौफजदा, बीमार, जलील, परेशान हाल, अल्लाह रब्बुल इज्जत सारी लाईनों मे जहॉ जहॉ इसने खुदा की कुदरत को मुकययद (कैद करना) करारा दिया उन्ही चीजों में इसकी परवरिश बिगाड़ कर दिखायेंगें। इसने अल्लाह रब्बुल इज्जत के बारे में वो बोल बोला जिससे अल्लाह रब्बुल इज्जत पाक हैं। अल्लाह रब्बुल इज्जत पाक हैं इससे कि उनका कोई फेल किसी पर मौकूफ हो, नबी तक पर हिदायत मौकूफ नहीं

हजरत इब्राहिम अलै0 को हिदायत कैसे मिली ?

बगैर नबी के वास्ते से।

हजरत मूसा अलै0 को हिदायत कैसे मिली ?

बराहेरास्त आवाज लगायी।

अल्लाह का फेल हिदायत देने का जिब्राईल अलै0 पर भी मौकूफ नहीं

आज जिसे देखो परेशान है कहीं सुकून नसीब नही, खुदा को ये दिखाना है कि मै खुदा हूँ, मै आजाद हूँ, तू ये अच्छी तरह से समझ़ ले कि तुझे जो कुछ चीजों से होता दिख रहा है ये चीजों से नही होता है, मेरी कुदरत से हो रहा ह अगर समझ मे आ जाये तो रास्ता मो़ड़ ले फिर मैं तुझे चमका दूँ।

पहली बात तो ये है कि अल्लाह ही पालने वाले हैं, हम चीजों से नही पलते, वो अपनी कुदरत से पालते हैं। अल्लाह हफीज है वो लाल किले से हिफाजत नही करते बल्कि अपनी कुदरत से हिफाजत करते हैं। इन्सानों मे इन्सानों को वो अपनी कुदरत से पैदा करते हैं अगर चाहें तो मॉ के पेट और बाप की सोहबत के बगैर पैदा करके दिख दें।

अल्लाह रब्बुल इज्जत की सिफात का सिफात से जोड़ है, खुदा की सिफात खुदा की सिफात पर ही लगेगी मख्लूकात पर नही लगेगी। खुदा हिफाजत करते हैं लाल किले से हिफाजत नही करेंगें, एक पत्थर जो किसी काम का न था पर इसकी एक शक्ल बना कर मन्दिर मे रख दिया, अब ये खुदा हो गया। अब

ये बच्चा भी देता है,

शिफा भी देता है,

कारोबार भी देता है,

माल भी देता है

कि जब शक्ल नही थी पत्थर था तो इससे कुछ नही होता था अब शक्ल है इसलिये सब कुछ कर सकता है। आज तूने माशाअल्लाह ईट की दुकान बनाई, जंगल को खेत बनाया, शक्कर की दवा बनायी अब इनसे सब कुछ होने लगा, मेरे भाईयों ! इस धोखे से खुद भी निकलो और दूसरों को भी निकालो ये एक जबर्दश्त मेहनत है। ये क्या कि घर मे पैसे लेकर आये, चीजें सजा दीं कि अल्लाह अब पालेंगें, नही ! तुझे धोखा लगा है चीजों से पलने का, अल्लाह तआला अपनी मख्लूक को मख्लूक से नही पालते, सारी मख्लूकात अल्लाह की अयाल है, उनका कुन्बा है वो सारी मख्लूकात को अपनी कुदरत से पालते है। इसे यूँ समझ ले कि़ तू जो कदम उठाता है खुदा न उठाये तो उठेगा नही, अब तुम खुद ये बतलाओ कि इस यकीन सीखने के लिये कौन-कौन तैयार है?

इस बयान की असल किताब बंगले वाली मस्जिद मे मौजूद है

बाद नमाज असर बंगले वाली मस्जिद

अपने-अपने नक्शों म परेशान

4 मोहर्रम 1382 हिजरी

-بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

इस जमाने में चीजों पर बहुत जबर्दस्त मेहनत हो रही है और बावजूद इंतिहाई तरह-तरह की चीजे बन जाने के इन्सानी हालात बेहतरीन नही है बदतर है और हालात की बदतरी यह है कि इंसान मे जितने किस्म के तबकात है बड़े और छोटे, हुकूमत के मालदारी के, सब अपने-अपने नक्शों में अपने को परेशान पा रहे है, अपने को उलझा हुआ देख रहे है और जो कुछ वह करना चाह रहे है उसमे नाकाम हो रहे है। वजह इसकी यह है कि इंसान का इस वक्त दुनिया में मेहनत का जो रूख है वह चाजों के बनाने की तरफ है और इसे ही वह अपना मकसद समझता है कि हमसे दुनियाँ में कुछ चीजे बन जाये। इंसान अपना मकसद इसके सिवा कुछ नही समझता कि उसकी दुनियाँ की मुहब्बत से दुनियाँ में कुछ चीजों का इजाफा हो जाये, इंसान के इसी नुक्ते ने बावजूद इंतिहाई चीजों की कसरत ने इसको परेशानी के अन्दर मुब्तिला कर दिया है।

अल्लाह ने इंसान को चीजों के लिये नही बनाया बल्कि अल्लाह ने चीजों के बनने के लिये आसमान व जमीन की मशीने तैयार की है। जितनी चीजे बनती है उसी मशीन से बनती हैं, अल्लाह ने इंसान को अमल की मशीन बनाया है और इसको बतलाया कि चीजें चाहे इसके पास ज्यादा हो या थोड़ी हो चीजों की शक्लों से इसकी बेहतरी या बदतरी नही होगी बल्कि बेहतरी या बदतरी इसके आमाल से होगी, ये इंसान के अमल की खराबी का एक दायरा है ।

दुनिया में जानवर है और बएतबार जानवर होने के वह अपन को दुनिया में मशगूल करते है। इंसान के अन्दर जिस तरह अल्लाह पाक ने जानवर वाला हिस्सा रखा है उसी तरह इंसान के अंदर बाकी जानवरों के अलावा बाऐतबार इंसान होने के अमल के कुछ दूसरे पहलु भी रखे हैं अगर इंसान अपने अमल के दूसरे पहलू को न पहचाने और जानवरों की तरह अपने आपको इस्तेमाल करे तो यह इंसान अपने अशरफूल मख्लूकात के मुकाम से गिरता है और परेशानियों में मुब्तिला होता है। अब अगर वह चीजे गौर की जाये जो इंसान करता है और वह जानवरों में पाई जा रही है तो बहुत सी निकलेगी, सारे जानवर रिज्क मुहैया होने के लिये मेहनत करते हैं, मुहैया होने के बाद खाते है।

बहुत से जानवर तो अपने बच्चों को और मादा को लाकर खिलाते हैं,

बहुत से जानवर दरखतों के अन्दर हवादार मकान बनाये है,

बहुत से जानवर जमीनों के अंदर मकानात भी बनाते है,

बहुत से जानवर अपने बदन व लिबास की सफाई भी करते है, जानवर अपनी मादाओं के साथ सोहबत भी करते है, अपने बच्चों के साथ खेलते और सययाहत भी करते है, सोते भी हैं उड़ते भी है और पानी में चलते भी है। लम्बें जानवर लम्बे जानवरों पर बड़ा बनने के लिये हाथ पैर मारते है, आपने दखा होगा कि अगर एक घर के अंदर दस मुर्गी और एक मुर्गा रहता हो अब एक मुर्गा लाकर और छोड़ दिया जाये तो खूब लड़ाई होगी कि एक गालिब हो जाता एक मगलूब हो जाता है अगर इंसानी जिंदगी का हश्र इतना हो जाये जितना जानवरों का तो फिर खुदा के यहां इनका शुमार इंसानों का नही बल्कि जानवरों की तरह है। ऐसे इंसानों को अल्लाह

अपनी किताब पाक में जानवरों की तरह करार देते है बल्कि जानवरों से भी बदतर करार देते हैं। ऐसे ही इंसान अपनी तारीख में यह तलाश करते है कि हम पहले जानवर थे बनते-बनते इन्सान बन गये हॉलाकि ये अपनी बदअमली से ही खुदा के यहां जानवर करार दिये गये।

दूसरा रूख जिसके लिये इंसान को बनाया गया है कि इंसान अपनी जान व माल से दूसरे इंसानों के तकाजे पूरा करने वाला बने कि अपनी जान में से, अपने माल में से, दूसरे इंसानों की जिंदगी बनाने के लिए हिस्सा निकाल।

अपने खाने में से निकाल कर बेखाने वालों को खिलाये,

अपनी बीवी के खर्चो में से निकाल कर दूसरे हाजतमंदो परेशान हाल औरतो पर खर्च करे,

अपने बच्चों की जरूरतों में से बचाये और दूसरे परेशान हाल बच्चों को तलाश करे उन पर पैसा खर्च करे,

अपने मकान व लिबास की दिलचस्पियों में से पैसा बचाये और दूसरे इंसानों की जिंदगी के अंदर हाथ बनने के तौर पर खर्च करे,

जान व माल जो कुछ खुदा ने दिया है उसको खाली अपना न समझे बल्कि जितना अपने पर खर्च करने को बताया उतना अपने पर और जितना दूसरों पर खर्च करने को बताया उतना दूसरों पर खर्च करे। जब इंसानों में से हर इंसान अपनी पूरी जान व माल को अपने पर खर्च करता है और दूसरे की जान व माल में से अपने लिये नफा खीचता है तो तफरूका कायम होता है। जुबानों-कौमो-मुल्कों के ऐतबार से लड़ते है जो कुछ हाथ में आ जाये वह लड़ाईयों पर खर्च करते हैं और मुसीबतें उठाते है। मुहब्बत के मनाजिर उनके सामने नही आते और कोई उनको प्यार करने वाला नही होता हैं। इस जिंदगी में जब कोई वजीर मरता है तो मिम्बर खुशियां मनाते हैं, मालदार मरते हैं तो उनके नीचे वाले खुशियां मनाते है कि अब माल हमारे हाथ मे आयेगा रस्म परस्ती के सोग मनाते है और मजलिसों में खुशियां मनाई जाती हैं लोग नकली रोना रोते हैं और अन्दर से उनके दिल हंसते है।

दूसरी वह जिंदगी है जिसमें इंसान अपने मुकाम को हासिल करे दूसरों की जिंदगियां बनाने पर जान को भी माल को भी खर्च करे तो उससे इंसानी जिंदगियों के अंदर मुहब्बत कायम होती है। ऐसा इंसान जो अपने जान व माल से इंसानी जिंदगी में काम आता हो ऐसे इंसान के मरने को लोग पसंद नही करते दिल से रोते हैं और उसके लिये अपने जान व माल खर्च करने को पसंद फरमाते हैं। इसी अमली बुनियाद पर इंसाफ, रहम और सखावत जिंदा होती है, सारे कमालते इंसानी इसी से निकलते है। जब इंसान मेहनत करके इस जिंदगी के तरीकों को हासिल करते हैं तो खुश होकर अल्लाह भी हालाते इंसानिया को बेहतर बनाते हैं बरकत, राहत और उसअत क दरवाजे खोल दिये जाते हैं, परेशानियॉ व बलाये रोक दी जाती हैं।

जानवरों की जिंदगी पर चलने के लिये इंसान को कुछ नही करना पड़ता क्यों कि आंखों से नक्शे दिखाई देते हैं और इनके अंदर नक्शों के जज्बात भरते हैं बस जानवरों की जिंदगी पर चलने के लिय इतना काफी है। दूसरी जिंदगी के लिये रियाजत व मुजाहदा करना पड़ता है, अपने अन्दर के तखरीबी व तामीरी माददो को पहचानने की मेहनत करनी पड़ती है और तखरीबी माददों को दबाने की और तामीरी माददों को उभारने की मेहनत करनी पड़ती है। अब आप हमारी इस बात को अच्छी तरह गौर कर लेगें और इस बात को भी जो हमने पहले अर्ज की थी तो हम इंशाअल्लाह आइंदा मज्लिस मे बतायेगें कि तखरीबी माददों को दबाने के लिये और तामीरी माददों को उभारने के लिये किस तरह और किस मेहनत की जरूरत है।

किताब का नाम - अहम बयानात हजरत मौलाना यूसुफ सा0 रह0
हजरत मौलाना यूसुफ साहब रह0
बाद नमाज फज्र बंगले वाली मस्जिद
हालात के बनने और बिगड़ने के असबाब

بِسْمِاللّٰهِالرَّحْمٰنِالرَّحِيْمِ

मेरे अज़ीज़ो दोस्तों ! एक है मेहनत और एक है कामयाबी का रास्ता, अब अगर मेहनत भी सही हो और कामयाबी के रास्ते पर हो रही हो तो इस मेहनत से इन्सान की दुनियॉवी जिन्दगी सुकून से गुजरेगी और आखिरत मे हमेशा के लिये जन्नत मिलेगी लेकिन अगर मेहनत नाकामियों के रास्ते पर हो रही हो तो मेहनत के बावजूद मेहनत करने वाला इन्सान बेचैनी, परेशानी, गम और तकलीफों मे फसेगा। आज हर इन्सान ने अपनी मेहनत का मैदान माल को बनाया हुआ है कि पहले माल हासिल करूॅ, इसलिये कि माल से चीजें हासिल होगीं और चीजों के हासिल होने से हमे कामयाबी मिल जायेगी, इन्सानों को इस रास्ते से कामयाबी हासिल होने की उम्मीद करना बिल्कुल गलत है। इन्सान जब भी इस रास्ते पर मेहनत करेगा तो इस रास्ते पर चलने की वजह से इस पर बलायें और मुसीबतें आयेगीं, ये तकलीफ और परेशानियों का शिकार हो जायेगा, इसकी जिन्दगी गम और बेचैनी के साथ अब गुजरेगी। इस मेहनत के मुकाबले पर अल्लाह जल्लाशानुहू ने अम्बिया अलै0 को मेहनत का एक दूसरा रास्ता बतलाया है कि मेहनत का मैदान हिदायत को बनाओ, पहले मेहनत करके हिदायत को हासिल करो, इसलिये कि हिदायत के हासिल होने पर ही इन्सान के आमाल सालेह अमल बनेगें और सालेह अमल से ही इसे कामयाबियॉ मिलेगी।

अब रही बात कि हिदायत क्या है ? हिदायत एक नूर है।

ये नूर इन्सान को हासिल कैसे होगा ? इसे बतलाने के लिये कुरआन है।

कुरआन इस नूर को हासिल करने के लिये اهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ के रास्ते पर चलने को बतला रहा है कि ये नूर इस रास्ते पर चलने से मिलेगा पर इसी के साथ कुरआन माल व चीजों के रास्ते पर चलने व मेहनत करने को गलत रास्ता बतला रहा है कि غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَ

कुरआन ईमान व अमल के रास्ते पर चलने व मेहनत करने को कामयाबी का रास्ता बतला रहा है, अब अगर इन्सान का ईमान व अमल ठीक हो गये तो खुदा इसे मुल्क भी देगा और माल भी देगा और इस मेहनत के करने वाले इन्सानों के सारे हालात भी अल्लाह की तरफ से दुरूस्त कर दिये जायेगें लेकिन अगर इन्सानों के ईमान व अमल खराब हो गये तो मुल्क व माल के होते हुए इनके सारे हालात अल्लाह की तरफ से बिगाड़ दिये जायेगें, हर इन्सान के साथ अल्लाह का यही जाब्ता है, ये इन्सान चाहे गोरा हो या काला, अमीर हो या गरीब, बादशाह हो या वजीर।

कुरआन म अल्लाह के अकवाल है, ये अकवाल अल्लाह का कौल है, उसकी बात है दूसरी तरफ उसकी बात के मुताबिक वाकिआत हैं जैसे यूसुफ अलै0 का वाकिआ कि दिखने मे तो उनकी जिन्दगी बिगड़ती हुई नजर आ रही है लेकिन ईमान व अमल ठीक थे तो अल्लाह ने मुल्क व माल देकर दिखला दिया अगर इन्सान के ईमान व अमल ठीक ना होगें तो अल्लाह मुल्क व माल छीनकर इसे नाकाम बना देगें। कुरआन मे पिछले गुजरे हुए वाकिआत का जिक्र है ताकि इन्सानो के सामने ये बात खुलकर आ जाये कि मुल्क व माल से जिन्दगी नही बनती, जिन्दगी ईमान व अमल से बनती है, कुरआन मे अल्लाह ने यही बात बतलायी है कि

कौम ए लूत अपनी तरक्कियों के बावजूद किस तरह नाकाम हुई,
कौम ए सबा खेतों, बागात और नहरों के होते हुए किस तरह नाकाम हुई,
कौम ए आद अपनी जबरदस्त कूवत और ताकत के साथ किस तरह नाकाम हुई,
कौम ए समूद खूबसूरत तरक्की याफता शहर के हाते हुए किस तरह नाकाम हुई,
कौम ए नूह अक्सरियत के होते हुए किस तरह नाकाम हुई,
ये सब किस लिये हुआ ? ये सब इसलिये हुआ कि उनके यकीन व अमल ठीक नही थे।
अल्लाह ने कामयाबी हासिल करने के राज कुरआन मे बतलाये हैं, राज बतलाने के बाद अल्लाह ने हमसे कहा कि सबसे पहले तुम हिदायत की दुआ मॉगो ,اهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ ऐ अल्लाह ! तू हमे उस रास्ते पर चला जिस रास्ते पर चलने वालों को आपने इनाम दिया है यानी अम्बिया, शोहदा और सिददीकीन जिस रास्ते पर चले हैं हमे भी उसी रास्ते पर चला और आगे ये कहा कि हमसे ये भी मॉगो , غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَऐ अल्लाह ! तू हमे उनके रास्ते पर ना चला जिस रास्ते पर चलने वालों पर तेरा गजब हुआ और वो गुमराह हो गये। इसकी तफसीर मे लिखा है कि ये गुमराह लोग यहूद व नसारा है, इन यहूद व नसारा मे दो पहलू मिलते है कि एक यहूद व नसारा वो हैं जो नबियों के रास्ते पर चले और कामयाब हुए और एक यहूद व नसारा वो हैं जो नबियों के रास्ते से हटकर चले तो नाकाम हुए। खुदा ने कुरआन मे दूसरों के किस्से सुनाकर हमे खबरदार किया है कि मुसलमानों के साथ भी वही किया जायेगा जो उनके साथ हुआ है और यहूद व नसारा के साथ ऐसा बार बार हुआ।
कुरआन मे खुदा ने दो दफा यहूद व नसारा का उभार दिखलाया और दो दफा यहूद व नसारा का जवाल दिखलाया, बनी इसराईल के वाकिआत कुरआन मे बार बार आये हैं, ये यहूद भी बनी इसराईल हैं और नसारा भी बनी इसराईल हैं। जिस मेहनत पर बनी इसराईल कामयाब हुए उसी मेहनत पर मुसलमान कामयाब होगा और जिस मेहनत पर बनी इसराईल नाकाम हुए उसी मेहनत पर मुसलमान नाकाम होगा। आम तौर से कुरआन मे जो अहकाम दिये गये है उनके आगे पीछे बनी इसराईल का तज्किरा आता है या उनकी तरफ जो अम्बिया भेजे गये है उनका तज्किरा आता है। इसी लिये हुजूर सल्ल0 ने फरमाया ! उनके बहत्तर फिर्के हो गये थे तुम्हारे तिहत्तर फिर्के हो जायेगें अगर उनमे से किसी ने अपनी मॉ के साथ जिना किया था तो तुम भी ऐसा करोगे, जिस तरह अम्बिया की बात मान लेने से जब यहूद व नसारा सही हो गये तो अल्लाह ने उन्हे मुल्क व माल देकर दिखला दिया, ऐसा तुम्हारे साथ भी होगा, अल्लाह ने उनके साथ जो मंजर दिखाये वो मंजर तुम्हारे साथ भी होगा कि जिस तरह उनके लिये जमीन फाड़कर नहरे निकाली,
जिस तरह उनके लिये आसमान से खाने उतरे,
जिस तरह उनके लिये दरिया मे रास्ते निकला,
जिस तरह उन्हे मुल्क व माल दिया,
ये सब उनके ईमान व अमल के सही होने पर हुआ, सहाबा किराम के हालात भी ऐसे वाकिआत से भरे पड़े है। जब बनी इसराईल नबियों के तरीके पर चले तो कौम ऊपर आयी और जब तरीके से हट गये तो नीचे आई, ये ऊपर कैसे आये ?
याकूब अलै0 का नाम इसराईल था उन्ही की औलाद बनी इस्राईल है, बनी इसराईल जानवरों पर गुजर करते थे उनके पास ना मुल्क था ना माल था, हजरत याकूब अलै0 ने उनके यकीनों को सही कराया لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللهُ के

मुताबिक जब यकीन सही हुआ तो अमल सही हो गये चूँकि याकूब अलै0 नबी थे तो जो आजमाईशे यकीन सही कराने वालों पर आती हैं वो आजमाईश उन पर और उनके बेटे यूसुफ पर भी आई। याकूब अलै0 और यूसुफ अलै0 इन दोनो पर आजमाईशे आयीं क्यों कि ये दोनों बाप बेटे नबी थे लेकिन बाकी ग्यारह बेटों पर आजमाईश नही आयी इसलिये कि वो ईमान को समझाने वाले नही थे। जब याकूब अलै0 और यूसुफ अलै0 पर आजमाईशे आयी तो ये दोनो साबित कदम रहें, पहली आजमाईश मे बेटे को बाप से जुदा कर दिया गया, बाप से जुदा होकर यूसुफ अलै0 को गुलाम बनाकर बेचा गया, उनको हसीन औरत ने बहकाया फिर भी ये पाक दामन रहे। उधर याकूब अलै0 की आजमाईश ये हुई कि उनकी महबूब चीज उनसे छिन गई, उनके पास यूसुफ अलै0 के भाई खून मे भीगा हुआ कुर्ता लाये मगर याकूब अलै0 ना उम्मीद नही हुए और कहा ! ऐसा नही हो सकता बल्कि मेरी और यूसुफ की मुलाकात जरूर होगी। अल्लाह पर इतना भरोसा करना, अल्लाह को पसन्द आया कि जाहिर के खिलाफ ऐसी उम्मीद करके अल्लाह से दुआ माँगी तो अल्लाह ने फरमाया ! तुम्हारी आज की दुआ ऐसी है कि अगर यूसुफ मर भी गया होता तो मैं उसको जिन्दा करके तुम्हारे पास लाता और वो तुमसे जरूर मिलेगा।

इधर भी जाहिर के बिल्कुल खिलाफ कि जो शख्स तोहमत लगी होने पर जेल मे बन्द हो और छूटने की बजाहिर कोई सूरत ना दिखायी देती हो तो अब अल्लाह की कुदरत देखो कि बादशाह एक ख्वाब देखता है और उस ख्वाब को देखकर वो बहुत परेशान हो जाता है, बादशाह की इस परेशानी को जानकर एक आदमी बादशाह से कहता है कि आप परेशान ना हों मैं ख्वाब की ताबीर बताने वाले एक शख्स को जानता हूँ लेकिन वो इस वक्त जेल मे बन्द है। ये सुनकर बादशाह उस आदमी को ख्वाब की ताबीर जानने के लिये जेल मे भेजता, जेल मे जाकर वो यूसुफ अलै0 से ख्वाब की ताबीर पूछता है और पूछकर बादशाह को बताता है। बादशाह यूसुफ अलै0 की रिहाई का हुक्म देता है पर यूसुफ अलै0 रिहा होने से मना कर देते हैं और कहते हैं कि पहले मुझ पर लगाये गये इल्जाम की तहकीक करो, बादशाह इल्जाम की तहकीक करता है तो पता चलता है कि ये शख्स बेगुनाह है फिर इल्जाम से बरी होकर यूसुफ अलै0 जेल से बाहर आते हैं, जेल से बाहर आने पर मुल्क व माल इनके हाथ मे आ जाता है। अब गौर करो कि क्या मुल्क व माल किसी को ख्वाब से भी मिलता है ? मगर अम्बिया के साथ अल्लाह अपनी कुदरत से ऐसे वाकिआत को करा कर हमे तुम्हे अपनी कुदरत से फायदे उठाने के रास्ते बतला रहे है। मुल्क व माल मिलने के बाद यूसुफ अलै0 अपने वालिद और भाईयों को मिस्र बुलाते है, इस तरह जानवरों पर गुजर करने वाले बनी इसराइल मुल्क व माल की कुर्सी पर बिठा दिये जाते हैं, उनके दिल मे भी कभी ये ख्याल ना आया होगा कि मै मुल्क व माल वाला बन जाऊँगा पर अल्लाह ने ईमान व अमल पर ये करके दिखाया कि जिस मेहनत को करने के लिये यूसुफ अलै0 भेजे गये थे जेल मे भी दावत देकर वो काम करते रह,

يَا صَاحِبَيِ السِّجْنِ أَأَرْبَابٌ مُتَفَرِّقُونَ خَيْرٌ أَمِ اللَّهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ

(सूरह यूसुफ 39)

जब तक बनी इसराईल ईमान व अमल वाले रहे मुल्क व माल हाथ मे रहा और जब नबियों के रास्ते से हट गये तो सब छिन गया और गुलाम बन गये फिर अल्लाह ने एक कफन चोर को बादशाह बनाकर इन पर मुसल्लत कर दिया, ये कफन चोर फिरऔन था हालाँकि जायजाद बनी इसराईल के पास थी, ताकत बनी इसराईल के पास थी पर अल्लाह ने उनको नीचे डाल दिया और फिरऔन को ताकत देकर बनी इसराईल को उसके हाथ मे दे दिया फिर फिरऔन न बनी इसराईल पर बड़े जुल्म किये कि इन्होने जितना खाया था उसने सब उगलवा लिया। अब अल्लाह ने मूसा अलै0 को भेजा, मूसा अलै0 ने भी बनी इसराईल को वही बात समझायी जो पहले याकूब अलै0 और यूसुफ अलै0 ने समझायी थी कि मुल्क व माल की मेहनत के तरीके अख्तियार ना करो बल्कि अपने बाप दादा के तरीके यानी नबियों वाले तरीके अख्तियार करो,

وَقَالَ مُوسَىٰ يَا قَوْمِ إِنْ كُنْتُمْ آمَنْتُمْ بِاللَّهِ فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوا إِنْ كُنْتُمْ مُسْلِمِينَ

(सूरह यूनुस 84)

ऐ कौम ! अगर तुम ईमान वाले हो तो अल्लाह पर भरोसा रखा

जुबानी तवक्कुल नही जैसे आज हम लोगो मे हैं कि हम लोग भी अपनी जुबान से कहते हैं अल्लाह पर तवक्कुल है और वकीलों के पास जाकर हाथ जोड़ते है चुनॉचे उन्होने भी जुबान से عَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْنَا । कह दिया फिर जुबानी भरोसे पर दुआ मॉगी

رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِلْقَوْمِ الظَّالِمِينَ

(सूरह यूनुस 85)

कुरआन व हदीस मे इस दुआ के कुबूल होने का कहीं तज्किरा नही है बल्कि अल्लाह ने वही कहा जो कुरआन मे दूसरी जगह है कि

حَسِبَ النَّاسُ أَنْ يُتْرَكُوا أَنْ يَقُولُوا آمَنَّا وَهُمْ لَا يُفْتَنُونَ

(सूरह अन्कबूत 2)

तुम हम पर जुबानी भरोसा करो और हम मान जायें ऐसा नही है बल्कि हम آمَنَّا कहने के बाद आजमायेगें चुनॉचे हक तआला ने कहा कि सिर्फ जुबानी बातें मत बनाओं बल्कि अमल करके दिखाओ। अल्लाह ने हजरत मूसा और हजरत हारून अलै0 से कहा अगर ये लोग कहते हैं कि हम लोगों को अल्लाह पर भरोसा है तो इनको नमाज पर लगाओ इसलिये कि मुल्क व माल मेहनत से नही मिलेगा बल्कि मुल्क व माल मेरे देने से मिलेगा, इसलिये जब तुम पर कोई आफत आये बस नमाज पढ़कर अल्लाह ही से मॉगो, क्यों कि आफत को लाने वाला भी अल्लाह हैं और आफत को हटाने वाला भी अल्लाह हैं,

तुम्हे हाकिमों के पास जाने की जरूरत नही है,

फौज बनाने की जरूरत नही हैं,

हथियार बनाने की जरूरत नही हैं,

तुम ऐसी नमाज अल्लाह को पढ़कर दिखाओ जैसी नमाज अल्लाह से लेने के लिये जरूरी है। सिर्फ जुबानी बात तो बनी इसराईल के पास भी थी जो नबियों की औलाद थीं और आज वैसी ही जुबानी बात हमारे पास भी है तो हजरत मूसा अलै0 ने बनी इसराईल को सिर्फ एक ही बात पर डाला कि ऐसी नमाज सीख लो जैसी नमाज पर अल्लाह देते हैं कि अल्लाह के मासिवा से नाउम्मीद होकर अल्लाह के ध्यान के साथ नमाज पढ़ो, अब अल्लाह से मॉगो।

बनी इसराईल पर मूसा अलै0 ने बहुत दिनो तक इसी की मेहनत की जब कि बनी इसराईल पर जुल्म पर जुल्म किये जा रहे थे, उन्हे मुलाजिमत से निकाला जा रहा था, उनकी औरतों की इज्जतें लूटी जा रहीं थीं, उन पर तरह तरह के इल्जामात लगाकर पिटाईयॉ की जा रहीं थीं पर मूसा अलै0 ने इनको फिरऔन के पास जाने से रोक कर नमाज पर लगाया, इनसे नमाज पर मेहनत करायी और इसी पर मश्क करायी कि नमाज पढ़कर अल्लाह से मॉगो ताकि अल्लाह से मॉगना आ जाये, अल्लाह पर ऐतमाद आ जाये। बनी इसराईल को जब मेहनत करके ये दौलत हासिल हो गयी तो अल्लाह ने फिरऔन और उसकी फौजों को घरों से निकाल कर दरिया मे दफन करके बनी इसराईल को मिस्र की हुकूमत दे दी, जब तक बनी इसराईल को हुकूमत नही मिली तब तक आसमान से खाना

उतार उतार कर खिलाते रहे, ये हलवा और गोश्त उन्हे मुल्क व माल की मेहनत के रास्ते से नही मिला, पत्थर से बाराह कबीलों के लिये पानी के बाराह चश्मे मुल्क व माल की मेहनत से नही दिया बल्कि ये सब कुछ नबियों वाली मेहनत के रास्ते से दिया हालॉकि बनी इसराईल को अभी दीन नही दिया, हराम हलाल भी नही समझाया सिर्फ मेहनत करने के लिये नमाज का अमल दिया जब मेहनत करके नमाज का अमल ठीक कर लिया तो अल्लाह तआला ने मुल्क ए मिस्र उनके हवाले कर दिया लेकिन ये सब कुछ पाने के बावजूद बनी इसराईल ने जब थोड़ी सी नाशुक्री की और ये कहा कि

وَإِذْ قُلْتُمْ يَا مُوسَىٰ لَنْ نَصْبِرَ عَلَىٰ طَعَامٍ وَاحِدٍ فَادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُخْرِجْ لَنَا مِمَّا تُنْبِتُ الْأَرْضُ مِنْ بَقْلِهَا وَقِثَّائِهَا وَفُومِهَا وَعَدَسِهَا وَبَصَلِهَا قَالَ أَتَسْتَبْدِلُونَ الَّذِي هُوَ أَدْنَىٰ بِالَّذِي هُوَ خَيْرٌ اهْبِطُوا مِصْرًا فَإِنَّ لَكُمْ مَا سَأَلْتُمْ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ وَالْمَسْكَنَةُ وَبَاءُوا بِغَضَبٍ مِنَ اللَّهِ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانُوا يَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ النَّبِيِّينَ بِغَيْرِ الْحَقِّ ذَٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَكَانُوا يَعْتَدُونَ

(सूरह बकरा 61)

ऐ मूसा ! रोज रोज यही खाना हमे अच्छा नही लगता कुछ गेहूँ दाल, मकई और प्याज वगैरह खाने के लिये अल्लाह से खेती करने के लिये जमीन दिलवा दो ताकि हम ये खाये तो मूसा अलै0 ने फरमाया ! नमाज का अमल करके अल्लाह से मॉगो, मूसा अलै0 ने इन्हे बहुत समझाया और अल्लाह ने भी समझाया,

قَالَ أَتَسْتَبْدِلُونَ الَّذِي هُوَ أَدْنَىٰ بِالَّذِي هُوَ خَيْرٌ

(सूरह बकरा 61)

तुम बढ़िया के बदले घटिया चीज मॉग रहे हो आखिर तुम्हे क्या हो गया है ?

فَإِنَّ لَكُمْ مَا سَأَلْتُمْ

(सूरह बकरा 61)

ये तो तुम्हे मिल जायेगा मगर याद रखो कि इस पर मेहनत करके तुम जलील हो जाओगे

ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ وَالْمَسْكَنَةُ

(सूरह बकरा 61)

इस वक्त तुम लोग फिलिस्तीन वालों से जिहाद करो हम फतेह दे देगें। इस पर बनी इसराईल ने मूसा अलै0 से कहा ऐ मूसा तुम और तुम्हारा रब फिलिस्तीन जाकर जिहाद करे हम लोग जिहाद करने नही जायेगें, इनका ये जवाब सुनकर अब अल्लाह के गजब का रूख पलट गया, जब तक नबियों के तरीके पर चले अल्लाह की मदद का रूख था, अब अपनी मर्जी का रास्ता चलना चाहा तो गजब का रूख पड़ गया, अल्लाह ने उन्हे जो बादशाहत दी थी उसे छीनकर बख्ते नसर जैसे बादशाह को उन पर मुसल्लत कर दिया। इस बादशाह ने हजरत यहया अलै0 से उस औरत से सोहबत का फतवा मॉगा जो महरम थी, हजरत यहया अलै0 ने महरम से सोहबत को नाजायज करार दिया तो बादशाह ने हजरत यहया अलै0 को उस वक्त कत्ल करवा दिया जब वो नमाज पढ़ रहे थे, हजरत जकरिया अलै0 भागकर एक दरख्त मे छिप गये तो उन्हे आरे से चीर दिया गया फिर उसने बनी इसराईल का ऐसा कत्ल ए आम कराया कि बनी इसराईल को मारते मारते जब उसकी फौज थक गयी तो फौज ने बादशाह से कहा

कि अगर ये कत्ल ए आम जारी रहा तो नबियों की औलाद खत्म हो जायेगी फिर हम लोगों के काम कौन करेगा, हमारी गुलामी कौन करेगा ?

बख्ते नसर ने कहा ! मै भी ये नही चाहता मगर मैं क्या करूँ क्यों कि मैने कसम खायी है कि जब तक इनका खून बहकर मेरे घोड़े के सीने मे ना लग जाये मैं इनके कत्ल से हाथ नही रोकूँगा, उलेमा ने राह निकाली कि पानी बहाया जाये ताकि पानी के बहने पर खून ऊपर आकर घोड़े के सीने मे लग जाये।

नबियों के तरीके पर जो एक बार चमकते है अगर वो गलती करेगें तो पिटाई होगी और अगर उस रास्ते से हटकर दोबारा नबियों क तराके पर आ जाये तो खुदा दोबारा उन्हे चमका देगें, सुन लो अगर तुम नबियों के रास्ते पर नही चले और अपने अपने तरीके पर मेहनत करते रहे तो तुम्हारी मेहनत और कामयाबी के बीच मे खुदा हायल हो जायेगें। तुम अपनी मेहनत से चाहे जो नक्शे और शक्लें बना लो तम्हारे और कामयाबी के दरम्यान खुदा हायल है, खुदा चीजों और शक्लों के बीच मे रखकर तुम्हे नाकाम बनायेगें और नबियों के तरीके पर आ गये तो खुदा अपनी कुदरत से तुम्हे चीजें और शक्लें देकर दिखायेगें।

सहाबा किराम जब मदीना आये तो उनके खौफ का ये आलम था कि पेशाब पाखाना के लिये जंगल जाते तो हथियार लगाकर जाते, नमाज हथियार लगाकर पढ़ते, खाना, पीना और सोना जागना ये सब हथियार लगाकर होता था। हुजूर सल्ल० से पूछा ! क्या ऐसा भी दिन आयेगा जब बगैर हथियारों के पेशाब पाखाने के लिये जा सकेगें ? बगैर हथियारों के नमाज पढ़ सकेगें ? बगैर हथियारों के खा पी सकेगें ? अल्लाह ने जवाब दिया,

وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْأَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِينَهُمُ الَّذِي ارْتَضَىٰ لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِنْ بَعْدِ خَوْفِهِمْ أَمْنًا يَعْبُدُونَنِي لَا يُشْرِكُونَ بِي شَيْئًا وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذَٰلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ

(सूरह नूर 55)

अल्लाह जरूर तुम्हे जमीन पर खिलाफत देकर दिखायेग

अब तक सहाबा के दिलों में जो खौफ पल रहा था जब मेहनत करके हिदायत की रौशनी दिलो मे आ गयी, अमलों पर खुदा से मिलने का जहन बन गया और नमाज पढ़कर मॉगना उनकी समझ मे आ गया तो फिर अल्लाह ने हालात को पलटा दे दिया। हाफिज अब्दुलबर रह० ने इस बाब मे दो किस्से लिखे हैं, एक कुली का किस्सा

أَمَّنْ يُجِيبُ الْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوءَ وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَاءَ الْأَرْضِ أَإِلَٰهٌ مَعَ اللَّهِ قَلِيلًا مَا تَذَكَّرُونَ

(सूरह नम्ल 62)

और दूसरा जैद बिन हारिसा रजि० का किस्सा, ये दोनो किस्से एक ही तरह के हैं मगर दुआ मे फर्क है। याद रखना कि मुल्क व माल की मेहनत से अल्लाह की मदद नही आती हैं, मुल्क व माल की मेहनत से मदद के लिये आसमानों से फरिश्ते नही उतरेगें बल्कि नमाज पढ़कर दुआ मॉगने से उतरेगें। बद्र की फत्ह के वक्त सिर्फ कलिमे नमाज वाले ही थे, आज कल तो बाज मुसलमान कहते हैं कि अरे ! खाली कलिमे नमाज से क्या होगा ?

अरे अन्धे कहीं के ! तू अन्धा तेरा दिल अन्धा,

तेरी रूह अन्धी, तेरा दिल स्याह,

अरे ! फिरऔन की हुकूमत सिर्फ कलिमे नमाज से तोड़ दी गई, फिरऔन की हुकूमत नमाज पढ़ने वालो की दुआ से डूबी है कि नमाज पढ़ने वालो को खुशखबरो सुना दो। बद्र की फत्ह सिर्फ कलिमे नमाज पर हुई बाकी सब दीन बाद मे मिला और उसके बाद भी जितना हुआ सब कलिमे नमाज पर हुआ चुनाँचे सहाबा किराम रजि0 जिन्होने नमाज से होने के बहुत से वाकिआत देखे थे एक नही बहुत से वाकिआत कि दौर ए सिददीकी मे प्यास की शिददत मे थे पानी नही था तयम्मुम करके सहाबा किराम ने फज्र की नमाज पढ़कर दुआ माँगी और दुआ अभी खत्म भी नही हुई थी कि जमीन फटकर पानी बहने की आवाज आने लगी तो वो एकदम ये कहते हुए उठे,

هٰذَا مَا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَرَسُولُهُ

(सूरह अहजाब 22)

बड़े हजरत जी अल्लाह से लेने का किस्सा सुनाते थे कि नबियों के रास्ते पर कामयाबियों का जो रास्ता खुलेगा उसकी नवईयत क्या होगी ? फरमाया ! बचपन मे मेरी आँख दुखती थी एक बार इतना दुखी कि हकीमों ने जवाब दे दिया फिर आँख की रौशनी चली गयी तो उस रात को मुहम्मद साहब की अहलिया और एक अजीज उनके सर हो गई कि सिविल सर्जन को दिखाओ। उस वक्त हमारे सूबे मे शायद दो या तीन सिविल सर्जन होगें, अब तो सूबे मे इतने सिविल सर्जन हैं कि पूरा एक शहर बस जाये, एक सिविल सर्जन तो था मगर वो भी अग्रेंज। वो दोनो सर हो गई कि इसको दिखाओ, रात को ये उठे और नमाज पढ़कर दुआ माँगी "ऐ अल्लाह मैं अपनी हाजत लेकर किसी के पास नही जाऊँगा तू इलयास की आँख अच्छी कर दे" सुबह उठकर साफ कह दिया मुझे सिविल सर्जन के पास नहो जाना है, आठ दस दिन मे आँख बिल्कुल अच्छी हो गयी और आखिर उम्र तक दूर की बीनाई यहाँ तक ठीक रही कि बाहर का कोई आदमी दरवाजे से आकर अगर फारिग होकर चला जाता और मर्कज का कोई आदमी उस आने वाले से दावत की बात नही करता तो नाराज होते थे, वो कमरे मे बैठकर ये सब देख लेते थे, ये इस जमाने का वाकिआ है।

ऐसे बहुत से किस्से हयातुस्सहाबा मे दर्ज है छप जाये तो इसे पढ़ो, हयातुस्सहाबा मे पूरा एक बाब ऐसे किस्सों का है, सहाबा किराम रजि0 के दिल मे नमाज की क्या कीमत थी इसके दो किस्से लिखे है, एक किस्सा हुज़ूर सल्ल0 के वक्त का और एक किस्सा हजरत उस्मान रजि0 के वक्त का।

एक सहाबी बहुत घने बाग मे नमाज पढ़ रहे थे तो एक परिन्दा बाग मे आ गया पर बाग के घने होने की वजह से वो फड़फड़ाता रहा पर बाग से नही निकल पाया परिन्दे के फड़फड़ाने की वजह से सहाबी का ध्यान खुदा की तरफ से हट गया तो उन्होने पूरा बाग सदका कर दिया। हजरत उस्मान रजि0 के वक्त का बाग पचास हजार रूपये का था सिर्फ खुशूऊ हट जाने की इतनी अहमियत थी कि पचास हजार रूपये का बाग सदका कर दिया, याद रखो नमाज और दुआ से ही हर मसअला हल होगा।

ईरान नमाज पर मिला,

मिस और शाम नमाज पर मिला,

हर छोटी बड़ी चीज खुदा से लेने के लिये नमाज का कयाम था, एक सहाबी का जमीन को लेकर एक नसरानी से झगड़ा हुआ, मामला हजरत उमर रजि0 के पास आया तो हजरत उमर रजि0 उस मुसलमान पर बहुत गुस्सा हुए और वो जमीन सहाबी से लेकर नसरानी को दे दी कि अगर दाई जमीन मे लगेगा तो उसको जमीन मे लगा देखकर दूसरा लगेगा फिर तीसरा लगेगा, अब वही बात आयेगी कि खाओ रंग बिरंगें खाने, ये रंग बिरंगें खाने खाना खुदा की तरफ से अपने ऊपर जिल्लत का तौक डलवाना है। खुदा मुल्क व माल तुम्हारे कदमो मे डाल देगें

लकिन जब तुम्हारे अमल ठीक होगें और अमल तब ठीक होगें जब यकीन ठीक होगा और यकीन तब ठीक होगा जब हिदायत का नूर दिल मे आयेगा।

हिदायत क्या है ?

हिदायत एक नूर है, एक वजदान है, एक दूरबीन है जिससे आमाल मे खुदा के वादे पूरे होते दिखायी देती है, अच्छा एक बात बताओ जिस आदमी को माल से काम बनते दिखायी देते हो तो वो आदमी माल कमाने मे सच बोलेगा या झूठ ?

सूद लेगा या सूद छोड़ देगा ?

अगर माल कमाने वाला आदमी ऐसा करेगा तो उसकी आमदनी घट जायेगी, कारोबार खराब हो जायेगा इसलिये वो माल की खातिर सूद या झूठ नही छोड़ेगा, जो भी इन्सान ईमान और आमाल से पहले माल कमायेगा वो अपने अमल खराब कर देगा, अमल खराब होने की वजह से इसका पैसा नापाक होगा, पैसा नापाक होने की वजह से जब ये नमाज पढ़ेगा तो इसकी नमाज इसके मुँह पर फेककर मार दी जायेगी, ना इसका हज कुबूल होगा ना जकात। इसलिये जब पैसा पहले आयेगा और अमल बाद मे सीखेगा तो अमल खराब होगें इसको मिसाल से समझो कि हौज मे एक गिलास शराब पहले डाल दो फिर उस हौज मे दूध डालते रहो तो सब नापाक हो जायेगा। हमारी हुकूमत गाय को खुदा कहती है उसकी खुशनूदी के लिय गाय के दूध के साथ उसका पेशाब भी डाल दो तो अब उस नापाक मे से पाक दूध को कैसे निकाल सकते हो, आज यही वो दलदल है जिसमे हम सब फंसे हैं।

हमारी नमाज मे जान कैसे आये ? गिजा नापाक, कपड़े नापाक इसलिये की कमाई नापाक है, इस दलदल से निकलो इस दलदल से निकलने का रास्ता ये है कि पहले हिदायत हासिल करो फिर माल कमाओ कि हिदायत की रौशनी से तुम्हे आमाल मे कामयाबी नजर आने लगे। इसके लिये पहले ये यकीन सीखो कि मैं मस्जिद वाले आमाल मे लगकर नमाज मे लगूँगा तो अल्लाह हमे अपनी कुदरत से रोजी देगें इसलिये सबसे पहले अपने अन्दर ये बात पैदा करो, मस्जिद वाले आमाल मे लगना पहला अमल है, मेहनत करके अपने अन्दर ये यकीन लाओ कि

अल्लाह ने अपनी कुदरत से सब कुछ पैदा किया है बगैर किसी की शिर्कत के इसलिये अल्लाह खालिक हैं,

अल्लाह अपनी कुदरत से हर एक को रोजी देते है इसलिये अल्लाह राजिक हैं बगैर किसी शक्ल के अपनी कुदरत से हमे रोजी देगें,

अल्लाह समद हैं उन्हे हमारी परवरिश के लिये शक्लों की जरूरत नही है, वो शक्लों से बेनियाज है अपनी कुदरत से हमारी परवरिश करेगें, हमारी हिफाजत करने मे भी उन्हे शक्लों की जरूरत नही है, वक्त पड़ जाये तो मछली के पेट मे हिफाजत से रखेगें, सुब्हानअल्लाह से हमारा पेट भरेगें चुनॉचे आखिर मे ये होगा जब याजूज माजूज निकलेगें तो उनके निकलने पर मुसलमान एक गार मे चले जायेगें, सहाबा ने पूछा या रसूलुल्लाह ! मुसलमान उस गार मे क्या खायेगें ?

हुजूर सल्ल0 ने फरमाया ! सुब्हानअल्लाह, अल्हम्दुल्लिलाह, ला इलाहा इल्ललाहु, अल्लाहु अकबर के कहने से खुदा उनका पेट भरेगें। तो सबसे पहले ये यकीन पैदा करो कि अल्लाह बगैर किसी शक्ल के अपनी कुदरत से हमे रोजी देगें अगर सोने का टुकड़ा तुम्हारे सामने आ जाये तो दिल ये कहे कि सोने से नही अल्लाह से होगा, कारखाना हाथ आये तो दिल ये कहे कि कारखाने से नही होगा अल्लाह से होगा। चीजों के बगैर खुदा से होना दिल मे आ जाये इसके लिये لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللّٰهُ की दावत ईमान की मज्लिस मे देनी है ताकि ये बात दिल पर खुल जाये। तुम बना बनाया देख रहे हो कि चीजों से चीजें बन रही हैं

जैसे गेहूँ से गेहूँ फिर बने हुए से अपने को जोड़ लेते हो कि भैंस लाऊँगा उस पर मेहनत करूँगा तो भैंस से भैंस मिलेगी, अरे ऐसा नही है अल्लाह ने पहली भैंस कैसे बनायी ?
पहला गेहूँ कैसे बनाया ?
क्या अब खुदा उस तरह बनाना भूल गये हैं ?
या खुदा की सिफात अब खत्म हो गयी है ?
याद रखो खुदा की हर सिफात हमेशा के लिये है इसलिये शक्लों से कुछ नही बनता बल्कि हर चीज खुदा की कुदरत से बनती है, जब वो नही बनाना चाहते तो भैंस बॉझ हो जाती है, औरत बॉझ हो जाती है, हर कीड़ा खुदा की कुदरत से बन रहा है चाहे वो जानवर के पेट मे बनाये, चाहें तो खेत मे बनाये और चाहें वो तुम्हारे पेट मे बनाये, इसलिये चीजों से इन्कार जरूरी है इसके लिये चीजों की तरदीद लाजमी है,
हुकूमतो की तरदीद करो,
ऐटमयात की तरदीद करो,
सारी शक्लो की तरदीद करो और
अपनी मेहनत की तरदीद करो फिर इसके मुकाबले मे अल्लाह से होना दिल मे लाओ, इसके लिये कायनात के मुकाबले मे अल्लाह से होने को बार बार सुनो, अम्बिया अलै0 के वाकिआत को सुनो, कुरआन व हदीस को सुनो, जुबान से शक्लो की तरदीद और अल्लाह से हाने को बार बार बैठकर सुनो और बोलो, जब ऐसा रोजाना करोगे तब जाकर ये यकीन दिल मे आयेगा।
बाजार मे सौदा लेने जाओ तो चीजों की तरदीद करते हुए चौथा कलिमा कहते जाओ कि
" चीजों से होता हुआ जो कुछ हमे नजर आ रहा है ये अल्लाह के करने से हो रहा है, अकेले अल्लाह बगैर किसी की शिर्कत के ये सब कर रहे हैं, सारी कायनातें उन्ही की हैं और वही कमालात वाले हैं, वो जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें, जो चाहें करने पर कादिर हैं।"
घर मे आओ तो चीजों की तरदीद करते हुए आओ,
सवारी पर बैठो तो सवारी की तरदीद करो और दुआ पढ़ो कि इस सवारी को हम नही चला रहे है बल्कि अल्लाह चला रहे है, वो जब तक चाहें हमे सवारी पर चढ़ाये रखे, जब चाहें सवारी को हम पर चढ़ा दे कि मोटर उलट गयी, गाड़ी बिगड़ गयी, घोड़ा बिदक गया, तॉगा टूट गया।
इल्म के हल्कों मे बैठो ओर सुनो कि सुब्हानल्लाह से क्या होगा ? ला इलाहा इल्ललाह से क्या होगा ? नमाज से क्या होगा ? आमाल से क्या होगा ? चीजों की तरदीद चलाओ कि पैसे से नही होगा, शक्लो से नही होगा, डाक्टर से नही होगा, सुब्हानल्लाह से यूँ होगा, ला इलाहा इल्ललाह से यूँ होगा, अब इन्ही आमाल को पूरी जिन्दगी मे लाओ। फजायल और तर्गीबात का इल्म हासिल करो फिर तन्हाईयों मे खुदा के जिक्र मे लगकर खुदा पर ध्यान जमाओ, ध्यान जमाकर नमाज मे आओ, खुदा के ध्यान के साथ नमाज का अमल करो। नमाज का अमल अल्लाह से लेने की सूरत है, अल्लाह चीजों से नही देगें बल्कि नमाज का अमल करके दुआ मॉगने पर देगें, बावजूद इस यकीन के नियत मे फर्क ना आये, यकीन ये हो कि मैं अल्लाह के काम मे लगूँगा तो अल्लाह मेरी जरूरतो को पूरा करेगें और नियत ये हो कि मैं ये काम अपनी जरूरतो को पूरा करने के लिये नही कर रहा हू बल्कि अल्लाह को खुश करने के लिये कर रहा हूँ। ये सब करके अल्लाह से اهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ मॉगो कि ऐ

अल्लाह मैं जुबान और अमल से मेहनत कर रहा हूँ अब तू हिदायत का नूर मेरे दिल मे डाल दे, अल्लाह अपना नूर अब तेरे दिल मे डाल देगें।

अब अपनी नमाज को चीजों की तरदीद पर लाओ कि ईमान की मज्लिसों मे जिस यकीन की बात सुनी है उस यकीन पर नमाज को लाओ। इल्म के हल्कों मे जो कुछ सुना था उस मेयार पर नमाज बनाओ यानी नमाज मे जो कुछ अपनी जुबान से कह (पढ़) रहे हो जहल के साथ ना कहो (पढो़) जानकर और समझकर कहो कि क्या कह रहे हो कि

اهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ

मॉग रहा हूँ कि मेरी जरूरतें और मेरे मसअले नबियों के रास्ते से हल हों, अल्लाह के आगे ऑसू के टपकाने से मेरी जरूरतें और मसअले हल होंगे, माल और सामान से मसअले हल नही होगें अल्लाह ने माल और सामान पर मसाएल के हल का फैसला नही फरमाया है। चीजों के ढेर से मेरे मसाएल खुदा बिगाड़ देगें इसलिये जानकर और समझ बूझकर कहो

اهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ

मैं जिसे मसाएल के हल के लिये मॉग रहा हूँ मेरा ये रास्ता है, अब यकीन हो नमाज पर, इल्म हो नमाज का, नियत हो नमाज से मसअलों के हल की। नमाज के अमल मे नियत काबू मे आ जाये, यकीन काबू मे आ जाये, यकीन से नियत ना बिगड़े, नियत की गन्दगी से यकीन गन्दा ना हो, नमाज का अमल अल्लाह की रजा के वास्ते करो और यकीन करो कि नमाज के अमल पर ही खुदा से सब कुछ मिलेगा। अब नमाज के बाद हर अमल के अन्दर नियत को ठीक करो,

माल कमाने और खर्च करने मे,

खाने पीने और पहनने मे,

सब मे एख्लास लाओ, कमाई का यकीन निकाल कर, अब अल्लाह की रजा के लिये कमाई का इल्म लेकर कमाई के अमल करो फिर इस कमाई पर अल्लाह तेरी जरूरतों के पूरा होने का फैसला करेगें सिर्फ कमाई पर कामयाबी का फैसला नही होगा कि तू एक करोड़ की मालियत का कारखाना लिये बैठा है कि इस पर अल्लाह तुझे कामयाब करेगें, अरे ! अल्लाह के नजदीक सात जमीन और सात आसमान की कीमत एक मच्छर के पर के बराबर भी नही और तू इसे भी जान ले कि तुझे मौत देकर ये कारखाना भी खुदा तुझसे छीन लेगें अगर तेरी कमाई इस कारखाने मे खराब है तो तुझ पर कारखाने और माल के लाईन की मुसीबतें और परेशानियॉ आयेगीं अगर तेरे हाथ मे कुछ भी ना हो पर कमाई ठीक हो तो खुदा सब कुछ दे देगें। बाजार वाला यकीन लेकर मस्जिद मे आयेगा तो तेरा कोई काम ना होगा, बाजार वाले यकीन को मस्जिद से बाहर फेंककर अब मस्जिद मे आओ और मस्जिद वाले अमलों को करके हिदायत ले लो कि खुदा से अमलों पर मिलता है और मस्जिद वाले आमाल पर मिलेगा फिर उन अमलों की बुनियाद पर जो जिन्दगी आप उठायेगें वो एख्लाक और इन्साफ वाली जिन्दगी होगी, मस्जिद वाले यकीन और अमल को लेकर बाजार मे जाओगे तो अल्लाह उस पर भी देगें, बस शर्त ये है कि

इल्म के मुताबिक कमाई हो,

इल्म के मुताबिक खर्च हो,

इल्म के मुताबिक खाना पीना हो,

इल्म के मुताबिक पहनना ओढ़ना हो,

इल्म के मुताबिक रहना सहना हो,
इल्म के मुताबिक बातचीत करना हो,
जब ये जिन्दगी बना लोगे तो आराम से रहोगे, अब तुम्हे कोई खटका नही,
चाहे जमीन पर जलजलें आयें या सैलाब आयें,
चाहे तूफान आयें या बम फटें, तुम्हारे लिये कोई खतरा नही बस पहले ये तय करो कि पहले माल नही कमाना है बल्कि पहले

لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ

के मुताबिक यकीन बनाना है, मुल्कों मे फिरो और इसी को कहो कि पहले माल नही कमाना है पहले यकीन बनाना है, अमलों से लेने का जहन बनाओ, इसके लिये आप हिदायत वालों की जिन्दगी की चौबीस घन्टें नकल उतारो फिर तुम्हारी दुआ पर तुम्हारे दिल मे अल्लाह असल अपना नूर उतार देगें कि पहले बच्चे की शक्ल बनती है फिर उसके बाद अल्लाह उसमे रूह डालते हैं जब तुम सहाबा किराम वाली जिन्दगी की चौबीस घन्टें नकल उतारोगे तो अल्लाह तुम्हारे दिल मे अपना नूर डाल देगें। अब जो तुम अल्लाह के रास्ते मे जा रहे हो तो अपने लिये भी और दूसरों के लिये भी हिदायत का नूर लेने जा रहे हो, इसलिये हमारा वक्त उन्ही आमाल मे गुजरे जिन आमाल को करने जा रहे हो कि हमारा वक्त या तो दावत मे गुजरे और इस तरह गुजरे कि जो जुबान कह रही हो दिल उस पर हॉ कह रहा हो।

जब तुम सरमायेदार के पास दावत देने गये तो तुम्हारी जुबान ये कह रही है कि आपके पास जो माल है इस माल से कुछ नही होगा और दिल ये कह रहा है कि इतना बड़ा सेठ अगर इस काम मे लग जाये तो तब्लीग का काम खूब होगा तो तुम्हारी जुबान तुम्हारे दिल का साथ नही दे रही है। गश्त मे इस बात का पूरा ख्याल रखो कि माल से कुछ नही होता तो माल वाले से भी कुछ नही होता अगर चन्द अहमक और सिरफिरे तेरे साथ काम मे लग जाये ंतो क्या तब्लीग का काम हो जायेगा ? अपने दिल मे तरदीद पैदा करने के लिये ये बात सोचो और कहो कि मालदारों के मानने और ना मानने पर इस्लाम की हयात मौकूफ नही है। ये बात जहन से निकाल दो कि हुकूमत हमारे हाथ मे हो या अक्सरियत मे हम हो तो इस्लाम जिन्दगियों मे आ जायेगा, नही, इस्लाम की हयात इस पर मौकूफ नही बल्कि इस्लाम की हयात इस पर मौकूफ है कि दावत देने वाल के दिल से ये यकीन निकले कि फलॉ बड़ा है और माल बड़ा है, मैं तो इसका यकीन निकालने के लिये दावत देने जा रहा हूँ। हुकूमत और माल तो फिरऔन और हामान के पास था और ईमान व अमल नबियों के पास थे, आज हमारे दिल का यकीन गलत है इसको सही करने के लिये हम दावत देने जा रहे हैं।

क्या आदमी इस वजह से बड़ा हो जायेगा कि उसके पास कुर्सी है या कारखाना है ? अगर कारखाने मे बड़ी बड़ी चीजें हैं तो कारखाने मे गलत यकीन के सॉप से अपने आपको बचाओ, हम गश्त करके यकीन के सॉप की मुसीबत से कारखाने वाले को बचाने जा रहे है, जिस मुल्क और माल के गलत यकीन की मुसीबत मे वो फंसा है हम उसे उससे बचाने जा रहे है। अगर अपना यकीन ना बदला तो जिसके पास जा रहे हो उसका क्या बदलेगा अगर उसका यकीन नही बना पर तुम्हारा बन गया तो तुम्हारा मसला हल हो जायेगा अगर तुम्हारा यकीन ना बदला ता चिल्लाना काम नही है क्यों कि तुम तो अपना यकीन बदलने गये हो। गश्त मे जाओ तो मुल्क व माल के कुत्तों का यकीन अपने दिल से निकालने के लिये जाओ, डूबते को निकालने के लिये जा रहे हो और डूबने की जगह पर खुद भी जा रहे हो, मैं ना डूबूं ये सीखने के लिये जा रहे हो, दुआ मॉगो कि ऐ अल्लाह ! मैं डूबने की जगह जा रहा हूँ तू मुझे भी बचने की शक्ल दिखा और भाई को भी उस शक्ल मे से निकाल। ये मुल्क व माल का कारखाना

नही है शहद का छत्ता है, तुम्हारा भाई शहद है उस पर ये मुल्क व माल की मक्खियाँ चिमटी है, ये मक्खियाँ तुम पर भी ना चिमट जायें कि शहद निकालने वाला जब शहद निकालने जाता है तो मोटा कपड़ा और धुआँ लेकर जाता है, गश्त के दरम्यिान नजरें नीची रखो ये मोटा कपड़ा है और जिक्र का धुआँ छोड़ते हुए जाओ अगर ऐसा नही किया तो तुम पर भी वो मक्खियाँ चिमट जायेंगीं फिर जैसे वो सूज गया है तुम भी सूज जाओगे। तुम्हारी सूजन कहाँ दिखायी देगी ? कि गश्त करके लौट रहे हो और कह रहे हो कि देखा उसकी ठाठ बाठ कालीन पोलैन्ड की थी और कार अमरीका की तो ये सब तुम पर लिपट गये, अब ये भाई को खीचने वाला नही रहा बल्कि भाई के साथ डूबने वाला बन गया।

मोटा ओढ़ना क्या है ?

मोटा ओढ़ना मिलकर इक्टठा जाना है और निगाहें नीची रखकर जिक्र करते हुए जाना धुआँ है इस तरह शहद को निकाल कर लाओ, अब तुम्हारा भाई बाहर निकल कर कलिमा सीखेगा, नमाज सीखेगा, खुदा का इल्म सीखेगा, खुदा का ध्यान सीखेगा फिर अपने कारखाने और माल का सही इस्तेमाल सीखेगा, अल्लाह की मख्लूक को फायदा पहुँचाने वाला बनेगा। अभी तो ये कोठियों मे, कारों मे, कारखानों मे जाया होकर डूब रहा है, उसके डूबने की अलामत तुम्हे बताऊँ कि वो तुमसे अपनी परेशानियाँ बतायेगा और दुआ के लिये कहेगा, तुम उसका मिजाज बनाओ कि सलातुल हाजत पढ़ने से परेशानियाँ दूर होगीं, नमाज पढ़कर माँगने से दूर होगीं। बातों से बेतकल्लुफी हो जाये तो यह खुलेगा कि क्या करूँ मैं भी वक्त लगाना चाहता हूँ मगर ये परेशानिया है, वो अपने डूबने की सारी खबरें बाहर लायेगा अब अगर तुमने उसे ये मश्विरा दिया कि यूँ कमा लो या ये इन्तेजाम कर लो या इसको इस तरह से कर लो तो तुम्हारी कमाई चल पड़ेगी तो वो तो डूबा ही था तुम भी उसके साथ डूब गये, इसलिये उसको ये समझाओ कि ये माल और कारखाना तुम्हारा मसअला हल नही करेगें बल्कि कलिमा और नमाज से मसअला हल होगा।

अब मुलाकात के बाद पता चलेगा कि कौन डूबा और कौन डूबने से बचा ? इसलिये दूसरों के खीचने मे कही खुद ना डूब जाओ इसका ख्याल रखना, कलिमे का यकीन ये समझकर ना बोलो कि मुझ आता है बल्कि इसलिये बोलो कि मैं बोलूँगा तो मुझे कलिमे का यकीन आयेगा। अब चौबीस घन्टें मे तुम क्या क्या काम करोगे ? 1 दावत, 2 इल्म का हल्का, 3 अल्लाह का जिक्र और 4 खिदमत, दावत के लिये खुसूसी गश्त के जरिये दावत, उमूमी गश्त के जरिये दावत, इज्तिमा मे इज्तिमाई दावत, तश्कील मे इन्फिरादी दावत, इसलिये अब हम पूरा वक्त इस तरह गुजारे या तो हम दावत मे होगें या हम तालीम के हल्के मे होगें या खुदा के जिक्र मे हो या अल्लाह से दुआ माँग रहे हो, या नमाजे पढ़ रहे हों, या पिछली नमाजों की कजा पढ़ रहे हों। चार काम करना हमारी मजबूरी है इसलिये कम से कम वक्त मे इन्हे करना है, 1 सोना 2 खाना, 3 पेशाब पाखाना और 4 आपस की बातें, इतना कम भी ना करना कि बीमार पड़ जाओ और इतना ज्यादा भी नही कि मकसद जाया हो जाये, इसी के साथ चार कामों से बचना है, सवाल, अश्राफ, फुजूल खर्ची आर साथियों का सामान बिला इजाजत इस्तेमाल करने से।

हर आदमी मे माँगने का माददा है अगर माँगने का रूख अल्लाह की तरफ हो जाये तो दुआ है और मख्लूक की तरफ हो जाये तो सवाल है, माँगना जुबान पर आ जाये तो सवाल है और दिल मे हो तो अश्राफ है। दिल मे आ गया कि थके हुए है गाँव वाले खाने की दावत कर दे ंतो अच्छा है तो ये अश्राफ है और अगर यही बात अल्लाह से कही तो दुआ है, दुआ से बन्दा खुदा का महबूब बनता है और सवाल व अश्राफ से मबगूज बनता है। रोटी की दुआ इतनी जोर से माँगो कि गाँव वाले सुन लें तो ये भी सवाल ही हो जायेगा ये दुआ नही है, मख्लूक से माँगना सवाल है।

किताब का नाम - हजरत जी की यादगार तकरीरें
हजरत मौलाना यूसुफ साहब रह0 ने अपने इन्तेकाल से आठ दिन पहले
गुजरानवाला पाकिस्तान मे जुमे की नमाज से पहले 26 मार्च सन 1965
को बयान फरमाया

بِسْمِاللّٰهِالرَّحْمٰنِالرَّحِيْمِ

मेरे अज़ीज़ो और भाईयों ! अल्लाह जल्ला शानुहू ने इन्सान को मेहनत की दौलत देकर इस दुनियॉ मे थोड़े दिनो के लिये भेजा है, इन्सान को इस दुनियॉ मे भेजने का मकसद ये है कि इन्सान अपनी मेहनत को अपने ऊपर खर्च करके अपने आपको कीमती बना ले। जब ये इन्सान अपने आपको कीमती बना लेगा तो अल्लाह जल्ला शानुहू इस पर दुनियॉ मे भी रहमतों की बारिश बरसायेगें, कामयाबियों के दरवाजे खोलेगें और जब ये मर जायेगा तो इसकी कीमत के एतबार से जितना इसने अपने आपको कीमती बनाया होगा उसके लिहाज से जन्नत के दर्जे अता फरमायेगें। उसकी अपनी कीमत के एतबार से कि उसके अन्दर की क्या कीमत है, सातो जमीन व आसमान से दस गुने से ज्यादा लेकर लाखो और करोड़ो गुना तक इनामात अता फरमायेगें।

मेरे अज़ीज़ो और दोस्तों ! इन्सान की मेहनत पर दो चीजें बनती हैं एक चीज बाहर बनती है और एक चीज अन्दर बनती है, बाहर सड़के, सवारियॉ, मकान, कपड़े, खाने वगैरह की तमाम शक्लें बनती हैं और अन्दर यकीन, नियत, इल्म और जहल, जिक्र या गफलत, एख्लाक या बदएख्लाकी, नूर या जुल्मत। अब या तो ये किसी से मुहब्बत करने वाला बनता है या अदावत करने वाला, या तो ये किसी पर यकीन करने वाला बनता है या यकीन ना करने वाला तो मेहनत से बाहर चीजों की शक्लें बनती हैं और यकीन की, नियत की, इल्म की, भरोसे की, जहल की, गफलत की, अदावत की शक्लें बनेगी अन्दर। जो शक्लें बाहर बन रही है ये शक्लें चाहे वजीर के हाथों मे हों, चाहे सरमायेदारों के हाथों मे या चाहे गरीब के हाथों मे, इन्सान इन शक्लों को हर जगह अपने साथ नही ले जा सकता अगर आप लाहौर जाये तो आपने बीस, तीस या पचास सालों की मेहनत से जो दुकान, कोठी, बागीचे बनाये हैं इन्हे आप अपने साथ लेकर नही जा सकते, ये शक्लें आप कराची या मुलतान नही ले जा सकते। ये बाहर का सब बना हुआ यहीं छोड़कर जाना पड़ेगा, हॉ नकदी साथ ले जाओगे अगर तुम इस मुल्क से किसी दूसरे मुल्क मे जाओगे तो सारी नकदी भी साथ नही ले जा सकते, हुकूमत जितनी इजाजत देगी वो नकदी साथ ले जाओगे बाकी सारी यहीं छोड़कर जाना पड़ेगा फिर इन्सान जब इस दुनियॉ से आखिरत मे जाता है तो बाहर का सौ फीसद छूट जाता है कपड़े और ऐनक तक सब छूट जाते हैं। जो इन्सान अपने ऊपर मेहनत ना करके चीजों को मेहनत का मैदान बनाता है तो उसकी ये मेहनत दुनियॉ मे नाकामी के साथ हमेशा की दोजख मे पहुॅचा देती है और अपने ऊपर मेहनत करने से दुनियॉ की कामयाबियों के साथ खुदा से हमेशा की जन्नत का फैसला करा लेता है।

मेरे प्यारे दोस्तों ! इन्सान के अन्दर जो बनता है ये इन्सान चौबीस घन्टे जहॉ जाता है अपने साथ लेकर जाता है अगर पाखानों मे जाओगे तो अन्दर का बना हुआ तुम्हारे साथ जायेगा, चारपाई पर लेटने के वक्त, दस्तरख्वान पर खाते वक्त, मस्जिद मे जाने पर जो कुछ अन्दर का बना हुआ है तुम्हारे साथ जायेगा। चाहे कराची जाओ या लाहौर, अमरीका जाओ या रूस ये सब तुम्हार साथ जायेगा, अन्दर का बना हुआ हमेशा साथ चलता है और बाहर का बना हुआ हमेशा साथ नही चलता है, दुनियॉ से जब ये आखिरत मे मुन्तकिल होगा तो अन्दर के बने हुए को सौ फीसद साथ ले जाता है। इसलिये अगर अन्दर वो बना जिसके बनाने के लिये खुदा ने दुनियॉ मे भेजा है और जिसके बनाने के लिये खुदा ने मेहनत की दौलत अता फरमायी है तो ये दुनियॉ के

चाहे जिस इलाके मे फिरे, दुनियॉ के किसी भी मुल्क मे जाये, जिस सवारी पर चाहे सवार हो जाये चाहे गधे पर बैठे या कार मे, चाहे कोठियों मे लेटे या चटनी रोटी खाये, ये जिस रास्ते से, जिस लाईन से और जिस शक्ल से गुजर जायेगा कामयाब हो जायेगा और अगर खुदा न ख्वास्ता अन्दर वो बना जिस पर खुदा पकड़ फरमाता है, अन्दर वो मुहब्बत बनी जिस पर खुदा मुसीबतें डालते हैं, वो यकीन बना जिस पर खुदा जिन्दगी बिगाड़ते हैं और वो इल्म बना जिसको खुदा जहल करार देते हैं या वो ध्यान बना जिसको खुदा गफलत कहते हैं तो ये इन्सान दुनियॉ के जिस इलाके मे फिरेगा, दुनियॉ के किसी भी मुल्क मे चला जाये, हवाई जहाज सवार हो जाये, चाहे महलों मे रहे पर जलील होगा, खौफजदा होगा, परेशान हाल होगा, ये जिस रास्ते से और जिस शक्ल से गुजरेगा नाकाम हो जायेगा। इसको शक्ले तो बनी हुई मिल जायेगीं लेकिन कामयाबी नसीब नही होगी और जब मरेगा तो खुदा अन्दर का बना हुआ इसे दिखायेगें, कहा जायेगा कि जो यकीन बनाकर लाये हो ये तो दोजख वाला यकीन है ये जन्नत मे नही ले जाता।

कहॉ है अल्लाह का यकीन और कहॉ है रसूलुल्लाह सल्ल0 की मुहब्बत, ये यकीन और मुहब्बत दिल मे दिखाओ कहॉ है इसलिये कि यकीन और मुहब्बत की जगह दिल है जुबान नही, जुबान इज्हार की जगह है यकीन की नही। जुबान ईमान का इज्हार करती है ये जुबान ईमान की जगह नही है, ईमान की जगह तो दिल है कि यकीन, मुहब्बत, भरोसा, ये दिल मे होता है जुबान उसका का इज्हार करती है, ये जुबान तो ऐसी मुनाफिक है कि जो दिल मे होता है उसे भी बोलती है और दिल के खिलाफ भी बोलती है जैसे कोई आदमी आपसे मिलने आया और आपको गुस्सा आया कि बेमौके आ गया कि रोटी खाकर बेगम को बुला रखा था सोने के लिये और ये बेमौके आकर बैठ गया कि तबीयत मे खूब नागवारी पर जुबान से कह रहा है आपके आने से दिल खुश हो गया तो जुबान वो भी बोलती है जो दिल मे हो और वो भी बोलती है जो दिल मे ना हो।

इन्सान अपनी जुबान से ही धोखा खाता है, कयामत के दिन जुबान से वही निकलेगा जो दिल मे होगा जो दिल मे नही होगा वो जुबान से नही निकलेगा, इसलिये तहकीक करने वाले उलेमा ने और तफसीर लिखने वालों ने ये लिखा है कि दुनियॉ मे किसी ने चाहे जितना कुरआन हिफज किया हो और सारा याद हो, बे अटके पढ़ने वाला हो लेकिन कयामत मे जब कुरआन पढ़ने का वक्त आयेगा कि पढ़ और जन्नत के दर्जो मे चढ़, चढ़ता चला जा और पढ़ता चला जा तो फरमाया जितना कुरआन पर अमल होगा जुबान पर उतना ही आयेगा, अमल मे नही होगा तो कुरआन नही पढ़ पायेगा। वहॉ तो जो यकीन व अमल मे होगा वही जुबान पर आयेगा।

इसलिये मेरे अज़ीज़ों और दोस्तों ! अल्लाह जल्ला शानुहू ने मेहनत की दौलत अता फरमायी है और मस्जिदों के अन्दर से आवाज लगवायी कि अपने अपने नक्शों से निकल कर यहॉ आओ, अभी तुम्हारे पास वक्त मौजूद है ऑख बन्द हो जायेगी तो मेहनत करने का वक्त जाता रहेगा, इसलिये मेहनत करके अपनी बुनियादों को इस वक्त ठीक कर लो वरना मौत के वक्त ये हरकत बन्द हो जायेगी। कुरआन मे है फिर ऐसे लोग ये कहेगें,

رَبَّنَا أَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا فَارْجِعْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا إِنَّا مُوقِنُونَ

ऐ रब ! हमने देख लिया, सुन लिया, अब सब हमारी समझ मे आ गया, अब आप हमे दुनियॉ मे वापस भेज दीजिये हम अच्छे अमल करके आयेगें। (सूरह सज्दा 12)

तो गोया आखिरत अमल करने की जगह नही है जैसे मॉ का पेट कमाई करने की जगह नही है बल्कि कमाने की जगह दुनियॉ है, मॉ का पेट हलवा खाने की, गुलाब जामुन खाने की और चाय पीने की जगह नही है। इसलिये अमल पर मेहनत का मैदान ये दुनियॉ है, जब आदमी मर जायेगा तो आखिरत मे अमल का मैदान नही रहेगा मेहनत का मैदान खत्म हो जायेगा, आज अपनी मेहनत से हम जैसे बनेगें आखिरत मे वैसा मामला किया

जायेगा, खराब बन गये तो दोजख और अच्छे बन गये तो जन्नत। इसके लिये मस्जिदें बनवायीं और आवाज लगवायी कि देखो ये चीजें

اللّٰہُ اَکۡبَرُ اللّٰہُ اَکۡبَرُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللّٰہِ

तुम्हे अपने अन्दर पैदा करनी हैं अगर तुम अपने को कीमती और कामयाब बनाना चाहते हो तो अपने अन्दर ये चीजें पैदा करो, अपनी अपनी जुबानों से धोखा मत खाओ, जुबान से कलिमा बोलो तो उसके खिलाफ मत करो क्यों किये कलिमाा तुम्हारे दिल मे देखा जायेगा, है या नही। इसमे सबसे पहली बात اللّٰہُ اَکۡبَرُ जमीन, आसमान, हवा, पानी, आग, पहाड़ ये जितनी छोटी बड़ी शक्लें हैं इन सबसे अल्लाह बहुत बड़े हैं,

अगर खुदा एक दिन के लिये कौमे आद जैसी हवा को मश्रिक से मग्रिब तक तेज चला दे या आधा दिन तो मूसा अलै0 व ईसा अलै0 से लेकर आज तक जितना बना हुआ है सब फना हो जाये। तुम्हारे हाथों की शक्लें हवा के सामने कुछ नही और हवा खुदा के सामने कुछ नही।

ये आग अगर मश्रिक से मग्रिब तक लगा दी जाये ये जितनी शक्लें बनी हुई है एक दिन की ताब ना ला सके सब जलकर राख हो जाये। तुम्हारे हाथों की बनी हुई ये शक्लें आग के सामने कुछ नही और आग खुदा के खजाने की आग के सामने कुछ नही।

ये पूरी जमीन अगर खुदा इसे हिला दे जामुन की तरह जैसे तुम जामुन को नरम करने लिये बर्तन मे डालकर हिलाते हो अगर कुछ मिनटों के लिय हिला दे तो तुम्हारे हाथों की बनी हुई ये सारी शक्लें जमीन के अन्दर मिलकर खत्म हो जाये।

अगर ये कायनाती खजानों का सारा पानी तूफाने नूह की तरह सारी दुनियॉ मे भर दिया जाये तो तुम्हारे हाथों का जो कुछ

बना हुआ है एक दिन की ताब नही ला सकता, ये सारा टूटकर खत्म हो जायेगा। तुम्हारे हाथों का ये बना हुआ पानी के सामने कुछ नही और पानी खुदा के खजानों के पानी के सामने कुछ नही। अल्लाह बहुत बड़े हैं इसलिये अल्लाह की बड़ाई की तहकीक करो, कुरआन व हदीस मे अल्लाह जैसे बड़े हैं वैसी बड़ाई दिलों मे उतारो, अपने अन्दर ये यकीन पैदा करो कि जैसे वो पैदा करने मे बड़े हैं वैसे ही देने मे बड़े हैं,

वैसे ही पालने मे बड़े हैं, वैसे ही हिफाजत करने मे बड़े हैं,

वैसे ही पकड़ने मे बड़ हैं, वैसे ही जलील करने मे बड़े हैं, अल्लाह की बड़ाई को खाली اللّٰہُ اَکۡبَرُ कहकर तुम नही जान और समझ सकते, उनकी बड़ाई को कुरआन व हदीस मे बैठकर सुनो।

दो की बड़ाई एक दिल मे जमा नही हो सकती अल्लाह जल्ला शानुहू अपनी बड़ाई उस वक्त तक दिल मे नही डालेगें जब तक मख्लूक की बड़ाई दिल से ना निकल जाये। इसके लिये सबस पहले

मुल्क व माल,

जमीन व आसमान,

राकेट और एटमियात,

दुनियॉ भर के कारखाने और मिलें,

दुनियॉ भर का सोना और चॉदी,

दुनियॉ भर का लोहा और पीतल,

इन सबकी बड़ाई दिल से निकालो और खुदा की बड़ाई बोल बोलकर और सुन सुनकर अपने दिलों मे उतार लो, मरने से पहले पहले मख्लूकात की बड़ाई को दिल से निकाल कर खुदा की बड़ाई को अपने दिलों मे उतार

लो अगर मख्लूकात की बड़ाई को लेकर मरे तो मुसीबतों मे घिर जाओगें और वो पिटाई होगी कि अल अमान वल हफीज।

खुदा की बड़ाई को अपने दिलों मे यूँ जमाओ कि जितना कुछ आसमान व जमीन मे है इनसे कुछ नही होता, अल्लाह माबूद हैं, अल्लाह मकसूद हैं, अल्लाह मत्लूब हैं, अल्लाह इज्जत देने वाले हैं, अल्लाह मख्लूकात के बगैर जो कुछ चाहें अपनी कुदरत से कर दें और मख्लूकात से अल्लाह के बगैर कुछ नही होगा। बनी हुई चीजों स कुछ भी ना होने को दिल मे उतार लो कि जमीन व आसमान, मश्रिक से मग्रिब तक और खुद अपनी मेहनत का यकीन निकाल कर कि

मेरी मेहनत से भी कुछ नही होगा खुदा के बगैर और खुदा से सब कुछ होता है अपने गैर के बगैर,

दुनियॉ की चीजों से कुछ नही होता खुदा के बगैर और खुदा से सब कुछ होता है दुनियॉ की चीजों के बगैर।

अल्लाह को किसी और चीज की जरूरत नही है वो जो कुछ करता है अपनी कुदरत से करता है, इस दुनियॉ मे जितनी शक्लें हमने बना रखी है ये सारी शक्लें खुदा की मोहताज है इस यकीन को दिल मे बिठा लो, अब दो एतबार से हम सब अन्धे हैं एक खुदा से होता हमे नजर नही रहा है और दूसरा खुदा के गैर से ना होना नजर नही रहा है। दुनियॉ मे जितने भी इन्सान हैं चाहे हाकिम हो या महकूम,

चाहे मालदार हो या गरीब,

मौलाना साहब हो या आवाम,

इन दो बातों के एतबार से सब अन्धे हैं, इन्सान खुदा की जात के एतबार से अन्धा है, खुदा से होना अपने आप इसे नजर नही आता पर जमीनों के एतबार से, माल के एतबार से, सोने चॉदी के एतबार से और लोहे पीतल के एतबार से इसे होता हुआ नजर आ रहा है। अब अगर खुदा की बड़ाई को दिल मे उतारना है और अल्लाह से अपनी जिन्दगियों को बनवाना है तो जब हमे अल्लाह नजर नही आ रहा फिर हम उसके एतबार से खुद कैसे इस्तेमाल होगें ? दिखने वाली चीज के लिये तो हम खुद इस्तेमाल हो जायेगें, जो दिखलायी देता है वो हमे खुद इस्तेमाल कर लेता है कि माल दिखलायी दे रहा है उसके इस्तेमाल का तरीका हम खुद तज्वीज कर लेते है और वो खुदा जिससे सब कुछ हो रहा है पर दिखलायी नही दे रहा है तो खुद बताओ ! उससे फायदा हासिल करने के एतबार से हम क्या तरीका अख्तियार करेगें ? अब क्या करना होगा ?

अन्धे की तर्कीब ये है कि जिसको दिखलायी दे रहा है उसकी आवाज पर हरकत करने वाला बन जाये ये अन्धे को कामयाब करने वाली बात है अगर अन्धा अपने अन्धे पन के की साथ चल दे तो या ये कहीं मोटर से लड़कर मर जायेगा या किसी खम्भे से सर फोड़ लेगा या तिरयाक की जगह जहर खा जायेगा। ये नाबीना हाथ से टटोल कर अपने खाने पीने की चीजों को

तो पा लेगा लेकिन अपने हालात का हल ये अपने अन्धेपन से नही कर सकता इसके लिये इसे किसी बीना की जरूरत पड़गी तो आवाज लगवायी जा रही है कि सारी दुनियॉ के इन्सान नाबीना हैं और बीना مُحَمَّدًا رَسُولُ اللّٰهِ है।

खुदा ने इन्हे आसमानों पर बुलाया,

अपनी जात को खुदा ने उन्हे दिखलाया,

अच्छे बुरे आमाल का नफा नुकसान दिखलाया,

तो खुदा ने गैब के एतबार से مُحَمَّدًا رَسُولُ اللّٰہِ को बीना बनाया है, हुजूर सल्ल0 ने खुदा की जात को देखा, जन्नत दोजख को देखा इस एतबार से सारे इन्सान अन्धे हैं, मस्जिदों से ये आवाज लगवायी जा रही है अगर जिन्दगी की बुनियाद कामयाबी की चाहते हो तो तीन चीजे अपने अन्दर मेहनत करके बनाओ,

1 गैर से ना होना और खुदा से होना दिल मे उतार लो,

2 गैर का छोटा होना और खुदा का बड़ा होना दिल मे उतार लो,

3 सबका अन्धा होना और मुहम्मद सल्ल0 का बीना होना दिल मे उतार लो,

अब सब मुहम्मद सल्ल0 की आवाज पर इस्तेमाल होने की मेहनत करो लेकिन सबसे पहले इस्तेमाल होने का तरीका सीखो,

कमाना बाद मे सीखो पहले मुहम्मद सल्ल0 की आवाज पर कमाने मे इस्तेमाल होने का तरीका सीखो,

तिजारत बाद मे करो पहले मुहम्मद सल्ल0 की आवाज पर तिजारत मे इस्तेमाल होने का तरीका सीखो,

घर बाद मे बनाओ पहले मुहम्मद सल्ल0 की आवाज पर घर की जिन्दगी मे इस्तेमाल होने का तरीका सीखो,

मुहम्मद सल्ल0 की आवाज पर पहले खड़ा होना, बैठना, बोलना, चलना और सुनना सीखो, जिस तरह वो कहे उस तरह झुक जाओ, जो बोलने को कहे उसे बोलो जो बोलने को मना करे उसे ना बोलो, जो देखने को कहे उसे देखो और जो देखने को मना करे उसे ना देखो, यहॉ तक दिल मे ये यकीन पैदा कर लो कि मैं तो अन्धा हूॅ मझे अपनी कामयाबी का रास्ता दिखलायी नही देता जिस तरह मुहम्मद सल्ल0 ने बतलाया हैं हमे अपने जिस्म को उसी तरह इस्तेमाल करना है बस वैसे ही इस्तेमाल होने मे कामयाबी है। आज मुझे जो माल मे कामयाबियॉ दिखलयी दे रही हैं ये हमारा अन्धापन है मुझे गलत दिखायी दे रहा ह कि एक कमजोर निगाह का आदमी बाहर से आकर कह रहा है ये मस्जिद हिल रही है तो लोगों ने कहा मियॉ मस्जिद नही हिल रही है बल्कि आप हिल रहे हैं या यूॅ कहे कि मस्जिद मे तो एक मीनार था आज दो मीनार कैसे हो गये तो लोगों ने कहा मियॉ मीनार दो नही है बल्कि आपकी ऑख मे खराबी है आप मे अन्धापन आ गया है। ये मस्जिदें इसीलिये बनी हैं कि इनके हिसाब से वक्त निकाला जाये, तुम सारी उम्र सिर्फ اللّٰہُ اَکۡبَرُ कहते रहो पर अल्लाह की बड़ाई दिल मे नही बैठेगी। अल्लाह की बड़ाई दिल मे तब बैठेगी जब अल्लाह की बड़ाई का कुरआन सुनोगे और पहला कुरआनاللّٰہُ اَکۡبَرُ का आया है, सबसे पहला कुरआन لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللّٰہُ की गवाही देने का आया है और सबसे पहला कुरआनمُحَمَّدًا رَسُولُ اللّٰہِ की गवाही देने का आया है, सबसे पहला कुरआन इन्ही बातों का आया है।

एक बड़ाई वो ह जिसको जानते हो कि सबसे बड़ा बेटा, सबसे बड़ा पत्थर, सबसे बड़ा आदमी और सबसे बड़ी कोठी, इस किस्म के बहुत से اَکۡبَر दुनियॉ मे बोले जा रहे हैं, इस اَکۡبَر को देखकर, सुनकर और समझकर बोल रहे हो और اَکۡبَر को बगैर देखे, बगैर जाने और बगैर समझे बोल रहे हो। जैसे एक बहुत बड़ा डाक्टर जिस तरह कहे उस तरह कर लो कि ये खाना और ये ना खाना, ये पीना और ये ना पीना, चूॅकि ये बहुत बड़े डाक्टर हैं उन्होने ये परहेज बतलाया है इसलिये सब उसके कहने पर चल रहे हैं पर अल्लाह को बड़ा कहने वाले रात दिन क्या कर रहे हैं ? अल्लाह ने कहा सूद मत खाना वरना मुसीबत मे फस जाओगे, झूठ बोलकर ना खाना, रिश्वत लेकर ना खाना, ये अल्लाह को बड़ा कहने वाले ना झूठ छोड़ें, ना सूद छोड़ें, ना रिश्वत छोड़ें اللّٰہُ को भी اَکۡبَر कहते हैं और डाक्टर को भी اَکۡبَر कहते हैं पर मजाल क्या है कि डाक्टर ने जिन चीजों को छोड़ने के लिये कहा है उसे कर लें या उसने जो करने के लिये कहा है उसे ना करें, जिन चीजों को खाने से

डाक्टर ने मना किया है उसे खा लें और जिन चीजों को खाने के लिये कहा है उसे ना खाये। आज है कोई मुसलमान दुनियॉ मे जो खुदा की मना की हुई चीजों से रूकता हो और खुदा ने जिन कामों को करने के लिये कहा हो उसे करता हो ?

आज मुसलमान बहुत बड़ा डाक्टर जानता है,

बहुत बड़ा वजीर जानता है,

बहुत बड़ा साइंसदा जानता है,

बहुत बड़ी बन्दूक जानता है,

लेकिन खुदा को ये बेवकूफ बड़ा नही जानता कि आज मुसलमान हर जिन्स के बड़े को जानता है पर हर जिन्स के बनाने वाले अल्लाह को नही जानता और ना जानने की वजह ये है कि इसने खुदा की बड़ाई को दिल मे उतारने के लिये कोई मेहनत ही नही की है। खुदा के गैर की बड़ाई को दिल मे उतारने की इसने मेहनत की कि उनके पास गया, उनके पास उठा बैठा, उनकी लाईन की किताबें पढ़ी, उनकी लाईन की चीजों को मालूम किया लेकिन

अल्लाह की लाईन की चीजों पर कितनी मेहनत की ?

अल्लाह का यकीन दिल मे पैदा करने के लिये कितनी मेहनत की ?

अल्लाह का यकीन दिल मे पैदा करने के लिये कितने हाथ पैर चलाये ?

खुदा की मालूमात करने मे कितना वक्त लगाया ?

खुदा की बड़ाई को कितना बोला ?

खुदा की बड़ाई को कितना समझा ?

खुदा के गैर का कितना इन्कार किया ?

अम्बिया अलै0 ने अपनी जिन्दगी को अल्लाह के गैर के इन्कार لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللّٰهُ को बोल बोलकर गुजारा है और मुहम्मद सल्ल0 की जिन्दगी इसी मे गुजर गयी लेकिन आज मुसलमान अपनी फूटी जुबान से भी अल्लाह के गैर का इन्कार नही करता कि इन शक्लों और चीजों से कुछ नही होता अल्लाह से होता है, सब कुछ अल्लाह कर रहे है,

لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللّٰهُ बोलने मे हमारी जुबाने गूंगी है,

لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللّٰهُ को सुनने से हमारे कान बहरे हैं,

لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللّٰهُ पर गौर करने से हमारी अक्लें आजिज है,

हम पूरे तौर पर अन्धे बन चुके है ये मस्जिदें इसीलिये बनी थी ताकि इनकी तर्तीब कायम हो और इनकी तर्तीब कायम होगी जान की मेहनत से, इसलिये अल्लाह के गैर का इन्कार करने की सबसे पहले दावत दी गयी है لَا إِلَٰهَ ये दावत जो मैं कह रहा हूँ अल्लाह के गैर से ना होने إِلَّا اللّٰهُ अल्लाह से होन की दावत फिर مُحَمَّدًا رَسُولُ اللّٰهِ मुहम्मद सल्ल0 की हर बात से होने की दावत कि मुहम्मद सल्ल0 ने जो फरमाया है अगर उसको तोड़ा तो नाकाम और अगर उसको किया तो कामयाब। कामयाबी तब मिलेगी जब हम इसकी दावत देगें कि मुल्क व माल के नक्शों से कुछ नही होगा ये सब धोखा है जब मरोगे तो धोखा खुल जायेगा कि अरे ! इससे तो कुछ होता ही नही।

किसी इलाके मे जब एक जलजला आता है या एक सैलाब आता है तो धोखा खुल जाता है, ये तो तुम्हारा धोखा है कि इन चीजों के अन्दर तुम्हे कामयाबी दिख रही है, कामयाबी इसमे नही है बल्कि कामयाबी

"हयया लस्सलाह" और "हयया लल्फलाह"

के तरीके पर जिन्दगी गुजारने मे है और इसके लिये नमाज है कि नमाज सीख ले और कामयाबी ले ले और कान खेलकर सुन लो,

कामयाबी किसी कोठी,

कामयाबी किसी दुकान,

कामयाबी किसी कारखाने और किसी जमीदारे मे नही है, जब ऑख खुलेगी तब पछताओगे इसलिये मरने से पहले पहले इस बात को दिल मे उतार लो कि मुल्क व माल के चीथड़ों मे कामयाबी नही है बल्कि खुदा ने कामयाबी मुहम्मद सल्ल0 वाले अमलों मे ही रखी है। मरने से पहले पहले तुम्हारे दिल पर ये राज खुल जाये क्यों कि जब मरत ही तू कब्र मे जायेगा तो पहला सवाल ये होगा बता तेरा पालने वाला कौन है ? अगर तूने इस पर मेहनत की थी कि दुकान से पलता हूँ, पैसे से पलता हूँ, अपनी मेहनत से पलता हूँ तो कब्र मे तू ये ना कह सकेगा कि मेरा रब खुदा है। जो दिल मे नही वो जुबान पर नही आयेगा, तू चाहे रोजाना एक करोड़ मर्तबा اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ पढ़ ले अगर दिल मे दुकान से पलने का यकीन जमा है

तो तेरा اَللّٰهُ اَكْبَرُ पढ़ना मोतबर नही है, इसलिये कि इन्सान जिसको पालने वाला समझता है उसके खिलाफ कोई काम नही करता, पालने वाले के खिलाफ कोई काम करने के माने ये हैं कि हमने उसे जुबान से पालने वाला कहा हैं दिल उसे पालने वाला यकीन नही करता तो पहला सवाल होगा तेरा पालने वाला कौन है ? दुकान जाती रहेगी, खेती जाती रहेगी, पैसा हाथ से जाता रहेगा अगर तेरे दिल के अन्दर اَللّٰهُ اَكْبَرُ नहो है बल्कि दिल के अन्दर ये है कि मेरी मेहनत से माल मिलता है, माल से चीजें मिलती हैं और चीजों से जिन्दगी बनती है तो खुदा की कसम ! ऐसा आदमी कब्र मे ये नही कह सकता कि मेरा रब अल्लाह है।

दूसरा सवाल होगा तेरा दीन क्या है (परवरिश का तरीका क्या है) ? पलने के लिये कौन सा तरीका अख्तियार किया अगर पलने के लिये मुहम्मद सल्ल0 के अमलों को अख्तियार किया था तो कह देगा मेरे पलने का तरीका इस्लाम है और अगर दुनियॉ ंके नक्शों से पलना दिखलायी देता रहा तो कोई आदमी ये ना कह सकेगा कि मेरे पलने का तरीका इस्लाम है फिर (हुजूर सल्ल0 को दिखलाकर) पूछेंगें कि इनको पहचानते हो ? जिसने हुजूर सल्ल0 के अमलो के रास्ते से कमाई ना की होगी, हुजूर सल्ल0 के अमलो के वाली शादी ना की होगी, जिसका हुजूर सल्ल0 जेसा घर, लिबास और खाना पीना ना होगा वो कब्र मे हुजूर सल्ल0 को ना पहचान पायेगा फिर एक आवाज आयेगी इसके लिये आग का बिस्तर बिझा दो और आग के कपड़े पहनाकर दोजख की खिड़की खोल दो, कब्र मे बस यही तीन सवाल हैं। इन तीन सवालो के जवाब के लिये तीन मेहनते करनी पड़ेगी, मेहनत इस बात पर है कि खुदा पालता है हुजूर सल्ल0 के अमलो का अख्तियार करने पर, इसलिये ये बात जुबान पर चढ़ जाये कि खुदा पालने वाला है जब हम हुजूर सल्ल0 अमलो को अख्तियार करते हुए खुदा के सामने हाथ उठायेगें तो खुदा पालेगें बस इसके लिये नमाज पर मेहनत कर लो। हुजूर सल्ल0 के तरीके पर नमाज का अमल सीख लो, इसके लिये सबसे पहले नमाज से परवरिश लेने की दावत दो फिर इल्म के हल्को मे, फजायल के मुजाकरो मे, मसाएल के सीखने सिखाने मे, दुआओं मे, कुरआन मे अपने को लगा कर इन पर मेहनत करो।

यही चीजे हमारी घर बाहर की मेहनत का मैदान हों। यही हमारा बाजार का नारा है, यही हमारा हाकिमों के पास जाने का नारा है कि कामयाबी के लिये नमाज है बस मुहम्मद सल्ल0 जैसी नमाज बना लो तो खुदा

कामयाबी के दरवाजे खेलेगें, कामयाबी लेने के लिये अपनी नमाज को पॉच बातों पर ले आओ तो नमाज मकबूल हो जायेगी,

1 कलिमे वाले यकीन पर कमाओ,

2 हुजूर सल्ल0 वाले अमलो पर कमाओ,

3 फजाएल वाले शौक और मसाएल वाले तरीके पर कमाओ,

4 अल्लाह के ध्यान के साथ कमाओ,

5 एख्लास वाली नियत के साथ कमाओ,

जब इन पॉच बातों पर कमाई आ जायेगी तो नमाज कुबूल हो जायेगी, कलिमे वाला यकीन ये है कि इन शक्लों से पैसा नही मिलता बल्कि खुदा के देने से पैसा मिलता है, खुदा बहुत कुछ देगा जब मुहम्मद सल्ल0 वाले अमलों को कमाई मे अख्तियार किया जायेगा फिर यही कमाई तुम्हे जन्नत मे पहॅुचायेगी। घर की जिन्दगी भी इन्ही पॉच बातों पर ले आओ तो ये जिन्दगी तुम्हे जन्नत मे पहॅुचायेगी अगर तुम्हारी मुआशरत और आपस का मेल जोल इन्ही पॉच बातों पर आ गया तो ये तुम्हे जन्नत मे पहॅुचायेगा, इन पॉच अपने अन्दर पैदा करने के लिये वक्त निकालना और इनकी मेहनत का मैदान कायम करना। इसके लिये इसकी दावत देना, दावत देने का माहौल बनाना इसके लिये मस्जिदों लोगों को इक्टठा करना, हुजूर सल्ल0 ने अपनी मस्जिद मे कलिमे नमाज पर मेहनत की ये तर्तीब चलायी थी अगर हम अपनी मस्जिदों मे बैठकर ईमान की मज्लिस, इल्म के हल्के चलायेगें तो कलिमे नमाज के फजायल खुल जायेगें फिर नमाज के बाहर के जितने शोबे हैं उन शोबों म हुजूर सल्ल0 वाले अमल चलने लगेगें फिर हुकूमत करके भी जन्नत मे पायेगें और अगर बाहर के शोबे हुजूर सल्ल0 वाले अमल पर ना आये तो महकूमियत मे भी दोजख मे जायेगें, मालदारी मे भी दोजख मे जायेगें और फकीरी मे भी दोजख मे जायेगें।

कामयाबी की गारंटी हुज्र सल्ल0 वाले अमल पर है अगर मस्जिद मे हुजूर सल्ल0 वाले अमलों मे कामयाबी के यकीन को सीखने सिखलाने का माहौल बने फिर अल्लाह जितना शरेह सद्र करता रहे अपने अपने शोबों को धीरे धीरे इस यकीन पर लाओ, नमाज और दुआओं मे यकीन को बढ़ाते रहो। एकदम से सारे तरीके नही बदला करते पर मेहनत एकदम से शुरू की जाती है, खेती की मेहनत आदमी एकदम से शुरू करता है लेकिन खेती धीरे धीरे होती है इसी तरह कोठी की मेहनत आदमी

एकदम से शुरू करता है लेकिन कोठी धीरे धीरे बनती है बस मेहनत शुरू कर दी जाये। इसीलिये तब्लीग मे अपनी मेहनत की थोड़ी सी तर्बियत करनी है कि कलिमे नमाज की मेहनत का मस्जिद मे माहौल बन जाये इसके लिये हिम्मत करके एक बार तीन चिल्ले दे दो फिर साल का चिल्ला देते रहो, हर महीने तीन दिन के लिये निकलते रहो और हफते के दो गश्त करते रहो। अपनी मस्जिद मे ईमान की दावत का, तालीम, तस्बीह और नफिलों का एक माहौल बना लो अगर सारे मुसलमानो ने मिलकर इतना कर लिया तो हुजूर सल्ल0 के जमाने का दीन जिन्दा हो जायेगा।

एक बात खूब समझ लो जिस दिन ख्वाब देखने वाली ये ऑख बन्द हो गयी तो दोबारा ना खुलेगी फिर हमेशा के लिये जागने वाली ऑख खुल जायेगी, आज ख्वाब देखने वाली ऑख से जो तुम्हे नजर आ रहा है इसका कोई एतबार नही जब जागने वाली ऑख खुल जायेगी तो बहुत पछताना पड़ेगा अगर अपनी जिन्दगी के शोबों मे हुजूर सल्ल0 वाले अमलों को मकसद बनाकर चल रहे हो तो मुबारक हो और अगर उन्हे नजर अन्दाज करके चल रहे हो तो कमाईयॉ हराम हैं फिर खून के ऑसू रोना पड़ेगा। इसी तरह घर की जिन्दगी मे अगर हुजूर

सल्ल0 वाले अमलों को नजर अन्दाज करके चल रहे हो और बीबी या बच्चों को एक भी हराम लुक्मा खिलाया तो खुदा उस पर पकड़ेगें कि इन्हे ये सूअर क्यों खिलाया ? और सूद तो सूअर से ज्यादा सख्त है इसलिये कि उलेमा किराम ने लिखा है शरीयत के खिलाफ जो कमाना होगा वो सूद के हुक्म मे है। तो अगर आपके घर वाली जिन्दगी सूद पर चल रही है, हुजूर सल्ल0 वाले अमलों को नजर अन्दाज करके चल रहे है तो मियॉ एक मिनट देरी करने की गुंजाइश नही है बस तौबा करके, अपने यकीन को ठीक करने और अपनी कमाइयों व घर मे हुजूर सल्ल0 वाले अमलों को सीखने निकलो।

अपनी कमाई को हुजूर सल्ल0 वाले अमलों पर कैसे लायें ?

आज यहूद, नसारा और मुश्रिकों के तरीको को तो हम ले आये कि जिन्होन हमे जिब्ह किया, हमारे टुकड़े किये और चौदह सौ साल से जो हमे पीस रहे हैं आज अपनी जान व माल को हम उन्ही के तरीको पर खर्च कर रहे हैं। अपनी जिनदिगयों को हमने आज यहॉ तक पहुॅचा दिया है कि हमे अपने बच्चे उन्ही के लिबास मे अच्छे लगते हैं हुजूर सल्ल0 और सहाबा के लिबास मे बच्चे अच्छे नही लगते, खाने उनके अच्छे लगते हैं हुजूर सल्ल0 वाले खाने अच्छे नही लगते, मकान उनके अच्छे लगते हैं हुजूर सल्ल0 जैसा मकान अच्छा नही लगता। अब इस तश्कील को सीखो कि हम किस तरह यहूद और नसारा के तरीकों से हटकर हुज्र सल्ल0 और सहाबा के तरीके पर आ जायें, आज तो हमारी हालत ये है कि बीबी, बच्चे, कारोबार, मकान, इन सबके अन्दर और बाहर यहूद और नसारा के तरीके हैं, हम उनको देख देखकर चल रहे हैं। हम एक बार भी ऑख उठाकर नही देखते कि हुजूर सल्ल0 का मकान कैसा था ? आपका खाना क्या और कैसा होता था ? आपका और आपके बच्चों का लिबास कैसा था ? कभी इसका तसव्वुर भी नही करते कि हुजूर सल्ल0 ने दस ब्याह किये वैसी एक शादी हम भी कर लें। हमने तो यहूद और नसारा को अपना इमाम बनाया हुआ है हमने हुजूर सल्ल0 को अपना मुक्तदा नहो बनाया, हमने उस अन्धे यहूद को अपना इमाम बना रखा है जो चौदह सौ साल से हमे जिब्ह कर रहा हैं, नमाजी और बे नमाजियों ने अपना मुक्तदा और इमाम बना रखा है नसारा को।

आज हमारे अन्दर इब्राहिमी जौक नही है आजरी जौक है,

मूसवी जौक नही है फिऔनी जौक है,

मह़म्मदी जौक नही है कारूनी जौक है,

तो भाई ! अगर यही अच्छा लगता है तो आपको मुबारक हो, चलिये आप मरने के बाद देखियेगा कि क्या होगा ? अगर आपको यही अच्छा लगता है और इसी पर आप चलना चाहते हैं जिस पर आप अभी चल रहे हैं तो तीन चिल्ले क्या, हम आपसे एक दिन भी नही चाहिए और अगर आप उससे मुड़ना चाहते हो जिस पर आप अभी चल रहे हैं कि हम बड़े गलत फंस गये और अपने हाथों से हमने अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारी है, ये सब हमने खुद किया है तो अब हम अपने रूख को कैसे फेरें ? तो सबसे पहले अपने से मुजाहिदा करने की आदत डालिये इसके लिये सबसे पहले कलिमे की दावत देना सीखिये, कलिमे नमाज का इल्म सीखिये, तालीम के हल्को मे बैठना सीखिये तो कम से कम मस्जिद वाली जिन्दगी की मश्क कीजिये। इस जिन्दगी को सीखते हुए इस मेहनत को मुहल्ले मे चलाओ, खानदान मे चलाओ, रिश्तेदारों म चलाओ, नियत ये रखो कि इस मेहनत के सीखने सिखाने के वक्त सबसे मुॅह मोड़कर रखना है फिर अगर किसी के दिल मे लग गयी तो सारा खानदान बन जायेगा।

एक एक नक्शा आज बदतर है, औरतें आज कहॉ पहुॅच गयी हैं ? आज यूरोप की औरतें यहॉ पहुॅच गयी हैं कि कुत्तों से जिना कराती हैं अगर हमारा इमाम और मुक्तदा यूरोप ही बना रहा तो आदमी अपनी मॉओ से जिना

करेगा, अपनी बेटियों से जिना करेगा, ये यूरोप वाले जिना के इमाम है फिर हम भी वहाँ तक पहुँचेगें जहाँ पर ये पहुँचे हुए है। उफ उफ ! ये खून की नदियाँ बहान के इमाम है, तुम भी वहाँ तक पहुँचेगें लुटेरे बनोगे शरीफ इन्सान नही बन सकते, जब शरीफ के पीछे चलोगे शरीफ बनोगे कमीनों के पीछे चलोगे तो कमीने बनोगे। शरीफों के सरदार हजरत मुहम्मद सल्ल0 हैं, सारी शराफते, सारे कमालात, सारी खूबियाँ हजरत मुहम्मद सल्ल0 मे जमा हैं तुम उनके पीछे चलो, इसके लिये वक्त चाहिये कि यकीन की तब्दीली और अमल की दुरूस्तगी की जब मेहनत करेगें तो जौक बदलेगा। हम कमाते रहें कमाते रहें और एकदम से हुजूर सल्ल0 का जौक आ जाये ये ना मुम्किन है, हम यहूद और नसारा के तरीके पर मकान बनाते हैं, कोठियां बनाते हैं, बिल्डिगें बनाते हैं, ब्याह शादियां करते हैं, शानदार चीजें खरीदते हैं, जो भी पैसा हाथ आता है दोजख बनाने मे खर्च करते हैं और यकीन की तब्दीली और अमल की दुरूस्तगी के लिये ना जान लगाये ना माल तो खुदा की कसम ! हुजूर सल्ल0 से दूर हाकर यहूद और नसारा के ज्यादा करीब हो जायेगें हालाँकि हुजूर सल्ल0 से करीब होने मे हमारा फायदा है। इसलिये कहते हैं इस माहौल को बदलो, ये माहौल निहायत जहरीला है, इसकी तो हर चीज गलत एक भी चीज सही हो तो कहें, मुझे बता दो इनकी कौन सी चीज सही है ?

अब एक बात हमारी मान लो सौ, डेड़ सौ, दो सौ रूपये अपने साथ लेकर तीन दिन के लिये हमारे साथ लाहौर चलो और सुनते रहो फिर जितना वक्त खुदा तुम्हारे दिल मे डाल दे उतना दे दीजियो बस पैसे लेकर ये नियत करके चलो कि ऐ अल्लाह ! मेरे जी मे बात डाल दे और यूँ दुआ करो कि ऐ अल्लाह ! इसको मेरे जी मे डाल दे अगर जी मे ना आये तो वापस चले आना और अगर अल्लाह जी मे डाल दे तो जितना वक्त अल्लाह जी मे डाले उतना दे देना।

किताब का नाम - अहम बयानात हजरत मौलाना यूसुफ सा0 रह0

हजरत मौलाना यूसुफ साहब रह0

भोपाल इज्तेमा

29 दिसम्बर सन 1959

जमातों मे जाने वालों को हिदायात

بِسْمِاللّٰهِالرَّحْمٰنِالرَّحِيْمِ

मेरे अज़ीज़ो ! दुनियॉं मे आज दो किस्म की मेहनतों का रिवाज हैं, 1 मुल्क की मेहनत 2 माल की मेहनत और इसी के लिये दिन मे भी मेहनतें हो रही हैं और रात म भी अब इन मेहनतो के साथ अगर एक तीसरी मेहनत नही की जायेगी तो ये मेहनतें अपने साथ तबाही और बर्बादी लेकर आयेगीं।

वो तीसरी मेहनत क्या है ? वो तीसरी मेहनत अम्बिया अलै0 वाली मेहनत है

अम्बिया अलै0 वाली मेहनत क्या है ?

अम्बिया अलै0 ईमान और आमाल की दुरूस्तगो की मेहनत करते थे, मुल्क व माल पर मेहनत करने वालों के अगर यकीन की दुरूस्तगी के साथ अमल दुरूस्त होगें कि ये रहम करने वाले, हमदर्दी करने वाले, माफ करने वाले होगें तो यही मुल्क व माल की मेहनत उन्हे उरूज तक पहुँचायेगी और अगर यकीन की दुरूस्तगी के साथ अमल दुरूस्त ना करेगें तो ये मुल्क व माल की मेहनत उन्हे तबाह और बर्बाद कर देगी।

अब ईमान और आमाल की दुरूस्तगी की मेहनत का रिवाज कैसे पड़ जाये ?

ईमान और आमाल की दुरूस्तगी की मेहनत का रिवाज उस वक्त तक नही पड़ सकता जब तक तीसरी मेहनत करने वाले एख्लाक के, मुहब्बत के, मुरव्वत के अमलों की फिजा पैदा कर देगें तो मुल्क व माल की मेहनतें करने वालों की गर्दनें इनके सामने झुक जायेगीं, उस वक्त उन्हे अपनी मुफलिसी का एहसास होगा।

ईमान और आमाल की दुरूस्तगी, मेहनत कब बनेगी ? ये सिर्फ जुबान के कहने से मेहनत नही बनेगी बल्कि मेहनत तब बनेगी जब इस मेहनत के करने वालों के दिलों मे ना मुल्क की चाहत हो ना माल की चाहत हो, उनके दिलों से ये बात निकल जाये कि मैं मालदार हो जाऊॅं, जमीनों का मालिक बन जाऊॅं, और मुल्क हमारे ताबे हो जाये अगर ये भी ईमान की मेहनत से मुल्क व माल और चीजें चाहेगें तो य ईमान और आमाल की मेहनत एक रस्म बनकर रह जायेगी, मेहनत ना बनेगी। फिर ये तो वही बात होगी कि वो माल की मेहनत करके माल चाहें और हम ईमान की मेहनत करके माल चाहें, इसलिये ईमान और आमाल की दुरूस्तगी की मेहनत करने वाले ना मुल्क व माल के तालिब हों और ना चीजों के तालिब हों, इनका ख्याल हमारे अन्दर आना खत्म हो कि ये ओहदे हमारे हों, ये मुल्क हमारा हो बल्कि सारे नबियों ने यही कहा,

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ

सूरह शूरा 109

हम तुमसे अपनी मेहनत का बदला नही चाहते, हम तो अल्लाह से इसका बदला चाहते हैं।

ईमान और आमाल की दुरूस्तगी की मेहनत के मुक्तदा सहाबा थे और सहाबा के मुक्तदा हुजूर सल्ल0 थे, हम मुक्तदी तो तब बनेगें जब हमारी नियत और रूख वही हो जो इमाम का हो और जो इमाम कर हो वही मुक्तदी भो कर रहा हो, ये नही कि इमाम की नियत कुछ और पर मुक्तदी की नियत कुछ और, इमाम का रूख कुछ

और पर मुक्तदी का रूख कुछ और, वो सज्दे मे जा रहा हो और ये रूकूउ मे, तो ये इक्तेदा कहाँ होगी ? इक्तेदा के लिये तीन बातें जरूरी हैं,

1 नियत एक हो,

2 रूख एक हो,

3 अमल की तर्बीयत एक हो,

जब ये नही तो मुक्तदी होने का दावा ही झूठा है, अब मुक्तदा साहब की नियत ये हो कि खुदा को राजी करें और मुक्तदी की नियत रोटी की हो तो नियत के फर्क की वजह से इक्तेदा टूट गयी। इसी तरह मुक्तदा अगर अमल की तर्बीयत मे ईमान और आमाल ए सालिहा की मेहनत मे वक्त ज्यादा लगाये और मुल्क व माल की मेहनत पर हस्बे गुजारा

और मुक्तदी का अमल मुल्क व माल हो तो इक्तेदा कहाँ रह गयी।

क्या वजह है कि आज देखने वालों को हुजूर सल्ल0 वाली लाईन समझ मे नही आ रही है ?

इसकी वजह ये है कि उनकी मेहनत और थी पर अपने को उनका मुक्तदी कहने वालों की मेहनत और है, जब तक दिल की नियत, जाहिर की निगाह, मन का बोल और हाथ पैरों का अमल, इसे मेहनत पर ना डालेगा इसके मुक्तदी होने का दावा ही गलत है। ये मेहनत दिलों को खीचने वाली बनेगी कि हुक्काम के, सरमायेदारों के, अक्सरियत के दिल खिचेगें मगर शर्त ये है कि मुल्क व माल का ख्याल तुम्हारे अन्दर से खत्म हो जाये, अब इस ऐतबार से हम खुद मोहताज बन गये। आज हमारा रूख अम्बिया किराम और हुजूर सल्ल0 वाले अन्वार के समन्दर मे गोते लगाने वाली मेहनत से फिर गया है और हमारा रूख माल व दौलत पर मेहनत करने वालों की तरफ हो गया है, ये ना कहो कि सारी दुनियॉ कुसूरवार है, ये कहो कि सबसे ज्यादा मै कुसूरवार हूँ, हुजूर सल्ल0 ने खून बहा कर, पत्थर खाकर और गालियॉ सुनकर सहाबा को जिस रूख पर डाला था हम इससे फिरे हुए हैं ये हमारा कुसूर है। खुदा अपने रहम व करम से माफ कर दे, ये चोरियॉ और डाके, जिना और कत्ल इसलिये हो रहे हैं कि ये मेहनत हममे ना रही। जिना से, चोरी से, कत्ल से और डाके इन सबसे बड़ा हमारा ये कुसूर है,

हुजूर सल्ल0 ने ये मेहनत किस लिये की ?

क्या माल व दौलत के लिये की या अपनी बड़ाई और रूत्बे के लिये की ?

औरतों के लिये की या सरदारी पाने के लिये की ?

आपसे तो शुरू मे ही ये पेशकश की गयी थी कि आप لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ की मेहनत ना कीजिये इसके बदले मे आप हमे साफ साफ बतायें कि इस मेहनत से आप क्या चाहते हैं ? अगर आप इस मेहनत से सरदारी या हुकूमत चाहते हैं तो आप ये मेहनत छोड़ दीजिये हम आपको हुकूमत देने को तैयार हैं। अगर आप इस मेहनत से माल या दौलत चाहते हैं तो आप ये मेहनत छोड़ दीजिये हम आपको अपनी सारी दौलत लाकर दे देते है कि आप अरब के सबसे बड़े मालदार बन जायें।

अगर आप ये चाहते हैं कि आपका रूत्बा बुलन्द हो जाये और आपकी बुजुर्गी बढ़ जाये तो हम आपके सामने घुटने टेकने और आपके हाथ चूमने के लिये तैयार हैं।

अगर आप इस मेहनत से ये चाहते हैं कि आपको खूबसूरत औरतें मिल जायें तो हम अपनी बीबियॉ और बांदियॉ सबके सब आपको पेश करते हैं बस आप ये मेहनत छोड़ दीजिये।

ये सुनकर हुजूर सल्ल0 ने फरमाया ! मैं ये मेहनत इसलिये नही कर रहा हूँ कि मैं तुम्हारा बादशाह बन जाऊँ, बुजुर्ग या सरदार बन जाऊँ और मालवाला या खूबसूरत औरतों वाला बन जाऊँ, मै तो لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللّٰهِ की मेहनत इसलिये कर रहा हूँ ताकि मेरा खुदा मुझसे खुश हो जाये। खुदा माल व दौलत और हुस्न व शौकत से खुश नही होते बल्कि ईमान और आमाल ए सालिहा से खुश होते हैं

आज ईमान और आमाल की दुरूस्तगी की मेहनत करने के लिये कौन लोग आ रहे है ?

इसमे दो किस्म के लोग आ रहे है, एक माल वाले आ रहे है और एक मुल्क वाले, ये लोग जिन किस्मों से आ रहे है उसी के लिये लगे है, ये लोग तीसरी किस्म वाले नही बनेगें जब तीसरी किस्म के बनने की नियत करके आओगे तब तीसरी किस्म वाले बनोगें।

इसलिये सबसे पहला मसअला क्या है ?

सबसे पहला मसअला दिल का है कि खुदा दिल की कैफियत देखते हैं लिहाजा दिल के अन्दर से ये बात निकाल दो कि खुदा के मासिवा से तुम्हे कोई नफा पहुँचेगा ना मुल्क से ना माल से अगर तुम्हारे अन्दर से ये बात निकल गयी तो फिर मुल्क व माल वालों के लिये तुम्हारा वजूद रहमत बन जायेगा, तुम अपने लिये भी और दूसरों के लिये भी रहमत बन जाओगे। आज तुम तब्लीग मे जा रहे हो इस निकलने मे जो फायदे तुम्हे नजर आयेगें तुम उन्ही की नियत करोगे तब खुदा की रजा का ख्याल भी ना आयगा, खुदा की रजा का ख्याल बड़ी मेहनत के बाद दिल मे आयेगा कि ये सारी मेहनत मै खुदा की रजा के लिये कर रहा हूँ, अभी तो हम दो किस्मों मे पड़े हुए इन्सान है। इसलिये जब तुम तालीम की मज्लिस मे बैठो, गश्तों मे जाओ, एक गॉव से दूसरे गॉव मे जाओ तो सिर्फ यही बात दिल मे रखो कि मै खुदा की रजा के लिये कर रहा हूँ, दिल कहेगा शहर देख लूँ, बागात देख लूँ, बाजार देख लूँ थोड़ा दिल बहल जायेगा मगर इस ख्याल को तुम अपने दिल से निकालो और ये बात दिल मे डालो कि खुदा की रजा के अलावा हमारे निकलने का और काई मकसद नही। इसलिये हर काम करने से पहले अपनी नियत को सही करना करो, तुम अपने को नियत का बीमार समझ लो और बार बार तस्दीक करो कि तीसरी किस्म वाले तब ही बनोगे जब तुम्हारा हर काम खुदा की रजा के ख्याल पर आ जाये। आजकल मुल्क व माल पर मेहनत करने वाले इतने हैं जितने दुनियॉ भर मे कुत्ते है कि कमी है तो इस किस्म के लोगों की, ये तो नियत हुई अब दूसरी बात है यकीन की।

यकीन एक चीज है जो दिल मे पैदा होता है, तब्लीग मे इसी लिये निकाला जाता है कि हम इस राह मे निकल कर अपने दिल मे لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللّٰهِ को बोल बोलकर जो बोला है उसका यकीन पैदा करे कि खुदा खजानों वाले हैं, तकलीफों और परेशानियों को दूर करने वाले हैं अगर हमने उनको राजी कर लिया तो ये तकलीफें, परेशानियॉ और मुसीबतें सब खत्म हो जायेगीं। इसका यकीन पैदा करो कि खुदा थोड़ी चीज को बढ़ाकर दिखायेगें, खुदा बगैर दवा के बीमारियों को महज अपनी कुदरत से अच्छा करके दिखायेगें वरना जो यकीन आज मुश्रिकीन, यहूद और नसारा का है वही यकीन हमारा है कि खेती से काम चलेगा और दुकान से काम चलेगा, फर्क सिर्फ इतना है उन्होन खुदा को न माना हमने खुदा को मान लिया, हमने नमाज पढ़ ली उन्होने नमाज नही पढ़ी, जिंदगी बनने का यकीन सबका वहीं पर है। यह यकीन नही कि अल्लाह की बड़ाई को बोलो अल्लाह पालेगें, ईमान व अमल की मेहनत करो अल्लाह पालेगें, जिस अक्ल से वह बोले उसी अक्ल से हम बोले, जिस यकीन से वह बोले उसी यकीन से हम बोले, दोनों मे कोई फर्क नही। आज तुम अल्लाह के रास्ते मे यकीन बदलने जा रहे हो, यह यकीन के मुड़ने की आखिरी जगह है। खेती से, दुकान से, मुलाजमत से

पैसे मिल गये, पैसों से चीजें मिल गयी, यह यकीन निकालना है। हम ईमान और अमल को दुरूस्त करने के लिये फिरेगें अल्लाह पालेगें, तालीम करेगें अल्लाह पालेगें, अल्लाह का जिक्र करेगें अल्लाह पालेंगें, अल्लाह से होना बोलेंगें अल्लाह पालेंगें, गश्त करेंगें अल्लाह पालेगें, दूसरों की खिदमत करेंगें अल्लाह पालेगें। ये यकीन पैदा करो कि खुदा हमारी हर जरूरत को पूरा करेगें और नियत मे लाओ कि हम ये काम खुदा से अपनी जरूरतों को पूरा कराने के लिये नही कर रहे है बल्कि खुदा को राजी करने के लिये कर रहे हैं।

अब आप तब्लीग मे निकल कर आये हो तो सबसे पहले मेहनत की जाहिरी शक्ल को ठीक करना पड़ेगा, हुजूर सल्ल0 और सहाबा किराम ने मेहनत की जो जाहिरी शक्ल कायम की थी वही सही शक्ल है और उसी शक्ल पर अपने आपको लाना है। जिस तरह जब नमाज की नियत बांधी तो चार चीजों के अलावा सब कुछ छोड़ना पड़ता है इसी तरह ये समझ लो कि जब तब्लीग की नियत कर ली तो इसमे चार चीजों के अलावा सब कुछ छोड़ना आ जाये।

नमाज मे क्या ?

नमाज मे कयाम, रूकुऊ, सज्दा और कायदा कि हर नमाज मे ये चार चीजें आयेगीं,

दूसरी शर्त ये है कि ये चारों चीजें तर्तीब से आयेगीं,

तीसरा ये कि जिस अरकान को जिस हालत मे करने के लिये बतलाया है उसी हालत मे करना पड़ेगा और

चौथी चीज नियत।

इसी तरह तब्लीग मे समझ लो कि चार चीजें खुदा की राह मे निकल कर करनी है, 1 दावत 2 तालीम 3 खुदा का जिक्र और 4 नमाज, ये चार काम है जिन पर हमे अपने आपको डालना है। तब्लीग में निकाल कर अपनी आंखों पर बहुत काबू रखो क्यो कि नजर आने वाली चीज का जो यकीन बनता है वही शिर्क है अब अगर आंखों से गलती हो गयी तो जुबान को रोको और अगर कोई भाई बुरा भला कह दे तो तुम सुन लो जवाब मत दो बल्कि कहो भाई हम तो कलिमा सीखने आये हैं हम लड़ना सीखने नही आये है। इसमे बहुत एहतियात करनी चाहिए और जब उनके नक्शों पर नजर पड़ जाये तो ख्याल करे कि न मालूम कैसे-कैसे जुल्म के बाद और यतीमों और बेवाओं के हुकूक पर हाथ डाल कर ये नक्शे कायम हुए होगें। तुम्हारा यकीन उस वक्त बनेगा जब दूसरों से बात करो तो अपना यकीन बनाने की नियत से करो अगर यकीन सिर्फ जुबान पर होगा तो चन्द झटकों में खत्म हो जायेगा और अगर यकीन कल्ब में रासिख हो गया तो फिर जहां भी घूमोगे तुम्हारे यकीन में कुछ फर्क न पड़ेगा अगर सही मायने में एक कलिमा वाला आदमी पेदा हो जावे तो उससे हजारो ओर लाखो का यकोन बनेगा अगर दूसरों के पास मादियात हैं तो हमारे पास अम्बिया वाली आवाज है जिसके सामने खुदा ने तमाम आवाज को पस्त कर दिया लेकिन ये आवाज एख्लास के साथ खुदा को राजी करने के लिए और उसके ध्यान के साथ हो।

दावत के बाद हमारा वक्त तालीम में लगेगा, सुबह में भी तालीम हो और शाम को भी तालीम हो, जब खूब फजायले सुने जायेगें तो उससे इल्म आयेगा। अब ये इल्म या तो नूर के साथ आयेगा या बिला नूर आयेगा और नूर वाला इल्म उस वक्त मिलेगा जबकि हम ये इल्म इस तरह लें जैसे हुजूर सल्ल0 ने जिब्रील अलै0 से लिया और सहाबा किराम रजि0 ने आप सल्ल0 से लिया यानी पूरे अदब के साथ सुने, वुजु करके सुने, गरदन झुका कर अजमत के साथ सुने, वर्ना भाई बगैर नूर के इल्म हासिल करने से खुद झकोगे और दूसरों को भी झकाओगे जैसे यहूद व नसारा भी उस इल्म को हासिल करते हैं मगर वह दूसरों को गुमराह करते हैं। एक मोहदिदस हदीस बयान कर रहे थे दो आदमी किसी बात पर हंस पड़े तो उन्होने उसी वक्त हदीस पढ़ना बन्द

कर दिया और कहा उससे बेहतर ये है कि मैं जिहाद में चला जाऊं, लोगों ने कहा इस उमर में क्या करेगें ? कहा ! अगर कुछ न होगा तो मर तो जाऊंगा। भाई ! जिस तरीके से अपने महबूब का खत आता है और उसको शौक के साथ सुनते है, इसी तरह शौक के साथ तालीम सुने और पूरी अजमत के साथ सुने जैसे हुजूर सल्ल0 खुद तशरीफ फरमा हों, अल्लाह की बात करते हुए किसी का तास्सुर दिल में न हो वर्ना फिर एक बदमाश आर फासिक की बात तुम्हारे दिल में उतर जायेगी।

फिर पूरे ध्यान के साथ जिक्र करें, ये नही कि सिर्फ जिक्र के अल्फाज जुबान पर हों और ध्यान चीजों में हो। इसकी मश्क यहीं से करें और अगर उसकी मश्क करोगे तो यहां भी तुम्हारी बात का असर होगा और कुफ्फार भी उससे मुतास्सिर होंगे, ये तमाम तो जिक्र की सूरते हैं वर्ना असली चीज तो खुदा का ध्यान है, बकिया वक्त नमाज में लगे इस यकीन के साथ कि खुदा से होता है, कामयाबी हजरत मुहम्मद सल्ल0 वाले आमाल से होती है और उन आमाल में से नमाज है और नमाज के तमाम फजायल का इस्तहजार करो अब नमाज पढ़ कर दुआ करो कि खुदा हमारे अन्दर की आंख खोल दे, अल्लाह की राह में फिरने वालों में आपस में जोड़ हो अगर जोड़ न होगा तो शख्सी फवाइद तो मिल जायेगें मगर इज्तिमाई फवाइद नही मिलेगें।

हजरत उस्मान रजि0 के जमाने मे हजरत उस्मान रजि0 नही बदले मगर अवाम बदली कि अमीर पर और बड़ो पर एतराज करना शुरू कर दिया। हजरत उमर रजि0 के जमाने में ये बात न थी, हजरत उमर रजि0 के जमाने में हजरत खालिद रजि0 बरतरफ हो गये, रात की तारीकी में हजरत उमर रजि0 जा रहे थे हजरत अल्कमा रजि0 ये समझे कि खालिद जा रहे तो अल्कमा रजि0 ने कहा कि खालिद ! हजरत उमर ने भी आवाज बदल कर खालिद की तरह आवाज निकाली। इन्होने कहा देखो उमर रजि0 ने तुम को माजूल कर दिया तो हजरत उमर रजि0 ने खालिद की आवाज में कहा कि हां भाई मुझे माजूल कर दिया मगर अब क्या करें ? तो अल्कमा रजि0 ने कहा भाई ! जब हमने खलीफा मान लिया तो अब उनकी इताअत ही करनी चाहिए। इसी वजह से खुदा की नुसरतें हजरत उमर रजि0 के साथ थी, इसलिए निकलने के जमाने में बाहम मश्विरह करके जो तै हो वही करो और एहतिमाम से मश्विरह करना अमीर की जिम्मेदारी होगी और अमीर की इताअत बाकी लोगों की जिम्मेदारी होगी जब तक मासियत का हुक्म न हो।

हजरत खालिद रजि0 के माजूल करने की वजह में एक बात ये भी थी कि हजरत खालिद रजि0 रूकना नही जानते थे और साथियों के आराम वगैरह का ख्याल कम रखते थे बस हर वक्त काम की तरफ पूरी तवज्जो रहती थी जबकि हजरत अबु उबैदह रजि0 माशाअल्लाह साथियों का ख्याल रखते हुए काम का हुक्म देते मगर साथियों की इतनी रियायत भी न हो कि फिर उठने का नाम ही न लें, मै तो ये समझता हूं कि हजरत खालिद रजि0 का जमाना ही दौड़ भाग का जमाना था उस वक्त उसी की जरूरत थी जब हजरत अबुउबैदह रजि0 की जरूरत थी तो खुदा ने उनको काम में लगाने की सूरत पैदा कर दी, आज कुछ लोग कहते हैं कि अमीर साहब मेरी बात नही मानते, इससे तो ये मालूम हुआ कि आप अमीर को अमीर ही नही मानते। भाई जोहद की बातें ठूंसने से नही आती बल्कि उनकी तरगीब देते रहो जो भी उस पर जितना अमल कर ले गनीमत समझो। भाई ! इसके लिए तो माहौल और दुआ की जरूरत है जब जज्बा और शौक पैदा हो जायेगा, वह खुद उस पर अमल कर लेगा। तुमने हजरत उमर रजि0 का वाकिया सुना होगा कि एक मर्तबा आपने छुरी मंगवाई और कुर्ता चाकू से कटवाया कि हर तरफ एक जैसा नही ओर फिर उसको सिलवाया भी नही हर तरफ धागे निकले हुए थे कभी सर में और कभी दाढ़ी में धागे अटक रहते थे लोग सिलने के लिए मांगते तो फरमाते कि मैने हुजूर सल्ल0 को एक मर्तबा इसी तरह पहने हुए देखा इसलिए मै भी वैसे ही पहनूंगा।

इस रास्ते मे शेतान से बचने के लिये चार काम बहुत एहतियात के हैं अगर इनमे जरा सा भी चूक हुई तो शैतान को मौका मिल जायेगा। 1 सोते वक्त 2 खाते वक्त 3 पेशाब पाखाने के वक्त 4 आपस की बातचीत के वक्त अगर सोते वक्त तुमने अपने जहन को आजाद छोड़ दिया तो शैतान तुम्हे घर को तरफ ले जायेगा कि नरम नरम बिस्तर की याद आयेगी, बीबी बच्चे याद आयेगें, घर के पचासो काम जो तुम छोड़कर आये थे उनमे तुम्हारे जहन को फसायेगा बस एख्लास तो हो गया खत्म और बेचैनी शुरू हो जायेगी, अब दूसरे दिन, दावत, तालीम, खुदा का जिक्र और नमाज मे तुम्हारा दिल नही लगेगा। जिन कामों के करने के लिये घर छोड़कर आये थे उनसे अब हफते भर मे तुम्हारी तबीयत घबरा जायेगी, शैतान की इन चालों से बचने के लिये तुम अपने ऊपर पहरेदार बिठाओ,

जब अन्धेरे मे लेटो तो कब्र मे लेटने की सोचो और मौत को याद करते हुए सो जाओ।

जब खाने पीने बैठो तो दो पहरेदार बिठाओ एक आगे का कि आज हम जो खा रहे हैं जन्नत मे इससे अच्छा चााने को मिलेगा और एक पहरेदार पीछे बिठाओ कि हुजूर सल्ल0 और सहाबा किराम का खाना कैसा और क्या होता था ?

फिर पेशाब पाखाने के वक्त अपने गन्दा होने के बारे मे सोचो कि मैं कितना गन्दा हूॅ ?

ये अच्छे अच्छे और उमदा खाने चन्द घन्टे मेरे गन्दे जिस्म के साथ रहे तो मेरे गन्दे होने की वजह से ये भी गन्दे हो गये और जो पाक पानी हमे पाक करने की सलाहियत रखता था मेरी सोहबत मे कुछ देर रहकर नापाक हो गया।

अगर आपस मे कोई बात करना जरूरी हो तो बस जरूरत भर की बात करो वरना ना बोलो। इक्टठे होकर या अलग अलग चार दुआऐं खूब माॅगो,

1 सारे आलम के मुसलमानो और मुश्रिकों की हिदायत के लिये,

2 ईमान और अमल की मेहनत करने वालों के लिये,

3 खानदान वाला, रिश्तेदारों और साथियों के लिये,

4 अपने और बीबी बच्चों के लिये,

तुम किसी कौम के किसी मुल्क के किसी वतन के किसी बिरादरी के बनकर जिंदगी मत गुजारों, तुम सारी दुनिया वालों के लिये अल्लाह के बनकर जिंदगी गुजारों। तुम न बाप के हो, न मां के, तुम न भाइ के, हो न बहन के, बस अल्लाह जिसका पैर पकड़ने को कहे उनके पैर पकड़ कर दिखाओ।

किताब का नाम - अहम बयानात हजरत मौलाना यूसुफ सा0 रह0

हजरत मौलाना यूसुफ साहब रह0

बाद नमाज मग्रिब भोपाल इज्तेमा

27 दिसम्बर सन 1959

मेहनत का सही रूख

بِسْمِاللهِالرَّحْمٰنِالرَّحِيمِ

मेरे अज़ीज़ो ! आदम अलै0 से लेकर आज तक जितने भी इन्सान इस दुनियॉ मे आये हैं सबने दुनियॉ मे मेहनत की है और ये भी तयशुदा बात है कि कोई इन्सान नाकाम होने के लिये मेहनत नही करता है, इन्सानियत के हर तब्के के लोग चाहे अमीर हा या गरीब, आलिम हो या जाहिल, ताजिर हो या किसान, ये सब कामयाब होने के लिये मेहनत करते हैं। इन्सानों की मेहनत का मकसद क्या है ?

इन्सान की मेहनत का मकसद इनकी जरूरतों का पूरा होना है।

कामयाबी और नाकामी क्या है ?

इन्सानों की जरूरतों का पूरा होना कामयाबी है और जरूरतों का पूरा ना होना नाकामी है मगर कामयाबी की चोटी पर वही पहुँचेगा जिसकी मेहनत अपनी मर्जी पर ना होकर हकीकत के मुताबिक हो। इसलिये मेहनत करने से पहले जरूरी है कि इन्सान ये मालूम करे मेहनत क्या करनी है फिर ये कि सही मेहनत क्या है और गलत मेहनत क्या है ?

जो इन्सान इस बात को ना मालूम करे तो उसे नाकामियों का सामना करना पड़ेगा, वो हुकूमत हो या महकूम, अमीर हो या फकीर, मेहनत का तरीका सबके लिये एक है इसलिये इसको मालूम करके अपने आपको सही मेहनत पर डालो।

अब पहली बात ये है कि मेहनत किसको कहते हैं ?

मेहनत कहते हैं खर्च ए इन्सानी को।

क्या मतलब है खर्च ए इन्सानी का ?

खर्च ए इन्सानी का मतलब इन्सान के जिस्म के आजा का इस्तेमाल होना कि ऑखों का इस्तेमाल, कानों का इस्तेमाल, जुबान का इस्तेमाल, हाथों व पैरों का इस्तेमाल और अक्ल का इस्तेमाल कि चौबीस घंट इन्सान इनका इस्तेमाल कर रहा है यानी इन्सान इन्हे खर्च कर रहा है अगर इसने इसे सही खर्च किया है तो कामयाब हो जायेगा और अगर गलत खर्च किया है तो नाकाम हो जायेगा। अल्लाह तआला ने इन्सानों की कामयाबी और नाकामी को उसके आजा के इस्तेमाल से जोड़ा है अगर किसी के पास माल और चीजें ना हों तब पर भी उसका इस्तेमाल रंग लायेगा और वो सब कुछ पा लेगा और अगर कोई चॉद या सूरज पर रहने लगे पर उसके आजा का इस्तेमाल गलत हो तो सब कुछ खोकर महरूमी का शिकार होगा। ये मेहनत कोई मेहनत नही कि हम चीजों को इकटठा करे, हम हाकिम बनकर रहे या महकूम, मालदार बनकर रहे या गरीब रहें इससे कोई फर्क नही पड़ता। चीजों की वजह से इन्सानियत के जाब्ते नही बदलते कि फकीर मालदार बन जाये या मालदार फकीर, हाकिम महकूम बन जाये या महकूम हाकिम, इससे इन्सानी जाब्ते खत्म नही होते। इन्सान जहॉ हो और जिस हाल मे भी हो इन्सानी जाब्ते उस पर वहीं लागू होगें अगर मालदार का मेदा खराब है तो खाना हजम नही करेगा इसी तरह अगर फकीर का हाजमा खराब होगा वो भी हजम नही कर सकेगा तो जिस तरह जिस्मानी जाब्ते सबके के लिये एक हैं उसी तरह इन्सानी जाब्ते भी सबके के लिये एक हैं।

पैगम्बर हो या आम इन्सान,
आलिम हो या जाहिल,
अमीर हो या फकीर,
मेहनत के जाब्ते सबके लिये एक हैं और जाब्ता ये है कि जिसका अमल खुदा को खुश करेगा वो दुनियाँ मे भी आराम पायेगा और जिसका अमल खुदा को नाराज करेगा उसे दोनो जगह महरूमी होगी, ये है वो जाब्ता ए अमल जो सबके लिये एक है,
आलिम के लिये भी जाहिल के लिये भी,
कौमो के लिये भी हुकूमतों के लिये भी,
अमीरों के लिये भी गराबों के लिये भी,
तारीख उठाकर देख लो हुकूमतें क्यों मिट गयी ? तो पता ये चलेगा कि अपने आमाल की गलती से और हुकूमतें क्यों कायम हो गयी ? अपने आमाल की दुरूस्तगी पर।
अमल ठीक कब होता है और अमल खराब कैसे होता है ?
दो चीजें ऐसी हैं अगर वो ठीक हो जायें तो इन्सान और उसके अमल ठीक हो जाये अगर ये कमजोर होगी तो इन्सान और उसके अमल कमजोर हो जायेगें। मकसद की बुलन्दी पर इन्सान बुलन्द होता है और मकसद की कमजोरी पर कमजोर होता है।
मकसद कब कमजोर होता है ?
जब लोग अपने नफस की ख्वाहिशों को अपना मकसद बनाते हैं, इन्सान का तजुर्बा कर लीजिये जैसी उसकी हैसियत होगी वैसी ही उसके मकसद की हैसियत होगी। इन्सान का ये जिस्म मनी के नापाक कतरे से बना है, ये आज भी वही नापाक कतरा है जो उम्र के लिहाज से बड़ा होता रहता है। जो दस साल का है वो इस कतरे से दस साल बड़ा है और जो पचास साल का है वो इस नापाक कतरे से पचास साल बड़ा है लिहाजा जो इन्सान ख्वाहिश को मकसद बनाये वो चाहे कितना ही बढ़ जाये उसका ये बढ़ना मनी के नापाक कतरे के लिहाज से बड़ा होना है। इन्सान को बुलन्दी अपने बनाने वाले को बड़ा तस्लीम करने मे है कि
اَللّٰہُ اَکۡبَرُ अल्लाह बहुत बड़े, इतने बड़े हैं कि لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللّٰهُ ताकत मे वो बड़े हैं, कूवत मे वो बड़े हैं, इल्म मे वो बड़े हैं, हिकमत मे वो बड़े हैं गरज इतने बड़े हैं कि किसी का वजूद नही वजूद सिर्फ उन्ही का है। इसलिये अल्लाह को अपना मकसद बनाओ तो इस मकसद की बुलन्दी इन्सान को एक बड़ी बुलन्दी पर ले जायेगी, जिसने ला महदूद ताकतों वाले खुदा को, उसकी चाहत को और उसकी मुहब्बत को अपने साथ लेने को अपना मकसद बनाया तो वो अब ला महदूद देखने वाला, ला महदूद सुनने वाला और ला महदूद सोच रखने ने वाला इन्सान है।
इस मकसद तक पहुँचने के लिये हमे क्या करना पडेगा ?
इसके लिये हमे दो काम करने पडेगें पहला काम अपने अन्दर से खराबी निकालने की मेहनत और दूसरा काम खूबियों को पैदा करना अगर ऐसा करोगे तो खुदा को पा जाओगें, ख्यालात की पाकी और आमाल की दरूस्तगी के रास्ते से बन्दा खुदा तक पहुँचता है। जब तुम किब्र से शहवत से पाक हो जाओगें तो खुदा को पा जाओगें, ये कायनाती निजाम पूरा का पूरा इन्सान के हवाले कर दिया जाता है जब ये दो काम कर ले, खुदा ने कितनी कसमे खाकर कहा है,

وَالشَّمْسِ وَضُحَاهَا وَالْقَمَرِ إِذَا تَلَاهَا وَالنَّهَارِ إِذَا جَلَّاهَا وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشَاهَا
وَالسَّمَاءِ وَمَا بَنَاهَا وَالْأَرْضِ وَمَا طَحَاهَا وَنَفْسٍ وَمَا سَوَّاهَا فَأَلْهَمَهَا
فُجُورَهَا وَتَقْوَاهَا قَدْ أَفْلَحَ مَنْ زَكَّاهَا وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسَّاهَا

सूरह शम्श 1-10

यही तज्किया इन्सान को ऊपर ले जाता है वरना ये पस्ती मे पड़ा रहता है।

अच्छा ! इन्सान को पस्ती मे क्या चीज ले जाती है ?

इन्सान का अपना वजूद बनाना इसे नीचे ले जाता है, इन्सान का अपना वजूद बनाना ही अपने ऊपर जुल्म करना है कि चोरी करता है, जिना करता ह, आग लगवाता है, कत्ल करवाता है, फूट डलवाता है ये सब अमल खराब है तो जिसने अपने वजूद को बनाना यानी तकाजा ए इन्सानियॉ को पूरा करना ही अपना मकसद बनाया हो वो नीचे आ जाता है, अपना वजूद ही हमे हिल्म वाला, एख्लाक वाला, इन्साफ वाला नही बनने देता।

इसलिये सबसे पहला मकसद क्या है ?

सबसे पहला मकसद لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللَّهُ ना दौलत मकसद है, ना गुर्बत मकसद है, ना हुकूमत मकसद है, ना राहत मकसद है, मकसद सिर्फ खुदा की मंशा व मर्जी पर चलना है। अमल की दुरूस्तगी तक पहुॅचने का यही रास्ता है कि अल्लाह को अपना मकसद बना लो, खुदा की कसम ! सारे नबियों ने ये बात बतलायी कि पूरी दुनियॉ की मालियत खुदा के यहॉ मच्छर के एक पर के बराबर भी हैसियत नही रखती। हम इसमे से निकलने वाली चीजों को कितना ही सजायें, कितना ही बढ़ायें इन्सान इससे कीमती नही बन सकता, आप अगर पाखाने को सोने आर जवाहरात के बर्तन मे रख दो या कुछ भी कर लो तो ये कीमती नही बन सकता। तुम खुदा को माल से हरगिज नही पा सकते चाहे तुम्हारा एक पैर चॉद पर हो और दूसरा पॉव सूरज पर तब भी खुदा को नही पा सकते, खुदा को चीजों के रास्ते नही पाया जा सकता, खुदा तक पहचने का रास्ता बतलाया है مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ ने। हुजूर सल्ल0 ने जो कहा या किया है वो अमल सारी कायनात से ज्यादा कीमती है, खाने पीने का, सोने जागने का, कमाने और खर्च करने का मकसद खुदा की जात और मुहम्मद सल्ल0 वाले अमल हों, जब ख्वाहिश पूरी हो तो अल्हम्दुल्लिलाह और जब टूटे तो ऐ अल्लाह गरज चौबीस घन्टे का मकसद अल्लाह की जात और रास्ता मुहम्मद सल्ल0 वाला कि لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللَّهُ मकसद है औरمُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ रास्ता है।

इन्सानी जिन्दगी के नक्शों में और शरीयत वाले रास्ते मे क्या फर्क है ?

ये गौर करने की बात है कि कामयाबी का रास्ता इन्सानी नक्शों में है या अल्लाह वो नक्शे मे ? इसलिये कि एक रंग इन्सान का है और एक रंग अल्लाह का है।

इन्सान का रंग क्या है ? इन्सान का रंग है लेना और अल्लाह का रंग है देना लेकिन आज हालात क्यों बिगड़े हैं ? हालात बिगड़ने की वजह ये है कि आज इन्सान रंग ए इन्सानी पर जिन्दगी गुजार रहा है। जब इन्सान रंग ए इन्सानी पर जिन्दगी गुजारता है तो फिर ना पूछो कि कैसा खून खराबा होता है जिसकी वजह से ऐसी गड़बड़ पैदा होती है जिसे सारी दुनियॉ मिलकर नही रोक पाती है कि

ऊॅचे दर्जे वाला सोचता है नीचे वाले से कैसे ले और नीचे वाला सोचता है ऊॅचे दर्जे वालों से कैसे ले ?

हुकूमतें सोचती हैं हम आवाम से कैसे ले, ताजिरों से कैसे ले और मजदूरों से कैसे ले ?

जमा किये हुए पानी से कैसे ले और पानी ले जाने वालों से कैसे लें ?

पानी मे मछली का शिकार खेलने वालों से कैसे लें ?

जब मातहत भी लेने पर आ जाये और हाकिम भी लेने पर आ जाये तो हर फर्द का हर फर्द से टकराओ पैदा होता है। हमदर्दी और शराफत खत्म हो जाती है, आज मालदार गरीबों से लेने पर तुले हुए है और गरीब मालदारों से लेने पर तुले हुआ है।

शौहर सोचता है बीबी से कैसे लूँ,

बीबी सोचती है बेटे से कैसे लूँ, ये अदावत और खून बहाने का रास्ता है, दिलों का फटना इसी वजह से है।

अल्लाह वाला रास्ता क्या है ?

अल्लाह का रास्ता देने वाला रास्ता है कि तू लेने वाला और मैं देने वाला मुझसे ले और इन्सानों को दे मगर इस रास्ते पर चलने के लिये कोई तैयार नही है अगर कुछ ऐसे है भी तो ज्यादा लेकर थोड़ा देने को तैयार है कि लेने का मिजाज है देने का नही, इसको इस्तलाह मे तिजारत कहते हैं। इन्सान तो फकीर है करोड़पति भी फकीर है, गरीब भी फकीर है,

وَاللّٰهُ الْغَنِيُّ وَأَنْتُمُ الْفُقَرَاءُ

अल्लाह तो सिर्फ देते हैं, तुम कम दोगे पर वो तुम्हे ज्यादा देगा अगर तुमने किसी भूखे को खाना खिला दिया, रोते के ऑसू पोछ दिये तो वो तुम्हे इस जमीन से ज्यादा बड़ी जन्नत देगा, अल्लाह से लेकर मख्लूक को देने वाले बनो। लेने का तआल्लुक खलिक से जोड़ो और देने का मख्लूक से, हाकिम महकूम को नफा पहुॅचाये उनसे लेने का इरादा ना करे, अमीर गरीब को और ताकतवर कमजोर को नफा पहुॅचाये उनसे लेने की ना सोचे। ये तरीका अल्लाह ने तुम्हे बहुत कुछ देने के लिये भेजा ह, अल्लाह तुम्हारे देने की बुनियाद पर अपनी सारी नेमतें अता फरमायेगें, मख्लूक को देने का नाम एख्लाक है और खालिक से लेने का नाम इबादत है। लेने का मर्कज अलग है और देने का मर्कज अलग, अल्लाह को हम कुछ नही दे सकते, खुदा को कोई क्या देगा अगर सब उसकी पाकी बयान करें तो उसकी शान मे क्या ज्यादती हो जायेगी ? तस्बीह और सज्दा तो उससे लेने के तरीके हैं। तुम सबको नफा पहुॅचाने के लिये कमजोर को, ताकतवर को, अमीर को, गरीब को, कौमों को और मुल्कों को अगर तुम दो तो इसे एख्लाक कहते है, अल्लाह से लेने के लिये मख्लूक को देना अगर किसी को इसलिये एक रोटी खिलायी कि कल को वो हमे आठ रोटी खिलायेगा तो तुमने लुटिया डुबो दी क्यों कि इस ख्याल पर अल्लाह तुम्हे कुछ ना देगा। तुम अगर देने वाले बन जाओ तो खुदा दुश्मन के दिल मे भी तुम्हारी मुहब्बत पैदा कर देगा, अरब वालों ने अपने को अल्लाह के रास्ते पर मोड़ दिया तो अल्लाह ने उनके दिलों को जोड़ दिया।

इस कायनात की हकीकत क्या है ?

ये कायनात खुदा की मख्लूक है इसकी अपनी कोई चीज नही है ये खुद खुदा के खजानों से फायदा उठाती इसलिये ये खुद किसी को कुछ नही दे सकती, ना ये किसी को नफा पहुॅचा सकती है और ना नुकसान। सूरज मे रौशनी अपनी नही है रौशनी खुदा के खजाने मे है सूरज उस खजाने से फायदा उठाता है।

खुदा क्या है ?

खुदा वो है जो जिसको चाहे बनाकर दिखा दे और जिसको चाहे बिगाड़ कर दिखा दे, सब पर खुदा का कब्जा है लेकिन खुदा पर किसी का कब्जा नही है। खुदा ने चीजों मे जो रूह की ताकत रखी है इसकी किसी को खबर नही है।

खुदा ने पहली चीज को चीजों के बगैर कैसे बनाया ?

पहले गेहूँ को गेहूँ के बगैर बनाया, नबियों को नबियों के बगैर हिदायत दी, खुदा आज भी किसी भी चीज का चीजों के बगैर पैदा कर सकते हैं। खुदा से लेने का एक रास्ता कायनात वाला है और एक रास्ता है मुहम्मद सल्ल0 के अमलों वाला, कायनात खुदा के खजाने से अपनी हैसियत के मुताबिक लेती है और मुहम्मद सल्ल0 के अमल अपनी शान के मुताबिक लेते हैं एक एक अमल पर बेइन्तेहा लेते है। मुहम्मद सल्ल0 वाले अमल खुदा ने अपने खजानों से ज्यादा से ज्यादा देने के लिये अता किये हैं, इन्सान मे तमीरी और तख्रीबी दोनो पहलू हैं अगर ये इन्सान अपनी मर्जी पर चला तो हलाक हो जायेगा, लिख लो मेरी इस बात को हाकिम व महकूम, गरीब व अमीर ये सारे के सार मख्लूक से लेने के मिजाज की वजह से हलाक होगें, अल्लाह जिसे देने के मिजाज पर लायेगा वही कामयाब होगें, उनके सामने सब झुकेगें।

कायनात मे कुछ नही खुदा के खजाने मे सब कुछ है और मुहम्मद सल्ल0 वाले अमल खुदा के खजानों से बेइन्तेहा लेने वाले है, बस हममे कुछ नहो खुदा की मंशा मे सब कुछ है इसलिये खुदा की मंशा को अपना मकसद बनाओ। कायनात खुदा से अपने मुकददर का ले सकती है और मुहम्मद सल्ल0 वाले अमल खुदा की कुदरत से खूब लेते हैं लिहाजा मुहम्मद सल्ल0 वाले अमलों को खुदा के खजानों से लेने का सबब बनाओ। इसके लिये हर अमल को चार चीजों पर लाओ तो वो अमल नफा पहुँचाने चाले बन जायेगें। 1 ईमान की हकीकत और उसकी ताकत पर 2 मुहम्मद सल्ल0 वाली शक्ल पर 3 अल्लाह के ध्यान पर 4 अल्लाह की रजा पर तो अब हर चीज इसी चार से ठीक होगी मगर ये चार किस चीज से ठीक होगीं ? ये चार चीज ठीक होगीं चार महीने लगाने से, इसके लिये बतलाओ कौन कौन तैयार है।

किताब का नाम - अहम बयानात हजरत मौलाना यूसुफ सा0 रह0

हजरत मौलाना यूसुफ साहब रह0

बाद नमाज फज्र बंगले वाली मस्जिद

18 अक्टूबर सन 1962

अजान को समझो और अपने अमल दुरूस्त करो

بِسْمِاللهِالرَّحْمٰنِالرَّحِيمِ

मेरे अज़ीज़ो ! इस जमाने मे सारी दुनियॉ के लोग एक गलतफहमी का शिकार हैं और इसी गलतफहमी की वजह से दुनियॉ मे मुसीबतों के दरवाजे खुले हुए है, वो गलतफहमी क्या है ? गलतफहमी यकीन की है कि कामयाबी चीजों से मिलेगी, चीजें माल से मिलेगी और माल मेहनत से मिलेगा। इन्सानियत का ये वो रूख है जिस पर सब जिन्दगी गुजार रहे हैं, चाहे नमाजी हो या बेनमाजी सब इसी गलतफहमी का शिकार हैं, माल को मकसद बनाने की वजह से इन्सानियत के अमल दिन पर दिन खराब हो रहे हैं। खुदा की तरफ से इन्सानों की जिन्दगियों के बनने और बिगड़ने के फैसले इन्सानों के अमल पर होते है, जितने भी अम्बिया अलै0 दुनियॉ मे तशरीफ लाये वो इस बुनियाद पर आये कि इन्सानों की कामयाबी और नाकामी चीजों पर नही आमाल पर है, इन्सान अपने अमल दुरूस्त कर ले तो अल्लाह की तरफ से कामयाबियो के हालात आयेगें और अमल खराब होगें तो नाकामियों के हालात आयेगें। अब इन्सान के सामने दो रास्ते है एक का मर्कज बाजार है और दूसरे का मर्कज मस्जिद है। बाजार माल का मर्कज है वहॉ चीजें दिखायी देगीं और चीजों से होता नजर आयेगा इसलिये उन सब बाजार वाला को अल्लाह मस्जिद मे बुला रहे हैं اللّٰهُ اَكَبِّرُ اللّٰهُ اَكَبِّرُ अल्लाह बहुत बड़े है, वो इन्सानों के वहम व गुमान से भी बहुत बड़े है फिर दूसरी आवाज लगवा रहे है لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللَّهُ चीजों से कुछ नही होता एक बड़े से सब होता है। ये आवाज इसलिये लगवायी जा रही है कि परवरिश का और फायदा हासिल करने का तआल्लुक मेरी जात से जोड़ो इसलिये कि जहॉ से होता है वो नजर नही आ रहा है इसके लिये बीच के वास्ते की जरूरत है (जैसे दूरबीन) ताकि तुम्हे नजर आये, वो वास्ता مُحَمَّدًا رَسُولُ اللهِ हैं, इसलिये आवाज लगवा रहे हैं مُحَمَّدًا رَسُولُ اللهِ वो बतायेगे कि सारी कायनात किस तरह अल्लाह के कब्जे मे है, उनकी ला महदूद कुदरत का इस्तेमाल तुम्हे कामयाब बनाने के लिये किस तरह होगा, यही बताने के लिये मस्जिद मे बुला रहे है "हयया लस्सलाह" सब एक साथ मिलकर जमा हो जाओ। मस्जिद मे जाड़ने का उन्वान बनाया नमाज को कि अब यहॉ बैठकर समझो "हयया लल्फलाह" कि तुम्हे कामयाबी लेने के लिये क्या करना पड़ेगा ? मस्जिद की बुनियाद पर जो कामयाबियॉ तुम्हे मिलेगी वो चीजों की बुनियाद पर नही मिलेगीं बल्कि मुहम्मद सल्ल0 वाले आमाल से मिलेगीं। जिस तरह जिस्म मॉ के पेट मे बनता है लेकिन रूह अल्लाह की तरफ से फरिश्ता लाकर डालता है अगर अल्लाह जिस्म मे रूह ना डालें तो बच्चा मरा हुआ पैदा होगा, जिस्म सारा मौजूद है कि सर से लेकर पैर तक सब मौजूद है लेकिन बेकार है जिसे तुम दफन कर देते हो। इसी तरह दुनियॉ मे फैली हुई चीजें दुनियॉ के नक्शों से बनती हैं पर इसमे कामयाबी और नाकामी अल्लाह की तरफ से डाली जाती है, वो चाहेगें तो शक्लों मे कामयाबी डालेगें और चाहेगें तो कामयाबियों के नक्शों मे नाकामी डालेगें, जिस तरह जिन्दा जिस्म से जब चाहते है रूह निकाल लेते है।

कामयाबियों और नाकामियां के फैसले अल्लाह की तरफ से इन्सान के अमल पर होते हैं, जमीन से जैसे आमाल आसमान पर जायेगें वैसे ही फैसले आसमान से जमीन पर तुम्हारे लिये आयेगें। सबके लिये अल्लाह का यही एक जाब्ता है, हुकूमतों के लिये, सरमायेदारों के लिये, उलेमा के लिये, अवाम के लिये, गराबों के लिये, सबके लिये अल्लाह का यही जाब्ता है,

अगर जिल्लत का फैसला हो गया तो हुकूमतों के नक्शों मे जिल्लत आ जायेगी,

अगर फक्र का फैसला हो गया तो महलों मे फकीर हो जायेगा,

अगर इज्जत और गिना का फैसला हो गया तो झोपड़ियों मे राहत मिल जायेगी,

जिस तरह रूह का तआल्लुक शक्लों से नही है बल्कि अल्लाह से है इसी तरह कामयाबी और नाकामी का तआल्लुक शक्लों से नही बल्कि अल्लाह से है, शक्लों मे हालात खुदा की तरफ से डाले जायेगें शक्लों मे आने वाले हालात का तआल्लुक तुम्हारे अपने अमलों से है।

"हयया लस्सलाह" और "हयया लल्फलाह" का मतलब ये है कि शक्लों से निकल कर अल्लाह के घर मे आओ और यहॉ बैठकर अपने अमलों को ठीक करो, खुदा यहॉ तुम्हे सिर्फ चार रकआत नमाज के अमल के लिये नही बुला रहे हैं बल्कि मस्जिद को मर्कज बनाकर आमाल चलाने का निजाम बनाने के लिये बुला रहे है। अगर अमल ठीक कर लोगे तो फिर तुम्हारे पास शक्लें चाहे जैसी हो खुदा की तरफ से उनमे कामयाबियों के हालात आ जायेगें, चाहे तुम्हारे हाथों मे पुलाव की शक्ल हो या रोटी चटनी की अगर सर से लेकर पैर तक के अमल तुमने ठीक ना किये तो हालात की खराबी तुम्हारी चीजां मे आ जायेगी। अम्बिया किराम इन्सानो को चीजें बनाने की तरफ मुतवज्जाह नही करते थे बल्कि जहॉ तक हो सकता था चीजों से हटाने की कोशिश करते थे कि उन शक्लों से हटो और सर ये लेकर पैर तक के अमलों को ठीक करो अगर तुमसे कोठियॉ छिन जायें, ओहदों से हटा दिया जाये, माल छिन जाये, मकानों से निकाल दिया जाये, खेतियॉ छिन जायें, यहॉ तक कि तुम्हारे पास एक कुर्ता भी ना बचे अगर तुम्हारे अमल ठीक हैं तो तुम्हारे लिये कामयाबियों के फैसले होगें, यहॉ तक कि सारे मुल्क का नक्शा ऐसों के लिये बदल जायेगा और अगर अमल ठीक ना हुए तो फिर चाहे महलों मे रहते हो, ओहदों की कुर्सियों पर बैठे हो, माल हाथ मे हो, ऐश के नक्शों मे हो तो उन सारे नक्शों मे खुदा नाकामी डाल देगें।

इसलिये तुम अपने आपको चीजों से निकाल कर अमलों के ठीक करने पर आओ फिर दुनियॉ देखेगी कि खुदा की कुदरत अमल वालों के साथ कैसे इस्तेमाल होती है। अगर तुम ऐसे बन गये तो लोग तुम्हारे पास ऐसी जिन्दगी सीखने के लिये हवाई जहाजों ये चलकर आयेगें, खुदा ने पहले भी बाराहां ऐसा करके दिखलाया है कि आदम अलै0 से लेकर आज तक दिखला रह हैं। इसके लिये ये ऐलान है कि नमाज के लिये आकर मस्जिद के आमाल को बुनियाद बना लो तो दोनों जहॉन की कामयाबी ले लो, ये नही कहा कि जिक्र के लिये आ जाओ और कामयाबी ले जाओ बल्कि जिक्र के बारे मे ये कहा कि जिक्र को आ जाओ दिल को इत्मेनान मिलेगा। नमाज के अलावा किसी और अमल पर दुनियॉ व आखिरत की कामयाबी का वादा नही फरमाया है इसलिये कि नमाज सारे आमाल का मज्मुआ है कि नमाज के अमल मे सर से लेकर पैर तक के हर आजा को अल्लाह के हुक्म पर चलना सिखाया जाता है और फिर मस्जिद को मर्कज बनाकर ईमान और अमल की मेहनत चलायी जाती है। नमाज के अलावा दूसरे किसी अमल के साथ ऐसी कोई मेहनत नही जुड़ी है। जिन्दगी मे खुद के ऐतबार से आमाल आ जायें और हमारी जिन्दगी मे जितने ऐतबारात हैं वो सब खत्म हो जाये तो फिर चौबीस धंटे की जिन्दगी मे हमारे जितने मसाएल है खुदा अपनी कुदरत से पूरा कर देगें। इसलिये हर रोज पॉच दफा ये

आवाज लगवायी जा रही है ताकि कयामत मे कोई कह ना सके कि हम जानते नही थे, वहॉ तो कहा जायेगा कि अरे अहमक ! पचास साल तो जिन्दा रहा क्या हर रोज पॉच दफा ये आवाज सुनकर अजान को नही समझ सका और अगर अजान को समझा था तो बता उस पर कितना अमल किया ?

तू ने आमाल को कितना ठीक किया कब्र मे इसी बुनियाद पर सवाल होगें। मस्जिद से मुताल्लिक बहुत से आमाल है सिर्फ चार रकआत नमाज का ही अमल नही है खूब समझ लो सिर्फ चार रकआत नमाज के अमल पर खुदा कुछ भी नही करेगें खुदा खुद फरमा रहे हैं

لَيْسَ الْبِرَّ أَنْ تُوَلُّوا وُجُوهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَلَٰكِنَّ الْبِرَّ مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالْكِتَابِ وَالنَّبِيِّينَ وَآتَى الْمَالَ عَلَىٰ حُبِّهِ ذَوِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسَاكِينَ وَابْنَ السَّبِيلِ وَالسَّائِلِينَ وَفِي الرِّقَابِ وَأَقَامَ الصَّلَاةَ وَآتَى الزَّكَاةَ وَالْمُوفُونَ بِعَهْدِهِمْ إِذَا عَاهَدُوا وَالصَّابِرِينَ فِي الْبَأْسَاءِ وَالضَّرَّاءِ وَحِينَ

الْبَأْسِ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ صَدَقُوا وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ

सूरह बकरा 177

सबसे पहले यकीन ठीक करो اَللّٰهُ اَكۡبَرُ वाला यकीन पैदा करो, अब बताओ यकीन कैसे ठीक होगा ? क्या इस हौज के पानी से ठीक हो जायेगा ? ये यकीन तब ठीक होगा जब मस्जिद के माहौल मे बैठकर वो माहौल पैदा करो जिससे यकीन बनता है। जिस तरह नमाज का सबसे पहला अमल वुजू कि वुजू करके जिस्म को पाक करो इसी तरह यकीन बनाने का सबसे पहला अमल रूह को पाक करो और रूह पाक होगी ईमान व यकीन की बात कहने सुनने से और पाक होगी ऐसी नमाज बनाने से जिसमे रूह का तआल्लुक अल्लाह से जुड़ रहा हो,

الَّذِينَ هُمْ فِي صَلَاتِهِمْ خَاشِعُونَ

खुशखबरी सुना दो उन नमाजियों को जो ईमान वाले खुशूऊ व खुजूउ वाले है, सारे नमाजियों को कामयाबी नही मिलेगी बल्कि उन नमाजियों को कामयाबी मिलेगी जिनके यकीन चीजों से हटकर अल्लाह पर आयें, मुल्क से, माल से, हथियार से, ऐटम से हटकर अल्लाह पर आयें। नमाज का अमल तो हुआ दुनियॉ मे पर यकीन और खुशूऊ की कैफियत पर तुम्हे जन्नत मिलेगी, असल ये यकीन है कि माल से असबाब से कामयाबी नही मिलेगी बल्कि नमाज का अमल करके अल्लाह से मॉगने पर कामयाबी मिलेगी। इस यकीन के साथ मस्जिद मे आओ और ईमान का माहौल बनाओ और दुनियॉ भर मे फिर फिर कर मस्जिदों मे ईमानी माहौल बनाओ।

वरना आज के माहौल मे अहमको के बारे मे सुन रहे हो कि ये बड़े और वो बड़े और ये भी सुन लिया कि अल्लाह बड़े तो अब ये समझा कि अल्लाह भी ऐसे ही बड़े हैं जैस ये बड़े हैं इसलिये नमाज भी पढ़ो और इन बड़ो का ख्याल भी रखो। इसके तसव्वुर मे भी नही आया कि अल्लाह कितने बड़े है, हालॉकि दोनो बड़ाईयों मे फर्क है कि एक आदमी के पॉच लड़के है वो लड़को का तआरूफ करा रहा है कि एक ये मेरा बच्चा है और ये वाला इससे बड़ा और ये वाला इससे बड़ा और ये वाला सबसे बड़ा है। अरे ! ये बड़ाई और है ये बच्चा होने की वजह से छोटा रहेगा, तुम तो एक डिब्बे को भी बड़ा डिब्बा कहते हो, पहाड़ को भी बड़ा पहाड़ कहते हो, जमीन आसमान को भी बड़ा कहते हो और अल्लाह को भी बड़ा कहते हो तो इस बड़ाई को कहने से तुम्हारा क्या मतलब है, कौन बड़ा है ?

अल्लाह के सामने सारे जमीन व आसमान मिलकर एक जर्रा भी नही हैं, तुम मस्जिद मे बैठकर अल्लाह की बड़ाई को बोलो, अल्लाह की बड़ाई को सुनो, अल्लाह की बड़ाई को पढ़ो और अल्लाह की बड़ाई का मुराकबा करो कि ईमान की मज्लिस मे आओ, इल्म के हल्को मे बैठो और जिक्र करो, तब समझ मे आयेगा कि उनकी बड़ाई क्या है ? ये सब मस्जिद के आमाल है। अल्लाह के 99 सिफात वाले नाम हैं वो हर सिफात मे बड़े है, अल्लाह अपनी कुदरत के साथ खालिक हैं शक्लों के साथ नही कि मियॉ बीबी होगें तो बच्चा पैदा होगा, मियॉ बीबी से बच्चा पैदा करना ये अल्लाह की आदत है इसको कुदरत नही कहते, कुदरत ये है कि वो मियॉ बीबी के बगैर बच्चा पैदा करते हैं। अल्लाह अपनी कुदरत के लिये शक्लों के मोहताज नही है वो اللَّهُ الصَّمَدُ हैं चीजें अल्लाह की मोहताज है। ये ईमान तब आयेगा जब मस्जिद मे बैठकर अल्लाह की सिफात को सुनेगा, उनकी कुदरत और ताकत के इस्तेमाल को सुनेगा, उनके फैसले पर कौमे कैसे तबाह हो गयी, उनके फैसले से किस तरह मुल्कों के नक्शे बदल गये। जब नमाज पढ़कर अल्लाह से मॉगेगा तो जो ऊँचे हैं उनको नीचे कर देगें, जो हस रहे हैं उन्हे रूला देगें फिर तुम अपने यकीन के ऐतबार से सब कुछ बदलता हुआ देखोगे। नमाज का नम्बर चौथा है पहले اللَّهُ اَكَبَرُ फिर لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ की गवाही फिर مُحَمَّدًا رَسُولُ الله की गवाही अब "हयया लस्सलाह" इसलिये सबसे पहले अल्लाह की बड़ाई का यकीन पैदा करो, तौहीद पैदा करो कि वो तन्हा बड़े है, अल्लाह के अलावा जो कुछ है उसकी छोटाई का तसव्वुर पैदा करो। अल्लाह के अलावा को छोटा बोलने से ही अल्लाह की बड़ाई का यकीन पैदा होगा, मुहम्मद सल्ल0 के तरीका ए अमल पर जिन्दगी को लाना कि सर से लेकर पैर तक के हर आजा के अमल को ठीक करते हुए नमाज पढ़कर अल्लाह से मॉगो तो जो मॉगोगे अल्लाह करके दिखायेगें "हयया लस्सलाह" से पहले जितनी आवाजे सुन रहे हो वो सब यकीन और अमल बनाने की आवाजे है "हयया लस्सलाह" उसके बाद है।

अब इल्म हासिल करो कलिमे और नमाज का कि कलिमे नमाज से क्या क्या हो सकता है ? सना से क्या होगा ? तकबीर से क्या होगा ? रूकुउ से क्या होगा ? सज्दे स क्या होगा ? हुजूर सल्ल0 ने हर चीज के बारे मे बतला दिया है अभी तक तुमने बाहर की चीजों से होता देखा है, अभी तुम कुरआन व हदीस से होना नही जानते। दिल की ऑखे खोलकर मस्जिद मे आकर बैठो और अल्लाह के जिक्र से ऐसा ध्यान पैदा करो कि बाहर देखने से जो ध्यान आता है वो बिल्कुल निकल जाये और हुजूर सल्ल0 ने जो बतलाया है बगैर देखे उसका ध्यान जम जाये। जो ध्यान इन्सान के अन्दर ऑखों से देखकर बनता है उसका नाम गफलत है और हुजूर सल्ल0 ने जो बतलाया बगैर देखे उसका ध्यान आना इसका नाम जिक्र है। ईमान की मज्लिसो मे बैठकर ईमान को सीख लो, इल्म की मज्लिसों मे बैठकर इल्म को सीख लो, जिक्र की मज्लिसों मे बैठकर ध्यान को सीख लो फिर नमाज पढ़ो,

إِنِّي وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِي فَطَرَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ حَنِيفًا وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ

अन्दर बाहर हर तरफ से रूख फेर कर मैं अल्लाह की तरफ रूख कर रहा हूँ अब अपने सारे मामलात का तआल्लुक

अल्लाह से जोड़ो फिर सना पढ़ो, उनकी सिफात बयान करो फिर पढ़ो

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ مَالِكِ يَوْمِ الدِّينِ

फैसले वाले दिन का मालिक है फैसले तो वो हर रोज देता है लेकिन थोड़े दिन के लिये फिर बाद मे फैसला बदल भी देता है लेकिन कयामत के दिन जो फैसला देगा वो हमेशा के लिये होगा वो फैसला कभी बदला ना जायेगा। वो हमेशा के लिये बहुत बेहतर परवरिश होने का फैसला देगा मगर इस पर देगा إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ कि उसी की मानकर और उसी से मॉगने पर मिलेगा, जो हम मॉगेगें उसी पर फैसला देगा और उससे भी ज्यादा देगा। बस अब चीजों से हटकर अल्लाह के हुक्मों पर मेहनत करो, कमाना सीखने की चीज नही बल्कि अल्लाह के हुक्मों पर चलना सीखने की चीज है। इसलिये अल्लाह के हुक्मों पर मेहनत करो वरना तुम्हारी छोटी छोटी हरकतों से तुम्हारा मुल्क खतरों मे है किसी वक्त भी नाकामियों के फैसले हो सकते है, अब अगर लोग मुहम्मद सल्ल0 के तरीका ए अमल पर जिन्दगी को लाने की कोशिश नही करेगें तो सारे आलम के हालात की खराबी का फैसला खुदा कर देगें। ऐसे फैसले होगें कि सबको छटटी का दूध याद आ जायेगा, आलम के हालात पलटने को हैं, इन्सानो का खून बहने को है, तुम इसकी मेहनत करो कि अल्लाह का फैसला बदल जाये, हमारे बचाओ और हमारी फलाह का फैसला हो जाये। इसके लिये वक्त मॉगा जा रहा है कि निकल कर ये मेहनतें कर लो और अल्लाह से कह कर अपने बचाओ के फैसले करा लो, लोग हजार काम करने के लिये तैयार है पर इस काम को करने की उनको फुर्सत नही, इन हजार कामों से फुर्सत के दरवाजे नही खुलेगें, हुजूर सल्ल0 की मेहनत के तरीके पर ही आलम के हालात बदलेगें अब खड़े होकर बताओ इसके लिये कौन कौन तैयार है।

किताब का नाम - अहम बयानात हजरत मौलाना यूसुफ सा0 रह0

हजरत मौलाना यूसुफ साहब रह0

बाद नमाज फज्र बंगले वाली मस्जिद

19 अक्टूबर सन 1961

हकीकी नूर हासिल करने का तरीका

بِسْمِاللّٰهِالرَّحْمٰنِالرَّحِيْمِ

मेरे अज़ीज़ो और दोस्तों ! जमीन व आसमान के अन्दर की सारी चीजें एक तयशुदा वक्त के लिये बनी है, इन सबको अपने अपने वक्त पर खत्म होना है, इन खत्म होने वाली चीजों को देखने के लिये अल्लाह ने खत्म होन वाली रौशनी दी है। रौशनियाँ दो हैं - एक रौशनी वो है जो चाँद और सूरज से आती है, ये रौशनी वक्ती है और सिर्फ कयामत तक के लिये है, जब कयामत कायम होगी तो इसकी रौशनी सलब कर ली जायेगी अगर चाँद और सूरज की रौशनी ना हो तो ये चीजें तुम्हे नजर नही आयेगीं फिर ये इन्सान सोने चाँदी की ईट पर थूक देगा या इनके ऊपर से पैर रखते हुए चला जायेगा, रौशनी ना होने की वजह से इसे खूबसूरती और बदसूरती नजर ना आयेगी और ना ही ये जहर और तिरयाक को पहचान सकेगा। ऐसा होन पर इन्सान को चीजें नजर नही आयेगीं, जब चीजें नजर नही आयेगीं तो चीजों से होता हुआ भी नजर नही आयेगा तो उनकी तलब भी पैदा ना होगी। इन्सान को इस खत्म होने वाली रौशनी मे खत्म होने वाली चीजें दिखती है जिसकी वजह से इन्सान के अन्दर चीजों की तलब पैदा होती है फिर इन्ही चीजों को हासिल करने के लिये इन्सान अपनी जान लगा देता है।

इसी तरह अल्लाह तआला ने एक दूसरी किस्म की रौशनी का सिलसिला कायम किया है जिसकी रौशनी मे आमाल दिखायी देते है, हराम हलाल दिखायी देता है, बदअमलियों की और आमाल ए सालिहा की कीमत दिखायी देती है, ये रौशनी अल्लाह का नूर है

اللَّهُ نُورُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ

ये नूर हमेशा रहने वाला है जो कभी खत्म ना होगा, इस नूर मे खत्म होने वाली चीजें नही दिखायी देती बल्कि इस नूर मे हमेशा के लिये बाकी रहने वाली चीजें दिखायी देती हैं, इस नूर मे चीजों से होना दिखायो नही देता बल्कि आमाल से होना दिखायी देता है। जब ये नूर रूह मे आता है तो रूह नूरानी बनती है, इन्सान के साथ जो कुछ मामला किया जाता है वो रूह के नूरानी या स्याह होने की बुनियाद पर किया जाता है। जिस इन्सान की रूह नूरानी होगी उसको राहत दी जायेगी, उसको कामयाबियों से नवाजा जायेगा और उसका इकराम होगा लेकिन जिस इन्सान की रूह स्याह (काली) होगी उसको तकलीफ और मुसीबतों मे डाला जायेगा, उसको जलील और रूसवा किया जायेगा। इन्सानों को तीन आलमो मे कामयाबियों या नाकामियों मे रहना पड़ेगा और इन तीनो जगह की जिन्दगी अलग अलग है, पहली जिन्दगी आलम ए दुनियाँ की जहाँ बहुत थोड़े दिन रहना है फिर दूसरा ठिकाना आलम ए बर्जख का जहाँ कयामत तक इन्सान को रहना है और फिर हमेशा के रहने के लिये आलम ए आखिरत, इन तीनों की नवईयत जुदा जुदा है। दुनियाँ मे इन्सान अपने जिस्म से जो अमल कर रहा है उसका असर रूह पर पड़ता है, आमाल नूरानी हैं तो रूह नूरानी बन रही है, रूह मे चमक आ रही है, खुशबू आ रही है, कयामत मे रूह का नूर इसके आगे आगे चलेगा।

يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ يَسْعَىٰ نُورُهُمْ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ

सूरह हदीद 12

कयामत के दिन आदमी अपने नूर की रौशनी मे चलेगा जिस तरह कार अपनी रौशनी मे चलती है किसी दूसरी कार की रौशनी मे नही चल सकती, कयामत मे बेनूर वाले नूर वालों से कहेगें जरा ठहर जाओ हम भी तुम्हारे नूर मे चलेगें,

يَوْمَ يَقُولُ الْمُنَافِقُونَ وَالْمُنَافِقَاتُ لِلَّذِينَ آمَنُوا انْظُرُونَا نَقْتَبِسْ مِنْ نُورِكُمْ قِيلَ ارْجِعُوا وَرَاءَكُمْ فَالْتَمِسُوا نُورًا

सूरह हदीद 13

कहा जायेगा वापस लौटो और अपना नूर खुद लेकर आओ, यहॉ दूसरे की रौशनी मे नही चला जाता है अपने अपने नूर मे चला जाता है फिर वो बेनूर लोग चिल्लायेंगें अरे भाई ! क्या हम दुनियॉ मे तुम्हारे साथ नही थे ? क्या हम तालीम मे तुम्हारे साथ नही थे ? क्या हम मदरसे मे तुम्हारे साथ नही थे ? क्या हम गश्त मे तुम्हारे साथ नही थे ? क्या हम तब्लीग मे तुम्हारे साथ नही थे ? तुमने ऐसा क्या किया कि तुम्हारे पास तो नूर है और हमारे पास नही, वो जवाब देगें

قَالُوا بَلَىٰ وَلَٰكِنَّكُمْ فَتَنْتُمْ

सूरह हदीद 14

तुम्हारे नक्शों ने तुम्हे फित्नों मे डाल दिया, तुम्हे धोखे मे डाल दिया, तुम दुनियॉ के लिये कर रहे थे तुम्हारी नियत खराब थी, तुमने अल्लाह के वास्ते अमल नही किया। मेरे अजीजों ये नूर उन लोगों को मिलता है जो अल्लाह के वास्ते करते हैं, ये नूर हकीकत है लेकिन ये नूर ना होने की वजह से आज हमे नमाज से होता दिखायी नही देता, आमाल ए सालिहा की कीमत दिखायी नही देती, कुरआन की तिलावत मे नफा नजर नही आता। जब ये नूर हासिल हो जायेगा तो मुल्क व माल के नक्शों म नफा नजर नही आयेगा, ओहदों मे कामयाबी दिखायी नही देगी, सिर्फ आमाल मे कामयाबी दिखायी देगी फिर ये चीजों की परवाह नही करेगा चीजें चाहे बने या बिगड़े। ये तो अमल बनाने मे लगेगा अगर ये हकीकी नूर नही मिला तो इसे मुल्क व माल के नक्शों मे कामयाबी दिखायी दगी फिर आदमी अपने अमल बिगाड़ते चला जायेगा, नाकामियों मे घिरता चला जायेगा अगर बगैर तौबा किये हुए मर गया और इस अन्धेरे को जो इसके अन्दर है रो रोकर दूर ना किया और मेहनत करके वो नूर हासिल ना किया तो बड़ी मुसीबत मे फसेगा।

कुरआन के एक एक हर्फ मे अल्लाह ने नूर रखा है, इतना नूर रखा है कि अगर एक हर्फ के नूर को जाहिर कर दिया जाये तो सूरज काला नजर आयेगा लेकिन इन्सान की रूह मे ये नूर कुरआन पर मेहनत करने से आता है सिर्फ कुरआन को पढ़ लेने या जान लेने से ये नूर नही आता बल्कि अल्लाह ने कुरआन पर जिस तरह मेहनत करने को बतलाया है उस तरह मेहनत करने से ये नूर आता है, यही वजह है कि आज कुरआन पढ़े हुए बहुत से लोग बुरे आमाल मे मुब्तिला है। शुरू जमाने मे इसका बहुत एहतमाम किया जाता था कि

बुरे अमल वाले इन्सान से कुरआन ना पढ़ा जाये,

किसी फासिक से हदीस ना पढ़ी जाय,

जुल्मत वालों की लिखी हुई कोई किताब ना पढ़ी जाये, चाहे उसने तफसीर लिखी हो या हदीस लिखी हो, आजकल लोग सीरत पर काफिरों से तकरीर कराते हैं। अरे गधे ! उसकी अच्छी बातों से भी तुम्हारे अन्दर नूर नही बल्कि जुल्मत पैदा होगी। इसलिये खाली कुरआन को पढ़ लेने से अमल नही आयेगा चाहे सारी फिक्ह,

तफसीर, हदीस और फलसफा चाट डालो अमल नही आयेगा, अमल तो उस वक्त आयेगा जब तुम्हारे अन्दर अल्लाह का नूर आयेगा और ये नूर कुरआन और हदीस पर सही मेहनत करने से आता है। जब ये नूर अन्दर आ जायेगा तो चीजो से होना नजर नहो आयेगा बल्कि अमल से होना नजर आयेगा, जिस तरह सूरज की रौशनी मे अगर बिजली का बल्ब जला दिया जाये तो बल्ब की रौशनी दिखलायी नही देती सिर्फ धूप ही धूप नजर आती है। इसी तरह जब हकीकी नूर आता है तो बाकी रौशनियॉ दिखलायी नही देती फिर उसको सूरज की रौशनी मे जो कुछ दिखायी देता था अब इसे वो दिखलायी नही देगा, इसलिये इस नूर को हासिल करना अमलों का इल्म हासिल करने से भी ज्यादा जरूरी है कि दीन का इल्म हसिल करने से ज्यादा जरूरी इस नूर को हासिल करना। ये नूर अगर आपके दिल मे आ गया तो दुकान और खेत मे कामयाबी नही दिखायी देगी बल्कि दुकानों और खेतों मे फिरते हुए अच्छे अमलों मे कामयाबी नजर आयेगी फिर आप दुकानों और खेतों के ऐतबार से अमल नही करेगें। आज सूद और झूठ से चीजे बन रही हैं लेकिन अमल बिगड़ रहे है, जब आपको अमलों मे कामयाबी नजर आयेगी तो फिर आप झूठ नही बोलेगें, सूद नही लेगें, धोखा नही देगें, चाहे चीजें रहें या ना रहें अगर आपने कामयाबी वाले अमलों को किया तो ये नूर और बढ़ जायेगा और अगर आपकी चीजें छिन भी गयीं तो अल्लाह आपको बगैर कमाये देगा। अगर आपने चीजों के ऐतबार से अमल खराब कर दिया फिर बावजूद कमाईयों के आप नाकामियों मे फसेगें और मुसीबतों से पाला पड़ेगा तो सबसे पहला मसअला इस नूर के हासिल करने का है अगर ये नूर हासिल नही किया और जमीन व सामान के चक्कर मे पड़ रहे और माल हासिल करने मे लगे रहे तो खेत आपके हाथ मे आ जायेगा, दुकान आपके हाथ मे आ जायेगी और सब कुछ हाथों मे लेकर ये हाय हाय करता फिरेगा अगर ज्यादा गड़बड़ की तो खुदा किसी दिन सैलाब या जलजले लाकर इन नक्शों को तोड़ देगा।

فَأَصَابَهَا إِعْصَارٌ فِيهِ نَارٌ فَاحْتَرَقَتْ

सूरह बकरा 266

जब आमाल वाले बनेगें तो लोगों के हाथों से जो नक्शे बन रहे है या हुकूमतें जो नक्शे बना रही हैं या ये सरमायेदार जो नक्शे बना रहे है, ये सबके सब तुम्हारे सामने धड़ाम से टूट जायेगें। इसलिये सबसे पहला मसअला नूर आने का है कि हमारे दिल मे अल्लाह का नूर आ जाये ताकि कामयाबी हजरत मुहम्मद सल्ल0 के अमलो मे दिखलायी देने लगे।

ये नूर कहॉ मिलता है ?

ये नूर मस्जिदों मे मिलता है कि इस नूर को लेने के लिये मस्जिदें बनायी गयीं,

فِي بُيُوتٍ أَذِنَ اللَّهُ أَنْ تُرْفَعَ وَيُذْكَرَ فِيهَا اسْمُهُ يُسَبِّحُ لَهُ فِيهَا بِالْغُدُوِّ وَالْآصَالِ

सूरह नूर 36

ये नूर उन घरों मे मिलता है जिनमे खुदा का तज्किरा किया जाता है, नमाजों का अमल होता है यानी ये नूर मस्जिद मे मिलता है।

رِجَالٌ لَا تُلْهِيهِمْ تِجَارَةٌ وَلَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ وَإِقَامِ الصَّلَاةِ وَإِيتَاءِ الزَّكَاةِ

सूर नूर 37

लेकिन इस घर मे आने वाले हर शख्स को ये नूर नही मिलता, ये नूर सिर्फ उन्ही मस्जिद आने वाले लोगों को मिलता है जिनकी तिजारत और दुनियॅा के मशगल अल्लाह के तज्किरे करने से नही रोकते या नमाजों को कायम करने से नही रोकते और ये आने वाले उस दिन से डरते हैं जिस दिन दिल पलट दिये जायेगें, आखें पलट दी जायेगीं

يَخَافُونَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِيهِ الْقُلُوبُ وَالْأَبْصَارُ

सूरह नूर 37

जो बाहर का मसअला छोड़कर मस्जिद मे ना आये उनकी मिसाल क्या है ?

وَالَّذِينَ كَفَرُوا أَعْمَالُهُمْ كَسَرَابٍ بِقِيعَةٍ يَحْسَبُهُ الظَّمْآنُ مَاءً حَتَّىٰ إِذَا جَاءَهُ لَمْ يَجِدْهُ شَيْئًا وَوَجَدَ اللَّهَ عِنْدَهُ فَوَفَّاهُ حِسَابَهُ وَاللَّهُ سَرِيعُ الْحِسَابِ

सूरह नूर 39

काफिरों के अमल ऐसे हैं जैसे रेत कि जिसे देखकर (रेत दूर से दिखने पर पानी जैसी नजर आती है) प्यासा पानी समझकर दौड़ता है और जब उस रेत के करीब पहुॅचता है तो पानी आगे दिखायी देता है, करीब पहुॅचकर फिर आगे दौड़ता है यहॅा तक कि दौड़ते दौड़त प्यासा मर जाता है अगर इन्सान मुल्क व माल पर मेहनत करता रहा तो उसे कामयाबी का धोखा दिखायी देता रहेगा कि पॅाच साल मे ये करूॅगा और दस साल मे ये करूॅगा लेकिन एक दिन का तूफान या जमीन पर जलजले का एक झटका, एक लम्हे मे इसके सोचे हुए सारे प्लान पर पानी फेर देगा। इसलिये कि तुम प्लान वालों के साथ हो अमल वालो के साथ नही हो अगर आज मुल्क व माल वाले यूॅ प्लान कर दे कि इतनी जमीन ले लो और खूब खाओ कमाओ, खर्चा भी हमसे लो तो तुम इस ऐलान पर ऐसे दौड़ोगे कि खुदा ने ऐलान फरमाया है। तुम अभी प्लान वालों मे हो, अमल वाले नही बने क्यों कि तुम्हे ये पानी ही दिखायी देता है पर हकीकत मे जिसे तुम पानी समझ रहे हो ये रेत है और इतना ही नही

وَاللَّهُ سَرِيعُ الْحِسَابِ

खुदा इसका बहुत जल्द हिसाब लेगें कि नेमेतों से फायदा भी नही उठाया और हिसाब अलग दो, खुदा ने काफिरों के अमल की एक मिसाल और दी है

أَوْ كَظُلُمَاتٍ فِي بَحْرٍ لُجِّيٍّ يَغْشَاهُ مَوْجٌ مِنْ فَوْقِهِ مَوْجٌ مِنْ فَوْقِهِ سَحَابٌ

सूरह नूर 40

इस आयत मे अल्लाह ने काफिरों के अमल से पैदा होने वाले अन्धेरों की मिसाल दी है कि ऐसा अन्धेरा जो रात को गहरे समन्दर मे होता है जब कि ऐसा तूफानी मौसम हो कि मौज के ऊपर मौज और मौजों के ऊपर गहरे काले बादल, इतना अन्धेरा कि अपना हाथ भी दिखायी नही देता। अल्लाह जिसे अपना नूर ना दे तो उसे ये नूर कहीं और से नही मिलेगा,

أَوَ مَن كَانَ مَيْتاً فَأَحْيَيْنَاهُ وَجَعَلْنَا لَهُ نُوراً يَمْشِي بِهِ فِي النَّاسِ كَمَن مَّثَلُهُ

فِي الظُّلُمَاتِ لَيْسَ بِخَارِجٍ مِّنْهَا كَذَلِكَ زُيِّنَ لِلْكَافِرِينَ مَا كَانُواْ يَعْمَلُونَ

(सूरः अनआम-123)

ऐसा शख्स जो पहले मुर्दा था फिर हमने उसको जिन्दा बना दिया और हमने उसको एक ऐसा नूर अता कर दिया जिस नूर को लेकर वो हमारे बन्दों के बीच चलता फिरता है। क्या ये उस शख्स की तरह हो सकता है जिसकी हालत ये है कि वो अंधेरियों मे हो और उन अंधेरियों से निकलना ही नही चाहता ?

ये नूर दुनियॉ की चीजों से नही मिलता बल्कि इस नूर को आसमानों के ऊपर से हासिल करने की तीन शर्ते है, पहली शर्त यकीन जमाकर अमल करो कि काम अमल से बनेगें, कामयाबी अमल से मिलेगी।
दूसरी शर्त अमल सिर्फ अल्लाह के लिये हो।
तीसरी शर्त अमल हुजूर सल्ल0 जैसा हो।
यानी ईमान, एख्लास और इल्म, जब इन शर्तो को पूरा करते हुए अमल किया जायेगा तब नूर मिलेगा अगर अमल को इन शर्तो के साथ पूरा ना किया गया तो सिर्फ अमल करने से ये नूर ना मिलेगा। जितना जितना इन शर्तो पर अमल करता चला जायेगा उतना उतना ये नूर बढ़ता चला जायेगा यहॉ तक कि इसकी रूह जगमगा उठेगी, अब जहॉ इसे कोई जरूरत पड़ी बस दो रकआत नमाज का अमल करके अल्लाह से मॉग लेगा, जहॉ कोई मुसीबत पड़ी सदका देकर बलाओं को दूर कर देगा, जहॉ कोइ परेशानी आयी अल्लाह के जिक्र मे मश्गूल हो जायेगा, जहॉ कोई खौफ या खतरा नजर आया ये झट से मस्जिद की तरफ दौड़ेगा कि लोग हुक्काम की तरफ दौड़ेगें, हुक्काम सामान की तरफ दौड़ेगें और ये मस्जिद की तरफ दौड़ेगा। जिस दिन तुम पर अमलों से लेने का दरवाजा खुल जायेगा तो ये सारी हुकूमतें तुम्हे अहमक नजर आयेगीं, एक दिन एक आदमी यहॉ मस्जिद के बाहर आने जाने वालों से कागज पर दस्तखत करा रहा था, पूछने पर बतलाया कि हम ये कागज रूस और अमरीका भेजेगें ताकि ये लोग दुनियॉ मे कहीं अपने खतरनाक हथियार का इस्तेमाल ना करे। उस बेवकूफ शख्स से पूछो कि तुम्हारे पास तो सिर्फ एक डन्डा है पर उस डन्डे को जुल्म करने मे इस्तेमाल करने से तुम नही रूकते तो अपने हथियार को इस्तेमाल करने से रूस और अमरीका भला क्यों रूक जायेगें ? हॉ मैं जो तुम्हे बतला रहा हूँ तुम अगर जरा सा इस पर आ जाओ तो ये रूस और अमरीका के सारे हथियार बेअसर हो जायेगें। तुम जरा सा अगर हमारी बात मान जाओ तो हम रूस और अमरीका को चैलेजं करेगें कि तुम अपने ऐटमबम दिल्ली मे गिराओ तो ऐटमबम गिरने से यहॉ कुछ ना होगा बल्कि यहॉ ऐटमबम और ऐटमबम गिराने वालों को लाशें दिखायी देगीं, तुम अमल वाले लोग यहॉ ये मंजर अपनी आखों से देख रहे होगे कि बेअमल ऐटमबम गिराने वाले अपने ऐटमबम के साथ यहॉ कैसे तड़प रहे हैं कि उन्ही की जूती और उन्ही का सर।
इसलिये तुम कुरआन पर अमल करने वाले बनो तब ये नूर तुम्हारे अन्दर आयेगा, हमारे अन्दर ये नूर आना शुरू हो इसके लिये खुदा ने पहले कुछ अमल दिये हैं जिन अमलों के करने से ये नूर हमारे अन्दर आना शुरू होगा तो वो पहले करने के क्या अमल हैं ? ये पहले करने के अमल वही हैं जिन्हे हम तब्लीग मे बताते हैं जिसमे सबसे पहले لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ के यकीन की और अमल को ठीक करने की दावत कि दावत के जरिये पहले खुद इस कलिमे का यकीन सीखो और अपने अमल ठीक करो फिर दूसरों को भी कलिमे का यकीन सिखलाओ कि ऐटम से नही होगा, राकेट से नही होगा, दुनियॉ के किसी नक्शों से नही होगा सिर्फ अल्लाह से होगा, इसका नाम है لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ पर ये याद रखना कि कलिमे का बोल किसी शिर्कत के साथ कुबूल नही होता, इसके लिये तौहीद लाना पड़ेगा कि अमरीका से भी होता है, रूस से भी होता है, राकेट से भी होता है और अल्लाह से भी होता है, ये कुबूल नही होगा या फिर अल्लाह किले से मेरी हिफाजत करेगें, हथियार से मेरी हिफाजत करेगें नही बल्कि अल्लाह अपनी कुदरत से मेरी हिफाजत करेगें ये कुबूल होगा इसलिये तौहीद जरूरी

है। अल्लाह मुझे कामयाब करेगें माल से, अल्लाह मुझे कामयाब करेगें शक्लों से यह भी शिर्क है, اَللّٰهُ الصَّمَدُ क्यों कि अल्लाह तो समद हैं वो शक्लों से बेनियाज हैं, वो शक्लों के बगैर अपनी कुदरत से हिफाजत करते है, यह है वो दावत जिसे अम्बिया अलै0 लेकर आते थे। इसलिये आज जब मैं दावत के अमल मे लगूँगा तो मेरी आमदनी टूटेगी, आमदनी के टूटने पर अल्लाह मेरा खर्चा उठाएगें, जब हम इस यकीन की दावत देगें तो ये नूर हमारे अन्दर आयेगा और कामयाबियों के दरवाजे खुलेगें।

मूसा अलै0 ने किस कौम को दावत दी थी ?

मूसा अलै0 ने नबियों की औलाद बनी इसराईल को दावत दी जो कौम पहले मुसलमान थी पर नस्ली मुसलमान होकर रह
गये थे।

मूसा अलै0 ने बनी इसराईल को क्या दावत दी ?

मूसा अलै0 ने बनी इसराईल से कहा कि जब तुम लोग अल्लाह को मानते हो तो चीजों पर भरोसा ना करो बल्कि अल्लाह पर भरोसा करना सीखो,

وَقَالَ مُوسَىٰ يَا قَوْمِ إِنْ كُنْتُمْ آمَنْتُمْ بِاللَّهِ فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوا إِنْ كُنْتُمْ مُسْلِمِينَ

सूरह यूनुस 84

तुम भी इसी की दावत दो कि जब अल्लाह को मानते हो तो उसकी कुदरत को अपने लिये इस्तेमाल करो, कुदरत मुहम्मद सल्ल0 वाले अमल पर इस्तेमाल होगी लेकिन कुदरत को इस्तेमाल करने से पहले कुदरत का यकीन सीख लो और कुदरत का यकीन पैदा होगा शक्लों की तरदीद करने से।

क्या मतलब है शक्लों की तरदीद करने से ?

शक्लों की तरदीद ये है कि अल्लाह किसी शक्ल के मोहताज नही हैं वो जो कुछ करते हैं अपनी कुदरत स करते हैं वो भैंस बनाने के लिये भैंस के मोहताज नही हैं, पहली भैंस कैसे बनायी ? पहला गेहूँ कैसे बनाया ? अल्लाह ने हर चीज की इब्तेदा अपनी कुदरत से की है और आज भी उसी कुदरत के मालिक हैं। कुदरत अल्लाह की सिफत है, अब चाहें तो गेहूँ से गेहूँ बनाकर दें या मिटटी को गेहूँ बना दें, हर चीज उसके हुक्म से वजूद मे आती है इसलिये शक्लों से शक्लों के बनने की तरदीद करो, आज जो कुछ शक्लों से होता नजर आ रहा है, वो शक्लों से नही बनता अल्लाह के चाह लेने से बनता है। तुम शक्लों के बीच मे खड़े होकर जोर से आवाज लगाओ,

"ला इलाहा इल्लल्लाहु वहदहु ला शरीका लहु, लहुल्मुल्को व लहुल्हम्दो वहुवा अला कुल्ली शैइन कदीर"

चॉदनी चौक के बाजार मे एक बार ये कलिमा जोर से कहो तो दस लाख गुनाह माफ होगें, दस लाख नेकियॉ लिखी जायेगी और दस लाख दरजात बुल्नद हो जायेगें। अब अगर इसी कलिमे को चुपके चुपके मस्जिद के कोने मे बैठकर पढ़ो तो दस गुनाह माफ होगें, दस नेकियॉ लिखी जायेगी और दस दरजात बुल्नद हो जायेगें ऐसा क्यों ? ऐसा इसलिये कि मस्जिद मे चीजें सामने नही है तब चीजों से ना होना बोल रहो और बाजार मे चीजें चमक दमक के साथ तुम्हारे दिल को अपनी तरफ खींच रही हैं तुम उस मुखालिफ माहौल मे खड़े होकर बाजार मे कह रहे हो कि "इन चीजों से नही हो रहा अल्लाह बगैर किसी की शिर्कत के सिर्फ अपनी कुदरत से कर रहे हैं, ये सारी कायनात अल्लाह की मिल्क है, सारे कमालात के काबिल सिर्फ अल्लाह की जात है क्यों कि वो जब चाहें, जहॉ चाहें, जैसे चाहें और जो चाहें करने पर कादिर हैं।" जब तुम बाजार मे खड़े होकर ये कह रहे होते

हो उस वक्त अल्लाह अर्श पर वाह वाह कहता है और फरिश्तों को हुक्म देता है कि मेरे इस बन्दे के लिये दस लाख नेकिया लिखो जो दुकान मे है और कह रहा कि दुकान से कुछ नही होता, दुकान है और उसी को लात मार कर कहो कि इससे कुछ नही होता ये कहते हुए अल्लाह के रास्ते मे निकल जाओ, अल्लाह के रास्ते मे निकलना चीजो की तरदीद करने के वास्ते है कि हम अल्लाह के रास्ते मे निकल कर दिल व अमल से चीजो की तरदीद करे सिर्फ जुबान से कहना काफी नही है कि दिल मे तो ये है कि कारखाना हाथ आ जाये तो काम बन जाये और जुबान पर है "لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللّٰهُ" इस तरह कहने से ये नूर दिल मे नही आयेगा। दिल से कहो और डन्के की चोट पर कहो कि दुकान से कुछ नही होता और कारखानों से कुछ नही होता, जो इस तरह शक्लों को छोड़कर कलिमा सीखने पर मेहनत करेगा उसको ये नूर हासिल होगा और वही लोग कामयाब होगें। लेकिन जो इस तरह ना करें ऐसे लोग तबाह और बर्बाद होगें, तुम मुल्क व माल वालों के मोहताज नही हो, जो लोग कलिमा सीख जायेगें ये मुल्क व माल वाले उनका एक बाल भी बांका ना कर सकेगें। जो लोग कलिमे पर एतमाद रखते है अगर पूरे मुल्क मे आग लग जाये इनमे से एक फर्द भी इस आग से ना मिटेगा और बेकलिमा वालों का इस आग से एक बाल भी ना बचेगा।

ये सारे बड़े बड़े निजाम जो तुम्हारे सामने मौजूद हैं एक लम्हे के लिये भी तुम्हे इसकी जरूरत नही है, खुदा इस सारे निजाम को खत्म कर देगें, इस निजाम को तोड़ देगें। किसी ने एक आदमी से पूछा कि अगर कहीं पर तीर चल रहे हों तो वहॉ पर बगैर तीरों के कैसे बचा जा सकता ह ? फरमाया ! जमीन पर लेट जाओ और लेटकर तीरों की तरदीद करो। इसलिये दावत के रास्ते मे तुम किसी शक्ल से मायल ना हो, कोई नक्शा तुम्हे अपनी तरफ ना खीचे, सिर्फ अल्लाह ही से होने पर यकीन लाओ अगर दिल चीजों के यकीन वाला है तो जब चीजे टूटेगीं तो दिल भी ट्टेगा कि निकले थे जमात मे और घर से आ गया खत कि बीबी की टॉग टूट गयी है जल्दी से घर वापस आ जाओ। अब ये अमीर साहब के पास रोता हुआ आया कि अमीर साहब मेरी बीबी की टॉग टूट गयी है मैं घर वापस जा रहा हूँ, अरे ! घर क्यों वापस जा रहा है, क्या बीबी की टॉग तू जोड़ेगा ? ये बता अल्लाह ने तेरी औरत तेरे भरोसे पर बनायी है या अपने भरोसे पर बनायी है ? तेरी बीबी का रब तू है या रब अल्लाह है ? अरे ! रब की राह मे मेहनत कर और रब ही से मॉग तो वो रब अब तेरे हक मे अपनी ताकत का इस्तेमाल करेगा और जाहिर के खिलाफ तेरी बीबी की टॉग जोड़ देगा, इसलिये इस यकीन को पैदा करने की मेहनत करो।

अरे ! अगर तू करने वाला होता तो तेरे घर की ये हालत क्यों होती ? सारी जिन्दगी घर के लिये मेहनत करते करते गुजर गयी कि मैं ऐसा बन जाऊॅ और वैसा बन जाऊॅ पर आजतक तो बना नही। अब भी तेरी समझ मे नही आ रहा है कि करने वाला तू नही कोई और है, तेरे दिमाग मे आखिर कितना कूड़ा भरा है कि करने वाले को अब तक नही पहचाना, उसे पहचानने पर ही तेरे साथ खैर का मामला होगा फिर वो तेरे काम बनाकर दिखलायेगा। देख भाई तेरे मेहनत करन के बावजूद तेरा दुनियॉ का काम इसलिये नही हो रहा है ताकि तू पहचान ले कि करने वाला कोई और है। इसलिये इस रास्ते मे इतना फिरो इतना फिरो कि करने वाले को पहचान जाओ कि करने वाला सिर्फ अल्लाह है फिर वो अल्लाह तुम्हारे अन्दर ये नूर डालेगा जिस नूर मे तुम्हे वो नजर आयेगा जो आज चॉद सूरज की रौशनी मे नजर नही आ रहा है फिर ये नूर इतना बढ़ जायेगा जहॉ तक तुम नही जा सकते, ये नूर पार्लियामेन्ट मे घुसकर दिलों मे उतरेगा, ये नूर उन अडडों मे घुस जायेगा जो संगीनों के पहरो मे बन्द हों अगर कोई हवाई जहाज तुम्हारे ऊपर से गुजर जायेगा तो ये नूर उसमे भी घुस जायेगा। तुम्हारे इस नूर से जितनों को पलटना होगा वो पलट जायेगें और जिनको को पलटना ना होगा तो ऐसे

लोग सैलाब या ऐटम से या बीमारियों को फैलाकर खत्म कर दिये जायेगें। अल्लाह कुदरत वाले हैं वो चाहे जैस करें, ये करना खुदा का काम है, तुम्हे हथियार नही उठाने पड़ेगें बस तुम्हारी दुआ होगी और उन्ही के हथियार आपस मे चलेगें। इस नूर को बढ़ाने के लिये अन्धेरे को दूर करने की दुआ करो, हमे तुम्हे सिर्फ इतना ही करना है बाकी सब अल्लाह करेगें, हमे तुम्हे हथियार नही उठाने पड़ेगें अगर डन्डा मारना ही हो तो मूसा अलै0 की तरह, अब बोलो इसके लिये कौन कौन तैयार है ?

किताब का नाम - अहम बयानात हजरत मौलाना यूसुफ सा0 रह0

हजरत मौलाना यूसुफ साहब रह0

बाद नमाज फज्र बंगले वाली मस्जिद

14 फरवरी सन 1960

अल्लाह के अहकामात को पूरा करने मे कामयाबी है

بِسْمِاللهِالرَّحْمٰنِالرَّحِيمِ

मेरे अज़ीज़ो और दोस्तों ! अल्लाह रब्बुल इज्जत के खजानों मे ला महदूद कामयाबियाँ है, इन कामयाबियों को हासिल करने के लिये इन्सान को पाकी हासिल करनी पड़ती है और पाकी हासिल होती है अल्लाह रब्बुल इज्जत के अहकाम को पूरा करने से और इन्सान अपनी जरूरतों को अपनी मर्जी से पूरा करने से नापाक हो जाता है कि जब हम बीबी के साथ सोहबत की जरूरत पूरी करते हैं तो हम सर से लेकर पैर तक नापाक हो जाते हैं या जब हम पेशाब पाखाना करते हैं तो नापाक हो जाते हैं, इसलिये इन्सान का अपनी जरूरतों को अपनी मर्जी से पूरा करना नापाक करता है और पाकी पैदा होती है अगर ये अपनी जरूरतों को अल्लाह की मर्जी पर पूरा करे। बीबी के साथ सोहबत की जरूरत पूरी करके हम सर से लेकर पैर तक नापाक हो जाते हैं पर वुजू और गुस्ल करके हम फिर पाक हो जाते हैं। क्यों ? क्यों कि वुजू और गुस्ल अल्लाह का हुक्म है, हुक्म को पूरा करने से पाकी वापस आ जाती है। आदमी पानी से पाक नही होता बल्कि अल्लाह का हुक्म पूरा करने से पाक होता है अगर अल्लाह ने पाकी का कोई और तरीका बता दिया होता तो सालों तक समन्दर मे नहाने के बावजूद आदमी नापाक रहता। अब अगर आदमी को पानी हासिल करने की कुदरत नही है तो तयम्मुम से पाकी हासिल की जा सकती है क्यों कि तयम्मुम भी अल्लाह का हुक्म है। इसलिये अल्लाह रब्बुल इज्जत के खजानों से लेने के लिये पाकी हासिल किये बगैर कोई काम नही हो सकता कि पहले पाकी हासिल करो फिर नमाज पढ़ो, नमाज शुरू से आखिर तक अहकाम की तकमील का नाम है। पहले वुजू का हुक्म फिर कयाम का, तिलावत का, रूकुउ, सज्दा और फिर कायदा का हुक्म तो शुरू से आखिर तक नमाज हुक्म के पूरा करने का एक नक्शा है, खुदा पाक है तो पाक से लेने के लिये अपने आपको पाक करने की जरूरत है।

खुदा के खजानों से चीजों के रास्ते से कुछ नही मिलता बल्कि खुदा से लेने के लिये पाक करने वाले आमाल के रास्ते से मिलता है, खुदा से नमाज के रास्ते से लेने के लिये सिर्फ वुजू और गुस्ल से पाकी काफी नही है बल्कि इन्सान को सबसे पहले शिर्क से पाक होना पड़ेगा और शिर्क से पाकी तवक्कुल (तवक्कुल खुदा की जात और उसकी बात पर भरोसा करने को कहते) से हासिल होगी फिर अल्लाह और रसूल की मुहब्बत इसे पूरी तरह पाक कर देगी।

शहवत किसे कहते हैं ?

चीजों से जरूरत पूरी करने का नाम शहवत है।

चीजे क्या है ?

قُلْ إِنْ كَانَ آبَاؤُكُمْ وَأَبْنَاؤُكُمْ وَإِخْوَانُكُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيرَتُكُمْ وَأَمْوَالٌ

इस आयत मे जो बतलाया गया है ये सारी चीजें इन्सान की जरूरतें है, खुदा इन आयात मे फरमा रहे है अगर ये शहवत तुम्हे अल्लाह और रसूल से ज्यादा महबूब हैं

فَتَرَبَّصُوا حَتَّىٰ يَأْتِيَ اللَّهُ بِأَمْرِهِ

इन्तेजार करो तुम्हारा फैसला होगा

इन्सान की मुहब्बत इन चीजो से दूर हो जाये और अल्लाह की मुहब्बत गालिब हो जाये तो ये इन्सान पाक है, यूँ फरमाया ! इन्सान आखिरत मे उसी के साथ होगा जिससे उसको मुहब्बत होगी। इन्सान के अन्दर से जूँ जूँ ख्वाहिशात और चीजों की मुहब्बत निकलती जाती है ईमान की तकमील होती जाती है, जब मुहब्बत के मकाम तक पहुँच जाओगे तो ख्वाहिशात और चीजों की मुहब्बत निकल कर अल्लाह और रसूल की मुहब्बत आ जायेगी अगर मरने से एक लम्हा पहले भी ऐसा हो गया तो ईमान आ गया। मुहब्बत दिल की चीज है, लोग कहते हैं मुहब्बत वहमी चीज है तो इसे कैसे हासिल किया जाये ? नही ऐसा नही है बल्कि मुहब्बत पैदा करने से पैदा होती है (मुहब्बत क्या चीज है ? जिस चीज से जरूरत पूरी होती है उस चीज की मोहताजगी को मुहब्बत कहते है, मुहब्बत आर मोहताजगी एक ही चीज के दो अलग अलग नाम है जैसे सोहबत की जरूरत औरत से पूरी होती है, भूख की जरूरत खाने से पूरी होती है, कपड़े की जरूरत माल से पूरी होती है, इसलिये इन्सान को औरत, खाने और माल से मुहब्बत होती है पर हकीकत मे ये सारी चीजें अल्लाह के देने से मिलती हैं लिहाजा इनमे से जब किसी चीज की जरूरत पड़े तो मुहम्मद सल्ल0 वाले अमल करके ये चीजें अल्लाह से मांगी जाये। अल्लाह तआला फरमाते हैं ! मेरे बन्दों तुम सब भूखे हो सिवाय उसके कि जिसको मैं खिलाऊँ लिहाजा तुम मुझसे खाना मॉगो मै तुम्हे खिलाऊँगा। मेरे बन्दों तुम सब नंगे हो सिवाय उसके कि जिसको मैं पहनाऊँ लिहाजा तुम मुझसे कपड़े मॉगो मै तुम्हे पहनाऊँगा। चूँकि अल्लाह से मिलता हुआ और मुहम्मद सल्ल0 वाले अमल से होता हुआ हमे नजर नही आ रहा है, इसलिये हमे ना अल्लाह से मुहब्बत है और ना रसूल से मुहब्बत है बल्कि बाप, बेटे, भाई, औरतें, खानदान, माल, तिजारत और मकान से इसीलिये मुहब्बत है क्यों कि इन्ही चीजों से इसको अपनी जरूरतें पूरी होती हुई नजर आ रही हैं इसीलिये अल्लाह तआला ने फरमाया !

قُلْ إِنْ كَانَ آبَاؤُكُمْ وَأَبْنَاؤُكُمْ وَإِخْوَانُكُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيرَتُكُمْ وَأَمْوَالٌ

कि इनकी मोहताजगी से निकलो) मुहब्बत पैदा होने का सबब ख्वाहिशात को कुरबान करके हुक्म को पूरा करना है, रोजे के अहकामात इसीलिये हैं कि खाने पीने का शौक निकल कर अल्लाह और रसूल की मुहब्बत आये। नमाज, हज और जकात ये सारे अहकामात इसीलिये हैं ताकि माल, घर, खानदान, वतन और मुल्क की मुहब्बत आदमी के अन्दर से निकल जाये, तुम ये मेहनत इतनी करो कि इन सब चीजो की मुहब्बत अन्दर से निकल जाये। आदमी जब अल्लाह के रास्ते मे निकल गया तो ख्वाहिशात के नक्शे से बाहर आ गया मगर ख्वाहिशात वाला दिल अभी साथ है, अब शैतान कोशिश यह करेगा कि ये ख्वाहिश पर इस्तेमाल हो इसके लिये वो अच्छे अच्छे खाने के पकाने की राय देगा, मस्जिद मे एक जगह मुकर्रर कर लेगा कि मैं यहॉ सोऊँगा, यहॉ नमाज पढ़ूँगा, ऐसा करने से कई नुकसान है मस्जिद मे जगह मुकर्रर करने पर उस जगह को अपना हक समझने लगेगा अगर वहॉ कोई दूसरा बैठ जाये तो उसे हटाने लगेगा कि मैं यहॉ बैठता हूँ या मैं यहॉ लेटता हूँ इससे लड़ाई भी शुरू हो सकती है।

सारी मस्जिद सारे नमाजियों के लिये है जो यहॉ पहले आकर बैठ जाये वो वहीं पर नमाज पढ़ेगा, इसलिये शैतान पहले ये कोशिश करता है कि ख्वाहिश के नक्शे से उसे ना निकलने दे लेकिन जब हिम्मत करके ये निकल जाता है तो ये जहॉ जाये शैतान उसके सामने अब छोटी छोटी ख्वाहिशें रखता है। एक बात और समझ लो कि

इन्सान ख्वाहिश पर चलने से क्यों नापाक हो जाता है ?

ख्वाहिश पर चलने से इन्सान इसलिये नापाक हो जाता है क्यों कि इन्सान का जिस्म मनी के नापाक कतरे से बना है और दो दफा पेशाब के रास्ते से निकला है तो अब जब भी ये जिस्म की ख्वाहिश को पूरा करेगा बस नापाक हो जायेगा। इन्सान खुशबूदार से खुशबूदार भी खाना खा ले वो खाना बदबूदार बनकर निकलेगा और उसको नापाक कर देगा चूँकि हमारा जहन हकीकत की तरफ जाता नही है इसलिये हमारे सामने सिर्फ शक्ल और सूरत है कि एक अमीर आदमी को एक औरत से मुहब्बत हो गयी वो औरत बहुत पाकबाज और खूबसूरत थी, उसने औरत पर दबाव डाल कि शाम को तेरे पास अपनी ख्वाहिश पूरी करने आऊँगा। ये सुन कर उस औरत ने उसी वक्त खूब जुल्लाब लिया जिसकी वजह से सुबह से शाम तक दस्त आते रहे और वो उसे मटके मे जमा करती रही, शाम तक उसके रूखसारों पर झुर्रियॉ पड़ गयीं, चेहरे की सारी खूबसूरती खत्म हो गयी, चेहरा ऐसा हो गया जैसे मरने वाली हो। जब शाम को उसका आशिक आया तो उसके चेहरे की बदसूरती देखकर कि मरने वालों जैसा हाल है, वो बिदक कर वापस जाने लगा क्यो कि उसकी मुहब्बत की हकीकत अब उस पर जाहिर हो गयी थी, औरत ने उसको रोकना चाहा पर वो ना रूका तो औरत ने कहा ! ये मटका लेते जाओ। उसने पूछा ! मटके मे क्या है ? औरत ने कहा ! इसमे वही है जिस पर तुम कल तक मर रहे थे।

इसलिये इन्सान तो बिल्कुल गन्दा है इसके अन्दरे से निकलने वाले तकाजे इन्सान की नापाकी का सबब बन जाते है पर खुदा के हुक्म की तामील इसको पाक बना देती है जैसे हुक्म है कि नमाज से पहले अगर पेशाब पाखाना जोर से लगा हो तो पहले पेशाब पाखाना कर लो लिहाजा अब इसका पेशाब पाखाने को जाना हुक्म की तामील पर हो रहा है जिसकी वजह से इसके अन्दर पाकी पैदा हो रही है। इसलिये पेशाब पाखाना, सोना जागना और कमाना खाना अपनी मर्जी पर मत करो बल्कि अल्लाह की मर्जी पर करो तो ये तुम्हे पाक करने वाला बन जायेगा लेकिन इसके लिये तुम्हे इल्म हासिल करना पड़ेगा। इल्म हासिल करना या पूछ पूछकर चलना कि अल्लाह की मर्जी पर अपनी जिन्दगी को अल्लाह के ध्यान के साथ इस तरह चलाना कि अल्लाह का गैर सामने ना हो।

अल्लाह का गैर कौन है ?

सबसे बड़ा अल्लाह का गैर खुद अपना वजूद है, वही तो हर चीज से हुक्म पर जुड़ता है।

अल्लाह की मंशा व मर्जी पर चलने मे सबसे बड़ा मुकाबला अपने वजूद का है इसलिये सबसे पहले निस्बत बदलो कि जिस्म की जरूरतें अपनी मर्जी पर पूरा ना करो बल्कि अल्लाह और उसके रसूल की मंशा व मर्जी पर पूरी करो,

, لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللّٰهُ निस्बत बदलने का नाम है, पेशाब पाखाने के छत्तीस आदाब है, ये आदाब क्यों हैं ? य आदाब इसलिये हैं ताकि अल्लाह और उसके रसूल की मंशा व मर्जी पर हमे अपनी जिन्दगी को चलाना आ जाये, जिस तरह अल्लाह ने अपनी मर्जी से हमारे सर से लेकर पैर तक की शक्ल मनी के गन्दे कतरे से बनायी और पेशाब पाखाने के गन्दे अमल को आदाब बतलाकर अच्छा बना दिया। हमने पाकी के लिये जो मिटटी या पानी इस्तेमाल किया, ये मिटटी या पानी हमारी पाकी का जरिया ना बना बल्कि अल्लाह और उसके रसूल की मंशा व मर्जी पर हमारा इस्तेमाल होना पाकी का जरिया बना इसलिये हम अपनी हर हाजत और जरूरत पूरी करने के वक्त यह मालूम करें कि अल्लाह और उसके रसूल की मंशा व मर्जी पर हम किस तरह इस्तेमाल हों।

नमाज का क्या मकसद है ? नमाज का मकसद ये है कि जिस्म का इस्तेमाल अल्लाह और उसके रसूल की मंशा व मर्जी पर हो कि माल कमाना है तो पहले कमाई का सही तरीका पता करो, सही तरीके से कमाया हुआ माल

पाक है अब इस पाक माल को खर्च करने से पहले और पाक करो, कैसे ? जकात अदा करके के। जकात अदा कर देने से माल बिल्कुल पाक हो जाता है पर ये याद रखना कि जकात निकालने से माल पाक नही होता बल्कि अदा करने से पाक होता है। जकात अदा कैसे होगी ? जकात अदा होगी मुस्तहेक के पास जाकर देने से कि तुम्हारे जानने वाले मे किसी के पास खाने को नही है, किसी के पास कपड़े नही हैं उन तक जाकर उनकी जरूरतों के पूरा करने से जकात अदा होगी। खुदा ने नापाक करने वाले ख्वाहिशात के दायरे मे अहकामात देकर इसे पाक कर दिया, इसलिये ख्वाहिश के गुलाम बनकर ना चलो बल्कि अल्लाह की मर्जी और मंशा पर अपनी जरूरतें को पूरी करो, इससे हमारी जरूरतें भो पूरी होंगीं और हुक्म भी नही टूटेगा। घर की ख्वाहिश कैसे निकलेगी ? इसके लिये अल्लाह के रास्ते मे निकलो और घर के अहकाम सीखकर आओ, निकलोगे तभी ये जहन बनेगा।

अपनी जरूरतों को अपनी मर्जी पर पूरा करने के क्या नुकसान है और अल्लाह की मर्जी पर अपनी जरूरतें को पूरी करने मे क्या फायदे है ? फिर ये भी समझ लो कि अल्लाह की मर्जी पर अपनी जरूरतें को पूरी करने से अल्लाह ने जरूरतों को पाक तो कर दिया लेकिन उसको बड़ी चीज करार नही दिया। जिन्दा रहने को बड़ी चीज करार नही दिया बल्कि शहीद होने को बड़ी चीज करार दिया कि खून का पहला कतरा गिरते ही सारे गुनाह माफ हो गये तो बाकी कतरों मे कितना मिलेगा, जन्नत के कितने दरजात बढ़ेंगें। इसी तरह रोजे का महीना आया तो रोजा बड़ा हुक्म है और खाना छोटा हुक्म है अगर खाने को रोजे के साथ जोड़ सको तो जोड़ लो और अगर ना जोड़ सको तो खाना छूटेगा रोजा नही। ये तो अल्लाह का करम है कि हमे अपनी जरूरतें को पूरा करने मे भी अल्लाह ने अपनी मंशा और मर्जी बतलाकर इन्हे पाक कर दिया मगर ये छोटी चीज है और छोटी रहेगी। बहुत से ऐसे अहकामात है जिनमे पाक ख्वाहिश को भी छोड़ना पड़ेगा कि इबादत के सारे अहकामात और खुदा की राह मे जान व माल के खर्च करने के अहकामात, ये अहकामात बहुत बड़े है जब इनका वक्त आ जाये तो पाक ख्वाहिश को भी छोड़ना पड़ेगा, देखना ये पडगा कि किस वक्त कौन तकाजा ज्यादा जरूरी है।

सहाबा किराम हुजूर सल्ल0 के पास माल लेकर आते तो आप बआज का माल तो कुबूल फरमा लेते और बआज का माल उनके मुँह पर मार देते कि इतना दोगे तो कल को मॉगते फिरोगे, इसलिये हर एक को सारा माल खर्च कर देना सही नही ह। हॉ अगर सारा माल खर्च करके दिल को मजा मिलता हो तो सारा खर्च करो और अगर सारा माल खर्च करके रोते फिरने का खतरा है तो उतना ही खर्च करो जितना जरूरी है। अगर अबु बक्र सिददीक रजि0 वाली हालत आ गयी तो सारा माल खर्च कर दो वरना फिर बाद मे दूसरों से सवाल करके अल्लाह की नाशुक्री करोगे। हकीकत के ऐतबार से मिक्दार तो पूरी जान और पूरा माल है मगर उसके ये मयाने भी नही कि इस मकसद के लिये हम लाखों के कमाने मे लग जाऐ, अभी जितना है उतना लगाओ जब अल्लाह लाखों देगें तो लाखो लगाओ। बीबी बच्चों की खबरगीरी भी जरूरी है लेकिन जरूरत पूरी करने के ऐतबार से ना कि उनकी ख्वाहिश पूरी करने मे, आज एक लाख कमाते हो और कहते हो कि अल्लाह के लिये कैसे खर्च करूँ ? क्यों कि मेरा खर्चा सवा लाख का है। अरे किसने तुम्हे इजाजत दी है कि बीबी बच्चों पर सवा लाख खर्च करो ? अल्लाह के हुक्म का ये मतलब नही कि जितना जी चाहे कमाओ, जैसा चाहे मकान बनाओ और जितना चाहे बीबी बच्चों पर खर्च करो फिर जो बचे उसे अल्लाह के रास्ते मे खर्च करो अरे ! जब बचेगा ही नही तो खर्च क्या करोगे कि अपनी आखिरत पर खर्च करने की नौबत ही नही आयेगी ता वो बड़े बड़े अहकामात जिनसे तुममे बड़ी पाकी आयेगी जिस पाकी की वजह से कौमों मे और मुल्को मे पाकी आयेगी,

जिससे इज्तेमाई पाकी के दरवाजे खुलेगें, तुम्हारे अन्दर से नापाकियॉ तब निकलेगीं जब इन अहकामात को नम्बर एक पर लाओगे।

जब तुम ऐसा करोगे तो अल्लाह दूसरों के लिये इताआत के दरवाजे खोलेगें, ऐसी मेहनत को लाने के लिये पहले बहुत से अहकामात तुम्हे खुद पूरे करने पड़ेगें। इताआत के अहकामात, एख्लास के अहकामात और जिक्र के अहकामात इनमे से कोई भी हुक्म छोटा नही है, जब तुम इन्फिरादी और इज्तेमाई मेहनत को हर हाल मे करोगे तो तुम्हारी दुआओं से बहुतों को हिदायत मिलेगी। उम्मत को तुम नही पलट सकते उम्मत को खुदा ही पलटेगें मगर दुआओं से लेकिन तुम्हारी दुआ कुबूल होगी पूरी मेहनत के बाद लिहाजा अब हर चीज पहले खुद सीखने की बन गयी इसलिये पूरी दुनियॉ को अपनी मेहनत का मैदान बना लो सारी मेहनत के साथ जब दावत दोगे तो सबको हिदायत मिलेगी। सिर्फ नजर आने वालों पर मेहनत करोगे तो सारी हिदायत देर मे मिलेगी और सारी दुनियॉ को जब मेहनत का मैदान बनाकर सारी मेहनत करोगे तो गैर मुस्लिम भी ईमान से नवाजा जायेगा, उनको मुसलमान तुम नही बनाओगे बल्कि तुम्हारी दुआओं पर खुदा उन्हे मुसलमान बनाएगें, सब कुछ तुम्हे नही करना है बस तुम्हे सिर्फ इतना करना है जितना बतलाया जा रहा है, अब बतलाओ कौन कौन तैयार है।

किताब का नाम - अहम बयानात हजरत मौलाना यूसुफ सा0 रह0

हजरत मौलाना यूसुफ साहब रह0

बाद नमाज फज्र बंगले वाली मस्जिद

28 दिसम्बर सन 1959

कामयाबी का तआल्लुक रूह के बनने और बिगड़ने पर है

بِسْمِاللّٰهِالرَّحْمٰنِالرَّحِيْمِ

मेरे अज़ीज़ो और दोस्तों ! हकीकत वो नही है जो इन्सान को नजर आ रहा है बल्कि हकीकत इन्सान से छुपी हुई शै है यानी सूरत ए हाल कुछ और है-हकीकत ए हाल कुछ और है। जाहिरी असबाब मे चॉद, सूरज और सितारे ये सब सूरत ए हाल है और रूह हकीकत ए हाल है चूँकि सूरत ए हाल नजर आ रहा है इसलिये इन्सान अपनी मेहनत का मैदान इन्ही चीजो को बनाये हुए है, हकीकत इसे नजर नही आ रही है इसलिये इन्सान की मेहनत इस पर नही है। अम्बिया अलै0 इस छुपी हुई शै की तरफ ही मुतवज्जाह करने के लिये भेजे जाते थे, अब एक मेहनत जाहिर की बुनियाद पर है यानी सूरत और जिस्म की बुनियाद पर और एक मेहनत हकीकत और रूह की बुनियाद पर है। जिस्म अलग शै (चीज) है और रूह अलग शै (चीज) है, इन दोनों चीजों के मज्मुए को इन्सान कहते है, इन दोनों चीजों के निजाम अलग अलग है। खुदा ने एक निजाम जिस्म का कायम फरमाया और एक निजाम रूह का कायम फरमाया, ये दोनों निजाम अपना अपना काम कर रहे है और ये दोनों निजाम खुदा के चलाने से चल रहै।

अब अगर जिस्म के निजाम को लिया जाये (कायनात की हर सूरत व शक्ल मान्निद जिस्म के है) कि खुदा चॉद, सूरज की गर्दिश कायम करके नबातात (पेड़-पौधे) उगा रहे हैं, गल्ला पैदा फरमा रहे हैं, हवाऐं चला रहे हैं और बारिश भेज रहे हैं। रूहानी निजाम का मतलब ये है कि खुदा चीजों मे तासीर भेज रहे हैं दवाओं मे फायदा और नुकसान, हवाओं मे फायदा और नुकसान, ओहदों मे इज्जत और जिल्लत यानी जिस्मों के खाको मे हालात पैदा फरमा रहे है। ये हालात चीजों मे नही बनते बल्कि इन जिस्मानी खाकों मे खुदा अपनी मर्जी और इरादे के मुताबिक हाताल पैदा कर रहे हैं, खुदा चाहें तो खुशियों के खाकों मे नागवारियॉ पैदा कर दें और मुसीबतों के खाकों मे खुशियॉ पैदा कर दें गर्ज ये हालात रूहानी निजाम के तहत खुदा के खजाने से लाकर नजर आने वाली शक्लों और सूरतों मे डाले जाते हैं। खुदा जब तक चाहें कोठियों, महलों और मकानों मे राहत निकाल कर दिखायें और जब चाहें उन्ही मे से फित्ने और तकलीफ पैदा फरमा दें। जिस तरह जिस्म ए इन्सानी मे रूह जिस्म से नही बनती बल्कि खुदा रूह को अपन खजाने से जिस्म मे भेजते हैं इसी तरह खुदा जब चाहते हैं और जैसा चाहते हैं हर शै (चीज) मे हालात भेजते हैं वो चाहे बीमारी हो या सेहत, इज्जत हो या जिल्लत।

खुदा ने हालात का जो जाब्ता मुकर्रर फरमाया है उसका तआल्लुक रूह से है कि इस रूह को अगर तुमने रौशन कर लिया और पाक व साफ कर लिया, खुश्बूदार बना लिया तो खुदा तुम्हारे लिये हर शै (चीज) मे सुकून के हालात डाल देगें, तुम्हारे पास चाहे 5 पैसे का खाका हो या 5000 रूपये का लेकिन अगर जिस्म के आजा को अपनी मर्जी पर इस्तेमाल करके अपनी रूह को बिगाड़ लिया तो हर श (चीज) मे खराबी के हालात डाल देगें। खुदा का जाब्ता सबके लिये आम है, सबसे बड़े मालदार और सबसे बड़े गरीब के लिये, सबसे बड़े ओहदेदारों से लेकर सबसे कमतर आदमी तक जाब्ता सबके लिये एक है अगर कोई ये चाहे कि अपने

नामुनासिब हालात को शक्लों मे तगययुर व तबददुल करके दुरूस्त कर ले तो ये मुम्किन नही है। खुदा के यहॉ जिस्मानी एतबार से किसी को इम्तियाज नही है लगंड़ा, लूला, अन्धा और ऑख वाला, गूंगा और बोलने वाला, कपड़ों वाला और बिना कपड़ों वाला, कोठी वाला और झोपड़ी वाला ये जितनी शक्लें और सूरते हैं खुदा के नजदीक ये सब एक किस्म है इनमे जो तफरीक पैदा होगी वो रूहों के कामयाबियों और नाकामियों पर पैदा की जायेगी।

अब गौर करो कि रूह कैसे बनती और बिगड़ती है ? और

रूह के बनने और बिगड़ने के हालात कैसे बनते और बिगड़ते है ?

कुरआन व हदीस का मोजऊ यही है कि रूह कैसे बनती और बिगड़ती है, जिस्म (सूरत) का रास्ता बहुत लम्बा-चौड़ा है और रूह का रास्ता बहुत छोटा है, जिस्म के रास्ते मे चॉद सूरज मे गर्दिश पैदा की गई, हवाऐं चलाई गयी, बादल उठाये गये, बारिश बरसाई गयी इसमे कितने दिन लगे ? फिर दाने पैदा किये, इन्हे पिसाया गया, रोटी पकायी गयी फिर कहीं जाकर खायी गयी इसमे कितने दिन लगे ? फिर उस खाने से मनी पैदा की गयी और उस मनी से जिस्म ए इन्सानी बनने की इब्तेदा की गयी उसमे कितने दिन लगे ? लेकिन रूह डालने मे कितने दिन लगे कि एक दिन भी नही। फरिश्ता कब मॉ के पेट मे रूह डाल गया इसकी किसी को खबर नही, ना मॉ को खबर ना बाप को खबर, ना हकीम को खबर ना डाक्टर को खबर कि जिस्म मे रूह पड़ गयी फिर तीन उंगलियों के बराबर का ये जिस्म तीन हाथ तक पहुॅचा और उसमे भी कम से कम 20 साल लगे अब खुदा इस जिस्म से जब चाहें रूह निकाल ले अगर सारे मिल कर भी इसे रोकना चाहे तो रूह निकलने से कोई नही रोक पायेगा गर्ज खुदा ने हकीकतों को इन्सान मे छिपा दिया है। रूह मे नूर और खुशबू जिस्म के आजा से नही आती चाहे बरसों इतर के हौज मे पड़े रहे पर रूह मे खुशबू नही आयेगी, सारा सजनां और सवंरना जो तुम कर रहे हो इसका तआल्लुक जिस्म से है रूह से नही, रूह का सजानां और सवांरना इसकी खुशबू और नूरानियत का तआल्लुक खुदा की मर्जी व मंशा वाले अमल से है। रूह मे नूर व जुल्मत अमल की वजह से आती है और असल चीज यही है।

अगर रूह जिस्म से निकल जाये तो दुनियॉ भर की दौलत, दुनियॉ भर की चीजे और सारा कायनाती निजाम सर से लेकर पैर तक जोड़ दो वो मुर्दा जिस्म कुछ ना कर सकेगा, कोई अमल उससे ना होगा। जुबान बोल ना सकेगी, आखॅ देख ना सकेगी, कान सुन ना सकेगें, हाथ व पैर हरकत ना कर सकेगें इसलिय कि जिस्म मे अमल रूह से पैदा होता है और अगर किसी से सारी दौलत छीन ली जाये, उसके हाथ पैर कटे हों, कमजोर हो लेकिन रूह अगर जिस्म मे मौजूद है तो उसके जिस्म से अमल होते रहेगें। सांस लेता रहेगा, दिमाग सोचता रहेगा और जुबान बोलती रहेगी, इन्सान के जिस्म मे रूह है तो जिस्म से अमल जरूर होंगें क्यो कि अमल रूह की जिन्स हैं, अमल चीजों की जिन्स नही है। इन्सान अगर खुदा की मर्जी व मंशा वाले अमल कर रहा है तो इसके जिस्म के अन्दर रूह मे खुशबू व नूरानियत पैदा हो रही है और इन्सान अगर अपनी ख्वाहिशात वाले अमल कर रहा है तो इसकी रूह मे बदबू और जुलमत पैदा हो रही है क्यों कि रूह पर अमलों का असर पड़ता है। ये अमल जुबान का हो या ऑख का, हाथ का हो या पैर का, अमल छोटा हो या बढ़ा हर हर अमल का असर रूह पर पड़ता है, जिस तरह जिस्म मे जब जिस्म (मॉ के रहम मे) बनता है तो अन्दर वाला जिस्म दिन पर दिन बढ़ता चला जाता है इसी तरह जिस्म के अन्दर की रूह मे खुदा की मर्जी व मंशा वाले अमल

करने से दिन पर दिन खुशबू, ताकत व नूरानियत बढ़ती चली जाती है। अगर आप अपने अमलों को सुधार लें तो खुदा की कसम ! जो कीमत आपके छोटे छोटे अमल की है सारी दुनियॉ की कीमत भी उसके मुकाबले में एक जर्रे की हैसियत नही रखती। आपकी एक निगाह चॉद सूरज से ज्यादा कीमती है और अगर आमाल की खराबी से आपकी रूह बिगड़ कर स्याह हो गयी है तो मकानों मे तकलीफें आयेगीं, ओहदों मे जिल्लत आयेगी अगर रूह का खाका सुधार लें तो रूह मे तेजी आती है, इतनी तेजी जो कायनात की किसी चीज मे नही फिर ये रूह सूरज और चॉद से भी ऊपर जाती है, बिजली की कून्ध और निगाह के झपकने से भी ज्यादा तेज चलती है।

रूह मे स्याही और बदबू शिर्क से पैदा होती है और खुशबू, ताकत व नूरानियत ईमान से पैदा होती है, एक जिस्म खत्म

होने के लिये मिला है और एक जिस्म बाकी रहने के लिये मिलेगा। आज जो जिस्म है ये खत्म होने के लिये है कि ये ताकते खत्म हो जायेगीं, ये आजा (ऑख, कान, जुबान, हाथ व पैर वगैरह) गल जायेगें, ये जिस्म तो रेजा रेजा होने के लिय बना है तुम इसको चाहे जितना सवांरने की कोशिश करो ये खत्म हो जायेगा लेकिन अगर रूह को सवांर लिया तो जो एक जिस्म बाकी रहने के लिये मिलेगा वो पाक, साफ और खूबसूरत होगा, उस जिस्म मे कभी कमजोरी नही आयेगी। इस जिस्म से जब रूह निकलेगी तो ऑख खोल दो जायेगी कि रूह किस तरह जा रही है देख ले, जब रूह निकलती है तो ऑख इस तरह खुलती है कि फिर बन्द नही होती जब तुम बन्द करते हो तो बन्द होती है। अब अगर इन्फिरादी तौर पर तुमने रूह को पाक कर लिया है तो खुदा अफराद को तुम्हारे सामने झुका देगें और अगर इज्तेमाई तौर पर तुमने रूह को पाक किया है तो खुदा मुल्कों को तुम्हारे सामने झुका देगें। खुदा की कसम ! अगर तुमने रूह मे उरूज पैदा कर लिया तो जाहिल लोग जो रूह के बारे मे कुछ नही जानते वो मुल्क के एतबार से या माल के एतबार से चाहे जितने बड़े हों तुम्हारे पॉव पकड़ेगें। जो इन्सान अपनी रूह से अनजान रह कर उसको स्याह और बदबुदार बनने दे तो खुदा ऐसे इन्सानो को हुकूमत की कुर्सियों पर जलील करके दिखायेगें, सरमायेदारी की गदिदयों पर बिठाकर जूते खिलवायेगें गर्ज कामयाबी का तआल्लुक रूह के बनने और बिगड़ने पर है और रूह का बनना और बिगड़ना अमल पर मौकूफ है। जब फरिश्ते खुशबूदार व नूरानी रूह को जिस्म से निकालते है तो कहते हैं

يَا أَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ارْجِعِي إِلَىٰ رَبِّكِ رَاضِيَةً مَرْضِيَّةً

सूरह फज्र 27 .28

जब मलकुल मौत आदमी की रूह निकाल कर आसमानों पर ले जाते हैं तो स्याह रूह के साथ बदशक्ल फरिश्ते होते हैं जो बदबू लेकर आते हैं और खुशबूदार व नूरानी रूह के लिये खुशबू लेकर आते हैं। नूरानी रूह वालो का आसमानों पर इन्तेजार होता है, क्यों इन्तेजार होता है ? इनका इन्तेजार इसलिये होता है कि सुबह व शाम इनके जो आमाल आसमानो पर जाते थे वो नूरानी अमल वाले की रूह आसमानो पर आ रही है उसके इस्तगबाल के लिये आसमानों पर इन्तेजार होता है। नूरानी अमल करने वालों को दुनियॉ के लोग चाहे ना जानते हों पर आसमान वाले उनसे अच्छी तरह वाकिफ है, बस दुनियॉ मे तुम पोशीदा रहकर आसमानों पर मशहूर होने वाले बन जाओ तो फरिश्ते कहेगें इस मर्दे मोमिन की रूह कितनी खुशबूदार है। ये फरिश्ते जब इसकी रूह को लेकर अर्श पर पहुँचेगें तो खुदा फरमायेगें कि मेरे बन्दे को ले जाकर आराम से सुला दो फिर खानापूरी के

लिये रूह को बदन मे डालकर सवाल जवाब किये जाते है। इन जवाबात के लिये तैयारी की जरूरत है, खुदा की इस दुनियॉ मे कोई चाहे जितना बड़ा लेक्चरर बन जाये, प्रोफेसर बन जाये, इन्जीनियर बन जाये, फलसफी बन जाये, मुकर्रिर बन जाये, जब तक उनकी तैयारी ना कर ले उन सवालों के जवाबात नही दे सकेगा। उसकी तैयारी जरूरी है खुदा पर इतना तवक्कुल हर आदमी पर फर्ज है कि वो हराम से बच जाये, इसके लिये अपनी पूरी जिन्दगी को चार चीजों पर लगाना है, 1 खुदा का यकीन 2 तरीका ए अमल मुहम्मद सल्ल0 का 3 खुदा का ध्यान 4 खुदा की रजा, अपने अन्दर इसको पैदा करने के लिये 4 माह लगा दो।

किताब का नाम - हजरत जी की यादगार तकरीरें

हजरत मौलाना युसुफ साहब रह0 का आखिरी बयान

पहली अप्रैल 1965 ई0 बाद नमाजे मगरिब

बमकाम मस्जिद बिलाल पार्क, लाहौर

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمنِ الرَّحِيمِ

إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلَائِكَةُ أَلَّا تَخَافُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَأَبْشِرُوا بِالْجَنَّةِ الَّتِي كُنتُمْ تُوعَدُونَ

نَحْنُ أَوْلِيَاؤُكُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَشْتَهِي أَنفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَدَّعُونَ

نُزُلاً مِّنْ غَفُورٍ رَّحِيمٍ

अल्लाह तआला ने जो कुछ जमीन व आसमान में बनाया है उसमें सब वक्ती रखा है वक्ती पेट भरना, वक्ती प्यास बुझाना, वक्ती इज्जत, वक्ती जिल्लत, वक्ती मौत, वक्ती हयात, थोड़ी सी देर के लिए तन्दुरूस्ती है फिर बीमारी है, थोड़ी देर लज्जत, फिर तकलीफ आती है वक्ती परवरिश, और वक्ती जरूरतों का पूरा होना दुनिया की चीजों में रखा है और इंसान में जो कुछ रखा है वह वक्ती भी है और अबदी भी है वक्ती इज्जत और अबदी इज्जत, ऐसे ही रात व सुकून और चैन व सेहत वक्ती व अबदी। इंसान मे जो दौलते रखी है वे एक तरफ दुनिया में कामयाब बनाने वाली है और दूसरी तरफ मरने के बाद अबदी कामयाबी दिलाने वाली है। इसलिए एक इंसान की दौलत की कीमत सातों जमीन व आसमान नही बन सकते अगर इंसान के अन्दर की दौलत बिगड़ जाये तो सातों आसमान और जमीन से न बन सके और अगर इंसान की दौलत बन जाये और उसके अन्दर की माया उभरे तो सातों आसमान व जमीन की कामयाबी से ज्यादा कामयाबी मिलती है।

दौलत तो बहुत बड़ी चीज है इस दौलत का पहला हर्फ और ईंट ''अल्लाह''कहना है आदमी खाली ''अल्लाह'' कहे, उसमें बोलने की दौलत रखी है यह अल्लाह कहना भी बहुत बड़ी दौलत है क्योंकि लफज अल्लाह कहने वाला एक भी दुनिया में बाकी रहेगा तो जमीन व आसमान इसी तरह खड़े रहेगें अगर एक भी अल्लाह कहने वाला न रहा तो अल्लाह तआला सारे जमीन व आसमान को तोड़-फोड़ देगें अगर आदमी के अन्दर में कोई और दौलत भी न हो सिर्फ एक दौलत जाहिर हो रही हो कि जुबान से अल्लाह कह रहा है यह दौलत इतनी बड़ी है कि सातों जमीन व सातों आसमान उस पर खड़े हैं, नमाज, रोजा और हज व जकात कुछ भी न रहे, सिर्फ अल्लाह को माने और कहे अल्लाह बस इतनी सी दौलत इतनी बड़ी है कि इससे सातों आसमान व जमीन खड़े हैं अगर इतनी भी न रहे तो पांच अरब इंसान भी हो तो वे भी मरेंगें। दरिया, खुश्की,और हवा के सारे जानवर जमादात, नबातात, सब खत्म होगें अगर इंसान के पास वह अल्लाह वाली दौलत न रहे तो सब खत्म कर दिए जायेगें। एक अल्लाह कहना इतनी बड़ी दौलत है कि आसमान व जमीन उसी पर कायम है।कुरआन मजीद में है-

إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلَائِكَةُ أَلَّا تَخَافُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَأَبْشِرُوا بِالْجَنَّةِ

الَّتِ نَحْنُ أَوْلِيَاؤُكُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَشْتَهِي أَنفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَدَّعُونَ ي كُنتُمْ تُو نُزُلاً مِّنْ غَفُورٍ رَّحِيمٍ عَدُونَ

सू़रः हामीम सज्दा रूकू 4

तर्जुमा- जिन लोगों ने (दिलसे) इकरार कर लिया कि हमारा रब अल्लाह है, फिर (उसपर) कायम रहे, उस पर फरिश्ते उतरेंगें कि तुम न अंदेशा करो न रंज करो और तुम जन्नत के मिलने पर खुश रहा, जिसका तुमसे पैगम्बरों के वास्ते से वायदा किया जाया करता था।

" अल्लाह रब हैं " यह लफज नही एक मेहनत है

अल्लाह रब हैं यह लफज नही एक मेहनत है अगर कोई आदमी ये कहे कि मै दुकान से पलता हूॅ या खेती, मुलाजमत, सियासत या हुकुमत से पलता हूं तो यह कहना लफज नही है बल्कि एक मेहनत है। इतना कहने के बाद मेहनत शुरू हो जाती ह कि आदमी जमीन खरीदता है, हल चलाता है, गल्ला लाकर बेचता है, जानवर और मकान खरीदता है, निकाह करता है, गरज इस लफज के पीछे लम्बी चौड़ी मेहनत की जिंदगी है।
ऐसे ही जिसने ये कहा कि हमारे रब अल्लाह हैं तो बात खत्म न हुई बल्कि बात यहां से शुरू हुई कि जब अल्लाह पालने वाले हैं तो सबसे पहले गैरों से पलने का यकीन दिल से निकालो यह पहली मेहनत है कि मैं जमीन व आसमान और उसके अन्दर की चीजों से नही पलता बल्कि अल्लाह से पलता हूं इसको मेहनत करके दिल का यकीन बनाओ, इस यकीन को रग व रेशा में उतारने के वास्ते मुहम्मद सल्ल0 की अमली जिन्दगी हैं। अल्लाह से पलता हूं इस बोल की हकीकत दिल में उतारने के लिए मुल्क व माल तिजारत व खेती की मेहनत नही है बल्कि ईमान को सीखते हुए नमाज पर मेहनत है, जब ईमान को सीखते हुए नमाज पर मेहनत की जायेगी तो मुल्क व माल तिजारत व खेती से पलने का यकीन दिल से निकल कर जुबान पर आ जायेगा और जब इन्सान अल्लाह की रबूबियत के यकीन वाली मेहनत को छोड़ कर मुल्क व माल वाली मेहनत पर लगता है तो अल्लाह की रबूबियत का यकीन दिल से निकल कर जुबान पर आ जाता है।

इबादत से पलने पर मेहनत

नबियों वाली मेहनत और हुजूरे अकरम सल्ल0 वाली मेहनत "अल्लाह रब हैं" इस लफज पर करनी होगी यानि मेहनत करके इस हकीकत तक पहुंचो कि हमें सीधे सीधे अल्लाह से पलना है, खुदा को पालने में खेती और दुकान की जरूरत नही वह अपने हुक्मों से पालता है अगर इस लफज की हकीकत पैदा हो जाए तो अमरीका और रूस तुम्हारी जूतियों में होगा बस शर्त इतनी है कि ये सिर्फ जुबान का बोल न हो बल्कि दिल के अन्दर की हकीकत हो तो इस हकीकत पर दुनियॉं में कामयाबी मिलेगी और कब्र के अजाब से बचोगें हूरें बाग और सोना चादी के मकान हमेशा की जवानी हुस्न व जमाल इसी पर मिलेगा। इसी को दिल में फिट करने के लिए हुजूर सल्ल0 की रिसालत है, कायनात में जो कुछ है वह ताबे महदूद और फानी है और अल्लाह के पास लामहदूद और गैरफानी है। परवरिश उस लामहदूद की तरफ से है इसलिए हुजूर सल्ल0 के तरीका ए अमल पर मेहनत करो अल्लाह तर्बियत करने वाले है, अल्लाह को माबूद बनाकर अल्लाह की इबादत करके पलना है अगर इबादत से पलने पर मेहनत करोगें तब दिल में उतरेगा "अल्लाह रब हैं" और इबादत नमाज है। नमाज तुम्हारे

इस्तेमाल का अपना तरीका है, जमीन या मोटर या जानवरों के इस्तेमाल के तरीके का नाम नमाज नही बल्कि अपनी आंख कान नाक वगैरह को इस तरह इस्तेमाल करना सीखो जैसे आप सल्ल0 ने इस्तेमाल किया। सोना चांदी और कायनात से पलने में क्या है ?

जमींदारी यानि जमीन से गल्ला लेने के एतबार से हमारे इस्तेमाल का तरीका

तिजारत यानि दुकान से फायदा लेने के एतबार से इस्तेमाल का तरीका

हुकूमत यानि मुल्क से फायदा लेने के एतबार से हमारे इस्तेमाल का तरीका

नमाज क्या है ? नमाज कायनात से नही बल्कि अल्लाह तआला से दोनो दुनिया में लेने के वास्ते हमारे अपने इस्तेमाल का तरीका है यह नमाज है। हमको सिर्फ अल्लाह पालेगा जब हमारा इस्तेमाल आप सल्ल0 के तरीका ए अमल पर होगा कि आपकी किस तरह गारे सौर में हिफाजत हुई ?

बद्र में फतह कहां से मिली ? ,

खंदक में हमले से कैसे बचे ?

इन सारे सवालों का बस एक ही जवाब मिलेगा कि आप सल्ल0 ने नमाज पढ़कर खुदा से मांगा तो खुदा ने किया, आपके जितने मसले है अगर कोई पूछे तो यही जवाब मिलेगा कि नमाज से हुआ। अल्लाह की जितनी इबादत आपने की है किसी वली ने भी नही की, हदीस में है कि आप सल्ल0 ने इतनी लम्बी नमाज पढ़ी कि नमाज पढ़ते-पढ़ते सुखी मुश्क की तरह हो गए थे और रानों तक वरम आ गया था। अच्छे बहादुर भी अगर नफलों में आपके पीछे खड़ हुए तो सारे दिन बदन में दर्द होता, 4.4 और 6.6 पारों की एक रकआत, एक बार मे जितना बड़ा कियाम उतना ही बड़ा आपने रूकुउ, कौमा, सज्दा और जल्सा किया, ऐसी चार रकआतें पढ़ी, जो सहाबी आपके पीछे खड़े थे उनका बुरा हाल हुआ, आपने सुबह को फरमाया अगर मुझे पता होता तो मैं मुख्तसर कर देता। आपने इबादत करके अल्लाह को राजी किया, अल्लाह ने कहा मांगो, आपने कियामत तक उम्मत का पलना मांगा कि कोई दुश्मन उसका नाम व निशान न मिटा सके और उस उम्मत की बख्शिश का और आखिरत की निजात का फैसला करा दिया, अब चाहे कितने ही गुनाह करे आपका माफी चाहना कुबूल हुआ।

जूते का तस्मा भी टूटे तो अल्लाह से मांगों

आप सल्ल0 ने कहा कि आपस में लड़ाई न हो, यह दुआ मांगी। अल्लाह ने फरमाया यह तो होगा दुनिया में बदअमली की सजा होगी जो कुछ अल्लाह से मनवाया उसके लिए आपने क्या रास्ता अख्तियार किया ? खुदा जाने कितनी लम्बी मुददत है पर कियामत तक का बका तैय करा दिया और आखिरत की मग्फिरत करा दी, यह किस बात पर हुआ ? ऐसी नमाज पढ़ी कि अल्लाह को तरस आया। जब आप नमाज पढ़कर इस उम्मत के लिए रोते थे तो जमीन तर हो जाती थी, हजरत जिब्रील अलै0 को अल्लाह ने भेजा कि जाकर पूछो इतना क्यों रो रहे है ? फरमाया कि उम्मत के लिए रो रहा हूं। जवाब दिया कि रोओ मत हम इस उम्मत के बारे में आपकों खुश कर देगें। यह इबादत और नमाज पर किया एक दिन इतना लम्बा सज्दा किया कि सहाबा किराम रजि0 को गुमान हुआ कि आपका इंतिकाल हो गया आपने फरमाया कि काम हो गया, इस उम्मत की मग्फिरत की बशारत मिल चुकी यह उसक शुक्रिये में इतना लम्बा सज्दा किया था।

एक बार तीन दिन का फाका था लेकिन किसी आशिके जार से भी न कहा बल्कि मस्जिद तशरीफ ले गए तीन चार बार यों ही किया तीसरी या चौथी बार हजरत आयशा रजि0 ने कहा अल्लाह ने दिया यानि हजरत उसमान रजि0 ने आकर दिया और उनहोने रोकर कहा घर से मंगवा लिया करों, ये सुनकर आप सल्ल0 ने फरमाया !

आयशा अगर जूते का तस्मा भी टूटे तो अल्लाह से मांगों, अल्लाह हमारे रब हैं इसकी हकीकत यह है कि नमाज के जरिये मसले हल कराओ वर्ना जुबान पर रहेगा कि अल्लाह रब है लेकिन जब नमाज पर मेहनत करके रोटी, औलाद, मकान, सेहत, इज्जत, और अम्न के मसाइल हल कराये जाएं तब यकीन बनेगा कि अल्लाह हमारे रब हैं। शख्सी मसलों का हल शख्सी नमाज से होगा और मुल्क के मसले मुल्की नमाज से हल होगें, इंफिरादी, शहरी और देहाती मसलों को नमाज पर मेहनत करके अल्लाह से हल कराओं यह रब होने की मेहनत है।

आप सल्ल0 ने सहाबा को इसी मेहनत पर डाला था तब किसरा व कैसर अमरीका व रूस की तरह थे दोनो मुल्कों के खजाने अल्लाह ने सहाबा के कदमों पर डाले और देहाती लोग गवर्नर बने, यह सब कुछ नमाज से हुआं। हजरत उमर रजि0 के जमाने में फुतुहात हुई फिर बाद में बड़ा भारी जबरदस्त कहत पड़ा चारों तरफ से लोग मदीना आए, हजरत उमर रजि0 ने इंतिजाम शुरू किया और दुआ की कि ये लोग मरने न पाएं भारी इंतिजाम था। हजरत अम्र बिन आस रजि0 को मिस्र में खत लिखा कि जल्दी से गल्ला भेजो, जवाब दिया कि खाने पीने का सामान लाद कर ऊंटो का इतना बड़ा काफिला भेजूंगा जिसका पहला ऊंट मदीना में और आखिरी मिस्र में होगा चुनांचे गल्ला आया, उस वक्त चालीस पचास हजार आदमी तो हजरत उमर रजि0 के दस्तरख्वान पर रोजाना खाना खाते थे, देहात में अगर एक घर भी होता तो खाना वहां भी भेजा जाता, बहुत लम्बा चौड़ा इन्तिजाम किया मगर कहत बढ़ रहा था, उसी जमाने में एक साहब ने एक बकरी जिब्ह की तो उसमें सिवाए हडडी और खून और के कुछ न निकला, इसके बाद आदमी की चीख निकली और कहा या मुहम्मदाह (हाय मुहम्मद सल्ल0) आंखो में से आंसू निकल पड़े, पड़ कर सो गए। ख्वाब में हुजूर सल्ल0 की जियारत हुई फरमाया कि उमर को मेरा सलाम कहकर कहो तू तो अक्लमंद था क्या हुआ ? आंख खुली तो तो हजरत उमर रजि0 के दरवाजे पर जाकर कहा कि या अमीरूल मोमिनीन ! अजिब रसूलुल्लाह सल्ल0 यानि हुजूर सल्ल0 के पैगाम लाने वाले को जवाब दो। हजरत उमर रजि0 भूल में आपका जमाना जान कर दौड़े, दरवाजे पर याद आया कि यह हुज़ूर सल्ल0 का जमाना नही है। यह सुनकर हजरत उमर रजि0 कांप उठे और कहा कि मेरी जिंदगी में फर्क आ गया, सारे मदीना के लोगों को जमा करके पूछा मै आप सल्ल0 की जिंदगी से बदला तो नही ? लोगों ने कहा नही। फरमाया कि फिर यह आदमी क्या कहता है ? लोगों ने ख्वाब सुना तो सबने जाना सिर्फ हजरत उमर रजि0 ने न समझा मतलब यह है कि जब तुम्हारी नमाज और दुआ कुबूल है तो इन्तेजाम के चक्कर में क्यों फंसे ? अम्र बिन आस रजि0 को मदद के लिये खत क्यों लिखा अल्लाह से क्यों नही मांगा ? इस पर हजरत उमर रजि0 ने वही बारिश की दुआ मांगी और कहत दूर होने की दुआ मांगी मुख्तसर सी दुआ "अल्लाहुम्मा इनना नस्तग्फिरूक व नस्तस्की" कह कर मुंह पर हाथ फेरने से पहले बारिश शुरू हो गई जानवरो में जान पड़नी शुरू हुई, देहातियों ने कहा कि चारों तरफ से बादलों से यह आवाज आ रही है अताकल गौस अबा हफस ऐ उमर रजि0 तूने बारिश मांगी आ गई ।

अल्लाह के रब होने की बुनियाद पर नमाज का कियाम था

हजरत उमर रजि0 ने ऐसी नमाज अल्लाह के रब होने की बुनियाद पर पढ़ी थी कि अल्लाह पालने वाले हैं तो नमाज पर मेहनत करके हुजूर सल्ल0 वाली नमाज बनानी पड़ेगी, फजाइल और मसाइल पर भी मेहनत करनी पड़ेगी, वुजु इमामत इक्तिदार के मसाइल पर भी मेहनत करनी पड़ेगी, जो न आएं उनके लाने के लिए भी मेहनत करनी पड़ेगी। सूरत बनाकर सीरत बनाओ न आने वालों को मस्जिद में लाओं और सिखाओ, सहाबा किराम के जमाने में जबरदस्त मेहनत करके मैदान कायम किए गए थे, अल्लाह के रब होने की बुनियाद पर

नमाज का कियाम था। शरीफ इंसानों का ऊपर आना और इंसानों की जिंदगी का बनाना यह सब जब होगा कि आपके तरीके की नमाज को दुनिया में कायम करने की मेहनत करो, तुम खुद न करोगे बल्कि खुदा करेगा दुकान खेत से पलने के मंसूबे के बजाए अल्लाह से पलने के लिए नमाज पर मेहनत करनी होगी यह जबरदस्त मेहनत है।

पहले तो ''ला रब-ब इल्लल्लाह'' मेहनत का मैदान है फिर ऐसी नमाज कर लो कि 'अल्लाह रब्बुना' की तर्तीब कायम हो, ऐसी नमाज बनाओ कि ईमान पर खात्मा हो और कब्र के अजाब से हिफाजत हो और कियामत में रोशनी मिले। नमाज को तर्बियत के लिए चालु करो, अपनी कमाई मे से वक्त निकालो और खेती से पलने के यकीन को खत्म करो, अल्लाह से पलने का यकीन पैदा करो इसी की दावत दो। जाते इलाही के खजानों की अज्मत और बड़ाई को सुनो और इतना सुनो कि वह जात तुम्हारी आखों के सामने आ जाए 'इन ताबुदुल्ला-ह क-अन्न-क तराहु' यानि अल्लाह की इबादत इस तरह करो कि गोया खुदा को देख रहे हो इसके लिये कलिमा नमाज के फायदों का इल्म जिक्र व इख्लास के साथ लेना होगा। इसको अपने अन्दर पैदा करना और दूसरों के अन्दर पैदा कराने की मेहनत करना यह मस्जिद का काम है, इस मेहनत के जरिये दुकान और खेत से पलने का यकीन हटाना है और मस्जिद वाले आमाल से पलने का यकीन लाना है।

अदावत, चोरी, डकैती सब रूकेगे अगर आप सल्ल0 वाली ये सारी चीजे मेहनत करके मस्जिद में चला दी जाएं, अल्लाह को अल्लाह और रब कहने की बुनियाद पर यह मेहनत होगी इसके लिए मस्जिद की चीजें चलाओ, आप सल्ल0 ने मस्जिद की चीजें भूखे और प्यासे रहकर चलाई थी सर्दी से बदन कपकपा रहे हैं और मस्जिद में तालीम चल रही है। हजरत अबु सईद खुदरी रजि0 कहते हैं कि सहाबा किराम रजि0 का मज्मा था आप आकर खड़े हुए उनमें से मुझे पहचाना और आप बैठ गए और फरमाया कि ऐ फकीरों और मुहाजिरों के गिरोह ! मलदारों से पांच सौ साल पहले जन्नत में जाओगे इसके लिए इमामत, इक्तिदा, खुशअ-खुजुअ सफ सीधी करना, इन सब बातों पर मेहनत है। वह नमाज बने जिस नमाज से खुदा दुनिया की तर्तीब बदले, जालिमों को जिना करते हुए सजा दे, उसके लिए नमाज का माहौल बने फिर ताकत का मुजाहरा होगा।

पालने वाला इबादत पर पालेगा

अगर अल्लाह को रब मानते हो तो यह मेहनत करो कि अल्लाह रब हैं वह नमाज पर और नमाज की तालीम पर पालेंगे, सेहत देगें, कर्ज दूर करेगें इसको बैठकर सुनो। फजाईल की तालीम होगी ता मालूम होगा कि बाहर वालों का बचाव मस्जिद के अन्दर की आबादी से है वरना बेड़ा गर्क होगा यह हदीस है। ये बातें मुख्बिरे सदिक सल्ल0 की बातें मालूम होगी कि तुम इज्जत, हिफाजत और गिना कहां ढूंढ रहे है ? और यह इज्जत हिफाजत और गिना है कहा ? तुम्हें सब चीजें नमाज में मिलेगी। दावत, तिलावत, कुरआन वगैरह पर यकीन हो नमाज के बाहर और अन्दर भी यकीन भरा हो। अल्लाह अक्बर कहकर, सुब्हाकाअल्लाहुम्मा फिर अल्हमदुलिल्लाह रब्बिल आलमीन कहे यानि तर्बियत करने वाले अल्लाह हैं सारे आलम की तर्बियत करने वाले 'इयया-क नअबुदु' यानि हम इबादत पर तर्बियत करेगें और कियाम व रूकुअ इबादत है इस पर खुदा पालेगें अगर मेरा रूकुअ और कुरआन पढ़ना और इस्तिक्ले किबला आप सल्ल0 के तरीके पर आ गया तो अल्लाह मुझे पालेगा, पालने वाला इबादत पर पालेगा कियाम आपके वाले तरीके पर होगा तो पालेगा।

'सुबहा-न रब्बियल अजोम' में भी यही बात है कि तर्बियत करने वाले अल्लाह है,इबादत पर तर्बियत करेगें, रूकुअ इबादत है सर, कमर कूल्हे आपके तरीके पर होगें तो अल्लाह पालेगें, हर हिस्से पर खुदा से परवरिश का यकीन जमाओ जलसे में 'रब्बिगफिरली कहा यानि अल्लाह पालने वाले है।

आपने इंसानों स लेने का कोई रास्ता अख्तियार नही फरमाया

नमाज किस बात से ठीक होगी ? नमाज ईमान और अल्लाह के ध्यान से ठीक होगी इसके लिये अपने अन्दर यकीन, नीयत, शक्ल, शौक और ध्यान बनाने के लिये दूसरों में मेहनत करो, अपने मुहल्ले में बनाओ दूसरे मुहल्ले में मेहनत करो, अपने मुहल्ले में और दूसरे मुहल्ले में गश्त करो, सारी दुनिया में कोशिश करो, नुबूवत मिलने के बाद आप ल्ल0 ने इंसानों से लेने का कोई रास्ता अख्तियार नही फरमाया आपने तायफ, तबूक, यमन हजरमौत और नज्द वालों को नमाज बताई कि जो कलिमा पढ़े नमाज बनाने की मेहनत करे, जब ये यकीन बने कि अल्लाह रब है ओर रास्ता नमाज है, यह चीज जब दुनियॉ में चले तो दुनियॉ की तर्तीब बदलेगी। नमाज को अन्दर से बनाओ इसलिये कि मसले का अन्दर से ताल्लुक है, जब यह बना लो तो नमाज की बुनियाद पर तीन लाइन ठीक करो घर, कारोबार और मुआशरत। हुजूरे अक्दस सल्ल0 के वो तरीका ए अमल अपनी जिन्दगी मे लाओ जो अमल अल्लाह की जात से पलने के लिए है। आप सल्ल के रास्ते में भी कमाई और घर है और इंसानों के रास्ते में भी कमाई और घर के नक्शे है, रब की बुनियाद पर नमाज और नमाज की बुनियाद पर कमाइ यानि जब कमाई से परवरिश नही बल्कि अल्लाह से परवरिश है तो अल्लाह का हुक्म मान कर लेगें, जब यह बात है तो फिर क्यों कमा रहा है ?

कमाना और न कमानां

कि पहले नमाज से परवरिश ली लेकिन नमाज के बाद दो रास्ते हैं कमाना और न कमाना अगर न कमाया और सिर्फ नमाज पढकर अल्लाह से ले तो ठीक है। इसमें सिर्फ यह शर्त है कि अगर न कमाओ तो किसी मख्लूक का माल न दबाना और हाल का इज्हार न करना, सवाल न करना, इसराफ न करना, तकलीफ पहुंचे तो जजा फजा न करना, अल्लाह से राजी रहना अगर इतनी बात आ जाए तो कमाई की जरूरत नही। इसकी मिसाल क लिए चारों सिलसिले के औलिया अल्लाह हैं और हुजूर सल्ल0 हैं, हजरत ईसा अलै0 है, और अस्हाबे सुफफा हैं और लाखों मिसालें हैं कि जिन्होने सिर्फ नमाज से अपना काम चलाया है।

अगर कमाना है तो उस पर भी पाबन्दी है अगर कमाते हो तो कमाई की बुनियाद यह है कि कमाई से न मिलेगा बल्कि नमाज पर अल्लाह से मिलेगा और आपके तरीका ए अमल से कमाई पर मिलेगा कि मै पैसे के लिए नहीं कमाऊंगा बल्कि आपके तरीका ए अमल कमाई में हमे चलाने हैं, कमाना अमल करने के वास्ते है, हम यकीन पैदा कर रहे हों कि हमे सिर्फ अल्लाह पालेगा। सुअर, कुत्ता, बिल्ली इनका खाना हराम है और बकरी, गाय, मुर्गी, हिरन हलाल है पर इनमें भी हराम व हलाल बनेगा अगर बिस्मिल्लाह अल्लाह अकबर कहकर जिब्ह किया तो हलाल वरना हराम होगा, बकरी को बीच से मार कर बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर कहा तो भी हराम बनेगा क्योकि तरीका गलत था। पहल तो कमाई की किस्म हलाल पर है या हराम पर है फिर हलाल में भी तरीका हलाल है या हराम है ? अगर अल्लाह के रब होने का यकीन है तो आपका तरीका चालु करने पर आवें खुदा की रिजा के लिए कमाइए, फजाइल के शौक और मसाइल की पाबन्दी के साथ कमाइए। जो बात नमाज में कही वही कमाई में कही, जब कमाई, तिजारत, जराअत में राब्ता खुदा की जात में हो तो दुनिया में चमकना और फलना-फूलना होगा जलजला, सैलाब , बमबारी में दुकान और घर का बाल बांका न होगा क्योकि महबूब

का तरीका है, चाहे दुकान मिटटी की है, आप सल्ल0 का तरीका है तो एटम से ज्यादा ताकतवर है, फिर कमाई की बुनियाद पर घर चलावेंगे कि कुछ लिबास हराम और कुछ हलाल हैं, खाना और उसका तर्ज कुछ हराम, कुछ हलाल हैं। इस यकीन को लो कि अल्लाह रब हैं अगर आप सल्ल0 के तरीके पर पैसे खर्च करेंगे, लिबास और गिजा की तर्तीब आपके तरीके पर होगी तो अल्लाह पालेगा। आपके तरीके का झोंपड़ा किसरा के किले से बेहतर है, मुश्रिकीन, मुलाहिदीन, फुस्साक व फुज्जार की ढ़ाई लाख की कोठी से बेहतर है, पांच रूपए की झोपड़ी में वह खैर है जो पचास लाख की कोठी में नही है, इसका नाम ईमान है।

आपके तरीके का सवा रूपए का कुरता मजेदार होगा। यहुद व नसारा के तर्तीब वाले पचास लाख के कपड़े से उसमें वह मजा नही है। आप सल्ल0 के तरीके पर अल्लाह पालेगें और यहूद व नसारा के तरीके पर घर का नक्शा आया तो फिर खुदा बिगाड़ेगा। शादी के तरीके, वलादत व मौत के तरीके में भी अपने तरीके बदल कर आप सल्ल0 के तरीके लो अगर तुमने इन घरों को यहूद व नसारा के तरीके पर रखा तो पानी की बौछार और जमीन का झटका उसे तोड़ देगा अगर आपका तरीका है तो एटम बम भी नही तोड़ सकेगा।

कमाई की हवस

लोहा, पत्थर मस्जिद में लगाया ये सब बेकीमत है, कीमती तो आप सल्ल0 के तरीका ए अमल हैं, आपके बदन से जो तरीका ए अमल चले वे कीमती है। हुक्म खुदा का हो और तरीका ए अमल आपके हों अगर सारी दुनिया की कोठी हीरे जवाहारात हों तो आपके पाखाना फिरने का अमल उससे कीमती है आगे मुआशरत है। जब कमाई और खर्च आप सल्ल0 के तरीके पर लाओगे तो गनी बनोगें, अमरीका और रूस और सारी दुनियॉ फज्र की दो रकअत अमल के बराबर भी नही एक आदमी पांच हजार रूप्या लेकर अफ्रीका गया, वहां बहुत नमाजी बने, इंग्लिस्तान और फ्रांस में मस्जिदें बनी इसलिए माल यहां खर्च करो जिंदगी सादा बनाओ तो कमाई की हवस न रहेगी। कमाई की हवस हुजूर सल्ल0, हजरत अबुबक्र व उमर रजि0 के नक्शे पर आने के लिए नही हैं बल्कि कारून फिरऔन, शददाद और शराबियों और जानिओं के तरीके पर आने के लिए है, पैसा और वक्त खूब बचेगा जब आपकी तर्बियत के तरीकों पर आओगे। अमोर व गरीब को जोड़ा तो सारी दुनिया की इंसानियत पर भारी एहसान होगा, खुदा खुद बदला देगा, एक-एक नमाज पर सातों जमीन व आसमान से बड़ी जन्नत मिलेगी फिर मुआशरत है दुनिया में इंसाफ चलाना है, हम लाखों की बिल्डिंग में रहे और लोगों को झोपड़ा भी न मिले यह जुल्म है इंसाफ नही है।

ये यहूद व नसारा दूसरों का खून पीते हैं उनकी नकल उतारने मे मजा आता है और जिस जाते गिरामी सल्ल0 ने फाके बरदाश्त किए और अपना खून बहाया, उनके तरीके पसन्द नही आते आपके खून के कई कतरे बहे, एक वक्त का फाका और खून का कतरा सारी दुनिया से अफजल है। उश्शाक माल देते थे और आप उम्मत की जरूरत पर माल लगा कर फाका करते थे । हजरत फातिमा रजि0 अन्हा बीमार थीं, हजरत अली रजि0 ने अबु जहल की बेटी से निकाह करने का इरादा किया आपने मिंबर पर खड़े होकर फरमाया कि मैं हलाल को हराम नही कहता लेकिन इस निकाह से फातिमा को तकलीफ होगी और उसकी तकलीफ से मुझे तकलीफ होगी, इतनी महबूब बेटी की शादी में पचीस रूपए भी न लगाए हजरत फातिमा रजि0 खुद चक्की पीसती थी, हजरत अली रजि0 मजदूरी करते हैं, मश्क ढोते है छः बच्चे परवरिश पाते है। हुजूर सल्ल0 के पास गुलाम बांदी आए तो हजरत अली रजि0 ने हजरत फातिमा रजि0 को भेजा कि गुलाम बांदी मांगो काम मे हाथ बटाएंगे हजरत अली रजि0 ने हाथ और कोख दिखाई और हजरत फातिमा रजि0 ने भी हाथ कोख दिखाए और गुलाम और बांदी

मांगे। आपको गुस्सा आया फरमाया तुम्हे तो बांदी ओर गुलाम दूं और मेरी उम्मत भूखी रहे, आपने अपने को और अपनों को कुर्बान करके उम्मत बनाई है तुम अपने ऐंश को कुर्बान करके उम्मत को बचाओ। कौम वतन कबीले के बनके न चलो, अल्लाह के बनकर चलो परदेसियों और मकामियों का मसला हो तो उसे जुल्म का नारा न बनाओ, सिंधी और पठान कहा तो यह जुल्म का नारा है। जब आदमी जुल्म करे जाहिलियत और असबियत पर मदद करे तो नमाज और रोजा मुंह पर फेंक कर मार दिया जाता है। यहां तक कि मुस्लिम और गैर मुस्लिम मसला भी नही है। मुस्लिम ने हिन्दू को मारा और मुस्लिम की मदद की तो तुम जालिम बने, हर मसले में वाकिया की तहकीक करो। सिंधी ने पंजाबी को पीटा, पंजाबी ने पठान का माल दबाया अब कहो कि जुल्म और इंसाफ का मसला है, मुसलमान से इंसाफ दिलाना है, इंसाफ वाले सरों पर आते है और जुल्म वाले पैरों पर गिरते है। इंसाफ पर खुदा ऊपर लाएगा कौमियत, उबूवत, नुबूवत की बुनियाद पर मदद होगी कौन मज्लूक है और कौन जालिम है ? यह देखा जाएगा।

इन तीनों लाइनों में अल्लाह को रब मानकर आपके तरीके पर आओ तो राकेट और एटम बम से खुदा महफूज करेगा। आप सल्ल0 के तरीक पर करेगा आपके तरीके टूटने पर न मानने वालों को पैरां पर डालता है और मानने वालां को सरों पर लाता है। पहले इबादत को ताकतवर बनाओ फिर तीनों लाइनो को अल्लाह के रब होने पर और आप सल्ल0 के तरीके पर उठाओ तो खुदा मदद करेगा इसलिए आपने कमाई और घर की तर्तीब बनाई इस पर आना आसान होगा अल्लाह आसान करेगा।

यूरोप वाले खून लेने वाले हैं और आप सल्ल0 अपना खून देने वाले हैं तो अब बताओ कि हाल के मुश्रिक, मुल्हिद और यहूद नसारा ने जो खून किया है उसे देखोगें तो आपका तरीका महबूब बनेगा, जब अल्लाह के रब होने का यकीन हो इसलिए आपने वक्तों की तर्तीब कायम की साल भर में चार महीने मदनी सहाबा रजि0 अपना माल लेकर खुदा के रास्ते में निकले ताकि इबादत का माहौल दुनिया में कायम हो और आठ माह अपने मकाम पर रहते हुए आधा दिन मस्जिद में और आधा दिन कारोबार में आधी रात मस्जिद में आर आधी रात घर में। इसके एतबार से चार महीने मकामी इबादत का माहौल बनाने के लिए दो महीने कारोबार और दो महीने घर के लिए और चार महीने बाहरी नक्ल व हरकत करते हुए इबादत का माहौल बनाने के लिए।

ज्ब एक तबका मदनी सहाबा रजि0 की तर्तीब पर पड़ जाए तो दुनिया मे दीन फैले।

रब्बियल्लाहु-रब्बियल्ल्लाहु

इस बयान के बाद लोगों से चिल्ला तीन चिल्ले के औकात की तश्कील की गई। इसके बाद एक साहब का निकाह पढ़ाने की दरख्वास्त की गई हजरत जी रह0 ने निकाह पढ़ाया तबियत चूंकि पहले से मुजमहिल चल रही थी इसलिए कि मश्रिकी और मग्रिबी पाकिस्तान का लगभग डेढ़ माह से ज्यादा का सफर रहा जिसमें शब व रोज इंतिहाई मेहनत व जांफशानी की वजह से राहत व आराम का मौका नही मिला था। इसलिए अपनी हमेशा की आदत के खिलाफ सिर्फ एक मिनट की दुआ फरमा कर करीब की कियामगाह की तरफ तशरीफ ले जा ही रहे थे कि साद बिन हाफिज मुहम्मद सिददीक नूही को बुलाकर फरमाया कि मुझे चक्कर आ रहे हैं और उसका हाथ पकड़ कर चलते रहे यहां तक कि अचानक वे जमीन पर बैठते चले गए। गिरते ही पसीनों में तरबतर हो गए मुश्किल से चारपाई पर लाद कर लिटाया गया बेहोशी तारी हो गई। हकीम साहब ने दवा खिलाई कुछ मिनटों के बाद होश आया इशा की नमाज दो आदमियों के साथ मिलकर रात को साढ़े तीन बजे अदा की फिर सुबह के वक्त सुबह की नमाज अदा फरमाई। मौलाना इनामुल हसन साहब को अपनी किताबों की जकात निकाल देने की वसीयत की। डाक्टर साहब ने मुआयना करके कहा कि अब खतरे से बाहर है। मगर शदीद

एहतियात की जाए। जब सब लोग जुमा की नमाज के लिए मस्जिद चले गए तो फिर हालत मुतगययर हो गई दो आदमियों के साथ मिलकर नमाज इशारे से अदा फरमाई, लेकिन सांस उखड़ चुकी थी बार बार रब्बियल्लाहु-रब्बियल्ल्लाहु पढ़ रहे थे अहबाब जुमा क फर्ज अदा करे आए आपने फरमाया, शायद आखिरी वक्त है। सब लोग कुरआन पढ़े और जिक्र करे और खुद हिज्बुल आजम की दुआएं पढ़ने मे मशगूल हो गए, खास तौर से वह दुआ जो हुजूरे अकरम सल्ल0 मक्का की फत्ह के वक्त पढ़ रहे थे यानि-

ला इला-ह.......और आखिर तक पढ़ते हुए शहादत की उंगली आसमान की तरफ बार-बार उठाते थे।

इतने में डाक्टर आ गए और अस्पताल ले जाने का मश्विरा दिया। हजरत जी ने अस्पताल की बात सुनी तो फरमाया वहां औरते होगी, मै न जाऊंगा। डाक्टर और बाअसर हजरात ने अर्ज किया कि हजरत! एक औरत भी पास न आएगी, फरमाया फिर कोई मुजायका नही आखिर एक बड़ी कार में लिटाया गया, फरमाया कि मेरे साथ कौन चल रहा है? मौलाना इनामुल हसन साहब और हाफिल मुहम्मद सिददीक साहब वगैरह ने कहा कि हम सब साथ है। आपने फरमाया मेरे साथ कोई नही चल रहा है। बस अल्लाह साथ है।

रास्ते भर ''ला इलाहा इल्लल्लाह का विर्द जुबान पर जारी रहा एक बार मालूम फरमाया कि अब अस्पताल कितनी दूर है कहा गया कि बस पहुंच रहे है। अब ला इलाहा इल्लल्लाहु की आवाज जरा धीमी पड़ चुकी थी, फिर होंठ कलिमा तैयिबा की तकरार से हिलते रहे यहां तक कि अस्पताल के दरवाजे ही पर रहमते हक ने उस बेचैन रूह को बढ़कर अपनी गोद में ले लिया और सालों के थके मुसाफिरों ने रफीक आला के पास जाकर आराम पा लिया। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन

हजरत मौलाना यूसुफ साहब रह0 के मज्मुआ बयानात का खुलासा

हजरत मौलाना सुहैल साहब दाम0 को कलम से

माल के मुकाबले पर ईमान और चीजों के मुकाबले पर आमाल

अल्लाह जल्ला शानुहू ने इन्सानों की कामयाबी और नाकामी का दारोमदार दुनियॉ मे फैले हुए माल और सामान पर नही रखा बल्कि इन्सानों की कामयाबी और नाकामी का दारोमदार इन्सानों के अमलों पर रखा है, ये दुनियॉ इन्सानों के लिय दारूल अमल है जिसे ईमान ना सीखने की वजह से जाहिल और अहमक लोग दारूल असबाब बतलाते हैं। इन्सान इस दारूल अमल की जगह पर दुनियॉ मे फैले हुए माल और सामान के धोखे मे पड़ कर नाकामियों का शिकार हो जाता है, इन्सान दारूल असबाब कहने वालो के धोखे से बच जाये इसलिये हुजूर सल्ल0 ने फरमाया ! ये दुनियॉ मुर्दार है और इसके चाहने वाले कुत्ते है। (कंजुल आमाल -1-122)

ये दुनियॉ और दुनियॉ मे फैला हुए माल और सामान की हैसियत व कीमत क्या है इसकी खबर इस रिवायत मे मौजूद है, हज़रत इब्ने उमर रजि0 ने फरमाया ! कोई बन्दा अल्लाह के यहां चाहे जितनी इज्ज़त व शर्फ वाला हो लेकिन जब वो दुनियॉ की किसी चीज़ या सामान को ले लेता है तो उस चीज़ के लेने की वजह से अल्लाह के यहां उसका दर्जा कम हो जाता है।

(हुलीया-1-306)

लेकिन इन्सान आज ईमान को ना सीखने की वजह से दिन व रात माल और सामान को हासिल करने के लिये मेहनत कर रहा है हॉलाकि इन्सानों की कामयाबी और नाकामी माल और सामान मे नही बल्कि कामयाबी और नाकामी का तआल्लुक इन्सान के अपने अमल से है और अमल का तआल्लुक अल्लाह जल्ला शानुहू के फरिश्तो के जरिये चलाये जा रहे गैबी निजाम से है। हुजूर सल्ल0 ने फरमाया ! हर इन्सान के कान्धों पर किरामन-कातिबीन नाम के दो फरिश्ते उसके अमलों को लिखते रहते है, जो फरिश्ते फज्र की नमाज के वक्त आते हैं वो फज्र से असर की नमाज तक के अमलों को लिखते है फिर इनके आसमानों के ऊपर वापस जाने से पहले दूसरे दो फरिश्ते असर की नमाज से लेकर फज्र की नमाज तक के अमलों को लिखने आ जाते है, (फरिश्तों के जरिये चलाये जा रहे गैबी निजाम को तफसील से जानने के लिये मस्जिद की आबादी की मेहनत नाम की किताब का मुतआला करें)

हजरत अबुहुरैरा रजि0 से रिवायत हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इर्शाद फरमाया ! तुम्हारे पास रात और दिन के फरिश्ते आते रहते है, ये फज्र और असर की नमाज़ के वक्त जमा होते हैं फिर जिन्होने तुम्हारे साथ रात गुजारी थी वो ऊपर चले जाते हैं। (बुखारी शरीफ)

हजरत अबुहुरैरा रजि0 रसूलुल्लाह सल्ल0 से नकल करते हैं कि दिन के किरामन-कातिबीन अलग होते हैं और रात के अलग, ये दिन के फरिश्ते मग्रिब की नमाज को मुसलमान के कामिल तौर पर अदा करने के बाद ही आसमान पर वापस जाते हैं। इसलिये अगर मग्रिब की दो सुन्नतों में देरी की गयी तो यह उन फरिश्तों पर भारी हो जाती है लिहाज़ा मग्रिब की फर्ज अदा करने के बाद उन सुन्नतों की अदायगी में देर न किया करो। (दैलमी)

हजरत अबुमूसा अश्अरी रजि0 से रिवायत हैं कि हुजूर सल्ल0 ने फरमाया ! अल्लाह तआला के पास उनके बन्दों के दिन के अमल रात होने से पहले और रात के अमल दिन होने से पहले पहुॅच जाते हैं। (मुस्लिम)

आसमानों के ऊपर अमल के पहुॅचते ही उन अमलों के फैसले जमीन पर उतरते है,

इज्जत या जिल्लत के फैसले,
राहत या तकलीफ के फैसले,
सुकून या परेशानी के फैसले,
सेहत या बीमारी के फैसले,

इन्सानों ने फज्र से असर की नमाज तक जैसे अमल किये थे आसमान से उन्ही अमलों के फैसले उस पर जाहिर होते है, इसी तरह असर की नमाज से लेकर फज्र की नमाज तक जो अमल करेगा उसका ही नतीजा उस पर जाहिर होगा, इन्सान के साथ इसकी पैदाईश से लेकर मौत तक ये सिलसिला चलता रहता है। जब हुजूर सल्ल0 मेराज मे जिब्राईल अलै0 के साथ आसमानों के ऊपर जा रहे थे तो हुजूर सल्ल0 ने कुछ चीजों को जमीन से आसमान की तरफ जाते हुए देखा और कुछ चीजों को आसमान से जमीन की तरफ आते दखा, ये देखकर आप सल्ल0 ने जिब्राईल अलै0 से पूछा ! जिब्राईल ये जमीन से आसमान की तरफ कौन सी चीजें जा रही हैं ?

जिब्राईल अलै0 ने अर्ज किया कि या रसूलूल्लाह ! ये आपकी उम्मत के आमाल जा रहे हैं।

आप सल्ल0 ने जिब्राईल अलै0 से फिर पूछा कि जिब्राईल ये आसमान से जमीन की तरफ कौन सी चीजें आ रही है ? इस सवाल पर जिब्राईल अलै0 ने अर्ज किया या रसूलूल्लाह ये आपकी उम्मत के अमलों पर अल्लाह तआला ने जो वादे और वईदे बतलायी हैं उनके फैसलै आ रहे हैं।

अमल किसको कहते है

अब रही बात कि अमल किसको कहते है ?

जिस्म के सात आजा ऑख, कान जुबान, हाथ, पैर, दिमाग और शर्मगाह से होने वाली हरकत को अरबी जुबान मे अमल, ऊर्दू जुबान मे हरकत, हिन्दी जुबान मे कर्म और अग्रेजी जुबान मे function कहते है। जिस तरह मोबाईल का Key Pad मोबाईल के आजा यानी parts of body है, जिससे Call करने, मैसेज Message लिखकर या Whatsapp से Image को Send करते है ठीक इसी तरह हमारे जिस्म के सात आजा से होने वाली हरकतें आसमानों के ऊपर Send हो जाती है और सुबूत {Record} के तौर पर इन हरकतों को लिखने वाले यानी video clip बनाने वाले फरिश्ते रोजाना दो मर्तबा फज्र और असर की नमाज के बाद आसमानों के ऊपर ले जाते हैं ताकि कयामत के दिन इन्सानों को उनके अमल दिखलाये जायें। अब रही बात कि ये करामन और कातबीन के लक्ब से पुकारे जाने वाले फरिश्ते इन्सानो के दायें और बायें कान्धों पर बैठकर आखिर क्या लिखते हैं ?

हदीस की रौशनी मे दायें कान्धे पर बैठा हुआ फरिश्ता नेकी लिखता है और बायें कान्धे पर बैठा हुआ फरिश्ता बुराई लिखता है, अब रही बात कि नेकी और बुराई किसे कहते है ?

नेकी यानी अच्छाई

बहुत आसान जुबान मे इसे यूँ समझ लो कि ऑख, कान जुबान, हाथ, पैर, दिमाग और शर्मगाह को अल्लाह जल्ला शानुहू की मर्जी पर इस्तेमाल करना नेकी है इसलिये कि अल्लाह जल्ला शानुहू ने ऑख, कान जुबान, हाथ, पैर, दिमाग और शर्मगाह को अपनी कुदरत से बनाया है सिर्फ अपनी मर्जी पर इस्तेमाल करने के लिये।

बुराई यानी गुनाह

ऑख, कान जुबान, हाथ, पैर, दिमाग और शर्मगाह का अपनी मर्जी पर इन्सान का इस्तेमाल करना बुराई है यानी गुनाह है और गुनाह इसलिये है क्यों कि हर आजा के खालिक, मालिक और राजिक अकेले अल्लाह हैं, अल्लाह ने इन्हे बनाया था अपनी मर्जी पर इस्तेमाल होने के लिये पर इन्सान का अपनी मजी पर इन्हे इस्तेमाल करना ही गुनाह है।

इन्सान की अपनी मर्जी और मंशा वाले अमल

किसी से मिली हुई चीज का अपनी मर्जी पर इस्तेमाल करना उस वक्त ठीक होता है जब उस चीज के देने वाले ने उसका नफा और नुकसान ना बतलाया हो अब चूँकि अल्लाह जल्ला शानुहू ने ऑख, कान जुबान, हाथ, पैर, दिमाग और शर्मगाह को बनाया और इसके इस्तेमाल पर नफा और नुकसान भी बतलाया इसलिये हमे अल्लाह जल्ला शानुहू की बात को सामने रखकर इसका इस्तेमाल करना होगा अगर हमने अपने रब की बात को ना माना और इन चीजों को अपनी मर्जी पर इस्तेमाल किया कि

ऑख से जो चाहा देख लिया,
कान से जो चाहा सुन लिया,
जुबान से जो चाहा बोल लिया,
हाथ से जो चाहा कर लिया,
पैर से जिधर चाहा चल दिये,
दिमाग से जो चाहा सोच लिया और,
शर्मगाह से जहॉ चाहा शहवत पूरी कर ली,

तो अपनी मर्जी पर इस्तेमाल करने के नतीजे और फैसले मे आसमानों के ऊपर से जिल्लतें, तकलीफें, परेशानियॉ और बीमारियॉ नाजिल होगीं, इन्सान चाहे कलाई और चूने के पहाड़ मे मौजूद हो ये नतीजे उस तक पहुँच कर रहेगें, ऐसे इन्सान के पास चाहे जितना माल और सामान हो पर ये इन्सान इज्जत की तंगी, राहत मे तंगो, चैन व सुकूनं मे तंगी और सेहत मे तंगी के साथ यानी जिल्लत या बेइज्जती, तकलीफें, परेशानियौं और बीमारियौं के साथ दुनियॉ मे नाकामी वाली जिन्दगी के बाद कयामत मे अंधा
उठाया जायेगा।

وَمَنْ أَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِي فَإِنَّ لَهُ مَعِيشَةً ضَنْكًا وَنَحْشُرُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ أَعْمَىٰ
قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِي أَعْمَىٰ وَقَدْ كُنْتُ بَصِيرًا
قَالَ كَذَٰلِكَ أَتَتْكَ آيَاتُنَا فَنَسِيتَهَا وَكَذَٰلِكَ الْيَوْمَ تُنْسَىٰ

सूर ताहा 124

जिल्लत या बेइज्जती

किसी को हाकिम से जिल्लत या बेइज्जती का डर, किसी को पुलिस से जिल्लत या बेइज्जती का डर, किसी को गुंडे बदमाशों से जिल्लत या बेइज्जती का डर, किसी को रिश्तेदारों से जिल्लत या बेइज्जती के डर वगैरह मे अक्सर इन्सान मुब्तिला मिलेगें।

तकलीफ

किसी के दांत मे तकलीफ, किसी के पेट मे तकलीफ, किसी के हाथ पैर मे तकलीफ, किसी की हडडी मे तकलीफ, किसी को पानी की तकलीफ, किसी को बारिश की तकलीफ, किसी को रहने की तकलीफ या खाने पीने की तकलीफ वगैरह मे अक्सर इन्सान मुब्तिला मिलेगें।

परेशानियाँ

कोई बीबी से परेशान, कोई औलादों से परेशान, कोई दामाद से परेशान, कोई पड़ोसी से परेशान, कोई दुकानदार से परेशान, कोई नौकर से परेशान या किरायदार से परेशानी वगैरह मे अक्सर इन्सान मुब्तिला मिलेगें।

बीमारियाँ

कोई शुगर मे, कोई कैंसर मे, कोई फीवर मे, कोई फैक्चर मे, कोई बवासीर मे, कोई मिर्गी या दौरा मे या कमजोरी और बदहजमी वगैरह मे भी अक्सर इन्सान मुब्तिला मिलेगें।

आज ईमान को ना सीखने की वजह से हमे खुद पता नही है कि अल्लाह तआला ने हमारे जिस्म के आजा ऑख, कान जुबान, हाथ, पैर, दिमाग और शर्मगाह वगैरह को क्यों बनाया है ? हॉ, सूरज को, चॉद को, आग को और हवा के बारे मे तो जानते हैं कि इन्हे क्यों बनाया गया है पर हमारी ऑख, कान जुबान, हाथ, पैर, दिमाग और शर्मगाह वगैरह को क्यों बनाया इसकी खबर नही आज अगर किसी से भी पूछो कि अल्लाह तआला न

आंख क्यों बनायी है ? जवाब मिलेगा देखने के लिये ।

जुबान क्यों बनायी ? जवाब मिलेगा बोलने के लिए।

कान क्यों बनाये ? जवाब मिलेगा सुनने के लिये।

दिमाग क्यों बनाया ? जवाब मिलेगा सोचने के लिए।

हाथ क्यों बनाये ? जवाब मिलेगा पकड़ने के लिए।

पैर क्यों बनाये ? जवाब मिलेगा चलने के लिए।

शर्मगाह क्यों बनाई ? जवाब मिलेगा शहवत पूरी करने के लिए।

हांलाकि ये बात झूठ है कि अल्लाह तआला ने ऑख देखने के लिये बनायी है अगर आंख देखने के लिये बनायी होती तो फिर इन्सान आंखों से जो चाहे वो देखता कि चाहे किसी औरत को नंगा नहाता हुए देखे या मोबाईल मे नंगा नाच देखे पर ऐसा नही है बल्कि अल्लाह तआला ने आंख बना कर उसमें रोशनी भेजी तो रोशनी के साथ ही हुक्म भेजा कि आंख से ये देखना और ये नही देखना। जुबान बनायी फिर जुबान पर बोल भेजकर नबी के जरिये ये हक्म भिजवाया कि जुबान के बोल से ये बोलना और ये ना बोलना कि तुम किसी की मॉ बहन को गाली दो या किसी की चुगली करो पर ऐसा नही है बल्कि अल्लाह तआला ने जुबान बना कर उसमें बोल भेजे तो बोल के साथ ही हुक्म भी भेजा कि जुबान से ये बोलना और ये नही बालना। बदन के हर आजा से क्या करना है और क्या नही करना ये नबी के जरिये से हमे बतलाया।

मेरे दोस्तों इन नेयमतों के बारे मे उस शख्स से पूछो जिसके पास

आंख हो पर उसमें रोशनी न हो,

कान हो पर अन्दर आवाज न जा रही हो,

जुबान हो पर मुंह से बोल न निकल पा रहे हो,

हाथ.पैर हों पर फालिज की वजह से हाथ पैर हरकत न करते हों,

दिमाग हो पर सोचने और समझने की सलाहियत न हो,

इन्सान को इन नेयमतों को अपनी मर्जी पर अमल करने का अख्तियार तो है पर अपनी मर्जी वाले अमल करने से इन्सान जिल्लतों, तकलीफों, परेशानियो और बीमारियों मे घिर जायेगा इसलिये कि अमल का तआल्लुक खुदा के गैबी निजाम से है।

ظَهَرَ الْفَسَادُ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ أَيْدِي النَّاسِ لِيُذِيقَهُمْ بَعْضَ الَّذِي عَمِلُوا لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ

अल्लाह तआला का इर्शाद है ! खुश्की और तरी मे जो फसाद फैला है वो लोगो के आमाल का नतीजा है ताकि अल्लाह तआला उनको उनके आमाल का मजा चखाये अजब नही कि वो इन अमलो से रूक जाये। (सूर रूम 41)

गैबी निजाम के तहत आसमानों के ऊपर से आने वाली जिल्लते, तकलीफे, परेशानियॉ और बीमारियॉ इन्सान की रूह पर आतीं है और जाहिर जिस्म पर होती है इसलिये कि आसमानों के ऊपर से इन्सानों के पास जो कुछ भी आयेगा वो इसकी रूह पर आयेगा और जाहिर इसके जिस्म पर होगा मिसाल के तौर पर जिस तरह मोबाईल मे जो कुछ भी आयेगा {Message – Image – Sound clip – Mail या Recharg वगैरह } वो जमीन से 350 किलोमीटर ऊपर मौजूद satellite से सिमकार्ड पर आयेगा पर जाहिर मोबाईल पर होगा और जो कुछ भी मोबाईल से जमीन से 350 किलोमीटर के ऊपर मौजूद satellite पर जायेगा वो सिमकार्ड की ही वजह से जायेगा, आमाल का आसमानों के ऊपर जाना और उनके फैसलों का जमीन पर आना ये नीचे लिखी जा रही हदीस से भी समझा जा सकता है।

हुजूर सल्ल0 ने फरमाया ! हर आसमान पर हर इन्सान के लिए दो दरवाज़े हैं, एक दरवाजे से उसके आमाल ऊपर जाते हैं और दूसरे दरवाजे से उसकी रोजी उतरती है। (किताबुल जनाइज़)

आमाल को आसमानों के ऊपर ले जाने वाले फरिश्तों के साथ हमारा क्या मामला होना चाहिये ?

हजरत अबुहुरैरा रजि0 फरमाते हैं कि हुजूर सल्ल0 ने इर्शाद फरमाया ! तुममे से हर एक अपने उन दोनो फरिश्तों से हया करे जो हर वक्त तुम्हारे साथ रहते हैं। जिस तरह तुम अपने दो नेक पड़ोसियों से हया करते हो उसी तरह ये दोनो फरिश्ते हया के इससे ज्यादा मुस्तहिक हैं क्योंकि ये रात-दिन तुम्हारे साथ रहते है। (शुअबुल ईमान)

अगर उन फरिश्तो के साथ हमने हया का मामला ना किया तो ये हमारे ईमान के लिये बड़े खतरे की बात है क्योंकि हुजूर सल्ल0 का इर्शाद है जब किसी मोमिन से गुनाहे कबीरा का अमल हो जाता है तो ईमान का नूर उसके दिल से निकलकर उसके सर पर साया कर लेता है (मुस्लिम शरीफ) गुनाह करने वाला जब तक तौबा नही करता ईमान का नूर उसके दिल मे नही आता।

इसीलिये हजरत इब्ने अब्बास रजि0 ने फरमाया ! गुनाह करने के बाद कुछ बातें ऐसी होती हैं जो गुनाह से भी बड़ी होती हैं कि अगर गुनाह करते हुए तुम्हें अपने दायें-बायें के फरिश्तों से शर्म न आयी तो ये उस किये हुए गुनाह से भी बड़ा गुनाह है।

(

कंज-8-224)

फरिश्तो से हया ना करना इस बात की अलामत है कि हमे सिर्फ फरिश्तों का इल्म है यानी फरिश्तों की मालूमात है, फरिश्तों की मौजूदगी का यकीन नही है यानी फरिश्तों पर ईमान नही है मिसाल के तौर पर एक डाक्टर ने हमसे कहा कि तुम्हारे दिमाग मे कैन्सर है या तुम्हारे सर मे टियूमर है लिहाजा तुम इन इन चीजों से

बचना और ये काम करना, डाक्टर की इस बात का यकीन हमारी जिन्दगी के इस्तेमाल को बदल देता है हालॉकि ना हमने कैन्सर को देखा और ना टियूमर को देखा कि ये दिखने वाली चीज ही नही है बस चौबीस घंटे कैन्सर और टियूमर के ध्यान और ख्याल के साथ गुजरते है, जिन्दगी का बदलना डाक्टर की बात के यकीन की वजह से हुआ है पर हुजूर सल्ल0 की बात का कितना यकीन है यानी हुजूर सल्ल0 पर कितना ईमान है कि हुजूर सल्ल0 की बातों के यकीन ने हमारी जिन्दगी के इस्तेमाल को कितना बदला है ? इसका फैसला खुद करो। इसीलिये सहाबा किराम फरमाते हैं कि हमने पहले ईमान सीखा फिर कुरआन सिखा है।

हजरत अबुबक्र रजि0 जब बैतुलखला में दाखिल होने का इरादा करते तो अपनी चादर बिछा देते और फरमाते ''ऐ
मुहाफिज फरिश्तों ! तुम लोग यहां इस चादर पर तशरीफ रखो मैने अल्लाह तआला से अहद किया है कि मै बैतुलखला में
कोई बात नही करूंगा। (मुकद्दमा अबुल्लैस)

हजरत जैद बिन सामित रजि0 से रिवायत है कि हुजूर सल्ल0 ने फरमाया ! क्या मैने तुम लोगों से कपड़े हटाने को मना नही किया है ? तुम्हारे साथ ये दोनो फरिश्ते जो तुमसे अलग नही होते है, न नींद में न बेदारी में। याद रखों जब भी तुममे से कोई अपनी बीवी के पास जाये या पेशाब-पाखाना जाये, तो उन दोनो से शर्म करे खबरदार उन दोनो की इज्जत करो। (बैहकी)

हजरत इब्ने अब्बास रजि0 से रिवायत है कि हुजूर सल्ल0 ने इर्शाद फरमाया ! ऐ लोगों अल्लाह तआला तुम्हे कपड़े उतार देने से मना फरमाता है। तुम अल्लाह के उन फरिश्तो से हया करो जो करामन कातिबीन तुम्हारे साथ रहते हैं। वो तुमसे अलग नही होते सिवाय तीन वक्तों के जो तुम्हारी जरूरते हैं,

1. पेशाब-पाखाने के वक्त,
2. बीवी से सोहबत के वक्त,
3. गुस्ल करते वक्त । (मुस्नद बज्जार)

रब की मर्जी और मंशा वाले अमल हुजूर सल्ल0 वाले अमल हैं

मेरे भाईयों, दोस्तों और बुजुर्गों ! अगर इन्सान ने इन आजा को अपने बनाने वाले की मर्जी पर इस्तेमाल किया है जिस तरह हुजूर सल्ल0 ने इस्तेमाल किया या इस्तेमाल करने के लिये बतलाया है कि
ऑख से वो देखा जिसके देखने का रब ने हुक्म दिया था,
कान से वो सुना जिसके सुनने का रब ने हुक्म दिया था,
जुबान से वो बोला जिसको बोलने का रब ने हुक्म दिया था,
हाथ से वो किया जिसके करने का रब ने हुक्म दिया था,
पैरों को उधर चलाया जिधर चलाने का रब ने हुक्म दिया था,
दिमाग से वो सोचा जिसके सोचने का रब ने हुक्म दिया था,
ऐसे इन्सानों की रूह पर आसमानों के ऊपर से इज्जत, राहत, चैन व सुकूनं और इत्मिनान का नतीजा और फैसला आयेगा जो इसके जिस्म पर जाहिर होगा इसलिये कि नतीजा जाहिर होने की जगह अमल करने वाले का जिस्म है।

हजरत अबुहुरैरा रजि0 से रिवायत हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इर्शाद फरमाया! इन्सान तक उसकी रोज़ी पहुँचाने के लिये फरिश्ते मुतय्यन हैं अल्लाह तआ़ला ने उनको हुक्म फरमा रखा है कि जिस आदमी को तुम इस हालत

में पाओ, जिसने (हुजूर सल्ल0 वाले अमल) को ही अपना ओढ़ना-बिछौना बना रखा है तो तुम उसको आसमानों और ज़मीन से रिज़्क मुहय्या कर दो और दीगर इन्सानों को भी रोज़ी पहुँचा दो पर ये दीगर लोग अपने मुक़द्दर से ज्यादा रोज़ी न पा सकेगें।

(अबु अवाना)

हुजूर सल्ल0 वाले अमल अल्लाह की कुदरत से लेने का सबब और जरिया हैं अगर हुजूर सल्ल0 वाले अमल नही हैं तो मुक़द्दर वाली रोज़ी मिलेगी।

हजरत इब्ने उमर रजि0 हुजूर सल्ल0 से नकल करते हैं कि जब मुसलमान पर कोई बीमारी भेजी जाती है और वो इस पर सब्र (हुजूर सल्ल0 वाले अमल) करता है तो अल्लाह तआला किरामन-कातिबीन को हुक्म फरमाते हैं कि जब तक यह मेरी गिरह में बंधा हुआ है मेरे बन्दे के लिये हर-दिन और रात इतने नेक अमल लिखों जितना वो बीमारी से पहले किया करता था। (इब्ने अबी शैबा)

हजरत मकहोल रह0 फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल0 न इर्शाद फरमाया ! जब कोई मुसलमान (हुजूर सल्ल0 वाले अमल करने वाला) बीमार होता है तो बाई तरफ के गुनाह लिखने वाले फरिश्ते को ये हुक्म होता है कि अपना कलम उठा ले और दाहिने तरफ वाले फरिश्ते से ये कहा जाता है कि इस बन्दे के अच्छे आमाल लिखते रहो जो यह तन्दुरूस्ती की हालत में किया करता था क्योंकि इसकी आने वाली हालत को मैं जानता हूं मैने ही इसे इस हाल में मुब्तला किया है।

(इब्ने असाकिर)

हजरत अली रजि0 हुजूर सल्ल0 से नकल करते हैं कि आपने फरमाया ! अल्लाह तआला किरामन कातिबीन की तरफ अपना पैगाम भेजते हैं कि मेरे बन्दे के आमाल-नामे में रंज व गम के वक्त कोई अमल न लिखो। (दैलमी)

मेरे भाईयों और दोस्तों ! कुरआन व हदीस मे कहीं ये नही बतलाया गया है कि किरामन कातिबीन दायें और बायें कान्धों पर बैठकर इन्सानो के माल या सामान को लिखते हैं कि

कौन कितने 2000 रूपये के नोट कमाकर ला रहा है और कौन कितने 500 रूपये के नोट ला रहा है या

कौन कितना सोना लेकर आ रहा है और कौन कितनी चॉदी ला रहा है या

कौन कितना आटा और चावल लेकर आ रहा ह या

कौन कितना आलू और प्याज लेकर आता है या

कौन कितनी दवा और इन्जेक्शन लेकर आता है या

कौन दुकान पर जा रहा और कौन मजदूरी करने जा रहा है।

किरामन कातिबीन का काम माल और सामान का लिखना नही है बल्कि किरामन कातिबीन का काम इन्सानों के अमल को लिखना ह इसलिये कि अल्लाह रब्बुल इज्जत जो इस कायनात के बनाने वाले और हर एक की हर जरूरत को पूरा करने वाले हैं उन्होने सारी कायनात को इन्सानों के इम्तेहान के लिये बनाया है और इन्सान को इस कायनात मे (थोड़े दिनो के लिये) सिर्फ अपनी मर्जी और मंशा पर चलने के लिये भेजा है अगर इन्सान इस दुनियॉ के थोड़े दिन अपने रब की मर्जी और मंशा पर चले तो अल्लाह रब्बुल इज्जत इस इन्सान को अम्बिया और सहाबा की तरह से कामयाबी का परवाना दे दे। इस दुनियॉ मे इन्सान को अपने रब की मर्जी

और मंशा पर चलने के लिये पहला मुकाबला माल से करना पड़ेगा, इसलिये इसे अपने आपको ये समझाना पड़ेगा कि माल से कुछ नही होता है बल्कि अमल से होता है।

दुकान से माल नही मिलता, माल अमल से मिलता है

इस बात को समझना बहुत आसान है कि एक आदमी ने अपनी परवरिश के लिये दुकान को सबब बनाया हुआ है कि दुकान से पैसा मिलेगा, पैसे से चीजें मिलेंगीं और चीजों से परवरिश होगी पर ये आदमी अगर दुकान पर जाने का अमल ना करे और घर पर ही बैठा रहे तो इसकी ये बात झूठ साबित होगी कि दुकान से पैसा मिलेगा, हॉ इसको दुकान से ही पैसा मिलेगा पर जब ये आदमी दुकान जाने का अमल करे कि
अपने पैरो के अमल से दुकान जाये,
फिर हाथ के अमल से दुकान खोले,
ऑख के अमल से दुकान के अन्दर देखे,
ग्राहक आ गया तो कान के अमल से उसकी बात सुने,
जुबान के अमल से सौदा तय करे,
सौदा तय हो जाने के बाद हाथ के अमल से सौदा देकर पैसे लेगा,
अब हम सब खुद फैसला करें कि पैसा दुकान से मिला या अमल से मिला ? अब अगर ये दुकान पर ना जाकर किसी के यहॉ मजदूरी के अमल करता तो मजदूरी के अमल से इसे पैसा मिलता। इसलिये पैसा दुकान से या मजदूरी से या कारखानों से नही मिलता बल्कि उन शोबों मे किये हुए अमल पर मिलता है।

चीजे पैसे से नही मिलती अमल से मिलती है

इसी तरह चीजे भी पैसे से नही मिलती अमल से मिलती है जैसे कोई आदमी किसी दुकान पर साबुन खरीदने के लिये अपने हाथों मे 100 रूपये का नोट लेकर जाये पर ऑख, जुबान और हाथ से अमल ना करे यानी जुबान से कुछ न बोले, ऑख और हाथ से इशारा न करे तो 100 रूपये क्या 2000 रूपये का नोट हाथ मे होने के बावजूद इसे साबुन तो क्या नमक भी नही मिलेगा, इस मिसाल को सामने रखकर अब हम सब खुद फैसला करें कि रूपये से साबुन या नमक मिलता है या अमल से मिलता है ? ये बात बिल्कुल वाजेह और साफ है कि दुकान, मजदूरी या नौकरी वगैरह मे माल अमल से ही मिलेगा और सामान या चीजे वगैरह भी माल से नही मिलेगी बल्कि सामान या चीजे भी अमल ही से मिलेंगीं। अब समझने वाली बात ये है कि रब की मर्जी और मंशा वाले अमल पर कामयाबी कब मिलेगी ?

रब को मर्जी और मंशा वाले अमल पर दुनियॉ व आखिरत मे कामयाबी उस वक्त मिलेगी जब अमल करने वाला अमल के मुकाबले पर जो दुनियावी सबब है उससे मायूस और नाउम्मीद हो। इसलिये कि इज्जत या जिल्लत, राहत या तकलीफ, सुकून या परेशानी, सेहत या बीमारी के हाल आसमानों से इन्सान की रूह पर रब की मर्जी से आयेगें और रूह पर आने वाली चीज को रब की मर्जी वाले अमल ही हटायेगें, अल्लाह के किसी गैर से या यूँ कह लो कि कायनात की किसी छोटी या बड़ी चीज से इज्जत या जिल्लत, राहत या तकलीफ, सुकून या परेशानी, सेहत या बीमारी के हाल ना आयेगें और ना ही जायेगें। क्यों कि रूह मान्निद करंट के है और जिस्म मान्निद तार के है, करंट तो तार पर असर डाल सकता है कि करंट बढ़ गया यानी वोल्टेज ज्यादा आ गया तो तार जल गया पर तार करंट पर कोई असर नही डाल सकता तार चाहे 3 mm का हो या चाहे 12 mm का कि जिल्लत, तकलोफ, परेशानी और बीमारी का हाल आया रूह पर तो इन्सान की अपनी मर्जी और मंशा वाले अमल कायनात की किसी छोटी या बड़ी चीज से आसमान से आने वाले हाल को नही हटा

सकते कि करंट तो तार पर मे घुस सकता है पर तार करंट मे नही घुस सकता कि जैसे रूह पर आने वाली बीमारो हुजूर सल्ल0 वाले अमल से ही आसमान पर वापस हो सकती है लेकिन दवा खाने या इन्जेक्शन के लगाने से रूह पर आयी हुई बीमारी वापस ना जायेगी पर नजर मे आज ये आ रहा है कि इन्सान पर चीजों के रास्ते से ये हाल आ और जा रहे हैं ऐसा क्यों ? तो ये बात नीचे लिखी रिवायत से समझी जा सकती है।
अल्लाह तआ़ला फरमाते हैं, '' मेरा बन्दा मुझसे जैसा गुमान करेगा, मै उसके साथ वैसा ही मामला करूंगा।''
हजरत इब्ने उमर रजि0 से रिवायत है कि हुजूर सल्ल0 ने फरमाया ! इब्ने आदम पर वही चीज मुसल्लत होती है, इब्ने आदम जिस चीज से डरता है अगर इब्ने आदम अल्लाह के सिवा किसी और चीज से न डरे तो अल्लाह तआला उस पर और कोई चीज मुसल्लत न होने दें।
इब्ने आदम उसी चीज के हवाले कर दिया जाता है जिस चीज से उसे नफा या नुकसान होने की उम्मीद होती है अगर इब्ने आदम अल्लाह के सिवा किसी और चीज से नफा या नुकसान को उम्मीद न रखे तो अल्लाह तआला उसे किसी और चीज के हवाले न करें। (कंज--7-59)
आज मुसलमान चीजों से नफा या नुकसान होने की उम्मीद के साथ नमाज, रोजा, हज, जकात, तस्बीह, तिलावात जैसे बड़े.बड़े आमाल करता है पर
जिल्ल्तो मे
तकलीफों मे
परेशानियों मे
बीमारियों मे
आमदनियों से पूरा न पड़ने मे
कर्जो मे
गमों और फिकरों मे गिरफतार है, इन तमाम हालात से निकलने का रास्ता सिर्फ ईमान को सीखना है।

मायूस और नाउम्मीद होने पर अल्लाह की मदद का आना

अल्लाह के गैर से उम्मीद करने के नतीजे मे हजरत हाजरा और हजरत उमर रजि0 के वाकियात इस उम्मत के लिये सबक है, हजरत हाजरा और हजरत इस्माईल अलै0 के वाकिये से अल्लाह जल्ल शानुहू ने यही बात समझायी है जो बुखारी शरीफ मे अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजि0 की रिवायत मे तफसील के साथ दर्ज है कि अल्लाह जल्ला शानुहू ने हजरत इब्राहिम अलै0 को हुक्म दिया कि हजरत हाजरा और हजरत इस्माईल को बंजर घाटी वादिये गैर जी जरह (ऐसी वादी जहॉ अल्लाह के गैर से परवरिश नामुम्किन थी) मे छोड़ आओ, इब्राहिम अलै0 ने हुक्म की तामील की और हजरत हाजरा और हजरत इस्माईल को एक मश्क मे पानी और एक थैली खजूर देकर बंजर घाटी वादिये गैर जी जरह मे छोड़ आये, पानी और खजूर कुछ दिनो मे खत्म हो गया तो हजरत हाजरा भूख और प्यास से सख्त परेशान हुई इनकी छाती से दूध का निकलना भी बन्द हो गया जिसकी वजह से हजरत इस्माईल भी भूख और प्यास से बेताब हो गये तो हजरत हाजरा बच्चे को छोड़कर करीब की सफा पहाड़ी पर ये सोचकर चढ़ी कि शायद कोई अल्लाह का बन्दा नजर आ जाये और उससे कुछ मदद मिल जाये पर दूर तक इन्हे कोई नजर ना आया फिर बच्चे की मुहब्बत मे सफा पहाड़ी से उतर कर बच्चे के पास आयीं, बच्चे को बिलखता देखकर मर्वा पहाड़ी पर चढ़ी कि शायद कोई इधर से अल्लाह का बन्दा नजर आ जाये, वहॉ भी मायूसी, फिर मर्वा पहाड़ी से उतर कर बच्चे के पास आयीं, कुछ देर बाद फिर अल्लाह के गैर से मदद पाने की उम्मीद पर सफा पहाड़ी पर चढ़ी फिर मायूसी और नाउम्मीदी का शिकार होकर नीचे उतरी। जब

सात चक्कर ऊपर नीचे के लगाकर थक हारकर अल्लाह के मासिवा से मायूस और नाउम्मीद हो गयीं तो खुदा की कुदरत से फायदा हासिल हो गया कि जिब्राईल अलै0 हाजिर हुए और जहॉ हजरत इस्माईल अपने पैर की ऐड़ी रगड़ रहे थे उस जगह पर

अपना पैर मारा तो पानी (जमजम) निकलने लगा।

किसी हाजी को इसकी गुंजाईश नही कि सफा और मर्वा के सात चक्कर लगाये बगैर हाजी कहलाये, ये सफा और मर्वा के सात चक्कर हाजी को अल्लाह के मासिवा से मायूस और नाउम्मीद होने के लिये लगवाये जाते हैं ताकि अल्लाह के मासिवा से मायूस और नाउम्मीद होकर बैतुल्लाह पर हाजिर हो और खुदा की कुदरत से फायदा हासिल करे।

इसी तरह मदीना मुनव्वरा मे कहतसाली होने पर हजरत उमर रजि0 ने हजरत अम्र बिन आस रजि0 से उम्मीद कर ली जो उस वक्त मिस्र के गवर्नर थे इन्होने खाने पीने का इतना सामान मदीना भेजा कि पहला ऊँट मदीना मे और आखिरी ऊँट मिस्र मे पर कहतसाली का मसला हल न हुआ। एक सहाबी ने गोश्त के लिये बकरी जिब्ह की तो खून और हडडी के सिवा उसमे कुछ न निकला इस पर इन्होने ने एक चीख मारी कि हाय ! मुहम्मदा फिर इन पर गुनूदगी तारी हुई और ये सो गये, ख्वाब मे हुजूर सल्ल0 की जियारत हुई हुजूर सल्ल0 ने इनसे फरमाया कि जाओ हजरत उमर रजि0 को मेरा सलाम कहो और ये भी कहना कि मैं तो इन्हे बड़ा अक्लमन्द समझता था पर ये क्या किया ? हजरत उमर रजि0 को अपनी इस चूक का एहसास हुआ जिस पर तौबा की फिर दुआ के लिये हाथ उठाया तो बादलो से ये आवाज आ रही थी "चलो उमर की तरफ"

अल्लाह की मर्जी और मंशा वाले अमल पर दुनियॉ व आखिरत के जो वादे अल्लाह तआला ने किये हैं इन सारे वादों का पूरा होना और जाहिर होना इसका तआल्लुक अल्लाह तआला की कुदरत से है, अल्लाह तआला ने अपने बन्दों को बराहेरास्त अपने खजानों से फायदा पहुँचाने के लिये अपनी कुदरत को अपने वादों के साथ जोड़ा है और वादे अपने हुक्मों पर किये है। अब जो भी बन्दा अल्लाह तआला की कुदरत को अपने साथ करके उसके खजानों से बराहेरास्त फायदा उठाना चाहे उसे अल्लाह तआला के हुक्मों पर अमल करना पड़ेगा जिस तरह हुजूर सल्ल0 ने अमल किया या करने को बतलाया है। ईमान के सीखे बगैर इन्सान दुनियावी सबब से मायूस और नाउम्मीद नही हो सकता और जब तक इन्सान दुनियावी सबब से मायूस और नाउम्मीद नही होगा तब तक अल्लाह की कुदरत से फायदा नही उठा सकता,

मेरे दोस्तों ! अल्लाह के गैर पर उम्मीद करके इन्सान अल्लाह की कुदरत से फायदा नही उठा सकता अल्लाह के गैर से मायूस और नाउम्मीद होना ही لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ पर ईमान का लाना है लेकिन आज मुसलमान ईमान को सीखने के लिये तैयार नही है। ईमान को ना सीखने की वजह ये है कि लगभग 1250 साल स मुसलमानों के अन्दर से इज्तेमाई तौर पर ईमान के सीखने का मिजाज और रिवाज निकल चुका है, ईमान को ना सीखने की वजह से जो बात हुजूर सल्ल0 ने अपने सहाबा किराम से कही थी वो बात हम मुसलमानों ने अपने अमल मे ले ली मिसाल के तौर पर हिन्दुस्तान के वजीरे आजम न पार्लियामेन्ट मे मेम्बर आफ पार्लियामेन्ट से (जो कड़ी मेहनत और मशक्कत के बाद चुनाव जीत कर मेम्बर आफ पार्लियामेन्ट बन जाते है) मुखातिब होकर कहा कि मैने मुल्क के सारे बैंको को कहला दिया है कि आप लोगों को फौरी खर्च के लिये 5.5 लाख रूपये दे दें लिहाजा,

यू0पी0 वाले स्टेट बैंक आफ इंडिया से,

एम0पी0 वाले यूनियन बैंक से,

पंजाब वाले पंजाब बैंक से,

बिहार वाले सिंडिकेट बैंक से और फलॉ फलॉ सूबे वाले फलॉ फलॉ बैंक से 5.5 लाख रूपये ले लें। इस खबर को टी0वी0 चैनल और अखबार नवीसों ने सारे मुल्क मे पहुँचा दिया पर चूक ये हो गयी कि ये बात वजीरे आजम ने किसको मुखातिब करके कही थी ये नही बतलाया तो हर सूबे की आवाम बैंको मे लाईन लगाकर खड़ी हो गयी, बैंको से इन्हे पैसे तो नही मिले अलबत्ता पुलिस की लाठियॉ जरूर खानी पड़ी।

मेरे दोस्तों ! सहाबा किराम वो लोग थे जिन्होने कड़ी मेहनत और मशक्कत करके पहले ईमान को सीखा था जिस पर उनके साथ अल्लाह ने अमल पर जो वादे किये थे वो वादे पूरे होते थे, हम ईमान को सीखे बगैर अमल से फायदा उठाना चाह रहे हैं जो खुदा की कसम ना मुम्किन है। इस मेहनत से यही बात चाही जा रही है कि हर मुसलमान ईमान को सीखने पर आ जाये इसीलिये हजरत मौलाना इलयास साहब रह0 ने ये बात साफ साफ कह दी थी कि इस मेहनत का हमने कोई नाम नही रखा अगर इस मेहनत का कोई नाम रखता तो तहरीक-ए-ईमान नाम रखता कि हर मुसलमान ईमान को सीखने के लिये फिक्रमन्द हो जाये। हजरत मौलाना इलयास साहब रह0 ने ये भी फरमाया ! मुसलमानों ने गलतफहमी से समझ लिया है कि ईमान हमारे अन्दर मौजूद है इसलिये ईमान के बाद जिन चीजों का दर्जा है मुसलमान उनमे मशगूल हो गये (नमाज, रोजा, तस्बीह, तिलावात, हज और जकात वगैरह मे) हालॉकि ये मेहनत सिरे से ही ईमान पैदा करने के लिये है। (दीनी दावत) एक मौके पर फरमाया ! हमारी ये तहरीक हकीकत मे ईमान की तहरीक है, आज कल आम तौर से जो इज्तेमाई काम होते हैं उनके करने वाले ईमान को सरसरी तौर पर फर्ज बतला कर उम्मत की ऊपरी सतह (नमाज, रोजा, तस्बीह, तिलावात, हज और जकात वगैरह) की तामीर करते हैं और ऊपर के दर्ज की जरूरियात की फिक्र करते हैं पर हमारे नजदीक उम्मत की पहली जरूरत यही है कि मुसलमानों के दिलों मे पहले सही ईमान की रोशनी पहुँच जाये।

(मलफूजात हजरत मौलाना इलयास साहब रह0)

हॉ, औलिया किराम तलब वाले मुंसलमानों को इन्फिरादी तौर पर खानकाहों के रास्ते से मुसलसल ईमान सिखलाते रहे हैं पर आज आक्सरियत ईमान के सीखने से गाफिल है कि हम तो है ही ईमान वाले हमे क्या जरूरत है ईमान को सीखने की जब कि हुजूर सल्ल0 ने सबसे पहले सहाबा किराम रजि0 को ईमान सिखलाया था, आज मुसलमान कुरआन सीखने को, नमाज सीखने को, हज और रोजा सीखने को तैयार है पर ईमान को सीखने की बात हमे अजूबी लग रही है हालॉ कि सहाबा किराम ने कुरआन कैस सीखा था ? आज ये बात मुंसलमानों को कोई बतलाने वाला नही है

कुरआन का सीखना

हजरत इब्ने मसऊद रजि0 फरमाते हैं कि (ईमान को सीखते हुए) हम नबी करीम सल्ल0 से कुर्आन की दस आयतों को सीखते तो बाद वाली आयते तब सीखते जब पहली आयतों का इल्म, उनका हराम-हलाल जानकर उन पर अमल शुरू कर देते। (कंज जिल्द-1-232)

सहाबा के कुरआन सीखने की ये तर्तीब थी जब कि कुरआन के सीखने से पहले सहाबा किराम ने ईमान को सीखा था।

ईमान का सीखना

हजरत इब्ने उमर रजि0 फरमाते हैं ! हमने अपनी जिन्दगी का बड़ा हिस्सा इस तरह से गुजारा है कि हममे से हर एक ने पहले ईमान सीखा फिर कुर्आन सीखा और जो भी सूरः हुजूर सल्ल0 पर उतरती थी, हम लोग उसके हराम और हलाल को ऐसे सीखते थे जैसे तुम लोग कुर्आन सीखते हो, अब मै लोगों को देख रहा हूँ कि तुम लोग ईमान से पहले कुरआन सीख रहे हो और सूरः फातिहा शुरू से आखिर तक सारी पढ़ जाते हो पर तुम्हे पता भी नही की सूरः फातिहा किन कामो के करने का हुक्म दे रही है और किन कामों से रोक रही है और इस सूरः में कौन सी आयात ऐसी है, जहाँ जाकर रूक जाना चाहिए। बस तुम लोग सूरः फातिहा का रद्दी खजूर की तरह बिखेर देते हो यानी जल्दी जल्दी पढ़ लेते हो।

(हैसमी 1-165)

जुन्दुब बिन अब्दुल्लाह रजि0 फरमाते हैं ! हम लोग नव उम्र लड़के थे, हम लोगों ने हुजूर सल्ल0 के साथ मे रहकर सबसे पहले ईमान सीखा फिर कुर्आन सीखा जिससे हमारा ईमान और बढ़ गया। (इब्ने माजा-11)

हज़रत इब्ने उमर रजि0 से रिवायत है कि जब रसूलुल्लाह सल्ल0 से ईमान के बारे मे पूछा गया तो आप सल्ल0 ने फरमाया ! तुम लोग अल्लाह तआ़ला का, उसके फरिश्तों का और उसके रसूलों का अपने यकीन अन्दर पैदा करो।

(शुअ़बुल ईमान-इमाम बैहकी)

मेरे दोस्तों ! दुनियावी सबब से मायूस और नाउम्मीद हुए बगैर रब की मर्जी और मंशा वाले अमल यानी नमाज, रोजा, हज, जकात, तस्बीह, तिलावात जैसे बड़े.बड़े आमाल करने के बावजूद फरिश्ते इन अमलों को लेकर जब आसमानों के ऊपर जाते हैं तब क्या होता है ये बात नीचे दर्ज हदीस से मालूम होगी,

हजरत जमरह बिन हबीब रजि0 हुजूर सल्ल0 से नकल करते हैं कि फरिश्ते जब किसी बन्दे के अमल को लेकर आसमान पर पहुंचत हैं जिसे वो बड़ा और पाकीज़ा समझते हैं तो अल्लाह तआला उनकी तरफ वह्य फरमाते हैं कि तुम मेरे बन्दों के अमल के निगरां हो पर उनके दिलों की क्या कैफियत है ये सिर्फ मै जानता हूं, मेरे बन्दे ने ये अमल मेरे लिये नही किया है इसलिए यह अमल सिज्जीन (सांतवी जमीन के नीचे एक आलम है) में फेंक दो,

इसी तरह किसी और बन्दे का अमल लेकर जब फरिश्ते आसमान पर पहुंचते हैं तो अल्लाह तआला उनकी तरफ वह्य फरमाते हैं कि तुम अमल के निगरां हो लेकिन उसके दिल की क्या कैफियत ये मैं जानता हूं, इस अमल को कई गुना कर दो और इसे उसके लिये इल्लीयीन में रख दो। (दुर्रेमंसूर 6/325)

फरिश्तों का काम अमल का लिखना और आसमानों पर उस लिखे हुए को पहुंचाना हैं लेकिन कौन बन्दा अमल करते वक्त अल्लाह के गैर से मायूस और नाउम्मीद होकर अमल कर रहा है और कौन अल्लाह के गैर की उम्मीदों के साथ अमल कर रहा है फरिश्तों को इसका पता नही होता।

हमारे सामने ये बात भी वाजेह हो जाये कि अल्लाह तआला का खजाना कहाॅ है ? इसे जानने के लिये नीचे लिखी जा रही कुरआन करीम की आयतों और हदीस पर गौर किया जाये,

وَفِي السَّمَاءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوعَدُونَ

فَوَرَبِّ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِنَّهُ لَحَقٌّ مِثْلَ مَا أَنَّكُمْ تَنْطِقُونَ

(सूर. ज़ारियात. 22.23)

अल्लाह तआला का इर्शाद हैः तुम्हारी रोज़ी और जिस चीज का तुमसे वादा किया जाता है, वो सारा आसमान मे है। तो आसमानों और ज़मीन के मालिक की कसम ! ये बात इसो तरह यकीन के काबिल है जिस तरह तुम्हारा एक-दूसरे से बात करना यकीनी है।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ هَلْ مِنْ خَالِقٍ غَيْرُ اللَّهِ يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ فَأَنَّىٰ تُؤْفَكُونَ (तफसीर सूरः फातिर. 3)

अल्लाह तआला का इर्शाद हैः लोगों ! अल्लाह तआला के उन एहसानात को याद करो जो अल्लाह तआला ने तुम पर किये हैं। जरा सोचो तो सही कि अल्लाह तआला के अलावा कोई और है जिसने तुम्हें बनाया हो और जो तुम्हे आसमान व जमीन से रोजी पहुंचाता हो ? सच्ची बात ये है कि अल्लाह तआला के सिवा कोई और जरूरतो को पूरा करने वाला नही फिर अल्लाह तआला को छोड़कर किस पर भरोसा कर रहे हो।

وَإِنْ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا عِنْدَنَا خَزَائِنُهُ وَمَا نُنَزِّلُهُ إِلَّا بِقَدَرٍ مَعْلُومٍ

(सूरःहिज़्र.21)

अल्लाह तआला का इर्शाद है ! हमारे पास हर चीज़ के खज़ाने भरे पड़े हैं लेकिन हम हिक्मत के तहत हर चीज़ को तयशुदा मिक्दार से उतारते रहते हैं।

أَفَرَأَيْتُمُ الْمَاءَ الَّذِي تَشْرَبُونَ
أَأَنْتُمْ أَنْزَلْتُمُوهُ مِنَ الْمُزْنِ أَمْ نَحْنُ الْمُنْزِلُونَ
لَوْ نَشَاءُ جَعَلْنَاهُ أُجَاجًا فَلَوْلَا تَشْكُرُونَ

(सूरः वाकिअः 68.70)

हज़रत ज़ुबैर रज़ि0 से हुज़ूर सल्ल0 ने इर्शाद फरमाया ! ऐ ज़ुबैर ! अल्लाह जल्ल-शानुहू ने जब अपने अर्श पर जल्वा फरमाया तो अपने बन्दों की तरफ (करम की नज़र डाली) और इर्शाद फरमाया कि मेरे बन्दों ! तुम मेरी मख्लूक हो और मैं ही तुम्हारा परवरदिगार (जरूरतों को पूरा करने वाला) हूँ। तुम्हारी रोज़ियाँ हमारे कब्ज़े में हैं लिहाज़ा तुम अपन आप को ऐसी चीजों में न लगाओ जिसका ज़िम्मा मैने ले रखा है। तुम लोग अपनी रोज़ियाँ मुझसे मांगो, क्यो कि रिज्क का दरवाज़ा सातों आसमानों के ऊपर से खुला हुआ है जो खजाना अर्श से मिला हुआ है, उसका दरवाज़ा न रात में बन्द होता है न दिन में। अल्लाह जल्ले शानुहू उस दरवाजे से हर शख्स पर रोज़ी उतारता रहता है लोगो के गुमान के बकद्र-उनकी अता के बकद्र-उनके सदके के बकद्र और उनके खर्च के बकद्र। जो शख्स कम खर्च करता है उसके लिए कम उतारा जाता है और जो शख्स ज्यादा खर्च करता है उसके लिए ज्यादा उतारा जाता है। (दुर्रे मंसूर)

आसमानों के ऊपर से हर शख्स पर रोज़ी का उतरना फ़रिश्तों के जरिये होता है जैसे कि नीचे रिवायतें हैं।

हजरत इब्ने अ़ब्बास रजि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इर्शाद फरमाया ! अल्लाह की मख़्लूक मे फ़रिश्तों से ज्यादा कोई मख़्लूक नही है और ज़मीन पर कोई भी ऐसी चीज़ नही उगती जिसके साथ एक मुवक्किल फ़रिश्ता न होता हो। (अबुश्शैख़ हदीस 327)

हजरत हकम बिन उतैबा रजि0 फ़रमाते हैं कि बारिश के साथ औलादे-आदम और औलादे-इब्लोस से ज्यादा फरिश्ते उतरते हैं, जो हर क़तरे को शुमार करते हैं कि वह पानी का क़तरा कहाँ गिरेगा है और उस फल से किसे रिज़्क दिया जायेगा। (अबुश्शैख़ हदीस 493)

हजरत अली रजि0 ने फरमाया ! अल्लाह तआला ने पानी के खजाने पर एक फरिश्ता मुकर्रर कर रखा है। उस फरिश्ते के हाथों में एक पैमाना है, उस पैमाने से गुजर कर ही पानी की हर बूँद जमीन पर आती है। लेकिन हजरत नूह अलै0 के तूफान वाले दिन ऐसा न हुआ बल्कि अल्लाह ने सीधे पानी को हुक्म दिया और पानी को संभालने वाले फरिश्तों को हुक्म न दिया, जिस पर वे फरिश्ते पानी को रोकते रह गये, लेकिन पानी न रूका। (कंज.पेज नं0 273)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 फरमाते हैं कि (एक मर्तबा हम लोंगों पर) बादल ने साया किया तो हमने उससे (बारिश की) उम्मीद की, जिस पर हुज़ूर सल्ल0 ने फरमाया ! जो फरिश्ता बादलों को चलाता है वो अभी हाज़िर हुआ था, उसने मुझे सलाम किया और बतलाया कि वो इस बादल को वादी-ए-यमन की तरफ ले जा रहा है जहाँ ज़रआ नाम की जगह पर इसका पानी बरसेगा। (अबु अवाना)

अबु हुरैरा रज़ि0 फरमाते हैं! कि हुजुर सल्ल0 ने इर्शाद फरमाया ! इन्सानो तक रोज़ी पहुँचाने के लिये अल्लाह तआला ने फरिश्तों को मुतइय्यन कर रखा है। (इब्ने अबी शैबा)

अल्लाह तआला की कुदरत से फायदा उठाने वाले

अल्लाह तआला की कुदरत से वो लोग फायदा उठायेगें और उन्ही लोगों पर अमलो पर किये हुए वादे जाहिर होगें जो लोग हर बनी हुई चीज से मायूस और नाउम्मीद होगें। अब रही बात कि इन्सान बनी हुई चीजों से मायूस और नाउम्मीद कैसे होगा ? तो ये बात अल्लाह तआला ने कलिमा لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللّٰهُ के जरिये से समझायी है, इस कलिमे की दावत ही इस कलिमे पर मेहनत है लेकिन दावत की तर्तीब है।

ईमान के सीखने की तर्तीब

कलिमा لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللّٰهُ को सीखने की तर्तीब मे सबसे पहले अल्लाह के मासिवा का इन्कार है की لَا إِلَٰهَ को बोले बगैर बनी हुई चीजों से मायूसी और नाउम्मीदी पैदा ना होगी, सारी कामयाबियों का राज अल्लाह के मासिवा के इन्कार मे छिपा हुआ है कि बनी हुई चीजों से जो कुछ हमारी ऑखों को होता हुआ नजर आ रहा है वो चीजों से नही हो रहा है, अल्लाह के करने से हो रहा है। इस कायनात की हकीकत के राज अल्लाह तआला उस बन्दे या बन्दी पर खोलते है जो बन्दा या बन्दी बनी हुई चीजों का अल्लाह तआला की कुदरत के मुकाबले मे इन्कार करता है जिस तरह हजरत इब्राहिम अलै0 ने इन्कार करके दिखलाया कि

हजरत इब्राहीम अलै0 के अन्दर ये सवाल से पैदा हुआ कि हमारा बनाने वाला कौन है ?

हमारी जरूरतों को पूरा करने वाला कौन है?

कौन हमारी आंखों को रोशनी पहुंचा रहा है?

कौन हमारे कानों में आवाज पहुंचा रहा है?

कौन हमारे दिमाग में याद करा रहा और कौन भुलाये दे रहा है?

कौन हमारे जुबान से बोल निकलवा रहा है?

कौन हमारे दिल को धड़का रहा है?

कौन हमारे जिस्म के अन्दर खून को दौड़ा रहा है?

कौन हमारे बाल उगा रहा है? वगैरह- वगैरह कि

सब के बीच में रब की तलाश

एक बेकरारी-एक फिक्र-एक तलाश कि कौन हमारा बनाने वाला है? मां से पूछ रहें हैं कि अम्मा मेरा रब कौन है? मां ने जवाब दिया कि मै।

जवाब सुनकर इब्राहीम अलै0 मां के बारे में गौर करने लगे तो नतीजा ये निकला कि मां तो खुद बनी हुई है कि मेरी तरह उनके भी हाथ पैर आंख कान जुबान वगैरह ये तो खुद बनी हुई है तो इन्होने मुझे कैसे बनाया होगा? मां के जवाब से इन्हे इत्मिनान न हुआ तो फिर सवाल किया कि अम्मा तुम्हारा रब कौन है?

अम्मा ने जवाब दिया कि तुम्हारे अब्बा।

अम्मा के इस जवाब से भी इन्हे इत्मिनान न हुआ तो फिर सवाल किया कि फिर अब्बा का रब कौन है?

इस पर इनकी मां ने जवाब दिया नमरूद,

इब्राहीम अलै0 ने फिर पूछा कि अम्मा नमरूद का रब कौन है?

तो इनकी मां ने इनके मुह पर हाथ रख दिया कि इब्राहीम इसके आगे कोई और सवाल न करे और कहा कि वही सबका रब है।

मेरे दोस्तों ! आम तौर पर इन्सान रब का मतलब ये समझते हैं कि जो खाने पीने और पहनाने का इन्तिजाम करे वही रब है, रोजी के मफहूम में लोग यही तीन चीजें समझते हैं हांलाकि रोटी और चटनी से बड़ी नियामतें,

आंखों को रोशनी का मिलना

कानों के अन्दर आवाज का जाना

जुबान से बोल का निकलना

दिमाग का सोचना

हाथ पैर में ताकत का पहुंचना

पर लोग इन बड़ी-बड़ी नेयमतों को रोजी नही समझते, इन नेयमतों के बारे मे उस शख्स से पूछो जिसके पास

आंख हो पर उसमें रोशनी न हो

कान हो पर अन्दर आवाज न जा रही हो

जुबान हो पर मुंह से बोल न निकल पा रहे हो

हाथ पैर हो पर फालिज की वजह से हाथ पैर हरकत न करते हों।

दिमाग हो पर सोचने और समझने की सलाहियत न हो

अब जरा बैठ कर सोचो कि ये नेमते कीमती हैं या रोटी और बोटी ? अगर रोटी और बोटी कीमती हैं तो मैदाने तीह में बनी इसराईल की रोटी-बोटी पानी और कपड़ों का 40 साल तक किसने इन्तिजाम किया ?

इब्राहीम अलै0 की अम्मा के भी सामने यही तीन चीजें रोटी बोटी और कपड़ा कि रब उसी को कहते हैं जो इन तीन चीजों का इन्तिजाम करे और इन तीनों चीजों का इन्तिजाम नमरूद करता था। इधर इब्राहीम अलै0 के सामने ये सवाल कि

मेरे जिस्म को बनाने वाला कौन ?

मेरी रूह को बनाने वाला कौन ?

मेरे जिस्म के आजा की जरूरतें पूरी करने वाला कौन ?

इन बातों को सामने रखकर मां से ये सवाल कि अम्मा मेरा रब कौन है ?

बहरहाल जब इनकी मां ने इनके मुंह पर हाथ रख दिया ओर इनसे कहा कि हम सब का रब नमरूद ही है। लेकिन इब्राहीम अलै0 को मॉ के जवाब से इत्मिनान ना मिला और ये रब की तलाश में लगे रहे। आदमी जब मायूस हो जाता है तो वो ऊपर की तरफ देखता है, इब्राहीम अलै0 भी मायूस होकर ऊपर देखने लगे तो तारे पर नजर पड़ी हालॉकि वो आसमान में तारों को अक्सर देखते थे पर आज रब को तलाश करते-करते तारे को

देखा और गौर से देखते ही रहे तो इस नतीजे पर पहुंच कि हो न हो यही हमारा रब है कि ये बुलन्दी पर है चमक रहा है कि यही हमारा रब है।

अल्लाह तआला ने कुर्आन पाक मे यही इर्शाद फरमाया है,

فَلَمَّا رَأَى الْقَمَرَ بَازِغًا قَالَ هَٰذَا رَبِّي فَلَمَّا أَفَلَ قَالَ لَئِنْ لَمْ يَهْدِنِي رَبِّي لَأَكُونَنَّ مِنَ الْقَوْمِ الضَّالِّينَ
فَلَمَّا رَأَى الشَّمْسَ بَازِغَةً قَالَ هَٰذَا رَبِّي هَٰذَا أَكْبَرُ فَلَمَّا أَفَلَتْ قَالَ يَا قَوْمِ إِنِّي بَرِيءٌ مِمَّا تُشْرِكُونَ
إِنِّي وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِي فَطَرَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ حَنِيفًا وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ

(सूरः अनआम-77-78-79)

फिर जब उस पर रात का अंधेरा छा गया तो उसने एक सितारा देखा ! तो फरमाया ! ये मेरा रब है सो जब वो छिप गया तो फरमाया ! मै छिप जाने वालों से मुहब्बत नही रखता फिर जब चांद को चमकता हुआ देखा तो फरमाया ! यह हमारा रब हे सो जब वो छुप गया तो आपने (इब्राहीम अलै0) फरमाया ! अगर हमारा रब मुझको हिदायत न करता तो मै गुमराह लोगों में शामिल हो जाता फिर जब सूरज को चमकता हुआ देखा तो फरमाया ! यह मेरा रब हे ये तो सब से बड़ा है सो जब वह छुप गया तो फरमाया ! ऐ मेरी कौम बेशक मै तुम्हारे शिर्क से बेजार हूं।

हजरत इब्ने अब्बास रजि0 इसको हजरत इब्राहीम अलै0 का मकामे गौर व फिक्र करार देते हैं कि खुद उन्होन अपने रब को तलाशने और पहचानने मे इस तरह गौर व फिक्र की

हजरत इब्ने अब्बास रजि0 ने قَالَ لَئِنْ لَمْ يَهْدِنِي رَبِّي لَأَكُونَنَّ مِنَ الْقَوْمِ الضَّالِّينَ मेरा रब ही अगर मुझको हिदायत न करता तो मै गुमराह हो जाता ''

इस कौल से दलील दी है कि इब्राहीम अलै0 ने रब को जानने के लिए खुद गौर व फिक्र की है। (इब्ने कसीर जिल्द-1)

यहां पर एक हदीस का मफहूम भी सामने रहना चाहिए कि

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इर्शाद फरमाया ! दो चीजें ऐसी हैं अगर कोई शख्स उन्हें हासिल करना चाहे तो अल्लाह तआला उसे जरूर देते हैं 1-ईमान 2-इल्म ''जैसे इब्राहीम अलै0 को अता किया कि इब्राहीम अलै0 न ईमान जानते थे और न इल्म जानते थे लेकिन जब उसकी तलाश में लगे तो अल्लाह ने उन्हें ये दोनो चीजें अता फरमा दी। (हुलिया जिल्द 1/523)

इब्राहीम अलै0 तारे को अपना रब समझ कर इत्मिनान पा गये हांलाकि ये इत्मिनान कुछ देर बाद चांद के नजर आने पर जाता रहा। अब फिर बेकरारी और उलझन कि ये चांद तो तारे से बड़ा है इसकी रोशनी सारे तारों से ज्यादा है कहीं ये तो रब नही है ? खुद ही तारे को रब करार दिया था ओर अब खुद इसका इन्कार कर रहे हैं कि तारा नही ये चांद हमारा रब है। सारी रात अब इत्मिनान से गुजार दी कि हमने अपने रब को जान लिया पर सूरज के नजर आते ही चांद को रब मानने से इनकार कर दिया कि चांद का तारों का अब्बा, अम्मा और नमरूद का, हमारा और सारे जहान का ये रब है पर शाम होते ही जैसे सूरज गुरूब हुआ तो एक और नाकामी कि अब सूरज को भी उनका दिल रब मानने से इन्कार कर गया कि ये भी हमारा रब नही हे पर आखिर कौन हमारा रब है?

इब्राहीम अलै0 की ये मेहनत और जददेजहद रंग लायी जिब्रील अमीन रब के भेजने पर इब्राहीम अलै0 के सामने आये और रब के बारे में बतला दिया कि हम सबका रब अल्लाह है जो सब कुछ देख ओर सुन रहा है।

وَكَذَٰلِكَ جَعَلْنَا فِي كُلِّ قَرْيَةٍ أَكَابِرَ مُجْرِمِيهَا لِيَمْكُرُوا فِيهَا وَمَا يَمْكُرُونَ إِلَّا بِأَنْفُسِهِمْ وَمَا يَشْعُرُو

(सूरः अनआम-123)

ऐसा शख्स जो पहले मुर्दा था फिर हमने उसको जिन्दा बना दिया और हमने उसको एक ऐसा नूर अता कर दिया जिस नूर को लेकर वो हमारे बन्दों के बीच चलता फिरता है। क्या ये उस शख्स की तरह हो सकता है जिसकी हालत ये है कि वो अंधेरियों मे हो और उन अंधेरियों से निकलना ही नही चाहता ?

बाज उलमा कहते हैं कि ये आयत खास तौर पर हजरत उमर बिन खत्ताब रजि0 और यासिर बिन अम्मार रजि0 के बारे में है लेकिन अक्सर उलमा का इत्तेफाक है कि ये आयत आम है और इससे हर मोमिन और काफिर मुराद है।

इब्राहीम अलै0 का अपने रब को जानना तो हो गया अब बारी थी रब को पहचानने की, अब जब इन्होने लोगों से अल्लाह के रब होने को बतलाना शरू किया तो चर्चा आम हो गयी कि आजर का बेटा इब्राहीम अल्लाह को रब बतला रहा है बात नमरूद तक पहुंची तो नमरूद ने लोगों में ऐलान करा दिया कि कोई शख्स इब्राहीम को खाने पीने का कोई सामान न दे, इधर इनके अब्बा ने घर से निकाल दिया तो ये अपनी बीवी हजरत सारा रजि0 के साथ अलग घर में रहने लगे। तीन दिन तक हजरत इब्राहिम अलै0 और हजरत सारा रजि0 को खाने के लिये एक दाना भी न मिला तो ये चौथे दिन अपनी सवारी लेकर घर से निकले कि कहीं से शायद कुछ खाने का सामान मिल जाये इसलिये एक बोरी भी साथ में ले ली। शाम तक ये यहां वहां सवारी से जाते रहे पर खाने का कोई सामान इन्हे न मिला, अब थक कर घर वापस होने लगे तो बोरी में मिटटी भर ली और बोरी को सवारी पर रखकर घर वापस हुए। घर पहुंच कर मिटटी की बोरी सवारी से उतार कर रखी, घर के अन्दर गये तो हजरत सारा रजि0 ने इनके चेहरे पर दिन भर की थकान का असर देखकर आराम करने के लिए कपड़ा बिछा दिया। जिस पर हजरत इब्राहीम अलै0 आराम करने लगे। कुछ देर के बाद हजरत सारा रजि0 हाथ में रोटी लेकर आयी और हजरत इब्राहीम के पास बैठकर कहने लगी कि रोटी खा लीजिये, इब्राहीम अलै0 न रोटी देखकर सवाल किया कि ये रोटी कहां से आयी ?

हजरत सारा रजि0 ने जवाब दिया कि बोरी में जो आटा आप लेकर आये है उसी की बनायी है।

हजरत इब्राहीम अलै0 ये सुनकर ताज्जुब में पड़ गये कि बोरी में तो मिटटी भर कर लाये थे और सारा कह रही है कि उसमें आटां है पर ये बात उन्होने हजरत सारा रजि0 को उस दिन न बतलायी। अब क्या था कि अब और ताकत के साथ अल्लाह ही रब है के तज्किरे शुरू कर दिये। हजरत फरमाते थे कि जब आदमी हुक्मरानों की और वजीरों की तारीफ करके पल सकता है तो क्या अल्लाह की तारीफ और उसके तज्किरे करके नही पल सकता ? इब्राहीम अलै0 का वाकिया तो काफी लम्बा है यहां पर मुख्तसर अर्ज ये करना है कि जब इनको आग में डाला गया तो आपने हवा और पानी के फरिश्तों की मदद लेने से इंकार कर दिया जिस पर जिब्रील अलै0 ने मदद के लिए अपने आपको पेश किया तो इब्राहीम अलै0 ने उनस भी कह दिया ''अम्मा इलैका फला''

मेरे दोस्तों ! हजरत इब्राहीम अलै0 की तरह हर एक को अल्लाह की कुदरत अपने साथ करने के लिये अल्लाह के मासिवा का इन्कार करना पड़ेगा, ये कुरआन का बतलाया हुआ रास्ता है और इसी रास्ते पर चलने के लिये

अल्लाह तआला ने हर नबी को और आखिर मे रसूलुल्लाह सल्ल0 से भी इर्शाद फरमाया ! ऐ नबी आप इब्राहीम अलै0 की इत्तेबा करें। हम सबके लिये भी हर वक्त नजर और खबर का मुकाबला है कि
हमे खाना हमारे निजाम से नही मिल रहा है, हमे खाना खुदा के निजाम से मिल रहा है,
हमे पानी हमारे निजाम से नही मिल रहा है, हमे पानी खुदा के निजाम से मिल रहा है,
हमारी हिफाजत हमारे निजाम से नही हो रही है, हमारी हिफाजत खुदा के निजाम से हो रही है,
पानी के हर कतरे के साथ एक फरिश्ता, हर दाने के साथ एक फरिश्ता, दाने-दाने पर लिखा है कि ये किसके पेट मे जायेगा, जब तक ये दाना उसके पेट मे न चला जाये उस वक्त तक वो फरिश्ते दाने के साथ है। हवा के निजाम पर फरिश्ते मुर्करर है, दो फरिश्ते तो सिर्फ इसकी तरफ आने वाली बलाओं को इससे दूर करते रहते हैं पर बला का वक्त जब मुकददर के ऐतबार से आ जाता है तो वो फरिश्ते अलग हट जाते हैं। इसी तरह हर एक के साथ मे दो फरिश्तें अमल को लिखने के लिये मुर्करर कर दिये गये हैं कि तुम चाहे जितने दरवाजे बन्द करके बैठ जाओ ये दोनो फरिश्ते हर वक्त तुम्हारे साथ मौजूद रहते हैं, ये दोनो साये की तरह तुम्हारे पीछे लगे हुए हैं। बैठे बैठे लिखते रहेंगें, हुक्म पूरा किया तो दाहिने हाथ वाले ने लिख लिया, हुक्म तोड़ दिया तो बायें हाथ वाले ने लिख लिया। ये फरिश्ते कोठियों के पहरों से नही रूकते, चौबीस घन्टे इनका यही काम है कि खुदा के अहकामात कितने तोड़े और कितने पूरे किये सिर्फ इसी को लिखते रहते है फिर दूसरे फरिश्ते आते है जो असर की नमाज से फज्र की नमाज तक फिरते रहते हैं। आदमियों को भी देखते हैं लिखाई भी देखते हैं, सुबह ही सुबह कि अभी सूरज भी नही निकला पर ये आसमान पर तुम्हारा कच्चा चिटठा लेकर पहुॅच जाते हैं। अब फज्र की नमाज से अस्र की नमाज तक साथ लगे हुए हैं ये एक मसले को भी लिखने से नही छोड़ते,अदालतों मे, खेतों मे, जेल खानों मे तुम्हारे साथ पहुॅचते रहते है। अस्र की नमाज मे रात वाले शरीक हो गये, दिन के रात होने से पहले और रात के दिन होने से पहले कि अहकामात का तोड़ना और अहकामात का पूरा होना लेकर आसमान पर पहुॅचे जाते हैं। तशरीयी अहकाम खुदा ने हम इन्सानो को दिये है और तकवीनी अहकाम खुदा ने फरिश्तो को दिये है इसलिये जो कुछ हमारे और आपके साथ हो रहा है वो खुदा के निजाम के मातहत हो रहा है, हमारे और आपके निजाम के तहत कुछ न होगा इसलिये हमारी ऑखों से दिखने वाले निजाम के बारे मे हमारा यकीन बदल जाये।
हजरत अली रजि0 को यह मालूम हो गया था कि मैं आज शहीद किया जाने वाला हूॅ आज की रात मेरी जिन्दगी की आखिरी रात है तो कभी उठते हैं और कभी बैठते है, घर वालों को कुछ शुब्हा हो गया कि किसी रात को तो ऐसा करते नही देखा आखिर आज क्या बात है ? घर वालों ने तहकीक किया तो पता चला कि हजरत अली रजि0 को शहीद किये जाने की चालें चली जा रही है तो हजरत हसन और हजरत हुसैन रजि0 तलवारें लेकर हजरत अली रजि0 की हिफाजत क वास्ते आ गये।
हजरत अली रजि0 ने पूछा क्या हुआ ?
अर्ज किया कि आपकी की हिफाजत के वास्ते आये है।
हजरत अली रजि0 ने पूछा ! आसमान वाले से हिफाजत करने आये हो या जमीन वालों से हिफाजत करने आये हो?
अर्ज किया कि आसमान वाले से कौन हिफाजत कर सकता है हम तो जमीन वालों से हिफाजत के वास्ते आये हैं।

हजरत अली रजि0 ने फरमाया ! तलवारे रखकर अपने-अपने बिस्तरों पर जाकर सो जाओ क्यों कि जमीन पर उस वक्त तक कुछ नही होता जब तक आसमान पर उसका फैसला न हो जाये। मेरे दोस्तों !

हमे खाना पैसे से नही मिल रहा है बल्कि खुदा के निजाम से मिल रहा है,
हमे रोशनी सूरज से नही मिल रही है बल्कि खुदा के निजाम से मिल रही है,
हमे गल्ला और सब्जियॉ जमीनों से नही मिल रही है बल्कि खुदा के निजाम से मिल रही है,
हमे पानी बादलों और जमीन से नही मिल रहा है बल्कि खुदा के निजाम से मिल रहा है,
हमे फल और फूल पेड़ों से नही मिल रहे हैं बल्कि खुदा के निजाम से मिल रहे है,
हमे सोना और चॉदी पहाड़ों से नही मिल रहा हैं बल्कि खुदा के निजाम से मिल रहा है,

हमे खाना पैसे से नही मिल रहा है बल्कि खुदा के निजाम से मिल रहा है

मेरे दोस्तों ! सबसे बड़ा धोखा, सबसे बड़ा झूठ और सबसे बड़ी जिहालत हमारा ये समझना है कि हमारे खाने का इन्तेजाम इमारे

कमाने से हो रहा है अगर खाने का तआल्लुक कमाने से होता तो हमारे बीबी और बच्चों को भी कमाना चाहिये था पर इन लोगो को बगैर कमाये खाना मिल रहा है। हमारा ये समझना है कि हम पैसा कमाते है उस पैसे से सामान खरीद कर लाते हैं तब खाना मिलता है, यहॉ इस बात पर जरा गौर करो अगर हमारे हाथ और पैर फालिज का शिकार होकर हम कमाने से महरूम हो जायें तो क्या हमे खाना ना मिलेगा? इसलिये हमे खाना पैसे से नही मिल रहा है बल्कि खुदा के निजाम से मिल रहा है, नीचे लिखी जा रही रिवायतों पर इस बात को समझने के लिये गौर किया जाये,

एक मर्तबा हुजूर सल्ल0 से एक आदमी ने आकर पूछा कि ऐ अल्लाह के नबी सल्ल0 क्या कभी आपके लिये आसमान से खाना आया हैं ?

आपने फरमाया कि हाँ, एक मर्तबा एक देगची में गरम-2 खाना आसमान से उतरा था।

उसने पूछा कि क्या आपने उसमे से खाया था ?

आपने फरमाया ! हॉ, मैने खाया था।

उसने पूछा क्या आपके खाने के बाद उसमे कुछ खाना बचा भी था ?

आपने फरमाया ! हां, हमारे खाने के बाद उसमे कुछ खाना बच भी गया था।

उसने पूछा कि फिर उस बचे हुए खाने का क्या हुआ ?

आपने फरमाया! कि फिर वो देगची आसमान की तरफ ऊपर चली गयी लेकिन जब वो देगची ऊपर जा रही थी, तो उसमे से ये आवाज़ आ रही थी कि मैं आप लोगों में थोड़ा अर्सा ही रहूंगी क्योंकि लोग अलग-अलग जमाअतें बनाऐंगें और फिर एक-दूसरे को क़त्ल करेगे और क़यामत से पहले बहुत ज़्यादा मौतें होने लगेगी फिर जमीन पर खूब ज्यादा ज़लज़ले आयेगें ।
(हाकिम-4-447--इसाबा-2-68)

हुजूर सल्ल0 ने किसी काम क लिए दो सहाबी को बाहर भेजा, जाते वक्त उन दोनों ने हुजूर सल्ल0 को बतलाया कि हम लोगों के पास रास्ते के लिए कुछ नही है। हुजूर सल्ल0 ने फरमाया ! एक मश्क ढूँढ कर लाओ। वो एक मश्क लेकर आये तो आपने फरमाया ! इसे भर दो, उन्होने उसे पानी से भर दिया

हुजूर सल्ल0 ने उस मश्क का मुँह रस्सी से बांधा और उन्हें देकर फरमाया ! जब तुम लोग चलते-चलते फलां जगह पर पहुँचोगे, तो वहां अल्लाह तआला तुम्हे गैब से रोजी देगें।

चुनाँचे वो दोनो चल पड़े, जब चलते-चलते ये दोनो उस जगह पहुंचे जहां के बारे में हुजूर सल्ल0 ने फरमाया था तो इनकी मश्क का मुँह अपने आप खुल गया, इन्होने देखा कि मश्क में पानी की जगह दूध और मक्खन भरा हुआ है फिर इन लोगों ने पेट भर कर मक्खन खाया और दूध पिया। (इब्ने साद-1-172)

अगर दूध और मक्खन देने मे नाऊजुबिल्लाह खुदा जानवरों के मोहताज होते तो मश्क सें पानी की जगह दूध और मक्खन ना निकलता।

हज़रत अबुहुरैरा रज़ि0 फरमाते हैं ! एक अंसारी सहाबी के घर में खाने पीने को कुछ नही था। उन्होंने घर के फक्र-फाके की हालत देखी तो अपने फक्र और फाके को लोगों से छुपाने के लिए वो जगंल की तरफ चले गये। उनकी बीबी उठी और उन्होने आकर चक्की के ऊपर वाले पत्थर को नीचे वाले पत्थर पर रख दिया फिर आकर तन्दूर में आग जला दी और दुआ मांगी कि ऐ अल्लाह ! हमें रोज़ी अता फरमा तो उस औरत ने देखा कि चक्की अपने आप चल रही हैं और उसमें से आटा निकल रहा है।

वहॉ रखा प्याला भुनी हुई चापों से और तंदूर रोटियों से भरा हुआ है।

उसके शौहर ने जगंल से जब अपने घर से धुआँ निकलता हुआ देखा तो वो अपने घर वापस आ गया।घर के बाहर पहुँचने पर इन्हें अन्दर से चक्की चलने की आवाज़ सुनाई पड़ी। इन्हेंाने अन्दर आवाज़ दी तो इनकी बीबी आवाज़ सुनकर दरवाज़े पर आयीं। इन्होंने बीबी से पूछा की क्या पीस रही हो ? बीबी ने इनको सारी कारगुज़ारी सुनाई। ये अन्दर गये और इन्होंने चक्की से आटा निकलते देख कर घर के सारे बरतनों को आटे से भर लिया।फिर इन्होंने चक्की के ऊपर का पाट उठाया और उसको भी झाड़ लिया फिर हुज़ूर सल्ल0 के पास जा कर ये सारा वाक्या सुनाया जिस पर हुज़ूर सल्ल0 ने फरमाया ! अगर तुम चक्की को उसी हालत में रहने देते तो क़यामत तक उस चक्की से आटा निकलता रहता।

(अहमद-बिदाया-6-119)

इसी तरह अगर आटा, रोटी और गोश्त के देने मे नाऊजुबिल्लाह खुदा जमीन के या जानवरों के मोहताज होते तो चक्की सें आटा, तंदूर से रोटी और प्याले मे गोश्त ना मिलता।

एक मर्तबा हज़रत इब्राहिम ख्वास रह0 जंगल से हो क़र जा रह थे, इन्हे रास्ते में एक ईसाई मिला। उसने इनसे कहा कि ऐ मोहम्मदी ! मुझे भी अपने साथ लेते चलो।

इन्होनें उसको साथ चलने की इजाज़त दे दी कि ठीक है चलो, सात दिन तक हम दोनो भूखे-प्यासे चलते रहे सातवें दिन उस ईसाई ने मुझसे कहा कि ऐ मोहम्मदी ! आज कछ खाने-पीने का इन्तिज़ाम करो तो मैंने अल्लाह तआला से ये दुआ की ऐ अल्लाह! इस काफिर के सामने आज मुझे ज़लील ना करियेगा, हम लोगों के खाने पीने का इन्तिज़ाम कर दीजिये।

उसी वक्त आसमान से एक ख्वान उतरा जिसमें रोटियॉ-भुना हुआ गोश्त-ताज़ी खजूरें आर साथ में पानी भरा हुआ लोटा भी रखा था हम दोनों ने उसे खाया-पिया और चल दिये।

सात दिन तक हम लोग फिर भूखे प्यासे चलते रहे सातवें दिन मैंने उस ईसाई से कहा कि आज तुम-खाने पीने का इन्तिज़ाम करो। ये सुन कर वो लकड़ी का सहारा लगा कर आसमान की तरफ देखने लगा फिर उसने अपनी जुबान से कुछ कहा, बस उसी वक्त आसमान से दो ख्वान उतरे जिनमे हर चीज़ मेरे ख्वान से दो गुनी थी। ये देखकर मै हैरान हो गया हो गया और रंज की वजह से मैंने खाना खाने से इंकार कर दिया। उस ईसाई ने मुझसे कहा कि आप खाना खा लीजिए फिर मैं आपको दो खुशखबरियॉ सुनाऊँगा। मैने उससे कहा कि पहले

ख़ुशखबरी सुनाओ फिर मै खाना खाऊँगा। उसने मुझसे बताया कि तुम्हारे लिए पहली ख़ुशखबरी ये है कि मैं मुसलमान हो गया हूँ और दूसरी ख़ुशखबरी ये है कि ये जो आसमान से खाना आया है, ये मैनें अल्लाह तआला से तुम्हारे सदके और तुफैल में मांगा है। (फज़ायले सदक़ात)

हज़रत मूसा अलै0 अपनी क़ौम बनी इसराइल को लेकर जब दरिया-ए-नील के पार पहुँच गये तो मैदाने तीह में इनकी क़ौम ने पीने के पानी की हाजत बताई तो अल्लाह ने हुक्म दिया कि पत्थर की चट्टान पर लाठी मारो। मूसा अलै0 ने चट्टान पर लाठी मारी तो चट्टान से बारह चश्में पानी के ज़ारी हो गये जिससे बनी इसराइल के बारह कबीले एक-एक चश्में से अपनी-अपनी जरूरत का पानी लेने लगे फिर इन लोगो ने मूसा अलै0 के सामने भूख की हाजत पेश की तो अल्लाह तआाला ने इनके लिये भुनी हुई बटेरें आसमान से उतारी उसे खाकर ये लोग सो गये। जब ये लोग सुबह सोकर उठे तो घास और झाड़ियों की पत्तियों पर इन्हे सफेद ओले की तरह कोई चीज़ बिछी हुई है नजर आयी, जब उसको खाया तो इन्हें पता चला कि ये तो हलवा है फिर दोपहर के वक्त सूरज जब सर पर आया तो सूरज की गर्मी से बचने के लिये उस मैदान में इन्हे कोई पेड़ वगैरह नज़र न आया। गर्मी से ये परेशान हुए तो मूसा अलै0 से इसकी शिकायत की उसी वक्त अल्लाह ने बादल के टुकड़े भेजे जो हर क़बीलों के सरों के ऊपर सूरज के दर्मियान आड़ बन गए। इस तरह चालीस साल तक ये लोग उसी मैदान में रहे हर रोज़ शाम के वक्त बटेर और सुबह के वक्त हल्वा और दोपहर के वक्त बादल से ये लोग फायदा उठाते रहे बगैर कमाये-धमाये अल्लाह ने इनको हाजत को अपनी क़ुदरत से पूरा किया।

(कससुल अंबिया व अस्हाबे सालिहीन)

हज़रत लैस बिन साद रह0 कहतें हैं कि मै हज को गया, मक्का पहुँच कर मै असर की नमाज़ के वक्त जबले-अबु-कबीस पर चढ गया तो वहां मैने एक साहब को दुआ मांगते हुए देखा कि वो

या रब्बि या रब्बि फिर
या रब्बाहु या रब्बाहु फिर
या अल्लाहु या अल्लाहु फिर
या हय्यु या हय्यु, फिर
या क़य्यूम या क़य्यूम कहते रहे

फिर सात मर्तबा या अरहर्माहिमीन कहा और कहने लगे ऐ अल्लाह ! अँग्र खाने को जी चाह रहा है अँगूर दे दे और मेरी चादरें पुरानी हो गयी है वह भी दे दे।

लैस रह0 कहतें हैं खुदा की कसम ! उनकी जुबान से यह लफ्ज़ पूरे निकले भी नही थे कि एक टोकरा अँगूरों से भरा हुआ उनके सामने आसमान से उतरा, जिसमे दो चादरें भी रखी थीं हांलाकि उस वक्त सारे अरब में कहीं अँगूर का नामो निशान नहीं था। उंन्होने अंगूर का एक गुच्छा टोकरे से खाने के लिए निकाला तो मैंने आवाज़ दे कर कहा कि इन अँगूरों में मेरा भी हिस्सा है। उन्होने पीछे पलटकर देखा तो उनकी नजर मुझ पर पडी, मुझसे कहा कि इसमे तुम्हारा हिस्सा कैसे है ? मैने कहा कि जब आप दुआ कर रहे थे तो मै आपकी दुआ पर आमीन कह रहा था। यह सुनकर उन्होंने वह गुच्छा मुझे पकड़ा दिया और कहने लगे कि इसे यहीं बैठकर खाओ, मैने इसे यहीं पर खाने के लिए मांगा है घर ले जाने के लिए नहीं। मैने वह अँगूर लेकर खाये तो बगैर बीज के उन अँगूरों का मै उम्र भर मजा ना भूला। (रौज)

मेरे दोस्तों ! हज़रत ईसा अलै0 लगभग 2000 साल से दूसरे आसमान पर मौजूद है (जो कयामत से पहले दज्जाल को
आकर कत्ल करेगें, उनको जमीन पर आने मे ना जाने अभी कितने साल लगे) इतने सालों से क्या उन्हे पैसे से खाना मिल रहा है ?

रोशनी सूरज से और ऑख से नही मिल रही है

इसी तरह अब ये बात कैसे हमारी समझ मे आये कि हमे रोशनी सूरज से नही मिल रही है बल्कि खुदा के निजाम से मिल रही है क्यों कि हमारी ऑखों से यही नजर आ रहा है कि रोशनी सूरज से मिल रही है। बस यही हमारा इम्तेहान कि जहॉ से जो होता हुआ नजर आ रहा है वो वहॉ से नही हो रहा बल्कि अल्लाह के करने से हो रहा है। सूरज तो एक गेंद के मान्निद है इसमे से नजर आने वाली रौशनी सूरज की खुद अपनी नही है बल्कि ये रौशनी अल्लाह के देने से हमे मिल रही है जिस तरह हमारी ऑख एक गेंद के मान्निद है और इसकी रौशनी अल्लाह के देने से हमे मिल रही है, हमारी ऑखों की ये रौशनी ऑखों से नही निकल रही है, ये बात किसी नाबीना को देखकर समझ मे आ सकती है कि उसके चेहरे पर ऑखें तो है पर रौशनी नही है क्यों ? इसलिये कि ऑख अलग चीज है और रौशनी अलग चीज है, हर एक जन्नती की जन्नत मे रौशनी तो होगी पर सूरज ना होगा। अल्लाह जल्ला शानुहू को रौशनी देने के लिये ना ऑख की जरूरत है ना सूरज की जरूरत है, अल्लाह जल्ला शानुहू ने ऑख को और सूरज को हमारे इम्तेहान के लिये बनाया है ताकि इन्हे देखकर इनसे रौशनी मिलने का हम इन्कार करे, इन्सान इन्कार ही के रास्ते से अल्लाह जल्ला शानुहू की कुदरत से फायदा उठा सकता है।

हजरत उसैद बिन हुजैर रजि0 और एक अन्सारी सहाबी एक रात हुजूर सल्ल0 के पास थे, ये लोग अपनी किसी जरूरत के बारे मे बाते कर रहे थे। जब वहाँ से उठकर अपने घर आने लगे तो बहुत रात हो चुकी थी, बाहर बहुत सख्त अंधेरा था। इन दोनो लोगों के हाथ में एक-एक छोटी लाठी थी तो इनमें से एक की लाठी से एकाएक (टार्च की तरह) राशनी निकलने लगी, जिसकी रोशनी में ये दोनो चलते हुए एक दोराहे पर पहुँचे जहां से दोनो को अलग होना था तो दूसरे सहाबी की लाठी से भी रोशनी निकलने लगी और ये दोनो लोग अपनी-अपनी लाठी की रोशनी में अपने घरो को पहुंच गये। (बिदाया-6-152-)

हजरत हमज़ा बिन अम्र अस्लमी रजि0 फरमाते हैं कि हम एक सफर में हुजूर सल्ल0 के साथ थे सख्त अंधेरी रात थी जिसकी वजह हम लोग इधर-उधर बिखर गये तो मेरी उंगलियों से रोशनी निकलने लगी। लोगों ने मेरी उंगलियों की उस रोशनी से अपनी-अपनी सवारी और गिरे हुए सामान को जमा किया, तब कहीं जाकर मेरी उंगलियों से रोशनी खत्म हुई।

(बिदाया-8-213-हैसमी-9-413)

हजरत अबु हब्स रजि0 फरमाते हैं हम तमाम नमाजें रसूलुल्लाह सल्ल0 के साथ पढ़ा करते थे फिर अपने मुहल्ले बनु हारिसा वापस हो जाते थे। एक रात सख्त अंधेरा था और बारिश भी हो चुकी थी, हम मस्जिद से निकले तो मेरी लाठी से रोशनी निकलने लगी, उस रोशनी में चलकर हम अपने मोहल्ले में पहुँचे। (हाकिम-3-350)

हज़रत अबुबक्र रजि0 ने अपनी बांदी जिन्नीरा रजि0 को आजाद किया तो उनकी आँखो की रोशनी चली गयी। इस पर कुरैश के सरदार ने कहा ! तुम्हे लात और उज्जा ने अँधा कर दिया, ये सुनकर हजरत जिन्नीरा रजि0 ने कहा ! कि तुम लोग गलत कहते हो, बैतुल्लाह की कसम ! लात और उज्जा किसी काम नहीं आ सकते ना

ही ये किसी को नफा पहॅुचा सकते ह और ना ही किसी को नुकसान पहुँचा सकते हैं इतना कहना था कि अल्लाह तआला ने इनकी आँखो की रोशनी वापस कर दी। (इसाबा-4-314)

गल्ला जमीनों से नही मिल रहा है

अब ये बात कैसे हमारी समझ मे आये कि हमे गल्ला जमीनों से नही मिल रहा है बल्कि खुदा के निजाम से मिल रहा है हमारी ऑखों से तो यही नजर आ रहा है कि गल्ला जमीन से मिल रहा है लेकिन जमीन से गल्ले का कोई तआल्लुक नही है ये भी हमारे इम्तेहान के लिये है अगर जमीन से गल्ले का कोई तआल्लुक होता तो हर जगह की जमीन से गल्ला मिलना चाहिये, इसी तरह हर जगह की जमीन से बराबर गल्ला मिलना चाहिये कि कहीं एक एकड़ जमीन से 4 कुन्टल गल्ला मिल रहा है तो कहीं एक एकड़ जमीन से 8 कुन्टल गल्ला मिल रहा है।

मेरे दोस्तों ! जिस तरह मोबाईल मे Message – Image – Sound clip– Mail या vidio clip वगैरह का जमीन से 350 किलोमीटर ऊपर मौजूदsatellite से आना हमे नजर नही आ रहा है पर Display मे जाहिर होता सबको नजर आ जाता है। मेरे दोस्तों ! मोबाईल मे Message – Image – Sound clip– Mail या vidio clip वगैरह तभी आयेगा जब कोई भेजेगा अगर एक जैसे 10 मोबाईल है तो जिस मोबाईल पर जो और जितना भेजा जायेगा उतना ही आयेगा। ठीक इसी तरह सातों आसमानों के ऊपर मौजूद अल्लाह के गैबी खजानों से फरिश्तो का जमीन पर गल्ला या सब्जियॉ लाना नजर नही आ रहा हैं पर जमीन से जाहिर होते सबको नजर आ रहा है। अल्लाह जल्ला शानुहू को गल्ला या सब्जियॉ देने क लिये जमीन की जरूरत नही है, जरा नीचे लिखी जा रही रिवायतों पर भी गौर कर लिया जाये।

हजरत इब्ने अ़ब्बास रजि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इर्शाद फरमाया ! अल्लाह की मख़्लूक मे फ़रिश्तों से ज्यादा कोई मख़्लूक नही है, ज़मीन पर कोई भी ऐसी चीज़ नही उगती जिसके साथ एक मुवक्किल फ़रिश्ता न होता हो।

(अबुश्शैख़ हदीस 327)

अबु हुरैरा रज़ि0 फरमाते हैं कि हुजुर सल्ल0 ने इर्शाद फरमाया ! इन्सानो तक रोज़ी पहुँचाने के लिये अल्लाह तआला ने फरिश्तां को मुतइय्यन कर रखा है। (इब्ने अबी शैबा)

हजरत जाबिर रजि0 फरमाते हैं कि एक आदमी ने आकर हुजूर सल्ल0 से गल्ला मांगा, आप सल्ल0 ने आधा वसक़ जौ उसे दे दी। वह आदमी-उसकी बीबी और उसका गुलाम, ये तीनो बहुत दिनों तक उस जौ को खाते रहे लेकिन एक दिन उसने उस गल्ले को तौल लिया तौलने पर वो जौ आधा वसक़ ही निकली। जब हुजूर सल्ल0 को उसके जौ तौलने का पता चला तो आपने उस आदमी को बुलाकर फरमाया ! अगर तुम लोग उसे तौलते न तो हमेशा खाते रहते वो जौ कभी खत्म न होती। (बिदाया-6-104)

हजरत इब्राहिम अलै0 आर हजरत सारा रजि0 को तीन दिन तक खाने के लिये एक दाना भी न मिला तो ये चौथे दिन अपनी सवारी लेकर घर से निकले कि शायद कहीं से कुछ खाने का सामान मिल जाये इसलिये एक बोरी साथ में ले ली। शाम तक ये यहां वहां सवारी से जाते रहे पर खाने का कोई सामान न मिला। अब थक कर घर वापस होने लगे तो बोरी में मिटटी भर ली और सवारी पर रखकर घर वापस हुए। घर पहुंच कर मिटटी की बोरी सवारी से उतारी, घर के अन्दर गये तो हजरत सारा रजि0 ने इनके चेहरे पर दिन भर की

थकान का असर देखकर आराम करने के लिए कपड़ा बिछा दिया, हजरत इब्राहीम अलै0 आराम करने लगे। कुछ देर के बाद हजरत सारा रजि0 हाथ में रोटी लेकर आयी और हजरत इब्राहीम के पास बैठकर कहने लगी कि रोटी खा लीजिये, इब्राहीम अलै0 ने रोटी देखकर सवाल किया कि ये कहां से लायीं ? हजरत सारा रजि0 ने जवाब दिया कि आप बोरी में जो आटा लेकर आये है उसी की बनायी है।

पानी बादलों और जमीन से नही मिल रहा है

अब रही ये समझने की बात कि हमे पानी बादलों और जमीन से नही मिल रहा है बल्कि खुदा के निजाम से मिल रहा है हमारी ऑखों से तो यही नजर आ रहा है कि पानी बादलों और जमीन से मिल रहा है लेकिन बादलों, समन्दरों और जमीन से पानी का कोई तआल्लुक नही है ये भी हमारे इम्तेहान के लिये है अगर बादलों, समन्दरों और जमीन से पानी का कोई तआल्लुक होता तो हर जगह बादलों और जमीन से पानी मिलना चाहिये, आज दुनियॉ मे बहुत से रेगिस्तान खासकर अरब मुमालिक या अपने यहॉ राजस्थान मे जमीन से एक बूंद भी पानी नही मिलता और इसी तरह सैकड़ो गॉव या शहर ऐसे हैं जहॉ से होकर बादल गुजर जाते हैं पर वहॉ वालों को एक भी बूंद पानी की नही मिलती। मेरे दोस्तों ! बस यही हमारा इम्तेहान कि जहॉ स जो होता हुआ नजर आ रहा है वो वहॉ से नही हो रहा बल्कि अल्लाह के करने से हो रहा है, इसे भी समझने के लिये नीचे लिखी रिवायतों पर गौर किया जाये,

हजरत अली रजि0 ने फरमाया! अल्लाह तआला ने पानी के खजाने पर एक फरिश्ता मुकर्रर कर रखा है उस फरिश्ते के हाथा में एक पैमाना है, उस पैमाने से गुजर कर ही पानी की हर बूंद जमीन पर आती है लेकिन हजरत नूह अलै0 के तूफान वाले दिन ऐसा न हुआ बल्कि अल्लाह ने सीधे पानी को हुक्म दिया और पानी को संभालने वाले फरिश्ते को हुक्म न दिया जिस पर वे फरिश्ते पानी को रोकते रह गये लेकिन पानी न रूका। (कंज 1/273)

हजरत इब्ने अ़ब्बास रजि0 फरमाते हैं कि (एक बार हम लोगों पर) बादल ने साया किया तो हमने उससे (बारिश की) उम्मीद की, जिस पर रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फरमाया ! जो फ़रिश्ता बादलों को चलाता है वह अभी हाज़िर हुआ था। उसने मुझे सलाम किया और बतलाया कि वह इस बादल को वादी-ए-यमन की तरफ ले जा रहा हूँ, जहाँ इसका पानी बरसेगा उस जगह का नाम जरअ़ है। (अबु अ़वाना)

हज़रत जाबिर रजि0 फरमाते हैं कि सुलैह हुदैबिया के दिन हुजूर सल्ल0 प्याले से पानी लेकर वुजु कर रहे थे कि आपकी

निगाह पास आये हुए सहाबा पर पड़ी। सबके चेहरे पर परेशानी नज़र आ रही थी तो आपने सहाबा से पूछा ! क्या बात

हो गयी ?

सहाबा ने कहा या रसुलुल्लाह ! हम लोगों के पास न तो वुजु के लिए पानी है और न पीने के लिए। बस इसी प्याले में पानी है जिससे आप वुजू कर रहे हैं। ये सुन कर आपने उस प्याले में अपना हाथ रखा तो आपकी उंगलियों के बीच से पानी निकल कर प्याले से बाहर गिरने लगा तो हम लोगों ने उस पानी को लेकर पिया और वुजू किया। हम पानी पीने और वुजू करने वालों की तादाद उस दिन चौदह सौ थी। (बिदाया-6-97-इब्ने साद-1-179)

उम्मे ऐमन रज़ि0 फरमाती है कि मै हिजरत करके मदीना जा रही थी मुन्सर्फ नाम की जगह पर पहुँचीं तो शाम हो गयी थी, रोज़े से थीं लेकिन हमारे पास पानी नही था और प्यास के मारे बुरा हाल था तो आसमान से

सफेद रस्सी में पानी से भरा हुआ डोल उतरा। उम्मे ऐमन रज़ि0 कहती हैं कि मैंने उस डोल से खूब पानी पिया, फिर उस दिन के बाद से मुझे कभी प्यास नहीं लगी हांलाकि मैं कड़ी गरमियों में रोज़े रखती थी ताकि मुझे प्यास लगे, लेकिन मुझे प्यास नही लगती थी।

(इसाबा-4-432-)

हजरत उम्मे शुरैक दौसिया रजि0 ने हिजरत की, रास्ते मे एक यहूदी का साथ हो गया। ये रोजे से थीं और शाम हो चुकी थीं इनके पास खाने-पीने को कुछ न था। उस यहूदी ने अपनी बीबी से कहा ! कि तुम इस मुसलमान को पानी न देना वरना तुम्हारी खैरियत नही। उम्मे शुरैक रजि0 प्यासी ही सो गयी तहज्जुद के वक्त अल्लाह तआला ने पानी से भरा डोल और थैला आसमान से उतरा, जिस डोल से इन्होने खूब पानी पिया। (इब्ने साद-8-157)

अब्दुल्लाह बिन जाफर रज़ि0 को दस लाख दिरहम के बदले मे एक जमीन मिली जो बंजर थी। उन्होने अपने गुलाम से मुसल्ला लेकर उस जमीन पर चलने को कहा, जमीन पर पहुँच कर गुलाम से मुसल्ला बिछाने को कहा फिर मुसल्ले पर खड़े होकर दो रकाअत नमाज़ पढ़ी, सजदे मे बहुत देर तक पड़े रहे फिर नमाज से फारिग होकर गुलाम से कहा कि मुसल्ला उठाकर यहाँ कि जमीन खोदो। जब गुलाम ने वहां की जमीन खोदी तो वहाँ से पानी का एक चश्मा उबलने लगा।

(फज़ायले आमाल)

एक मर्तबा हज़रत अनस रज़ि0 के गुलाम ने हज़रत अनस रज़ि0 से बाग और खेत में पानी न होने को शिकायत की तो हज़रत अनस रज़ि0 ने उससे पानी मांगा और वुजु किया फिर दो रकाअत नमाज़ पढी और गुलाम से कहा कि बाहर जाकर देखो, क्या आसमान मे बादल आया ? उसने बाहर देखकर बताया कि बादल तो नही है। जिस पर हजरत अनस रज़ि0 ने दोबारा, तिबारा और चौथी मर्तबा नमाज़ पढ़ कर फिर गुलाम से कहा कि अब जाकर देखो। अबकी बार गुलाम ने आकर बताया कि हाँ, चिड़िया के पर के बराबर एक बादल नजर आ रहा है। यह सुनकर इन्होने फिर नमाज़ पढ़ी और खूब देर तक दुआ करते रहे फिर गुलाम ने बताया कि खूब बारिश हो रही है तो आपने उसे अपना घोड़ा देकर कहा कि जा देखकर आ कहां तक बारिश हुई है? वह गया और वापस आकर उसने बताया कि अपने बाग और खेत के अलावा कहीं बारिश नही हुई है। (तब्काते-इब्ने-साद)

हज़रत हुज्र बिन अदी रज़ि0 को एक बार गुस्ल की हाजत हुई उस वक्त वह एक कोठरी में कैद थ। जो आदमी इनकी निगरानी में लगाया गया था उससे इन्होने गुस्ल के लिए पानी मांगा तो उसने पानी देने से इन्कार कर दिया। फिर इन्होने आसमान की तरफ देखकर अल्लाह से पानी मांगा, उसी वक्त एक बादल आया और कोठरी के अन्दर घुस कर बरसने लगा, इन्होने उससे गुस्ल किया और जरूरत भर का पानी भी भर लिया। (इब्ने साद-7-21)

फल और फूल पेड़ों से नही मिल रहे हैं बल्कि खुदा के देने से मिल रहे है

अब ये बात भी कैसे हमारी समझ मे आये कि हमे फल और फूल पेड़ों से नही मिल रहे है बल्कि खुदा के निजाम से मिल रहे हैं इनको लेकर भी हमारी ऑखों से यही नजर आ रहा है कि फल और फूल पेड़ों से मिल रहे है। ये भी हमारा इम्तेहान कि पेड़ों से फलों का निकलना नजर आ रहा है जब कि पेड़ तो लकड़ी के है

और इसमे से मिलने वाले फल वो अलग किस्म के है, लकड़ी और फलों का आपस मे कहीं जोड़ नही, हर एक जन्नती की जन्नत मे फल तो होगें पर लकड़ी के पेड़ ना होगें।

हजरत जरीर बिन अब्दुल्लाह रजि0 फरमाते हैं कि मैं एक दिन हजरत सलमान फारसी रजि0 के पास गया तो उन्होने एक बहुत छोटा सा लकड़ी का टुकड़ा हाथ मे लिया जो उनकी उंगली के बीच मे ठीक से दिखायी भी नही देता था, उसको मुझे दिखाकर फरमाया ! ऐ जरीर तुम जन्नत मे इतनी भी लकड़ी का टुकड़ा तलाश करोगे तो ना पाओगे। मैनें अर्ज किया कि नख्ल (खजूर) और शजर (पेड़) कहॉ चले जायेंगें क्यों कि इन दोनो का कुरआन व हदीस मे जिक्र है ? तो उन्होने फरमाया कि नख्ल (खजूर) और शजर (पेड़) तो वहॉ होगें पर लकड़ी के ना होगें बल्कि उनके तने सोने और मोतियों के होगें जिन पर खजूरें लटक रही होगीं। (बहैकी)

मेरे दोस्तों ! अल्लाह जल्ला शानुहू फल देने के लिये पेड़ की जरूरत नही है, पेडों को हमारे इम्तेहान के लिये बनाया है ताकि इन्हे देखकर पेड़ से फल मिलने का इन्कार किया जाये कि फल पेड़ों से नही मिल रहे है बल्कि खुदा के देने से मिल रहे है, बस बात सिर्फ इतनी है कि इन फलों का आसमानों के ऊपर मौजूद अल्लाह के गैबी खजानों से फरिश्तो का पेड़ो पर लाना नजर नही आ रहा हैं पर पेड़ो पर जाहिर होते सबको नजर आ रहा है। इन्ही गैबी खजानों से जन्नत के सोने और मोतियों के पेड़ों पर फरिश्ते फल लटकाते हैं। इसे भी समझने के लिये नीचे लिखी रिवायतों पर गौर किया जाये,

एक दिन हुजूर सल्ल0 ने सहाबा को सूरज ग्रहड़ की नमाज पढ़ायी, जब हुजूर सल्ल0 ने सलाम फेरा तो सहाबा ने अर्ज किया कि या रसूलुल्लाह हमने देखा कि आप अपनी जगह पर खड़े.खड़े हाथों मे कुछ लेना चाहते थे लेकिन फिर आप पीछे हट गये। हुजूर सल्ल0 ने इस बात के जवाब मे फरमाया ! मैनें यहीं खड़े.खड़े जन्नत देखी तो मैनें उसम से अंगूरों का एक खोशा लेने का इरादा किया और अगर मैं वो खोशा ले लेता तो जब तक दुनियॉ बाकी रहती तुम उसमे से खाते रहते। (तिर्मिजी मे बुखारी और मुस्लिम के हवाले से)

हजरत अबू सईद खुदरी रजि0 से रिवायत है कि हुजूर सल्ल0 ने फरमाया ! मेरे सामने जन्नत पेश की गयी तो मैने तुम लोगों को खिलाने के लिये अंगूरों का एक खोशा लेना चाहा तो उसी वक्त मेरे और खोशे के दरम्यान आढ़ लगा दी गयी इसलिये मैं उस खोशे को ना ले सका। (तर्गीब)

हजरत इरबाज़ रजि0 फरमाते हैं कि जब हम लोगों की जमाअत तबूक में थी तो एक रात हम हुजूर सल्ल0 के पास देर से पहुंचे उस वक्त आप और आपके साथ वाले सहाबा रात का खाना खा चुके थे। इतने मे हजरत जुआल बिन सुराका और अब्दुल्लाह बिन माकिल रजि0 भी कहीं से आये। आप सल्ल0 ने हम तीनों के खाने के लिए हजरत बिलाल रजि0 से पूछा! कुछ खाने को है ? हजरत बिलाल रजि0 ने एक थैले को झाड़ा जिसमें से सात खजूरें निकल आयी। हुजूर सल्ल0 ने उन सातों खजूरों को एक प्याले में रखा और प्याले पर अल्लाह का नाम लेते हुए हाथ फेरा, फिर हम लोगों से कहा! कि अल्लाह का नाम लेकर खाओ। हम लोगो ने खजूरें खाना शुरू की, मैं गिनता जा रहा था और गुठलियों को दूसरे हाथ में पकड़ता जा रहा था, मैने 54 खजूरें खायी मेरे दोनो साथी भी मेरी ही तरह कर रहे थे कि वो भी खजूरे गिन रहे थे उन दोनो ने भी 50-50 खजूरें खायी थी। जब हम खा चुके तो उस प्याले मे वो सात खजूरे वैसी की वैसी ही बाकी थी फिर हुजूर सल्ल0 ने बिलाल रजि0 से फरमाया ! इन खजूरों को अपने थैले मे रख लो। दूसरे दिन हुजूर सल्ल0 ने फिर वो खजूरें प्याले में डाली और फरमाया ! अल्लाह का नाम लेकर खाओ, हम दस आदमी पेट भर कर खजूरें खा गये पर प्याले में उसी तरह सात खजूरें बची थी।

फिर हुजूर सल्ल0 ने फरमाया ! अगर मुझे अपने रब से हया न आती तो मदीना पहुँचने तक ये खजूरें खाते रहते। फिर मदीना पहुँचकर आप ने उन खजूरों को बच्चों में तकसीम कर दिया। (बिदाया-6-118)
हजरत बशीर बिन साद रजि0 की बेटी ने बतलाया कि एक दिन मेरी माँ ने मुझे मुटठी भर खजूरें थैली मे डाल कर दिया और कहा कि इन्हें अपने अब्बा और मामूँ (अब्दुल्लाह बिन रवाहा रजि0) को दोपहर में खाने के लिये दे आओ। मै वो खजूरें लेकर मामूँ और अब्बा को ढूँढते हुए हुजूर सल्ल0 के करीब से गुजरी। हुजूर सल्ल0 ने मुझे अपने पास बुलाया और पूछा इस थैली मे क्या है? मैने कहा कि खजूरें। हुजूर सल्ल0 ने वो खजूरें मुझसे अपने दोनों हाथों में ली जिससे आपके दोनों हाथ भी न भर पाये। आपके कहने पर एक कपड़ा बिछाया गया जिस पर आपन वो खजूरें बिखेर दी फिर एक सहाबी से कहा ! जाओ खंदक वालों को बुला लाओ कि वो लोग आकर खजूरें खा ले। ऐलान पर सारे खंदक वाले जमा हो गये और खजूरें खाने लगे, वो खजूरें बढ़ती चली जा रही थीं, जब वो सारे लोग खा कर चले गये, तो खजूरे कपड़े से बाहर तक गिर रहीं थी। (बिदाया-6--113)
हज़रत अबु हुरैरा रज़ि0 फरमाते हैं कि एक मर्तबा हम हुजूर सल्ल0 के साथ अल्लाह के रास्ते में गये। वहाँ मुझसे हुजूर सल्ल0 ने पूछा ! ऐ अबु हुरैरा तुम्हारे पास खाने को कुछ हैं ? मैने कहा जी हाँ, कुछ खजूरे थैली में है। आप सल्ल0 ने कहा, उन्हें ले आओ। मैने वो खजूरे ले जाकर आपको दे दी फिर आपने फरमाया ! दस आदमियों को बुला लाओ, मैं दस आदमियों को बुला लाया उन सब ने पेट भर कर खजूरें खायी। इसी तरह दस-दस आदमी आते रहें और खाते रहे यहाँ तक कि सारी जमाअत ने वो खजूरें खायी फिर भी थैली में खजूरें बची रहीं फिर आप सल्ल0 ने मुझ से फरमाया ऐ
अबुहुरैरा ! जब तुम खजूरें खाना चाहो तो थैली में हाथ डाल कर निकाल लिया करना पर इस थैली को कभी उलटना नहीं।
अबुहुरैरा रज़ि0 फरमाते हैं कि मैं रसूलुल्लाह सल्ल0 की सारी ज़िन्दगी उस थैली से खजूरें निकाल कर खाता रहा। फिर अबुबक्र सिद्दीक़ रज़ि0 की सारी ज़िन्दगी उसमें से निकाल कर खाता रहा, फिर हजरत उमर रजि0 की सारी जिन्दगी खाता रहा, आखिर मे हजरत उस्मान रजि0 की सारी जिन्दगी में उसी थैली से खजूरे खाता रहा। जिस दिन हजरत उस्मान रजि0 को शहीद किया गया। उस दिन की भगदड़ में मेरी थैली कहीं गुम हो गयी। अपने शार्गिदों से फरमाया ! तुम लोगों को बताऊँ मैने (लगभग 20 साल मे) उसमें से कितनी खजूरें खायी हैं? लोगों ने कहा बतलाइये, अबु हुरैरा रजि0 ने फरमाया ! दो सौ वसक़ यानो 1050 मन (लगभग 425 कुन्तल) (बिदाया-6-117-दलाइल-155)
हुजैर बिन अबी इहाब कि बांदी माविया कहती है कि हज़रत खुबैब रज़ि0 को मेरे घर की एक कोठरी मे कैद करके रखा गया था। एक बार मैंनें दरवाज़े की दराज़ से झाँका तो उनके हाथ मे आदमी के सर के बराबर अंगूरो का एक गुच्छा था जिसमें से वो अगूंर तोड़-2 कर खा रहे थें। जब कि उस वक्त पूरे अरब में कहीं अगूंर नहीं थे। यह देख कर मैने अपना जुन्नार काट डाला और मुसलमान हो गयी कि बेशक अल्लाह तआला ज़रूरतो के पूरा करने में किसी के मुहताज नहीं है।

(इसाबा-1-419)

सोना और चॉदी पहाड़ों से नही मिल रहा हैं बल्कि खुदा के देने से मिल रहा है

अब ये बात कैसे हमारी समझ मे आये कि हमे सोना और चॉदी पहाड़ों से नही मिल रहा हैं बल्कि खुदा के देने स मिल रहा है, हमारी ऑखों से तो यही नजर आ रहा है कि सोना और चॉदी पहाड़ों से मिल रहा हैं लेकिन पहाड़ों का सोना और चॉदी से कोई तआल्लुक नही है, ये भी हमारे इम्तेहान के लिये है अगर पहाड़ों का सोना

और चॉदी से कोई तआल्लुक होता तो हर जगह के पहाड़ों से सोना और चॉदी मिलना चाहिये, इसे भी समझने के लिये नीचे लिखी रिवायतों पर गौर किया जाये,

हज़रत अनस रजि0 से रिवायत है कि हज़रत अय्यूब अलै0 को अल्लाह तआला ने जब बीमारी से शिफा दी तो ये अपनी बीवी के साथ अपने घर वापस होने को हुए तो इनके साथ रोजाना के खाने का जो सामान था, जिसमे एक गठरी मे गेहूं था और एक गठरी में जौ थी अल्लाह तआला ने उनके गेहूँ को सोने के और जौ को चाँदी का बना दिया।

(इब्ने अबी हातिम)

हुजूर सल्ल0 ने इर्शाद फरमाया! कि हज़रत अययूब अलै0 गुस्ल फरमा रहे थे कि अल्लाह तआला ने उन पर सोने की टिडडियां बरसाई, अययूब अलै0 ने उनको देखा तो मुटटी भर-भर कर कपड़े मे रखने लगे तो गैब से आवाज आयी क्या हमने तुमको ग़नी नही बना दिया है जो तुम उनको उठा रहे हो ? अययूब अलै0 ने अर्ज़ किया परवरदिगार ! आप की नेमतों और बरकतों से कब कोई बेपरवाह हो सकता है ''व लाकिन ला ग़नी अन बरकतिक''। (सही बुख़ारी)

एक दिन हज़रत मिक़्दाद रज़ि0 जरूरत पूरी करने के लिए अपने घर से चले और एक बे आबाद जगह पर जरूरत पूरी करने के लिए बैठ गये। इतने में एक बड़ा सा चूहा एक दीनार अपने मुँह में दाबे हुए आया और इनके सामने उसे डालकर वापस चला गया। एक-एक करके उस चूहे ने सत्तरह दीनार (सोने का सिक्के) इनके सामने ला कर रखे। हज़रत मिक़्दाद रज़ि0 वो दीनार लेकर हुज़ूर सल्ल0 की ख़िदमत में हाज़िर हुए और पूरा वाक्या बताया। हुजूर सल्ल0 ने इनसे पूछा! कि तुमने चूहे के बिल में अपना हाथ तो नहीं डाला था?

हज़रत मिक्दाद रजि0 ने जवाब दिया या रसूलुल्लाह ! हमने उसके बिल में अपना हाथ नहीं डाला था।

हुजूर सल्ल0 ने फरमाया ! तुम इसे ले लो ये अल्लाह कि तरफ से तुम्हें रोज़ी भेजी गई है जिसका तुमसें वादा किया गया है कि तुम्हे ऐसी जगह से रोज़ी दूंगा जहाँ से तुम्हे गुमान भी ना होगा।

इनकी बीबी हज़रत जुबाआ रज़ि0 कहती हैं कि अल्लाह तआला ने उन दीनारों में बहुत बरकत अता फरमाई। ये दीनार उस वक्त तक खत्म नही हुए, जब तक की हमारे घर में चाँदी के दिरहम बोरियों में भरकर नहीं रखें जाने लगें।

(दलाइल-165)

हज़रत अबु उमामा रजि0 दूसरों पर खर्च करने के लिये घर पर पैसे रखते थे। कभी किसी मांगने वाले को खाली हाथ वापस नहीं भेजते थे अगर पैसे न होते तो उसे एक प्याज़ या एक खजूर ही दे देते थे। एक दिन एक माँगने वाला इनके पास आया उस वक्त इनके पास सिर्फ तीन दीनार थे, एक दीनार उसको दे दिया, कुछ देर बाद दूसरा माँगने वाला आया

एक दीनार उसको दे दिया फिर थोड़ी देर बाद तीसरा आया इन्होंने वो भी उठाकर उसे दे दिया।

इनकी ईसाई बाँदी ने जब ये देखा तो उसे बहुत गुस्सा आया और गुस्से में कहा कि तुमने हमारे खाने के लिये भी कुछ नहीं छोड़ा। इन्होने उसकी बात सुनी और जाकर लेट गये, जब ज़ोहर की अज़ान हुई तो ये उठे और वुज़ू करके मस्जिद चले गये, ये रोज़े से थे इस वजह से इनकी बांदी को उन पर तरस आ गया और गुस्सा उतर गया। वो बांदी कहती है कि मैंने उधार ले कर उनके लिये रात का खाना पकाया और घर में चिराग जलाने के लिये उनके बिस्तर के पास गई, जब बिस्तर उठाया तो उसके नीचे सोने के दीनार रखे हुये थे। मैंने उन्हे गिना तो वो पूरे तीन सौ थे मैंने सोचा कि इतने दीनार ये अपने पास रखे हुए थे इसलिए वो तीनों दीनार

मँागने वालो को दे दिये। जब इशा की नमाज के बाद वो घर वापस आये ता चिराग की रोशनी में दस्तरख्वान लगा देखा, उसे देखकर मुस्कुराये और कहने लगे मालूम होता है कि अल्लाह के यहाँ से आ गया ? ये सुन कर मैं कुछ न बोली, उनको खाना खिलाया फिर खाना खाने के बाद मैंने उनसे कहा ! अल्लाह आप पर रहम फरमाये, आप अगर जाते वक्त इन दोनारों के बारे में मुझे बता देते तो मैं इन दीनारों को उठाकर रख लेती। अबु उमामा रजि0 ने पूछा कौन से दीनार ? मेरे पास तो कुछ था नही जिसे मैं छोड़कर जाता तो मैंने बिस्तर उठाकर वो दीनार दिखाये, उन दीनारो को देखकर वो खुश भी हुए और हैरान भी हुए। उनकी इस खुशी और हैरानी को देखकर मुझ पर बडा असर हुआ, मैंने अपना जुन्नार काट डाला और मुसलमान हो गयी। (हुलीया-10-149)

रब की मर्जी और मंशा वाले अमल हुजूर सल्ल0 वाले अमल हैं

مُحَمَّدًا رَسُولُ اللهِ हुजूर सल्ल0 वाले अमल से अपनी जरूरतो के पूरा कराने का यकीन पैदा करना ही مُحَمَّدًا رَسُولُ اللهِ पर ईमान का लाना है इसलिये लिखी गयी रिवायतों को सामने रखकर कायनात की हर छोटी.बड़ी चीज का अल्लाह की कुदरत के मुकाबले मे इन्कार करना है ताकि अल्लाह के मासिवा से हम मायूस और नाउम्मीद हो जायें, अल्लाह के मासिवा से मायूस और नाउम्मीद हुए बगैर हुजूर सल्ल0 वाले अमलों पर अल्लाह ने जो वादे किये हुए है वो पूरे ना होगें। हुजूर सल्ल0 वाले अमल करना ये कोई बड़ी बात नही है, लोग माहौल की वजह से, आदत की वजह से, गर्ज की वजह से या फुर्सत की वजह से अमल करते है जिस तरह मुनाफिक करते थे पर इन लोगो के साथ अमलों पर अल्लाह ने जो वादे किये है वो पूरे ना होगें, वादों के पूरा होने का तआल्लुक مُحَمَّدًا رَسُولُ اللهِ पर ईमान लाने से है और ईमान दिल मे आयेगा ईमान के हल्कों से इसलिये कि ईमान न सुरयया पर है और न किताबों व कुतुबखानों में बल्कि ईमान को सहाबा किराम ने ईमान के हल्कों से सीखकर अपने दिलों मे पैदा किया था। जब ईमान दिलों मे आया तो अपनी अलामतों के साथ आया कि जब उनके कानों मे लफज "अल्लाह" की आवाज पहुँचती थी तो उनके दिल डर जाते जिस तरह चोर के कानों मे लफज "पुलिस" की आवाज पहुँचती है तो उनके दिल डर जाते हैं।

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ إِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَجِلَتْ قُلُوبُهُمْ وَإِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ آيَاتُهُ زَادَتْهُمْ إِيمَانًا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ

सूर अन्फाल 2

अल्लाह तआला ने कुर्आन पाक मे ईमान वालों की अलामत बतलायी है कि ईमान वाले तो वही लोग हैं कि जब उनके कानों मे लफज "अल्लाह" की आवाज पहुँचती है तो उनके दिल डर जाते है और जब उनको अल्लाह की बातें बतलायी जाती हैं तो उनके यकीन मे तरक्की हो जाती है और ये लोग अल्लाह ही पर भरोसा करते है।

हुजूर सल्ल0 से एक सहाबी ने पूछा कि या रसूलुल्लाह मोमिन किसको कहते हैं ?

हुजूर सल्ल0 ने इर्शाद फरमाया ! जब नेकी करके दिल खुश हो और गुनाह हो जाने पर दिल मे गम हो तो समझो मोमिन हो यानी जब जिस्म का कोई आजा ऑख, कान जुबान, हाथ, पैर, दिमाग और शर्मगाह अल्लाह जल्ला शानुहू की मर्जी पर इस्तेमाल होकर दिल खुश हो और ऑख, कान जुबान, हाथ, पैर, दिमाग और शर्मगाह का अपनी मर्जी पर इस्तेमाल होने पर दिल मे गम हो तो समझो मोमिन हो।

इसी तरह हुजूर सल्ल0 ने इर्शाद फरमाया ! मोमिन मे सारी खस्लतें हों सकती हैं पर मोमिन झूठा नही हो सकता यानी मोमिन अपनी जुबान से ये कभी नही बोलेगा कि इस चीज के खाने से ये हो जायेगा और इस चीज के पीने से ये हो जायेगा क्यों कि हदीस का मफहूम है जब कोई खाने या पीने वाली चीज इन्सान की हल्क मे पहुॅंचती है तो वो चीज अल्लाह जल्ला शानुहू से पूछती है कि मै इस बन्दे के नफे का जरिया बनूं या नुकसान का। इसी तरह मोमिन अपनी जुबान से ये कभी नही बोलेगा कि हुकूमत से ये हो जायेगा और मालदार से ये हो जायेगा क्यों कि हुकूमत वाले नमरूद व फ्रिऔन और माल वाले कारून व शददाद वगैरह अपनी हुकूमत और माल के साथ बर्बाद हुए है। इसी तरह मोमिन अपनी जुबान से ये कभी नही बोलेगा कि इसने ये कर दिया और उसने ये कर दिया कि ये बोलना झूठ भी है और शिर्क भी इसलिये मोमिन ऐसा बोल नही बोलेगा, मोमिन तो अपनी जुबान से हमेशा لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللّٰهِ बोलेगा कि कायनात और कायनात की चीजो से कुछ नही होता हैं बल्कि अल्लाह करते हैं और अल्लाह के करने का जाब्ता मुहम्मद सल्ल0 के अमल है इसलिये अल्लाह जो करते हैं बन्दों के अमल पर करते हैं।

मियॉं जो अज्मत साहब

बाद नमाज फज्र दिल्ली

आलम ए दुनियॉं की बुनियाद सबब पर नही है कुदरत पर है

मेरे भाईयों, दोस्तों और बुजुर्गो ! सबसे पहली बात इस आलम ए दुनियॉं की बुनियाद सबब पर नही कुदरत पर है इसलिये कि अल्लाह तआला ने किसी भी मख्लूक को सबब से नही बनाया बल्कि हर एक को अपनी कुदरत से बनाया है। अल्लाह के करने का सबब उनकी कुदरत है, खुदा जो कुछ भी करते हैं अपनी कुदरत से करते हैं, जमीन व आसमान, सूरज, चॉंद व सितारे, दरिया, पेड़ व पहाड़, इन्सान, जिन्नात और फरिश्ते इन सबको खुदा ने किसी सबब से नही बनाया बल्कि बगैर नमूना सिर्फ अपनी कुदरत से बनाया है, जैसे

आदम अलै0 को बगैर किसी इन्सान के बनाया,

पेड़ों को बगैर किसी बीज के बनाया,

आसमानों को बगैर किसी आसमान के बनाया,

जानवरों को बगैर किसी जानवर के बनाया,

फरिश्तों को बगैर किसी फरिश्ते के बनाया,

फलों को बगैर किसी फल के बनाया,

दूध को बगैर दूध के बनाया लेकिन इन सारी चीजों को खुदा अब सबब के रास्ते से होता हुआ दिखलाते हैं ताकि सबब के रास्ते से कुदरत को समझा जाये और कुदरत के रास्ते से इसके बनाने वाले को जाना जाये कि बनाने वाला कौन है ? मेरे अजीजों ! कुदरत सबब को समझने के लिये नही बल्कि कुदरत को समझने के लिये सबब है अगर आदमी सबब से कुदरत को नही समझेगा तो सबब का शिकार हो जायेगा और जब आदमी सबब का शिकार हो जाता है तो कुदरत तक पहुॅंचने का रास्ता बन्द हो जाता है फिर आदमी सबब मे ही अटक जाता है और इतना अटक जाता है कि अपनी सारी हाजतों को खुदा से पूरा होने के बजाये सबब से पूरा होना समझता है कि मेरी हाजत सबब से पूरी हो रही है फिर जब हाजत का सबब से पूरा होना जहन मे आ जाता है तो सबब का यकीन दिल मे पैदा हो जाता है। आदमी कुदरत को छोड़कर जब सबब की तरफ मुतवज्जाह होता है तो कुदरत से दूर हो जाता है, आज हमे जो कुछ ऑंखों से होता हुआ नजर आ रहा है इस सबकी बुनियाद कुदरत है, ये नजर आने वाला सारा सामान सिर्फ कुदरत को समझने के लिये बनाया गया है ताकि हम इन चीजों को देखकर खुदा तक पहुॅंचे। ये बात हमेशा याद रखना कि बनी हुई चीजों को जितना बनाने वाला जानता है उतना कोई और नही जानता, खुदा ने मूसा अलै0 के किस्से मे यही बात समझायी है कि

खुदा ने मूसा अलै0 से पूछा ! तुम्हारे हाथ मे क्या है ?

मूसा अलै0 ने जवाब दिया, लाठी।

खुदा ने पूछा ! किसकी है ?

मूसा अलै0 ने जवाब दिया, मेरी।

खुदा ने पूछा ! इससे क्या होता है ?

मूसा अलै0 ने जवाब दिया, टेक लगाता हूॅं, पत्ती तोड़ता हूॅं, बकरी हकाता हूॅं।

खुदा ने कहा ! इसे जमीन पर फेंक दो, मूसा अलै0 ने उस लाठी को जमीन पर फेंक दिया, जमीन पर फेंकते ही वो लाठी सॉंप बन गयी,

खुदा ने मूसा अलै0 से पूछा ! ये क्या है ?

मूसा अलै0 ने जवाब दिया, साँप।
खुदा ने मूसा अलै0 से पूछा ! किसका है ?
मूसा अलै0 ने जवाब दिया, आपका।
खुदा ने मूसा अलै0 से पूछा ! इससे क्या होता है ?
मूसा अलै0 ने जवाब दिया, आदमी डर जाता है, भाग जाता है, जिसे काटता है उसके जिस्म मे जहर दाखिल हो जाता है।
आज हर आदमी अपने सबब की यही तीनो बाते बतलाता है, 1 उसकी जात 2 उसकी मल्कियत 3 उसकी सिफात, मिसाल के तौर पर किसी दुकानदार से उसकी दुकान के बारे मे पूछो ! ये क्या है ? जवाब देगा दुकान, ये किसकी है ? जवाब दगा मेरी है,
इससे क्या होता है ? जवाब देगा इससे हमारा और हमारे घर वालों के खाने का इन्तेजाम होता है, कपड़े मिलते हैं, खर्च करने को पैसे मिलते हैं। खेती वाला जमीन के बारे मे, नौकरी वाला आफिस के बारे मे, गर्ज हर आदमी अपने अपने सबब के बारे मे आज वही जवाब देता है जो मूसा अलै0 ने दिया था कि लाठी है, मेरी है और इससे ये ये होता है, यहाँ खुदा ने मूसा अलै0 को अपनी कुदरत समझायी और कुदरत समझाकर कहा कि जाओ फिरऔन को मेरे बारे मे समझाओ। मूसा अलै0 जब वहाँ से फिरऔन को खुदा के बारे मे समझाने चले तो उन्हे अपनी बीबी और बकरियों का ख्याल आया कि उनका क्या होगा ? उनके दिल मे आने वाले इस ख्याल पर खुदा ने इनसे कहा ! मूसा लाठी को पत्थर पर मारो।
मूसा अलै0 के पत्थर पर लाठी मारने पर पत्थर के अन्दर से एक पत्थर निकला, खुदा ने फिर हुक्म दिया ! इस पर भी लाठी मारो फिर लाठी मारी तो उस पत्थर के अन्दर से भी पत्थर निकला, खुदा ने फिर हुक्म दिया इन्होने फिर लाठी मारी तो उस पत्थर मे एक कीड़ा मुँह मे हरी पत्ती खाता हुआ नजर आया, यहाँ खुदा ने मूसा अलै0 को अपनी रूबूबियत समझायी कि मेरी मख्लूक को पालने वाला हमारे अलावा कोई दूसरा नही है, मैं रब हूँ। ये खुदा की हिक्मत है कि कुदरत को समझाने के बाद अपनी रूबूबियत समझायी, पहले रूबूबियत नही समझायी बल्कि पहले कुदरत समझायी कि लाठी को फिकवाकर कुदरत समझायी और पत्थर को पिटवाकर रूबूबियत समझायी तो जब नबी को कुदरत और रूबूबियत समझायी जा रही है, क्या हमे तुम्हे इसके बगैर खुदा समझ मे आ जायेगा ? इसलिये याद रखना जो कुदरत को ना समझेगा वो रब को ना समझ पायेगा फिर ये सबब के फित्ने मे फंसकर सबब को ही अपना माबूद बनायेगा,
कोई कहेगा ! पालने वाला तो अल्लाह है पर वो मुझे दुकान से पालता है।
कोई कहेगा ! पालने वाला तो अल्लाह है पर वो मुझे खेती से पालता है।
कोई कहेगा ! पालने वाला तो अल्लाह है पर वो मुझे नौकरी से पालता है।
कोई कहेगा ! पालने वाला तो अल्लाह है पर वो मुझे मजदूरी से पालता है।
कुदरत को ना समझने की वजह से हर जगह इन्सान आज शिर्क बोलता है, इन्सान को शिर्क से निकालने के लिये अल्लाह ने अपनी कुदरत को बतलाया कि बगैर मर्द और औरत के आदम अलै0 को, बगैर औरत के दादी हव्वा को और बगैर मर्द के ईसा अलै0 को बनाकर रहती दुनियाँ तक अपनी कुदरत समझायी है कि हम जो कुछ भी करते हैं अपनी कुदरत से करते है कायनात के हर सबब को हमने अपनी कुदरत से बनाया है और कयामत लाकर हर सबब को खत्म भी हम अपनी कुदरत से करेगें, सबब सबब हैं कुदरत नही है। इसलिये

अल्लाह ने सारे सबब को बनाकर हमे सबब के फित्ने से बचाने के लिये لَا إِلَٰهَ मे यही बतलाया कि मैने ही बनाया है और मैं ही कह रहा हूँ कि इनसे कुछ नही होता,
जमीन मैने बनायी और मैं कह रहा हूँ कि जमीन से कुछ नही होता,
दरख्त मैने बनाये और मैं कह रहा हूँ कि दरख्त से कुछ नही होता,
इन्सान मैने बनाये और मैं कह रहा हूँ कि इन्सानों से कुछ नही होता,
जानवर मैने बनाये और मैं कह रहा हूँ कि जानवरों से कुछ नही होता,
आसमान मैने बनाये और मैं कह रहा हूँ कि आसमानों से कुछ नही होता,
सूरज, चॉद व सितारों को मैने बनाया और मैं कह रहा हूँ कि सूरज, चॉद व सितारों से कुछ नही होता,
मेरे अजीजों ! आदमी को सबसे बड़ा नुकसान उसकी ऑखो के देखने से पहुँचता है कि जो काम अल्लाह के करने से हो रहा है, ऑख उसे मख्लूक से होना दिखलाती है कि
गल्ला होता है कुदरत से और ऑख देखती है जमीन से,
बच्चा होता है कुदरत से और ऑख देखती है औरत से,
सेहत मिलती है कुदरत से और ऑख देखती है दवा और डाक्टर से,
बारिश होती है कुदरत से और ऑख देखती है बादल से,
अगर आदमी अपनी ऑख को नही समझा तो सबसे बड़ा नुकसान इसी से है, खुदा ने ऑखों के फित्ने से बचान के लिये आदमी को जबान दी है कि ऑख देख रही है गल्ला जमीन से हो रहा है और जबान भी यही कहे कि गल्ला जमीन से हो रहा है तो आदमी का जहन जमीन से होने का बनेगा फिॅर दिमाग दिल मे जमीन से होने का यकीन पैदा करेगा। इसलिये इन्सान का सबसे बड़ा फित्ना खुद उसकी नजर है और इस नजर पर हम इन्सानों का कोई काबू नही क्यों कि ऑख के नीचे जबान है, इसलिये जब
ऑख देखे गल्ला जमीन से हो रहा है तो जबान बोले कि गल्ला जमीन से नही कुदरत से हो रहा है,
ऑख देखे बच्चा औरत से हो रहा है तो जबान बोले कि बच्चा औरत से नही कुदरत से हो रहा है,
ऑख देखे सेहत दवा और डाक्टर से मिल रही है तो जबान बोले कि सेहत दवा से नही कुदरत से मिल रही है,
ऑख देखे बारिश बादल से हो रही है तो जबान बोले कि बारिश बादल से नही कुदरत से हो रही है, आदमी का ये बोलना ऑख के फित्ने से बचाकर कुदरत की तरफ ले जायेगा, ऑख देखती जाये मख्लूक से और जबान बोलती जाये खालिक से। जब तक जबान को ऑख के मुकाबले पर नही लाओगे उस वक्त तक ऑख के फित्ने से नही बच पाओगें, ऑख की खता से सिर्फ जबान बचा सकती है। कान पर ऑख की देखी का असर नही होता बल्कि कान जबान की बात को सच मानता है हदीस मे है कि रोजाना सुबह बदन के हर आजा जबान से पनाह मॉगते है, इसलिये ऑखों से जो दिखलायी दे रहा है कुदरत के मुकाबले पर जबान से उसका इन्कार करो। जब लोगों को समझाते हो तो अपनी आखों को भी तो समझाओ कि तू गलत देखती है ना गल्ला जमीन से है, ना पानी बादल से है, ना बच्चा औरत से है, ना सेहत दवा और डाक्टर से है बल्कि जबान कहे कि ये सब अल्लाह से है। अल्लाह ने मख्लूक को देखने के लिये इन्सान को ऑख दी और बोलने के लिये जबान दी, ऑख रब से होना नही देखती सबब से होना देखती है पर जबान इन्सान के ताबेअ है इससे चाहे रब से होना बुलवा दो या ऑख की ताईद मे बोल जाओ, बस यही इन्सान का इम्तेहान है अगर ऑख की ताईद मे बोलोगे तो चाहे जितनी तस्बीह पढ़ो, चाहे जितनी नमाज पढ़ो, जब ऑख ने गलत देखा है और जबान ने भी गलत

बोल दिया फिर कान ने भी गलत सुना तो तीनों आजा की गलती पर दिमाग ने भी गलत सोचा, दिमाग के इस गलत ख्याल के दिल मे दाखिल होने से सबब का यकीन दिल मे पैदा हो गया, अब रही बात कि ये गलत यकीन पैदा होना शुरू कहॉ से हुआ ?

इसकी शुरूआत हुई ऑख से और खत्म कहॉ पर हुआ दिल पर तो इस तरह बावजूद मुसलमान होने के हमारे अन्दर सबब का यकीन पैदा हो गया, इसलिये मौत तक जबान को ऑख के खिलाफ रखो, अल्लाह से होने और सबब से ना होने की खूब दावत दो। कुदरत क मुकाबले पर चीजों से होने को इन्कार करना ही इन्सान को कामयाब बनायेगा, ये पहली आवाज है जिसे हुजूर सल्ल0 ने मक्का मे लगायी कि ऐ लोगो ! बनी हुई चीजों से परवरिश नही होती, हर एक की परवरिश खुदा अपनी कुदरत से करते हैं इसको एक दूसरे से बोलो तो कामयाब हो जाओगे वरना बनी हुई चीजों को अपना माबूद बनाये रहोगे और कदम कदम पर नाकामियों का शिकार होते रहोगे। खुदा ने हमको सबब के फित्ने से बचाने के लिये لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللَّهُ मे पहले إِلَّا اللَّهُ नही कहा बल्कि لَا إِلَٰهَ पहले कहा है इसलिये कि ये सब बनी हुई चीजें है, बनी हुई चीजें जिस तरह अपने बनने मे खुदा की मोहताज हैं उसी तरह ये अपने बाकी रहने मे भी अपने बनाने वाले की मोहताज है। जब बनाने वाले क बगैर ये बन नही सकती तो बनाने वाले के बगैर बाकी भी नही रह सकती और जिस तरह ये अपने बनने व बाकी रहने मे अपने बनाने वाले की मोहताज है उसी तरह अपने अपने करने मे भी ये अपने बनाने वाले की मोहताज है, ऐसा नही है कि

जिस जमीन को खुदा ने अपनी कुदरत से बनाया हो वो जमीन अब खुद गल्ला पैदा करने लगे या
जिन दरख्तों को खुदा ने अपनी कुदरत से बनाया हो वो दरख्त अब खुद फल पैदा करने लगे या
जिन जानवरों को खुदा ने अपनी कुदरत से बनाया हो वो जानवर अब खुद दूध देने लगे या
जिन औरतों को खुदा ने अपनी कुदरत से बनाया हो वो औरतें अब खुद बच्चे पैदा करने लगे या
जिस सूरज को खुदा ने अपनी कुदरत से बनाया हो वो सूरज अब खुद रौशनी देने लगे,

मेरे अजीजों ! हर बनी हुई चीज तीन बातों मे हर वक्त अपने बनाने वाले की मोहताज है 1 खुद के बने होने मे, 2 खुद के बाकी रखने मे, 3 खुद कुछ भी करने मे, ये सारी चीजें खुदा के बगैर कुछ कर ही नही सकती पर इन्सान इन चीजों के फित्ने से बच नही पाता है, क्यों कि सबब का बनाने वाला खुदा इन्सान को नजर नही आता और जिस कुदरत से खुदा ने सबब को बनाया है वो कुदरत भी नजर नही आती इसलिये इन्सान सबब के फित्ने मे फंस जाता है। इन्सान को इस फित्ने से बचाने के लिये खुदा ने सबसे पहले لَا إِلَٰهَ कहा कि मैं बनाने वाला हूँ मै ही कह रहा हूँ किसी से कुछ नही हो सकता, हॉ इतनी बात जरूर है कि तुम्हारी आजमाईश के लिये मैं कुदरत से करूँगा और सबब से दिखाऊँगा कि

गल्ला पैदा करूँगा मैं और दिखाऊँगा जमीन से,
बारिश करूँगा और मैं दिखाऊँगा बादल से,
फल पैदा करूँगा मैं और दिखाऊँगा दरख्त से,
बच्चा पैदा करूँगा मैं और दिखाऊँगा औरत से,

तुम्हारी आजमाईश ये है कि ये देखकर तुम इनका होना खुदा से कहते हो या जहॉ से दिख रहा है उससे कहते हो, अब इस आजमाईश से तुम्हे لَا إِلَٰهَ का जुम्ला फित्ने से निकालेगा, इस जुम्ले के अलावा कोई और जुम्ला आदमी को सबब के फित्ने से नही बचा पाएगा क्यों कि चीटी से लेकर जिब्रील तक, औलिया से लेकर अम्बियॉ

तक, मैने सबको बनाया है और मैं कह रहा हूँ कि किसी से कुछ नही होता, इसलिये हर चीज का कुदरत के मुकाबले पर सबसे पहले इन्कार करो अगर इन्कार नही करोगे तो إِلَّا اللّٰهُ तक कैसे पहुँचोगे इसलिये कि जो बनी हुई चीज का इन्कार नही करेगा वो إِلَّا اللّٰهُ को तस्लीम नही करेगा। बस जुबान से إِلَّا اللّٰهُ कहता रहेगा और अपनी सारी हाजतों को मख्लूक से जोड़ता रहेगा कि

दुकानदार कहेगा मेरी हाजत दुकान से पूरी होती,

खेत वाला कहेगा मेरी हाजत जमीन से पूरी होती,

नौकरी वाला कहेगा मेरी हाजत नौकरी से पूरी होती,

कारखाने वाला कहेगा मेरी हाजत कारखाने से पूरी होती,

अपनी जबान से ये बोल बोलकर अल्लाह स दूर होता चला जायेगा और मख्लूक के करीब होता चला जायेगा, इसलिये सबसे बुनियादी जुम्ले दो है एक لَا إِلٰهَ और दूसरा إِلَّا اللّٰهُ ये बुनियाद जिसकी सही हो गयी वो हुजूर सल्ल0 वाले अमल को सबब बनायेगा और जिसकी ये दोनो बुनियादें सही नही होगी वो सबब मे फंस जायेगा कि देखने मे तो ये हुजूर सल्ल0 वाले अमल करता हुआ नजर आयेगा मगर ये अमल सबब के यकीन के साथ होगा कि देखने मे तो ये अमल की सूरत होगी पर अमल की सीरत ना होगी और खुदा किसी को सूरत पर कामयाब नही करता है सीरत पर कामयाब करता है,

अमल की सीरत لَا إِلٰهَ और إِلَّا اللّٰهُ ये अमल की बुनियाद है अगर ये बुनियाद नही है तो मुसलमान ये कहता फिरेगा कि

करने वाला तो अल्लाह है मगर दुकान भी होनी चाहिये,

करने वाला तो अल्लाह है मगर दवा और डाक्टर भी होना चाहिये,

करने वाला तो अल्लाह है मगर बारिश के लिये बादल भी होना चाहिये फिर ये हर जगह शिर्क बोलेगा हालॉकि अल्लाह को बारिश के लिये बादल की जरूरत नही है,

नूह अलै0 की कौम के लिये बगैर बादल के बारिश की है,

रौशनी के लिये सूरज की जरूरत नही है, सहाबा की लाठी मे रौशनी दी है,

बच्चे के लिये औरत की जरूरत नही है, दादी हव्वा को बगैर औरत के पैदा किया है,

गल्ले के लिये जमीन की जरूरत नही है, सहाबा की चक्की मे बगैर जमीन के गल्ला दिया है,

दूध के लिये जानवर की जरूरत नही है, हुजूर सल्ल0 के प्याले मे बगैर जानवर के दूध दिया जिसे 71 या 72 लोगों ने पिया, अल्लाह की जात मख्लूक से बेनियाज है वो जो कुछ करता है अपनी कुदरत से करता है, जब वो बगैर दवा के बीमार कर सकता है तो क्या बगैर दवा के ठीक नही कर सकता ? मगर ये बात यकीन वालों के समझ मे आयेगी सबब वालों के समझ मे नही आयेगी कि बनी इसराईल को अल्लाह ने चालीस साल तक आसमान से खाना उतार कर खिलाया, क्या मतलब है इसका ? इसका मतलब ये है कि

हम चाहें तो ऊपर से उतार कर खिलायें या जमीन फाड़कर खिलायें,

हम चाहें तो यूनुस अलै0 को मछली के पेट मे खिलायें या हम चाहें तो ईसा अलै0 को आसमानों के ऊपर बुलाकर खिलायें, इसलिये हमारी रूबूबियत को समझो कि रब हम हैं, आज तुमने हमारी रूबूबियत को सबब के साथ जोड़ दिया और खुद सबब के साथ जुड़कर हमारी कुदरत से महरूम हो गये। रब हम हैं ये पहला जुम्ला है रूबूबियत का اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ मे पहला जुम्ला है कि रब हम हैं सिर्फ तुम्हारे नही बल्कि

सारी मख्लूकात के रब हम हैं, मेरे अलावा कोई रब नही है पर हमने हजारों रब तस्लीम कर लिये क्यों ? इसलिये कि आज हमने बनी हुई चीजों का इन्कार नही किया तो إِلَّا اللهُ को तस्लीम नही किया, बस जुबान पे إِلَّا اللهُ और अपनी सारी हाजतों को मख्लूक से जोड़ दिया।

इसलिये मेरे भाईयों, दोस्तों और बुजुर्गो ! सब कुछ अल्लाह के करने से हो रहा है, हमे जो चीजों से होता हुआ नजर आ रहा है ये सारा का सारा हमारी आजमाईश के लिये है कि जब खुदा जिब्रील अलै0 के बगैर इब्राहिम अलै0 को आग से बचा सकता है तो क्या जिब्रील अलै0 के बगैर वो नबियों के पास वहय नही भेज सकता ? जब जिब्रील अलै0 के बगैर खुदा आग को बाग बना सकता है तो जिब्रील अलै0 के बगैर खुदा क्या नही कर सकता है ? अल्लाह ने जगह जगह नबियों के साथ सबब हटाकर अपनी कुदरत का इस्तेमाल किया,

बिलकीस को हिदायत देने के लिये खुदा ने परिन्दे का इस्तेमाल किया, बिलकीस की हिदायत के लिये खुदा ने सुलेमान अलै0 को इस्तेमाल नही किया, इस वाकिये से अल्लाह ने ये बतलाया कि हिदायत के लिये हम नबी क मोहताज नही है नबी हमारे मोहताज है, अल्लाह ने हम पर रहम किया कि हर जगह अपनी कुदरत को समझाया ताकि हम सबब के फित्ने से बचे। उसने सबब के फित्ने से बचाने के लिये हमे अहकामात दिये कि हम उसकी कुदरत से लें, अब एक रास्ता है सबब से लेने का ये अवामुन्नास का रास्ता है और एक रास्ता है अहकामात के जरिये लेने का कि ये रास्ता है नबियों का,

हुक्म के रास्ते से मूसा अलै0 ने दरिया से रास्ता लिया है,

हुक्म के रास्ते से ही मूसा अलै0 ने मैदान ए तीह मे अल्लाह से खाना लिया है,

हुक्म के रास्ते से ही मूसा अलै0 ने पत्थर से पानी लिया है और सहाबा किराम के तो सीरत की किताबों मे बेशुमार किस्से हैं कि प्यास की हाजत पर बगैर सबब के जमीन को फाड़कर पानी लिया है,

जेल मे हाजत हुई नहाने की तो जेल मे बादल आकर पानी बरसा गया है,

कैद मे अगूंर खाने की चाहत पर बगैर सबब के अल्लाह से कोठरी मे अगूंर का खोशा लिया है,

भूख की हाजत पर बगैर सबब के तन्दूर से रोटी और चक्की से आटा लिया है,

मेरे भाईयों दोस्तों ! जब तक हमारे जहन मे कुदरत नही आयेगी तब तक हम सबब की गुलामी से नही निकल पायेगें और जब तक हुक्मों पर खुदा से मिलने का यकीन नही आयेगा तब तक हम हुक्मों से लेने वाले नही बन पायेगें। हुक्मो से लेने की पूरी लाईन कुरआन मे है, कुरआन के सारे हुक्म अल्लाह से लेने के लिये है और सबब से लेने की लाईन जमीन पर फैली हुई। कुदरत की सिफत अल्लाह की जात मे है और अल्लाह ने अपनी सिफत ए कुदरत को अपने वादों के साथ जोड़ रखा है और वादे हुक्मों पर कर रखे है, जब आदमी अल्लाह पर यकीन करते हुए हुक्म को पूरा करता है तो खुदा अपनी कुदरत को जाहिर करके वादा पूरा करता है, खुदा वादा खिलाफ नही है।

कयामत तक अल्लाह के सबसे ज्यादा वादे لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللهِ को समझाने के साथ है अम्बिया और सहाबा की सीरत मे यही मिलता है कि कलिमे को समझाने पर ही सबसे ज्यादा वादे पूरे हुए है,

नूह अलै0 ने कौम को साढ़े नौ सौ साल समझाया और साढ़े नौ सौ साल मे अस्सी या बयासी आदमी इस्लाम मे आये, कलिमा لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ को समझाने वाला जब तक सब्र करता है तब तक मुखालिफों और तक्लीफ देने वालों और नाफरमानों की पकड़ नही आती और जब لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ को समझाने वाला सब्र से हट जाता है तो खुदा की पकड़ आती है। नूह अलै0 साढ़े नौ सौ साल सब्र करते रहे बावजूद पत्थर बरसाने के, बावजूद मुखालिफत करने के, बावजूद खुदा की नाफरमानी करने के कोई अजाब नही आया पर साढ़े नौ सौ साल बाद

जब नूह अलै0 ने खुदा से कहा कि कौम لَا إِلَٰهَ إِلَّا ٱللَّهُ को मानने के लिये तैयार नही है तो खुदा ने कहा कि फिर इन्हे जमीन पर भी रहने की जरूरत नही, ऐ नूह जो लोग मुझे रब मानते है तुम उनके लिये एक कश्ती बनाओ फिर इनके अलावा सबको हम खत्म करते है और सारी जमीन मे पानी भर कर सबको खत्म कर दिया कि जब तक لَا إِلَٰهَ إِلَّا ٱللَّهُ को समझाने वाला सब्र करता रहेगा हम कुछ नही करेगें और जब उसका सब्र खत्म हो जायेगा तो फिर हम किसी को नही छोड़ेगें।

इसलिये सबसे पहले सबब से कुदरत को समझो क्यों कि कुदरत को समझे बगैर आदमी शिर्क से नही निकल पायेगा, हम सबब से कुदरत को इसलिये नही समझना चाह रह हैं क्यों कि

हर साल जमीन से गल्ला मिल रहा है तो क्यूॅ समझे कि गल्ला कुदरत से मिल रहा है,

औरत से बच्चा मिल रहा है तो क्यूॅ समझे कि बच्चा कुदरत से मिल रहा है,

जब दवा से इन्सान ठीक हो रहा है तो क्यूॅ समझे कि कुदरत से ठीक हो रहा है।

आज कुदरत छोड़कर हम दवा पर आ गये,

कुदरत छोड़कर हम औरत पर आ गये,

कुदरत छोड़कर हम जमीन पर आ गये,

कुदरत छोड़कर हम बागों पर आ गये कि कुदरत को छोड़ दिया और सबब से चिमट गये।

जरा सोचो कि जब यूसुफ अलै0 को कुएॅ मे डाला गया तो खुदा ने उनकी मदद सबब से की या कुदरत से की ?

जब इब्राहिम अलै0 को आग मे डाला गया तो खुदा ने उनकी मदद सबब से की या कुदरत से की ? वहॉ तो जिब्रील भी आया तो उसका भी इन्कार कर दिया।

जब इब्राहिम अलै0 ने बीबी बच्चे को जगंल मे डाला, उनके खाने पीने का इन्तेजाम खुदा ने सबब से किया या कुदरत से किया ?

इसी तरह जब इब्राहिम अलै0 ने इस्माईल अलै0 को जिब्ह करना चाहा तो इस्माईल अलै0 की जगह पर आसमान से दुंबे का इन्तेजाम खुदा ने सबब से किया या कुदरत से किया ?

जो खुदा आसमान फाड़कर दुंबा उतार सकता है, जमीन फाड़कर जमजम निकाल सकता है तो ऐसा कौन सा काम है जो खुदा नही कर सकता ? मगर ये कुदरत सबब वालों की समझ मे नही आयेगी बल्कि ये कुदरत नबी वाली मेहनत से समझ मे आयेगी, इसके अलावा कुदरत के समझने का कोई और रास्ता नही है। ये सारे किस्से कुरआन मे हैं और कुरआन नबियों की सीरत है इसमे ये बतलाया गया है कि खुदा ने इन्सान को सबब का मोहताज नही बनाया है कुदरत का मोहताज बनाया है अगर इन्सान अपने को कुदरत के मुकाबले मे सबब का मोहताज समझेगा तो कदम कदम पर नाकाम होगा। खुदा ने अपनी रूबूबियत को समझाने के लिये इब्राहिम अलै0 से कहा तुम हाजरा और इस्माईल को जगंल मे डालो ताकि हम कयामत तक आने वाले इन्सानों को समझायें कि रब हम हैं, रब कोई दूसरा नही है, इन्हे जगंल मे डालो कि तुम बाप हो रब नही हो, तुम खाविन्द हो रब नही हो, हम खाविन्द के बगैर औरत को पालेगें और बाप के बगैर बच्चे को पालेगें। हम दुनियॉ मे इसका सुबूत देगें कि बाप बाप है रब नही है और खाविन्द खाविन्द है रब नही है और इन्हे किसी असबाब से नही पालेगें बल्कि अपनी कुदरत से पालेगें,

जो खुदा हाजरा और इस्माईल को जगंल मे पाल रहा था, वो खुदा आज जमीन फाड़कर पानी नही निकाल सकता ?

जो खुदा बनी इसराईल को मैदान ए तीह मे आसमान से खिला चुका है वो खुदा आज हमे आसमान से नही खिला सकता ?
जो खुदा ईसा अलै0 के हवारीन को आसमान से खिला चुका है वो खुदा आज आसमान से नही खिला सकता ?
जो खुदा ईसा अलै0 को आज भी आसमान पर खिला रहा है वो खुदा आज हमे जमीन पर नही खिला सकता ?
जो खुदा मरियम अलै0 को आसमान से फल खिलाता था वो खुदा आज आसमान से हमे फल नही खिला सकता ?
जो खुदा यूसुफ अलै0 को ख्वाब मे मुल्क व माल दे सकता है वो खुदा आज हमे मुल्क व माल नही दे सकता ?
जिस खुदा ने बद्र म सहाबा की मदद के लिये आसमान से फरिश्ते उतारे वो खुदा आज हमारे लिये फरिश्ते नही उतार सकता ?
ऐसा कौन सा काम है जो खुदा आज नही कर सकता है, बस बात इतनी है कि हमने कुदरत से लेने की कोशिश नही की है, अरे ! खुदा तो हर वक्त देने के लिये तैयार है ऐसा नहो है कि नबियों के बाद उसने अपनी कुदरत से देने का रास्ता बन्द कर दिया हो, कुदरत से लेने का रास्ता कयामत तक खुला हुआ है बस बात ये है कि तुम नबियों वाली मेहनत करो हम नबियों वाली मदद करेगें और नबियों की मेहनत कलिमा لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ को इन्सानों को समझाना है, इसे समझाते हुए हुक्म के रास्ते से अपनी हाजतों कों खुदा से पूरा करना हैं, ऐसा करते हुए फिर,
जब चाहो आसमान से खाने उतरवा लो,
जब चाहो जमीन फाड़वा कर पानी निकलवा लो,
जब चाहो आसमान से फरिश्ते उतरवा लो,
बस नबियों वाली मेहनत मे ईमान का सीखते हुए खुदा के ध्यान वाली नमाज बना लो फिर खुदा वो सब करेगा जो पिछलों के साथ कर चुका है, खुदा आज नाऊजबिल्लाह ऐसा करना भूल नही गया है या अब वो ऐसा कर नही सकता, मेरे अजीजो ऐसा नही है, वो आज भी ऐसा कर दे बस उसके करने के जो जाब्ते हैं उसे हम पूरा कर दें फिर खुदा अपना वादा पूरा कर दे। खुदा आज भी मौजूद है वो हमेशा से है और हमेशा अपनी जात व सिफात के साथ रहेगा, ये हमारी गफलत है कि हम उसे मौजूद नही समझ रहे उसे गैब के बजाये गायब समझ रहे हैं।
ये नबियों के किस्से हमारी रहबरी के लिये है कि अगर तुम इब्राहिम अलै0 जैसा ईमान बनाओगे तो जो मदद हमारी इब्राहीम के साथ थी वैसी ही मदद हम हर ईमान वाले की करेगें अगर लेने वाले को लेना नही आये तो ये अलग बात है वरना देने वाले मे कोई कमी नही आयी है, वो आज भी अवामुन्नास को सबब के रास्ते से हर चीज दे रहा है, कोई दूसरा नही दे रहा है खुदा ही सबको दे रहा है पर कुदरत से लेने के लिये नबियों वाली मेहनत है और ये भी याद रखना कि सबब के रास्ते से चीजो का मिलना वक्ती और दुनियॉ मे है पर कुदरत के रास्ते से चीजो का मिलना अब्दी है कि दुनियॉ व आखिरत दोनो जगह मिलेगा और हमारी सोच व गुमान से ज्यादा मिलेगा। अब अगर हम अम्बिया और सहाबा वाले रास्ते से हटे रहे तो फिर खुदा की कुदरत का जहूर कैसे होगा ? इसलिये कि अल्लाह की कुदरत के जाहिर हुए बगैर ना मुसलमान सबब से निकलकर अल्लाह तक

पहुँचेगा और ना गरों के लिये इस्लाम मे दाखिल होने का दरवाजा खुलेगा, गैरों के लिये इस्लाम मे दाखिल होने का दरवाजा तब खुलता है जब खुदा की कुदरत जाहिर होती है।

आपने सुना होगा कि हुजूर सल्ल0 सहाबा के साथ मदीना से बाहर जा रहे थे तो रास्ते मे एक देहाती से अल्लाह के नबो ने बात की कि अगर तू खैर चाहता है तो मैं अल्लाह का नबी हूँ तू मुझे नबी तस्लीम कर ले और मैं अल्लाह की तरफ बुलाता हूँ तू अल्लाह को रब तस्लीम कर ले।

देहाती ने फौरन सवाल किया कि आपके पास अल्लाह का नबी होने की और अल्लाह के रब होने की क्या दलील है ?

उस देहाती के सवाल पर हुजूर सल्ल0 ने सहाबा को अपनी दलील के लिये नही बुलाया बल्कि एक दरख्त को अपने नबी होने की और अल्लाह के रब होने की गवाही देने के लिये बुलाया तो दरख्त जमीन फाड़ता हुआ आया और आकर उसने तीन मर्तबा आपके नबी होने की और अल्लाह के रब होने की गवाही दी।

दरख्त की गवाही सुनकर वो देहाती उसी वक्त لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ का इकरार करते हुए इस्लाम मे दाखिल हो गया। मेरे भाईयों ! इस्लाम तसबिहों से और नफिलों से नही फैलेगा बल्कि इस्लाम अल्लाह की कुदरत से फैलेगा, जब खुदा की कुदरत जाहिर होगी तब इस्लाम फैलेगा। अब सवाल ये कि क्या सहाबा नफिलें नही पढ़ते थे और क्या सहाबा तस्बीह नही पढ़ते थे ? पढ़ते थे तस्बीह भी पढ़ते थे और नफिलें भी पढ़ते थे पर ईमान को सीखते और सिखलाते हुए पढ़ते थे, क्यों कि जब मुसलमान لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ को समझाता है तो ईमान के समझाने पर अल्लाह अपनी कुदरत जाहिर करता है कुदरत जाहिर होने की वजह से समझाने वाले का यकीन सबब से निकलकर अल्लाह पर पहुँच जाता है और गैर मुस्लिमों के लिये इस्लाम मे दाखिल होने का दरवाजा खुल जाता है, इस तरह वो देहाती भी इस्लाम मे दाखिल हो गया।

उधर फिरऔन को ले लो कि मूसा अलै0 के लिये उसने जादूगरों को जमा कराया, उनसे रस्सी के सॉप बनवाये पर मूसा अलै0 की लाठी ने सॉप बनकर उन जादू के सॉपों को निगल लिया, इस कुदरत को देखकर सारे जादूगर इस्लाम मे दाखिल हो गये, ये कब हुआ ? जब सबब को कुदरत ने निगल लिया। लोगो को हिदायत कुदरत के जाहिर होने पर मिलती है, आज तो हम ही अटके पड़े है खुद हमको हिदायत नही मिली तो गैरो को कैसे मिले कि

कोई कह रहा है दुकान से होता है,
कोई कह रहा है माल से होता है,
कोई कह रहा है चीजों से होता है,
कोई कह रहा है हुकूमत से होता है,

आज हम ही सबब मे अटके पड़े है तो गैरो को सबब से निकाल कर हम उन्हे खुदा तक कैसे पहुँचा सकते हैं। जो आदमी खुद सबब से कुदरत तक नही पहुँच सकता वो दूसरे को सबब से कैसे निकालेगा ? जो आदमी खुद खुदा को और उसकी कुदरत को नही जानता वो दूसरों को खुदा तक कैसे पहुँचायेगा ? इसलिये जब आदमी कलिमे की दावत का काम लेकर चलता है तो निजाम ए कुदरत उसकी हिमायत मे आता है फिर जब उसके साथ कुदरत जाहिर होती है तो उसका यकीन सबब से निकलकर अल्लाह पर आ जाता है आर अब ये दूसरों के लिये हिदायत का जरिया बन जाता है।

इसलिये मेरे भाईयों दोस्तों ! करने वाली जात सिर्फ अल्लाह की है नबियों की सीरत पर गौर करो कि
जब यूसुफ अलै0 को जुलैखा ने कमरे मे बन्द किया तो उनकी मदद सबब से हुई या कुदरत से हुई ? या

जब ईसा अलै0 को शहीद करने के लिये कमरे मे बन्द किया गया और उन्हे जिन्दा आसमान के ऊपर उठा लिया गया तो उनकी मदद सबब से हुई या कुदरत से हुई ?

मेरे भाईयों ! जब तक हमारा यकीन सबब से निकलकर कुदरत पर नही आयेगा हम सबब मे अटके रहेगें अगर हम ये चाहें कि सबब भी हो आर कुदरत भी हो तो ये कैसे होगा। ये बैतुल्लाह यादगार ए इब्राहीमी है, जहॉ हाजरा और इस्माईल को जमीन फाड़कर जमजम दिया और इब्राहीम अलै0 को आसमान फाड़कर दुंबा उतार कर दिया है, ये सबब से नही किया कुदरत से किया है और इसीलिये हज को फर्ज किया ताकि हाजी मक्का आकर अपने यकीन को सबब से निकालकर अल्लाह तक पहुँचाये और खुदा की कुदरत से फायदा उठाये।

हजरत हाजरा, हजरत इस्माईल और हजरत इब्राहीम अलै0 इन तीनों की याद मे बैतुल्लाह बना है इसलिये यादगार ए इब्राहीमी है, ये बैतुल्लाह से लेकर मिना तक इन तीनों की याद के लिये है कि जमीन फाड़कर जमजम निकाला और जिब्ह करने के लिये आसमान फाड़कर दुंबा उतारा, ये ऐसी मुकददस जमीन हो गयी कि हम अपना घर भी यहीं बनायेगें और सारी दुनियॉ को यहॉ बुलायेगें, बुलाने मे इस्तेमाल इब्राहीम को करेगें और वो बोल मॉ के पेट मे बन रह बच्चे से लेकर आलम ए अर्वाह तक हम पहुँचायेगें, खुदा ने इस आवाज को हर आलम मे अपनी कुदरत से पहुँचाया फिर जिसने इस आवाज पर लब्बैक कहा वो ही हज पर जायेगा तो खुदा ने ये आवाज इन्सानों तक सबब से पहुँचाया या कुदरत से पहुँचाया ? हर तरफ कुदरत ही कुदरत है। अब खुदा ने इब्राहीम अलै0 से कहा कि तूने मेरी हर बात मानी अब तू मॉग क्या मॉगता है अब तेरी हम मानेगें तो इब्राहीम अलै0 ने कहा ऐ मेरे रब मुझे सोचने का मौका दीजिये कि आपसे क्या मॉगू ? खुदा ने कहा ठीक है सोच ले, इब्राहीम अलै0 ने सोचकर कहा कि मैं आपसे दो चीजे मॉगता हूँ पहली चीज इस बैतुल्लाह की आबादी के लिये उम्मत मॉगता हूँ और दूसरी चीज उम्मत की तर्बीयत के लिये नबी मॉगता हूँ।

वो नही मॉगा जो हमारे जहन मे है कि मेरी औलादों को उम्दा तिजारत, उम्दा खेती, उम्दा हुकूमत, उम्दा कारखाने या उम्दा नोकरी दे दीजिये, मेरे अजीजों ! ये उम्मत खेती करने के लिये नही मॉगी गयी है, दुकानें करने के लिये नही मॉगी गयी है, कारखाने लगाने के लिये नही मॉगी गयी है, नौकरियॉ करने के लिये नही मॉगी गयी है, मुल्क चलाने के लिये नही मॉगी गयी है बल्कि ये उम्मत बैतल्लाह की आबादी के लिये मॉगी गयी है, बैतुल्लाह की आबादी की मेहनत का मतलब मस्जिद की आबादी की मेहनत, जब तक ये उम्मत बैतुल्लाह की आबादी के लिये मेहनत करती रहेगी ये आबाद रहेगी और जब उम्मत मस्जिद की आबादी की मेहनत छोड़ेगी तो किस्म किस्म की मुसीबातें से परेशान हो जायेगी फिर जलजले आयेगें, तूफान आयेगें, जंगे होगी, नई नई बीमारियॉ आयेगी, कब ? जब चीज मकसद से हट जाया करती है तो कोई ना कोई मुसीबत आ जाया करती है और यही हुआ कि ये उम्मत मस्जिद की आबादी की मेहनत से हटकर मुल्क व माल की मेहनत पर लग गयी औ मुसीबतों व परेशानियों मे मुब्तिला हो गयी। उम्मत का फिर से मस्जिद की आबादी की मेहनत पर आना ही खुदा की कुदरत से फायदा उठाना है पर इस मेहनत मे सबसे बुनियादी जुम्ले दो है एक لَا إِلٰهَ और दूसरा إِلَّا اللّٰهُ ये मेहनत की बुनियाद है, जिसकी ये बुनियाद सही हो गयी वो सबब मे हुजूर सल्ल0 वाले अमल पर चलकर कुदरत को अपने साथ करके खुदा तक पहुँच जायेगा। यहॉ ये याद रखना कि जब مُحَمَّدًا رَسُولُ اللّٰهِ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ को दावत मे समझाया जा रहा होगा तो मुखालिफत शुरू होगी, लोग कहेगें कि

करने वाला तो अल्लाह है मगर दुकान भी होनी चाहिये,

करने वाला तो अल्लाह है मगर दवा और डाक्टर भी होना चाहिये,

करने वाला तो अल्लाह है मगर बारिश के लिये बादल भी होना चाहिये,
जब तक मुखालिफत नही होगी तब तक हक गालिब नही आयेगा कि
सूरज ना निकलेगा तो रौशनी कसे जाहिर होगी ?
रात नही होगी तो अन्धेरा कैसे जाहिर होगा ?
बातिल नही आयेगा तो हक कैसे जाहिर होगा ?
कुरआन उठाकर देखो कि किस नबी की لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللَّهُ के समझाने पर मुखालिफत नही हुई है और कौन से नबी की कुदरत से
मदद नही हुई है, आदम अलै0 से लेकर हुजूर सल्ल0 तक किसी नबी की सबब से मदद नही हुई है बल्कि कुदरत से मदद
हुई है और कयामत तक

لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ

के समझाने वालों की खुदा की कुदरत से मदद होगी क्यो कि कलिमे को समझाना खुदा का बतलाया हुआ काम है और नबियों ने जब खुदा के बतलाये हुए इस काम को किया तो खुदा ने नबियों की मदद कुदरत से की, जब ये उम्मत इस काम को करेगी जिस काम के लिये इब्राहिम अलै0 ने इसे माँगा तो खुदा भी उम्मत की मदद कुदरत से करेगें। लेकिन कुदरत से मदद लेने के भी सबब है और सबब के भी सबब हैं, कुदरत से मदद लेने का सबब इस कलिमे की दावत है। इसके लिये नबियों के हालात देखो कि उनको तकलीफ मे डाल डालकर कुदरत दिखलायी है अगर यूनूस अलै0 को मछली के पेट मे नही डालते तो मछली और दरिया कैसे समझ मे आता ? कि मछली पानी के अन्दर और यूनूस अलै0 मछली के अन्दर, वहॉ खाना मिल रहा है, हिफाजत हो रही है, उन्हे वहॉ कोई खतरा नही कि हम जमीन के ऊपर भी पालना जानते हैं और मछली के अन्दर भी पालना जानते हैं, हम रब हैं हम जो चाहें जहॉ करें। इसलिये सबसे पहले कुदरत को समझो कि जब हमे कुदरत ही समझ मे नही आयेगी तो नबियों वाली मेहनत कैसे करेगें ? इसलिये कि कलिमे को समझाना कुदरत की बुनियाद पर है, इसके लिये ना मुल्क की जरूरत है, ना माल की जरूरत है और ना ही किसी सामान की जरूरत है जैसे
दुकान के लिये दुकानदार चाहिये,
जमीन के लिये काश्तकार चाहिये,
मुल्क के लिये वजीर और सदर चाहिये कि हर सबब के लिये सबब चाहिये पर अल्लाह के काम के लिये सबब की नही बल्कि अल्लाह की जरूरत है और अल्लाह अपना काम करन वालों के काम कुदरत से करते है, इसलिये हमे अपने साथ कुदरत चाहिये हम किसी सबब के मोहताज नही।
इब्राहीम अलै0 को जब आग मे डाला गया तो जिब्रील अलै0 से बड़ा दुनियॉ मे कौन सा सबब हो सकता है ? जिब्रील अलै0 अल्लाह से इजाजत लेकर आये, पानी का भी फरिश्ता साथ लेकर आये और हवा का भी फरिश्ता साथ लेकर आये पर अल्लाह ने जिब्रील अलै0 से कह रखा था कि इब्राहीम अगर तुम्हारी मदद ले तो मदद करना वरना उनकी मदद ना करना।
इब्राहीम अलै0 ने जिब्रील अलै0 से कहा कि मैं जानता हूँ वो रब है और वो जानता है कि मैं बन्दा हूँ तो फिर मुझे तुम्हारी मदद की क्या जरूरत है ? जिब्रील तुम्हारी मदद लेने से मेरा आग मे जलना अच्छा है क्यों कि तुम मख्लूक हो और मैं रब की मदद चाहता हूँ उसके गैर की मदद नही चाहता। इब्राहीम अलै0 ने जब जिब्रील

अलै0 की मदद का इन्कार कर दिया तो खुदा ने आग को अपने हुक्म से खत्म किया है, खुदा ने किसी को भी इस्तेमाल नही किया बस अपनी कुदरत का इस्तेमाल किया है। अल्लाह नबियों के लिये कुदरत का इस्तेमाल करते रहे हैं और कयामत तक अपना काम करने वालों के लिये कुदरत का इस्तेमाल करते रहेगें, सहाबा के साथ देखो कैसे कैसे कुदरत का इस्तेमाल किया है, हयातुस्सहाबा मे देखो कि

जेल मे पानी की हाजत पर कोठरी मे बादल आकर बरसा,

कैद मे खाने की जरूरत पर कोठरी मे अंगूर आये,

भूख की हाजत मे चक्की से आटा निकला,

फाका आने पर चूहा दीनार लेकर आया,

रौशनी की जरूरत पर झड़ी से रौशनी निकली,

खर्च करने के लिये चादर के नीचे दीनार निकले,

बन्दा जब सबब से ना उम्मीद हो जाता है तो फिर खुदा उसके लिये कुदरत का इस्तेमाल करते है कि जेल मे पानी बाल्टी मे नही भेजा बल्कि बरसने के लिये बादल को भेजा, नबियों के काम पर सारी मदद कुदरत से है। इबादत तो आदमी की जिन्दगी की लाईन है ये तो जिस्म से तआल्लुक रखती है, जिस्म को खुदा ने हुक्मों को पूरा करने के लिये दिया है, इस जिस्म को खुदा ने ना खेत के लिये दिया है, ना दुकान के लिये दिया है, ना मुलाजिमत के लिये दिया है, ना हुकूमत के लिये दिया है कि जिस्म भी हमारा है और हुक्म भी हमारा है कि तुम हमारा हुक्म पूरा कर दोगे हम तुम्हारी हाजत पूरी कर देगें, हम तुम्हे सबब के हवाले ही नही करेगें कि हर सबब हमारा मोहताज है हम तुझे सबब का मोहताज नही बनायेगें कि इबादत हमारी करे और मोहताजी सबब की करे, नही, हम तुझे सबब का मोहताज नही बनायेगें अपनी कुदरत तेरे साथ करेगें।

असहाब ए कहफ के साथ हमने कुदरत से मदद की है कि ना ये नबियों की जमात थी, ना ये सहाबा की जमात थी, ना ये औलिया की जमात थी और ना ये ईमान को समझाने के लिये निकले थे बल्कि ये जमात अपने ईमान को बचाने के लिये निकली थी तो जब ईमान को बचाने वालों के साथ खुदा ने ऐसी मदद थी तो दूसरों को ईमान समझाने वालों के साथ कैसी मदद होगी ? असहाब ए कहफ के लिये सूरज चक्कर काट कर जाता है कि हमारी वजह से इनकी नींद मे तकलीफ ना पहुचे तो खुदा ने सूरज को भी चक्कर काटकर जाने का हुक्म दिया तो जब ईमान को बचाने वालों का ऐसा इक्राम होगा फिर दूसरों को ईमान समझाने वालों के साथ कैसा मामला होगा ?

सहाबा की एक जमात ईमान को समझाने निकली, रास्ते मे जमात को पानी की जरूरत पड़ी तो खुदा ने जमीन को फाड़कर जमात को पानी दिया ह।

हजरत हन्जला गुस्ल की हाजत के साथ शहीद हुए तो खुदा ने उन्हे फरिश्तों से आसमान पर उठवाकर गुस्ल दिलवाया फिर जमीन पर वापस भिजवाया तो गुस्ल का पानी उनके बालों से टपक रहा था।

मेरे भाईयों, दोस्तों और बुजुर्गो ! कौन सी मदद सहाबा की नही हुई है ? आज खुदा इस मेहनत को हमसे करवाकर अपनी कुदरत हमारे साथ जाहिर करना चाहते हैं ताकि लोग खुदा को जाने की करने वाली जात अल्लाह की है और वो सबब का मोहताज नही है। सबब तो हमारे इम्तेहान के लिये बनाया है ताकि सबब से जाहिर होन वाली कुदरत को समझकर हम अल्लाह तक पहुचें, खुदा हमारी मेहनत का भी मोहताज नही है कि जब वो नबियों को बगैर नबी के अपनी कुदरत से नबी बना सकता है तो उसका काम करके वो हमारे काम कुदरत से नही बना सकता है ? खुदा ने अपना काम करने वालों के काम हमेशा अपनी कुदरत से बनाये है।

अब बताओ ! ये नबियों और सहाबा के किस्से सुनने के लिये हैं या करने के लिये हैं ? ये नही कि एक चिल्ला दे दो तो नेकी मिल जायेगी या चार महीने दे दो तो चार महीने वालों मे नाम लिख जायेगा और मुल्को मे जाने का नम्बर आ जायेगा, ये नम्बर वाला काम नही है। ये काम तो अन्दर का यकीन और अमल के दुरूस्त करने की मेहनत है, इस पर अल्लाह की तरफ से मदद जरूरी है, एक नही हजारों मर्तबा सहाबा की मददें जाहिर हुई हैं और आम तौर से लोग कुदरत के जाहिर होने पर इस्लाम मे आयें है।

हजरत खुबैब को मक्का के एक मकान मे कैद करके रखा गया और उनका खाना पीना सब बन्द कर दिया कि अब कहाँ से खायेगा ? पर दरवाजे से झाँक झाँक देखते रहे, तीसरे या चौथे दिन देखा कि हजरत खुबैब के हाथों मे आदमी के सर के जितना अंगूर का गुच्छा है और खुबैब उसमे से अंगूर तोड़ तोड़कर खा रहे हैं, ये देखने वाले जब मुसलमान हो गये तो खुद ही बताते थे कि अरब मे उस वक्त अंगूरों का मौसम भी नही था पर खुबैब बन्द मकान मे अंगूर खा रहे थें तो उस दिन हम लोगों की समझ मे बात आ गयी कि खुबैब के साथ सबब का नही बल्कि कुदरत का निजाम है, क्योंकि सबब होता तो अंगूर को बाजार से लाया जाता या सबब होता तो कोई आदमी इन्हे अंगूर दे जाता पर ऐसा नही था बल्कि कुदरत साथ थी, इसी अंगूर के खोशे को देखकर ये सब मुसलमान हो गये। सारे नबियों ने जो कुछ किया है वो सारा का सारा किया अल्लाह ने है पर नाम नबियों का हुआ, किसी नबी मे बगैर खुदा के कुछ करने की कोई ताकत नही कि हुजूर सल्ल0 ने अपने चचा के लिये हिदायत चाही पर अल्लाह ने उन्हे हिदायत नही दी और दूसरे चचा हजरत हमजा के कातिल वहशी को कत्ल कराना चाहा पर अल्लाह ने वहशी को हिदायत दे दी। इसलिये जब तक हम अल्लाह को रब नही समझेगें तो निजाम ए कुदरत से फायदा कैसे उठायेगें ?

आज दुकानों से और खेतों से गंगा राम और सीता राम भी फायदा उठा रहे है और उन्ही दुकानों और खेतों से हम भी फायदा उठा रहे है तो इसमे हमारी फजीलत कैसे हो गयी ? मुल्कों को वो भी चला रहे हैं और हम भो चला रहे हैं तो हमारी इसमे कौन सी फजीलत हो गयी ?

सोचो तो फजीलत कैसे हासिल होती है ? ये मुल्कों का मिल जाना, गाड़ियों का मिल जाना, ओहदों का मिल जाना, कोठियों का मिल जाना, ये कोई फजीलत की चीज नही है बल्कि फजीलत की चीज ईमान और आमाल ए सालिहा है। अबु बक्र सिददीक रजि0 को किस चीज की वजह से फजीलत हासिल हुई है ? वो ईमान और आमाल ए सालिहा की मेहनत से सिददीक बने हैं हमारी तुम्हारी तरह जबान की आवाज से सिददीक नही बने है, मेहनत से सिददीक बने हैं कि नबी के बाद दूसरा नम्बर सिददीक का है, तीसरा नम्बर हजरत उमर रजि0 का शोहदा की वजह से है और चौथा नम्बर सहाबा का सालिहीन की वजह से है, इसी मे सारे औलिया भी शामिल है, आज ना हमारे जहन मे नबीईन हैं, ना सिददीकीन हैं, ना शोहदा हैं और ना सालिहीन हैं तो फजीलत कैसी, फजीलत तो इनमे है। आज तो उल्टी गंगा बह रही है कि आज मुसलमान भी कह रहा है मैं दुकानदार हूँ, मैं किसान हूँ, मैं मास्टर हूँ, मैं डाक्टर हूँ, मैं मुलाजिम हूँ, मैं वजीर हूँ, हालाँकि सहाबा मे सिर्फ दो अल्फाज मिलते हैं कि मैं अन्सार हूँ या मुहाजिर हूँ, तीसरा कुछ है ही नही। हम भी इन्ही दो मे रहे अन्सार या मुहाजिर कि अल्लाह के बन्दे हैं तो हर जगह बन्दगी वाली जिन्दगी गुजारेगें और मुहम्मद सल्ल0 के उम्मती हैं इसलिये मुहम्मद सल्ल0 के 24 घन्टों के अमलों पर चलते हुए खुदा की कुदरत को साथ लेकर जिन्दगी गुजारेगें। ये 3 दिन, चिल्ला, चार महीने मे जाने का काम नही है बल्कि जमातों मे निकलकर इस काम को समझना कि इस काम से क्या चाहा जा रहा है ? कि لَا إِلَٰهَ और إِلَّا اللّٰهُ को समझाते हुए सबब मे हुक्म के रास्ते से अपनी हाजतों कों खुदा की कुदरत से पूरा करना, इस काम से ये चाहा जा रहा हैं, जब ये रास्ता चालू होगा ता

जिस तरह आज लोगो को जमातों मे भेजने के लिये घरों से निकालना मुश्किल हो रहा है, इस रास्ते के समझ मे आ जाने के बाद लोगो को जमातों से घरों मे वापस भेजना मुश्किल हो जायेगा। आज ये काम समझ मे नही आया इसलिये कोई कहता है कि मैं 3 दिन दे देता हू, कोई कहता है मैं 40 दिन दे देता हूँ, कोई कहता है मैं 4 महीने दे देता हूँ और कोई कोई हर साल चार महीने दे देता है क्यों कि ये काम अभी समझ मे नही आया,
ताजिर को तिजारत समझ मे आयी है तो सारी जिन्दगी तिजारत मे लगा रहा है,
किसान को खेती समझ मे आयी है तो सारी जिन्दगी खेती मे लगा रहा है,
मुलाजिम को मुलाजिमत समझ मे आयी है तो सारी जिन्दगी मुलाजिमत मे लगा रहा है,
मजदूर को मजदूरी समझ मे आयी है तो सारी जिन्दगी मजदूरी मे लगा रहा है,
दुकानदार को दुकान समझ मे आयी है तो सारी जिन्दगी दुकान मे लगा रहा है,
खुदा करे खुदा करे कि ईमान और आमाल ए सालिहा समझ मे आ जाये तो सारी जिन्दगी ईमान और आमाल ए सालिहा मे लगा देता क्यों कि करने वाला तो अल्लाह है। ये याद रखना कि हाजत हाजत वालों के हाथ मे नही है बल्कि हाजत हाजत भेजने वाले के हाथ मे है, खुदा हमारे ऊपर हाजत भेजते है और हाजत को पूरा भी खुद करते हैं कि जब हाजत हम भेजेगें तो पूरी कौन करेगा ? कि हम ही हाजत को पूरा करेगें, हमारे अलावा कोई हमारी भेजी हुई हाजत को पूरा नही कर सकता।
हमने ऑख बनायी है हमारे अलावा ऑखो मे रौशनी कोई नही दे सकता,
हमने कान बनाया है हमारे अलावा कानो मे आवाज कोई नही पहुँचा सकता,
हमने जबान बनाया है हमारे अलावा जबान मे वोल कोई नही दे सकता,
हमने दिमाग बनाया है हमारे अलावा दिमाग मे सोचने की कूवत कोई नही दे सकता,
हमने हाथ बनाया है हमारे अलावा हाथ मे पकड़ने की ताकत कोई नही दे सकता,
हमने पैर बनाया है हमारे अलावा पैर मे चलने की ताकत कोई नही दे सकता,
खुदा के बगैर जब कोई रौशनी नही दे सकता, कोई आवाज नही दे सकता, कोई वोल नही दे सकता, कोई सोचने की कूवत नही दे सकात, हाथ पैर मे ताकत नही दे सकता तो जो हमने पेट बनाया है हमारे अलावा उसको रोटी कौन दे सकता है ? कि ऑख मे रौशनी तो अल्लाह दे और रोटी जमीन दे ? कि मैं ऑख से रौशनी वापस ले लूँ तो रौशनी कोई नही दे सकता, मैं कान से आवाज वापस ले लूँ तो आवाज कोई नही द सकता, मैं जबान से बोल वापस ले लूँ तो कोई बोल नही दे सकता, मैं दिमाग से सोचने की सलाहियत वापस ले लूँ तो कोई अक्ल नही दे सकता, मैं हाथ पैर मे ताकत वापस ले लूँ तो कोई ताकत नही दे सकता कि मेरी दी हुई कोई ले नही सकता और मेरी ली हुई को काई दे नही सकता। सारा निजाम मेरे हाथ मे है तो जो खुदा इतनी इतनी कीमती चीजें दे रहा है क्या उसके अलाव कोई और है जो हमे रोटी दे रहा है पर हम इस छोटे से मसले मे अटक गये कि हम रोटी कहॉ से खायेगें और कपड़ा कहॉ से पहनेगें ? आज हम इसमे अटक गये, अरे !
फरिश्तों के रब हम हैं फरिश्तों की हाजत हम पूरी करते है,
जानवरों के रब हम हैं जानवरों की हाजत हम पूरी करते है,
परिन्दों के रब हम हैं परिन्दों की हाजत हम पूरी करते है,
जिन्नातों के रब हम हैं जिन्नातों की हाजत हम पूरी करते है,
आदम के रब हम हैं इन्सानों की हाजत हम पूरी करते है,

ऐ इन्सानों तुम तो ख्वामखाह परेशान हो रहे हो, रब तो हम हैं हाजत तो हम पूरी करते है, जब तुम्हारी मॉ के पेट मे तुम्हारी हाजत हम पूरी कर सकते है तो जमीन पर आकर तुम्हारी हाजत कौन पूरी करेगा ? और जमीन के बाद कब्र मे तुम्हारो हाजत कौन पूरी करेगा ? मैदान ए हश्र मे तुम्हारी हाजत कौन पूरी करेगा ? जन्नत मे तुम्हारी हाजत कौन पूरी करेगा ? मेरे बगैर तुम्हे जन्नत मे कौन दाखिल करेगा ? मेरे बगैर तुम्हे जहन्नम से कौन बचायेगा ? मेरे बगैर तुम्हे पुल सिरात से कौन गुजारेगा ? ऐ मेरे बन्दे ! जब तेरी आखिरत की सारी हाजत पूरा करना मेरा काम है तो मॉ के पेट से लेकर कब्र तक तेरी सारी हाजत मैं ही पूरी करता हूँ कोई दूसरा तेरी हाजत नही पूरी करता, हॉ तेरे इम्तेहान के लिये हाजत मैं पूरी करता हूँ
और दिखलाता हूँ सबब से पर ये बात ईमान से तआल्लुक रखती मालूमात से नही, अब खुद बतलाओ,
समन्दर मे किस मख्लूक की हाजत पूरी नही हो रही है ?
जंगल मे किस मख्लूक की हाजत पूरी नही हो रही है ?
रेगिस्तान मे किस मख्लूक की हाजत पूरी नही हो रही है ?
गॉव या शहर मे इन्सान के अलावा किस मख्लूक की हाजत पूरी नही हो रही है ?
एक अकेला इन्सान ही बचा है जिसकी हाजत दुकान के बगैर, खेत के बगैर, मजदूरी के बगैर, नौकरी के बगैर खुदा पूरी नही कर सकता ? हमें खुदा अपनी रूबूबियत समझा रहा है कि समन्दर का भी रब मैं हूँ, जंगल का भी रब मैं हूँ, आसमानों के ऊपर का भी रब मैं हूँ, जमीन के कीड़ो का भी रब मैं हूँ, इन्सानों का भी रब मैं हूँ, मेरे सिवा कोई रब नही है और मेरी रूबूबियत मे कोई शरीक नही, अकेला मैं रब हूँ। बस बात इतनी है कि अल्लाह ने जो करने का जाब्ता बनाया है वो मुहम्मद सल्ल0 के आमाल है जिन्हे रोजाना असर और फज्र मे किरामन और कातबीन आसमानों के ऊपर ले जाते हैं चूँकि मुकददर मैने लिख दिया इसलिये मेरे बन्दे मेरी मानेगें तब भी देगें और नही मानेगें तब भी देगें, हॉ कुदरत वाली नही मुकददर वाली मिलेगी क्यों कि हमने अपने को रब होने का ऐलान किया है الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ अब अगर हम नही देगें तो मेरी मख्लूक को और कौन देगा ? इसीलिये अल्लाह के रास्ते मे निकाला जा रहा है कि हमारे जहन से सबब निकले और कुदरत उतरे, कुदरत को जहन मे उतारने के लिये गश्त करके सबब वालों को मस्जिद मे लाओ और इन्हे यहॉ कुदरत समझाओ,
दुकानदार सबब के अन्दर है इसे दुकान से निकाल कर मस्जिद मे लाओ और इसे यहॉ अल्लाह की कुदरत समझाओ,
किसान सबब के अन्दर है इसे खेत से निकाल कर मस्जिद मे लाओ और इसे यहॉ अल्लाह की कुदरत समझाओ,
एक एक सबब वालों को गश्त करके उनके सबब से निकालकर मस्जिद मे लाओ और इन्हे यहॉ अल्लाह की कुदरत समझाओ,
ये मस्जिद क्यों बनी हैं ? ये मस्जिद अल्लाह की कुदरत से फायदा उठाने के लिये बनी है, अल्लाह से लेने के लिये बनी है, सहाबा के कौन से काम मस्जिद से हल नही हुए ? जुमा के दिन एक आदमी मस्जिद नबवी के बाहर आया और कहने लगा कि बारिश नही हुई जिसकी वजह से खेती बर्बाद हो रही है और बाग सूख रहे हैं, जानवर हलाक हो रहे है, पानी की किल्लत है, मस्जिद वालों ने दुआ कर दी, अगले जुमा को फिर वही आदमी मस्जिद मे आकर कहने लगा कि बारिश बहुत ज्यादा हो रही है। मस्जिद वालों ने दुआ की तो बारिश रूक गयी, हमारे सामने बस इतनी सी बात है कि मुसलमानों की इबादत के लिये मस्जिद बनी है हालॉकि मस्जिद

मुसलमानों की हर हाजत के पूरा करने के लिये बनी है, जिस तरह अवामुन्नास की हर हाजत को पूरा करने क लिये बाजार बनी है उसी तरह मुसलमानों की हर हाजत के पूरा करने के लिये मस्जिद बनी है, बाजार के मुकाबले पर मस्जिद कि

एक सहाबी मस्जिद मे आये तो हुजूर सल्ल0 ने उनसे पूछा तुम्हारी कौन सी हाजत इस वक्त मस्जिद ले आयी ? अर्ज किया कि मुझ पर इतना ज्यादा कर्ज हो गया है जिसके अदा करने मे मैं आजिज हूँ, इसी के लिये मैं मस्जिद आया। हुजूर सल्ल0 ने फरमाया ! इसमे घबराने की क्या बात है हम तुम्हे ऐसी दुआ बतलायेगें कि यमन के पहाड़ों के बराबर भी अगर तुम पर कर्ज होगा तो अल्लाह अदा करा देगें। अरे वो कर्जा बैंको ने अदा किया या बाजार वालों ने अदा किया ? हुजूर सल्ल0 ने मस्जिद से बाहर आकर खजूर की एक ढेरी लगाये हुए सहाबी से कहा कि अपनी ढेरी मे से इनका कर्ज अदा करो। वो ढेरी से देते रहे और कर्ज अदा होता रहा, सारे कर्जदार अपना अपना कर्जा लेकर चले गये और ढेरी वैसी की वैसी बाकी रही खत्म ना हुई, क्यों ? बरकत की वजह से। बरकत आसमानों से आती है, जमीन या पहाड़ो से बरकत नही आती, बरकत के मायने आसमानों के ऊपर मौजूद अल्लाह के गैबी खजानों से चीजों का तआल्लुक कायम हो जाना कि फरिश्ते बजाये पेड़ों पर फल लाने के, बर्तन मे, रस्सी पर या कपड़े पर लाकर डाल दे जैसे,

हज़रत अबु हुरैरा रज़ि0 फरमाते हैं कि एक मर्तबा हम हुजूर सल्ल0 के साथ अल्लाह के रास्ते में गये वहाँ मुझसे हुजूर सल्ल0 ने पूछा ! ऐ अबु हुरैरा तुम्हारे पास खाने को कुछ हैं ? मैने कहा, जी हाँ, कुछ खजूरे थैली में हैं। आप सल्ल0 ने कहा, उन्हें ले आओ। मैने वो खजूरे ले जाकर आपको दे दी फिर आपने फरमाया ! दस आदमियों को बुला लाओ, मैं दस आदमियों को बुला लाया। उन सब ने पेट भर कर खजूरें खायी।

इसी तरह दस-दस आदमी आते रहें और खाते रहे यहाँ तक कि सारी जमाअत ने वो खजूरें खायी फिर भी थैली में खजूरें बची रहीं फिर आप सल्ल0 ने मुझ से फरमाया ऐ अबुहुरैरा ! जब तुम खजूरें खाना चाहो तो थैली में हाथ डाल कर निकाल लिया करना पर इस थैली को कभी उलटना नहीं।

अबुहुरैरा रज़ि0 फरमाते हैं कि मैं रसूलुल्लाह सल्ल0 की सारी ज़िन्दगी उस थैली से खजूरें निकाल कर खाता रहा फिर अबुबक्र सिद्दीक़ रज़ि0 की सारी ज़िन्दगी उसमें से निकाल कर खाता रहा फिर हजरत उमर रजि0 की सारी जिन्दगी खाता रहा, आखिर मे हजरत उस्मान रजि0 की सारी जिन्दगी में उसी थैली से खजूरे खाता रहा। जिस दिन हजरत उस्मान रजि0 को शहीद किया गया उस दिन की भगदड़ में मेरी थैली कहीं गुम हो गयी। अपने शार्गिदों से फरमाया ! तुम लोगों को बताऊँ मैने (लगभग 20 साल मे) उसमें से कितनी खजूरें खायी हैं ? लोगों ने कहा बतलाइये, अबु हुरैरा रजि0 ने फरमाया ! दो सौ वसक़ यानी 1050 मन (लगभग 425 कुन्तल) कि फरिश्ते पेड़ों के बजाये थैली मे खजूर लाकर डालते रहे, अबु हुरैरा पेड़ों से या बाजार से खजूरें लाकर थैली मे नही डालते थे बल्कि फरिश्ते डालते थे।

इसी तरह हजरत इरबाज़ रजि0 फरमाते हैं कि जब हम लोगों की जमाअत तबूक में थी तो एक रात हम हुजूर सल्ल0 के पास देर से पहुंचे, आप और आपके साथ वाले सहाबा रात का खाना खा चुके थे। इतने मे हजरत जुआल बिन सुराका और अब्दुल्लाह बिन माकिल रजि0 भी कहीं से आये, आप सल्ल0 ने हम तीनों के खाने के लिए हजरत बिलाल रजि0 से पूछा ! कुछ खाने को है ? हजरत बिलाल रजि0 ने एक थैले को झाड़ा जिसमें से सात खजूरें निकल आयी। हुजूर सल्ल0 ने उन सातों खजूरों को एक प्याले में रखा और प्याले पर अल्लाह का नाम लेते हुए हाथ फेरा फिर हम लोगों से कहा ! अल्लाह का नाम लेकर खाओ। हम लोगों ने खजूरें खाना शुरू

की, मैं गिनता जा रहा था और गुठलियों को दूसरे हाथ में पकड़ता जा रहा था, मैने 54 खजूरें खायी, मेरे दोनो साथी भी मेरी ही तरह कर रहे थे कि वो भी खजूरे गिन रहे थे, उन दोनो ने भी 50-50 खजूरें खायी थी। जब हम खा चुके तो उस प्याले मे सात खजूरे वैसी की वैसी ही बाकी थी फिर हुजूर सल्ल0 ने बिलाल रजि0 से फरमाया ! इन खजूरों को अपने थैले मे रख लो। दूसरे दिन हुजूर सल्ल0 ने फिर वो खजूरें प्याले में डाली और फरमाया ! अल्लाह का नाम लेकर खाओ, हम दस आदमी पेट भर कर खजूरें खा गये पर प्याले में उसी तरह सात खजूरें बची थी फिर हुजूर सल्ल0 ने फरमाया ! अगर मुझे अपने रब से हया न आती तो मदीना पहुँचने तक ये खजूरें खाते रहते फिर मदीना पहुँचकर आप ने उन खजूरों को बच्चों में तकसीम कर दिया। इसे बरकत कहते हैं जो मुसलमानों के साथ होती है और बताऊँ बरकत कि

हजरत बशोर बिन साद रजि0 की बेटी कहती हैं कि मेरी माँ ने एक दिन मुझे मुटठी भर खजूरें थैली मे डाल कर दिया कि इन्हें अपने अब्बा और मामूँ (अब्दुल्लाह बिन रवाहा रजि0) को दोपहर में खाने के लिये दे आओ। मै वो खजूरें लेकर मामूँ और अब्बा को ढूँढते हुए हुजूर सल्ल0 के करीब से गुजरी। हुजूर सल्ल0 ने मुझे अपने पास बुलाया और पूछा इस थैली मे क्या है ? मैने कहा खजूरें। हुजूर सल्ल0 ने वो खजूरें मुझसे अपने दोनों हाथों में ली, उन खजूरों से आपके दोनों हाथ भी न भर पाये। आपके कहने पर एक कपड़ा बिछाया गया फिर आपने वो खजूरें उस पर डाल दी और एक सहाबी से कहा ! जाओ खंदक वालों को बुला लाओ कि वो लोग आकर खजूरें खा ले, उनके ऐलान पर सारे खंदक वाले जमा होकर खजूरें खाने लगे पर वो खजूरें बढ़ती चली जा रही थीं, जब सारे लोग खा कर चले गये तो खजूरे कपड़ से बाहर तक गिर रहीं थी, ये है बरकत पर इसका तआल्लुक कुदरत से है कि

अल्लाह की कुदरत साथ मे है तो बरकत भी है,
अल्लाह की कुदरत साथ मे है तो नुसरत भी है,
अल्लाह की कुदरत साथ मे है तो मदद भी है,
अल्लाह की कुदरत साथ मे है तो हिफाजत भी है,

बस बन्दें को खुदा से लेने का रास्ता समझ मे आ जाये कि एक खुदा की आदत वाला निजाम है और एक खुदा की कुदरत वाला निजाम है, आदत वाला निजाम खुदा ने अवामुन्नास के लिये बनाया है और कुदरत वाला निजाम खुदा ने मुसलमानों के लिये बनाया है और इसी रास्ते को समझाने के लिये अल्लाह ने नबियों को दुनियॉं मे भेजा, नबी इन्सानों को यही रास्ता समझाते थे अब कयामत तक इस रास्ते से लेने के लिये हुजूर सल्ल0 के आमाल है कि सबब से लेने का रास्ता खुदा की आदत वाला है और खुदा की कुदरत से लेने वाला रास्ता हुजूर सल्ल0 के अमलों वाला है, इस रास्ते पर चलना सीखने के लिये ही अल्लाह के रास्ते मे निकला जा रहा है, इसके लिये बतलाओ कौन कौन तैयार है ?